(६४) धीरपुण्डीर नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ २०१७ से २१०२ तक)

(६५) विवाह सम्यो।

(पृष्ठ २१०३ से २१०४ तक)

(६६) वडी लड़ाई रो प्रस्ताव

(पृष्ठ २१०५ से २३८५ तक)

सूचीपत्र।

•••

(६७) बान बेध प्रस्ताव।

[पृष्ठ २३८७ से २४६८ तक]

(६८) राजा रयनसी नाम प्रस्ताव।

[पृष्ठ २४६९ से २५०६ तक]

महोबा समय।

(पृष्ठ २५०७ से २६१५ तक)

३७ मोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड़ दिया। २५२९

३८ आल्हा ऊदल का कन्नौज पहुँचना, जैचन्द का बड़े आदर से उन्हें अपने पास रखना। ”

३९ चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवेगा और घोर युद्ध मचावेगा। २५३०

४० जगनक ने कन्नौज पहुच कर चिठी आल्हा को दी और सब समाचार कह कर महोबा चलने के लिये परिमाल की बिनती सुनाई। ”

४१ जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है की महोबा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को दूर करें सुर सामतों को आगे करके बेखटके चौहान से लड़ें। २५३१

४२ जगनक का समझना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल की बहुत कुछ सहायता की और चदेल ने तुम्हारा भी आदर किया। तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का धर्म नहीं है। २५३२

४३ जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है, तुम्हें आना चाहिये। २५३३

४४ देवल दे ने यह सुन अपने बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लड़कर स्वामी का काम बनाओ। ”

४५ ऊदल ने फिर कहा जिस दुर्दशा से महोबे से परिमाल देव ने निकाला था वह भूल गई, जगनक तुम महोबे लौट जाव। २५३४

४६ देवल दे ने यह कह कर कि मैं बांझ क्यों न हुई मेरे बेटे क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते है और संकट में स्वामी को छोड़ते हैं, रो दिया। २५३५

४७ मा की बात सुनकर दोनों भाई सूख गये और महोवे चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गये। ”

४८ जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप दर्बार में आये है। आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढ़ाई की है सो परिमाल देव ने हम लोगों को बुलाया है। ”

४९ जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने पाओगे। २५३६

५० यह सुन आल्हा की आखे लाल हो गई और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे। ”

५१ इतने मे जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमाल देव ने पृथ्वीराज से लड़ने के लिये जयचन्द से सहायता मागी थी। ”

५२ पत्र पढकर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लडने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूगा और दीवान को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी। २५३७

५३ बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि दे कर और जगनक को सिरोपाव आदि दे कर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया। ”

५४ आल्हा का कहना कि जैसे दुर्योधन ने कहा न माना और नाश हो गये वैसेही ऊदल ने बहुत समझाया पर चुगलखोरों के मारे घायलों को न मारने की बात न सुनकर परिमाल देव ने अपने हाथ

देकर देश की रक्षा करो उनके सामंतो की वीरता की बड़ाई बहुत सुनी जाती है। २५५२

७९ ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी। अब क्या है, अब लड़ो। यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे तब राजा का कुछ होगा। ,,

८० देवल दे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती है, बेटा! तुम लोग चंदेल का नमक अदा करो। ,,

८१ राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गांव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िये देर न कीजिये। २५५३

८२ आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कल्ह लड़ाई करना।

८३ आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रियधर्म नहीं है। इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कह कर सब वीरों को उत्तेजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कल्ह मैं पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा। ,,

८४ सबको विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिये सवेरे शत्रुओं का नाश कीजिये। २५५४

८५ आल्हा ऊदल अपने महल में गये और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास में उन्होंने आनन्द से रात बिताई। २५५५

८६ पहर रात रहे स्नान कर गोरखनाथ का ध्यान होम नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का साम्हना करने को घोड़े पर सवार हो दोनों भाई का चलना। ,,

८७ ऊदल का मां को आकर प्रणाम करना, मां का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बजाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो। ,

८८ ऊदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खेलूंगा और पृथ्वीराज को भगाऊंगा। २५५६

८९ देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के कार्य में सिर देकर स्वर्ग का राज्य करो। ,,

९० ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुनकर सती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है। ,,

९१ राजा का सवेरे उठ कर नगारे पर चोट दिलाना और आल्हा को बुलाना। २५५७

९२ आल्हा ऊदल को बुलाकर नागार की और बढ़ने की तैयारी करना। तैयारी का वर्णन। ,,

९३ परिमाल देव का डर से कांपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीत कर मुझ कालिञ्जर पहुचाओगे तो मैं आधा राज्य पांच लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हें दूंगा।

९४ चंदेल की सेना का आगे बढ़ना। २५५८

९५ चंदेल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना। उधर आल्हा और ब्रह्मानन्द का अपनी सेना को सजना। ,,



रासो सार का सूचीपत्र।

शुक चरित्र प्रस्ताव

[बासठवां समय]

सुख विलास वर्णन ।

अरिल्ल ॥ उत्तर पष्प अषाढ पवित्त । आर्द्रा मंडल मंडि नचित्त ॥
दान भोग फल इह लछि गत्तिय । विलसन राज करै नव नित्तिय॥
छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज की मदान्धता ।

कवित्त ॥ इक जोवन धन मद्द । मद्द राजन मद वारुनि ॥
अरु मद देह अरोज । संग नव वनिता तारुनि ॥
अरु बंधन पति साह । पैज कनवज्ज संपूरिय ॥
एते मद राजन । दुष दद्दह करि दूरिय ॥
आनंद कंद उमगे तनह । संजोगी सर हंस सरि ॥
जानै न राज अत्तम उदय । महि जोवन मानै सु परि ॥छं०॥ २

पृथ्वीराज का अंतर महल में सभा करना और संयोगिता को अर्द्ध आसन देना ॥

आर्या ॥ आषाढे [1]मासे दुतियान । राज सभा मंडिय महिलान ॥
सा इंछिनि दच्छिन पामारी । सील सुच पति व्रत संचारी ॥
छं० ॥ ३ ॥
सुकी सा जद्दि पुत्ति पंगानी । न्याय वद्ध प्राया प्रीयानी ॥
सिंघासन राजन सनमानी । कैलासी लच्छिय इह [2]दानी ॥
छं० ॥ ४ ॥

(१) ए कृ को दिवस । (२) मो दामी ।

इक प्रौढह इक्कह मुगधानं। दुहु लच्छन बंधे बंधानं ॥
इंछिनि प्रौढ पवित्त पुंआरी। मुगध संजोगिय पंग कुमारी ॥
छं० ॥ ५ ॥

दुविधि प्रीति राजन प्रति पारी। चतुरत्तन चिंत्यौ वर नारी ॥
[1]बरनी [2]बरुनि बर संच्यौ। बिनय बल पंगज [3]पति अंच्यौ ॥
॥ छं० ॥ ६ ॥

मुख्य पटरानी इंछनी के हृदय में ईर्षा उत्पन्न हुई ॥

लिषि नेनं सु चिन्ह बिनानं। बसिकरि मोहि [5]सुमुष्यमयानं ॥
तिय परिमान तिया परि जानं। इहां अँदेस जु है कछु आनं ॥
छं० ॥ ७ ॥

मैं बिनया बिनया बर संच्यौ। कनवज्जनि वसि करि कर पंच्यौ ॥
बान पंच धरि काम बिनानं। धर धर धुक्कि परी महि आनं ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ सुरत [4]रवन्नी धव धवनि। रमनि रमै रति रंग ॥
सम संजोगि आलिंगनह। अमन चित्त अति अंग ॥ छं० ॥ ९ ॥

रानी इंछनी का अपने पालतू सुग्गे से दुःख कहना।

मुरिल्ल ॥ छिन छिन छिन किसलय तन तुट्टी। मन लोइन लोइन पर [5]सुट्टी ॥
अब्बुअ गढ़पति सुअ अति [6]संदुल। भोजन ताहि करावति तंदुल ॥
छं० ॥ १० ॥

चोटक ॥ भषि तंदुल अंजुलयं सुषयं। कमयं कम कीर कहै सुषयं ॥
तबं इंछिनि इंछिनियं [7]मिलयं। बसयं बस बासनयं अलियं ॥
छं० ॥ ११ ॥

(१) ए. कृ. को.-बरुनी। (२) ए. कृ. को प्रभु। (३) मो.-सम्मुख।
(४) ए. कृ. को.-बरन्नी। (५) ए. कृ. को. मही। (६) मो.-सुंदल।
(७) मो.-मिलनं-अलिनं।

मृगया मृग मद्दन पान नय । घन सार निहारन आननय ॥
रसना रस रच्चित दूअ चिय । रदन छदनं पिन पीन पिय ॥
छं० ॥ १२ ॥

कबरी कुसुम बिसरत नय । श्रुति कुंडल लाल दुसाजनय ॥
दुति मुत्तिय नासिकय सुहयं । सुनि स्वामिनि स्वामि सुह दुहय
छं० ॥ १३ ॥

सुग्गे का इछनी की बातों पर रुष्ट हो जाना।

दूहा ॥ सुष दुष इछिनि सु दुज । मनं मंडिय सुनि कान ॥
मोसे बातें बहुत किय । करों षबरि चहुआन ॥ छं० ॥ १४ ॥

पुन॰ सुग्गे का कहना कि तू मुझे एक रात्रि के लिये संयोगिता के शयनागार में पहुंचा दे।

कवित्त ॥ सुक उच्चरत सु कीय । इछि पम्मारि पवित्तिय ॥
जैत अनुजि अंजुलिय । सलष नंदनि अनुरत्तिय ॥
समय अमय मत्तारे । हार हरनी उर जंपिय ॥
अमय उमय दुरजनिय । वास बिस्तारि [१]कर कंपिय ॥
बिलसैन बिसरि रस प्रिय प्रियनि । बिरह बिसरजन अमन करि॥
हारम्य सजोगिय निसि निगम । महल मोह मंडिपहि धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥

सौत बैर से संतप्त इछनी का संयोगिता से संबंध बढाना।

दूहा ॥ धर चिय कर चिय निसि निगम । जाम दुनिसि गई बित्ति ॥
सुक सुंदरि मंदिरनि मिल । [२]पंजुलि प्रसन्न प्रतीति ॥ छं० ॥१६॥
पिच धात सो मन मिलै । और बैर मिट जाइ ॥
सौति बैर अंतर जलनि । दिन प्रति ग्रीषम लाइ ॥ छं० ॥ १७ ॥
सुष मिट्ठी बिता करै । मन मे देत सराप ॥

(१) ए कृ को करु। (२) ए कृ को पगुल्लि।

बंटै प्रेम सु ग्रीय को। अंतर दग्ग गहै आप ॥ छं० ॥ १८ ॥

एक दिन संयोगिता का सब रानियों का न्योता करना।

एक दिवस संजोगि ग्रह। महमानिय सव सौति ॥
आनि सुष्प प्रगटन मछर। अधिक [1]सपतनी होति ॥ छं० ॥ १९ ॥
सौति सुहागिनि सुष्प दिषि। लग्गै नैन अँगार ॥
ज्यों ज्यों वह छंदा करै। त्यौं त्यौं करवत धार ॥ छं० ॥ २० ॥
* धन ग्रह बंधन मुत्ति नग। हेम पटंबर सार ॥
पुनि चिय प्रिय बंधन सुरति। लगै अधिक पग धार ॥ छं० ॥ २१ ॥

सुग्गे की चातुरी का वर्णन।

लघुनराज ॥ अयं महे मयं जुरी। प्रसाद प्रेम मंजुरी ॥
उछंम पाट पानयं। सगुन्न कीर जानयं ॥ छं० ॥ २२ ॥
सनूर निद्ध वासयं। प्रतीति रीति दासयं ॥
करं जु बंद सुंदरी। नरग्ग द्रष्टि मंजुरी ॥ छं० ॥ २३ ॥
निगम्म वेद बादयं। बरन्न आदि सादयं ॥
सु चातुरी चितं चढं। पुछंति कीरयं पढं ॥ छं० ॥ २४ ॥
निरम्म रूप निद्धयौ। तिलक्क सोर सद्धयौ ॥
जुवत्ति रीति जानयं। हरम्य तुष्ट सानयं ॥ छं० ॥ २५ ॥

रानी इंछनी का पिंजरे को हाथ में लेकर संयोगिता के महल को जाना।

दूहा ॥ कर धर इंछनि कीर लिय। हीर मुत्ति जुत कंठ ॥
मन मंजुल तंदुल दधहि। प्रेमपुच्छ स्रम नट्ठ ॥ ॥ छं० ॥ २६ ॥
दुज पंजर बहु भांति रचि। अरु [2]जरीय जर फूल ॥
आडंबर जग रच्चई। भट वेस्या स्रत भूल ॥ छं० ॥ २७ ॥
मुरिल्ल ॥ सषि संकुल सावक्किति सज्जिय। [3]ग्रिह ग्रिहस राज सद्रिग बद्दिय ॥
दाहिम्मिय समदं महिलानिय। संजोइय भुवनह संपानिय ॥
छं० ॥ २८ ॥

(१) ए. कृ. को.-सपत्ती। * छन्द २१ मो. प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को. नरीन। (३) ए. कृ. को -"ग्रह ग्रह राज सभा द्रग वद्दिय।

संयोगिता के महल का वर्णन।

वचनिका ॥ कचित् श्रृंगाराय। मुक्ति बधन विहाराय॥
नवन दृष्टि निहाराय। रंजन धनसाराय॥
मृगमदगंध उछाराय। अलि निवास उभाराय॥
मृदु मंजरी रस सुराराय। एव काम विहाराय॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का सब रानियों को उचित आदर देना।

सुरिल्ल ॥ द्रिग द्रिग सौं रंजिय पंगानिय। आसन समरकंद दिय दानिय॥
जर जरीन चवरिय तिर चानिय। कागल कुंकुमय क्रत पानिय॥
छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की दसो रानियों के नाम।

वचनिका ॥ प्रथम पुंडीर जादी। इंद्रावती राज सादी॥
सुंदरी हमीर जानी। जंबू गिर इंछिनी मानी॥
कूरम्भी पज्जून जाता। वलिभद्र नाम भ्राता॥
कंजानी बड जन गज्जरी ज्ञाता। सदलासामि राता॥
हंस गमनी हंसावती सुजानी। दिवासी सरूपा सुमानी॥
दाहिमी रूप रवनी। मत्त मातंग गमनी॥
आदर आदि राजा। बीनान कंठ बाजा॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम का प्रभुत्व।

दूहा ॥ न्रप बर भामर सपि सरहि। वपु गुंजहि हर नच्छ॥
कला केलि दिन दिन चढिय। सुसग सँजोई सिच्छ॥ छं०॥३२।
सुभ आदर रानिय सुपट। चरित चित्त चहुआन॥
दुर दिन दाहिम्मिय महिल। किम किन्नो पायान॥ छं०॥ ३३॥
श्लोक ॥ सगुनं ज्येष्ठ जेष्ठाना। ज्येष्ठ रूप सरूपिना॥
ज्येष्ट पितु मान राजाना। ज्येष्ठा[1] मान विलोकनी॥ छं०॥३४॥

(१) ना ए जेष्ट।

पृथ्वीराज का रनिवास में जाकर सब रानियों को देने के लिये वस्त्र आभूषण देना।

दूहा॥ राजन उठि मन्निय महल। गहिलै गुरजन सथ्थ॥
जु कछु चरित तिहि महिल किय। सुनहु सु वूझन कथ्थ॥
छं० ॥ ३५ ॥

नग मुत्तिय बंटन बसन। तात संजोइय दत्त॥
सहस असंषिन लष्षियौ। गनि को कहै निरत्त॥ छं० ॥ ३६ ॥

रसावला॥ छवी छब्बि पट्टं, अनेकं [1]निघट्टं।
मनी मुत्ति बट्टं, नगं नेम तट्टं॥ छं० ३७॥
सु गंधं सु घट्टं .... संजोगि सु ग्रेहीं[2]।
उछंगं सु देहीं ॥ छं० ॥ ३८ ॥
अलष्यंगनानं, सु कोरी प्रमानं, सची सोभ रागं। द्रु,तं देव वागं
छं० ॥ ३९ ॥
अनंदं सु लागं, निसा कित्ति जागं। भुअं भान मागं, धुअं मत्त मागं
॥छं०॥४०॥
दिपंती सुहागं, [3]अवूरत्त रागं। * * * * ॥ छं० ॥४१॥

सब रानियों का परस्पर मिल कर अपनी अपनी विरह वेदना कहना।

दूहा॥ अनु दिन सषि संकुल विकल। अकल केलि सुनि चंद॥
बरष एक सषि सुष समझि। परषि प्रीति फुनि मंद॥ छं०॥४२॥
परसप्पर मिलि वत्ति कहि। हम नहिं दिट्ठौ कंत॥
बरष इक्क हम षम करी। नह लद्धी गति अंत॥ छं० ॥ ४३ ॥
क्रम क्रम तट छंडै सरहि। बर छंडै रति जोर॥
मति छंडै बिरद्ध तनहा। गति पावस मति मोर॥ छं० ॥ ४४ ॥

(१) ए. कृ. को.-निहट्ट। (२) ए. कृ. को.-सुग्रहे। (३) ए. कृ. को.-अनूरत्त।

अरिल्ल ॥ पमद न सत्र किसु लच्छिन पिम्महि । दहियन रोस सुधारति 'नेमहि
रमिय न निज निज पति कौलान । बिन इछिनि सब ग्रेह सुगान
छं० ॥ ४५ ॥

रानी इछनी का पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम की परीक्षा करने के लिये संयोगिता को अपना सुआ देना और संयोगिता का उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करना॥

इछिनि इछिय अच्छनि रष्षन । राज संजोइय प्रेम परष्षन ॥
दुज दिय हथ्थ प्रजक संजोइय । निसि गति मोहि कथा सुनि तोइय
छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ दिय पामारि पवित्त सुक । लिय संजोइय वंदि ॥
पन प्रजक टट्टन टरति । गति न कहै सुर संदि ॥ छं० ॥ ४७ ॥

संयोगिता का सुग्गे को अपने महल में ले जाना । उसकी शोभा वर्णन ।

चंद्रायन ॥ लीय सु दुज्ज संजोइय पत्तिय साल वर ।
जहां आभास सुभासहि मनि मानिक जर ॥
चित्र विचित्र विचित्र सु चित्तह रजि रस ।
ग्रभ सुरंग अनूप अलक्कत अंग तस ॥ छं० ॥ ४८ ॥
विधि विधि वास तरंग अनंग उछाह अति ।
मधु माधव किय वास सुभासित रंग रति ॥
जर पंजर बाल धौतन उत्त विराजि मनि ॥
सुष आये पित ताम विरामित सोल बनि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

आर्या ॥ मिलि सा सुष्य सयान । मानि गानि अन्न उत्तिम विधान ॥
सत्त विहंग विहंगर बान । मज्जन संजोगि रचि रहि ठान ॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को. सेनह ।

संयोगिता का स्नान करके नवीन वस्त्र आभूषण पहिनना। संयोगिता के अंगों का सौन्दर्य्य वर्णन।

मोतीदाम ॥ रचे सब मज्जन रज्जन ठान। निरंतर अंतर ग्रेह गुरान ॥
सजे सब भूषन पंगज अंग। कालेवर सानि सनेह सु ठंग ॥
छं० ॥ ५१ ॥

लहग्गिय कज्जल लोइन लोइ। अनंग उभार चढ्यौ तन तोई ॥
धरे बर पट्ट कनिक्कस रुअ। करे बर पट्ट सु घट्टित दूअ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरोहिग पट्ट संजोगिय ताम। मनों सजि पट्टर तिज्जय काम ॥
अनेक सुगंध सुवासित बार। सवी सब आनि सु बंधिय धार ॥
छं० ॥ ५३ ॥

सने हरि आनि सुधा रस बास। बहू बिध उरवत अप्प सु राज ॥
जलप्पय वासन तज्जिय तिन्न। अरोहित पट्ट जिके चित चिन्न ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सुगंध सु धूप अनोपम वास। अनेक सु भांति बिबिद्ध बिलास ॥
कनप्पय बुंद चुवै चर केस। तही भय तग्ग सु रप्पहि रेस ॥
छं० ॥ ५५ ॥

उभै कुल उप्पर काच चुअंत। मनों मुति नागिनि संभु [१]युअंत ॥
कुचग्गलि केस सुभै सित लग्ग। सुधा सचि कुंभ सरप्प उरग्ग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

विराजित भंति अलक्क सु मुप्प। मनों हरि बीहरि सग्गिय रुप्प ॥
तिलक्क सभाल रची रचि रेष। मनों मय ग्रेह दुआरनि देष ॥
छं० ॥ ५७ ॥

धनं मुअ दूअ तिलक्कस रानि। जिते धर अद्धर सग्ग [२]सुतानि ॥
रचे जल कज्जल रेष सु भेष। मृषी मय काम जरे जनु एष ॥
छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए. को.-पुअंत। (२) मो.-सुजानि।

चलचल नेन सु नासिक रूअ। कुसुम्मह मधि कलरै [1]अलि दूअ॥
कटाच्छह सेत चलै सति वक। नयै जनु वीर कचोल कनक॥
छं० ॥ ५९ ॥

तिलक्क जराबध वदन विंदु। सज्यो रथ सारहि काम सु इंदु॥
जुआ भ्रुअ काध धरे कच एन। तटक्कह चक्र जिते तिअ तेन॥
छं० ॥ ६० ॥

चिबुक्कह विंद असेत सु बानि। प्रसारित कज्ज अली सिसु ठानि॥
सुनै जुरि आनि सु नग्ग सु घट्ट। जनों सजि काम जिते दुअ पट्ट॥
छं० ॥ ६१ ॥

रोमावलि बान मनमथ तान। करै कुच ओट द्रिग म्रिग[2]ठान॥
रची बर मानिक [3]मुद्रनि रुच्च। मनोहरि रास सबै ग्रह सुच्च॥
छं० ॥ ६२ ॥

बने सब भूषन धारिय अत्ति। झनंकिय नूपुर घूघर गत्ति॥
मनों बजि बाजिन काम स भूप। विजै कज बाज सबै पुर नूप[4]॥
छं० ॥ ६३ ॥

[5]तमो रसमो रस पूरिय मुष्प। बनै सब रास तजै भव दुष्प॥
अनोपम रूप सिंगार वितूल। धरै कवि मत्त रहे गति भूल॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का सेज पर जाना और सुग्गा को भी चित्रसारी में ले जाना।

चौपाई॥ रचि सृंगार अनोपम रूप। चातुरता गति मति आनूप॥
मगहि इष्ट सुक मति गत्ती। विधि परजक [6]सजोगि सपत्ती॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा॥ गय गति इच्छनि दीय दुज। लिय मन हरष सु जानि॥
इह चातुरता दूत है। कहन सुनन परिमान॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए कृ का अति। (२) ए कृ को थानि।
(३) ए कृ को पुद्रनि, युद्रनि। (४) मो नर।
(५) मो-"तमोर सपूरिय मोरि समुष्प" (६) ए कृ को सजोइय।

शैय्या सुखमा।

विराज ॥ प्रअंकं सु जोई, तलप्पं सु सोई। प्रसूनं समोही, कुंज सुप्प सो
छं० ॥ ६७ ॥

धुअ धूप रुद्धं, उअं सुक्कि गंधं। प्रसंसं प्रसूनं, फलं वासि पूनं॥
छं० ॥ ६८ ॥

चिषा तुष्ट कामं, रति देव धामं। दुजं स्वामि मंत्रं, निरष्यै सुगं
छं० ॥ ६९ ॥

निसा दीप दानं। रतिं को प्रमानं। * * * ॥छं० ॥ ७

रतिवर्णन।

कवित्त ॥ रस क्रीडत विपरीत। चिंति दंपति दंपति रिति ॥
पंच पंच सुठुए। पंच लग्गेति पंच पति ॥
उठिय बाल सज्जिय दुकूल। सुक पंजर सु धाम चित ॥
हर हराट उप्पज्यौ। तजिय अकोट कानि छत ॥
धरि थान कथ्थ सुक सों कहिय। रहि न लज्ज लज्जी विलग ॥
जग पुब्ब भाव भांवरि सु वत। सुवर बाल उट्ठी सु द्रिग ॥
छं० ॥ ७१ ॥

(१)ससि रुन्नौ म्रग (२)बह्यौ। कह्यौ सुक सप्त दीप तन ॥
तम सु देव पुलि पंग। जोति संदीप छिनहि छिन ॥
हुई लज्ज अचलीय। कलिय मुद्द गति जानं ॥
छिम छिम तमह रंतिपति। परसि पहु पंजलि थानं ॥
नृप तुष्टि काम कमलारमन। भवन द्रष्टि रुचि रमन मन ॥
जिम जिम सु बिनय बिलसिय प्रबल। तिम तिम सुकबुद्धिय प्रम
छं० ॥ ७२ ॥

दूसरी रात्रि का रति विलास वर्णन।

तारक ॥ * दुतिया दिन संझ विजै कुल कामा। सहचरि प्रौढ़ रमै रति रा
दुष्षम सुष पिया मनोहर रीति। बिलसिय आस भयं भव जीति
छं० ॥ ७३ ॥

(१) को.-सांसि। (२) को.-हहयौं। * मो -प्रति में नहीं है।

युक्त ॥ आसीनो सज्जानो विलयानो उल्लानो निरषानो ध्यानो उरथानो॥
वय न्यानो सम्मानो अलसजु तानो उदित न्यानो सषि आनो॥
पारस सजोइय सुष मुष मोहिय सतोहिय * *
* * * * * * छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ सकल अकुलय विषय । चष कान उन पान ॥
प्रथम रवन रवनिय मिलिय । रति गति राजन थान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

सुख सहवास का क्रमशः चाव और आनद वर्णन।

त्रोटक ॥ तन कपन कु पुनय पुनय। सनय सनय सिरय धुनय ॥
बलय चलय नकय चकय। अलि भारन मजरिय भगय ॥
छं० ॥ ७६ ॥
प्रियन प्रियनेति पियूष पिय। धकय धक छडिन तोहि अथ ॥
सजन रजन भजन भेवन। चतुरष्ट न तुष्ट रचै रवन ॥छं०॥७७ ॥
कलिन अलिन ललिन वयन। सयन [1]चलिन चलिन रचन ॥
* * * । * * ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ सुनि संचल अचिल रवनि। तन धर हरि दिढ काम ॥
सषि पारस [2]सारस व्रतन। नव कर बंधिलि अरम्म ॥छं०॥७९॥

पारस ॥ नै व्रत सज्या, जोवन मुज्र्या।
छं० ॥ ८० ॥
सैसव साता, रम्मन काता ॥
विलसिन ताता, सुर [3]तित आता ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ अग्गिराज सजोगि सों। मानि चतुरभय चित्त ॥
एकादस पूरे अपंग। पंचम परसु सहित्त ॥ छं० ॥ ८२ ॥

एकम से लगा कर पूर्णिमा पर्य्यंत का रति वर्णन।

त्रोटक ॥ हक्रित हक्रित क्रितय क्रितय। दह अंगुलि समुषय स्रितय ॥
अमिय अपि वासन त हितय। मनु आप निपद्ध पत चितय ॥
छं० ॥ ८३ ॥

[१) ए रु को सलिन। (२) मा पारस। (३) ए क को सुरतिन।

सुक द्रष्टिहि द्रष्टिनि छोह लजं। दिव दीपक अंचलयं जु भजं॥
दुतियं दिन केलि कला बरयं। चितयं चिय मंझि सभावरयं॥
छं० ॥ ८४ ॥

उभयं दुति दीहनि चामरनं। दुति[1] तीय दिनं सम तुष्ट रनं॥
षट षष्टिय लज्जि सु नीर दियं। सत सत्तय पौमिनि प्रेम प्रियं॥
छं० ॥ ८५ ॥

चवदून दिनं छिनयं दिनयं। निज नोमिय नौरसयं भनयं॥
दसमी दिसि छड्डिय प्रीति घनं। दस एकह एक सु एक मनं॥
छं० ॥ ८६ ॥

रति द्वादस द्वादस देवतियं। दस तीनि सिंगार षिलौ कलियं॥
दस च्यारि चयं सुकयं मुकयं। सुभ पूनिम इंछिनि सो भषयं॥
छं० ॥ ८७ ॥

रति के अंत में दंपति की प्रफुल्लता और शोभा वर्णन।

कवित्त॥ देषि बदन रति रहस। बुंद कन [2]स्वेद सुब्भ बर॥
चंद किरन मन मथ्थ। हथ्थ कुट्टे जडु डुकर॥
सु कविचंद बरदाय। कहिय उप्पम अुति चालह॥
मनो मयंक मनमथ्थ। चंद पूज्यौ मुत्ताहय॥
कर किरनि रहसि रति रंग दुति। प्रफुलि कली कलि सुंदरिय॥
सुक कहै सु किय इंछिनि [3]सुनवि। पै पंगानिय सुंदरिय॥
छं० ॥ ८८ ॥

दूहा॥ अप्रापत प्रापति सु पति। कर संजोइय काम॥
उर आनंदिय अप्प वर। ते चिय पुज्जिय वाम॥ छं० ॥ ८९ ॥
सुष सुष मंडिग रति रवन। सुभ इंछिनि प्रति प्रात॥
गुरजन गुर लज्या दवन। विपथ विकंपन गात छं० ॥ ९० ॥

इंछनी का सुग्गे से संयोगिता का रतिरास पूछना।

लज्जन लप्पन जन सजन। कहु सुक संकुल पंथ॥
अनि रतु तु तन जंपनह। तं षिन षिन तं अप्पि॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. क. को.-दीय। (२) मो.-श्रेद। (३) ए. कृ. को.-सुनहि।

सुग्गे का कहना कि यद्यपि ऐसा करना पाप है परन्तु कहता हूं सुनो।

हसन गुरज्जन सवकि सुष। दूषन मुगध वधूनि॥
फिरि फिरि फिरि पजर परनि। मंजरि कलि हरि धनि॥ छं०॥९२॥

संयोगिता के मुख की शोभा वर्णन।

अरिल्ल॥ सुनि इछिनि [1]पंगी जु रवन्नी। धपत राज सुभ लाज मवन्नी॥
आननय काननय कन्नी। पूनिम पूरनय सुक वन्नी॥ छं०॥९३॥

सुग्गे का पृथ्वीराज और संयोगिता का अंतरंग रास वर्णन करना और सखियों सहित इच्छनी का चित्त दे सुनना।

वाधा॥ छंदम छंदयल सुक छंद। मो मजीरनय सुर मंद॥
बर किंकिन पंकित पुकार। हंकित कित्त सुर मुर उचार॥
छं०॥९४॥
विपन पनोकनु मधरि धीर। पडन कल पल करि अति भीर॥
कच ग्रहि रति रिझझन रंग रोर। पपुलित ललित गति मोर॥
छं०॥९५॥
काकज पाल नय सव दधी। भाष छ उचरिय [2]मन सुधी॥
अस्रतय स्रतय अंग राज। तंदुल मदुलय करि साज॥ छं०॥९६॥
भूषन दूषनय करि दूर। उम्मान घुम्मनय करि पूर॥
जं जं लोचनय छिन जूर। तत उच्चरिय मुष मूर॥ छं०॥९७॥
हं हं हं कुलय कल लज्जी। चरचर चंच पुटी सुर सज्जी॥
छं०॥९८॥
[3]धर धर छत्तिय नच्छित लोल। हर हर सावकिय हसि बोल॥
दुदुन मदुनय दुरि दुरिय। परिजय पंक पजकनि सुरय॥
छं०॥९९॥

(१) ए. कृ. को. पंगिनि। (२) मो. परि।
(३) मो. धर धर धर छतियन छिन लोल।

सरनं मारथनं प्रिय सरयं । तिथि विधि पंच दसौ दिन मरयं ॥
इहि विधि केलिनि पाइ जियन्नं । इति एकंत पुकारि पियन्नं ॥
छं०॥१००॥

कवित्त ॥ सुक्रिय वक्र कटाछ्य । श्रवन लग्गत ओपम थपि ॥
शिव कंद्रप द्रग कूप । श्रवन कन्या लेयन धुपि ॥
इति तरंग उच्छसहि । फेरि ता कूपन माहीं ॥
तात रंग सागरह । पर्यौ मनु बुंद अथाहीं ॥
सुक कहै सुक्रिय इंछनि सुनहि । म्रग्ग अनेकन छंडि तत ॥
तारंग तंत तरुनी सु वर । सुवर बाल ग्रहृिय सुमति ॥छं०॥१०१

दूहा ॥ श्रुति राजन हुंक्रित हंसन । कुंचित हंसन नयन्न ॥
त्रुटि नाटंकन भगन किय । नग बिनु रहन मवन्न ॥छं०॥१०२

सुग्गे के दूतत्व की धृष्टता का कथन ।

कुंडलिया ॥ जो रस रसनन अनुदिनह । अधर दुराइ दुराइ ॥
सो रस दुज कन कन कह्यौ । सखिन सुनाय सुनाइ ॥
सखिन सुनाइ सुनाइ । हियै सुचि सुचि लज मन्नह ॥
सुथल वियल थल कंपि । नेन नटकीय नहन्नह ॥
जियन मरन मिलि मैंन । कह्यौ अदभुत प्रिय रस ॥
ए रस अंतर भेद । प्रीय जानै त्रिय जौ रस ॥ छं० ॥ १०३ ॥

इंच्छनी का संयोगिता के गूढ अंगों के विषय में पूछना ।

दूहा ॥ फुनि पुच्छति इंछिनि सु कहि । सौति रूप मनि सोल ॥
तौ पुच्छौं कैसी कहै । अंतरंग सु बिसाल ॥ छं०॥ १०४ ॥

सुग्गे का संयोगिता के प्रच्छन्न अंगों का वर्णन करना ।

कवित्त ॥ क्रिसल थूल सित असित । थान चव एक एक प्रति ॥
पानि पाइ कटि कमल । सथल रंजे सुच्छिम अति ॥
कुच मंडल भुज मूल । नितंब जंघा गुरुअत्तं ॥
कच दास गोकन्न । मांग उज्जल सा उत्तं ॥

कुच अग्र चारु द्रिग मद्धि तिल । स्यामा अंग सब्ब गवन ॥
षोडस सिंगार सारूव सजि । साइ रंजै सजोंगि तन ॥छं०॥१०५॥

सुग्गे का सम्पूर्ण शृंगार सहित संयोगिता के नख शिख का वर्णन करना ।

पद्धरी ॥ स जोग जोग जय संत तठ । आनंद गान जिन करिय कठ ॥
बर रचिय केस विचि सुमन पंति । बिच धरे जमन जल गंग कंति॥
छं० ॥ १०६ ॥

सिर मद्धि सीस फूलह सुभास । किय जमन अद्ध सुर गिरि प्रकास॥
कुंडली मंडि वदन सु चंद । कसतूर ढिगह घनसार बिंद ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बर किरन भोम परसत प्रकार । मनों असित राहु ससि सहित तार॥
ओपमा भ्रूअ वेनी विसाल । नागिनी असित ससि सहत बाल ॥
छं० ॥ १०८ ॥

ओपमा भाव उच्चरि बिरूप । मनु ससी राहु सित पष मजुष ॥
सैसव्व मद्धि जोवन प्रवेस । देषियै नैन मग अति सुदेस ॥
छं० ॥ १०९ ॥

ओपम सु कव्वि वरदाय कीय । ज्यों ग्रेह उच्च दिसि जल निदीय॥
सित असित सोभ द्रिग वर विसाल । कै ससिज प्रगटि तम मद्धि बाल॥
छं० ॥ ११० ॥

ओपम्म चंद नासिक विसाल । मनों अरै लरन रवि राहु बाल ॥
ओपम्म अधर कवि कहि विद्रुम्म । उग्गरे अद्ध ससि चषि मजुष ॥
छं० ॥ १११ ॥

सोभै सुरंग दतनि सु पंति । कदलीन केत कै मुत्ति कंति ॥
कै तरु सु बिंब लुबी सुरंग । ससि भूम गंग जल सिंचि अनंग ॥
छं० ॥ ११२ ॥

मधु मधुर बानि कलयठ रह । आनंग अनेव केवल सु सद्द ॥
तारक तेज नग जटि सुरंग । ओपम्म चंद तिन कहि सु अंग ॥
छं० ॥ ११३ ॥

[1]विततह सत्त सव चित्त थूर। सेवहित सत ग्रह तप करून ॥
नन धरै अरनि धारे सु तल्प। तिन भभिगम रहिग ससि कला सल्प॥
छं० ॥ ११४ ॥

कप्पोल कला कल नगज सीप। दुहुं परी होइ मयुषं समीप॥
त्रिवली सुरंग बिच पीति जोति। ओपम्म सुवर तिन भग्गि होति॥
छं० ॥ ११५ ॥

उछराह रेह गुरु जोज गम्म। परदष्षि देत ससि देषि हम्म॥
मुतियन माल कुच बिच सुरंग। प्रतिव्यंब फलकि मुष उदिम अंग॥
छं० ॥ ११६ ॥

ससि अंग मीन विद्रुमनि चाहि। ससि सहत कढत अहि गंग मांहि॥
[2]जगमगत कंठ सिर कंठ केस। मनु अष्ठ ग्रह चंपि ससि सीस वैसि॥
छं० ॥ ११७ ॥

नग माल लाल कुच पर विसाल। ओपम्म चंद चिंती सु साल॥
चिंतिय सु वैर बर सिंभ पुच्छ। मनमथ्थ जका मुष फुंकि उच्च॥
छं० ॥ ११८ ॥

निक्करि सु माल उर बली भासि। ओपम्म चंद बरदाय तास॥
बिय पंति सोम रचि अति सुलाह। ससि गहन चढत जनु न्वपति रा
छं० ॥ ११९ ॥

सोभै त्रिमाल कुच तट तरंग। जनु तिथ्थराज मंडलौ अनंग॥
सोभै सुरंग कुंचकी वाम। जनु संबरेह पटकुटी काम॥छं०॥१२०॥
राजीव रोम राजै सु कांति। उत्तरन चढ़त पप्पील पंति॥
चित लोभ भग्गि ग्रहराज जंति। दिठि राह मेर परसरि सुपंति॥
छं० ॥ १२१ ॥

कटि तट्ट छुद्र घंटिय रुरंत। जगमग सु नग्ग ओपम्म कांति॥
कविचंद देषि ओपम्म भासि। ग्रह लगे चंपि जनु सिंघ रासि॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटि घाट निठ्ठ मुट्ठहि समाय। मनु ग्रहन धनुष मनमथ्थ राय॥

(१) मो-विनतह। (२) मो-जगमत्त।

नितंब गरूअ द्रप्पन कि काम । उदै अस्त भानु जनु पति वाम ॥
छं० ॥ १२३ ॥

वर जंघ रंभ विपरीत तंभ । कै पिंडि दिष्ट मनमथ्थ संभ ॥
ओपम्म वीय कविचंद सादि । मनमथ्थ हथ्थ उत्तरि परादि ॥
छं० ॥ १२४ ॥

पिंडीय पग्ग ओपम्म यट्ठ । कुंकुम कनक सम तेज घट्ठि ॥
नष न्रमल तेज तारक मुत्ति । कंद्रप्प द्रप्प दिपि कार घुत्ति ॥
छं० ॥ १२५ ॥

षोडस सु सज्जि सजि मुत्ति बाल । घुंघरन नग्ग जटि अति सुसाल ॥
ग्रह अट्ठ होड तजि होड हंस । सजि तेज भूलि गति भूलि तंस ॥
छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के परस्पर प्रेम नेम और चाह का वर्णन ।

दूहा ॥ अह निसि सुधि आनै नहीं । अति गति प्रौढ़ सु रथ्थ ॥
गुरु बंधव चिंत लोक सब । मन विपरीत सु गत्ति ॥ छं० ॥ १२७ ॥
विजुरंत मन चित्तै नहीं । मनो वसंत रिति भ्रंग ॥
रस लोभी भ्रम भ्रम भ्रमे । विसराए सब अंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥

चोटक ॥ सगना जिहि च्यारि परंत गुरं । सोइ चोटक छंद प्रमान धरं ॥
पय मत्त वन वरन वरन । निय नाग कहै चष जा श्रवनं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पवनं गति सीत सुगंध सु मंद । लगै भ्रम सीतन मन्न अनंद ॥
जगी जगि अंग निअंग निवार । सुनिकनि कंठिय कंठ सहार ॥
छं० ॥ १३० ॥

कुहुकंहु काम सु धाम धमारि । उडै पिय पंप परांग सवार ॥
मुकलित मल्लित फुल्लित पौंन । नन कविचंद रसम्मि सु मौन ॥
छं० ॥ १३१ ॥

प्रथमाह प्रेम दुवं सुष [1]लष्षि। उदै रवि रथ्थ मनों रथ मष्षि॥
मुदै न लिनं अलिनं रहि मंझि। मधु व्रतमत्त बसो जिन संझि॥
छं० ॥ १३२ ॥

रहै गहि संपुट लंपट नारि। सु पंष पराग हरै उन हारि॥
रसं घन धुंटि गुलाल सु थाल। घटी घटि लग्गि फुनिप्फुनि लाल॥
छं० ॥ १३३ ॥

बरब्बर बौर सिरी बर बौर। गिरै जिनि लग्गि पिया अलि और॥
मधू रस मिश्रित पाडर डार। बजे रव रंग उपंग सु मार॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु वेत सेवंति कुमक्कम काज। षिजै जिन [2]षीन अहो षगराज॥
सु चंपक चारु वितामन कंध। दरसान देवि कियौ दल गंध॥
छं० ॥ १३५ ॥

लगै अँग केतु कि पंग पराग। तुटै लगि कंठक कोइय भाग॥
बन ब्रत्त वेलि बिलंबहु बेलि। करों दिन केका करन्निय केलि॥
छं० ॥ १३६ ॥

लवंक्किय लग्ग लवंग निहार। मनों न सुगंध कुसम्म अपार॥
सहै न बियोग बुरै सिर [3]गात। तजै तिन कंत बसंत प्रमात॥
छं० ॥ १३७ ॥

अबस्सर प्रीति न मुक्कहि प्रान। [4]हँसै तिन नेह न बेन सुजानि।
इसी विधि कंत मधू मधु नारि। कहै मिसि धार बसंत विचारि।
छं० ॥ १३८ ॥

अली लगि कंत किमंध सुगंध। लगे नप काम पगानिय बंध।
रते रति राग पराग बचन्न। रहै टग लग्गिय काइक मन्न॥
छं० ॥ १३९ ॥

सबै षट रित्तुनि राज बसंत। भ्रमे भ्रमरावलि नाम सुकंत॥
* * * ॥ * * * छं० ॥ १४० ॥

(१) ए- कृ. को.-लग्गि अग्गि। (२) मो -हीन। (३) मो -मात।
(४) मो.-हँसे तिन नैनह वैन सजान।

दंपति के रतिरस की रात्रि के युद्ध से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ लाज गढ़ लोपंत। वहिय रद सन ढक रज्ज ॥
अधर मधुर दंपतिय। लूटि अव ढ्व परज्ज ॥
अरस प्ररस भर अंक। पेत परजंक पटक्किय ॥
भूषन टूटि कवच्च। रहे अध बीच लटक्किय ॥
नीसान थान नूपुर वजिय। हाक हास कारषंत चिहुर ॥
रति वाह समर सुनि इंछिनिय। कीर कहत वत्तिय गहर ॥छं०॥१४१॥ *
कर कंकन मुद्रिका। छुद्र घंटिका कटि तट ॥
वसन जघन पहिराइ। भार विततौ सधन थट ॥
कुच निहार कंचुकिय। भुजनि वंधे बाजू वंध ॥
पग तोडर नूपुरिय। हरे रुपि अडिग पेत मधि ॥
संग्राम काम जीते भरनि। करिय रीझ कनवज्जनिय ॥
तंबोल पान दीनो अधर। कीर कहत सुनि इंछिनिय॥छं०॥१४२॥ *
तम रस तीय संजोगि। सुमन सहलीय बिसराइय ॥
पति कौं नव रस भंवर। प्रीति पोमिनि सिरछाइय ॥
हाव भाय विभ्रम कटाच्छ। हंस सरह पग रज्ज ॥
नेह वीर वचननि पराग। लाज कोदिव सुष पज्ज ॥
जन जंत रुप लहरीति गुन। दुत्तिय थह थाह मयन ॥
सकंत प्रेम उद्दित उदित। वर फुल्लित वर सुनि वयन ॥छं०॥१४३॥
मदन बयट्ठो राज। काज मचौ तिहि अग्गै ॥
हाव भाय विभ्रम कटाच्छ। भेद स चारि विलग्गै ॥
काम कमलनी वनिय। चक्कनिय निय नित्य भर ॥
मोह विहि पिभ्भंति। प्रज्ज मो मनिय पिंड वर ॥
बीनीति मधुर तिहि लोभ वसि। वसि संजोग माया उरह ॥
जथपन मग्गगहि अंगम गति। न्रप काम सह छुट्टिय वरह॥छं०॥१४४॥

* छंद १४१ और १४२ मो प्रति में नहीं है।

संयोगिता की समुद्र और पृथ्वीराज की हंस से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ दुहु दिसि बढिय सनेह सब। संजोगिय वर कंति ॥
जियन बार बिछुरत तरुनि। हंस जुगल बिछुरंत ॥ छं० ॥ १४५ ॥
रूप समुंद तरंग दुति। नदि सब की मलि मानि ॥
गुन मुत्ताहल अप्पि कै। बस किन्नौ चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
गुर भ्रित चिय देपंन प्रिय। दुअ मिटि दोन न बार ॥
निमुष रूप संजोग को। टरै न वार अतार ॥ छं० ॥ १४७ ॥

कुंडलिया ॥ उज्जल कहु संजोगि में। नेह स पुत्ती रूप ॥
कला सहित पूरन ससि। अहि अजीज मिलि भूप ॥
अहि [1]अजीज मिलि भूप। तिमर तोरेज पंग दल ॥
राह रूप सुरतान। लग्गि सु कोनो कीव बल ॥
* * * । तप विडंभूत न मुज्जल ॥
चकवा कहु जनंन। सुष अरपति अति उज्जल ॥ छं० ॥ १४८ ॥

दूहा ॥ दो इंछनि पुच्छै सषी। किहि वय किहि मति रूप ॥
किहि लच्छन उनिहार किहि। किम दच्छिन रचि रूप ॥
छं० ॥ १४९ ॥

संयोगिता के अंग प्रत्यंगों पर प्रतीपालंकार कथन।

कवित्त ॥ ससि हन्यौ म्रग वद्धौ। काम हीनोति भोन रति ॥
पंकज अलि दुम्मनौ। सुमन सुम्मानौ पयन पति ॥
पतंग दीप लग्गिय न। मीन दुम्मानो जीय नम ॥
सुकिय सषिय सुष दिष्ट। चितचिंतत्ति नेह स्रम ॥
सुष सति हीन सो दाने न्रप। हाव भाव विभ्रम श्रवन ॥
यों रति चरित्त मंगल गवन। सुनि इंछनि इंछनि रमन ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥

ऐरापति भय मानि। इंद गज वाग प्रहारं ॥
उर संजोगि रस मंहि। रह्यौ दबि करत बिहारं ॥

(१) मो.-अजीत।

कुच उच्च जनु प्रगट्टि । उकसि कुंभस्थल आइय ॥
तिहि ऊपर स्यामता । दीन सोभा दरसाइय ॥
विधिना निमत मिट्टत षंजन । कोर कहत सुनि इच्छनिय ॥
मन मध्य संमय प्रथिराज कर । करज कोस अंकुस वनिय ॥छं०॥१५१॥
दूहा ॥ वै दुष चिय इछिनि सुनिय । रूप प्रभूतन माहि ॥
जिसल तेज लग्गिय चिभू । संजोगी सुनि ताहि ॥ छं०॥ १५२॥

संयोगिता की स्वाभाविक एवं सहज लुनाई का वर्णन ।

हनुफाल ॥ सनि इछिनीय सु जानि । रस करनि धरि सुनि कान ॥
लज देहु विटप सकाम । वर ब्रन [1]दिप्पय वाम ॥छं०॥१५३ ॥
सुष कइन कत सु वत्त । तिय वदन धुम सरत्त ॥
सुनि कहत ओपम ताइ । सुष सम द्रप्पन झाइ ॥ छं० ॥ १५४ ॥
अति छीन वद्दल जेम । ससि तेज तरुनि कितेम ॥
सुनि इछिनि वर जोइ । कर छुट्टि मैला होइ ॥ छं० ॥ १५५ ॥
वर रूप सागर वट्टि । मनमथ्थ मथि करि कट्टि ॥
भरि एक सकान निस्सक । पुन लभ्भ लोइन रंक ॥ छं०॥१५६ ॥
द्रिग सहित देषिय जोइ । तन त्रिविध ताप न होइ ॥
सुष वढै दिपि तजि दंद । ज्यों जाय सो नंदकंद ॥छं०॥ १५७ ॥
चतुरान देषिय रिष्य । सातुक भाव विसिष्य ॥
न्त्रिप देषि चल्लिय सथ्थ । वर वेन सम लै हथ्थ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गुन चवन सुनन न कोइ । कवि थके ओपम जोइ ॥
ससि सरद कहि हंस लोइ । शिवगंग वहरी होइ ॥छं० ॥ १५९ ॥
चामीय करतिय जोग । संजोगितासी जोग ॥
सुनि इछिनी तजि रीस । लछिने बाल बतीस ॥ छं० ॥ १६० ॥
भय रूप अकार पीय । होवै न चीय न वीय ॥
ससि पंचमिय घटि वट्टि । चिय देषि पट्ट सुष चट्टि ॥छं०॥१६१ ॥
सम नही इसिमती जोइ । छिन गरुअ छिन लघु होइ ॥
देषत चीय सुरंग । तब भयौ काम अनंग ॥ छं० ॥ १६२ ॥

---

(१) मो दिप्पय ।

उप्पनौ देषि सु हंस। जौ लियौ वन कौ अंस ॥
सुनि कोकिला कलि गाव। भयौ बरन स्याम सुभाव ॥छं०॥१६३॥
ओपम्म दीजै आहि। सो नहीं ओपम चाहि ॥
बस चीय अरु निसि प्रीय। जुमि जम्म सम्हो जीय ॥छं०॥१६४॥
सैसव वासी नारि। जो भइ पुन्न संसार ॥
मति मान गरुअ समद्द। रति करी छवि वर रद्द ॥ छं० ॥ १६५॥
वह नहरि नारि न बीय। किहु नाइ रचि बुधि कीव ॥
संजोगि मन कढ़ि ओइ। छिन बीय द्रप्पन होइ ॥ छं० ॥ १६६॥
सम्मान प्रीति विपंग। सो पुच चिय मन अंग ॥
* * * * ॥ * छं० ॥ १६७ ॥

संयोगिता के नेत्रों का वर्णन

दूहा ॥ बाला संभरि बोल बयन। सीत सीत रति रंग ॥
राह केत मंगल बिचैं। जमुन सरसती गंग ॥ छं० ॥ १६८॥
मर बल अंबर बदन सौ। लोयन सो करपाइ ॥
ईह अपूरब चरि अरक। पंती अट्ठ कलाइ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

सुग्गे की उक्त बातें सुन कर इंछिनी रानी का अत्यंत दुखित होना।

मुरिल्ल ॥ कल कल बानी सुक्क प्रगासै। दृढ बोल वे कौतिक भासै ॥
जो को दीष दीह तो बालं। जंपी जेम तोहि तो कालं ॥
छं० ॥ १७० ॥

दूहा ॥ जं देही तौ दुष्षई। दुष्षह सुष्ष सरीर ॥
दुष्ष न अन्न सुष्षतं। किय सो कंनि धरीर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
सतम बरस सज्जिय अरय। दीन छीन सैसब्ब ॥
दृढ चीय अरु थिर अरथ। देह विधिनि लिषि देव ॥छं०॥१७२॥
राजन सुक्क पुच्छन विगति। भयो इंछिनि दुष राज ॥
हं माया रस भुल्लयौ। नहु पायौ गुन काज ॥ छं० ॥ १७३ ॥

सुग्गे का इछिनी को समझाना कि वृथा दुःख करने से क्या लाभ है।

गाथा ॥ जीव वारित रग । ओयास नथ्थिवं दुष्य देह ॥
भाविय भाविय गतन । कि कारन दुष्य बालाय ॥ छं०॥१७४॥

रानी इछिनी का कहना कि सौत भाव का दुख मैं भुला नहीं सकती।

दूहा ॥ सौत सोत चचल भय । भिरिग दोष अनुराग ॥
मनु चित नेन व्याहन चढे । दुज काननि पुछि भाग ॥छं०॥१७५॥
जौ पुच्छै सुष दुष्य मौ । तौ मौ एह अदेस ॥
देषि कहै बर बत्त मैं । किहि गुन रचिय नरेस ॥ छं० ॥ १७६ ॥

सुग्गे का सलाह देना कि यदि तू यह महल छोड़ दे तो तेरा दुख आप घट जावे।

सुनि बाला बर बेन सुहि । मन भेद बहु भेस ॥
जौ बछै इछिनि महल । तौ मेटै अदेस ॥ छं० ॥ १७७ ॥

इछिनी का महलों से निकल कर चलने की तैयारी करना।

कवित्त ॥ सुक पजर करि हेम । माल मोतीन मच जरि ॥
धन सुगध निकुरास । देस सप गुरिग हथ धरि ॥
दस हथ्थी इछनि रसाल । माल विय साल [1] उनगी ॥
सेत रत्न वर सुमन । मुकि करि गध सुरगी ॥
नर भेष नारि कचुकि सरस । दुइ दासी नर मज्जि मन ॥
क्रम चुनाति दुकाति विकम । वेयन दरसि सज्जल नयन॥छं०॥१७८॥

राजा का इछिनी को रोकना और मान का कारण पूछना।

अरिल्ल ॥ दस हथ्थी पजर धर मुक्किय । दिसि सजोगि राज दिठि रुक्किय ॥
नन तुच्छो न्रप पच्छिल रत्ती। ज्यों सर फुट्टै हस प्रपत्ती ॥छं०॥१७९॥

(१) ए क्रु को उतगी।

सुग्गे का कहना कि इस सब का कारण संयोगिता है।

दूहा ॥ वक्र दिष्ट संजोग की। सुक कहि न्रपहि सुनाय ॥
एक अचिज्ज इंछिनिय। मैं ग्रह दिठ्ठी राइ ॥ छं० ॥ १८० ॥

अरिल्ल ॥ गरजी तब ढौलक मघनं। वद्दि न धन नेह सयनं ॥
दोष आकोचन भोज पलायौ। अगि अंकुरिय विरह पनायौ ॥
छं० ॥ १८१ ॥

राजा का कहना कि रे पक्षी तु ही ने भेद किया फिर ऊपर से बातें बनाता है।

दूहा ॥ कहै सुक फुनि फुनि न लग। न्रिप सुनि कही न बत्त ॥
मंच भेद उप्पर करी। करत चित्त अनुरत्त ॥ छं० ॥ १८२ ॥

सुग्गे का इंछिनी से कहना अच्छा तुम दोनों निपट लो।

जब सुक न्रप कानंन लौ। तब पुच्छयौ वर जोइ ॥
जो कछु कह्यौ सु कंत सौं। ज्यौं कह्यौ कंत जो होय॥छं०॥१८३।

राजा के मनाने पर इंछिनी का मान जाना।

पद्धरी ॥ मति मान रूप लच्छीय मान। जीवन सु पीव आनंद थान ॥
करवत्त दोष कप्पन कुंवारि। वर कंक दिन्न वर सब्ब गारि ॥
छं० ॥ १८४ ॥

धुम्मर बद्दल दुष दमित पाइ। ज्यौं आनंद जाइ कुमलाइ पाइ।
अंडित्त मत्त तिहि चाहुआन। मुष रुद्धि चीय नन रुद्धि प्रान ॥
छं० ॥ १८५ ॥

राजा पृथ्वीराज को रानी के मान करने का दुःख होना।

चौपाई ॥ न्रप पर दुष्प अलप्प जु किन्नौ। ज्यौं बारि गयौ तरफै रहि मीनौ
दुष निद्रा निसि घट्टिय आई। तिहि न्रप सज्जा सपन्नौ पाई ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रात्रि के राजा पृथ्वीराज का स्वप्न देखना। स्वप्न वर्णन।

भावी गति आगम विगति। को मेटन समरथ्थ ॥
राम युधिष्ठिर और नल। तिन मैं परी अवथ्थ ॥ छं० ॥ १८७ ॥
मान करै मति हीन नर। जोवन धन तन रूप ॥
कौन न दिन द्वै है गये। बिना ग्यान रस कूप ॥ छं० ॥ १८८ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके शुक विलास वर्णनो नाम बासठवो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६२ ॥



आषेट चष श्राप नाम प्रस्ताव ।

[तिरसठवां समय]

कन्नौज में समस्त सगे सबंधियों के मारे जाने से पृथ्वीराज का खिन्न मन होकर उद्विग्न होना ।

दूहा ॥ जिन बिन न्टप रहते न छिन । ते भट कटि कनवज्ज ॥
उर उप्पर रघ्घत रहै । चढै न चित हित रज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ कटे कुटुंब मन मित्र । हितकारी का का भट ॥
कटे सूर सामंत । सजन दुज्जन दहन ठट ॥
कटे सुसर सारे सहेत । मातुलह पछ्य फुनि ॥
कटे राज रजपूत । परम रंजन अवनी जन ॥
निसि दिन सुहाइ नह न्टपति कौं । उच्च सास छंडै गहै ॥
अंतरति अग्नि उद्वेग अति । सगति सूल सालै सहै ॥
छं० ॥ २ ॥

राजा के मन बहलावे के लिये रानी इंछिनी का कहना कि हम लोगों को अहेर का रहस दिखाइए ।

दूहा ॥ तब सारे अंते उरह । कीनौ मनो विचारि ॥
न्टप अग्गै उच्चार किय । धरि मुष अग्ग पंवारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
चरन लग्गि युग जोरि करि । कह्यौ सुनहु महि इंद ॥
हमहि सिकार दिषाइये । मत्त म्टगादि मयंद ॥ छं० ॥ ४ ॥
क्यौं बराह वागुर रुकै । क्यौं बधहि बर बानि ॥
क्यौं छुट्टै छर डोरि कै । क्यौं जुट्टहि सक स्वान ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का कहना कि तुम लोग अपनी तय्यारी करो ।

विहसि बयन अलसित नयन । दिय दृष्टि ओर राय
गोठि करो गोरी सकल । तो आषेट षिलाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानियों का राजा की आज्ञा मानना।

कहि परमान प्रनाम करि। रानिय मानिय बात ॥
सकल षरच संजोगिता। साज सु जोवत प्रात ॥ छं० ॥ ७ ॥

राज महल के प्रभात की आभा वर्णन।

पद्धरी ॥ हुअ प्रात रात पति अस्त हुअ। उड़गन सु गए तजि बिना धूअ॥
पसरे पवंन तर वरन पान। जोगिंद जग्य पूरे विधान ॥ छं० ॥ ८ ॥
झल्लरि झनंक भई देव द्वार। षुल्ले किनंकि ग्रह ग्रह किंवार ॥
नर नारि वारि फिरि साज कीन। झट झट झटक्कि पट कूल लीन।
छं० ॥ ९ ॥
उठि प्रात गात दुजराज मंजि। पढि वेद मंत्र करि देव रंजि ॥
गत बंध धंध छुट्टिय सुधेन। लीनौ अछादि गौरै न गेन ॥
छं० ॥ १० ॥
नौबत्ति निसान दरवार बज्जि। रिफ रोर चोर गय कुहर भज्जि ॥
सहनाइ सुरति कीनौ संचार। गायन ललित गरवर उचार ॥
छं० ॥ ११ ॥
पावन प्रसाद षुल्लै पुरान। अविछन्न धार हर होत न्हान ॥
सत सती पाठ पाठी करंत। जप ध्यान इक्क नव ग्रह धरंत ॥
छं० ॥ १२ ॥

रानी संयोगी का शैय्या से उठ कर गोठ की तैयारी के लिये आज्ञा देना।

तिहि बार जागि रानी संजोइ। दिय हुक्क बोलि बड़वार दोय ॥
झट लेहु साह झगरू बुलाइ। मागै सु द्रव्य दीजौ गिनाइ ॥
छं० ॥ १३ ॥
करियो अनेक पक्कवान बानि। मक्कै न कोइ जिन जाति जानि ॥
सौरंभ संवारि मिलद्धि अनेक। घन सार सार म्रग मद विवेक ॥
छं० ॥ १४ ॥
एलचि लवंग संगति संवारि। स्यामा समेत सद सुद्धि डारि ॥

रा मटी रग रचि मिरचि-देहु। पुनि सकल भाति गोरसहु लेहु ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ लेहु सरस सकर पहिल। पाडी पड अनंत ॥
विजन वहु बनवाइयौ। लागे गहर गनत ॥ छं० ॥ १६ ॥
पानि पथ पहु चाइयौ। सकल वाटिका बीच ॥
कीजहु बहु आचार सौं। दरसन लहै न नीच ॥ छं० ॥ १७ ॥

रनिवास की कतिपय दासियो के नाम।

चोटक ॥ सुनि सद इतै श्रुति स्वामिन के। नमि तुग चले गज गामिन के॥
गुनवेलि सहेलनि बीच बडी। न्रप कै चित जाचप कोर गडी ॥
छं० ॥ १८ ॥
मदनावति मालति मोहनिय। कमला विमला सग सोहनिय ॥
बुधिलाल लिलावति लाजमती। क्राम माल मराल गवन्न गती ॥
छं० ॥ १९ ॥
पठ मजरि पजरि नैन नगी। सुर हसिय बसिय पेम पगी ॥
ललिता कलिता चलिता सु सपी। रतनावलि रामगिरी निरपी ॥
छं० ॥ २० ॥
जमनी जिय वल्लभ जोति जगी। कुंज वेला जुही सु हिया अदगी॥
गुनकेलि गुलाल अनाल भुजा। कच लबिन कोमल देह सुजा ॥
छं० ॥ २१ ॥
मधु माल तिमार सुमार सुपी। मुगधा मधु वेनि मयक मुपी ॥
चित चोप चवेलिय चप कली। सब सेवति स्वामिनि भाति भली॥
छं० ॥ २२ ॥
धर माकर मानव नार गिया। वलभा कलभा सुर सार गिया ॥
हरदासिय रासिय रूप जिती। निकसी करि वेन प्रमान तिती ॥
छं० ॥ २३ ॥
जितनी सिप स्वामिनि पास लही। तितनी भ्रगरू सहु जाय कही॥
छं० ॥ २४ ॥

झगरू बंधुकों का सब सामान ले जाकर पानीपत में गोठ का सामान रचना ।

चौपाई ॥ झगरू साह साज सब लई । सो पहुंचाय नीरपथ दई ॥
बारी सघन वारि बहु जहां । बैठि गोठ विस्तारी तहां ॥ छं० ॥ २५ ॥

अग्नि कोण में रनिवास के डेरे लगना ।

सीत भीत आदीत । वास अगनेव कोन किय ॥
गरि वारि वारिज्ज । जमि रहहि निसानिय ॥
.ष लुट्टहि संजोग । जुवति जे भोन भोन सुष ॥
बरह वियोगिनि अंग । अग्गि ज्वाला असंषि दुष ॥
क्रीय चक्क चिंता विषम । दिघघ रैंन दारुन दहैं ॥
।नै कि प्रान कै प्रान पति । आनि कानि कासों कहैं ॥ छं० ॥ २६ ॥

र तैयारी हो चुकने पर पृथ्वीराज का रानियों सहित पानीपत की यात्रा करना ।

तन रिति मन मृगया करिय । चढ़न कहत चहुआन ॥
आगैं आगैं अंगनां । पानीपंथ मिलान ॥ छं० ॥ २७ ॥
एक मास क्रीड़ा अवधि । करिय संभरी नाथ ॥
गोटि साज पहिलैं पठय । चल्यौ रागिनी साथ ॥ छं० ॥ २८ ॥
सलष सुतादिक आदि दै । राज लोक लै सथ्थ ॥
पूजि प्रिया सगपन मिलै । चली सु पानीपथ्थ ॥ छं० ॥ २९ ॥
लाल ढाल सुषपाल महि । ड़ोला रथ्थ रसाल ॥
सावन सरित उमंडि ज्यौं । चलै चली त्यौं बाल ॥ छं० ॥ ३० ॥

संपूर्ण समारोह के साथ रनिवास की यात्रा ।

।म ॥ किती गज ढालन बाल चढाइ । किती चक डोल अमोल बैठाइ ॥
किती सुषपाल विसाल अरोहि । सुषासन आसन पासन सोहि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

(१) ए. कृ. को.-बाज ।

कितौ रलकौ पलकि महि वैठि । कितौ मकना ढकना तन पैठि ॥
कितौ रथ पथ्थ चढौ चलि मान । मनों विबुधौ अव रोहि विमान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

चिहू दिसि भासिय दासिय सथ्थ । गहै सब साज सिंगारन हथ्थ ॥
कितौ डिढडा विड वाडिढ पाय । कुंपी इक कंध सुगधनि ढाय ॥
छं० ॥ ३३ ॥

डरै उर स्वामिनि तें चल चूक । चलै लह आतुर सीस सिंदूक ॥
कितौ छर छग्गर कध न लीन । चली हय हकि लचै कटि छीन ॥
छं० ॥ ३४ ॥

भनभंभनन भभ नसद्द सुनंत । घन घन घुघ्घर घोर गुनंत ॥
घन घन ककान बज्जि सुढार । गन गन धावत जात न पार ॥
छं० ॥ ३५ ॥

जगस जगेव जराव वसन । डग मन जानि अरुन्न किरन ॥
सज्यौ मनु जच्छि प्रजापति जाग । चल्यौ सुर नारिन कौ अनु माग ॥
छं० ॥ ३६ ॥

मनों मष मंडिय पंडव भूप । जुरे नर नारिन इंद अनूप ॥
चल्यौ जलि पोजन कौ सथ संग । नही जिनके सब अंग अनंग ॥
छं० ॥ ३७ ॥

सभ्रै कर कंचन लट्ठिय कट्ठ । उठै भुकि कं बहु बोलत तथ्थ ॥
चले तिन संग चढे गुर राम । वडे वपु वेस वडे गुनधाम ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चले दिन दिघ्धन जे रजपूत । चले चढि साहि सिरोमनि सूत ॥
चले कुल कायथ चौदह जान । भयौ इतमाम करे जग कान ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सबै सित उज्जल अंबर साजि । मनो निकले कल हंस विराज ॥
*　　*　　*　　*　　*　　*　　छं० ॥ ४० ॥

(१) मो हस्तलेख ।　　(२) ए कृ को मेरे ।

रानियों का शिविर स्थान पर स्थानापन्न होना।

दूहा ॥ जथ्थ मंडि मगरू करिय। तथ्थ गयौ रनवास ॥
बाग बावरी बहु जहां। कूप ताल [1]पनिवास ॥ छं० ॥ ४१ ॥
बारी में भारी बनिक। रच महल सुधराय ॥
मनों सोभ कैलास की। लीनी लोभ [2]छिंडाय ॥ छं० ॥ ४२ ॥
कहै रवनि प्रथिराज कों। उर पुर धरि अनुराग ॥
चलौ बिलोकैं चिहु दिसा। पानि पंथ कौ बाग ॥ छं० ॥ ४३ ॥

शिविरस्थान के उपवन की शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ बनी सुब्भ बारे फले [3]ब्रष्य नेकं। रटै बैठि पंषी सु भाषा अनेक
ठटे अंब नीबू सु जंबूव रोसं। लुटै भूमि [4]जूमी हरे हेरि हो
छं० ॥ ४४ ॥
कहूं चंपकं चारु चेची चिनीयं। मनों दीपकं माल मनमथ्थ दीय
कहूं नालि केलं रुवेलं विदामं। सुकं सारिका टोल बोलंत ता
छं० ॥ ४५ ॥
कहूं [5]पक्क डारं अनारं दरक्की। कहूं सोभ सारं सु तारं तरक्की
कहूं कंछुहारी सुपारी निवारी। कहूं केवरा केतकी भीर भारी
छं० ॥ ४६ ॥
कहूं लाल जालं गुलालं सु पुंजं। कहूं जाति पंती भरं भोर गुं
कारै केलि में केलि मोरं चकोरं। कहूं कंकरन्नी करन्नान ओर
छं० ॥ ४७ ॥
फलै फाल से फैलियं लोंग वल्ली। दलै दुष्प साषं सु दाषं प्रचल
कहु चंदनं कंदनं ताप तापं। जहां काम क्रीड़ा गहै बान चा
छं० ॥ ४८ ॥
कहु पंडुरं डार बैठे परेवा। कहूं बीज पूरी सिंदूरी करेवा ॥
कहु सारनी फेरिकै बारि ल्यावै। कहूं नाग वल्लीन[6]कूं नीर प्या
छं० ॥ ४९ ॥

(१) को कृ.-पतिवास। (२) ए. कृ. को.-छिनाय। (३) ए. कृ. को.-वृछ।
(४) मो झूमी। (५) मो.-कप्प। (६) मो.-कों।

कहूं घट्ट यट्ट रहट्ट चलावै। कहू मालनी बाल माला बनावै ॥
कहू ढेंकुरी ढारि कै बारि काढ़ै। कहू थान उचो सचै नीर चाढ़ै ॥
छं० ॥ ५० ॥

दूहा ॥ चरस सरस छवि ढेकुरी। रहट बहत बसु जाम ॥
बापी कूप तड़ाग तें। भरत चहबचा ताम ॥ छं० ॥ ५१ ॥
इहि बिधि सब रनिवास ने। सुष पायौ लषि बागु ॥
जिन निरषिय तिन कहिय यों। आज हमारो भागु ॥ छं० ॥ ५२ ॥
बाग लयौ रनिवास नै। रानी आयौ सेय ॥
पान पान अरु सेज सुष। मुष मनुहारि करेय ॥ छं० ॥ ५३ ॥

रानियों के पानीपत पहुंच जाने पर पृथ्वीराज का कूच करना।

रानी पहुंची जानि कै। राजा चढ्यौ तुरंग ॥
पायन पेलै बोड़ज्यों। धाय न जाय कुरंग ॥ छं० ॥ ५४ ॥
न्रपति चढे सब चढि चले। जे भरवक बिरद ॥
घर ढहे अरि दल दलन। जे कहे गजरद्द ॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी और उनके साथी सामतों का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढि चले अञ्जुअ राव। सिर सेत छत्र सुभाव ॥
कूरंभ पंभ चमून। जम रूप जोनि जमून ॥ छं० ॥ ५६ ॥
मुह अग्र मोरिय बीर। न्रिव्वान आनन नीर ॥
चढि चले चंपि चंदेल। हय मुक्कि मंडित पेल ॥ छं० ॥ ५७ ॥
तिन सिद्धि संभरि वार। जग मज्झ एक जुझार ॥
उर साल साहि सहाव। मुष चंड मंडित चाव ॥ छं० ॥ ५८ ॥
लिय संग रंगह स्वान। इक इक्क संग द्वै ज्वानि ॥
अनरोम के बहु रोम। इक मात तात न षोम ॥ छं० ॥ ५९ ॥
मुष रत्त कोमल कान। द्रिग रत्त गति गुर रान ॥
जोगिंद निंद सु भाय। मग धाय जोइ न पाय ॥ छं० ॥ ६० ॥
पटकात बाघ बराह। झटकात रोझ अग्गाह ॥
पट जरै जेब जराय। रज सकारन डुरवाय ॥ छं० ॥ ६१ ॥
इक सकही आरोह। इक पालिकी प्रति सोह ॥

रथ सथ्थ चीती वान। चष ढंकि पथ्थ पयान ॥ छं० ॥ ६२ ॥
जुर राह बाज सिचान। तुरमती तेज उड़ान ॥
पिठका कुही चष ढंकि। पुट चंच पदनष वंक॥ छं० ॥ ६३ ॥
फुनि लै फ फंदैत कुरंग। जिन अंग सोभ सुरंग ॥
कुम संत हुंकत हेरि। दस कोस आवत फेरि ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ पानी पंथह राय। आय षेलत आपेटक ॥
फिरि पहार उज्जार। देषि बंधा आगेटक ॥
नै विहंड वन हंकि। संकि नव षंड मंड वर ॥
मूर सूर बाधंत। बाज छांडत छंडि वर ॥
वेधहि बराह उच्छाह मन। तानि डक्क सर डक लहै ॥
पावै न जान सावज अवर। ऐन सैन मेलै गहै ॥ छं० ॥ ६५ ॥
एक सत्त बाराह। बान वेंधे कि स्थान गहि ॥
सावज अवरन हंसि। नंस कीनौ म्रगादि महि ॥
पंछि पंछ पंछीन। मारि संघारि बहुत किय ॥
सु से स्रगाल को गिनै। छेद छिकार मार जिय ॥
बीभच्छ बीर रस रुद्र मचि। कायन कोसु पिष्षी न मन ॥
पच्छलै जाम विस्राम कहु। फिर्यौ संग सामंत गन ॥ ६६ ॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का गोदान करवा कर यमुनाजी का स्नान करने जाना।

डेरा न्रप आवंत। सुनत रानीन सुष्ष हुअ ॥
सपजि रहे सब अन्न। धाय प्रथिराज सुद्धि दिय ॥
सुनि मरदन कौ हुकम। होत मरदनी वोलि लिय ॥
वय किसोर थन थोर। कच्छि अच्छरि समान त्रिय ॥
तिन नेह देह मलि देहु सुष। बरषि मेह स्रंगार रस ॥
जल जमुन उष्ण अस्नान करि। चल्यौ भूप संग विप्र दस ॥
छं० ॥ ६७ ॥

राजा का स्नान कर के गोदान करना।

कासमीर करि तिलक। श्राद्ध तर्पन अंजुलि दिय ॥

देव सेव किय विप्र । अप्प दडोत पच किय ॥
तुलसीदल हर अपि । सत्य असिवर की म गिय ॥
चरनोदक मुष धार । राज बैठौ वजर गिय ॥
सत धेन शृग सोवन्न मढि । षुर रुप्पति राजत अति ॥
शृंगारि दत्त दिय दुजुन कह । पठहि पाठ जे वेद प्रति ॥ छं० ॥ ६८ ॥

कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करवा कर राजा का सब सामतों सहित भोजन करने बैठना ।

नव कन्या पहिराय । दान नवग्रह कौ कीनौ ॥
इच्छा भोजन पूछि । सहस विप्रन कौ दीनौ ॥
भोजन किय जिहि ठौर । सब्ब भर तह पधराए ॥
नित्य कारम करि इतौ । तहौ अप्पन प्रभु आए ॥
पावरी पाय जूरौ सिरह । पौरोदक अरु पीतपट ॥
कर माल जपत नँद लाल मुष । गुण विसाल सँग विप्र यट ॥
छं० ॥ ६९ ॥

गो गोमय चोको । विचित्र चित्रे अति चावक ॥
लीक धवल धर हरित । धरी सिगरौ भरि पावक ॥
कोमल आसन म डि । मडि बाजोठ अग्र मुष ॥
तहा बैठौ चहुआन । गग सम्हौ उत्तरँहु ष ॥
सामंत सूर दच्छिन दिसा । पति मडे सोभत अति ॥
समुहो चद बरदाय वर । सबै दिष्षि यहि दैव भति ॥ छं० ॥ ७० ॥

राजसी भोजन परोसे जाने का वर्णन ।

जेवनार पूरान । कियौ पडित प्रवीन दुज ॥
श्रीरधुनाथ चरित्र । गाय भंजनह वीस भुज ॥
नूत नूत पल्लव पयारि । पत्रावलि मडिय ॥
धोय तोय बिन छिद्र । धरे दोना ढिग ठडिय ॥
कोविद उदार उज्जल दुजन । परुसन कौ आरभ किय ॥

(१) ए क्रु को मुख ।　　　　(२) ए कृ को गठिय ।

भरि छाव काव को कवि कहै। प्रथम अनूपम पूप लिय ॥
छं० ॥ ७१ ॥

परस की विधि और जिनसों का वर्णन ।

दूहा ॥ पूप अनूप परूसि पुनि। पुरी सुष्प पुरि मेलि ॥
ललित लूचई लै चलै। [1]ऊँच रती बिधि बेलि॥ छं० ॥ ७२ ॥

पकवान और मिठाई।

मोतीदाम ॥ भरि [2]पीठि भींतर लोन सिलाय। कचौरिय मेलि चले दुजराय
धरे निसराज सिषा जनु फेरि। धरे ढिग वातर भाँवर हेरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुते बर घेवर पैसल पागि। लषै चष [3]फेरि गई उर आगि ॥
जलेबनि जेब कहै कवि कौन। महा मधु माठ मिटावन मौन ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सुधारस फेन कि फेनिय आय। तिनं पर बूर गरूर मिलाय ॥
करे कर सक्करपारे सुधार। महा दुति मुत्तिय सेव सिधारि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

बनी तिय नारि कसार भरित्त। कलपानिय वानिय पागि धिरत्त॥
करी सबनी सब ही महि सार। गिंदोरन और करै सब आर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

धरे धुरमा अरु पिंडषजूर। बिही अषरोट निही सुष पूर ॥
नय नसपातिय पैठै पकाय। दह्यौ रिय दीनिय भूषन गाय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पगे मधु पान पनंगह बेलि। दए गुर सक्कर अम्रत ठेलि ॥
बिए पकवान धरे बहु भांति। धरे तिन ऊपर पापर आनि ॥
छं० ॥ ७८ ॥

हा ॥ आनि सँधाने सब धरे। मूल फूल फल कंद ॥
मैदा के पैदा करै। सुमन मेलि मकरंद ॥ छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए.कृ.को.-उंचरची। (२) ए.कृ.को.-परि पिछिय। (३) ए.कृ.को.-परि ।

अचार वर्णन ।

वचनिका ॥ करि कंज पुंज धारे। रचि चंपक सु धारे ॥
बहु वेलि है चॅवेली। करनी कनैर केली ॥
बकुल बंधूक आने। घनसार डार साने ॥
मचकुंद कुंद कीने। करि केवरे नवीने ॥
कल केतकी किति की। पुनि पाडर जिति की ॥
जुहिय जगत जैनी। भ्रम भूलि भौंर सेनी ॥ छं० ॥ ८० ॥

चरवन वर्णन ।

दूहा ॥ भांति भांति चरवन रचै। चना चिरञ्जी चारु ॥
चौरा चाहत चैन [1]चष। मिलि मृग मद्दु घन सार ॥छं० ॥ ८१ ॥
करे कसेरू करहरी। गोंद गटा ठट ठोनि ॥
पय के बहु धटि कर करे। कर कपूर [2]पुट बानि ॥

तरकारियाँ और गोरस का वर्णन ।

भुजंगी ॥ परी पीर औटली करी पीर ताकी। बियो जपियै कि सुधा दासिजाकी॥
महा सहि घृत घोलि बूरा [3]मिनाई। सवै सूर सामंत जीमैं सराई॥
छं० ॥ ८२ ॥
परे पट्ट षेरे रु षाटे जुडाने। बरा बिन्न राका सम सोधि आने ॥
किते बिंजन बेसन के बनाये। करना करौंदी कि [4]किंदुरे गनाये॥
छं० ॥ ८३ ॥
नए नूत नीबू नए नालिकेरं। रची नारिंगी नासपाती सु मेलं॥
धरे अम्रता कैथ सथ्थ बिजोरे। मनों डार तें पारिके आनि मोरे॥
छं० ॥ ८४ ॥
धारार केढी मह्नि भीजी पकौरी। बरी मूंगरी [5]पाखरा पट्ट मोरी ॥
महा मद्दु मैदान की मेलि रोटी। कछू जामिनीनाथ ते जोति मोटी॥
छं० ॥ ८५ ॥

(१) ए कृ को सुख। (२) ए कृ को पुर। (३) ए कृ को बनाई।
(४) ए. कृ को किदूरी। (५) ए कृ को मापकी।

धरे भोजनं मंडनं आनि माँडै। भिगे सक्करा पीर सों सेन छाँडे
रवा केरु आमोदनं देव नाए। घने घृत्त अंगा करौ पोषि लाए
छं० ॥ ८६ ॥

काढी कट्ठ मैदा पिठी मेलि पाटी। वनी वेटई अंगुली पात चाटी
रची रोटियं मिश्रियं चैन पायौ। तहां सालनं आन रानी पठायौ
छं० ॥ ८७ ॥

लै लै विप्र दौरे सुरंधेर तारू। बने सूरनं वेगनं मेलि मारू।
करी वानि विंबा गव्चौरा परोसे। बरे लै धरे वीरजे वेस रोसे
छं० ॥ ८८ ॥

सदन सेमि सँ मांच चंडा चलाए। ढका देत से टेढ साढं किधाए
कंकोरा करेला सुरेला सराहे। भली भांति भाड़ानि के ढंड चाहे
छं० ॥ ८९ ॥

रवा संफरी छौंकरी लैधरी ते। कली कचनारं भलीजे करीते।
धिरत्तं भरत्तंभ टाकौ सुधारयौ। नहीं बाकलं बिजूरा में पधारयौ
छं० ॥ ९० ॥

रच्यौ राइ तौनाय तौ लोंग मिरचें। धना सुंठि लै राइ मिस्राय सिरचे
परोसे नवीनं चनाके निमोना। मिरी मेलि नींबू धरे केलि दोना
छं० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ अर उर कार परिकार लए। संभरिवै मुष माँगि ॥
जनु [1]पटुता करि पांनिसों। षटरस राधे षाँगि ॥ छं० ॥ ९२ ॥
सुर सँधानौ सुर जनौ। धऱ्यौ दही सों सांधि ॥
फूल फूल फल के जिते। तिते करे कार रांधि ॥ छं० ॥ ९३ ॥

दाल भाजी और खटाई भरी पकौड़ियों का वर्णन।

त्रोटक ॥ सरसों सूआ के साक जिते। गिरिराज रुरायिय रांधि तिते ॥
बथुआ बड़ साग बवोत बने। बरबाय बिरंग सवाद सने ॥
छं० ॥ ९४ ॥

(१) ए. कृ. को.—वहुता।

चनका अरु पोचिय चूक बन्यौ। तहा [1]सौंरिय त्योरन जाय गन्यौ
लगि डाड पयाल पयाल कसौ। मघवा उतकै हीय बालक सौ॥
छं० ॥ ९५ ॥
दिव दारू सुदोर है साकन मे। सुर बातिय मे थिय पाकन मे॥
नव पल्लव लीव रु नाय धरी। कटई गति काढि सु दूरि करी॥
छं॥ ९६॥
भरि भाजन भात उलॆंड इतौ। भर भीमन जेइ सकत जितौ॥
तवही [2]पसवायत भत्त लिय। सुकमार सपेद सुगंध किय॥
छं० ॥ ९७ ॥
अरुन वरुन पुनि पीत रच्यौ। इक इक्क सन सुष कोच सच्यौ॥
मसुरी मुंग माष चना विधि चौ। दधि धीय [3]सुधारियदारि सुचौ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रसरा मठदे पुट केसर कौ। कछु आननही सनमे सरकौ॥
वरु वारि बरावर धृत्त लयौ। [4]सदसुभ्भित सोसुर भौन अयौ॥
छं० ॥ ९९ ॥
कुसल सुसल समधार परै। अनपडित मानहु गंग झरै॥
अपनौ वटि वास तिमास परे। हठिवास सुवासनि आभ भरै॥
छं० ॥ १०० ॥
चकतार अपार सवा दल सै। वनि भूति अभूतिनि वद गसे॥
सुहित उर हूल काय परस। द्रिगदेषि सरवक सेत रस॥
छं० ॥ १०१ ॥
मधु मौन रचे पचि भति इति। कनवज्जनिय कनवज्ज जिती॥
घन पड मरग्गल सो सपजे। जिन बासन वानिक छम्म तजे॥
छं० ॥ १०२ ॥

पछावर की परस का वर्णन।

दूहा॥ जेइ अधाने जठर पर। जलपिय फेरति पानि॥
तुच्छ षुधा पाछैं रही। तव लई पछावरि वानि॥ छं० ॥ १०३ ॥

(१)मो० त्यौंरिय। (२)ए कृ को—पसकायत। (३)ए कृ का—सुधारसदारि। (४)ए कृ को—दस।

मोतीदाम ॥ बढ़ी रुचि देषि कढ़ी कर लेत। बिचैं मिरचैं मिलि लौंग समेत
बिकत्त तिकत्त सुषट्टिय षार। लई सुप मंगि हुई मनुहार ॥ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

करिवां काठ पत्तनि की सब सानि। बंध्यौ दधि आनि धस्यौ ढिग छानि
मट्ठा दधि छानि रुबानि बघारि। जहां मिलि जीर धनं धनसार
छं० ॥ १०५ ॥

पनं बहु जंबुअ अंबुल मेलि। निचोरिय दारिम दाष सुठेलि ॥
गऊ पय औटिय धार उभांटि। धरे भरि भाजन मिश्रिय बांटि
छं० ॥ १०६ ॥

मिली मधि जारक षारिक चूक। सवारिय झारि भए भष भूक ॥
भए चिपतें सब सामंत साथ। कहैं मुष किंत्ति रहे षचि हाथ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सँजोगिय स्वामिनि कौ परधान। पंधा गहि प्रीति करै सनमान
कहै सब सथ्थ भई श्रम भीर। क्षमा करियौ चित चूक सधीर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कहै सुष सामंत श्रीमुष राज। भए हम पूरन पावन आज ॥
तहां तप तो इक हथ्थ धुवाय। अरच्चिय दच्छि करंदम काय ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दए मुषवास कपूर सुआइ। मँहै अप अप्प मिलावन जाइ ॥
जिमावत ओसर यों रनिवास। इसी भँति राज रह्यौ इक मास
छं० ॥ ११० ॥

भई चढती चढती मनुहारि। दिन प्रति हास बिनोद [1]उचारि।
छं० ॥ १११ ॥

आखरी दिन चलते समय राजा का शिकार करने की तैयारी करना और प्रोहित गुरुराम का मना करना।

दूहा ॥ चल्यौ अंत कै द्यौस निप। बरज्यौ प्रोहित राम ॥
कुसल भई अरु रस रह्यौ। क्यों न पधारहु धाम ॥ छं० ॥ ११२ ॥

(१ ए. कृ. को.-उधारि।

मृगया सदा विगार हुअ। सुनौ कहूं समुझाय ॥
आप लह्यौ रवि राज पै। दसरथ पंडव राय ॥ छं० ॥ ११३ ॥

राजा का शिकार के लिये तैयारी का वर्णन।

हंसि नरिंद हय पर चढ्यौ। भई निसान धमक ॥
सत्त समंद कलंमलै। सकर पित्त चमक ॥ छं० ॥ ११४ ॥

कवित्त ॥ चमकि रुद्र चष पुल्ले। चमकि सिर ढुल्ले सेस महि ॥
भरकि उठे दिगपाल। डरकि दिगपाल सोच रहि ॥
हलकि हल्ले गिरि मेर। हलकि कुब्बेर संक हिय ॥
धरकि धरा धइराय। धरकि दिग्गजनि [१]कंप किय ॥
आषेट हेट प्रथिराज की। एक मुष्य कवि को कहै ॥
उडि धूरि पूरि [२]अमर भन्यौ। रविन व्योम मंडल वहै ॥
छं० ॥ ११५ ॥

काष गगन चिन्ह। चिन्ह नन घन सुझ्झै ॥
नह वह भरि कान। आननन तान सु बुझ्झै ॥
सहस सोरषा पुष्प। सहस द्रिग सहस हथ्थ की ॥
दलि तरु चकित छिन्न। भिन्न भइ अन्न अथ्थकी ॥
हय गय पयाद पायान मय। अकथ कथ्थ कविचंद केहि ॥
डगमगहि पिंड ब्रह्मंड को। आज राज प्रथिराज रहि ॥
छं० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ रह्यौ नहीं सभरि धनी। चढ्यौ चित्त अति चाव ॥
उगमगि पहुमि पयान भर। ज्यौं जल रीती नाव ॥
छं० ॥ ११७ ॥

शिकारी सामान, वन की शोभा और बनैले जीव जन्तुओं का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढि चल्यौ चाड चहुआन भान। सुर नाग नरनि भूल्यौ वसान ॥
धमकी धरन्नि पुरतार भार। बढि सक लक ससार सार ॥ छं० ॥ ११८ ॥

(१) मो चंपि　　(२) ए कृ को अंतर।

लिय डोरि डोरि संकरन खान। चढ़ि चले रथ्थ पथ चीतिवान॥
अबयरत्त हत्थ हुंकरत मुष्ष। फँद बंध अँग संग्राम रुष्ष॥
छं० ॥ छं० ॥ ११९ ॥

जुर बाज कुही तुरमती धूत। को अन्य गनै पंषी अभूत॥
चहुआन गयौ उद्यान दूरि। गिरवर उतंग बन सघन पूरि॥
छं० ॥ १२० ॥

उज्जार जार सुभझ्झै न मग्ग। भरि सकै कौन भर डक्कि डग्ग॥
सीस [1]पसि रत्त सामर सिंघारि। कहुं साष ताल सागोन सार।
छं० ॥ १२१ ॥

कहुं खीक गुंड गिरर छानि भार। कहुं बेलि बेर बेकल अपार।
कचनारि कोह गिरि नारि आरि। गुरजैन गैन परसंत धारि॥
छं० ॥ १२२ ॥

अनछिद्र छांह सों करिय छोर। कपि कच्छ बेलि कपि त्याग ठौर
कूं परित रत्त करलैं सरस्स। षट तीन भार तरु तें तरस्स॥
छं० ॥ १२३ ॥

फुलित फलित फवि चारु फेर। वसु जाम ग्राम पसु पंछि घेरि॥
कहुं मृगमयंद मातंग मत्त। सु सल्ल सियाल सूकर भिरत्त॥
छं० ॥ १२४ ॥

कहुं रीच्छ इच्छ सोवंत छांह। बंदर लंगूर कंगुरन मांहि॥
फूंकार फनिंद तर को तरन्नि। सब सकै कोन कोविद बरन्न॥
छं० ॥ १२५ ॥

हा॥ हरि हरि हरि बन हरित महि। हरन पिष्षयै अंषि॥
सारँग हकि सारँग हने। सारँग कारनि कारष्षि॥ छं० ॥ १२६ ॥

शिकारी पलुए जानवरों का कौतुक।

वित्त॥ आषेटक रमि राज। बाज जुर कुही छंडि कर॥
स्येन सेन बाराह। हनहि बरहक्कि तक्कि उर॥

(१) ए. कृ. को परि।

बागुरी परि उरझत। रोझ सांमर असप सुस ॥
और जीव को कहै। उहै भेडलह थाल कास ॥
वन वीच कीच मचि ओन वहि। मनिन चद परिमित लहै ॥
सोमेस नंद आनद सर। क्रोड कोप जतुन सहे ॥ छं० ॥ १२७ ॥

जंगली जानवरों की स्वच्छन्दता और उनके शिकार होने का वर्णन।

लघुनराज ॥ वाराह राह रोकय। वधिक्कय विलोकय ॥
हस्ति दूब अंकुर पनत दड्ढ वकुर ॥ छं० ॥ १२८ ॥
षुर अवनि[2] उध्धर। ललित्त वेलि विध्धर ॥
कली कुसुम मजर। अरून्न नील पिंजर ॥ छं० ॥ १२९ ॥
तजत ते मधुकर। करत मुष्प हुकार।
रोमंच अग्ग उभ्भर। डरत देषि सुभ्भर ॥ छं० ॥ १३० ॥
लचत भूमि उद्दर। वरन्न स्याम वद्दर।
सपेद दंत कातय। सुजानि वग्ग पतय ॥ छं० ॥ १३१ ॥
टगट्टगत नेनय। तारक्कजेम रेनय।
अहार कद मूलय। भयौ सुकाध थूलय ॥ छं० ॥ १३२ ॥
उढाल चीय भूलिय। फिरत नद्द कूलय।
न्त्रिमल्ल नंद वीचय। करत लोटि कीचय ॥ छं० ॥ १३३ ॥
सुनत कूह सेनय। लग्यो सुकानं दैनय।
चमक्कि चष्प पुल्लय। इकाल उद्धि चल्लिय ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भिरत छडि भज्जय। निरक्खि दैन रज्जय।
प्रपत्तयौ धनुद्धरी। सिकार भाल गुद्दरी ॥ छं० ॥ १३५ ॥
हरष्षि नाथ सभरी। ज्यों भोर मेध डंवरी।
हलक्कि फौज उप्परी। दिसा दिसान विप्फुरी ॥छं०॥१३६॥
पंवार जैत अग्गरी। हते न्त्रपत्ति अग्गरी।
विकट्ट जाल जगरी। अठार भार पगरी ॥ छं॥ १३७ ॥

(१) मो-जत्रन। (२) मो उप्परं। (३) मो वैतय।

गये सुचूकि ढाहरं। बबक्कि उठि नाहरं॥
* * * * * * ॥छं०॥ १३८॥

जैतराव का सिंह को मारना।

कवित्त॥ सोर घोर सुनि श्रवन। रवनि रवनीय मंद जगि॥
निडर अंग ऐंडाय। बाघमुख पग्गि क्रोध अगि॥
अधर दंत चाटंत। चाटि हथ्थल हुस्यार हुअ॥
पटकि पुंछ मच्छर दहारि। उच्छारि उछंग भुअ॥
प-यौ सुजैत धाराधिपति। अति सरोस पटक्यौ सुधर॥
उठि हक्कि हाक ओंकार हन्यौ। गयौ तुट्टि करिवार कर॥छं०॥१३९

बलिभद्र का सिंहनी को मारना।

सिंघ सँधा-यौ पिष्षि। षिंगि सिंघन बबकारिय॥
समुष राज प्रथिराज। निरखि आवत ललकारिय॥
मनहु माघ केमास। मेघ काल बायनि बिस्तारि॥
यों कंपै सह काय। हाय मुष उटहि न ससार॥
वलिभद्र राय बलिवंड धपि। कर क्रपान वाही सु बर॥
उछरंत लंक कटि अद्ध परि। अद्ध आय लग्यौ सु कर॥छं०॥१४०

अध लग्यौ कर आय। ताहि जम दड्ढ घाय किय॥
भाल जाल महि हन्यौ। छेदि बेहाल ठेलि दिय॥
घरी च्यार सब सथ्थ। रह्यौ थहराइ लग्गि टग॥
ग्रेह देह अरु नेह। गए भय भूलि मग्ग जग॥
हँसि कहै राज कविचंद सों। ए भर अरि असुपत्ति सिर॥
करतार लज्ज रष्षै कलह। कटे कन्ह से जंग थिर॥ छं०॥ १४१

राजा का गत घटना पर सोच करना परंतु कवि का भुलावा देकर उसे शिकार से फिराना।

कहै चंद कवि तथ्थ। राज गत बत्तन सूचहु॥
अहै सु मानुहु दिष्ष।। सोग संतापन मूचहु॥

धरहु मन्न अग चलहु। पग्ग पब्बय उज्जारहि ॥
बहु वराह रुकि राह। दाह वाह बर मारहि ॥
भुम्माय वत्त चहुआन कौ। चल्यौ भट्ट मुष अग्र धरि॥
न्नम्यौ न मिटै न्निम्मान कछु। तहा इक्क आइय ववरि॥छं०॥१४२॥

कुछ सामतों का राजा को एक सिंह की सूचना देना।

सोलषी सतोष दास। नंदन नारायन ॥
तुच्छ पटे पग दौरि। पवन बिन न्निपति परायन ॥
आसा लगि धावंत। रहै दासा तन लोयै ॥
रैन दीह जानेन। रहै हिय हुकुम जु किये ॥
तिन कह्यौ आय प्रथिराज सहु। सिंघ एक माल्यौ निकट ॥
निठुर निसक कंदर मंझौ। बीज तेज लोचन बिकट ॥छं०॥१४३॥

राजा का सूचना पाकर सिंह की खोज में चल पड़ना।

गाथा ॥ यों सु न्नपति श्रवन्न। गवन कीन लीन कोवंड ॥
कोमल पद संचार। उचार कोमल भास ॥ छं० ॥ १४४ ॥
केभर अग्ग पच्छ। केभर वास दच्छिन अग ॥
दारा ग्र दुज राज। ढारं तेन पारिय छेर ॥ छं० ॥ १४५ ॥

होनहार की प्रभूति वर्णन।

कवित्त ॥ जलधि जनक ससि तनौ। और अम्रत्त तन [1]तातन ॥
बंधु धनंतर वैद। पोषि रष्षन वपु पातन ॥
लच्छि बहनि बुध बंदै। विधागु वल्लभ वहिनेज ॥
भव भूषन किय भाल। कुटंम उडगन गन केज ॥
लग्यौ कलंक घटु जाइ घटि। इक्क निसा पूरन्न रहि ॥
प्राचीन कीन लग्यौ कठिन। सु क्यौ मिटै सिरजंत महि ॥
छं० ॥ १४६ ॥

हरि कर धरै पषान। देव निरवसी रष्षै ॥
बलि दव्वे पाताल। अभष भष पावक भष्षै ॥

(१) ए कृ को नायन।

ब्रह्मपूज पर हरी। रुद्र कापाल लगायौ ॥
इंद्र अंग भग भई। सुक्र रषि नेन भगायौ ॥
सतवती सीय दुष पाइ जिय। रसाताल गइ फट्टि भुअ ॥
न्रप नघुष नागपन भुग्गयौ। नमो नमो सिरजंत तुअ ॥
छं० १४७ ॥

बिछुरै नल दमयंति। रहे हरचंद नीच घर ॥
नारद नारी भए। श्राप पायौ दसरथ्थ भर ॥
राम बसे बनबास। पंडव अनषंड विपति सहि ॥
राहु लगे विन राह। भयौ बिय टूक चंद कहि ॥
बपु जरि अनंग हुअ अंग बिन। नरग राज क्रकिला सु हुअ ॥
गजमुष गनेस अजमुष दछिन। नमो नमो सिरजंत तुअ ॥
छं० ॥ १४८ ॥

सायर षारेत सह्यौ। श्रृंग रिषि सह्यौ श्रृंग सिर ॥
पग पंगुर सनि देव। पंग [1]हनमंत संत चिर ॥
जच्छि राज की अच्छि। पिंग इक भई सर्प षत।
षरमुष रावन राव। अंध कुर रावनं दिषत।
भगवंत भिक्ष कर तन तज्यौ। पारथ पुरषारथ गरयौ ॥
विक्रम नरिंद वायस भष्यौ। कासिर वारौ निब्ब्यौ ॥ छं० ॥ १४९ ॥

सिंह के धोखे से कंदरा में धुआं करवाया जाना।

दूहा ॥ कंदर अंदर धूम किय। सिंघ भरम प्रथिराज ॥
पुब्ब पुरान नहौ सुन्यौ। अति गति होत अकाज ॥ छं० ॥ १५० ॥

धुआं होने पर कंदरा के अंदर स्थित मुनि को कष्ट होना और उसका घबड़ा कर बाहर आना।

पद्धरी ॥ चिन पच कट्ठ लगि उठी झार। गइ गुहा मंझ धसि धूम धार ॥
चट पट्ट सद्द सुनियै न कान। फट्टिय सु झाल छुट्टै औसान ॥
छं० ॥ १५१ ॥

(१) मो. हवंत।

सब जीय जत भजि सैल तज्जि । धरराय मार पावक गरज्जि ॥
चप श्रवा सकि पारत चीस । कलमलि मुनिंद मन भई रीस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कोमल सु कमल द्रग श्रवै नीर । रद चपि अधर कंपत सरीर ॥
जट जूट छूटि उरझत पाय । अग चरम परम नष्यौ रिसाय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तमि तोरि डारि दिय अच्छ माल । निकस्यौ रिषीस वेहाल हाल॥
गहि दर्भ हस्त वर नीर लीन । प्रथिराज राज कहु आप दीन ॥
छं० ॥ १५४ ॥

हम तप्प वप्पु साधत साध । नर सु विरुद्ध नाहिन अराध ॥
फल पच नासि पालत प्रान । सब संग त्यागि सेवत उद्यान ॥
छं० ॥ १५५ ॥

कहु एक राइ जाचहि न जाय । नन जीव जत आवै संताय ॥
निर वैर काल काटत कठिन्न । भव सिंधु मध्य ते भए भिन्न ॥
छं० ॥ १५६ ॥

नन इच्छ-भछ्य-वर भोग जोग । कहि चूक हमहि संतवत लोग॥
फल भस्म भूम पल्लव समेत । सुपि सरित सिंधु रष्यौ वरेत ॥
छं० ॥ १५७ ॥

ना रपों चिन्ह पठ तीन भार । तव होय चेत संसार सार ॥
। छं० ॥ १५८ ॥

ऋषि का शाप देने के लिये उद्यत होना ।

कुंडलिया । तब अचेत चेतै सुचित । जब लग्गौ सिर माहि ॥
इह कहि आपुन को भयौ । गही पुरष इक बाह ॥
गही पुरष इक बांह । गेन ते उतरत तच्छिन ॥
कहै निरा अपराध । साध पीरेन तम्मि चिन ॥
तमि चिन पचन तोरियै । बिना संतापै सव्व ॥
ताहि दंड किन देहु भुकि । जिहि दुष दीनो तब्ब ॥
छं० ॥ १५९ ॥

कवित्त ॥ सुरहि बच्छ मृगराज। छेवा गजराज अथ्थ थल ॥
चित्रक हरिन बराह। राह पीवंत इक्क जल ॥
आप दुखि चष अग्ग। घात मंजार न मंडै ॥
फन करि पवन भषंत। मोर पंनग नह षंडै ॥
परताप सथ्थ गुरु हथ्थ कौ। नको जीव जीवह भषै ॥
तिहि जियत आज रिषिराज कहि। (१)दर बैसंनर धषै ॥
छं० ॥ १६० ॥

ऋषि का चुल्लू में जल लेकर शाप देना कि जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया वह शत्रु द्वारा अन्धा किया जाय।

गाथा ॥ इहि रिषि कहि बरबैनं। तजि संसार आपियं रायं ॥
मोद्रिग जिहि दुख दीनं। तास तुम चच्छ कड्ढाइं ॥ छं० ॥ १६१ ॥

कवित्त ॥ कं अंजुलि कुस पकरि। कहै रिषराज सुनहु सब ॥
जिहि मो द्रिग्ग दुष्षए। निरा अपराध आय अब ॥
ता जुग लोचन जोनु। अयनजुग बीतत कड्ढय ॥
मन बयन्न नहि टरै। विप्र षिझि षिझियों रट्टय ॥
जितिक पीर हम भोगवैं। भूमि लोक अवलोक इहि ॥
सत गुनी विरधता होइ चष। चल्यो चाइ मुनि ईस कहि ॥
छं० ॥ १६२ ॥

ऋषि का शाप सुन कर पृथ्वीराज का भयभीत होना।

सुनिय बयन्न श्रवन्न। कंपि प्रथिराज थरथ्थर ॥
जिते सथ्थ सामंत। सूर उर त्रास घरब्बर ॥
गये बदन कुमिलाय। सक्कि अति अधर अन्न उध ॥
बोलत बोल न बनै। 'सनै संताप साप दध ॥
रिषि आप दाप कौ अंग में। को ठिल्लै पल एक लगि ॥
जंगलन जाइ नन जाइ धर। भरि न सरकै भूप डग ॥
छं० ॥ १६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मनैं।

कविचंद का ऋषि के पैरों पर गिर कर क्षमा मांगना।

तवहि चंद कवि दौरि। [1]विप्र पद रह्यौ विप्र गहि॥
छमि स्वामी अपराध। साध मुनि फुनि उद्धार कहि॥
तुम सु षंड ब्रह्मंड। षंड नव तुम तप चल्लहि॥
तुम अंमन जीमूत। वरषि जीवन प्रति पल्लहि॥
केहरि भरम हम धूम किय। पायक वसिट्ठय देव हुअ॥
संकुचि नरिंद कंपे डरपि। थरपि हथ्थ सिर सोम सुअ॥
छं०॥ १६४॥

कविचंद का ऋषि से कहना कि यदि किसी से भूल में अपराध हो जाय तो माहात्मा लोग सहसा शाप नहीं देते।

पिय व्रत ध्रुव के वंस। भूप जयवंत सिकार॥
मूल मंडि ग्रंथि रोकि। वैठि दुरि जाल कठार॥
मुह अग्गै इक रिष्य। निकसि प्रावरि मृग छाल॥
भ्रम कुरंग हनि तकि। वान लगि उभ्भर दुसाल॥
कामति जोग बल रष्षि तन। यथ्थन मन तिन पिमा किय॥
कविचंद कहत रिषि राज सुनि। पुनि कुपि आपन न्रपति दिय॥
छं०॥ १६५॥

कुंडलिया॥ करि सनमान न सकिय दुज। सिव पिष्षि चक्र चलाय॥
सिर लग्गा पुप्परि उछटि। जानु चिहुटिय जाय॥
जानु चिहुटिय जाय। हाथ आकर्षंत छुट्टिन॥
तीन कोडि हज्जार सठि। तीरथ करि अट्टन॥
ऐरावत सरोवर दछिन महि। पातक पुट्टि विछुट्टि गय॥
तीरथ कपाल मोचन तहां। नाम पगठि परसन्न हुअ॥
छं०॥ १६६॥

(१) ए. कृ. को. विप्र प्रदच्छिन प्रगह्यौ गहि"

कवि का कहना कि हम स्वारथी और आप परमार्थी जीव हैं सो कृपा कर शाप के उद्धार का उपाय बतलाइए।

कवित्त ॥ तुम जप तप पर हेत। देत वपु रिषि दधीच परि ॥
तुम थुति श्रुति कहि सकै। तुम्ह पद चिन्ह धरै हरि ॥
हम स्वारथ लगि फिरहिं। इष्ट स्वारथ [1]आराधन ॥
हम संसारी जीव। हम सु अपराधह साधन ॥
नन सरन आन तुम सरन तजि। रष्षि सरन प्रथुराज हथु ॥
कट्टै सराप जा पुन्य करि। सो बताउ बरदान तिथु ॥ छं० ॥१६७॥

ऋषि का कवि से नाम ग्राम पूछना और कवि का अपना और राजा का परिचय देना।

[2]चंद बदन्न मुनिंद। कहै तुम नाम ठाम कहु ॥
तो मुष सबद रसाल। सुनत सुष होय हियै बहु ॥
तबहि भट्ट भाषंत। स्वामि मो नाम चंद कवि ॥
वह नरिंद प्रथिराज। लज्ज भरि रह्यौ देव दवि ॥
अब ह्वै क्रपाल प्रभु उच्चरहु। कछुक देऊ बरदान फिरि ॥
अप्पौ नरिंद फिरि उद्धरहु। जिहि पारंगत [3]होहि तिरि ॥
छं० ॥ १६८ ॥

ऋषि का संकुचित होकर राजा का प्रबोध करना और कहना कि शहाबुद्दीन तेरे हाथ से मारा जायगा।

चौपाई ॥ हों बालक दुरवासा तनौ। सत्ति बात सब तोसौं भनौं ॥
इह न्रप तोहि दियौ बरदान। तेरे कर मरिहैं सुलतान ॥
छं० ॥ १६९ ॥

यों कहि रिषि अंतर सकुचान। मुह अग्गै न्रप मुष कुम्हिलान

(१) ए. कृ. को.-आधारन। (२) को.-चंद बदन्न मुन्निंदं। मो.-चंद वचन्न मुनिद
(३) ए. कृ. को.-होत।

देषि दया उर भई मुनिंद । बोल्यौ रिजु दुज आउ नरिंद ॥
छं० ॥ १७० ॥

पुन ऋषि बचन कि कवि राजा और शाह एक मुहूर्त में मरेंगे ।

दूहा ॥ न्नप चहुआन रु चंद कवि । अरु गोरी सुलतान ॥
इक महूरत में मरैं । इह हम दिय बरदान ॥ छं० ॥ १७१ ॥

ऋषि के बचन सुन कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ।

आनंद्यौ प्रथिराज सुनि । निश मन करै विचार ॥
देहन दनु देवन रहै । साह सहित म्रत सार ॥ छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज का अंतरप्रबोध ज्ञान ।

कवित्त ॥ देह न देवनि रहै । रहै नह देव दान वनि ॥
देह न मुनि पै रहै । देह नह रहै मान वनि ॥
देह न नागन रहै । देह नह रहै नगन गन ॥
देह न जच्छन रहै । देह नह रहै पुन्य जन ॥
रहि है न देह गध्रब्ब वर । गुम्भिक सिद्ध अवद्धि बस ॥
मन समझ कहै चहुआन चित । रहै लैन हारे सु जस ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का ऋषि के पैरो पडना और ऋषि का राजा का सिर स्पर्श करना ।

दूहा ॥ यों विचारि प्रथिराज उर । लग्यौ रिष्षि कै पाय ॥
मन में सकुचि (१)मुनिंद कर । न्नप शिर लयौ उचाय ॥छं०॥१७४॥

कविचन्द और मुनि का प्रश्नोत्तर ।

(कवि वचन)

तब मुनिंद सों चंद कवि । पूछत इह अ देह ॥
सकल कुटंबी लोक मे । कोन सु साचो नेह ॥ १७५ ॥

(१) मो नरिंद ।

मुनि वचन।

पूरन सकल विलास रस। सरस पुत्र फल दान॥
अंत होइ [1]सहगामिनी। नेह नारि को मानि॥ १७६॥

कवि वचन।

गाथा॥ किं तन त्रिभुवन सारं। किं तन मध्य सार रिप ईसं॥
किं पुनर पिता मझ्झं। [2]सारं तत्त उत्तरं [3]देहुं॥ छं०॥ १७७

मुनि वचन।

नर तन नर पुरसारं। नर तन मद्धि सार तप सीयं॥
सहि देही मद्धि सारं। वाचं इक बुध [4]बद्दाई॥ छं०॥ १७८॥

कवि वचन।

को दुज धरम कथेयं। को न्रप धरम परम संसारं॥
किं बनिकं धन धरमं। किं धरमं सूद्र सहायं॥छं०॥१७९॥

मुनि वचन।

श्रुति पठनं दुज धरमं। भू भुज धर्म्म नित्त नित्तेयं॥
दया सुधर्म्म वनिकं। सेवा ध्रम सुद्र सहाइ॥ छं०॥ १८०॥

कवि वचन।

दूहा॥ कोन नगन अंबर छतें। को ढंको बिन चीर॥
को हारै अंधो फिरै। को जीते तजि तीर॥ छं०॥ १८१॥

मुनि वचन।

जस हीनो नागो गिनहु। ढंक्यौ जग जसवान॥
लंपट हारै लोह छन। त्रिय जीतै बिन बान॥ छं०॥ १८२॥

कवि वचन।

राजरिद्धि [5]बाधंत क्यों। किहि मग राज बिलाय॥
[6]भूषेउ न्रप छंडै कहा। कहा भूष मं पाय॥ छं०॥ १८३॥

(१) मो -महचारिनी। (२) मो.-नारं। (३) ए. कृ. को.-देहि।
(४) मो -बरदाई। (५) ए कृ.को -मेटे कवन। (६) ए. कृ. को.-भूपौ।

मुनि वचन ।

रिषि पूजा लच्छी बढै । रिषि अपमान विलाय ॥
रिषि विभूति भूपै तजै । अनि वित भूपै पाइ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

कवि वचन ।

किहि मग कंटक विकट है । को मग सरल सुभाइ ॥
किन मग चलियै रैन दिन । किहि मग परै न पाइ ॥
छं० ॥ १८५ ॥

मुनि वचन ।

हरि विमुपें मग कटकी । हरि मग सरल सुभाइ ॥
हरि मारग निरमै सदा । अनि मग पोचौ पाइ ॥ छं० ॥ १८६ ॥

कवि वचन ।

को मैलौ पट उजलौ । को उज्जल पट मैल ॥
को भूल्यौ मारग लगै । को भूल्यौ ही गैल ॥ छं० ॥ १८७ ॥

मुनि वचन ।

मन मैलौ मैलौ वहै । मन उज्जल सु पवित्त ॥
हरि विमुषे भूले फिरै । भूलि न हरि जिन चित्त ॥ छं० ॥ १८८ ।

कवि वचन ।

भुगति मुगति किन निकट है । काते दूरि दिपाइ ॥
किन आवध जग जिति यहि । किन हारत जगजाइ ॥छं०॥१८९॥

मुनि वचन ।

समदरसी ते निकट है । भुगति मुगति भरपूर ।
विषम दरस वा रैन तें । सदा सरवदा दूरि ॥ छं० ॥ १९० ॥
पर योमिनि परसै नही । ते जीते जग बीच ॥ ,
परतिय तक्कत रैन दिन । ते हारे जग नीच ॥ छं० ॥ १९१ ॥

सुजस बान जग में जिये। कुजसी मृतक समान ॥
दाता जागै रैन दिन। सोवै सूम अजान ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवि वचन।

को वैरागी ग्रेहही। को रागी बनवास ॥
को लूटै परलच्छि कों। काते लच्छि उदास ॥ छं० ॥ १९३ ॥

मुनि वचन।

निरलोभी वैराग ग्रह। लोभी बनहू राग।
पटुभाषी परबत भषै। कटुभाषी तिय भाग ॥ छं० ॥ १९४ ॥

कवि बचन।

किहि मुनि कौन अराधि है। बिनही औसर देषि ॥
तुम बचननि सुष पाइयै। तुम दरसन सु विसेष ॥ छं० ॥ १९५ ॥

मुनि वचन।

भूप कार कवि बैद बरु। मरमी असिधर होइ ॥
बंदी जन धनवंत जड़। ए आराधी लोइ ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कविचंद और सब साथियों सहित राजा का डेरों को वापिस चलना।

इतनी सीष रिषीस की। सुनि पग बंदे चंद ॥
सम नरिंद असवार ह्वै। चलै दलै आनंद ॥ छं० ॥ १९७ ॥

सेन सुरन सहनाइ के। नहि निसान धुंकार ॥
चोधिन चमक चिराक की। नह बंदी हुंकार ॥ छं० ॥ १९८ ॥

बिन बेरां डेरां गयौ। भूपति भयौ उदास ॥
मरन हान सें मग्गई। सुनिय सकल रनिवास ॥ छं० ॥ १९९ ॥

डेरां लगै डरावना। रह्यौ कटक सब मौन ॥
नर नारी नारी छतें। मनो प्रान किय गौन ॥ छं० ॥ २०० ॥

उक्त शाप का संवाद पाकर रानी संयोगिता का दुःख करना।

चित्त चिंति संयोगिता। कौन कियौ मैं पाप॥
भोग समै संयोग में। कतह भयौ सराप॥ छं० ॥ २०१॥

कवित्त ॥ कै मै कढ्ढी [1]जाय। गाय चरती हंकारी॥
कै कासौ पग छियौ। धूम मै नागिनि मारी॥
कै ज्योति विप्र परहयौ। कह्यौ नन बैन सासु कौ॥
तेल लौंन वर हेम। चोर घर धर्‍यौ कासु को॥
कीनी न कानि कै जेठ की। कै बोलत ज्वाव न दयौ॥
बुल्ल्यौ सराप रिषि कंत कौ। सती हार कें हर लयौ॥
छं० ॥ २०२॥

डेरों से चल कर दिल्ली आना और ब्राह्मण को दान देकर महलों मे प्रवेश करना।

दूहा ॥ दान दयौ रनिवास ने। अरु दिय दान नरेस॥
अयन उभय मे नयन डर। कियनिय महल प्रवेस॥छं०॥२०३॥
गैर महल रंजन भयौ। सहित संजोइय वाम॥
पौरि न रष्पो पोरिया। जे इतवारी धाम॥छं०॥ २०४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेट चष श्राप नाम त्रिसठवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥६३॥



(१] मो नाय या माय।

धीरपुंडीरनाम प्रस्ताव ॥

[चौसठवाँ समय ।]

सयोगिता व्याह के ढाई वर्ष बाद राजा पृथ्वीराज का अपनी सामंत मंडली के वल की परीक्षा करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सुष विलास सजोगि सम । विलसत नव नव नित्त ॥
इक दिन मन में उप्पनी । ऐ ऐ चित्त कवित्त ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास तीस दिन पच । महिल मझोज राजवर ॥
जुद्ध घटै सामत । वैर सु विहीन सँवर पति ॥
सुभर सूर सामंत । उरह भुज यनवर जान्यौ ॥
तीन मास तिय दिननि । तिनहि ससार सु मानौ ॥
तन तुग तेक्ष जोवन्न मन । तन तिहित्त उचौ न गिन ॥
कैमास विना आमत घटि । हु जानत आभग इन ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज से भागकर आने पर पछतावा करना ।

दूहा ॥ जुध अनेक सामत करि । नहुं भाग्गौ कहु ठौर ॥
हम भज्जन कनवज्ज मति । अव दिष्षौ भर और ॥ छं० ॥ ३ ॥
कवहौ पिट्ठि न मे दई । अव लग्गी इह पौरि ॥
करौं परीछा सूर भर । जित्तौ असुर वहोरि ॥ छं० ॥ ४ ॥

वलिभद्रराय का राजा से कहना कि सामतों की परीक्षा के लिये जैतखम बनवाया जाय ।

कवित्त ॥ तव कहै राव वलिभद्र । सत्त सामत अभगम ॥
इन वल घटै न राज । मत घट्टै वर आगम ॥

एक सुबर सुर अंत। तीर वाहैं बल मुक्कै।
पंच सबद्द संभरै। मद्द गजराजह चुक्कै॥
सामंत संगि प्रथिराज सुनि। जैत षंभ वर फेरियै॥
पारष्षि देषि चल वीर न्टप। जोय संदेह न जोरियै॥छं०॥५॥

निगमबोध (तीर्थ) स्थान पर जैतखंभ का बनवाया जाना निश्चय होना।

दूहा॥ सुनिय मंच प्रथिराज बर। मनि परधान सुमान॥
जैत षंभ मंडन सु मति। निगम बोध बर थान॥ छं०॥ ६॥
मुरिल्ल॥ जिन दिन बल सामंत सु धट्टै। जानि मनि प्रथिराज सु थट्टै॥
बाल वृद्ध जोबन बलकाजं। जैत षंभ चिंत्यौ प्रथिराजं॥ छं०॥७॥

श्रावण मास वर्णन।

कवित्त॥ श्रावन भावन भवन। रवन रवनी मिलि राजहि॥
सविता जेम समुद्द। धरनि धारा हर साजहि॥
पच्छिम पवन प्रसारि। धार जल हर धर हरयौ॥
षाल नाल भरि ताल। भरत जलनिधि जल भरयौ॥
परि मोर सोर उठि चोर जिय। जीवन जाचक औल गन॥
नर नारि चतुर वर चित्त कों। हरियालो सावन हरन॥छं०॥८॥

नवदुर्गा में सामंतों के पूजा पाठ और उनके उत्साह का वर्णन।

ग्यारह से बावना। मास आसोज विपष्षिय॥
नव दुग्गौं नव दीय। नवल सामंत न रष्षिय॥
नव सत्ते नव दीह। महिष जोगिनि मिल्लारहि॥
हवन मंच दुज पढहि। पूजि दुग्गा जग्गारहि॥
उच्छह उतंग तिहि राइ पर। जुरन तेग बंधहि न्टपति॥
संपदा चिति चहुआन की। प्रथीराज तेजह तपति॥छं०॥ ९॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को जैत खंभ के निर्माण और अपनी आज्ञा की सूचना देना।

तट्टह अट्ठह अट्ठ। अठै अगदीह सु मंडिय ॥
अट्ठ अट्ट प्रमान। सहर सिंगारि सिकाडिय ॥
आहुट्ठ सै दून। राज अग्या भर मंडिय ॥
जैत पंभ जैतान। जोर जुझा जो षंडिय ॥
आनंद तेज अग्या सु भर। भूपर भूप भुअप्पतिय ॥
मानिक राइ कुल उद्धरन। प्रथीराज छत्रपतिय ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज का जैत खंभ बनवाए जाने की आज्ञा देना।

एक समै प्रथिराज। वत्त जंपिय भर सारनि ॥
अष्ट धात करि पंभ। सिंगि कट्ठै वल पारन ॥
तिहि समान नहि वीर। विजय दसमी इह किज्जै ॥
अप्प अप्प वल तोकि। इष्टनिय जाप जपिज्जै ॥
सुनि सूर सजल आनंद मन। पुनित महल राजन उथौ ॥
सुनि धरि जाइ जालंध दर। असन कारन कारन हथौ ॥
छं० ॥ ११ ॥

चंद पुंडीर के पुत्र धीर पुंडीर का जालंधरी देवी की उपासना करना।

सगति भोग संसार। सगति कर जोग जुगति जग ॥
सगति सुगति वर दैन। सगति आधार नाग नग ॥
सगति मंडा सुख कारन। सगति बिन सुष्य न पावै ॥
सगति राज निज काज। सगति नर सुर जय लावै ॥
इह जानि धीर मन ध्यान धरि। सगति उपास बिचार वर ॥
आनंद कंद न्रप चंद सुअ। धीर जाप लीनो सुधर ॥ छं०॥१२॥
सुभ असोज रवि मूल। सिद्धि जोगह सुष कारिय ॥
दुर्ग साहि थापनो। धीर आराधि विचारिय ॥

धन सुलगन सुष गरुश्र । धीर जालपा उपासै ॥
श्रह सुथान मति मान । कनक दुति षोड़स मासै ॥
एकंग मंत सद्ध सुमन । भूमि सयन सुद्धह [1]वसन ॥
गो दुद्ध हार बर इक्कलै । व्रत उचार बोलन रसन ॥छं०॥१३॥

पूजन विधि, देवी का प्रसन्न होना और धीर पुंडीर का वर मांगना ।

पद्धरी ॥ सहि धाम छाय वासं सुसुभ्र । बासना उग्र कर पूर उभ्र ॥
श्रन्यन प्रवेस तिन श्रह पवित्त । कारज्ज काज दैं श्राइ मित्त ॥
॥ छं० ॥ १४ ॥

श्रासनह हेम त्रयकोन कुंड । कर सेत माल जपि उंच तुंड ॥
परिधान वस्त्र सारत्त रज्जि । श्रंबरह सेत उप्पर सु सज्जि ॥
छं० ॥ १५ ॥

श्रासन्न एज श्रग्गैं श्रनूप । स रजित तथ्थ जालंध रूप ॥
तस श्रग्ग संग सेरह बतीस । धज धोम पग्ग श्रग्गै सु कीस ॥
छं० ॥ १६ ॥

सुध्यान जाप दस सहस होम । धरि ध्यान होम जज्जिय सु कोम ॥
धरि हींय ध्यान जालंध देवि । मन वचं काया चिंतिय सु तेव ॥
छं० ॥ १७ ॥

त्रय पष्प वीच भय निसा जाम । श्रादिष्ट देवि बुल्लिय सु ताम ॥
मँगि मंगि मंगि नर बीर सत्ति । इछंत काज जो सुमझ मत्ति ॥
छं० ॥ १८ ॥

बुल्ल्यौ सु बीर जालंध माइ । सु प्रसन्न देवि जो सुभक्त भाइ ॥
वर एक सुद्ध श्रप्पहु सु श्रम्ह । फुट्टैव संग मो जैत षंभ ॥
छं० ॥ १९ ॥

जंपै सु देवि रे धीर धीर । फुट्टैव जु षंभ मो सति वीर ॥
राजन सु तोहि श्रप्पै पसाव । ग्रामह सु थान श्रादर सु भाव ॥
छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ.-सरन ।

आये सु जात सुभझह सु रभ । फुट्टै सु सग तो जैत पभ ॥
चितै सु चित मुभ जहा चित्त । जह जहा सकट तो पास सत्त ।
छं० ॥ २१ ॥

जपै सु धीर जालध मात । फुट्टै सु पभ आउ सु जात ॥
फुट्टै जु सग मो सकति तिष्य । भुजो सु अन्न तो दरस दिष्यि॥
छं० ॥ २२ ॥

बरदान दियौ देवी सु धीर । नौसान प्रान वज्जै सु भीर ॥
समरें धीर देवी सवद । छुट्टै सु दुष्य नर वै मरद ॥ छं०॥ २३ ॥

देवी का वरदान ।

कवित्त ॥ हेम दडि सिर मडि । मच द्रिग आन मिलाइय ॥
धूप दीप साया सु गध । जच अरु ध्यान जु पाइय ॥
नारिकेल फल सुफल । महिय पारभ पच विय ॥
विनै विद्धि सारत । करिय पूजा अनद जिय ॥
बर धीर मिली मग्गी सुवर । प्रसन उमा परतष्य हुअ ॥
चर चित्त बीच करहि न कछू । पभ फोरि जैपत्त तुअ॥छं०॥२४॥

धीर पुंडीर का कुमारी कुमारियों को भोजन करा कर उपारन करना ।

दूहा ॥ कुम्मारी कुम्मार सहु । बोलि सु भोजन दीन ॥
अनँत विप्र भोजन विविध । धीर सु पारन कीन ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आनद सु धीर किय । भयौ हूर रस भास ॥
अनत विप्र भुजे भगति । दिय सवेद पिन तास ॥ छं० ॥ २६ ॥

जैतखभ का वर्णन और सामतों का नित्य प्रति अभ्यास करना ।

कवित्त ॥ जैत पभ मडयौ । स्वामि सामत परष्यन ॥
अष्ट धात कर अष्ट । रेष गज अष्ट सु रष्यन ॥

अष्ट मुष्टि चा रुष्टि। वाहिं कढ्ढै जु संगि वर ॥
इष्ट देव सत सील। संच आभंग रंग भर ॥
तारुन्न तुंग सह सत्त भर। इस अभ्यास दिन प्रति करहि ॥
इक मुट्ठि दु मुट्ठि ति मुट्ठि लगि। किहुन सार दुअ अंग सरहि॥
छं० ॥ २७ ॥

धीर का जैतखंभ भेदने के लिये जाना।

चकित चित्त चहुआन। सूर सामंत न सुझझहि ॥
नर पष्षर भर भिरन। षंभ सों धिधिक धिधिक झझझहि ॥
तीन पष्य दिन पंच। बीर नीसानन वज्जिय ॥
सबर बैर सुरतान। जाहि संमुह करि सज्जिय ॥
पुंडीरराय चंदह तनौ। धीर नांउ वै अंकुरिय ॥
रन सिंह कंध यप्परि तरकि। हेम तुच्छ लिन्नौ तुरिय ॥छं०॥२८॥

धीर पुंडीर की अवस्था और बल का वर्णन।

नव बिय वरष प्रधान। तुंग लच्छिन उतंग तन ॥
चढ्यौ सिंह सामंत। बीर पुंडीर धीर घन ॥
ताजी तुंग उतंग। बैस बीय षष अढारै ॥
मीरन रत्त सु गत्त। पियै जल अभ्भ क चारै ॥
वर चंद जंपि चंदह तनौ। विभर मेछ बअ अंकुरिय ॥
तन पष्षि परष्षन न्रिपति बल। चढि तुरंग धंधरि परिय ॥
छं० ॥ २९ ॥

अश्व वर्णन।

राज॥ लियौ सेत ताजी,सुधा जीति साजी।तुला हेम तोलं, महालीन मोलं॥
छं० ॥ ३० ॥

अनूपं ऐराकी, सहै ना सुधाकी। दुअं गात उच्चं, सरूपं सकुच्चं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

षड़ै षाल नालं, तगै लंघि तालं।भरै दानभारी, कहां पंषि कारी॥
छं० ॥ ३२ ॥

धीर का खंभ के पास पहुचना।

दूहा ॥ ध्यान उमा करि सुमन धरि। धीर वीर मन लाइ ॥
जैत षभ फोरन सु वर। भौ जालधर आइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य जैतखभ पर जाना और धीर का आना।

कवित ॥ विहँसि चल्यौ चहुआन। सूर सह सेन बुलायौ ॥
जैत षभ रोपयौ। लोह मन तीस मिलायौ ॥
भयौ राइ आयेस। कुअर सव विभ्भौ षेलहु ॥
सेथि तीर तरवार। सग सरवर कर मेलहु ॥
चिहुटै न चोट दुअ अगुरिय। उहित सग मध्यै धरिय ॥
अप्पौ सुराइ तिहि अप्प करि। मनहु सूर सह अहि उहिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ दिवस अट्ठ पुज्जिय सकति। नवल नवम्मिय दीह ॥
सिलह सुरग सु मडि किय। चल्यौ तुरगम सीह ॥ छं० ॥ ३५ ॥

भुजगी ॥ चल्यौ सिह सोमत पुडीर भारी। धरै कंध सोहै सकत्ती करा
जुरै जूह काल ग्रसै सार सारै। पिभ्भै षभ तेजी दुहू अग डारै
छं० ॥ ३६ ॥

सरी भेरि भकार नीसान घाई। उठी वेद विप्रान विप्रान झाई
तपै तेज वाही चिभागी ततारी। उनें धात मे धात काढी निनारं
छं० ॥ ३७ ॥

मिटै रेन राया दियो अग चडी। तुला सीर दडी मनो धर्म म:
छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का आज्ञा देना और धीर का जैत खभ भेदना।

कवित्त ॥ हो रावत मडली। कोरि मच्छर मनामडहु ॥
सो तुरग तन पिस्यौ। सग वाहिर गहि कड्ढहु ॥

बंस कुली छत्तीस। करहु बल जाबल भावै॥
संगि न टारी टरै। जंतु षिन अद्व डुलावै॥
अप्पौ तुरंग चहुआन तब। बिहसि धीर पुंडीर लिय॥
उप्परिय जैत षंभह सहित। तब पसाव प्रथिराज किय॥
छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का धीर को सिरोपाव जागीर आदि देना।

भुजंगी ॥ कियौ राय परसाद पुंडीर जोटं। मही मंसु कामं जुहिं सारकोटं॥
दिये पंच हज्जार ग्रामं सु थानं। झंडा माहि वैरष्य पीलं निसानं॥
छं० ॥ ४० ॥

रष्पतं वष्पतं तुरंतं उचायौ। थप्यौ सब्ब सामंत पुंडीर जायौ॥
तबै बोल बोले सु उच्चै अचाए। कहै चाय चहुआन सों बोल चाए॥
छं० ॥ ४१ ॥

अबै मरन कै करन कै करहिं साईं। बाधन कै गहन कै सुरतान घाईं॥
छं० ॥ ४२ ॥

राजा का धीर पर अपनी पैज प्रगट करना।

कवित्त ॥ च्यारि वचन चहुआन। दिए बर धीर अचाये॥
मरन काम चहुआन। करन अरि हरन बताये॥
गहे धीर सुरतान। हथ्थ अप्पन चहुआनं॥
जोध कोस धोषंत। करै सु विहान प्रमानं॥
जो धीर राइ इम उच्चरै। काम साम साक्रत करै॥
प्रथिराज काय भंजन भिरन। घर भज्जत सम्हौ मरै॥ छं० ॥ ४३ ॥

धीर का मस्तक नवा कर राजाज्ञा को स्वीकार करना।

आगें धीर सधीर। हथ्थ चहुआन मथ्थ दिय॥
आगें सूर सहूर। ताप उतराध तेज लिय॥
आगें बर कैलास। ग्रहै पीनाक सु साजे॥
आगें कंचन तेज। धरे नग तेज विराजे॥

आगे सु धीर पुंडीर बर। अरु स्वामि हथ्थ बर सथ्थ दिय ॥
सोमंत जैत चामंड बर। मिचे हथ्थ दिस सयेन किय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

चामंडराय का कहना कि धीर क्यों लड़कपन में आकर व्यर्थ की प्रतिज्ञा करते हो, दोनों पक्ष का बल तो तौलो।

हँसि बोले चामंड। धीर सुनि बात हमारी ॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित हैं भारी ॥
घर बैठे अप्पने। बोल तुम बड्ड बोलहु ॥
मेर भरन कहौ बथ्थ। सिंघ सम कुंजर तोलहु ॥
रे सुनहि सूर पुंडीर कुल। एतो भ्झुट्ठ न तुम कहहु ॥
जिहि सात फेर हत्तौ फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहु ॥
छं० ॥ ४५ ॥

हा ॥ घर सूरा मठ पडिया। गाम गमारा गोठि ॥
पंच मझ्झ बोलत वयन। धूज बिछुट्टिय होठ ॥ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

था ॥ असमाय जे न सा पुरिसेण। जे अप्परास सुचरिया ॥
ते पथ्थर टंकि उकीरी अख्ख। कानही नह अनदा हुती ॥
छं० ॥ ४७ ॥

रास हरडिय कुनरिंद भासिय। इयर लोय पडि वन्न ॥
पुत्र उठानय गुहअ। पछालहु अ चलहु अ च ॥ छं० ॥ ४८ ॥
सुर सिरि मूल बड बीज पल्लव। सुअन लोइ पडि वन्न ॥
पुत्र ठानय लहुअ। पछा गरुअ च गरुअ च ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धीर का कहना कि मैने जो कहा है वही करूंगा।

कवित्त ॥ हौं पुंडीर नरेस। हौं सु भ्झुझ्झार सबर बर ॥
हौं सुत चंदह तनौ। ठिल्लि दल देहु चिविध घर ॥
मोहि इष्ट बल सकति। मोहि बानैं बर सज्जित ॥
मो सम अवर न वीर। साहि उप्पर दल गज्जित ॥

हौं सुनौ सच्च, दाहन दहन । हौं सुति नहिं तिन बर गनौ ॥
बर बीर धीर इम उच्चरै । गहुं साहिब हसती हनौ ॥छं०॥५०॥

धीर की बीर प्रतिज्ञा की चरचा का सर्वत्र फैल जाना ।

दूहा ॥ बढि अवाज ढिल्लिय नगर । धीर ग्रहन कह्यौ साहि ॥
हँसिहि सूर सामंत ए । कुटिल दिष्ट मुष चाहि ॥ छं० ॥ ५१ ॥

एक महीने पांच दिन में यह समाचार उड़ता हुआ शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा ।

कवित्त ॥ मास एक दिन पंच । बत्त दिसि विदिसि न हुअ ॥
चंद पुत्त की चाव । वेषि प्रगट्यौ जस धूअं ॥
दिसि दष्षन पुब्बाह । रहस उत्तर पच्छाहं ॥
गज्जन वान गज्जा करंत । चिहु चक्क सवाहं ॥
अदभुत्त बत्त संसार सुनि । पुंडी राइ हरट्टिया ॥
गज्जनै साहि साहाब दर । मुष मुष कित्ति प्रगट्टिया ॥ छं० ॥ ५२ ॥

मंगि दीय बर मात । राज प्रथिराज महाभर ॥
जैत षंभ जित्तनह । साहि बंधन आनन धर ॥
तब तुट्टिय चवसट्ठि । दियौ बल षंभह फोड़न ॥
अरु जु साहि बंधनह । ताहि बर बंक पधीरन ॥
इह कहत मात दिन्नौ सु बच । सुनत सोह अचरिज्ज हुअ ॥
पिष्षह सु बीर बल कारनै । जैत षंभ आरंभ किय ॥छं०॥५३॥

दूहा ॥ बज्जा नाम पुंडीर तुअ । लज्जा दान सु षग्ग ॥
नित्त निहाई बत्तरी । कित्ति दुहाई मग्ग ॥ छं४ ॥ ५४ ॥

जैत प्रमार और चामंडराय के मन में धीर की ओर से डर पैदा होना ।

पद्धरी ॥ दुहुं मग्ग नाम पुंडीर धीर । नीसान प्रात बज्जंत धीर ॥
पामार जैत चावंड राय । तिष्टान राग लग्गंति धाय ॥छं०॥५५॥

काल मली चित्त बहु भति आइ ।* * *
दीवान मान आदर अदब । पिन पिन सुताय लग्गै सु गब ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बलिभद्र वीर जामानि जद्द । पीचीय राव पिम्मि कहिय सद्द ॥
बग्गरिय राव देवाधि देव । आजानबाह बोलत मेव ॥
छं० ॥ ५७ ॥

रावन्न राम गुज्जरी तेह । चौहान बत्त पुडीर छेह ॥
उपगार चद चित्यौ सु तब्भ । रष्यौ पूर चालुक्क सब्भ ॥
छं० ॥ ५८ ॥

तापंत राज सज्जौ न बज्जि । फट्टंत तोन तम कवन कज्ज ॥
धटि बटित ओर गावार रग । हर गाम धाम देसा दुरग ॥
छं० ॥ ५९ ॥

ता मुनिय सत्त उड्डत चित्त । जगि जलनि जानि सिच्यौ सु घ्रत
गामी गमार पुडीर सूर । तिहि जाइ तुट्टि सुरतान पूर ॥
छं० ॥ ६० ॥

दादुरति कोट जिहि भार सद्द । पुज्जै न कोइ कोकिलति बद्द ॥
आचरन सिध जबुक कुलाइ । भज्जैत प्रात मिलि सुगह ताय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

बबर विरह बामा सु पानि । बधे सु कोन बर सूर तान ॥
उब्बरे वीर चामड राय । जिन वीय बस सामत पाइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

हम लज्ज सूर सामत भार । प्रथिराज राज बल उड्ड सार ॥
अपराध बध धरि धात षभ । जानै न जुड्ड सुरतान गिभ ॥
छं० ॥ ६३ ॥

प्रथिराज ताहि अप्पै मुलक । हिसार कोट पट्टन पलकि ॥
गज बाज वीर बैरष्ष सेत । नीसान मेघ रन पील नेत ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरजै न कोन सामत राइ । इहि मुष्ष अप्प रहनो न जाइ ॥

सुगहं न काम कोई प्रमान। चहुआन पचान्यौ सकट खान॥ छं० ॥ ६५ ॥

अरदास कायस्थ का शहाबुद्दीन को धीर की प्रतिज्ञा का सारा हाल लिखकर सूचना देना कि धीर सपरिवार जालंधरी देवी की पुजा करने जायगा।

कवित्त ॥ लिखि अरदास जुगत्ति। जैत सुरतान सुपट्टिय॥
कोतूहल गूजर गमार। मुखही मुख ठट्टिय॥
नाना ही गोचर गियान। पांवार पुंडीरां॥
राज छज्जि रवि देउ। सूह सज्जल सगोरां॥
भरुहांह गुज्ज अंतर कियौ। बोलां हीरा बत्तियां॥
सांइनो संग बंछै मरन। सोहै साहस छत्तियां॥ छं० ॥ ६६ ॥

वचनिका ॥ बज मांम हमंद ईन। सुलतान साहाब दीन॥
तुरकानां ताज। गज्जने वीर बाज॥
अरदास जैत काज। लिखी बंदगी साज॥
तिन उनह को गुनाह। डिमूरू विरद वाह॥
बहुत कुल पंचना। देवी दिवाना॥
दरबार हिंदवाना। गज्जने साहिपति साहिपनाह॥ छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ इति अरदास लष दई। जैत गोरी सुविहानं॥
थब्ब गमार पुंडीरी। सीस लग्गी असमानं॥
अवसि मास आसोज। दैव अष्टमि गुरवारं।
पूजि मिसह जालंधि। संग सब्बै परिवारं॥
इह धात साहि सुविहान कों। नरह मुष वड्डिय कही॥
बरजंक अचानक रच्चि बल। तबहि साह से मुष गही॥ छं० ॥ ६८ ॥

आश्विन की नौ दुर्गा में धीर का देवी पूजने जाना।

गरजि मेघ निंवरिय। सरद सरवरिय अहन्निय॥
जल थल निम्मल निज। अकास बह वास चवन्निय॥

हंस बंस सारस सबह। कोकिल कुक कहे॥
सलित सरोवर मन। प्रजाद अमृत कार चहे॥
रति नइय नौमि जहह सुदिय। जल जलह पूजन बिहंसि॥
सिद्धा न सिद्ध करि चद सुत्र। अबह रिपु पारस परसि॥
छं० ॥ ६९ ॥

धीर का व्रत से पैदल चलना।

दूहा॥ सूर तेज अति सरद कौ। आगम चढे बिराज॥
जालधर वर परसने। बोल पुब तर काज॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त॥ चल्ल्यौ लै निज व्रत्त। जात जालप्प जलप्पिय॥
पाय चलत उविहोन। पान भोनह तजि तप्पिय॥
पीरे हार इक वार। भूमि सयाह सधारिय॥
मौंन धारि जप सार। धूप दीपह पुज्जारिय॥
सामत अमतन जानि कै। सकै न दुष टारन दइय॥
इह दुष्ट कष्ट निज सेव कहु। जानि जननि प्रग्गट भइय॥छं०॥७१॥

जालधरी देवी का धीर को स्वप्न में सूचना देना कि शाह के भेजे हुए गुप्त दूत तुझे पकड़ने आरहे है।

निसा मझि मातग। बोल समधीर सु बत्तिय॥
चौंडराय पामार। साहि समुह लिपि पत्तिय॥
अट्ठ सहस गब्बरी। धीर पकरन तो पठ्ठिय॥
गुपत तेग गहि गोप। भेष कप्पर करि लठ्ठिय॥
पय पय सु तुझ्झ संकट हरों। बोल बोल सानिध करों॥
इम कहत देवि अप्रछन्न हो। तो प्रयज आ सम धरों॥छं०॥७२॥

सप्तमी शुक्रवार को धीर का जलंधरी देवी के स्थान पर पहुंच कर पूजन और दान करना।

दिन सुक्रह सत्तमिय। जाय जालधर पत्तिय॥
दान स्नान परमान। थान थानह करि अत्तिय॥

तहं हिंदू वर मुसलमान । लष्य विप्र सुश्रावहि ॥
जवनिक कुल छत्री । कुलाल षोड़स मिलि धावहि ॥
जानै न कोइ नर भर चपति । प्रवत लग्गि पारस पर्‌यौ ॥
कोटन सु कोट भंडार भरि । घन सु द्रव्य हाहुलि भर्‌यौ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जैत प्रमार और हाडा हम्मीर की शाह प्रति सूचना ।

दूहा ॥ तब लिष्यौ कपट कग्गर करहु । जैत पमार हमीर ॥
बोल्यौ बोल अचग्गरौ । तिन पकरायौ धीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

गहिय पानि कहि साहि इम । कोइ श्वर मीर मलिक्क ॥
धीरहि गहि आनै निजरि । साहब लह सो सक्क ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह के धीर के पकड़ लाने का बीडा रखना और गष्षर लोगों का बीड़ा उठाना ।

कवित्त ॥ दिए पान सुरतान । लिए आरिष्य हथ्थ धरि ॥
कहै साहि साहाब । जियत ल्यावहु सु बंधि करि ॥
अट्ट सहस गष्षरी । नेग गहि चढ़े तुरत्तह ॥
संक न मानौ जाइ । धीर बैठौ बिन मत्तह ॥
संदेस कहौ पुंडीर सों । चलि रावत नहिं संक जरि ॥
तब बेढलेउ चिहु पासु तें । लै आवहु बेसास करि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उन गष्षरों का योगी के भेष में जालंधरी देवी के स्थान पर धीर के पास जाना ।

तक्यौ साहि गज्जनै । धीर जालंधर जत्तह ॥
सहस अट्ठ गष्षरिय । भेष करि कप्पर रत्तह ॥
गहि आनौ छल बल । पुंडीर राइ चंद कुमारह ॥
कर कगार लिखदिये । भेद राजैत पमारह ॥

तारन्न तुग साधक सेवाल । मनो मोन मूरत रचिय ॥
गुन गुपत हथ्थ गुपती धरिय । भुगति मगि जोगिय हँसिय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

छद्म वेषधारी योगियों का धीर से भिक्षा मांगना ।

दूहा ॥ धीर निकट ठाढे भये । कपट हेत सहरूप ॥
जोरि हथ्थ तिन विनयो । भुगति देहि हम भूप ॥ छं० ७८ ॥

गष्षर लोगों का धीर को घेर का गजनी लेचलना ।

कवित्त ॥ सिध विहथ्थे आव । नाव नगलि उत्तरिय ॥
आनि तथ्थ गजराज । ढाल मझ्झे वैसारिय ॥
अट्ठ सहस गष्षरी । अट्ठ दिसि सेवा सारत ॥
इम आवै भर धीर । रथ्थ वैठौ जनु पारथ ॥
प्रजलोक देह देहह दुनी । दिष्षन भर धर उमही ॥
जानै कि इन्द्र मुष विष्षनह । उलटि मोर नग उमही ॥
छं० ॥ ७९ ॥

धीर का गजनी पहुंचना और नगर निवासियों का कौतुक से उसे देखना ।

पद्धरी ॥ आरोहि गज्ज पुडीर धीर । लै चले घेरि गष्षर गहीर ॥
गष्षरी सहस अट्ठह प्रमान । नायिच विटि सविता समान ॥
छं० ॥ ८० ॥

मुकै विवाह चिन्हाव धाय । उत्त-यौ सिध जोजन सवाय ॥
सब लोक सिध मडल जु रेस । दिष्षनह धीर वीरत वरेस ॥
छं० ॥ ८१ ॥

द्वादसह भान मुष प्रगटि जोति । निय उच थान वहु प्रात होत ॥
कै काहै साहि हनि है कधानि । दै है सु प्रगट कै काह दान ॥
छं० ॥ ८२ ॥

इन भंति सहर गज्जन सपत्त। बंदियन बिरद आसिष्य दत्त ॥
संकरह हेम तोलह चिसत्त। निय पाय कड्ढि किय धीर दत्त ॥
छं० ॥ ८३ ॥

जसु दान डकि गज्जन सु देस। इम पत्त द्वार असुरेस नरेस ॥
उमरा मीर सब मिले आय। दिष्षनह धीर पैजह पराइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जालीन मध्य देषै हुरम्म। दिषि रूप धीर सुक्कै सरम्म ॥
पुंडीर आइ दरबार चाहि। गज्जनी लोक कौतिग नमाइ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

राजद्वार पर दर्शकों की भारी भीड़ होना और गन्धर्व राव का शाह से धीर की गिरफ्तारी का हाल वर्णन करना।

कवित्त ॥ गज्जन वासी लोक। केक पर दिष्षन आइय ॥
चंद पुत्त मुष चंद। कुंद सघ जानि सधाइय ॥
मीर मलिक उंमरा। मीर मत्ती दरबारह ॥
ठाम न लग्गौ कोइ। ताहि पिष्षन भर भारह ॥
अचरिज्ज भयौ सब सहर में। जब आयौ दरबार क्रम ॥
पुच्छै जु साहि जब धीर सो। बै बिरह लिन्न। विषम ॥छं०॥८६॥
मुगति देन कहि भूप। इच्छ कप्परी जु तुम काहु ॥
निसा आदि एक लौ। पूजि मूरति सब तुम काहु ॥
बोलि मंगि सहु सिद्ध। फेरि दीनौ हुंकारौ ॥
ठाम ठाम संग्रहिय। फेरि धरियौ धुत्तारौ ॥
जो जनवि पंच उग्यौ अरक। तपत सिंधु सिंधि उत्तरिय ॥
द्वादसी दिवस द्वादस सकल। साहि धीर इकत करिय॥छं०॥८७॥

धीर के पकड़े जाने का समाचार चारों ओर फैलना। धीर के षवास "पैजल" का अधीर होकर अन्न जल छोड़ देना॥

कुंडलिया ॥ दह दह कोह दहत्त बिन। फिरि फट्टी पुकार ॥
बर षवास लंघन करिय। पानी पन्न अहार ॥

पानी पन्न अहार । धीर सुरतान थान गय ॥
जाम देव गध्धरह । मद्य आवाज साद भय ॥
मिलिय पलक दरवार। दुनिम लग्गी दर सोह ॥
गो सु पुरह गज्जनै । फिरिति फट्टी दह कोह ॥ ८८ ॥

वैजल षवास का स्वप्न देखना ।

कवित्त ॥ धालि रष्यौ पुंडीर । धीर धीरत्ति न रुष्य ॥
षग षोलंत विहथ्थ । सिद्ध चौवद्दिसि दिष्प ॥
जाम देव गध्धह नरिंद । मच्च छल सिर घटि नष्य ॥
ततारह पुंडीर । मेछ सिरदार न भष्य ॥
उध्धारि लियौ सुरतान पै । धीर न धीरत्तव डुल ॥
मनि हाम चंद चंदह तनो । छल विचारि षग्गन षुल ॥
छं० ॥ ८९ ॥

गहत धीर षावास । मत चरनंनि अरि रुद्दौ ॥
तीन सहस विच एक । सोस गुपती आलुद्धौ ॥
निसा मद्धि चमचमी । सीस झारी तन भग्गौ ॥
कूट वज्र भप तुटि । धाय सह परवत लग्गौ ॥
सत अद्ध कोस वाहत सुबर। फिरि पच्छौ आइय उकति ॥
षावास चंद पुंडीर रपि।प्रात उड्डगन तजहि भति ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ विपय वास वेजल सुबर । तन सोइ दिषि भय भार ॥
दिषि नरिंद लघन करै । पानी पान अधार ॥
छं० ॥ ९१ ॥

हम सहम्म ढिल्लिय सहर । गर्दन धीर सुरतान ॥
अट्ट सुपन विपरीत तय । बडव बड्ड कथान ॥ छं० ॥ ९२ ॥

ततारखां का धीर से कहना कि तूने यह क्या प्रतिज्ञा की ।

कवित्त ॥ मिलि पलक षान षट्टान । सोह सभा भरि मंडे ॥
तह सुधीर पुंडीर । आय उत्तर कर छंडे ॥
वे अदान नोदान । धात भजै धप लग्गौ ॥
जग रग चहु आन । देस देस घन लग्गौ ॥

गाजी गमार पुंडीर कुल। वाप भलेरा पुत्र बट॥
सुरतान षान दिट्ठान दिट्ठ। कित कुरान चिंतै [1]सुचट ॥छं०॥९३॥

शाह का सपना।

सुनौ षान तत्तार। साह लद्धौ सुपनौ निसि॥
है गै निधि चतुरंग। चिंति राजस तामस विधि॥
बर बंधे गजपति नरिंद। बोल बहु उच्चारै॥
वह वह कारि उच्चरिय। षग्ग अरियन सिर झारै॥
बिपरीत सुपन बानिक हुअ। कर बंधे न्रप बत्त बर॥
सोचयौ सुपन अहि डिंभरू। बर बंधत छुट्टे बि भर॥
छं० ॥ ९४ ॥

दर्शकों का बिचारना कि देखें हिन्दू कैदी को शाह क्या सजा देता है।

हरमहार सिंगार। गोष जाली दिसि जद्दै॥
षलक षोन उम्माहिय। साहि हिंदू दुअ बद्दै॥
कोतूहल आलम उदार। दल बद्दल उन्नै॥
हनै कि छंडै साहि। चढी चिंता चित दूनै॥
करतार जाहि रष्षे करां। ताहि रोम बट्टै कवन॥
रहिमान राम बट्टै कछू। ताहि निमष रष्षै कवन॥ छं०॥९५॥

कवि की उक्ति कि मारनेहारे से रखनेवाला बड़ा है।

दूहा॥ मारै जाहि रमा सु बर। तिनह न रष्षै कोइ॥
रष्षनहारो राम जिन। मारि न सक्कै कोइ॥छं०॥९६॥

एक आपत्तिग्रस्त हिरन की कथा।

कवित्त॥ एन एक आरन्य। चरन पारद्धिय दिष्षिय॥
ता पच्छ औसर पाई। फंद पारद्धिय षंचिय॥

(१) ए. को. सुचंड।

दिस दच्छिन कुकारन । करत घर धुरा सिंह सम ॥
उत्तर दिसा असाध । दग लग्गौ कारार दम ॥
चिहु दिसा रुकि आरिष्ट चव । कहा जान पावैं हिरन ॥
तिहि बार एण इम उच्चऱ्यौ । मो गुपाल रष्षहु सरन ॥छं०॥९७॥

अनल उट्ठि आघात । अनल उडि फद दहे तिन ॥
तब बलाहं बरसत । बुझ्यौ दावानल सो बन ॥
स्वान होत सनसुष्ष । धये जु बुक लगि पुट्ठं ॥
जात देषि म्रगराज । रीस करि पारधि रुट्ठं ॥
तानत धनुष गुन तुट्टयौ । चल्यौ एन बिन सक मन ॥
करुना निधान रष्षन करहि । ताहि मारि सक्कै कवन॥छं०॥९८॥

दूहा ॥ रष्षन हारो राम जिन　करि राषै इहि भाति ॥
बधिक सिचाना बधि रषै । पारापति दंपत्ति ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवि का कहना कि मरने वाले को कोई बचा नहीं सकता और इस विषय पर जयद्रथ की मृत्यु का प्रमाण ।

भुजंगी ॥ नव दून रष्षे जय जैतरथ्थं । तहां अप्प अग्गया धर तत रथ्थं ।
नव दून षोहं निपडी अछौनी । मिले पंड कुरषेत जैजरथ रनी ॥
छं ॥ १०० ॥

करी पैज पारथ्थ जैजरथ बध । तिन रष्षन जाय जैजरथ सिंध ॥
किय अग्गिहारी दछिनी छितान । तिय पुट्ठि षोन दिसा पूरि बान ॥
छं० ॥ १०१ ॥

भर भूरि सरना रथ रथ्थ थान । दर दूस दुरसासन सुष्षि बान ॥
गज गाज जल सिंधुता पुट्ठि ओपै । क्रत जास जुद्ध क्रत लोक लोपै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

दिसी दिस्सि बान समान सुदेह । मानो बाल प्रौढा सुनारी सुनेह ॥
अय तथ्य सारथ्थ देवकि पूत । हनै जुद्ध जैजरथ उडि सीस चित्त ॥
छं० ॥ १०३ ॥

इते षंषनी साजि जैजम्ध भष्षै। वधै देव क्यौ ताहि हरि देव रष्षै ॥
इतै वीर विश्रवास करि धीर बोल्यौ। पछै पंषनी साथ जैजरथ तोल्यौ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

शाह का धीर से कहना कि प्राण का मोह करने वाला क्षत्री सच्चा नहीं है।

दूहा ॥ मिले धीर पुंडीर वर। वर गोरी सुरतान।
बोलि बीरवर धीर कों। चित साले चहुआन ॥ छं० ॥ १०५ ॥

कवित्त ॥ सें पुच्छै सुरतान। अवे तूं चंदह नंदन ॥
तोहि विरद इम कहै। अप्प वर बैर निकंदन ॥
अवसानह संकरै। जीव रावत जो बंचइ ॥
ता जननिय को दोस। मरत षची जो संचइय ॥
इह जीभ हाड बाहिर पिसुन। एतो झूठ न झंषियै ॥
कहुं धीर लाज कारन कवन। प्रान राषि पति मुक्कियै ॥
छं० ॥ १०६ ॥

धीर का उत्तर देना कि मेरा जीवन अपनी पैज निर्वाह के लिये है।

न मैं षग्ग संग्रह्यौ। न मैं सिगिंनि कर मंचिय ॥
नहुं टार्‍यौ टंकुर्‍यौ। पति लग्गत तन संचिय ॥
टर्‍यौ सु हूं जोगिंद्र जानि। धीर धीरं तन गह्यौ ॥
चाव द्दिसि विंटयौ। षुंदि षुंदहि मन रह्यौ ॥
बुल्ल्यौ जु बोल चहुआन सौं। सो न बोल छंडै हियौ ॥
गहि साहि हथ्थ अष्पन कह्यौ। ताहि पैल कारन जियौ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बादशाह वचन।

पत्ति पैज संसही। पैज पति ही सों बंधी ॥
पत्ति सरन पति मरन। सूर पति पति सों संधी ॥

पति रत्तन संसार । गयौ पति हथ्थ न आवै ॥
कोटि वत्त जो करै । पत्ति रख्खौ बल गावै ॥
पति गये मरन दीनै नहीं । सो पति तन किम संग्रहै ॥
आदर सु पत्ति दीजै जगत । ते पति रन संग्रहि रहै ॥छं०॥१०८॥

धीर पुंडीर वचन ।

है पत्ति पत्ति कुपत्ति । सही पति मो धीरह धरि ॥
धरी जु अधरी होंहि । सही पति नेह होइ नरि ॥
इही काज है पत्ति । धीर बोल्यौ परमान ॥
कक बक करि साहि । कह्यौ बंधन चहुआन ॥
सीस सम सम अच्छिर लिपी । मैं अरि बंधन साम उर ॥
करतार हथ्थ केती कला । तौ करौ पत्ति सची सु धर ॥छं०॥१०९॥

बादशाह वचन ।

सुनत आप सुरतान । धीर चंदो नहि चुक्कै ॥
जो दरोग पुंडीर । धाहि गोरी गहि मुक्कै ॥
सुद्ध जुद्ध संग्राम । षेत षुरसान पिसावहि ॥
ता दिन धार हिसार । कोट चढ्ढह तन पावहि ॥
धीर नाम ता दिन लही । कहहि काम आपर कहहि ॥
राजान काज पुंडीर न्रप । च्यार दिसा बध्यौ रहहि ॥छं०॥११०।

धीर पुंडीर वचन ।

पैज काज पारथ्थ । नाथ दुरजोधन भज्यौ ॥
पैज काज श्री राम । लंक दसकंधर गंज्यौ ॥
पैज काज श्री कृष्ण । कंस मथुरा महि मार्‍यौ ॥
पैज काज बलिराये । रूप बामन करि गार्‍यौ ॥
हु पैज काज बंधन सहिस । तुम बंधन षप्पे नहीं ॥
ज्यों तेल नीव वपु तिलक्षही । ते साहि इसी वत्तौ कही ॥छं०॥१११॥

बादशाह वचन ।

धीर नाम तुहि धरिग । धीर रन होय तो जानौ ॥
भरनि चंड धर संड । नयन दिट्ट सुलतानौ ॥
नेज अग्र धज अग्र । अग्र बंबरि ढाहानौ ॥
अग्र बान कम्मान । पंष विद्धहि दीवानौ ॥
जंबूर नारि हथ नारि घन । धन अवाज फुट्टै अगा ॥
हक्का हहक्क फुट्टै हिया । तब न कोय लग्गै मगा ॥छं०॥११२॥

धीर पुंडीर वचन ।

तं दीठी तिहि बेर । साहि तत्तार न सग्गा ॥
बजि अवाज जंबूर । छोरि षुरसानी भग्गा ॥
अप्पानी धर बत्त । मत्त ओही तूं जानै ॥
जे दद्धौ होंहि दूध । फूंकि सों मही असानै ॥
हौं धीर धीर पग मंडिहौं । जो तुम परषन पग मंडिहौं ॥
म्रगराज हाक ज्यौं म्रग्गनिय । यों देषत सत छंडिहौं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

सोई सेर जिहि सेर । भरकि कुंभी कुंभ भंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । गाज अप्पन बल गंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । पुंछ पटकत धर कंपै ॥
सोई सेर जिहि सेर । देव दानव जिय चंपै ॥
सोइ सेर साहि गहिकर करन । अजापुत्त जिम आनिहौं ॥
मुष बोल सास जो धीर हिय । तो पकरि लेउं सुरतान हौं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बादशाह वचन ।

पुनि जंपै सुलतान । धीर तैं झूठौ बोल्यौ ॥
किन सायर थाहयौ । मेर किन हथ्थह ठेल्यौ ॥
किनै सूर संथह्यौ । किनै सपन धन पायौ ॥
कौन सिंघ सो छुट्टि । षेलि जीवत घर आयौ ॥

सुलतान दीन साहाब सों। एतो झूठत तू कहहि॥
जिहि सात फेर हथ्थी फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहि॥
छं० ॥ ११५ ॥

धीर पुडीर वचन।

जो विषधर विष अधिक। तौ गरुड सौ धव्वंस मंडय॥
जो गल्ल धम्मै सिंघ। तौ कोरि कुंजर वन छंडय॥
जो घन सघन मिलंत। तौ पवनं परचंड निकंदय॥
जो पसरहि रवि किरन। तौ कुह फट्टय धग वंद्य॥
जो राह चंपि चंद्ह गहहि। तो का तारायन रष्पनौ॥
जहिनह साहि चहुआन रन। तहिन धीर परष्पनौ॥
छं० ॥ ११६ ॥

बादशाह वचन।

वे हिंदू के कुफर। बोल भी कुफरे कहूं॥
गामी गल्ह गमार। रोस अपनौ ना छडै॥
बंधि लिया बलहीन। मरन को काहे चाहै।
जब उदर जम श्रहै। गुरब सो लाता वाहै॥
पैज पटंतर सब सही। जब कछु देपि दिषाइयै॥
हु हु करत अप्पन मुपै। रासभ ओपम थाइयै॥
छं० ॥ ११७ ॥

धीर पुडीर वचन।

रवि न उगै अथ्थवै। चंद चंदनो ना छंडै॥
कोड करकै उंढ। वसुह बासग भरु छंडै॥
पवन थक्कि थिर रहै। अरु जलधिहि जल घुट्टै॥
मेर डरै डग मगै। धूअ तुट्टै रवि छुट्टै॥
जौ ना जियत साहहिं गहौ। जौ न पग्ग पारौ खवरि॥
तौ बोल धीर धरनी पिसै। वसै न हर अंग्रह गवरि॥
छं० ॥ ११८ ॥

बादशाह बचन।

बे हिंदू नादान। साहि पावस पल्लान्यो ॥
है गै घंट निसान। नाग मुतिनि घर आन्यौ ॥
हम हमीर हलबलै। करे द्रिगपाल दसौं दिसि ॥
कामट विमट होय पिट्ठ। डिट्ठ ठढ कोल डुला धसि ॥
हाकंत हक्क कंपै भवन। तहां तूं मो सम्हौ भिरै ॥
आदान बंध हिंदू सहर। गसहां करि मिट्ठे चरै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। बात संभरि इक मेरी ॥
तो अग्गें मैं बहुत। गल्ह अष्षी बहुतेरी ॥
बयना बल बंधिया। बयन रहसी संसारा ॥
तबहि हक्क बज्जसी। सब जानसी जहारा ॥
आवड्ड साहि सन्नाह कसि। षग्ग मार मचायहौं ॥
गहि साहि आन चहुआन पै। बंदर जेम नचायहौं ॥ छं० ॥ १२० ॥

बादशाह बचन।

तब गोरी सु बिहान। धीर पुच्छै सुमत्ति कल ॥
देव द्रष्ट बंधिहै। मंच बंधिहै कि संसल ॥
छलकि प्राण बंधिहै। सपन बंधै सुविहानं ॥
देव केव अवतार। हाम बंधन परमानं ॥
बंधिहै बंधि रसनह सुबल। सच बंधन जो छुट्टि है ॥
को मंच बीर आरिष्ट बल। कै भूत फिरस्ता छुट्टिहैं ॥ छं० ॥ १२१ ॥

धरी पुंडीर बचन।

उदर ताम उच्छरय। जाम बसि परि न बिलारह ॥
मच्छताम तरफरय। जा मनह रुग्य उआरह ॥
गंवर ताम गहुवय। जा मनह केहरि गज्जाय ॥
हिरन फालतां करय। जा मनहि चीतो सज्जाय ॥

सुमेर ताम गरु अत्तनह । जब न हनू गह्न करि कटय ॥
अस मस समूह दल तन्न वल । जब न धीर पष्षर चढय ॥
छं० ॥ १२२ ॥

बादशाह बचन ।

रे धीर झ्रूंठ चितवत । सेस सम्भै न अनि पर ॥
दस सत फंन समूह । जीह बिय बिंब बीय चर ॥
मरद जु मुष्य उचरै । जु कछु मग्गै भर भीर ॥
तिन साह को थाप । डरै अव वधन धीर ॥
हम कहु अधर बहु बढग । बढिगे भीर मीरा करसि ॥
जम हथ्थ परै जो छुट्टिहो । तौ सामि वचन करिहौ परसि ॥
छं० ॥ १२३ ॥

धीर पुंडीर वचन ।

कहै धीर सुलतान । आन जसोल साहितौ ॥
जब ढाला ढीचाल । माल उथ्थाल देषिसौ ॥
आषाढा डंडूर । तुट्टि तरवर तन पत्तिय ॥
उट्ठि सेन जल जेम । रेनि घल्लो गल वथ्थियय ॥
जिहि तेज तुग लोगहि तरनि । जनु अयास फट्टै किरनि ॥
ढैवाह द्रुग्ग मत्तह भिरन । जन विसासि हिंदू नरन ॥
छं० ॥ १२४ ॥

बादशाह वचन ।

ढिल्लिय ढाहि अवास । पकरि चहुआनह दंडो ॥
मोरों मत्त गयद । सज्जि सब सेन विहंडों ॥
चौरासी मंडली बंधि । अप्पन घर आनौं ॥
घैरावत सुनि वात । पैज अप्पन परवानौं ॥
सुरेतान कहै साहाब दी । पिनक गुसामन महि धरौं ॥
गढ़ भूमि बक्त तौ ढाहि करि । रनवासौ घर घर करौं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

धीर पुंडीर बचन।

गज्जि षेउं गज्जनौ। सार सुरतान बिहंडौं ॥
भारौं मेछ मसद। टेक मनमहि नहिं छंडौं ॥
कारौं जंग जल्लाल। हाल देषै तुहि अष्षिनि ॥
नचहि बीर बेताल। जुद्ध पूरौं पसु पंषिनि ॥
बहौं जु पहुमि पंजर पलन। बलह अप्प कह मुष कहौं ॥
इह सच्च रंच झुट्ठिय नहौं। तौ पति सुपंच मझ्झह लहौं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

बादशाह बचन।

गर जंजीर संकरिय। पाय बेरी को कट्टइ ॥
षनि न गड्डि गड्डियहि। तेज बल सबें निघट्टइ ॥
तुहि धीरंतन नाम। पान पीपर लौ डुल्लहि ॥
लज्जाहीन हिन लज्ज। बचन फुनि फुनि कहि बुल्लहि ॥
जितौंब कालिह ढिल्लिय नयर। समर न को संमुह रहय ॥
सुरतान कहै साहाब दी। तब पयज्ज किम निब्बहय ॥ छं० ॥ १२७ ॥

धीर पुंडीर बचन।

तोरौं तरपि जंजीर। थाट मोरौं साहन तुअ ॥
मोहि बचन नहिं टरहि। गंग नहिं बहै अटल धुअ ॥
कौर भार उत्तरहि। सात सायरनि दिगंतर ॥
बरुन बयन पिट्टियहि। काल पिष्षियहि निरंतर ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरय। कौंन झूठ झंषै बयन ॥
गहि पातिसाहि राजन अपों। इह चरित्र पिष्षौं नयन ॥
छं० ॥ १२८ ॥

बादशाह बचन।

वे हिंदू नादान। बोल बौलै सिर पष्षै ॥
कौं ढंकै असमान। कौंन सायर मुष भष्षै ॥
किनें पवन झिल्लिय। किनें गहि बासग नथ्था ॥

किन जमरा जित्तिया। किने कद्रप्प सुमथ्था॥
वडा जु बोल मुषन्ह निया। इता बोल सिर पर धरै॥
सुलतान कहै पुंडीर सुनि। इह क्यो ही पूरी परै॥
छं० ॥ १२९ ॥

धीर पुंडीर वचन।

घन अंबर ढकिया। अस्ति सायर मुष पिन्ना॥
योग पवन झेलिया। किसन गहि वासग लिन्ना॥
गोरष जम जित्तिया। हनू कद्रप्प न लग्गा॥
हुवि अग्गै सुलितान। भिडे कोई दिन भग्गा॥
चहुआन साहि दिनई समर। सजि चतुरंगम चढ्ढयौ॥
अथ्थाह नीर ढीमर जिमि। सुमीन तनौ परि कढ्ढयौ॥
छं० ॥ १३० ॥

बादशाह वचन।

हालौ हसम हमीर। कोट हिंदू दल षुंदों॥
आन साहि जलाल। जोर जोगिनिपुर रुंदों॥
वेकुसाव आसा गमार। गरुअत्तन गामिय॥
बोलाही रावत्त। यम फुट्टै बहु नामिय॥
आहत्त घात आमिष्प जिम। ग्रामी ग्रव काट्टो रसै॥
मति नसै प्रान रष्षै पुरिस। छची छल छंडै हसै॥
छं० ॥ १३१ ॥

धीर पुंडीर वचन।

छल छंडै सुरतान। बलनु छंडयौ जिहि बधौ॥
जीय रष्यौ पतिसाह। जियत पति साहह सधौ॥
तन रष्यौ तजि टेक। तेग रष्यौ बुद्दि आलम॥
जब ढको करिवार। ढोल लग्गौ मुष लालन।
गल गात घात रष्षै जलै। दूध विनट्ठौ दूध हिय॥
लजनीय साहि गज्जन मनह। धीर पयपै अरथ विय॥ छं०॥ १३२॥

बादशाह वचन।

जे दरिया उत्तरिग। पलह पडुरे न कल्लय॥
जोगिनि बर गंजरिग। पवन पन्नरे न हल्लय॥
जिन भैरूं भरमंत। ते डरें डंकनी न डक्कं॥
जिन पंचाइन धक्क। ते जाहिं जंबुक न हक्कं॥
हों गोरी नरिंद दैवान गति। नंद पुंडीर न चंद सुअ॥
सामंत लाष सथ्थं मिल्लय। सहै न साहस अम्म सुअ॥छं०॥१३३॥

धीर पुंडीर वचन।

सोई पारथ भारथी। नमें निकस्यौ मुष को बनि॥
सोइ किस्न करतार। दुक्यौ स निडर गरहावनि॥
सोई सूर बलसूर। राह गलि जाय गहंतह॥
सोई थाह गजराज। चक्क करि हन्यौ भ्रिकंतह॥
मति करै साहि मन गर्व तुअ। छिति नाम जोहै छत्रिय॥
निर बीर पहुमि कबहूं नहीं। वडा वडेरी बसु मतिय॥
छं० ॥ १३४॥

बोल बोलि चहुआन। बचन सो बचन पलट्टौं॥
फुनि हम चढ्ढि पुंडीर। तोरि तासह नहि मिट्टौं॥
तीन लाष उमराव। सहस संभरि सत्तरि वै॥
इह जानि जोनि यान। करै सरहन सब नर वै॥
गज अगंज भूपति सरन। गोरी सयन निधट्टिहौं॥
इम कहै धीर सुरतान सौं। बाउ बहंतौ कट्टिहौं॥छं०॥१३५॥

हौं दरोग जो कहौं। सूर उग्गै पच्छिम दिसि॥
हौं दरोग जो कहौं। इंद उग्गमे कुहुं निसि॥
हौं दरोग जो कहौं। बचन चुक्कै दुरवासा॥
हौं दरोग जो कहौं। बोल बोलै बिन सासा॥
बोले सुधीर जो बोल मुष। तो पाहन रेषा सरिस॥
पतिसाह हथ्थ साहों नहीं। तौ चंद पुत्त जायौ न अस॥
छं० ॥ १३६॥

बादशाह बचन ।

इह द्रोग बोलत । परै दो जिय चढानौ ॥
इह द्रोग बोलत । सेन हसिहै सुलतानौ ॥
इह द्रोग बोलत । लाज छुट्टै पति घट्टै ॥
इह द्रोग वसि जीह । लीह पचै सब सट्टै ॥
बड्डा न बोल बड्डा कहै । चाड परतहं जानियै ॥
धावत धीर से धावनो । ते रावत वष्पानियै ॥ छं० ॥ १३७ ॥

धीर की बातें सुनकर तत्तार खां का तलवार की मूठ पर हाथ रखना ।

सुनै बोल सुलतान । धीर समु जे भट्टिय ॥
वे काजे हाजुर । गमार नोजुर ह्वै वट्टिय ॥
तपित षान तत्तार । मुट्ठि तत्तार सु सग्गिय ॥
पचि कान आवरन । दिट्ठ सुरतान जु ढग्गिय ॥
विथ करै दरस आलम चरित । मुहि सुं चच बचा बगसि ॥
आनद चद बचा इहा । मुनि सु गल्ह लग्गै रहसि ॥
छं० ॥ १३८ ॥

तत्तार खां वचन ।

एही गल्ह सुनत । गाल फारो लगि कान्नौ ॥
एही गल्ह सुनत । षाल कड्ढौ दुहु दन्नौ ॥
एही गल्ह सुनत । प्रान कड्ढौ अप्पानिय ॥
एह रम्य आरम्य । द्रोह लग्गौ सु विहानिय ॥
आदिट्ठ पिट्ठ हिंदू अह । कै कुरान गड्ढौ गला ॥
चढि तुरकवान हिंदुवान दिसि । हल सहाय कीजै हला ॥
छं० ॥ १३९ ॥

(१) ए सच्च ।

धीर पुंडीर वचन ।

वे कायर बल हीन । पकरि सिंगिनि क्या तोलै ॥
वे ततार गामी गमार । साहि अग्गैं क्यौं बोलै ॥
अग्गैं आउ मेदान । ज्वान मरदुन मुष जोरहि ॥
जानि अजा गहि सिंघ । हाड़ पवनं तन तोरहि ॥
कोतिग्ग साहि आलम निजर । षेत भंजि भूको करों ॥
दस षान और तुम दक्खिलै । मैं चंद वचा तुमतें डरों ॥छं०॥१४

तातारखां वचन ।

अरे धीर नादान । बोल बोले वरवंके ॥
चढ़त साहि साहाब । दीन तीनो पुर संके ॥
तुम पतंग जड़ जीव । क्यों सुदिग पालन मोरे ॥
अति सूरौ जो चना । होइ पव्वय फुनि फोरे ॥
बोलियहि बोल अप्पां सरिस । वे म्रजाद वचनह न कहि ॥
करि रहम साहि राष्यै तुम्है । नतरु षबरि अबही लहहि ॥छं०॥१४

धीर पुंडीर वचन ।

कहै धीर तत्तार । षान सुनि बत्त हमारी ॥
चढत साहि साहाब । दीन को सहै सहारी ॥
हों सुधीर पुंडीर । एक लष्षा दह जानों ॥
तुम देखत हरि साहि । सेन समुह सु भानौ ॥
तुम तुरक मान हिन्दुअ सु हम । हम तुम पटंतर कहौं ॥
हम परत स्वामि परहथ परें । तुम परहथ जीवत रहौं ॥छं०॥१६

ततार खां का कुपित होकर धीर पर तलवार उठाना और शाह का हाथ धर लेना ।

हाला हल्ल किय नेंन । हथ्थ तत्तार पथारह ॥
छीन लिये सुरतान । रोस देषंत अपारह ॥

या वुद्दें या वुद्द। याहि छंडै जु वडाइय॥
पुछै पा षुरसान। अग औसाफ चढाइय॥
आदान वध हिंदू इहा। अदुाई सवां करहु॥
पट्टाय चंद वचा घरो। पच्छैंही चपौ धरहु॥
छं० ॥ १४३ ॥

धीर पुंडीर वचन।

जे जीवहि अगमै। सही ते जमहि न भग्गै॥
जे कामहि मद महे। लहकि ते कुलहि न लग्गै॥
जे स्वारथ संदेस। देह दप्पै न परप्पै॥
जे जोगह जगमै। नेह नारी न निरप्पै॥
डऱ्यौ न साहि ड वर डरनि अमर लगि इक्को सयन॥
मो धीर नाम अछार धरिग। चंद पुत्त जम्महु भय न॥
छं० ॥ १४४ ॥

बादशाह का धीर के बल की परीक्षा के लिये उसे उत्कर्ष देना और धीर का वृक्ष उखाडना।

साहिबदी सुरतान। कहत पुंडीर धीर सुनि॥
धात पभ मे सग। फोरि तैसो बल्ल करि फुनि॥
सुह अग्गै दरखत। पान इहि बधत हथ्थिय॥
सो नपो उपारि। जोर दिष्षै सब सथ्थिय॥
हनुमान लंक जिम चंदसुत। वढि गुमान हिमगिरि सिखर॥
धक धूनि वथ्थ भरि हथ्थ गहि। जर समेत वेजर उपरि॥
छं० ॥ १४५ ॥

शाह का धीर से कहना कि मांग जो मागना हो।

दूहा ॥ षूब षूब सुरतान कहि। षूब धीर बल तुझ्झ॥
मगि मगि जो मगना। सोब समप्यो तुझ्झ॥
छं० ॥ १४६ ॥

श्लोक ॥ यावत् दरिद्री सोपि। यावन् साहि न द्रष्टया ॥
लिलाट लिखितं धाता। दारिद्रनो पलायते ॥ छं० ॥ १४७ ॥

धीर का कहना कि मुझे किसी वात की भूख नहीं केवल तुझे पकड़ना चाहता हूं।

कवित्त ॥ ज दिन जननि हों जनिग। त दिन बाजे बहु वज्जिग ॥
तद्दिन बंस पुंडीर। विरद बानै मुहि सज्जिग ॥
तद्दिन मान महंत। तद्दिन पट्टो लिषि हथ्थह ॥
तद्दिन गाम कुट्ठार। राव रावत मुहि सथ्थह ॥
असपत्ति सेन दल गंजि हों। धीर नाम ताद्दिन लहौं ॥
बासन पसाव ताद्दिन लहों। जवहि साहि जीवत गहों ॥
छं० ॥ १४८ ॥

बादशाह वचन।

चंद नंद मति मंद। तोहि परतीत हियै यह ॥
आसानी असपत्ति। जुद्ध करि कै लैहूं गहि ॥
जुद्ध करत जो मुओ। मोज इह किन कों दिज्जै ॥
इह संसार निरास। आस छिनह्न नह किज्जै ॥
नपनंद निड्डि न विगड जड। सो जल को जल मे रहिय ॥
करतार मोज रोजी करत। इह मनुष्य हथ्थह नहिय ॥
छं० ॥ १४९ ॥

धीर पुंडीर वचन।

जब लगि पंजर सास। आस तब लगि ना छंडौं ॥
जब लगि हियै हुंकार। साहि दल बल करि षंडौं ॥
जब लगि कर पग जोर। मानि मच्छर नह मेलौं ॥
जो काया कायंम। ठाट साहिब क्रम टेलौं ॥
सुलतान षान उमराव सह। गह गहिये गुर गाहिहौं ॥
इहि हस्त हथ्थि भंजे हलक। सही साहि तो साहिहौं ॥
छं० ॥ १५० ॥

शाह का धीर को सिरोपाव और निज का घोड़ा देना।

तव हँसिय साहि सुरतान। उच सिरपाव मँगायौ ॥
जो सुरतानह पाट। तुरिय सोई पल नायौ ॥
राग वाग पष्षर समेत। तही तुरत निवाज्यौ ॥
पऱ्यौ निसानन धाव। जानि विय भद्रव गाज्यौ ॥
चौदह सै गैवर गुरहि। सहजहि सेन समूह दल ॥
सुरतान कहै साइावदी। अब किन सज्जसि आव वल ॥
छं० ॥ १५१ ॥

धीर का घोडे पर चढ कर कहना कि इसी घोड़े पर से तुझे पकड़ूंगा।

जयौ तुरी चढ़ि मन। वीर चवदह सें सथ्यह ॥
मन अव्व पुडीर। साहि ग्रहिहौ से हथ्यह ॥
विझुारो गज जूह। सुड मुडन महि पिट्टौं ॥
तीन लष्प सत्तारि। सहस कारिवर वर कट्टौं ॥
जित्तेव अत्र हिंदू तुरक। भिरौं वदकि पचारि रन ॥
पुडीर धीर इम उच्चरै। मम स कहि सुरतान मन ॥ छं०॥१५२॥

शाह का कहना कि तू चल मै भी तेरे पीछे आया।

तेक दीन काव्वाय। तुग तेजी दह वाहिय॥
जर जीना स जोइ। रेसरय सनमुष छाइय ॥
लै हिंदू आदान। जाय चगा पच्छाइय॥
हो आयो तो पच्छ। लष्प लोहा सम्हाइय ॥
सलाम आलि आलम करि। सामता सथ्थ कहौ ॥
ज गाह राज वेज्जै भरा। तुम राकी कानी रहौ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

धीर पुडीर बचन।

जेते जिते कवोइ। साहि मोदी में हथ्यहि ॥
वे हिंदुअ वे मुसलमान। काथ्था वे काथ्यहि ॥

मे गहुड़ा सच्चाव। साहि जो जंग न नंचा ॥
जो जंग न नंचिया। तो साहि गहुड़ा में सच्चा ॥
अप्पाह बोल बप्पां हलै। अप्पां बोल सु हथियया ॥
चंगोह चंद बचा बचन। इह सलाम करि कथ्थिया ॥छं०॥१५४

धीर पुंडीर को पान देकर बिदा करने के बाद शाह का देश देश को परवाने भेज कर सहायक बुलाना और चढ़ाई की तैयारी करना।

धीर हथ्थ दिय पान। षान षुरसान निसानह ॥
कदलि वास कैलास। रोह ठुट्टै फरमानह ॥
हबस रूम गप्परिय। भोज भष्पर भर मारिय ॥
अंग कुलंग तिलंग। देस नंदन निरवारिय ॥
जल्लाल दीन नंदन नवल। सुनि अवाज इहि निज रुकिय ॥
पुंडीर धीर पच्छै पहर। मिलि मिलान जोजंन दिय ॥छं०॥१५५

धीर हथ्थ दिय पान। पच्छ निसान जु सद्दे ॥
षान तेग तत्तार। तरपि कस उप्पर बद्दे ॥
दह दीहा आलंम। गंभ गंभीर उपट्टे ॥
जाने बद्दल उत्तरा। देस दच्छिन पुर छुट्टे ॥
आडंड षंड जोगिन पुरां। धरि लग्गी संभरि धरा ॥
प्रथिराज देव उप्परि दपत। इह हल्ली यह बेघरा ॥छं०॥ १५६।

शाह की सुसज्जित सेना की चैत्रमास से उपमा वर्णन।

सज्जि फौज सुरतान। अग्ग माधव रिति जानिय ॥
पच लता वैरष्प। पहुप जंडा सनमानिय ॥
छच नूत मंजरि समान। ढाल नव ब्रष्प पवन हलि ॥
गज्जि गहर नीसान। जोर जल्लाल उमड़ि चलि ॥
सजि फौज मंत गरजंत अग। मनहु पवन बद्दल हलिय ॥
कहि चंद बंद बरदाइ बर। देषि धीर मन मद्द रलिय ॥छं०॥१५७

घरीय तीन रवि चढिय। चल्यौ गोरी नरिंद वल॥
रत्त डंड सदूक। रत्त धज चोर साहि पर॥
रत्त गजनि गज झंप। रत्त वैरष वर टोप॥
अग्गै पान रती सनाह। रंग रनवी वर ओप॥
ओपम एह कविचंद कहि। देषि सुवर सुलितान वर॥
पहं जीत राह रवि सरस हुअ। मनो जत्त किय भोम वर॥
छं० ॥ १५८ ॥

शाही सेना का आतंक वर्णन।

चलत रेन रवि लुक्कि। चक्क चक्की चप ढरयौ॥
सेस भार कलमल्यौ। कुंभ आरभरि डरयौ॥
सरिता जल मुक्कयौ। नीर साहन नहि पुरयौ॥
हय हय हय उच्चरत। चक्क चक्की विसु चरयौ॥
अंधियार भयौ वासुर असत। दिसा विदिसि सुभझै न तह॥
साहावदीन चालत दल। डरहि राय अत मंडलह॥छं०॥१५९॥

शाह के कूच के समय अशकुन होना और तत्तार खां का कूच बंद करने को कहना।

भुजंगी॥ चल्यौ साहि आलम तें चित्त दूनी। मिली वाट वाराह नौडार सूनी॥
रथं मिच नीच फिकारंत फेकी। उडी ग्रद्ध पच्छ मनो मोन केकी॥
छं० ॥ १६० ॥
जरी मग्ग मंजार द्वै सहस जनी। परी वूंद आकास ते श्रोन दूनी॥
चल्यौ उट फेकी फिकारंत केस। सित चीर नारी सु मुष्प उदेस॥
छं० ॥ १६१ ॥
परयौ पंजरी कोक पूके पुरान। जरी लोह भट्ठी सुदेषी सुरान॥
गही वग्ग फेरी ततार सुभाई। रहौ आज दीह जमाराति साई॥
छं० ॥ १६२ ॥
पठं पै जपै गॅवरं निवारी। कहै देव देवं गरब्बं पहारी॥
मन मति छंडी विमास अधारी। रच्यौ षेलमंडी सुश्रीला विहारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

दहं रोज रोजं करी बंध बंधी। धरैं ऐन चहुआन सो स्वामि मंधी।
हूआ एक असा तनी आलि छंडो। दई एक देहं तनौ तौन पंडो॥
छं० ॥ १६४ ॥

शाह का कहना कि वह परवरदिगार सब जगह पर है फिर शकुन अशकुन क्या?

कवित्त॥ सुनौ षान तत्तार। तेग सहै सुष सद्दा॥
जो कर इक्क तनीय। रोजगारो नफअंदा॥
वली अली आदंम। पैन पैगंबर कीनो॥
वे भूले तुम जान। किसव जिन तेग न लीनो॥
पलटे भेष छंडौ दुनी। षरस पीर हाजुर निजर॥
गज नेज साह गोरी घरां। करि निवाज बंदहु सफर॥छं०॥१६५

जहां पीर पर सिद्ध। बंग जिहि ठाम न दिज्जिय॥
जहां मुसाफ नह पठय। कतेब कुतवा नव चिज्जय॥
जहां सुनाहि कुरान। नही महजिद घर पर किन॥
परै न गाय लिज्जै। षुदाय रेजा करि वारन॥
जहां हुकम नाहिं काजी करत। तुरकनि षनि गड्डिय जहां॥
सुरतान कहै साहावदी। सो जिहान हमको कहां॥छं०१६६॥

शाह का मीरा शाह के समय की घटना का प्रमाण देना एवं मीरा शाह का संवाद वर्णन।

रोसन अली फकीर। गसा रमता अजमेरं॥
दही मोल ले चषत। हुआ षट्टा दिय फेरं॥
गुजरियां पुक्कार। जाय दरबार सितावं॥
हडी भिंटी गुनहि। काटि अंगुरि बिन जबाबं॥
मक्कां सु जाइ फिरियाद करि। मीरां सैद हुसेन अग॥
नौयति षुदाय मद्धत करन। इह अभ्रिय मन धरि उमग॥
॥ छं० ॥ १६७ ॥

दूहा ॥ मरना जाना हक है । जुग रहैगी गल्हा ॥
सा पुरसों का जीवना । थोडाई है भल्ला ॥ छं० ॥ १६८ ॥

मुसल्मानी लश्कर का सौदागरों के भेष मे अजमेर आना ।

भुजंगी ॥ कहै दीन कज्जं परस्से कुरान । करौं रद्द मद्द सवै हिंदवान
नमै पीर पैगंबरें थान मक्का । रहा वत्र नाम जुग च्यार चक्का ॥
॥ छं० ॥ १६९ ॥
दिन सत्त हुते सु वीवाह अड्डे । कर काकन सेहरा वंधि चड्डे ॥
तन मन एक चोआलीस त्यार । चले सग सौदागिर रूपधार ॥
॥ छं० ॥ १७० ॥
जल पथ के अद्ध अच्छे उतंगा । पुलै नाव ज्यों तीर वेग विहंगा ॥
दरश्चाफ जरदोज जरकस्स भ्रूल । रहै नेक चष्प ढकै मष्पतूल ॥
॥ छं० ॥ १७१ ॥
इसे अश्व लीयें धरा हिंदवान । दियौ आय डेरा अजम्मेर थान
दरबार जाए कह्यौ मीर पीर । सतसुष्प उभ्भै रहे हथ्थ जोर ॥
॥ छं० ॥ १७२ ॥
हय हेरि ल्यायौ पधाई सुगड्ढ । रवी अर्थ कै काल्ह दधि मथ्थि का
सुनै कान आना महीपत्ति आय । सबे छोरि फेरें तुरंगा दिषाय
॥ छं० ॥ १७३ ॥
धुरी ए विद्याचा वको राह गौर । रहव्वाल चलै न हल्लै सरीर ॥
दमान क कुद्दत नाचत थाल । निरष्षे परष्षे हरष्षे भुआल ॥
॥ छं० ॥ १७४ ॥
मुह मगि दाम करे कौल बोल । लिहे पच सें हैवर हेरि मोल ।
जमा जोरि मडै सवा लष्प दाम । लिये कागदे कायथ अक ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥
करे छाप आप बुलाए हजूर । सनमान चहुआन रष्षै गरूर ॥
गयो सभरीनाथ दै हथ्थ बीरा । करे चूक सक्यौ नही तथ्थ मीरा
॥ छं० ॥ १७६ ॥

अजैपाल जोगी करामात अग्गं । उठे हथ्थ नाहीं मनों कीनि नग्ग
निवाजं गुदारे दियं बंग जब्बं । गये देव हिंदून के भज्जि तब्बं ॥
॥ छं० ॥ १७७ ॥

करं काफरं जो इहां मौत दीजै । मसूरत्ति कीनी दही पीर हौजै ॥
तिन कारनं अप्पने हथ्थ अप्पं । कटे सीस वेगं चलो पुट्टि धप्पं ॥
॥ छं० ॥ १७८ ॥

इलल्ला महमंद रस्सूल इल्ला । कलम्मा पढ़ै जोर किन्नो सुकील्ला ॥
मिले आप मेसं मुषं दस्त चूमें । इसे सेर ज्वानं भये दोइ घुमौ ॥
॥ छं० ॥ १७९ ॥

तिनं षिच्चि बिज्जू जिसी तेग कढ्ढीं । चमक्के घरंको चरं सहस अढ्ढीं
॥ छं० ॥ १८० ॥

कवित्त ॥ चौआलीसों यार । कढ्ढि नंगी समसेरं ॥
कर कढ्ढे सिर अप्प । चढें बिंटली सुरमेरं ॥
हिंदू मूसलमान । जुरत हय गय घन पायल ॥
चहुआन आन। नरिंद । जीति उग्गो अजरायल ॥
कटि लीन भिन्न होइ मीर परि । अमर रषिओ साफ धर ॥
तहि थान आय दरवेस इक । ढवाज मोंनदी बंधि धर ॥
॥ छं० ॥ १८१ ॥

सवासेर दिन मान । आनि तहं पुहप उच्चारत ॥
रज कंकर करि दूर । धूर हड्डियां बुहारत ॥
जमाराति दे सुपन । मीर इह कीन हुकंमं ॥
तुम ऊपर चढ्ढि है । सवामन सदा कुसंमं ॥
अजमेर पीर तुम प्रगट हो । कितक दिवस के अंतरै ॥
हिँदवान पान घटिहै अवनि । इहन कोल हम परत रै ॥छं०॥१८

उक्त संवाद सुनाकर शाह का कहना कि दिल को मजबूत करो और चलो ।

दूहा ॥ इहसु कथ। कहि साहि सों । फुनि अष्षिय तत्तार ॥
कायर पन मन छंडि दे । धीर पकरि गहि सार ॥ छं० ॥ १८३

तत्तार का मोरचे बंदी से आगे कूच करना और एक पड़ाव के फ़ासले से बराबर धीर के पीछे पीछे चलना।

कवित्त ॥ तू आतुर पतसाहि। हाम हिंदू सामंता ॥
जोरा सों ज्यों जक। बघघ छंडे धावंता ॥
में मता सुलतान। मुभ्भ सुलतानां मेला ॥
करि मेला भंडार। जग होइहै सुष षेला।
ठिल्ला पहार ठट्ठा ठिला। वट्ट निहट्टा बढ्ढियै ॥
कोटाह कोट सा सिंधु तिय। इम हिन्दू दल सिढ्ढियै ॥
॥ छं० ॥ १८४ ॥

जल जोवन साहाव। दीन सुलतान दुरंगे ॥
किए कूच पर कूच। कुरँग तारीय कुरंगे ॥
जथ्थ रेनि रहै धीर। दीह तहा सोहसु अच्छै ॥
वर वेली पुंडीर। साहि पाल पच्छै पच्छै ॥
आवाज वज्जि दिल्ली सहर। यह पुकार पहकिया ॥
राजोह माम पंचो दिहा। अहो धीर गहकिया ॥ छं० ॥ १८५ ।

धीर पुंडीर के वापिस आने की खबर दिल्ली में होना दर्शकों की भीड़ होना और धीर को देखकर राजा का प्रसन्न होना।

ग्रह आपना छंडि। राजग्रह धीर धवंदा ॥
ढा ढिल्ली रालोय। ताहि देखन आवंदा ॥
निथ नीचानी नेन। वमन उँचा उचारा ॥
जा लग्गानी अग्गि। जीह जपी पुकारा ॥
दरवार राज भर भीर घन। मन उलास भेथ्यो धनी ॥
भुअ भग दुप दु पाह गत। जनौ कि नाग लद्धौ मनी ॥
छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ सास ता मता अमत। का चिंता इत वारि ॥
उट्ठि न सिर स मुह सहय। लज्जा विरदा भार ॥ छं० ॥ १८७ ।

भुजंगी ॥ पाधरे दीह सा चाहुआनं। सिरं उच्च बज्जे सु भेरी निसानं ॥
सितं छत्र रत्तं रषत्तं निसुणं। हुआ एक राजंग ते सुम्भ उग्ग ॥
छं० ॥ १८८ ॥

धीर पुंडीर के आने का समाचार सुन कर रानी पुंडीरनी और इंछनी का उत्सव मनाना।

कवित्त ॥ सा इंछिनि पामारि। राज बज्जे बज्जायौ ॥
धा धंधानी छंडि। प्रौढ जोवन लज्जायौ ॥
अरि अनंद चंदाह। चंद जाया जनु अज्जा ॥
हेम चीर हथोल। मेल नग आरति कज्जा ॥
उछंग अंग राजन दरां। राज काज सब सुद्दरै ॥
सा धान साहि देषंतही। आज हिन्दु दिन पद्दरै ॥ छं० ॥ १८९

प्रथीराज चहुआन। विलसि वसुधा सह उप्पर ॥
डंड भरइ चक्कवै। पिसुन पीलै कोलू धर ॥
सहहि न कोइ संग्राम। पुब्ब पच्छिम रद छिंन ॥
इह अपुब्ब पिष्षयौ। गौर गाजनै ततच्छिंन ॥
रहि न कोइ सुनतै श्रवन। जहं जहं सिंघ पुकारयौ ॥
आकंप भयौ सब सतुर मैं ॥ जब सुरतांन हुंकारयौ ॥ छं० ॥ १९०

धीर का पृथ्वीराज से मिलाप।

दूहा ॥ भुज भिंटलौ संभरि धनी। नयन बयन मिटि चाहि ॥
ऊचै न सीस समुत सुहर। लज्जा विरद मइ ताहि ॥ छं॥ १९१

धीर से राजा का पूछना कि तू गिरफतार कैसे और क्यों हुआ।

कवित्त ॥ हेट हेट गजंन गयंद। वरनि यहि हर सुअ ॥
अग्ग मग्ग पुंडीर। मीर रावत्त न लोह तुअ ॥
तू अलंग जुरि जंग। षग्ग षचिनि बहु अड्डो ॥
सु क्यौ गयौ गज्जान। गयंद मोहि अचरज बड्डो ॥

सभरि वै इम उच्चरइ। रिपु गहिय कुजर जवह ॥
कहि भीर धीर पूरस बदन। जीवत्त गह्यौ कारन कवन ॥
छं० ॥ १९२ ॥

चामडराय और जैतराय का धीर को धिक्कारना।

हँसिय चोड राजैत। सामत अभगे ॥
ग्रभ फोरि गारव्यौ। चद गभरू छचगे ॥
मुष नन्यौ आदान। बोल बड्डा बहि लग्गा ॥
ग्रब गमार पुडीर। साहि बधै बल भग्गा ॥
सुलतान दीन सिल स्वामि सिर। भेरिन जियन आसुर कन्यौ ॥
बर बरन सूर इम उच्चरहि। धीर जननि ग्रभ न गन्यौ ॥ छं० ॥ १९३

दूहा ॥ गन्यौ न ग्रब पुडीर तुम्र। जिन लज्जाई माय ॥
बचि प्रष्टि राजन तनौ। कहौ सुनाय सुनाय ॥ छं० ॥ १९४ ॥

धीर का पृथ्वीराज से एकान्त में सब बीतक कहना।

कवित्त ॥ समौ जानि सहि रह्यौ। धीर समुह बोलाही ॥
अधसि होय सग्राम। दिट्ठ चावड जिताही ॥
राज मझि मरजाद। समुद हद लोप नग्गौ ॥
पहुप वार पुडीर। दाहि दाहिम भर भग्गौ ॥
षिज सार धार पुडीर पर। सिलह बधि समुष तही ॥
एकथ्थ जथ्थ प्रथिराज न्प। तहा विवरि बत्त चदह कही ॥
छं० ॥ १९५ ॥

धीर का भरे दरबार में पुन प्रतिज्ञा करना।

आज लियौ गज्जनौ। आज तुरकाइन डडौ ॥
मोरौ आज गयद। आज सब सेन विहडौ ॥
आज जीति गोरी। समूह पर दल वित्तारौं ॥
आज चद की आन। आज जन स्वामि उवारौ ॥
सोइ आज पैज बरदाय भनि। सभरि धनी सुधारिहौं ॥
पुडीर धीर इम उच्चरै। आज मेछ दल मारिहौं ॥ छं० ॥ १९६ ॥

चामंड का कहना कि बात कहकर पछलना वीरों के लिये लज्जा की बात है और धीर का शपथ करके कहना कि वही करूंगा जो कहा है।

कहै राव चामंड। धीर बत्तां अविचारी॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है भारी॥
तीन लष्प तोषार। घालि पष्षर घूंमावै॥
मीर मलिक उमराव। काहु सावंग न आवै॥
अति जुरत नयन पंडै षलन। फिरि पच्छौ संका करै॥
ता जननि दोस दुरजन हँसै। जो बोलवोलि पच्छै टरै॥छं०॥१६

घूर गाज विज्जुल षिसय। बोल सा पुरिस न पुट्टौ॥
वह निल्लहै नियान। सो न हो अंत अहुट्टौ॥
करै पैज पुंडीर। षग्ग षिचिन पिसि भज्जइ॥
सिरन तुट्टि धर परय। जननि जामंत न लज्जाय॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। हो न बयन बोलौं घनौ॥
हैवर मलिक हथ्थह हनौ। तब सुधीर चंदह तनौ॥ छं०॥१६८

चामंडराय का बचन।

चंदा बसै अकास। करह कितनौ रन पाइय॥
कोने लंक दधि मंझ। कोइ कंचन लै आइय॥
को केहरि कच ग्रहै। पाय को प्रब्बत ठेलै॥
को दरिया दुस्तरै। अनिल को अंकम झेलै॥
रावत्त राव सब संभरइ। चामंडराइ इम उच्चरै॥
साजै विसेन [1]आसम असम। अब सुधीर तुअ किम लरै॥
छं०॥ १६६॥

धीर पुंडीर का बचन।

जब लगि सिर अरु मास। जीभ मुष यक्कय[2]॥

(१) ए.-आलम। (२) को -चक्कय।

जव लगि हिये हुकार । मुच्छ मुष मच्छर फारकाय ॥
जव लगि कर करिवार । गहिव गज्जनवै गजौ ॥
ढाल ढोल नेजा परोइ । सभरि वै रजौ ॥
जव लग्गि सीस इहि कध पर । पवन मेध वरसंत घन ॥
इम कहत धीर चावड सों । पैज पनट्टय प्रान विन ॥छं०॥२००॥

धीर का घर जाना और सव कुटुम्बियो का उससे सहर्ष मिलना ।

निज ग्रह पत्तौ धीर । राज दरवारह सतौ ॥
अति उछाह आनंद । विरद भर भारव हत्तौ ॥
मिले अध्र पुडीर । आय चय राय ग्रग्ग वर ॥
अति सुमान दिय दान । व्रम्न जिहि आनि मडि कर ॥
जै जया सवद जपै जगत । वाल ग्रह उच्छव तरन ॥
अति प्रेम सहित अतर मिले । रस सुभाइ रुन्नै करन ॥छं०॥२०१॥

धीर के कुटुम्बियों का उसकी गिरफ्तारी पर लज्जा और शोक प्रगट करना ।

एक महूरत मिलिय । सब्ब सबोध सत्त किय ॥
ता पच्छै एकत । बोलि भर वध्ध अप्पजिय ॥
रधर राव विरम । सिघ सागर पुडीरह ॥
साहि पान सुम्मान । रामहरि राव हमीरह ॥
माल्हन सु महर पति मत्त मन । कामधज केल्हन जाम पति ॥
वैठे सु चित्त चिता सु चित । विरद लाज लग्गी सु अति ॥
छं० ॥ २०२ ॥

धीर का अपना वीतक कहना और सवका प्रवोध करना ।

पद्धरी ॥ जपै सु धीर पुडीर ताम । निज ग्रग्ग चित्त चिता विराम ॥
मौ वोलि वचन न्रप अग्ग उच । कथैव तुम सोभान सुच ॥
छं० ॥ २०३ ॥

नाष मै जैत चामंड राय। सुरतान सरिस किय बंध दाइ ॥
बंधयो कपट करिहों जु बंधि। बुझ्यौ न कोय कित दुष्ट संधि ॥
छं० ॥ २०४ ॥

लै गये साहि संमीप मोहि। संमिलिय सु दल दरबार वोहि ॥
हन हनौ सद्द जंपै सु सब्ब। सबदो हमीर गंभीर ग्रब्ब ॥
छं० ॥ २०५ ॥

परब्रह्म कर्म चिंते विचित्त। आवरे ग्यान आहित्त हित्त ॥
तत्तार तन्न अप्पै विअप्पि। पंपिनिय सुफल जैद्रथ्य सप्पि ॥
छं० ॥ २०६ ॥

छंड्यौ जु साहि गुरु गरुह काज। चिंते सु चिंति अति आजि साज ॥
चढ्यौ जु साहि दल बल असंपि। लग्गौ जु काम कारज्ज धंपि ॥
छं० ॥ २०७ ॥

चामंडराय पामार जैत। आहित्त चित्त जंपै उहैत ॥
सो चिंति चिंति चिंतौ सु काज। न्नप होइ जैत वड्डै सु लाज ॥
छं० ॥ २०८ ॥

धीर के कुटुंबियों के वचन।

कवित्त ॥ तब जंपै हरिराव। सरिस सारंग पुंडीरह ॥
कहिय धीर सा सुनिय। बात आसत्त सुहीरह ॥
जंपै रंधर राव हित्त। कह मत्त बिचारह ॥
सीस काज सम धरौ। हर सम गरुह गुंजारह ॥
सजि चढौ अप्प सेना सकल। करो बंध अप्पान भर ॥
पड्डरे षेत पतिसाह सों। करहु झार उज्झार झर ॥
छं० ॥ २०९ ॥

धीर पुंडीर का वचन।

तब तमि जंपै धीर। जुद्ध सामंत कंध तुम ॥
सजे सुभर अप्पान। प्रान अप्पौ सुझझ दम ॥
राज काज राजंग। अंग बड्डहि सु अप्प जस ॥
कै जीतै उध लोक। सुजस आवरहि छोभि तस ॥

इम कहै सथ्थ सज्जै सुनिज। एक चित्त आश्रित्त सब॥
तजि मोह सोह संसार सुष। जग्यौ धीर अभ्भीर तब॥
छं०॥ २१०॥

धीर का शिकार खेलने की तैयारी करना खदाइयों का आना और धीर का घोड़े मोल लेना।

उभै पथ्थ सुर मास। रोज तीसह रमि[1] मंडल॥
म्रगया करत अभ्यास। राग रंग रास सुपढल॥
सत्त सहस सथ सुभट। साठि दस सिंधुर सज्जिय॥
बंदुक बानह जोर। वेद दल नौवसि बज्जिय॥
पुंडीर धीर चंदह तनौ। अति गुमान बिरदा बहै॥
ऐराक तुरिय से पंच लै। सोदागर ईसप कहै॥ छं०॥ २११॥
किय हुकम वज्जीर। मोलि लिये ऐराकिय॥
दिये दाम दस लष्य। पंच लष्यह रहि बाकिय॥
सझ्झ समै करि महल। सबै बगसे रावत्ता॥
प्रात समै चढि धीर। भये सुभ सगुन अवत्ता॥
तब जैतराव चावंड मिलि। सोदागर ईसफ कहिय॥
घर जाइ जिंद लै जीवतो। तुम धीर धत्त षस्सै सहिय॥छं०॥२१

चामंडराय का सौदागरो का धीर पर धात करने को उसकाना और सोदागरों को अपने मे मंत्र विचारना।

मिलि विचित्र इक ठौर। बुद्धि आलोच बिचारिय॥
दाम जिंद अरु लाज। बडे विध योह सुधारिय॥
तब चौमन उच्चरिय। धीर मद्दिमान सु संडह॥
पान पान विधि बिवह। एक चित ह्वै पग पंडह॥
मानौ सु मत्त सब मंत मिलि। धीर प्रान इन विधि हरौ॥
प्रगटै सु वात सामंत सुनि। हुऐ गहर सब्बै मरौ॥ छं०॥२१३॥

(१) ए रवि।

ईसफ मियां का धीर के दरबार में जाना, दरबार का वर्णन।

दूहा॥ करि निवाज ईसफ मियां। गयौ तहां दरबार॥
महमानी ईसफ करै। धीर होइ असवार॥ छं० ॥ २१४॥

कवित्त॥ चित्रसारि काच ढारि। पान सोवन जिरि रच्चिय॥
लाल पंच पीरोज। घने सघनं करि पच्चिय॥
दिवस तेज परि मंद। अरक द्वादस करि जग्गिय॥
तारक तेज फटिक्क। सघन चुनि तारन लग्गिय॥
सामंत विलास सुष रहसि तहं। हिंदु लाट हीरां जरै॥
संगीत राग सरसै रबन। पात्र नित्य अग्गै परै॥
छं० ॥ २१५॥

धीर का सौदागरों के डेरे पर जाना।

दूहा॥ इह ईसफ अरदास करि। मिलिक देस को जाय॥
महमानी मीयाँ करै। धीर पधारौ पाय॥ छं० ॥ २१६॥

धीर का नित्य कृत्य वर्णन।

कवित्त॥ पंच सेर फुल्लैल। षट्ट जन मरदत तासह॥
बाहु दंड परचंड। भीम आकार सु रंगह॥
सहस कलस भरि नीर। इक विच कलस गंगाजल॥
करि सनान पवित्त। कीय पंच गौ महाबल॥
आमान साठि सजता वढ़ै। पंच मुहुर सोव्रन मय॥
इम नित्य धीर चंदह तनौ। षलक षग्ग वंदै सुजय॥छं०॥२१७॥

दूहा॥ सुचि रुचि सेवा सगति रुचि। सरचि चरचि तरवारि॥
फुनि आसन कीनौ असन। भोजन साल पधारि॥छं०॥२१८॥
तहां मुभर लीने सवनि। सचि सुआर करि साद॥
षटरस भोजन भांति ब। तिन महि चित्त सवाद॥ छं०॥२१९॥

धीर पुंडीर के कलेऊ का वर्णन।

कवित्त ॥ पै अग्ग दग्ग मन तीन। सत्त सेरह विच सक्कर ॥
पद्र सेर रद्र भोग। एक सोरावन वक्कर ॥
सत्त सेर रोगान। सेर पचह कढि लुच्चिय ॥
घ्रित पावक बहु अवर। करत उभै दुज सुच्चिय ॥
पहति और पच स्वादु। जोग राज मढकौ सुभरि ॥
च्यार घटिय दिन बालते। सोरामन सामंत करि ॥छं०॥२२०॥

शाह का सिंधु तट पर पहुंचना और धीर का अपनी सेना सहित तैयार होना।

अरिल्ल ॥ साजत सथन सह पुंडीरह। तब आये तट सिंध हमीरह ॥
साजि निकट आयौ सुरतानह। है गै भार साज सब बानह ॥
छं० ॥ २२१ ॥

सुनिय वत्त सा दिल्लि नरेसं। गाजे गेन वेन असहेसं ॥
चल्यौ धीर साजै निज सथ्थह। सूर धीर संग्राम समथ्थह ॥
छं० ॥ २२२ ॥

पुंडीर वंशी योद्धाओं का वर्णन।

कवित्त ॥ सहस तीन पुंडीर। धीर बर वचन अचाए ॥
त्रियन बसिनं बसि द्रव्य। बसु अवहु मोह गमाए ॥
मक्क मेलि सामंत। रयन अद्धी ते जग्गा ॥
सुनि अवाज सुरतान। रक धन जानि बिलग्गा ॥
दुअ घटिय सोम दिन पानि पथ। सहस सट्ट सेना चली ॥
अनभंग जैत अग्गा अगर। विच चमंड बज्जह बली ॥
छं० ॥ २२३ ॥

अयुत एक पुंडीर। धीर सम लोह लरन कहि ॥
बरकि बीर तम संत। सिंघ भष पान लहि ॥
दुअन पष्प वीरंग। जुरे जिन जंग बहुत किय ॥
झूझि जम्म बहु सस्त्र। इष्ट बल सकति बहुनि जिय ॥

तन तुरंग तिन नेह तजि। अजिय मरन चित एक करि ॥
बढ़ि लोह छोह छुट्टै गुरन। अरन बत्त कविचंद धरि ॥
छं० ॥ २२४ ॥

आठ हजार सेना सहित जैतराव और चामंडराय का आगे बढ़ना।

सहस एक देवंग। भेरि नफ्फेरि पंच सैं ॥
सहस तीन अंबकीम। ढोल बंदिन सु अट्ठ सैं ॥
सौ सुगंध जोति किय। अट्ठ ग्रेहं सुभ छंदं ॥
दिसा सूर मुष मिच्छ। बोलि बरदाइय चंदं ॥
घट घटिय लगन गुज्झह तनी। पहर तीन बित्तिग विषम ॥
उपरंत सेन साजै गुरहि। तब सु साहि सौजी सुषम ॥
छं० ॥ २२५ ॥

सुलतान के आने की खबर होना और रावका सलाह करना कि अब क्या करना चाहिए।

जब ग्रह आयौ धीर। पुट्टि सुरतान संपत्तौ ॥
सुनिय राय चामंड। जैत सम मन्न मिलंतौ ॥
सज्जिग हय गय साहि। सिंधु आयौ यह उप्पर ॥
धीर तेन छंडयौ। पच्छ चंपौ दल दुस्तर ॥
कत्थांह एह अप्पन करिय। अब्बे कहौ कह। किज्जियै ॥
भज्जै जराज सुलतान रन। तौ इन मति अप्पन छिज्जियै ॥
छं० ॥ २२६ ॥

जेन वल न जै होइ। तेह झुज्झै कनवज्जां ॥
सोइ मंत सुद्धरै। जैन जित्ते रंन रज्जां ॥
सत्त मंत सुभ चरिय। जैत चामंड सु उट्ठिय ॥
गये सजन निज ग्रेह। आय सब सथ्थ स पुट्टिय ॥
चामंड गज्ज मंग्यौ चढन। सम वेरी दाहिम्म बर ॥
आयौ सु चंद वरदाय तिहि। खेत सु बुल्ल्यौ गुज्झ गुर ॥
छं० ॥ २२७ ॥

कविचन्द का चामंडराय के घर जाकर उससे बेडी उतार कर युद्ध मे चलने के लिये कहना और चामंड का कविचद की बात मान लेना ।

पद्धरी ॥ जंपहि सु तथ्य भट चद कथ्य । तुम रचौ बुद्धि सब्बह समथ्य ॥
स्वामित्त ध्रंम तुम रत्त राइ । बेरी सु धरौ अग्याइ राइ ॥
छं० ॥ २२८ ॥

दल मेलि साहि आयौ असपि । देषहु सु जुद्ध तुम उभय अपि॥
बेरी सु काढ़ि तुम जुरौ जुद्ध । मानौ सु सब्ब गुर धात ब्रद्ध ॥
छं० ॥ २२९ ॥

काढ़ौ सुमत बेरी सुपाय । जै होइ जैम चहुआन राय ॥
चहुआन कन्ह गोयद राज । कामधज्ज राइ निढ़ुरह लाज ॥
छं० ॥ २३० ॥

पज्जून राय बधव बग्न । कनवज्ज अग्र सुभझ्झे सुरन्न ॥
ढिल्लीय अवर दिष्यो न राज । जिहिं होइ आज चहुआन लाज॥
छं० ॥ २३१ ॥

जिम जरौ षेत षल विषम घाइ । तुम तजौ बीर बेरी सु पाइ ।
मन्यौ सुमत चामंड चद । मन भए सुभ्र उब्बह अनद ॥
छं० ॥ २३२ ॥

पय तरह लोह काढ़ै सु ताम । लगरह जानि इम्भह विराम ॥
मगयौ कनक वाजी सु एह । जातिहि जुगम अति सुभ देह ॥
छं० ॥ २३३ ॥

पष्षरह चमर गज गाह रज्जि । सोवन्न मुद्र सुभ तेज सज्जि ॥
आवद्ध बंधि सब सक्क भाजि । सोभत जानि भीषम समाजि ॥
छं० ॥ २३४ ॥

चावंड रोहि वाजी सु अप्प । जप्यौ सुमन्त निज इष्ट जप्प ॥
सजि चल्यौ सब्ब दाहिम्म सथ्य । द्वै सहस सूर गहअत्त हथ्थ ॥
छं० ॥ २३५ ॥

सम चढ्यौ जैत निज सेन साजि । मारह महस सेना सुगाजि ॥
चढ़ि चलिय उभय घन बज्ज बाज । तब चढ्यौ अप्प प्रथिराज राज॥
छं० ॥ २३६ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुन कर कुपित होना और लोहाना को भेजकर चामंड को पुनः बेड़ी पहनवाना ।

कवित्त ॥ गाजि गरुअ चहुआन । सुनत अप ग्रेह सपत्तौ ॥
दीन उतर ता पछै । बोलि लोहान सु तत्तौ ॥
तुम बेरी ले जाहु । पाय चावंड सु धत्तौ ॥
इन हम अग्या तजी । अप्प बल राह उमत्तौ ॥
हम करत लाज कैमास की । अरु सगपन सन मंध घन ॥
आकस्ति मन्न हम क्रोध घन । मरहुर्तें गहि रष्यौ सुमन ॥
छं० ॥ २३७ ॥

ले बेरी लोहान । ग्रेह चावंड सपत्तौ ॥
धरि अग्गैं चावंड । देषि प्रज्जरि चित चिंत्यौ ॥
कहै राय चावंड । सुनौ लोहाना तुम बर ॥
न्रिप अग्या सिर सजौं । नतरु जानहु तुम हित हर ॥
निज स्वामि ध्रंम षंडो नहीं । हिय अरोहिय सहि हर ॥
बेरी सुलीन चावंड विहँसि । पय आरोहिय अप्प कर ॥
छं० ॥ २३८ ॥

शाही सेना की राजावट वर्णन ।

मोतीदाम॥ षट दूनति साह सजे सुरतान।जहं छच सुजी कनजीक निसान॥
गज ढालनि मालि चिहूं दिसि फेरि। तहां रन सद्द महग्गज भेरि
छं० ॥ २३९ ॥

जर कुंमर तोजह मेलति कंठ। तहां लष्प फरी धर पाइक गंठ॥
तहां छच मौज अदक्ष सुभार। तहां बिज्जल नाय भ्रमै असवार
छं० ॥ २४० ॥

तहा धन डवर् अवर रेन। तहा अन जेवन फीवन एन॥
तहा पार सिपै रसना रस बोल। तहा आरस के जम जेजम तोल॥
छं० ॥ २४१ ॥

तहाँ ढल्लनि मल्लनि फौज प्रवेस। तहा द्वादस फौज नई भर सेस।
तहाँ तज्जिय अज्जिय गज्जन राव। तह वज्जय सिंग महिप्पन चाव॥
छं० ॥ २४२ ॥

डव ढड्डिय डड्डिय मुक्कन केस। रही चक चोरनि मौर सुदेस॥
तहा दिष्षिहि फौज सु धीरन कोज। मनो चव चम्म कुलगनि बाज॥
छं० ॥ २४३ ॥

रवि जानि डयौ दुअ वद्दल मझ। कालकूह कुलाहल वीरति सझ॥
डडि रेन रही दल दुंदभि घग। फिरि फौज पुडीर कुलगनि वग
छं० ॥ २४४ ॥

वजी सहनाइ निसान गुंडीर। सुलतान धरा मिलि मझ पुंडीर
छं० ॥ २४५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना का मोर व्यूह रच कर चढाई करना।

दूहा॥ देषि फौज सुरतान दल। मति मंडे रन साज॥
मोर व्यूह मति मंडि कै। तव सज्ज्यौ प्रथिराज॥
छं० ॥ २४६ ॥

व्यूह वर्णन।

कवित्त॥ आरध वेस नरिंद। छत्र वर मुक्क कहि गहूँ॥
सवै सेन प्रथिराज। मोर व्यूह रचि ठहूँ॥
चोंच राव चामंड। जैत द्रिग वंधि प्रमान॥
नष पिंडी पुंडीर। सेन उभ्भौ सुरतान॥
वर कंध वंध वधी न्त्रिपति। पुछ वीर कूरंभ रचि॥
अवनेव उदै उदित सुभर। मद्दन रंभ दोउ दीन मचि॥
छं० ॥ २४७ ॥

(१) ए-पुढीर।

पच्छराज प्रथिराज। जाम जद्दो घट भद्दों ॥
रीछ मोर पष्षरी। स्यांम चमरनि गज मद्दों ॥
स्याम ढाल ढलकंत। स्याम गजपंति विराजै ॥
स्याम धजा झलकंत। मेघ पंतिय दुति लाजै ॥
बर नेज च्यार तहँ उज्जले। दुति सु वग्ग पंकनि चल्यौ ॥
मोर सह वीर सुरतान मुष। जिम कुरंग सग्गौ चल्यौ ॥
छं० ॥ २४८ ॥

दूहा ॥ चले दिष्ट संभौ मरद। पीन नीर रस पान ॥
उंच दिष्ट के असुर वर। चढ़ि तक्कत चहुआन ॥ छं० ॥ २४९ ॥

कवित्त ॥ मद गयंद झरि कीच। वीच मुत्तिय झलकंतिय ॥
मनों मेघ विज्जुलिय। बनें सा नैननिदंतिय ॥
सुभर सूर बर साजि। अप्प अप्पन धर चल्लिय ॥
एक एक अग्गरे। जानि भद्रव घट हल्लिय ॥
आभरन दान बुंदनि बरषि। सक सहाव उप्पर ढलकि ॥
जद्दव सुजाम देषिय नृपति। समनजैत वढ्ढिय किलकि ॥
छं० ॥ २५० ॥

चाहुआन सेना की श्रेणीबद्ध दरेसी और चाल का ग्राम वर्णन।

भुजंगी ॥ किलक्कंत फौजं सु मौजं दिठंनी। बने हेम जेजंम रंजं मयंनी॥
अगै तिष्ष पाइक्क धाइक्क कूदै। करं कंनरं भाल थीवं स ऊदै ॥
छं० ॥ २५१ ॥

उडे डंबरं अंमरं रेन पूरी। किय कूक पुत्तारिका हक्क मूरी ॥
परै भीर कंबी रनं जैत छुट्टी। परें बंध कंधं हथं नार छुट्टी ॥
छं० ॥ २५२ ॥

धरै आवधं उग्गि सज्जै विमानं। तिनं नाम लीजै बरद्दाय जानं
सुभे सुब्भ बाने समाने दिठाने। तहां कब्बिचंदं उपंम बषाने ॥
छं० ॥ २५३ ॥

छिमाम छिमारी हलै हेम चारी । तिय तीस जना सपरि जुद्ध भारी
गजगाह उग्गाह दुग्गाह कच्छै । मुसल्ली मुरल्ली अरब्बी उलच्छै ॥
छं० ॥ २५४॥

सनेत सकेत समेत पतोपी । पष मोर सिघोर दाम उचायी ॥
निल नील सम्मील उम्मील पील । रनकी धनकी ¹सचौर ति नील ।
छं० ॥ २५५ ॥

मह। मीर माही उमाह उचनी । परी पाट डोरी सकोरी दिठनी ॥
तरतार झट्टे सष सद्ध अस । उडै देषि धीरज्ज मीरज्ज हस ॥
छं० ॥ २५६ ॥

नयौ ताप आदद्ध सो जुद्धि कीजै । इसी बुद्धि भग्गै नतौ लोह लीजै ॥
इसी फौज जादद्ध कूरम सज्जी । नयौ अब्ब गौरी सु अब्बानि लज्जी ॥
छं० ॥ २५७ ॥

दिषे षान षुरसान तत्तार दिट्ठी । छुट्यौ भम्म धीरज्ज रहि निठ्ठ निट्ठी ॥
सुरे षान षान स लोजी अहारै । भये अट्ठ हज्जार हय तज्जि तारै ॥
छं० ॥ २५८ ॥

पहर तीन तिन सौं तिन लोह तुट्यौ । मनों सम्भरी जानि षरियार कुट्यौ
छं० ॥ २५९ ॥

दूहा ॥ बजी कूह सम्मोह वर । फिरि गजराज प्रमान ॥
चाहुआन बर भग्गते । चपि सेन सुलतान ॥ छं० ॥ २६० ॥

मुसलमानी सेना की ओर से हाथियों का झुकाया जाना और राजपूत पैदल सेना का हाथियों को विडार देना।

कवित्त ॥ रन तत्तार टट्टरै । सेन चपी चतुरंगिय ॥
हत्तकाल बल रोज । उठे गज झपि सुषगिय ॥
पीलवान रा रन । हस्त अंकुस गजमध्य ॥
सबर संगि उम्भरी । झरी झारिय झरि हथ्थ ॥

(१) ए सतौर।

उमाडे भीर अग्गा अगर । कूह कहर पच्छे फिरिग ॥
सामंत कोइ अप्पै अपन । अप्प सेन ऊपर परिग ॥
छं० ॥ २६१ ॥

हाथियों का विचला कर अपनी फौज कुचलना और शाही सेना का छिन्न भिन्न होना ।

अप्प सेन उप्परै । परे गजराज काज अरि ॥
अस्त्र सहित असवार । भेर उच्छारि डारि धर ॥
सर संमुह परि पीलवान । सिट्टी मामं धन ॥
तहां चंपि हाजी । हुजाव देपंत तस्स धन ॥
सब सेन बीर भर हरि गई । गज ऊपर गज वर परै ॥
बिय बंटि रिड्डि बंछौ विषम । धाइ बीर सम्हौ लरै ॥
छं० ॥ २६२ ॥

हाथियों के बिडर जाने पर पृथ्वीराज का तिरछे रुख से धावा करके मार काट करना ।

दूहा ॥ छंडि बीर गजराज मुष । तिरछौ परि सुरतान ॥
भौ टमंक दिसि बिदिसि डुलि । रन रुंम्यो चह,आन ॥
छं० ॥ २६३ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ करं काल डौरू कियं सिंघ नहं । सयं सकति वादी वरदाय चंद
सिर स्याम सन्नाह वाहंमि चक्रं । धरे अग्र वानं सुदुर्गामि बक्रं ॥
छं० ॥ २६४ ॥
गलै राग गावंत सिंधू सगंधू । गलै माल जा स्थूल कन्नैर बंधू ॥
अगे षेचरं षेतपालं बेतालं । तहां भैरवं नद्द जोगीह कालं ॥
छं० ॥ २६५ ॥
दोउ कन्न जोग्यंन कर पच मंडे । तिनं दर्सनं देषि साहस्स षंडे ।
फिरैं तिष्षि निष्षी पताका तिरत्ती । भुवं ज्ञानी लागी सुग्रीषग्ग तत्ती ॥
छं० ॥ २६६ ॥

टग टग्ग लग्गी मुष मुच्छ मोहै। बजी तीन तारी सिरे स्याम सोहै ॥
लई कढ्ढि बूकी विभूती उडाई। भए दीह चहुआन साजे सपाई॥
छं० ॥ २६७ ॥

दिस अग्ग वट्टी सु चट्टी पुकारै। लिये लक्करी सेन गोरी निकारै ॥
लिय लष्प सेना सुरत्तान सद्धी। रन राह वाराह बरदाइ बद्धी ॥
छं० ॥ २६८ ॥

हँसै सब्ब सामंत सम राज भट्ट। भइ बारही फौज एक सुवट्ट ॥
बडे षड पुडीर सै तीन अप्प। तिन मंडलाजी तुरंगी अनप्प ॥
छं० ॥ २६९ ॥

उडी लोह अग्गी जर गिद्ध पषी। भरी देषि कारदाय बरदाय सष्षी ॥
परे रुंड मुंड भर भूमि सोहैं। पियैं श्रोन पचारि बारिक्क डोहैं ॥
छं० ॥ २७० ॥

चलै राह वै राह बैकुंठ भारी। घरी सत्त रवि मंडलं छिद्र कारी ॥
षय जाम रन धाम भिरि भूप वित्ते। बछै धीर सो भीर सुरतान कित्ते॥
छं० ॥ २७१ ॥

कवित्त ॥ तीरबल्ल चामंड। भंड हेमानि दंड करि ॥
रजक पत्त सिर मंडि। फौज आपंड मंडि सिर ॥
उभ्र अवाज नीसान। कान वीय सेन निसाननि ॥
पर पहार उत्तंग। थंभ थथरि परि थनानि ॥
नकेरि भेरि सहनाइ सुर। मुर कपाट बज्जिय रवरि ॥
अग्राम जैत चामंड दल। सिंध सहाव सुष्परि दवरि ॥
छं० ॥ २७२ ॥

शाही सेना के दो हजार योद्धा मारे गए, राजपूत सेना की जीत रही।

भुजंगी ॥ धमी सेन आलम्म की कूक फुट्टी। जर जंच गोरा बर मट्ठि छुट्टी ॥
कर कुट्ठि कम्मान बान सनक्की। मनो लोर वासन्न आसन्न नक्की ॥
छं० ॥ २७३ ॥

धरं अद्ध अद्धं रनं धार धारं। करं धाम धामं सुपं मार मारं
गलं बथ्थ भिट्टैं सनेही सनेहं। उभै सूर जुट्टैं मनों एक देहं
छं० ॥ २७४ ॥

उने ओन धुंध्यौ सु ऊने उनाही। भए दीन दूनं सु मज्जे सपाही॥
घटं एक को एक घुट्टै सु षुट्टै। नई गंठि मुंडा वली जोग छुट्टै॥
छं० ॥ २७५ ॥

इसो जुद्ध दीठौ न सुन्यौ कहांई। मिलै जैत षामंड सुरतान धाई।
परै सहस्र द्वै षान भिरि चाहुआनं। बढी जेत पिप्पी सु वज्जै निसान
छं० ॥ २७६ ॥

धीर के भाई और कवि चन्द के पुत्र का मारा जाना।

दूहा॥ षेत परिग कविचंद सुत। परिग बंध धर धीर॥
गहिय मद्द षिलची परे। पसरत अट्ठ अमीर॥ छं० ॥ २७७ ॥

श्लोक॥ मानवानां च नागं च, कौरवानां न पांडवं।
गोरीयं जुद्ध हिंदूनां, न भूतो न भविष्यति॥
छं० ॥ २७८ ॥

संध्या होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम लेना।

कवित्त॥ भइय संझ दुहु वेर। षेत दुहु दीन न ढुंढिय॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। हथ्थ चव पंचय चढ्ढिय॥
बरन मेछ वर हिंदु। ओन सुभयंन सुभ्भरन॥
इन अभंग घट भंग। चित्त भग्गौ जु जुद्ध रन॥
पुंडीर सत्त रन रत्त किय। बरन बीर रंभा बरी॥
अष्टमी जुद्ध मंगलन कौ। घरी अद्ध विय सब टरिय॥
छं० ॥ २७९ ॥

दूसरे दिवस का प्रातःकाल होना और दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना।

दूहा॥ कायर चोर चकोर बर। निसि घट तें ललचात॥
सूर चकुर अरु बाल बधु। ए वछे वर प्रात॥ छं० ॥ २८० ॥

कवित्त ॥ सूर ओव वर सूर । चंद्रिग सोमत तुल्यं षेन ॥
ससिय तार उडगन सु । द्रग्ग बीर नषत फिरद्र गन ॥
होहो हुह्रु गध्रब्ब । रंभ ओरभ अरुन अय ॥
अति आतुर रन चित्त । जम जम्मन कंग्गाद नय ॥
वर जोग लग्ग जोती तन । सस्त्र वोय वर डोलई ॥
वर पच पच लद्धै सुवर । मुगति बंध वर षोलई ॥
छं० ॥ २८१ ॥

अरुन तरुन उदयन । फौज पच्छै सुलतानी ॥
मिलन सूर सोमत । रेन अद्धी सम्मानी ॥
तास तुग ववरि हि । माम नेजे उडि मडिय ॥
रवि झिंगुर झुमुपिय । हीस हीसा रव छडिय ॥
मडिय प्रभात नारद सवद । दोऊ सेन सज्जत रहिय ॥
इक वार वीर वीरह तनौ । किल किलकि जोगिनि कहिय ॥
छं० ॥ २८२ ॥

युद्धवर्णन। राजपूत सेना का जोर पकड़ना और मुसल्मान सेना का मनहार होना।

भुजंगी ॥ बजे लोह कोहं सुकोहं दुदीन । लई नाग बीरं गतें श्रोन भीन ॥
झनक्कंत सारं किनक्कंत ताजी । मनों नट्टिवी नट्टि नागिन्न बाजी ॥
छं० ॥ २८३ ॥

बुलै धाय अध्धाय सा श्रोत बुंद । उठै तार झंकार ज्यों तार दुंद ॥
उठै धीग धक्कै गजं ढाल मोल । मनो पच्च डडूर आषाढ काल ॥
छं० ॥ २८४ ॥

चंपी सेन आलम जुरि तीन जाम । भए फौज अट्ठ चव एकठाम ॥
परे सहस सोरह उभै हिंदु षान । गजं बाज हज्जार तीनं सुजान ॥
छं० ॥ २८५ ॥

सम सोमवारं सु कारं ति थान । चले लष्ष दोपाल हथ्थं इथ्थान ॥
फिरैं एकठे लष्ष फिरि चंद नंद । परे बाल लाजी तिनं नासकंद ॥
छं० ॥ २८६ ॥

मथी सेन आलम्म की है हिलोरं। पँगी आनि पारिष्प दरिया हिलोरं।
अमी अब्ब सेना थकी हथ्थ बथ्थं। रहे षेत सूरं मुरे कूर तथ्थं।
छं० ॥ २८७ ॥

मिले मक्कफ पुंडीर हिंदू तुरक्की। मुरै मुष्प नाही सुधारै मुरक्की।
सजे सूर सन्नाह ले हिंदु मेछं। तिके जानियै वीर जोगिंद वेछं।
छं० ॥ २८८ ॥

कढे लोह हक्की सु बक्कीं हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई।
लिए हथ्थ नेजा उनं के उनाही। रहे हस्सि नेजा न हस्सै हलाये।
छं० ॥ २८९ ॥

सतं अड्ड अट्टं कमट्टं स उट्टै। जिनें मोह माया रसं बंधि छुट्टै।
भषै जंबुकं गिद्धि सीवंत हस्सै। फुटी सांग हथ्थं तिरच्छं सु लस्सै।
छं० ॥ २९० ॥

कहै हक्क बाजी विराजी सु गाजी। घटं कंध तुट्टै किनं कैसु ताजी।
उड़ी श्रोन छिंछी छबी लग्गि बिंदू। दहै दाह अग्गी मनो दार निंदू।
छं० ॥ २९१ ॥

कढी तेग तेगं जु तेगं चमंकी। तहां तब्बरं तुंद मीरं दमंकी।
तजे दीन दीनं दुहुं अंस भारी। मिले बंध बधं सु जोधं करारी।
छं० ॥ २९२ ॥

ततथ्थे ततथ्थी करै थंग थंगं। नरै रंग भैरो बितालं उतंगं॥
कढे रुद्र रद्दी विरुद्धं विचारी। हसै दंत दंती विकासंत सारी॥
छं० ॥ २९३ ॥

बजे घाय आवरत सावरत रुक्कै। मनों चच्चरी डिंभरू तार चुक्कै।
नचे बंधं कंधं कबंधं सवानं। मनों सस्सि भेषं पल्ली चौज कानं।
छं० ॥ २९४ ॥

लरं तंज दीसैं परंतं न दीसं। मनों भूतमाया करी जोग ईसं॥
डुकै सांग बाही डुकै तेग साजी। मनों नग्गनी जीह रत्तं कि रत्तकाजी।
छं० ॥ २९५ ॥

कढी एक सथ्थं उचं हथ्थ उंचं। झलक्कै सु षग्गं महातेज संचं।
तिनक्की उपम्मा कही चंद वक्कं। दिसी पच्छमी जानि उग्यो अरक्कं।
छं० ॥ २९६ ॥

लई पौक्ति कम्मान सुरतान गोरी। फुटै पप्परा अस्स भै विभ्भ जोरी।
परे सब्ब पान महामीरवान। मनों प्रात तारे दिपै थान थान।
छं० ॥ २९७ ॥

महाछ्द्र वीर भयानक दीसं। लगे जोगिनी रीस ताद्त पीसं॥
रस साहि गोरी अद् बुद्ध कद। भयो सूर प्रथिराज परभात चद।
छं० ॥ २९८ ॥

धीर पुंडीर का धावा करना।

षुले टोप लोलत बोलत सूरं। लिये चोर तोरं मरोरंत मूरं॥
धन्यौ धाइ पुंडीर तेजी षटाढ़ी। जिने बोल मुच्चे सुष मुच्छ डाढ़ी।
छं ॥ २९९ ॥

इसौ चद वत्ता विरच्च्यौ सु तामं। करी अट्ठ चव फौज एक सु ठामं।
चप्यौ जोनि कें जम्म सुरतान सादे। कह्यौ पान जादे कुसादे कुसादे।
छं० ॥ ३०० ॥

कह्यौ छंडि ताजी सु कोलोलपीलं। बह्यौ वाय वेग मनो धूम झोलं।
मिलो चारि अप्पी अनी दिट्ठ दीनो। उनै हथ्थ ठिल्लयौ इनै सि हलीनं।
छं० ॥ ३०१ ॥

दुहु हथ्थ षुसै हलकै सु बथ्थे। कहै देव देवन जोगिन्न सथ्थे॥
महाचद पुत्त सनीरं लुहान। कहै तेन बोलत आव सुहान॥
छं० ॥ ३०२ ॥

झंडा माह वैरक दिठ्ठी सुरान। हसै सब्ब सामत पुंडीर मान।
उनै उत्त मद्धौ जु पभ प्रमान। लियौ सिह ताजी सु हेम समान।
छं० ३०३ ॥

उतें मडली मेछ जोरी सु साजं। इतें हिंदू साजे प्राथीराज काज।
कहै सिंघ सामत सूर लुहान। परै अप्पनै काम कनवज्ज थान।
छं० ॥ ३०४ ॥

दिय च्यार देस स पुंडीरराय। कह्यौ अप्प पतिसाह धीर सुनाय॥
छं० ॥ ३०५ ॥

(१) ९ सम।

धीर की सहायता के लिये पिशाच मंडली सहित देवी का आना।

कवित्त ॥ चवदह से बर बीर। भए भर धीर सहाई ॥
जालंधर जगमात। जैत करिवे को आई ॥
भैरव भूत भयंक। भए तहां आनि सघाई ॥
ईस सीस कारनै। दई तहां आनि दिषाई ॥
सुचि चंद जेम न्प चंद सुअ। घट घट प्रति प्रति व्यंव हुअ ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। वलि वलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

महादेव का पारबती को गजमुक्ता देकर कहना कि वीर धीर को धन्य है।

दूहा ॥ ईस सीस लिय माल कजि। गौरा कजि गज मुत्ति ॥
पिया समपति मुत्ति पिय। त्रिय प्रिय पुच्छत वत्त ॥ छं०॥३०७॥
सीस सदा सिवल्यावतें। मुत्ति लहै कहों आदि ॥
कोन धीर पहिरो असन। धीर वीर सु प्रसाद ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

पारबती का धीर के विषय में पूछना।

पारवती कह्यौ कोन सुत। कहा परोक्रम कौन ॥
पाट पुंडीर सुचंद सुअ। व्रह्म रूप परवीन ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

धीर की बीरता का वर्णन।

कवित्त ॥ इसौ धीर बर वीर। जिसौ पारथ भारथ्थह ॥
इसौ धीर बर वीर। जिसौ पारथ सारथ्थह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ जोधा दुरजोधन ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ हनमंत बलिय मन ॥
सुतचंद दंद दारुन दुअन। अग्निरूप चिन सत्तु जन ॥
मन मोह रोह माया रहित। अंगद जिम अंग धीर तन ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पारवती का प्रश्न कि क्षत्री जीवन का मोह क्यों नहीं करते ।

दूहा ॥ जिहि जीवन कारन जगत । वछै लोक विचार ॥
करै सुध्रम्म सुकम्म अति । किम तजि छत्रिय सार ॥
छं० ॥ ३११ ॥

शिव का वचन कि क्षत्रियों का यह कुल धर्म है ।

गाथा ॥ तापस नष्ट अतोपौ । सतोपो नष्ट नरपति ।
लज्जा नष्टति गनिका । अनलज्जा नष्ट कुल जाया ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

दूहा ॥ धरा सहित नपै सु धर । सीस जाय धर जीय ॥
मरन सीस लीनै वहै । कुला काम पत्तीय ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

जीवन मरन की व्याख्या ।

कोन मरै जीयै कवन । कोन कहा विरमाय ॥
प्रानी वपु तरु पंपिया । तरु तजि अन तरु जाय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
ज्यों जीरन परधान तजि । नर जन धरत नवीन ॥
यो प्रानी तजि कायपुर । और धरे वपु भीन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
कवहू जीव मरै नही । पंचतत्व मिलि भेद ॥
पंची पंचन में समें । जीव अछेद अभेद ॥ छं० ॥ ३१६ ॥

आत्मा की व्याख्या ।

मोतीदाम ॥ अछेद अभेद अषेद अपार । अजीत अभीत अप्रीत अमार ।
अमोल अभोल अतोल अभंग । अकंज अगंज अलुंज अभंग ॥
छं० ॥ ३१७ ॥
असेप अभेष अलेप अवीह । अरेप अमेप अदेष कवीह ॥
अमान अभान अजान अलिप्त । अचान असान अवान असिप्त ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

संसार में कर्म मुख्य है कर्म से जन्म होता है ।

गाथा ॥ कर्म वस्य नरं जीवं जं कामं क्रियतं सो प्राप्ति ॥
कर्मं सुभं च असुभं। कामं जीव प्रेरकं प्रानी ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

श्लोक ॥ नमे न बध्यते कर्मं। कर्मेन बंध प्राप्तिकाः ॥
यं कर्मं क्रियते प्रानी। सो प्रानी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ ३२० ॥

दूहा ॥ औसरि दुअ जुट्टे सुरन। अत सोभत इन भंति ॥
अगर भंज जनु द्वै भिरै। मय मत्तें मय मंत ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

शूर वीरों की वीरता और उनका तुमल युद्ध वर्णन ।

विराज ॥ मयमत्त भिरे, फिरि जुद्द धिरे। तरवारि तरै, तकि घाव करै ॥
छं० ॥ ३२२ ॥

जमदट्ठ जुरै, तिय नीति मुरै। पन सूर मुषं, न मुरंत नषं ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

इस अत्थ इसे, जमरूप जिसें। नर मथ्थ नचै, हरहार रचैं ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

धर उट्टि धरं, सजतें समरं। भभकै भभकं, रुधिकै लभकं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

जुगिनी जितनी, किलकें तितनी। ततथे ततथे, नचि बीर नथे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

गुरगात भरं, कच उंच करं। तिन कढ्ढि तनं, बढि रंभ बनं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दंत ऐंच दंती, कटि सूर कंत्ती। भिरि एमभरं, जनु सिंघ गुरं
छं० ॥ ३२८ ॥

गाथा ॥ जुद्ध कारंते जोधं। जै जै जंपि असुर ससुरानं ॥
कुट्टै इम किरवानं। लोहं लोहार कुट्टै घन एनं ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

धीर की विलक्षण हस्तलाघवता ।

दंडक ॥ धीरकर धरिकै किरवानह। धाप धपै धपतौ वर वानह ॥
थाट विथाट करं दल ठेलत। घाट कुघाट किए घट षेलत ॥
छं० ॥ ३३० ॥

वाटनि बाट करी अति भीतर। लोटत लोटत ज्यो बन बितर ॥
वाढनि वोढ दिए तरवारनि। वालर वाढत भील पहारनि ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

सीसन पीस किये सिरदारन। पी भज भाजन चीलपि जारन ॥
सेलन मेल सनमुप मंडहि। झेल विझोल कारा झार झंडहि ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

ढेरत हथ्थ उधेरत पजर। पडत पग्ग पसे रत पजर ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

शहाबुद्दीन का घोडा छोड कर हाथी पर सवार होना।

कवित्त ॥ ऐ सहाब सुलतान तुरिय छंडवि गज चढ्यौ ॥
धीर वीर सम्मूह। रोस समुह वर वढ्यौ ॥
है समेत असवार। हकि पुंडीर सु चपै ॥
जिमि मुष्पह जमरोज। चद नदन नह कपै ॥
कढि कटार गज तोलि हित। राह अप्रम रवि गुड लरि ॥
कट्टार न पि पग्गह कढ्यौ। करिय सीस सिर लोह झरि ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

धीर का हाथी को मारना और शाह का जमीन पर गिर पडना और धीर का शाह को पकड लेना।

उडिग रेन गय नग। साहि समुह गजि पिल्ल्यौ ॥
धनिव धीर 'पुंडीर'। साहि सनमुप असि मिल्ल्यौ ॥
दसन तुंड किय दोन। मुंड छंडिय सुंडाहल ॥
गिरत भूमि सुरतान। षा`न कीनो कोलाहल ॥
झक झोरि तोरि अवझारि उजरि। गहि हमेल हम्मीर लिय ॥
हय कध डारि अड्डौ असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

धीर का तलवार चलाते हुए शाह के हाथी तक पहुंचना।

षग कढ्ढत सुरतान। अप्प मनि भय हय चढ्ढिय ॥
धर ततार इक पंचि। सिंगि रंगिय रुधि मंडिय ॥
हनिव हथ्थ पुंडीर। धीर धर फट्टि सनाहिय ॥
जनु कि प्रात आहुत्त। ब्रह्मपुर पंच समाहिय ॥
उर फुट्टि पंच ट्टर करह। बर बिडुरि पग्गह डरिय ॥
गहि दंत मंत सुनि सुनि सुनिय। झमकि झमकि बिजुरिय झरिय॥
छं० ॥ ३३६ ॥

शाह के अंग रक्षक योद्धाओं का शाह को बचाना।

साहि पास सौ मीर। दुहूं उम्भै दुहुं पासं ॥
उम्भै अग्ग सु बिहान। बान अरजुन प्रति मासं ॥
कंजानी कम्मान। बान सु बिहान तोन तिय ॥
तेही वेर हुसेन। दिष्ट देषी धरि अत्तिय ॥
तब साहि हथ्थ कम्मान लै। षिंचि करि कुंडलि क्रन्न बर ॥
तन फुट्टि लुट्टि हुस्सेन पर। रोस परिग परि मीर धर ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम और हुसेन सुविहान (सुभान) का मारा जाना।

एक बान सुबिहान। बान हूसेन चढ़ाइय ॥
दूजै बान तकंत। बंध धीरह टाराहिय ॥
तकि बान तिय साहि। भरकि भग्गौ हिंदवानं ॥
सकल सूर सामंत। करै अस्तुति सु बिहानं ॥
पट बान कमान जु नंषि करि। अरि दिसि हरि चक्कह चलिय ॥
कढि तेग मुट्ठि छुट्टै नहीं। दिन पलथ्यौ सु बिहान जिय ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ढारि जंग जुरि जूह। जूह गजराज ढंढोरिय ॥
ढोल मद्धि ढंढोरि। बीर अविहरि दल मोरिय ॥

दल मोरे षुरसान। षान षुरसोन वहोरिय ॥
वहुरि धीर जजाल। कारन वाहिर वहुतेरिय ॥
तेरिय सु वीर चतुरंग वर। वीर वीर वीरं कहिय ॥
अच्छरी वीर रस भर सुभरि। भेद भेद न छंच रहिय ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

गुन रन सूदे सेस। छंद सुभ्भर आलिय भुअ ॥
दुष सुषमया विमोह। क्रोध रँग वीर सकल हुअ ॥
अहहं हती हंत। रत दंतन धरि दंती ॥
मनु मराल लै चित्त। दंत मुरलाल रुलती ॥
धर वोल परै सुरतानं नग। पूज पुट्ठि तें षुट्टि वर ॥
दल ढुंढि फिरावन एक दल। नच्यौ सोहि गोरीहु स्वर ॥
छं० ॥ ३४० ॥

पुंडीर की पैज का पूरा होना।

धीर वचन सुनि साहि। दिष्ट मरदा विप जोरन ॥
धीर तक्कि सुरतान। साहि तक्के उन तोरन ॥
ठेलि गज्ज हय पत्ति। अप्रव ठेल्यौ पुंडीरं ॥
कड्ढि बंक सो तेग। हन्यौ गज सीस सु वीरं ॥
निह टीव वीज वद्दल विहर गज्ज परिग गजपति कहिय ॥
हय कंध डारि अड्डौ असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

पुंडीर के पैज निर्वाह की बधाई।

भुजंगी ॥ गह्यौ साहि हथ्थे जु पुंडीर रान। कहै सूर सामंत पैजप्रमान ॥
हन्यौ एक गज जूह कोटं प्रमान। कहै देव देवं जु भारथ्थ जान ॥
छं० ॥ ३४२ ॥

कहै चंद वत्तं समंद रहान। तहा चंद सूरज्ज कित्ती भषान ॥
अश्वनी कुमारान वासी कहान। जिसो पथ्थ पंडौस जोध रचान ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

कहै चंद कित्ती सु बेली भपानं। रहै गिल्लि मेलं सुरत्तान सानं॥
जिते राव चावंड सही अमानं। अहो धीर पुंडीर पैजं बखानं॥
छं० ॥ ३४४॥

उवं षंड हथ्थं रुधी धार पानं। हिमं गा समानं जु सीहं पलानं॥
कियौ स्वामि कौ काज पैजं प्रमानं। * * छं०॥३४५॥

कवित्त ॥ नव सें जहां सिलार। पास ठट्टे हंमीरह॥
एक लाष साहन समुंद। चवकोदह भीरह॥
बेद लष्ष तरवारि। सघन नेजा पसरंतह॥
अट्ठ लष्ष गुर धार। मेघ जिम झरवर संतह॥
पुंडीर राय कालह सरिस। भिन्न भुअंग चित्तह मन्यौ॥
बीरंग बंस चंदह तनौ। साहि गह्यौ हथ्थी हन्यौ॥ छं० ॥ ३४६॥

शाही सेना का सब रसद छोड़ कर भागना।

सिंधु सहाब उप्परह। जैत संग्राम धाम रन॥
छत्र दंड वर चमर। दंड छंडिग सु गंध घन॥
तुरस तोरि भवरिय मरोरि। रवरिय दल वद्दल॥
जनु निदंत दच्छिनिय। पाइ ठिल्लिग सुभट्ट पल॥
सुनि नयन गयन लग्गिय अगनि। पल पलाय गोरिय सयन॥
सो सद्द वद्द दस दिसा हुअ। अह्यौ अह्यौ बुल्लिय बयन॥छं०॥३४७॥

शहाबुद्दीन के खवास सेरन का घर पहुंचना और उस की स्त्री का उसे धिक्कारना।

बिय षवास सेरन सु नाम। गोरिय गयंद कुल॥
तिहि सु सत्त जोरू सु व्रत। रोचि निय अग्गा बल॥
सय सिंदू कुल परह। ताहि दिट्ठौ गज कन्ना॥
पंन पानि पति साहि। हाथ असहा वह बन्ना॥
उच्चार भार बुल्लिय बयन। निय जुबहि पति साह तहां॥
आभ्रमहार कुच भारवर। सुनित स्वामि संसार कहां॥
छं० ॥ ३४८॥

(१) ए.-कज-क.-कय।

सेरन का उत्तर देना कि मै तेरे मारे लौट आया हू अच्छा अब शाह को छुडा कर तब रहूंगा।

मै पावस अब्भरिय। गिरिय घेरिय जनु मुक्के॥
स्वामि मचं वरपत। फेरि हिंदुअ दल लक्के॥
तुव नेहिय देहिय निवाह। कि जाम कोह दह॥
पुनि सुद्धौ सुलतान। हाउ जहा माउ नाम ठह॥
म जाह लाज मभ्भह रवनि। रवन सुप्प टेपै मरद॥
कामं तरुनि कामिनिय कारन। उज उडाय सुक्किय गरद॥
छं० ॥ ३४९ ॥

पुन स्त्री का कहना कि स्वामी को साकरे मे छोड कर घर का स्नेह करने वाले सेवक का जीवन धिक है।

ताइय तुह कामिय सु काम। कामनिय काम रत॥
अप्प भ्रम तजि स्वामि। भ्रम छडौ सनेह हित॥
आय देह सदेह। देव देवनं सचारहिं॥
आय धार वजि मार। मारे मारनं मन हारहि॥
अजिसिय हँसिय अतर गसिय। ससिय सद्ध उद्धर धसिय॥
मामुद्ध दुद्ध दोजिगन चलि। उर अकुस फेरिय रसिय॥
छं० ॥ ३५० ॥

सेरन का युद्ध की विषमता का वर्णन करना।

कर कक्कस करिवार। सूर वद्दल दुति छुट्टिय॥
परत भोमि रोषनिय। सस्त्र पुट्ठी अलह फुट्टिय॥
रवरि दवरि हिंदुअ। नरिंद भ्रत धरय सुरतानह॥
परि पारस पुडीर। हथ्थ देषिय सु विहानह॥
हहकारि हक्कि बोल्यौ सु वर। सु सव मुकि सुरदार भय॥
उन देव धीर चदह ननौ। मनों सिघ दप्यौ जु चय॥
छं० ॥ ३५१ ॥

सेरन का कहना कि शाह के छुड़ाने का भार बैजल खवास पर है।

चष दिष्षिय सक सिंघ। सेर अंमह सुरतानह ॥
कर कढ्ढिय जमदढ्ढ। वढ्ढ बढ्ढन तुरकानह ॥
मवन उंच तिहि नेज। सेज उच्छंग उछारिय ॥
जनु कि सिंघ सावंग। उढ्ढ डंमर उप्पारिय ॥
उर करारि मुट्ठि दिढ्ढौ दुअन। सम छुट्टत सुरतान कह ॥
बिज्जल षवास छप्पर गलसु। गलग ढलगि भूमिय सु वह ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

किन्न कंक चहुआन। कंक महमंद सवन्निय ॥
ठिल्लिग ठट्ट उट्टाय। कोट बज्जे बर बन्निय ॥
परे मत्त में मंत। दंत अंतिय आल,झ्झिझय ॥
जनु कि केलि बिन पोन। बेलि बंकिय बलि बुझ्झिय ॥
संग्राम धाम धुंधर धरनि। धरनि पहर बज्जिय लहरि ॥
ता पच्छ जाम जद्दों सुरन। अवसि मेव उत्तरि विवरि ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

उत्तर वै सुरतान। बंधि धीरह धर नंषिय ॥
सुर नर गन गंध्रब्ब। चंद बंदिय सद भष्षिय ॥
अग्गा भर सुरतान। आनि बरतिय चहुआनं ॥
कासमीर छिल्ला पहार। ठट्टा मुलतानं ॥
जित्ता जुवान सोमेस सुअ। दुमसि बज्जि बज्जे इहां ॥
जै जया सद्द आयास भौ। सु कविचंद छंदे जिहां ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

नीसानी ॥ नेजे नंनीं सेरवान धरधार उपन्ना।
तिस का हथ्थ विहथ्थ वान बघधां बर जन्ना ॥
तिस कै कुंडल चव्हवान नहि दिठ रहन्ना।
पाई पूना धंष देह दुहरी भर यन्ना ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

जानै छुट्टा इक्क माइ वोरह विरुझ्झना।
दूनै झूझ्झ अलुझ्झि झाया हिंदू तुरकान्ना॥
विरप वोल उठ्ठाइआ जानै थुतिकना।
हो अलिधीर दुराइया सेरन वर वन्ना॥ छं०॥ ३५६॥

जैतराव और तत्तारखां का युद्ध। तत्तार खां का मारा जाना।

कवित्त॥ घरिय पंच पामार। जैत जंग हथ्थ उहन्ना॥
है सों है गै सो गयंद। नरों नर हथ्थ निहन्ना॥
निहसि निहसि झन झनिय। पग्ग पग्गा पग भग्गा॥
कट्टारिय कट्टारि। मार छुलिका छुलि जग्गा॥
है कप हक्क जूटा सु घट। कुघट काटार काटत घट॥
तत्तार षान जुरि जैत सों। निहसि नियाहि निहद्द हट॥
छं०॥ ३५७॥

परयौ षेत तत्तार। षेत जैतह गल लग्गिय॥
उभय सहस पट्ठान। सहस पामार स भग्गिय॥
चपि राव चामंड। अगि अगिवान उचार्यौ॥
जादौं षान उभारि। वाय वादल उट्टायौ॥
घगिय सु पध दाहर तनौ। घर विरह छज्जै मद्दह॥
दाहत दाह दुलह मरन। जिहि सु हिंदु रष्षीह दह॥
छं०॥ ३५८॥

विजय की सुकीर्ति के भाग।

पंच भाग पामार। भाग चामंडराय तिय॥
उभय भाग जद्दो जुवान। जैपत्त हथ्थ लिय॥
एक भाग प्रथिराज। अद्ध भागह वरदाइय॥
पाव भाग पज्जून। राव मंडी मरदाइय॥

भग्गाह अट्ठ पुंडीर भुज । जिहि सु साहि सद्ध्यौ समर ॥
धन्यो जयंत विस आध अध । लिखि कवित्त छद्ध्यौ अमर ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

दूहा ॥ राय पुंडीर सु झूझ जिति । ग्रिह आयौ प्रथिराज ॥
डोला पंच पचीस रजि बिय आदीत बिराज ॥ छं० ॥ ३६०

कवित्त ॥ गहिव साहि करि पैज । जुद्ध जित विग्रह पत्तौ ॥
बेठति पब पाषंड । भेद सामंत निघत्तौ ॥
रिन रवद्द जित्तिग । नरिंद बाजे बज्जाने ॥
नछि हिंदू कढ़्ढ़ितेग । सद्द बज्जे सद्दाने ॥
दिष्षहि न राज सुरतान कहुं । सक सहाब षुरसान पति ॥
पूंछत बत्त भग्गो भिरा । रह्यौ न जुध रोह्यो [1]रुसति ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

मलिक षान षुरसान । हनिग लष षग्ग धीर वर ॥
गज मै मत्त संघारि । दबटि दल मथ्थौ सबलकर ॥
लियौ साहि गहि हथ्थ । सथ्थ देषत सुरतानो ॥
षां ततार रुस्तमां । सीस धूनहि विलषानो ॥
पुंडीर सहस तिय षेत रहि । गह्यौ साहि गयौ धीर घर ॥
पुंडीर चंद नंदन रनह । मेछ गह्यौ चालेत धर ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

दूहा ॥ सहिय संगि सनमुष्ष सर । पानि ढरि मुलतान ॥
जैत पत्त रावत्त हुअ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

वैजल का धीर से कहना कि शाह को छुड़ा दो और धीर का उत्तर देना कि पांच दिन ठहरो ।

चामर छच रषत्त रन । ए लुट्टे सब कोय ॥

(१) को. हसति ।

बर पवास वैजल कह्यौ। धीर निहोरै तोहि ॥ छं० ॥ ३६४ ॥

कहै धीर वैजल्ल सुनि। पंच दिवस नन कथ्थ ॥
गुदरो मति राजान सों। साहि ग्रहन से हथ्थ ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

गुरि न गयौ गोरी धरह। पर्यौ न पेत प्रमान ॥
उकति बंधि प्रथिराज चित। धीर नद्यौ सुरतान ॥
॥ छं० ॥ ३६६ ॥

वैजल का पृथ्वीराज से शाह के छोड़ जाने की विनती करना।

करि मालम वैजलि सु तव। समह राज चहुआन ॥
पुरिन गयौ गोरी धरह। धीर पकरि सुरतान ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

चौपाई ॥ इह सुनि राज अप्प ग्रह आइय। कहिय धीर सों वेजल धाइय ॥
पडौ काढि आय पावासह। तवे वेजला बोल्यौ तासह ॥
॥ छं० ॥ ३६८ ॥

धीर का कुपित होकर वैजल को मारने के लिये दपटना।

इह सुनि क्रोध धर्यौ मन धीरह। वरजी बत्त कहो क्यों हीरह ॥
मारन असि कड्डी पावास। प्रथीराज वरज्यौ तव तास ॥
॥ छं० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराज का धीर की वीरता की प्रशंसा करके उसे समझाना।

कवित्त ॥ गरजे वे सभरि नरेस। अरि विग्रह मंड्यौ ॥
पुरनि षेह लक्ख्यौ। ग्रम्भ ग्रभनी जु छंड्यौ ॥
चंद तनौ पूरन सु चंद। तिहि ठा संचर्यौ ॥
मारे मत्त मयंद। धनि सु धनि धनि तहा कर्यौ ॥
दुउ दलन बीच मच्छर कह्यौ। हाक्यौ हन्यौ पचार्यौ ॥
सुरतान साहि साहाव दी। गहिव धीर रन पार्यौ ॥ छं० ॥ ३७० ॥

सुंडा डंड प्रचंड। मुंड पंडनौ परक्यौ ॥
सिल्लारां असि तेज। वीज उज्जलौ झलक्यौ ॥
गहि गोरी गंजयौ। गहिव भुअ बल उप्पार्यौ ॥
राय सरिस सामंत। पूरि धर रुहिर पषार्यौ ॥
झगरौ जु प्रभञ्ज्यौ जेत करि। तातन टट्टर अभय हुअ ॥
सो असिवर सज्जत वे जलहि। धीर लज्ज लग्गै न तुअ ॥छं०॥३७१॥

धीर का कहना कि इसने मेरे मना करने पर भी क्यों कहा।

स्वामि बचन बिन सुनै। कान लगि कहि इह बत्तिय ॥
तूं पामर बरजयौ। पंच दिन कथ्थ न कथ्थिय ॥
जैतराव चामंड। राव जद्दव जामानिय ॥
कूरंभ। पज्जून। गरुअ गुज्जर र। मानिय ॥
सनमान राज चहुआन दल। भरत बिनोद मंडत रसन ॥
तिहि रीस सीस पामर पिसुन। करौं षग्ग मग्गह असन ॥
छं० ३७२ ॥

पृथ्वीराज का पुनः धीर का समाधान करना।

चिपति न किय तो षग्ग। हनत कर करिय चन्दसुअ ॥
चिपति न भय गोरिय। नरिंद सुलतान मंत धुअ ॥
चिपति न उल्ले लाल। मल्लवाहन उभ्भारत ॥
चिपति न गज गुरइंद। बिंत उप्पर उप्पारत ॥
चिपतौ न तुअ पुंडीर सुअ। सुरतानह बंधत बसन ॥
बंगिय बखान वैजल्ल विजल। न करि बग्ग मग्गा असन ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

षग्गझार परिया। चंद बचा हसि सद्दे ॥
मैं बरजिय दिन पंच। पीय पामर कह बद्दे ॥
पाउ लागि प्रथिराज। बाह दीनी प्रथराजं ॥
दसहजार है बरव। दंडि छंडिय सुलतानं ॥

दिट्ठाह दिट्ठ ऊची करी। गय गोरी अह्वह गरिय ॥
आसन सुछडि उभ्भै हुऐ। करि दुवास चदह धरिय।

छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शाह को छोड देना और शाह का लज्जित होकर राजा को धन्यवाद देना।

दंड सीस सुलतान। तीस गजराज मत्त मद ॥
पच सत्त एराक। सुतर लप तीन उन मद ॥
वहु विभूति चतुरग। डड मान्यौ पुरसानौ ॥
वर गोरी सुलतान। बधि मुक्यौ चहुआनौ ॥
आजान वाह सगह न्रपति। दंड काज सथ्थह दियौ ॥
पुरसान पान भोरी न्रपति। सुवेर साहि सथ्थह लियौ ॥

छं० ॥ ३७३ ॥

पाय घालि प्रथिराज। वाह दीनी सुलतान ॥
करि सलाम तिहु बार। धरिय अगुरिय तुरकान ॥
तुम उमाह दुग्गाह। वार वारह चढि आवहु ॥
वज्रहीन दुअदीन। किया अप्पना सु पावहु ॥
नन करहु सह जुग्गिनिपुरह। वाधि साम तह मुक्कियौ ॥
वारह सुवार आवत इहा। जाय सुपासन सुष्पियौ ॥

छं० ॥ ३७४ ॥

शाह को छोडकर पृथ्वीराज का सयोगिता के साथ रस रग में प्रवृत्त होना।

पकरि छडि सुलतान। दड पुडीर समप्पिय ॥
ता पच्छै प्रथिराज। केऊ दिन तप्पन तप्पिय ॥
आनी म ग कुआर। रूप धरनी धर धारह ॥
जिन लीने सामत। नाथ बरूनि वरवारह ॥
मत्तान मत्त सूता रहे। पच लिहदे देव दिन ॥
उच्चाह वाह कविचद कहि। सत सु छुट्टै स्वामि रिन ॥

छं० ॥ ३७५ ॥

सामंतों और पृथ्वीराज का धीर से कहना कि तुम शाह को छोड़ दो।

अनुफाल ॥ प्रथिराज सामंत सब्ब । पुंडीर धीरज्ज तब्ब ॥
तू छंडि गोरी साहि । मो इष्ठ बोल निबाहि ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

तूं सर्व सामँत सूर । प्रथिराज थप्पिस पूर ॥
तूं करै सब दिन पान । मन धुर मिष्ट बानि ॥ छं० ॥ ३७७ ॥

उश्र दिष्टि मंडिय राज । कनवज्ज देषन काज ॥
उन राज काज सुभग्ग । कलहंत कास समग्ग ॥ छं० ॥ ३७८ ॥

तुश्र छंडि मंडि सुमेद । हिंसार कोट सुमेद ॥
पुंडीर छंड्यौ साहि । प्रथिराज सामँत मांहि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

षंद राज सुमंडि । चँवार पहुमि सुषंड ॥
उश्र मंच राज विनास । कलियंग छच सुतास ॥
छं० ॥ ३८० ॥

इय मंडि कीरति चंद । तिहि गज्जनै सुत चंद ॥
चिहुं चक्र दे सजि धक्कि । जिहि चन्द सूरज सष्य ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

जिहि पातिसाह सुसाहि । तो धीर धन्नि सुमाय ॥
* * * * * * * ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुमने शाह को किस तरह पकड़ा

कवित्त ॥ असिअ लष्य साहन ससुह । दस सै गयंदह ॥
धरनि धसय उद्धसय । बोल नहि गुर सुर छंदह ॥
तहां तिमीर झंमंमि । गोल हबसिय हय हंकहि ॥
तहां धानुक्क पाइक्क । अप्प अप्पन पय तक्किहि ॥
तहांति मेछ गज्जहि असुभ । मनो घोरि पावस रह्यौ ॥
इम कहत साह पुंडीर सों । किम सुसाहिते संग्रह्यौ ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

धीर का रण का सब हाल कहना और पृथ्वीराज का शाह को सिरोपाव पहिनाकर सादर गजनी को विदा करना।

चोटक ॥ जहां हिंदुअ साहि लरत रिनं। तहा बान परै बरसा सुघनं ॥
जु करै किरिवारिय हिंदु असेछ। लइ गिय बालक षेलहि एछ ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

परे गुरजे रिन गाजरि सूर। सजे रन साहि सुहिंदुअ पूर ॥
तेहँकि हमीर किए इक ठौर। गयदहिं साहि गयौ गजि जोर ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

थही परिढिलिय साहि करी। करिवार कुंभस्थल बीज भरी ॥
तबही धर धुकि गयद गय। लिय साहि गयदति पोचि लिय ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

इय लाज प्रताप ते राज रही। गजनेस असमिय ईस गही ॥
विकसे प्रथिराज पुंडीर हिय। अद्भूत पराक्रम धीर किय ॥
छ ॥ ३८७ ॥

इम जग जहा रन सोर हुअ। नइ आवन पास लहे सुतुअ ॥
तब जंपिय धीर धरन्नि धुअ। न्रिप सभरि जग प्रताप तुअ ॥
छं० ॥३८८॥

तब साहि हजूर पुंडीर किय। भरि अक प्रथीपति भेछलिय ॥
बहु पुच्छिय प्रीति समाजि तदं। तुअ दिप्पत हिन्दुअ सुप्प हदं ॥
छं० ॥३८९॥

पहिरावनि साहि करीं प्रथिराज। दिये तब अबक बाजन बाजि ॥
दिये सत तीन तुरग सुरग। करिवार कटार जरे हिम नग ॥
छं० ॥३९०॥

पहिराइय साहि दिबगम वस्त्र। दिए षटतीस अनूपम सस्त्र ॥
षठ भोजन भाव सुभष्य लिय। जु सुगध अनेकति पूर किय ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

दूजयं महि मानिय पूर मयं। पहचाइय कोस इकं नपयं ॥
इम जित्तिय जंग सुदिल्लि नरेस। सामंतन मद्धि पुंडीर थपेस ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

करै सुप राज विलास सँजोग। हिमवंत महारिति भोगहि भोग
* * * * * * छं० ॥ ३९३ ॥

कवित्त ॥ धनि सुधीर तुअ मात। साहि गजनी गहिय कर ॥
गयपानी सुलतान। आनि संभरि ढिल्लियधर ॥
उतरि अहं चावंड। राउ जैत सीम मह मत्र ॥
बढे उरह बल राज। कुसुम सर चंद किति तवि ॥
जंपिय सु राज प्रथिराज तब। बोल धरी जस पावयौ ॥
फिरि चलत मग्ग गज्जन पुरह। राज साहि पहरावियौ ॥
छं० ॥ ३९४ ॥

जैतराव और पाभंडराय का पृथ्वीराज से कहना कि धीर को शाह के पकड़ने से वड़ा गर्व हो गया है।

साहि डंड डंडयौ। दंड पुंडीर समप्पिय ॥
साहि समंदन मंगि। सुप्प राजनतं अप्पिय ॥
गज्जनेस गोधीर। गयौ चावंड जैत लषि ॥
हास अग्र किय राज। वक्र मुप भौंह नंचि चष ॥
असपत्ति सेन भंजिय नृपति। गहन अव्व धीरह वढ्ढै ॥
चलि सकट मग्ग नीचें भषन। वहन भार गरुअत वढ्ढै ॥
छं० ॥ ३९५ ॥

पृथ्वीराज का धीर सहित समस्त पुंडीर वंश को देश निकाले की आज्ञा देना।

करिय रीस प्रथिराज। धीर सुअ नयर निकारिय ॥
बाल हद्ध पुंडीर। छंडि नयरह नर नारिय ॥
सहस पंच पुंडीर। जाय लाहौर सपत्त ॥

सहनिवास तह सजिय । मंडि सबदिन वलि मत्ते ॥
पट्टइय दूत धीरह दिसा । लिषिय पच कागद कारह ॥
सुनि वत्त चित्त धीरह धनी । गयौ सिंधु साहिव दरह ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

देश निकाले की आज्ञा पाकर धीर का राजाओं की रीति नीति को धिक्कारना ।

दूहा ॥ मन चिंतन धीरह करै । इह न्नप पुब्बह रीति ॥
कोटि जतन जौ जोरिय । न्नपति न होवै मीत ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

क्षीव होक वंधि रज्जनह । मदि पान तत चित ॥
तिय को काम न उपसमै । न्निपति न काह्न मीत ॥ छं०॥३९८॥

अहि पय पान पिवाइयें । जतन करे नित नित्त ॥
जब पग चपै तव डसै । त्यो न्नप अवगुन चिंत ॥छं०॥३९९॥

कवित्त ॥ सइसव ते न्नप मेर । कारत वेलानह लग्गै ॥
जो थ्रित सेवा करै । न्नपति कै पहुरै जग्गै ॥
अप्प राज न्निप ताहि । रीझि धन धान्य समप्पै ॥
सामि ध्रम्म धन धरै । काज पर सीसहि अप्पै ॥
यो करत वरत दुज्जन बिचे । फारि फोरि दस दिसि करै ॥
संजुत्यौ कुलफ मिलि कुंचिका । त्यों न्नप मन जू जू परै ॥
छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ राज वेश्या अगनि जम । अतिथि सु जाचक वाल ॥
पर दुष ए पावे नही । वहुरि गाव कुठवाल ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

सेठ सुदर्स्सन सुक्रमनि । ए न्नप राजन थभ ॥
जौ न्नप इनके ना भए । राप नवन के अभ ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

अरिल्ल ॥ समौ विचारि बोलिये बानि । दिष्टी करिय अदिष्टी छान ॥
अप्प अधीर ग्रह गमनस कीजै । हीर मगें न्नप के न रहीजै ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

दूहा। ॥ सांप सिंह न्रप सुंदरी। जौ अपनै वसि होइ॥
तौ पन इनकौं अप्प मन। करो विसास न कोइ॥ छं० ॥ ४०४॥
कबहूं वक्र अवक्र कब। कब षंडौ कब अस्त्र॥
राजा गति दुजराज सम। प्रक्रति निवाहन सत्र॥ छं० ॥४०५॥
न्रप अंदर सोचै नहीं। कह्यौ सुनै सदभाव॥
दुरजन हित जानै नहीं। अपनै अपनै दाव॥ छं० ॥ ४०६॥
औगुन अत अप्पै भलै। न्रप के भाषें नांहि॥
सो न्रप भ्रम वेदन कह्यौ। न्रप परमेसर आंहि॥छं०॥४०७॥
बिष्य घुटी माता दियै। वेचि पिता लै दाम॥
राजा जो सरवसु हरै। नहिं सरनागत ठाम॥ छं० ॥ ४०८॥
माता सरन न मुक्कियै। पिता सरन मन आनि॥
सेवक औरह चिंतइ। विना सरन राजानि॥ ४०९॥

यह समाचार पाकर शाह का धीर को जागीर का पट्टा देना और धीर का उसे अस्वीकार करना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त सुलतान। धीर पट्टौ लिषि तथ्थह॥
सहस अट्ठ ग्रामह सुदेस। धाम देसह दह पत्तह॥
सहस षान सुलतान। धीर निज हथ्थ समप्पत॥
कहौ धीर सुनि साहि। राज प्रथिराज सु तप्पत॥
जो अवर पंच सीसह धरों। ईस कहां उजो अवर।
उग्गमै दिवाइर पच्छिमह। सौ सेसह छंडे सु धर॥
छं० ॥ ४१०॥

शाह का धीर को ढिल्ली की बैठक देना और धीर के कुटुंबियों का लाहौर लूट लेना।

धीर निवेसन साहि। दयौ ढिल्ला पहरत्तव॥
अरु है ठट्टा ठाम। कियौ आदर अनंत सव॥
तव सु पत्र लिषि धीर। सोइ कर दूत समप्पिय॥
तवहिं दूत लाहौर। पत्र पावस कर अप्पिय॥

बंधिय सु पच पुंडीर तब। लुटि सहर छयौ सु बर ॥
पट कूर कनक केसरि अगर। हय कपूर नग मुत्तिनर ॥
छं० ॥ ४११ ॥

दूहा ॥ हीर चीर कप्पूर हय। मानिक मुत्ति अमोल ॥
लुटि लाहौर पुंडीरिया। ऊट्ठि कंचन बैमोल ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

सब पुंडीरों का ढिल्ली को जाना और धीर का उनको लाहौर लूटने के लिये धिक्कारना।

कवित्त ॥ इरिय रिद्धि बर नयर। आय ढिल्ली सापत्ते ॥
तहां निवास निज करिय। सब्ब पुंडीर समथ्थे ॥
आयौ तथ्थह धीर। सुन्यौ लाहौर सु लुट्यौ ॥
करि पावस समकोय। अप्प हथ्थह हिय कुट्यौ ॥
उठ्यौ सु कोपि करिवार सजि। बीर भद्र पुंडीर लषि ॥
रन सिंघ सूर धीरन धरहि। कोप समायौ तीयरपि ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

दूहा ॥ तहां निवेस पुंडीर किय। हैं गै सथ्थ समथ्थ ॥
तहां निवेसह अट्ठ दिन। मास सत्त जुग तथ्थ ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

पृथ्वीराज का धीर को बुलाने का पत्र भेजना।

तब धीरह कग्गर लिष्यौ। प्रथीराज चहुआन ॥
हम धर आगर धीर तू। आनौ तुम करि मान ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

धीर का राजाज्ञा को स्वीकार करना।

बंचि धीर कग्गर न्रपति। सिर धरि करि तसलीम ॥
औछव आदर बहुत किय। उपजि हरष सम सीम ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

कवित्त ॥ कारन साज मन चिंति। चल्यौ हय लेन पुंडीरह ॥
कछुक सेन सामानि। हुए तब चिंतै धीरह ॥
भावी गति होइ है। कहा बहु बुद्धि बिचार ॥

हुं पहुँचो नृप पाय। तौ अप्प मनों चित सारं ॥
सें अट्ठ अश्व चहुआन पौ। और पुंडीर न चढ्ढिहो ॥
पै लग्गि राज अपराध षमि। पाय पराक्रम सिद्धिहो ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

चल्यौ धीर कंगुर दिसह। उर धरि जालप जत्त ॥
जैतराव चामंड मिलि। कही राज सौं वत्त ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

धीर का सौदागरों के घोड़े खरीदना।

कवित्त ॥ सहस अट्ठ है सथ्थ। सहस पंचह सौदागर ॥
आय सपत्ते तथ्थ। धीर दीनो आदर बर ॥
मास एक है परषि। सहस दूनह हय रष्षै ॥
और देस में अश्व। लिए अपजानि परष्षै ॥
दीए सु द्रव्य मुह संगि बर। जाति भांति लष्षन सहित ॥
रवि रथ्थ जानि उच्चिश्रवा। को अमोल मोलनि ग्रहति ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

घोड़ों की उत्तमता का वर्णन।

इसे अश्व अंमोल। लिए पुंडीर चंद कहि ॥
ग्रम्भ जंच अन चढ़े। जिसे दिए वह्न जग्य महि ॥
मित्र सेन गंधर्व। लिये अंतेवर प्रब्बल ॥
नदिव नास झूलंत। आय ऊपर पंडव चलि ॥
अनभूत जुद्ध अन चिंति परि। पथ गँध्रब कों बंधि कसि ॥
छंडाय जुधिष्ठिर पंचसय। लय पवंग ते पेस कसि ॥
छं० ॥ ४२० ॥

उन्हीं सौदागरों का गजनी घोड़े लेकर जाना और उक्त समाचार सुन कर शाह का कुपित होना।

सोदागर गज्जन सपत्त। गोरी सहाब मिलि ॥
हय निरषत पतिसाह। सोइ रष्षे जु अप्प कलि ॥

मिलि ततार षुरसान। सज्जि ममरेज सु मत्तिय ॥
सुनौ साहि साहाब। सु वर है धीर सपत्तिय ॥
कुप्पयौ साहि इह वेन सुनि। सब सौदागर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह। जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

दूहा ॥ अर्द्ध साथ दै सथ्थ हय। बहुराए पुडीर ॥
अश्व अमोलक राज को। लेन चल्यौ अधधीर ॥ छं० ॥ ४२२ ॥

कवित्त ॥ अश्व लैन गय धीर। अटक उत्तरि जाहनवि ॥
अद्ध साथ पुडीर। सथ्थ लै सब पान नव ॥
ढुढि थान षुरसान। तुग ताजी बहु लिन्नौ ॥
भैरू षान बलोच। भेद षुरसान सु दिन्नौ ॥
लग्गए दूत गोरी सुबर। वर पुडीर सु चढ्यौ ॥
वर भेष साजि सौदागिरह। गोरी सेन परठ्यौ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

शाह का सौदागरों के घोडे छीन लेना और उनका भाग कर धीर की शरन लेना।

लै सोदागिर द्रव्य। जाय गज्जनै सपत्तै ॥
मिले साहि साहाब। वत्त कहि कहि विव रत्ते ॥
मिले ततार षुरसान। जागि ममरेज सु मत्तिय ॥
कह्यौ साहि सौं जाय। धीर दे है सुधि पत्तिय ॥
कोपियौ साहि साहाव सुनि। सब सौदागिर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह। जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

धीर का शाह को पत्र लिखना।

दूहा ॥ धीर सु लिष्यौ साहि सों। सरन मुझ्झ सब आइ ॥
देहु द्रव्य सु है सहस। न्याय रीति सब राइ ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
तुम इन के है मोल ले। अरु ताकें ग्रह बधि ॥
ऐसी तुम्है न बूझियै। वेद कुराननि सधि ॥ छं० ॥ ४२६ ॥

शाह का मीरा खोखंद के हाथे घोड़ों की कीमत भेज देना और धीर का सौदागरों को राजी करना।

मीरां षोद मसंद अलि। तिन हथ्थह दिय द्रव्य ॥
पठए साह सु धीर सम। कनक बज्जे है सव ॥ ४२७ ॥

अली मसंद समप्पि सह। द्रव्य धीर हय सोइ ॥
धीर समीप बुलाइ दिय। दाम सौदागर दोय ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

आदर धीर सु भीर किय। सव सौदागर सथ्थ।
कालन मीर सु धीर सम। कहिय साहि सब कथ्थ ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

गजनी के राज्य मंत्रियों का धीर पर कूर चक्र रचना।

राषि धीर सौदागरह। उभय मास गय जान ॥
तब षुरसान ततार मिलि। कियौ मतौ कहि सामि ॥ छं०॥४३०॥

सौदागरों को लिख भेजना कि धीर तुम्हें मार कर तुम्हारा द्रव्य छीन लेगा॥

करि सुमंत कग्गर लिषिय। पठयौ कालन मीर ॥
अरे मूढ़ तुम द्रव्य कज। हनन सुन्यौ है धीर ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

जो हम तुस एकंत मिल। तौ मारहिं पुंडीर ॥
दीन कौल पैगंबरी। हम तुम बंधै धीर ॥ छं० ॥ ४३२ ॥

सौदागरों का शंकित हो कर परस्पर सलाह करना।

मालन मीर कमाल कर। दियौ सु कग्गर दूत ॥
बंचि सुभर भय भीत भय। मंत परट्टिय नूत ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

सौदागरों में यह मंत्र पक्का होना कि धीर को मार डाला जाय।

कवित्त ॥ कालन मीर कमाल। मियां मनहर सु मन्निय ॥
सेषन खूब निजांम। फते मषत्यार सु पन्निय ॥

सबै म चि मिलि रचिय। धीर अप्पा सह मारै॥
ता पहिले आपन्न। सबै धीरहि स घारै॥
सुदरै काम अप्पा सुबर। साहि सुबर मिलि मारियौ॥
सघार करै सब्बै सुभर। जो जुध धीर हँकारियौ॥ छं० ॥४३४॥

सौदागरों का अपनी मदत के लिये शाह को अर्जी भेजना।

दूहा॥ मत प्रपच जु किज्जियै। लिपि भेजै करि धीर॥
अटक उतर तें सड्डियै। तो नहि विज्जै मीर॥ छं० ॥ ४३५॥

॥ तब साजिय पुरसान षां। मत मानि सजि भीर॥
षा गुज्जर भष्षर अली। षां वहाव चलि मीर॥ छं० ॥ ४३६॥

लै कग्गर पतिसाह पै। गुदराई सब बत्त॥
सौदागर ब दे तुमहि। मिलि भेज्यौ कर पत्त॥ छं० ॥ ४३७॥

शाही सेना के सिपाहियों का गुप्त रूप से सौदागरो के काफले में आ मिलना।

कवित्त॥ बर सौदागर एक। षान पीरोज संपत्ते॥
मिलि आये षुडीर। हय सु लै करि उनमत्ते॥
दाग भ जि सुरतान। अटक उत्तरि षुडीर॥
हम बदे सविहान। साहि हम सज्जय बीर॥
सुरतान सुबर चोकी विहर। घात ब धि अप उत्तरै॥
तो सरन आय दै सथ्थ हम। सुबर सुभट हम उब्बरै॥
छं० ॥ ४३८॥

दूहा॥ दियौ हुकम गुज्जर भषर। बर ब धे करि तीन॥
जाय मिलै सौदागिरह। अहो आस मिसि मोन॥ छं० ॥४३९॥

एक वृद्धि करियै जु इह। मत लै वैठहि धीर॥
चूक करहि सद्दै चलत। तेक सजे करि मीर॥ छं० ॥ ४४०॥

सौदागरों का धीर को डेरे पर बुला कर एकान्त में सलाह करना और कालन कमाल का पीछे से पुंडीर का सिर धड़ से अलग कर देना।

कवित्त ॥ तब सज्जिय पट्टान। साहि बड्डत्त उड़ायिय ॥
कालन मीर कमाल। बोल धीरह लै आइय ॥
लै बैठे एकंत। साहि वत्तो भय बुझ्झै ॥
हम आये तो सरन। अबैं गुझ्झां कह गुझ्झे ॥
उच्चर्यौ धीर गरुअत्तनह। काय साहि मो सरन हय ॥
नह डरो आज रष्षों तुमहि। जो जम आवै तुम्म जय ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

अह्व रयन पल्लानि। अटक सब सथ्थ संपत्तौ ॥
मेछवान करि पंति। धीर रुंध्यौ बल मत्तौ ॥
चूक चूक संभरी। सब्ब पुंडीर समाही ॥
सबैं सेन आहुट्टि। धीर हुं धीरज साही ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। घाइ पुंडीर अहुट्टि घट ॥
धनि धनि नरिंद बर सह हुअ। जिहि पति रष भंजी विघट
छं० ॥ ४४२ ॥

तब कालन करि क्रूर। कह्यौ तुम सरन बयट्ठौ ॥
असि लै कालन उट्ठि। आय षिन पुट्ठि निहट्ठौ ॥
कढ्ढि तेग असि झारि। सीस उथ्थौ धर तुथ्थौ ॥
उबै तेक असमांन। सीस गय सूर न घुथ्थौ ॥
निझ्झारि तेक धर ढारि धर। हय कमाल कालन न दुर ॥
सयदून सहि पट्टान रन। इह अचिज्ज अप्पै अमर ॥ छं० ॥ ४४[illegible]

सौदागरों का धीर की लाश गजनी को भेज देना।

पत्ति पहर पुंडीर। जीय पति कै सथ मुक्यौ ॥
धीर धारि ढंढोरि। धार धारनि तन चुक्यौ ॥
जो जानत चहुआन। सोपि कीनौ पुंडीरं ॥
तिन दंतिन बर षंडि। जुद्ध धर धर करि मीरं ॥

सग्गही लुथ्थि सुरतान पर। सब आहुट्टिय राज भर ॥
गोरी नरिंद बाजे बजग। सुबर वीर ढिल्लिय सुधर ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

धीर के वध की खबर पाकर पावस पुंडीर का धावा करना, पठानों और पुंडीरों का युद्ध, पठानों का भागना, पुंडीरों का जयी होना।

सहस च्यारि पट्ठान। मेलि पुंडीर धारि धर ॥
तत पावस पुंडीर। सुनी वत्तह चवि हरहर ॥
सजि पावस पुंडीर। चल्यौ बाधहै सुक रष्षै ॥
वीर भद्र नरसिंघ। तेज पुंडीर तरष्षै ॥
लषमसी सेन लष्षाह भरी। रघर राय समथ्थरिन ॥
संकाने सेल वधे सुभर। पष्षर सिंध सुसाजतन ॥ छं० ४४५ ॥

दूहा ॥ अति आतुर पावस गयौ। धाय संपत्तौ तथ्थ ॥
मनों पवन पावस धुरै। झरि लायौ पग हथ्थ ॥ छं० ४४६ ॥

कवित्त ॥ आय संपत्ते सोय। साज ठटे पट्ठानह ॥
हक्कि धक्कि हय नंषि। असंष असिवर उट्ठानह ॥
तेग तार कक्कस करार। कहै मुष मार मार सुर ॥
भगि पठान उसमानि। विमुष जिम झारि हारि भर ॥
सें अट्ठ पट्ठ धर ढर धरिग। जित्ते वर पुंडीर रन ॥
जै जया सद्द आयास हुअ। धनि धीर धीरम्म तन ॥ छं० ४४७॥

दूहा ॥ आए पछ्छ पुंडीर सब। मिले भीर लष धीर ॥
विनै सीस सब दून वहि। बधि धर रष्षन धीर ॥ छं० ॥ ४४८ ॥
जिहि असिवर झारगय ढरिग। जिन रन सध्यौ साहि ॥
सो सध्यौ सोदागिरह। कारो ग्रब्ब जिन काय ॥ छं० ॥ ४४९ ॥

धीर की मृत्यु पर पृथ्वीराज का शोक करना।

चूक तेक तुथ्थौ सुसिर। उठि कावध वेवग ॥
मिलि चवसह से मारियो। गय प्रथिराजह रग ॥छं०॥४५०॥

बँचौ पत्त प्रथिराज नृप। मन मंन्यो बहु सोक
हम धर अग्गर धीर हौ। सो पत्तौ सुरलोक ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

धीर की मृत्यु का तिथि वार।

अरिल्ल ॥ भादों सेत चतुद्दसि भारी। बर बर धीर गयौ सुषकारी ॥
मानैं महल अषा रिति राजन। करै न महल भृत्त भर काजन ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

तदन्तर राजा का राज्य काज छोड़ कर संयोगिता के साथ रस विलास में रत होना।

दूहा ॥ बरषा रिति राजन बिलसि। मिले जानि रति मेंन ॥
देस भूमि भर छंडि दिय। खबरि न है दिन रेंन ॥ छं० ॥४५३ ॥

इति श्री कविचन्दविरचिते प्रथीराजरासके धीर-
पुंडीर पातिसाहग्रहनमोषन धीर बंधनो
नाम चौसठमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६४ ॥



विवाह सम्यो लिष्यते ।

[पैंसठवां समय ।]

पृथ्वीराज की रानियों के नाम ।

कवित्त ॥ प्रथम परनि परिहारि । राइ नाहर की जाइय ॥
जा पाछै इंछनीय । सलष की सुता बताइय ॥
जा पाछै दाहिमी । राय डाहर की कन्या ॥
राय कुअरि अति रीत । सुता हमीर सुमन्या ॥
राम साह की नन्दिनी । वडगुज्जरि वानी वरनि ॥
ता पाछै पद्मावती । जादवनी जोरी परनि ॥ छं० ॥ १ ॥

राय धन की कुअरि । दुति जसुगोरी सुकहियै ॥
कछवाही पज्जूनि । भ्रात वलिभद्र सुलहियै ॥
जा पाछै पुडीरि । चंद नंदनी सुगायव ॥
ससि वरना सुंदरी । अवर हंसावति पायव ॥
देवासी सोलंकनी । सारंग की पुत्री प्रगट ॥
पगानी संजोगता । इते राज महिला सुपट ॥ छं० ॥ २ ॥

भिन्न भिन्न रानियों से विवाह करने के वर्ष ।

पद्धरी ॥ ग्यारहै वरस प्रथिराज ताम । परनियै जाय परिहार ठाम ॥
पुहकार सुथान जोरी सुकिन्न । नाहर सुषेत परिसुता लिन्न ॥
छं० ॥ ३ ॥

वारमै वरस रा सलख सोय । दिन्नी सुआय इंछनी लोय ॥
आवू सुतोरि चालुक गज्जि । किन्नो सुव्याह परिभाव भज्जि ॥
छं० ॥ ४ ॥

तेरहें बरस दाहिमी व्याहि। दिन्नी सुबहिन चामंड चाय॥
चवदमै बरस प्रिथिराज लोय। व्याही सुसुता हमीर सोय॥
छं० ॥ ५ ॥

हाहुलि हमीर सुतिलक दिन्न। कन्या सुव्याहि उद्धार किन्न॥
पन्नमै वरस चहुआन वीर। बडगुज्जरि परने अति गहीर॥
छं० ॥ ६ ॥

राम साहि की सुता जानि। व्याहे सुन्नपति अति हेत मानि॥
सोलहें बरस सूबा सँपेस। व्याहे सुजाय पूरब्ब देस॥
छं० ॥ ७ ॥

गढ़ समद सिषर जादव पजाय। लिन्नी सुतारूनि विहंसेन षा
सत्तमै वरस हुआन साजि। राय धन की सुता गिरदेव गाजि
छं० ॥ ८ ॥

अठारमें बरस चहुआन चाहि। कछवाह वीर पज्जून व्या
इक मात उदर धनिगरभ सोय। बलिभद्र कुंअर जायै सदोय
छं० ॥ ९ ॥

बरसें गुनीस पुंडीरि व्याहि। चन्द की सुता मुष चन्द चाहि॥
बीसमें बरस चहुआन धारि। ससिबरता व्याये बल बकारि॥
छं० ॥ १० ॥

इकइमे बरस संभरि नरेस। हंसावति व्याये गंजि देस॥
बाईसैं बरस प्रिथीराज पूर। सारंग सुता व्याहे सुसूर॥
छं० ॥ ११ ॥

छत्तीस बरस पट मास लोय। पंगानि सुता व्याये सुसोय॥
रट्ठौरि व्याय चौसठि मराय। पंचास लाष अरिदल षपाय॥
छं० ॥ १२ ॥

इति श्रीकवि चन्दविरचिते पृथ्वीराजरासके प्रथिराज विवाह नाम पैंसाठमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ६५॥

बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

[छाछठवां समय]

रावल समर सिंह जी का स्वप्न मे एक सुन्दरी को देख कर उससे पूछना कि तू कौन है और उसका उत्तर देना कि मै दिल्लीराज्य की राजश्री हूं ।

दूहा ॥ विलसत सुष दिन प्रति नवल । चित्रकोट चतुरंग ॥
सुपनंतर लषि सुन्दरी । सेत वस्त्र मन भंग ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ प्रथा कंत करि प्रेम । जाम इक रही रजन्निय ॥
निद्रा रावर समर । पेषि चहुआन अवन्निय ॥
उज्जल वस्त्र पवित्र । पिनक रोवै पिन गावै ॥
पिनक लियै भर भीर । पिनक अप्पह सतावै ॥
नरलोइ देव देवगना । तू रंभा कहि कित रहै ॥
पहु अच्छ वधू वीरछत्तनी । को तन गोरी सग्रहै ॥
छं० ॥ २ ॥

रावलजी का पृथा से कहना कि अब पृथ्वीराज पकड़ा जायगा और दिल्ली पर मुसलमानों का राज्य स्थापित होगा ।

तब जग्गयौ पृथनाथ । सुपन लह्यौ सु विचारिय ॥
कह्यौ प्रिया एकंत । सुपन पायौ अकारिय ॥
दिल्ली पति गजनेस । करे कंदल घर सट्टै ॥
पकरै जब प्रथिराज । तबह गोरी तन तुट्टै ॥

जोगिनी ग्रहै भंजै सुधर। रैनसीह साकौ करै ॥
म्लेछांह म्लेछ धर भोगवै। इह निहंच हम उच्चरै ॥
छं० ॥ ३ ॥

रावल जी का अपने पुत्र रतनसिंह को राज्य देकर निगम बोध की यात्रा के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ सभा करी रावर समर। बैठे सूर सवान ॥
निगम बोध भेटन सुतिय। चलियै दिल्ली थान ॥
छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ पट्ट काज। रावल पुत्र रतंन ॥
निट्ठ सु रष्षिय हट्ठ करि। घन प्रमोधि परिजंन ॥
छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ निज पट्ट। थप्पि रावल रतंनं ॥
दोहित्तौ सोमेस। अनष भरि कुंभ करन्नं ॥
दष्षिन दिसि संक्रमिय। मिलि यह वसी पति साहं ॥
बिडुर नयर दिय पटें। रष्षिय अनुचरि तिहि ठाहं ॥
वीराधि बीर वज्जाय षग। हनिय वन्न तन करि उतन ॥
इह सुपन रयनि लहि चंद कहि। चलि षुमानगढ का ॥
छं० ॥ ६ ॥

रावल जी का अपने मातहत रावतों को इकट्ठा करके देवराज को गढ रक्षा पर छोड़ना और पृथा सहित आप निगम बोध को कूच करना।

दूहा ॥ सुरज कोट गढ पौलि सजि। नालि गोलि चिहुं दीस ॥
तीरंदाज अमूल भर। रषि चोकी अहनीस ॥
छं० ॥ ७ ॥

षटकोस परिमान गढ। जरध प्रथुलं बाव ॥
सजल सरोवर कुंड भरि। झिरना झरन सुहाव ॥
छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ तिहि वेरा तिहि काल । फटे कग्गर चावद्दिसि ॥
अब्बु गढ जालोर । गए आमद बूंदी दिसि ॥
ईडर गढ गोडवारि । धरा उज्जेन धरज्जिय ॥
रिनथभोर हराइ । साढि चढि तेरह तज्जिय ॥
पष्षेर जीनि सिलहे पवग । साज बाज सब दिष्षियै ॥
नीसान घाव बज्जे निहसि । कोन चितोरह रष्षियै ॥

छं० ॥ ९ ॥

रष्षि थान देवराज । गढ़ चित्रकोट भलायौ ॥
सत्त सहस असवार । अट्ठ ग्रह जाप करायौ ॥
किय डेरा दस कोस । प्रिथा लीनी अप सथ्यह ॥
स्वाति सुकल पष तीज । चल्यौ रावर मनु पथ्यह ॥
हय सहस सथ्थ असवार हुअ । प्रस्थानौ अप्पन करयौ ॥
दस दिवस रष्षि प्रस्थान तें । करें फौजै रह सचर्यौ ॥

छं० ॥ १० ॥

रावल जी की तैयारी और उनकी सेना के हाथी घोड़ों की सजावट का वर्णन।

पद्धरी। सजि चल्यो कटक रावर नरिंद । मानो कि पथ्थ दुरजोध हंद ॥
पचास हाथि सुडाल सथ्थ । मैमत्त चले जनु इन्द्र पथ्थ ॥

छं० ॥ ११ ॥

उम्भारि सुंड झोंडत तेह । मानों कि नाग वन मथ्त लेह ॥
गढ़ पारि भारि पाहार गम । गुजरे भोंर पढ रत्ति भुम्म ॥

छं० ॥ १२ ॥

पगथम फबै तन मेर रूप । सुडाल सेस तिन चढे भूप ॥
उप्पम चंद किरनाल जोति । नव जटित नवग्रह जानि द्योति ॥

छं० ॥ १३ ॥

गिर झरन जा मद स्रवत जात । धज नेज झुम्म घुम्घर घुरात ॥
पट डोरि कसन गजवाग साहि । उपरस्स झूल झमकंत ताहि ॥

छं० ॥ १४ ॥

ढाले सिंदूर सीसह सुलाल। मनु स्याम कूट डारी गुलाल।
तिन देषि शत्रु ह्वोवत विहाल। अरिथट्ट भंजनह रूप काल॥
छं० ॥ १५ ॥

आतस चरित्र अनभंग थान। गज थट्ट बट्ट गिरि चले जानि॥
तिन पुट्टि तुरी पष्षर समेत। रथ सूर जानि आने सुहेत॥
छं० ॥ १६ ॥

उंचास भास परबत समान। ढिल्लै पहार छत्तिय प्रमान॥
षरगोस मधय पुट्ठी सरोज। आछादि वस्त्र अनेक मौज॥
छं० ॥ १७ ॥

धरि एक पलक पल प्रान पील। नाचंत नट मानों असील॥
हाकंत सबद छुट्टंत वाय। हुंकारत तेज मुट्ठी समाय॥
छं० ॥ १८ ॥

(१)अपंम जरित नग जीन जोति। मानों कि सिद्ध उर प्रगटि द्योत॥
पष्षर समत जगमग पलान। मानों कि सघन महि डग्गि भान॥
छं० ॥ १९ ॥

तुरकी ऐराक कच्छी बँगाल। हबसीय गोल नाचंत भाल॥
ताजी सुँग्राम ते धुंधमार। पुज्जै न वान मानै न सार॥
छं० ॥ २० ॥

अनेक जाति अनेक रूप। तिन चढ़े दिग्गवर जाति भूप॥
मानों समंद सरिता हिलोर। मिलि आय जानि बरषा सजोर॥
छं० ॥ २१ ॥

सजि समर फौज अप्पह समान। मानहु, अषाढ जलहर प्रमान
* * * * * * * * छं० ॥२२

कवित्त॥ है षुररज उच्छलिय। तिमिर विफुरिय धुंध पर॥
तरनि रंग रस मिलिय। घोर धुग्घरिय रुहिर सर॥
चष्प जुअल संजरिय। कमल उल्लसिय विमल जल॥
पथिक पयंबल लहिय। मथन धस नेह तुम्भ हल॥

(१) को.—उपम।

जोवति सिंघ अरिदल दमन। नह सुभ्भै करमाल कर ॥
टल टलिय परिथ कपिय सधन। समर पयानौ रभ भर ॥
छं० ॥ २३ ॥

रावलजी का आंबेर में डेरा डालना और जुव्वन गढ के रावत रनधीर का रावलजी का लश्कर लूटने को धावा करना।

कूच कूच करि पैर। प्रथा डोला दोइ सथ्यह ॥
सत्त एक वाजिन। चले उमराव समथ्यह ॥
किय डेरा आमेर। कोस दोइ उप्पर कढ्ढिय ॥
सहस तीस दोइ सथ्थ। जुव्वन गढ़ राया हट्टिय ॥
किन कही वत्त रावर समर। इह राजा चीतोर पति।
तव कही बत्त रन धीर भर। इह अलोच किज्जै सुमति ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ रावर न्रपति। कटक लैहु सव घेरि ॥
जो सही चीतोर पति। तो डेरा आंबेर ॥ छं० ॥ २५ ॥
हुई[1] हूह हलहल हुई। छुटि गयंद मैं मत्त ॥
मानौं मद्धत[2] घन सिघर। चले फौज अनुरत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥

विराज ॥ चढ्यौ मंगि बाज। रिन धीर राज ॥
करी फौज अग्ग। इला मग्ग भग्ग ॥ छं० ॥ २७ ॥
अनमी जुवान। पंचे तीन बान ॥
हुए हीस वाज। चव दिस्सि गाज ॥ छं० ॥ २८ ॥
मनौं अग्ग होरी। दिसा संधि धोरी ॥
चढै अप्प अप्प। मनौं सिद्ध दप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
बजे पग्ग राल। उडै दब्बि नाल ॥
मनौं तुट्टि तार। लग्यौ सेस भार ॥ छं० ॥ ३० ॥
घह लग्गि वान। दब्यौ धूरि भार ॥
बजे सूर साज। गयन सु गाज ॥ छं० ॥ ३१ ॥

(१) मो कूह। (२) क ए घन।

करे फौज तीनं । अगं चित्त दीनं ॥
घटा बंधि फौजं । धरा लेन मौजं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उक्त समाचार पाकर रावलजी का निज सेना सम्हालना ।

दूहा ॥ षबरि भई रावर समर । दोर्यौ पट्टन राय ॥
सह्यौ पहु प्रथिराज कौ । ज्यौं चित्रकोट सुभाइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कह्यौ आइ रावर समर । तब सिर लग्गी झार ॥
को रनधीरह बप्पुरौ । मो सौं मंडै आल ॥ छं० ॥ ३४ ॥
फौज फौज सिलहौं सजी । षह गज्जे घनघोर ॥
कुरिय अप्प रावर चल्यौ । भयौ कुलाहल सोर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
छुट्टे षंभू थान ते । चले मत्त गजराज ॥
दधि फटक्कि फट्टकि गगन । उलटि सुभट जुध साज ॥ छं० ॥३६

रनधीर का अपनी सेना को चक्रव्यूह रच कर रावलजी की सेना को घेर लेना ।

कवित्त ॥ चक्रव्यूह रन धीर । सहस दस बीस दोय सजि ॥
आडंबर बहु करिय । मनों पल्लव भद्रव गजि ॥
दंति सहस बर मत्त । फिरै चावद्दिसि बिंध्यौ ॥
चित्रकोट कमध । नरिंद । जानि जस सौं जम जुध्यौ ॥
दंताल देत लग्गा भिरन । मानो कट्ट कबार किय ॥
बिच फौज हक्कि रनधीर मुष । जानि बाज तीतर परिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

रावलमीर रनधीर का युद्ध, रनधीर का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ उठे वीर [1]बद्दे बके थान यानं । जगी जोग माया सुरं अप्प मा
जगे भूत वेताल भूसाल पद्दं । भिरे एक जामं बिहद्दं सु हद्दं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
बजे तार रनतूर षग्गं उनंगं । तिनं वेर कमधं रमै रोस रंगं ॥
षलक्कंत ओनं बहै रत्त धारं । सिरं हत्थ ईसं उडै तुट्टि सारं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो.- वद्द ।

हहकत कूदत नचै कमधं । कडकत वज्जंत छुट्टंत सध ॥
[1]लहकत लूटत तूटत भूम । भुकते धुकंते दोउ वथ्थ भूम ॥
छं० ॥ ४० ॥

दडक्कत दीसत पीसत दंत । करी कन्ह केली परे सूर पंत ॥
गयौ कन्ह चालुक्क अग्गैं उतंग । रिन धीर वाही लगे कध पग्ग ॥
छं० ॥ ४१ ॥

लगी नाग मुष्षी छती पुट्टि फारे । पर्यौ धीरषेत सु चंद उच्चारे ॥
परे सेन चालुक सथ्थ समथ्थ । भरें अच्छरी आनि अनेक रथ्थ ॥
छं० ॥ ४२ ॥

कँहा आय मुछी लग्यौ धारभार । परे सत्त तोंवार चितोर सार ॥
परे चालुक सेन थट्ट सुथट्ट । परे सत्त तीन विय पानि लुट्ट ॥
छं० ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सथ्थ रनधीर । भजि सेना चालुक्की ॥
तीन सत्त धर परे । आनि लग्गी तन भूकी ॥
सौथ्यौ रन सीसोद । कन्ह पट्टे व धाय ॥
प्रथा कत हूअ जैत । सषी सुगतान व धाय ॥
दै दास सथ्थ अप्पन सुपर । वीस रोज मुकाम किय ॥
जिन धाव अग लग्गे भरन । तिनह सीष चित्रकोट दिय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

संयोगिता के प्रधान का रावलजी को दस कोस की पेशवाई देकर लेना और निगम बोध पर डेरा देना ।

कन्ह लयौ अपसथ्थ । चले दरकूच महाभर ॥
कुसल हुई सब सथ्थ । गयौ जोगिन प्रथ्थावर ॥
सजोगिता प्रधान । आय समुह दस कोसह ॥
कोस पंच सामंत । पुच्छि परिगह आलोचह ॥

(१) ए कृ को हलक्कन ।

डेरा कराय तीरथ्थ तट । निगम बोध भें थ्यौ तवह ॥
भुत्तिय बधायौ थाल भरि । करि आनंद ईछिनि जवह ॥
छं० ॥ ४५ ॥

रावलजी का सब आदर सत्कार होना परंतु पृथ्वीराज तक उनकी अवाई की खबर तक न होना ।

लई प्रथा मधि राज । सुधि न पाई प्रथिराजह ॥
तीन सत्त सुभ नारि । सषी मनमुत्ति सु साजह ॥
संजोगित परधान । दियौ सीधौ उमरावह ॥
सत्त तीन भरि छाब । चली कनवज्जनि धावह ॥
चौडोल केक रथके अरुहि । बहिल केव तुरियन चढिय ॥
मानों कि देव इंद्रानि लै । रूप भाग सबगुन बढिय ॥
छं० ॥ ४६ ॥

संयोगिता के यहां से दासियों का रावलजी के डेरे पर भोजन पान लेकर जाना ।

दूहा ॥ करि मंजन रंजन बहुल । सुरंग अगर घन सार ॥
नवला अंजित नयन जुग । कनक षंभ मनितार ॥ छं० ॥४७॥
बस्त्र अनेक सुरंग तन । दमनक [1]सायह लाय ॥
जरि जेहरि पाइन जरिय । सजि भूषन षोड़साय ॥ छं० ॥ ४८
लघु नराज ॥ रजंत भूषनं तनं । अलक्क छुट्टयं मनं ॥
सुचंद मुष्ष रागिनी । मनो बदन्न नागिनी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
उवट्टनं स उज्जलं । सुरंग रत्ति मज्जलं ॥
सुधा सुसेत दिष्षही । सु रोमराइ पिष्षही ॥ छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-साषह ।

मनों कि गंग भारथी। सुभान चक्र सारथी ॥
अभूषन विराजय। ग्रहंत रत्ति सोजय ॥ छं० ॥ ५१ ॥
पगं जराइ जेहरं। मनों कि भद्द मेहरं ॥
गंठीस लग्ग सथ्थही। सुपिंड पानि रथ्थही ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सुमेषला सु कट्टयं। अनंग सु राज घट्टयं ॥
ग्रहं नपिंच मंडयं। दुकंत राह छंडयं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
सुहार कंठ सुम्भई। सु मेर गंग सुम्भई ॥
बैरष्ष बाहु बंधयं। सु सोप सेस गंधयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
जरित्त चूरि फुंदिनी। सुमेर ज्यौं फुनिंदिनी ॥
विराज कंठ दोवरं। कि गंग मेर ओवरं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
सुहथ्थ गुंथि वेनियं। कि दीपमाल रेनियं ॥
वरथ्थ अट्ठ अट्ठयं। सवक्क हंस तट्टयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
चढी चौडोल अंबरं। मनों कि मेघ घुम्मरं ॥
चली सु अग्ग पच्छयं। इंद्रानि आनि कच्छयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
पचीस छाव अंबरं। असीस मुक्कली भरं ॥
मिष्टान छाव सट्टयं। अनेक रंग मिट्ठयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
बतीस भांति मसयं। सुसादि सुद्ध असयं ॥
सुरभ तीस कट्टयं। कपूर भार पट्टयं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
जवादि केसरं सुरं। पलं सु सत्त अंतरं ॥
हजार तीन झूनयं। बतीस छाव दूनयं ॥ छं० ॥ ६० ॥
पंचास सत्त छप्पियं। कपूर पान डप्पियं ॥
जराव जेब सट्टयं। जैचंद पुत्ति पट्टयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दासियों का रावल जी से संयोगिता की असीस और शिष्टाचार कहना।

दूहा ॥ सषी सकल उत्तरि चली। पंकति करि सब सथ्थ ॥
छत्र धर्‍यौ चित्तौर पति। आय पडी रहि तथ्थ ॥ छं० ॥ ६२ ॥
गाथा ॥ संजौगिता असीस। मुकलिय राज चित्रकोट ॥
अति सनमान जगीस। आइय भाग अम्हाई ॥ छं० ॥ ६३ ॥

रावलजी का सखियों का आदर करना और उनसे पृथ्वीराज का हाल चाल पूछना।

दूहा ॥ आदर सषी अनंत किय। कहौ दिल्लियपति मग्ग ॥
च्यार मास संजोगि ग्रह। [1]सुष विलसै नित प्रग्ग ॥ छं० ॥ ६४ ॥

सखियों का रावलजी को सविस्तार सब बीतक सुनाना।

कवित्त ॥ हाव भाव वग्गुरि विथार। विनय षुंटी अति ढुक्किय ॥
कुचंतरिया दुहु पष्प। मूल चष्ष हरती छुट्टिय ॥
[2]हांकी अहर सुरत्त। लियौ संभर पति धेरिय ॥
छुट्टे सब परिवार। कहै संभरि पति चेरिय ॥
संभलै वत्त रावर समर। है हथ्थी परिगह सुभर ॥
दरबार राज भय भीति दिषि। बहु [3]लिह्नौ पतिसाह धर॥छं०॥६५॥
धर लीनी भेहर। परयौ बंधह पग्गारह ॥
लूटि सहर लाहौर। गए द्रब कोरि अपारह ॥
दुह कीनी पुंडीर। हयौ सौदागिर धीरह ॥
बेरी चावंड राय। राउ भोंहा गँग तीरह ॥
माल दे मौति देवराज गय। हाहुलि फिरि बैठौ हियै॥
जादवन सेन संभी भिरै। दिल्लीसर मध्ये हुवै ॥ छं० ॥ ६६ ॥
जे विपरीतह देषि। हुए राजान समथ्थं ॥
जे गिरिवर न छिपंति। हुए धरपति सिर छत्तं ॥
जे डरि देते दंड। तेन फिरि दंड नगौरह ॥
वल्लोची बल राए। ढुरै सिर उप्पर चौंरह ॥
गोरी नरिंद दस लष्ष हय। संभरि पति सल्लै हियै ॥
पंचास दून दोबीस घटि। सो कनवज्ज गहुगहाइयै ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हयौ बान कैमास। सूर कनवज्ज गहुगाये ॥
चौ अग्गालिय सट्ठि। सट्ठ पंगानी ल्याये ॥
पतिकुल पिता संघारि। म्लेच्छ सुष हुओ ततच्छिन ॥
मतै गयौ कैमास। सुहौ दिल्लिय धर रष्पन ॥

(१) मो.-सुख विलसत हुअ नित्त। (२) ए. कृ. को. कहा। (३) मो. लिन्निय।

दरवान नही सिर ¹लच्छिया। मरद भेष मिहरी रहै॥
संतान भाग अवग्रह ग्रहै। धर गोरी छत्री दहै॥ छं०॥ ६८॥
चावंड वेरी घात्त। कित्ति योई रस लड्डौ॥
थट्टा पगुर देस। साहि कोरी धर पड्डौ॥
रजनी ठग दिन ठग्ग। सुचित दुचिता संसारह॥
इह गोरी तन रत्त। अहो गोरी धर नारह॥
अवधूत धूत नागिनि डस्यौ। विष लग्गौ लोरं लवन॥
रहते सु असु रष्यौ नहो। भई वत्त तीनो भुअन॥ छं०॥ ६९॥

उक्त समाचार सुनकर रावलजी का शोक प्रगट करना।

दूहा॥ सिर धुन्यौ रावर समर। दई सीष सब नारि॥
पानि कपूर सु हथ्थ दिय। कहि संजोग जुहार॥ छं०॥ ७०॥

पृथा का रानी इछनी के साथ रहना और जैतराव का रावलजी की खातिरदारी करना।

पृथा रेनत इछिनि महल। सुख विलास मिलि जोग॥
भ्रात चरित्तह दिष्षि सब। लग्यौ मन्न संयोग॥ छं०॥ ७१॥
कवित्त॥ जैतराय पम्मार। करिय मनुहार चित्रपति॥
मधुर सु मेवा अनत। मस मिष्टान अजब भति॥
सीधौ मन सैं पच। साक पल्लव तैला अम॥
दही दूध अनपार। घृत मन असी अनोपम॥
ऐराक बस जीनह जरे। भरी छाव बिधि बिधि भली॥
पहु चाय निगम रावर समर। हुई जैत अप्पन वली॥
छं०॥ ७२॥

कुमार रेणसीजी का सब सामंतों सहित रावलजी के लिये गोठ रचना।

दाहिम्मै चावंड। करी मनुहारि सवन भर॥
एक पुरगम अच्छ। फेरि मुह अग्गैं रावर॥

(१) ए कृ को. लांछया।

बलिभद्रह कूरंभ। इन ऐसो अहारै ॥
अर उजवक हय एक। ढिल्लि अंठुनि गिरि डारै ॥
रामदे राव षीची प्रसंग। जामानी जद्दव बलिय ॥
पमार सिंघ इत्ते सुभर। इन सु गोठि छत्रपति कलिय ॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ [1]रेन कुंअर गोठह रचिय। विविधि भांति सब नूप ॥
सुरंभ धृत सीधो सधन। कीनौ जीमन भूप ॥ छं० ॥ ७४ ॥

गुरुराम का रावलजी को आशीर्वाद देना और कवि चंद का विरदावली पढ़ना।

पद्धरी ॥ सामंत सबन मनुहार कीन। प्रोहित्त राम आसीस दीन ॥
हर सिद्ध दिस बरदान भट्ट। उच्चर्‍यौ चंद पेषै सुथट्ट ॥
छं० ॥ ७५ ॥

दुह, पष्ष चवर सिर धरिय छत्र। बरदाय देत आसीस तत्र ॥
उट्ठ्यौ सिंघ बरदाइ देषि। बोलंत बिरद बहु विधि विसेषि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

चीतौरराइ काइम्म कीन। षुम्मान पाट पग अचल दीन ॥
मेरगिरि सरि चित्तौर मानि। किरनाल तेज बढ़ै षुमान ॥
छं० ॥ ७७ ॥

जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मांनो कि गुरग [2]तनु मोर पीन ॥
कालकियां राय केदारराय। कब देत बिरद मनु उमँग चाय ॥
छं० ॥ ७८ ॥

पापियां राइ प्राग्वट समान। कम्मन दरिद्र करतार आन ॥
हित्यार राइ कासी अभंग। मदुआन राइ गंगा उतंग ॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुरतान मलन बंधन समोष। हिंदून राइ टालंन दोष ॥
उज्जैन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ [3]जुष्टरह वथ्थ ॥
छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-रेनं कुवरं गोठ सुकरिय। (२) ए. कृ. को.-जनु। (३) मो.-युजिष्टरह।

भीमग राइ भजन सुपेत। जस लयौ धवल राजिंद जैत ॥
रिनथभ राइ सिर दंड कीन। अबुआ राइ गड लेइ दीन ॥
छं० ॥ ८१ ॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ। सोपन सरीर प्रथिराज सथ्थ॥
दष्यनी सोहि भजन अलग्ग। चदेरि लिहि किय नाम जग्ग ॥
छं० ॥ ८२ ॥
दूहा ॥ जग ऊपर जगदीस गनि। मृत्तलोक दिल्लेस ॥
कै तू फुनि चित्रग पति। आहुट्टमो नरेस ॥ छं० ॥ ८३ * ॥

रनधीर को परास्त करने के लिये कवि का कन्हा को भी बधाई देना।

गाथा। कन्हा दिया आसीस। सथ्थौ रनधीर षेत पै रडै ॥
अट्टा अट्ठावीस। पग्ग तेजाय तेजर तुट्ठ ॥ छं० ॥ ८४ ॥
असि गह मद्दर वार। भार सेसाइ सेस फनि झूद ॥
विम्मूत अनपार। समवर कारसार समर रावरय ॥ छं० ॥ ८५ ॥

रावलजी का कविचंद से चद्रवश की उत्पत्ति पूछना और कवि का इला और बुध का इतिहास कहना।

कवित्त ॥ रावर पुच्छिय समर। सोम रवि वंस प्रकार ॥
बरनि कहिय कविचद। कथा मंडे विसतार ॥
एक समय बन पंड। सपतरिषि गये रमते ॥
उमया शकर तहा। देषि रसकेलि करते ॥
लाजंत उअर मुनिवर फिरिय। श्राप दियौ सिव मन कुरषि ॥
त्रिजियौ सहित आवंत इहा। मे दीं मोहिनि अनि पुरष ॥छं० ॥८६॥
मारतंड सुत मंड। जग्य मंडाय पुत्रकाजि ॥
राजलोक परछन। देत आहुति सो किं दुज ॥
प्रगट कुंड कन्यका। देषि वाचिष्टति वार ॥
फेरि मंत्र तप जोर। करिय दसमन्न कुमार ॥

* छं० ८३ मो प्रति में नहीं है।

षेलत सिकार इक दिवस वह। महादेव कौवन गयौ॥
कहि चन्द आप भेटै कवन। पुरषा तन तें त्रिय भयौ॥छं०॥८७॥
काम सुबद्धि बुद्धि। देषि चषि रुप छल्लिय घर॥
संभलि रिषि वाचिष्ट। बहुत करि अस्तुति अंकर॥
प्रसंन होइ बर दियौ। पिता घर होय कुआरं॥
फिरि तिय की तिय होय। बुद्ध घर जाय जिवारं॥
इक इक मास की अवधि करि। दुअसु पतंगा रष्षि हम॥छं०॥८८॥
बुध अंस चद्र बंसह भयौ। दस मन सूरज वंस क्रम।

रजपूत शब्द की उत्पत्ति।

दस हजार श्रमवंत। रिषि त्रिय ढंकि धरची॥
फरसराम कौ करत। वार इक वीर न षिची॥
कासिप को ले दियौ। उदकि सारौ महि मंडल॥
तपन तात पन छंडि। गयौ मन ग्रहै कमंडल॥
वसुधा विचार तब कट्टि। निज रक्षा कारन थपिय॥
उतपन्न सुतन तिन के सरज। दिष्षि नाम (१)रजपूज दिय॥
छं॥ ८९॥

रावल जी का कवि चन्द को दान देना॥

मैदा मन पंचास। वीस मन वेसन दीनौ॥
मंस जाति बहु भंति। जमन तट भोजन कीनौ॥
आटा घृत्त अप्पार। षंड गुर सक्कर भंती॥
जैयोषान जिहान। दई हथ्थनी इक तत्ती॥
मनुहारि परग्गह सवन करि। भांति भांति आदर करिय॥
पहुंचाइ समर रावर सुवर। अप्प घरघर विथ्थरिय॥छं०॥९०॥
दो हथ्थिय तरिवार। तुरिय ऐराक अच्च गल॥
कंचन जरित पलान। एक जोजन मभ्भफ पल॥
हथ्थी संघल दीप। एक जमदड्ढ अमोलं॥
जर जर कसि सिर पाव। साज साकत्ति समोलं॥

(१) ए.-को.-रजपूत।

पहुचाय चंद भट्टह सुवर। कीरति कलिजुग विस्तरिय॥
चित्रकोट राव दीनौ इतौ। रही कलिज्जुग [1]वत्तरिय॥छं०॥९१॥

वनवीर का कवि को एक हथनी और दो मुदरी देना।

दूहा॥ वनवीरह परिहार दिय। हथिनी एक सुरंग॥
मोती माला सघन जल। [2]द्वै मुदरी सुचंग॥ छं०॥ ९२॥

रावलजी का शंक्रांति पर गुरुराम को एक गांव देना।

सूरजि भई संक्रांति जब। प्रोहित दीनौ राम॥
लष्यह न किसनारपन। दिय कारुडौ नाम॥ छं०॥ ९३॥

गाथा॥ दिन प्रति दीजै दानं। सठह नाय परचय काज्ज॥
दोय पहुर मिलि थट्ट। गइ मह दरवार भट्ट चारनय॥
छं०॥ ९४॥

इह रावर उनमान। भान उग्गाइ दिज्जियै दान॥
दिन प्रति दीजै धान। इह दिट्ठ न कथय काष्ठी॥ छं०॥ ९५॥

दूहा॥ [3]भुजाई रावर समर। आवै वरन अठार॥
नह को पुछै अप्प पर। दिज्जै अन्न अपार॥ छं०॥ ९६॥

रावलजी का इक्कीस दिन निगमबोध स्थान पर वास करना।

निगमबोध रिष वासकिय। रावर समर नरिंद॥
हुए द्योस इकईस तहां। पंच सहस भर हंद॥ छं०॥ ९७॥

पृथा का महलों से रावलजी के डेरों पर आना।

द्विवस चयथ्थै राव रह। आवै प्रथा इकंत॥
वासुर दोइ वासै रहै। परी भ्रान्त मन चिंति॥छं०॥ ९८॥
अति सुख सकुल वरस तिय। रित रितिए आचार॥
विलसत दिन ग्रीषम अधर। सुपनौ राजन वार॥ छं०॥ ९९॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक सुंदरी को देखना।

कवित्त॥ निसा एक माधव सु मास। ग्रीषम रिति आगम॥
निसा जाम पच्छलौ। सुपन राजा [3]लहि जागम॥

(१) ए कृ को-विस्तरिय। (२) ए कृ को मोलाइ। (३) ए कृ को माहि।

सेत चीर छौनी। पवित्र आभ्रंन अलंकिय ॥
मुँकत बंध चाटंक। बंध बेनी अवलंकिय।
निज बैरि धारि कज्जल नयन। हर हराह सहह करिय ॥
मानिक राइ वंसह विषम। रष्षि रष्षि धरनी [1]धरिय ॥छं०॥१००॥

राजा का पूछना कि तू क्या चाहती है। सुन्दरी का उत्तर देना कि "वीर पुरुष" ॥

साटक ॥ का तूं सुंदरि हुंधरा किमहिता। इच्छा परा वांछिता ॥
को वांछा बर राज कोवर रुची दाताग्य रूपानिवा ॥
नं नं नं न्नप जान दानरुचयं रूपं न विद्धी त्रयं ॥
षड गंधार सुमार दुत्तर अरी सो मे वरं सुंदरं ॥ छं० ॥ १०१॥

दूहा ॥ इम वसुधा सुपनंत दिय। रजगति रजन विचार ॥
विलसत दिन ग्रीषम अरध। सुधपिय पंग कुआरि ॥छं०॥१०२॥
रष्षि रष्षि उच्चार वर। गति सिंघल अतिरूप ॥
सुपनंतर चहुआन सों। चलन कहत इल भूप ॥ छं० ॥ १०३

उसी समय पृथ्वीराज की नींद खुलना और देखना कि प्रभात हो गया है।

धरकि चित्त जोगिनि न्रपति। दिषि प्रभात दुति गान ॥
भान किरन दिसि दिसि फटी। तम घटि तमचर गान ॥
छं० ॥ १०४ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को स्वप्न का हाल सुनाना।

कवित्त ॥ जग्गि जलनि प्रथिराज। जग्गि संजोग सुपनि कहि ॥
सो सपनंतर जंपि। पत्ति दिट्ठी जु रत्ति महि ॥
सेत वस्त्र उत्तंग। चित्त हरनी कुटिला गति ॥
बैसम गुन गुर दुत्ति। दुत्ति उजलंत कुटीरति ॥
ऊंचै बचन्न बर कठिनह। घन कुलटा गति चलन कहि ॥
भव भविस गत्ति न्निग्यान कहि। नन जानै भव गतिय बहि ॥
छं० ॥ १०५ ॥

(१) मो.-ढरिय।

सयोगिता का उत्तर देना कि यह सब हुआ ही करता है।

सुनि सुकत धरइ द । जोय दिठ्ठौ जुग्गिनि गति ॥
पुत्त मित्त दारा न व ध । रोकन पितुरनि पति ॥
दिष्टमान रोके प्रमान । चच्छि अछनि लच्छि कुछौ ॥
भोग विना व धि जगत । अम्मवय जग चय तुछौ ॥
मोयाति नट्ट ससारनिय । न्रिप नच्चवि मुक्के जगत ॥
जीवन्न प्रान प्रापति जबसु । तब लग इह भावी विगति ॥
छ० ॥ १०६ ॥

पुन दंपति का केलिक्रीडा में प्रवृत्त होना।

मुरिल्ल ॥ ह सि आलिगन दै चहुआन । पिय मयूप दपति रसपान ॥
सुरत सुरत मन बर मत्त । करहि सारससार सुरत्त ॥ छ० ॥ १०७ ॥

रसकेलि वर्णन।

हनुफाल ॥ बर सुरत रत्त सुचद । दुहु वढे आनँद कद ॥
इह बुल्लि रसमुप वाल । बर कहत ओपम साल ॥ छ० ॥ १०८ ॥
समिभोम कछ्छी रोस । मनु उदित भय ससि सीस ॥
मुपश्र्व द विद विराज । कविराज ओपम साज ॥ छ० ॥ १०९ ॥
कै किरन उलससि कुट्टि । कै ठौर मनमथ छुट्टि ॥
कसि कासमीर निबंध । बर अग्र ओठ सुचद ॥ छ० ॥ ११० ॥
बर चित उपम बिसाल । उडि चलन मगल वाल ॥
कुच अग्र स्रग मद विद । रस वढे आन द कद ॥ छ० ॥ १११ ॥
भुकि वमल वैससि बाल । अलि लै उडी जनु बाल ॥
कुच छुट्टि छुट्टि सुमग्ग । कुसमेष सीप विलग्ग ॥ छ० ॥ ११२ ॥
दुति होत कविन झकोर । बग उडै घन जनु कोर ॥
पिय मेन नेन सुरत्त । तिन मक्षिक बाल सुगत्त ॥ छ० ॥ ११३ ॥
प्रति व्यव ओपम मीय । जनु सीय से हसि दीय ॥
रति निद्र रतिवर वीर । रति रयन रयन समीर ॥ छ० ॥ ११४ ॥

(१) मो कुछ, तुछ।
(२) ए कृ० का०—भुकि कमल वैस विसाल

अरिल्ल ॥ अवसर प्रीति बढ़ी रसपानं । कहि बर दूत सुनी सुलतानं ॥
सुनि बर गोरिय साहि नरिंदं । भईय गत्ति ढिल्लिय छिन मंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

पृथ्वीराज की इस दशा का समाचार पाकर शहाबुद्दीन का अपने सरदारों से सलाह करना।

दूहा ॥ मति छीनी ढिल्लिय तनी । सुनिय साहि चहुआन ॥
दाव न चुक्कै अप्पनौ । दुअन सौति उरगान ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ बोलि षान षुरसान । बोलि गोरि ततार बर ॥
षां रुस्तम षीरोज । सेन ढिल्ली चरिच वर ।
बार बेर गहि मुक्कि । दीन में दीन कहायौ ॥
चहुआना जुरि नीर । मन्न मंती गह छायौ ॥
जौ होइ गोर गोरी यहां । तौ तोसल नन भग्गही ॥
चहुआन बंधे बंधन जुरां । सो दिन पंथ तु लग्गही ॥
॥ छं० ॥ ११७ ॥

यह सलाह पक्की होना कि दिल्ली को दूत भेजकर पूरा हाल जान लिया जाय तब चढ़ाई की तैयारी की जाय।

सुमति सुरत्ती साहि । धाइ बंध्यो चहुआनं ॥
सोई मता किज्जियै । बोल पच्छै नत आनं ॥
सुभ्रम निभ्रम बीर । बोलि विभ्रम परिवानं ॥
और सुकति सुलतान । जहां ढिल्ली परधानं ॥
तत मत्त बत्त बर संग्रहै । अरु हिरदै भेदै छिनह ॥
इन कहै साहि चतुरंग सजि । तब अरि ग्रहन विचार कह ॥
छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली को गुप्त चर भेजना।

तब सु साहि गज्जनै । दूत ढिल्लीय पठाए ॥

जु कछु तत को मत। ¹अत कहि कहि समुझाए ॥
लै आवहु जगल नरेस। पब्बरि सब सुझिय ॥
राज काज चहुआन। सकल सामत सुबुझिय ॥
फुरमान साहि सिर धरि लियौ। भेष कियौ सोफी तिनह ॥
उभै पष्प क्रम प थह चलै। कागर काइथ ²कर दिनह ॥ छं०॥११९॥

दूत की व्याख्या।

दूहा ॥ साम दान अरु भेद दंड। ए च्यारों विधि आइ ॥
जान पनै सोइ दुत कहि। काम करै सुपदाइ ॥ छं० ॥ १२० ॥

दूतों का दिल्ली पहुँच कर धर्मायन के द्वारा सब भेद लेना।

गाथा ॥ चर वर विवरित सुद्ध। लिद्ध चहुआन राजधानीय ॥
सग दूत पथान। गोरीय जष्य जानामि ॥छं० ॥ १२१ ॥
बचनिका ॥ धर्म्माइनं काथथ पै पबरि पाए। तबहि दुत गज्जन को आए ॥
तिहि दिन सुरतान आराम करि आनि घरे रहै। ततार षा सो बातै कहै।
बहुत रोज कहु और न आई। कछु दिल्ली की पबरि न पाई ॥
तब ततार पान कहत है। पातिसाह कछु बात गुझ है ॥

बहुत दिनो तक दूतों के वापिस न आने पर शाह का चिंता करना।

सुरिल्ल ॥ चर चर चित्त चहुआन। ध्यान चित्ति ढिल्लीय चहुआन ॥
बुझे साहि ततार बुलाई। अजहू दूत गज्जन न आई ॥
छं० ॥ १२२ ॥

ततार खा का उत्तर देना कि दूत के लिये देर होना ही शुभसूचक है।

श्लोक ॥ चिर जोगीश सिद्ध। चिर वध प्रधानक ॥
चिर सेवक साधर्म। चिर दूतस्य लक्षणं॥ छं० ॥ १२३ ॥

(१) ए कृ को—वत। (२) ए कृ का दिन करह।

चिरं तपो फलं दाता। चिरं राज फलं प्रभो ॥
चिरं नाम धनी दाता। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ इन लच्छिन तसकार सुलभ। तस पर दूत वसीठ ॥
रति दृग हंदग कुसल भल। कर बंधेन घसीट ॥ छं० ॥१२५॥

नीति राव कुटवार का राज समाचार शाह को लिख भेजना।

नीति राव कुटवार दर। नहि निवसै उन रीति ॥
सुमिलि साहि कागद दियै। लिषि दरबारह नीति ॥छं०॥१२६॥

प्रथम दूत का दिल्ली का समाचार कहना।

ए गज्जहां सुरतान सों। कहि षिन षान ततार ॥
प्रथम पहुर संभ्रम सुचर[1]। दर बोल्यो कुटवार ॥छं०॥ १२७ ॥

बचनिका ॥ प्रथम पहर बह्या, संभ्रम दूत आप षड़ा रह्या।
सलाम लह्या, दिल्ली के चरित्र कह्या ॥
पातिसाह पहिलौं सैं तान बड़ै, राजा हुंआ रति चढ़े ॥
छं० ॥ १२८ ॥

था ॥ षैरी दं सुलतानं। दुसमन दैवान महलह थानं ॥
भर सहरत्त बिरत्ता। आघातं गोरियं साहिं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

बित्त ॥ एक समै हम्मीर राइ। दरबार सपन्नौ ॥
पिथ्थौरा चहुआन। हथ्थ संजोगि बिकन्नौ ॥
नथ्थि बाज गजराज। सुनर भेषह बर नारिय ॥
मार मार उच्चार। लहरि लकरि सिर रारिय ॥
हाइ हाय दिसि सब्बे[2] हुअ। धुअ समान सुगार धुरह ॥
हरि द्रुग्ग द्रुग्ग मुष उच्चरिय। जिन दरोग गंठे डरह ॥छं०॥ ३०

दूहा ॥ इह चरित्र पिष्षै सुचर[3]। लग्गो गज्जन राह ॥
नाम सुसंभ्रम सुभग ते। कही सहि सों जाह ॥ छं० ॥ १३१ ॥

(१) मो.-चर।
(२) ए. कृ. को हूअ सब्ब। (३) ए. कृ. को-दंषे बिचर।

भर अवध अड्डिय महल । रति बढ़ि घटि अहिसार ॥
विप्परीति दिल्लिय सहर । न्रपति अलुभ्यौ मार[1] ॥ छं० । १३२ ॥

दूसरे दूत का समाचार ।

वचनिका ॥ दूजा पहर वह्या । विभ्रम दूत आय परा रह्या ॥
सलाम लह्या । दिल्ली का चरित्र कह्या ॥ ते कहा चरित्र ॥
गाथा ॥ भग्गीवा सुर सधी । बधे पेमाइ लज्ज लो पाना ॥
अप्पा पर न गनिज्जै । जानिज्जै राज मजाई[2] ॥
। छं० ॥ १३३ ॥

कवित्त ॥ जानिज्जै सुविहान । राज भज्जै राजानी ॥
दर द्वै गै भर नथ्थ । तेज भग्गी चहुआनी ॥
बासर सधि विसंधि । नीति भग्गी ढिल्ली वै ॥
जानिज्जै सु बिहान । होइ हिंदवान सुद्दे वै ॥
लज भग्गी प्रेम बढ्ढे बरह । दइ दुज्जन महलैं ग्रसै ॥
चहुआन चरन सेवन सुबर । नीति राव अप्पन बसे ॥
छं० ॥ १३४ ॥

तीसर दूत का समाचार ।

वचनिका ॥ तीजा पहर वह्या । विभ्रम दूत आय परा रह्या ॥
सलाम लह्या ॥ दिल्ली का चरित्र कह्या । ते केहा चरित्र ॥
गाथा ॥ हिन्दू सथन सुदुष्ष । सुष्ष सोहाव गोरिय साहि ॥
राजनं विषम चरित्र । सामता रोजन रोज ॥
छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ रोज रोज सु विहान । घेर सामंत ग्रेह धन ।
सामि निद उच्चरै । सामि निन्दा न सुनै कान ॥
भर अरत्त साई । विरत्त गोरी सुलतानं ॥
सभ्भ रूप संजोगि । गिल्यौ चहुआन सुभान ॥
विपरीति वत्त ढिल्लिय सहर । राज नीति भग्गी रस ॥

(१) मा-उलझ्यो नार। (२) ए कृ को भज्जाई।

पंजाब पंच पंचै सुपथ । चिंति तथ्य गोरी वसं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

चौथे दूत का समाचार ।

बचनिका ॥ चौथा पहर कह्या । विसास दूत आइ पग रह्या ॥
सलाम कह्या । ढिल्ली का चरित्र कह्या ॥ ते केहा चरित्र ॥

गाथा ॥ गाडंडूर उडंडा । जोह गरुवार मरद हरु अंदा ॥
धुनि धुनि सह सामंता । चावंड वेरियं वधे ॥ छं० ॥१३७ ॥

दूहा ॥ त्रिया राज बसिवौ नहीं । बसिवौ नह बहुराज ॥
बालराज बसिवौ नहीं । कहै घर घघर आज ॥ छं ॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ जिन कंधै ढिल्ली नरेस । कंध जिनके ढिल्लिय पुर ॥
जिन कंधै लगि राज । अग्ग अग्गुरा बहुन धर ॥
मान तुंग वर अग्ग । मिग्गि कनवज्ज जुझाए ॥
चौंसट्टिन मुक्कि कै । भागि जोगिनि पुर आए ॥
चहुआन सुबर जानै नृपति । सो बल मग्गौ माहि सुनि ॥
चादर सु अप्पि गोरी सुबर । पंच देस पंजाब धुनि ॥छं०॥ १३९ ॥

शाह का पीर को चादर चढाकर दुआ मांगना ।

बचनिका ॥ जमा सुविहानं । शाहब दी सुलतान ॥
पैगंबर परवर दिगार । इलाह करीम कवार ॥
सुलतांन जलाल सिकंदर जाया । सुलतान साहबदीन अलह उपाया ।
मुसलमान महति । दीन भीमहति ॥
इतनी कही कहन लागे । पातिसाह साहाबदीन आगे ॥
अपर पराये टरे । सैतान परवरे ॥
सानंत मन जरे । चावंड राइ भी वेरी यौं भरै ॥
कूरंम कुल संकोडा । परिगह पास छोडा ॥
पांमार परि गनाई । हाहुलि परिहांम जनाई ॥
राउ जैतसी पास मेहर । छुट्टा । पुंडीरों लाहौर लुट्टा ॥
राउ भोंहा दुनिया मुक्की । राउ माल दे मौत चुक्की ॥

देव राज दीवान छडया। आदवों वैर मडयो ॥
पलकं आलम आलोई। जीवतै चहुआन वोई ॥
दसोही दीसा जीती। कनवज्ज कहर वीती ॥
हजरत षुदाइ पेल। असि मरदान मेल ॥
बरन बरन घेरी। बहलौं पति नेरी ॥
धु आसाहि साहाव साहि। दिजियै चादर उचाय ॥

शहाबुद्दीन का चढ़ाई के लिये देश देश को परवाने या पत्र भेजना।

दूहा ॥ चर चर वत्तति सिद्ध किय। झकि किय घाव निसान ॥
सत्त सहस कग्गर फटे। देस देस सुरतान ॥ छं० ॥ १४० ॥

वचनिका॥इतने मुलकन कों फुरमान फाट्ठ। नौवी मदा ठौर ठौर बैठक ठट्ठे
फुरमान पेस कदलिवास। वोलास देस गोह पधार ॥
गष्षर गिरवोन षुरासान मुलतान। भटनैर भष्षरवोन ॥

शहाबुद्दीन के चढाई करने का समाचार दिल्ली में पहुचना और प्रजा वर्ग का अत्यंत व्याकुल होना।

दुहा ॥ फट्टिय वत्त प्रचार चर। घर घर ढिल्लिय थान ॥
चल्यो साहि चहुआन पर। चढि हय गय असमान ॥छं०॥ १४१॥
चढि आवत ढिल्ली सहर। चल्यौ साहि सुरतान ॥
घर अगन मगन हरिग। सुनत सूर अकुलान। छं० ॥ १४२ ॥
ग्रह बभन ग्रहवान नर। ग्रह छत्री छह छत्र ॥
भई वाति नर नारि सुष। सब लग्गै सन सत्र ॥ छं० ॥ १४३ ॥

कवित्त ॥ सुक्रम साहि वानैत। आय गज्जन सपत्ते ॥
तिन कग्गर हथवार। आइ उत्तो दूत तत्ते ॥
सेत दुती रविवार। वार गुरु तेरह तत्ते ।
चल्यौ साहि साहाव। जोध है गै सनि मत्ते ॥
जिन करहु अब्ब गोरी सुपहु। जानि पुरानो सेन सह ॥
सज्जयौ सूर साहाव पुर। आयौ आतुर उप्परह ॥ छं० ॥ १४४ ॥

सुरिल्ल ॥ सुनि कग्गर दुग्गर दिल्ली धर । भूमि कंप जिम कंप नर ज्वर¹ ॥
बाल वृद्ध नर नारि समानह । लगी घक्कधकी चिंत चिंतानह ॥
छं० ॥ १४५ ॥

प्रजा के महाजनों का मिलकर नगर सेठ के यहां जाना ।

भै लग्गौ दिल्लिय पुर जामह । नगर सेठ पहि गय प्रजतामह ॥
मिलिय सकल एकंत महाजन । किम बुझ्झैं रतिवंतौ राजन ॥
॥ छं० ॥ १४६ ॥

नगरसेठ श्रीमंत के यहां जुड़ने वाले सब महाजनों के नाम ग्राम और उनकी धन पात्रता वर्णन ।

पद्धरी ॥ प्रज मिलिय ताम बिचार कीन । बुल्लाय बुद्धि जन सेठ लीन ॥
श्रीवंत साह सब नयर सेठ । मति वत बुद्धि गुर गुन निरेठि ॥
छं० ॥ १४७ ॥
बर सिंह साह हंकारि अप्प । भोगवै विभौ लच्छी सु तप्प ॥
श्रीधर सुनाम सुंदरह दास । श्री करन जसोधर संक तास ॥
॥ छं० ॥ १४८ ॥
सोमन्न साहि केलन्न साहि । धन सागर आगर सगर ताह ॥
सोवन्न साह साजन्न बोलि गरुअत्त गाज सुभ तेज तोलि ॥
॥ छं० ॥ १४९ ॥
अमरसी अगर ईसरह दास । करमसी उदैसिंघ राम आस ॥
केसर कपूर षेतसी नाम । गनपति गनेस गौरसी स्याम ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥
घड़सीह धनू नेतसी साह । चेतन्न चतुरभुज मिले माह ॥
छाजू अरु छीतर छबिल आइ । जोधा जैसिंघ भांगन बुलाइ ॥
॥ छं० ॥ १५१ ॥
टोडर मल टी लाठ कुरसीह । चलि गए सांप डरपंत लीह ॥
डुंगर सी ढाल। तुरत बेग । व्यापार धरम चालै सुनेग ॥
॥ छं० । १५२ ॥

(१) मो.—जनज्वर ।

थानि गथिथरो दामा दयाल । धनराज धीग भोगी भुआल ॥
परवत्त पदारथ पदमसीह । फादूह फलावर सिंघ ईस ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥
भामो अरु भोजो मेघराज । मोहन मयूरो जा बड विराज ॥
रनधीर लषमसी बीर दास । सेपो सिघो हेमगहास ॥
॥ छं० ॥ १५४ ॥
आये अनेक महाजन सब्ब । सकारहदास पची सुयब्ब ॥
बहु ब्रम्म धरन अति तेप्पतार । अति उच उंच कति कम्मकार ॥
छं० ॥ १५५ ॥
नन लहै याम छाया प्रचार । कोमलह गात लच्छी न पार ॥
बोलत सास चालत थूल । अति बध्यौ उदर चढि ग्रीव मूल ॥
छं० ॥ १५६ ॥
पहिरत वस्त्र ढीले सु उच । ग्रिह दै कपाट भुरत सुछ ॥
लेपिनी कान लेपौ करत । हरि ब्रह्म रूप ताहू छरत ॥छं०॥१५७॥
आहत कोप भीरत मुट्ठ । पीसत दसन उट्ठत निट्ठ ॥
दाता दयाल ऐसो न और । बरजत पाप कम ठौर ठौर ॥
छं० ॥ १५८ ॥
ब्रब दान ध्यान तीरथ विनान । सोभत साह दै अन्न पान ॥
सोभत नगर जिहि बडे साहि । लष कोट द्रव्य जिन हट्ट माह ॥
छं० ॥ १५९ ॥
ए मिले साह ओवत अग्रेह । आये सु चितातुर चिति तेह ॥
सुत सुतिय कम्म परिवार ब्रिद्ध । धरबार भरे भंडार निद्धि ॥
छं० ॥ १६० ॥
कोटीस धज्ज बंदहि अनेक । बर धवल ताम मंडो विवेक ॥
उच उच भोमि साजै विलास । बर गौप अनत लग भाल आस ॥
छं० ॥१६१ ॥
प्रजा कां विवध साजे अनूप । बासे सि विवह गुन गठि भूप ॥
आए सुलब्ब ग्रह नयर साह । आसन्न दिब्ब सम मन्नि ठाह ॥
छं० ॥ १६२ ॥

श्रीमंत साह का सब सेठ महाजनों का आदर सत्कार करना और सब महाजनों का अपनी विपति कथा सुनाना।

दूहा॥ मानि साह श्रीवंत घन। सब प्रति आदर दीन॥
अप्प नाम गुन उड्डरिय। सब संबोधन कीन॥ छं० ॥ १६३ ॥
प्रथुक संबोधित साहि सब। चंदन चरचि कुसम्म॥
कस्तूरी करपूर युत। बीर सुगंध सुरम्म॥ छं० ॥ १६४ ॥
आदर करि सब प्रज पसरि। दिय बैठन सुभ ठाह॥
मति प्रमान जिहिं पुच्छियै। बोलि सुगुग्ग गुराह॥ छं०॥ १६५
बेत्ता॥ मंच बयट्ठे साहि। जिके बड्डे गुन आगर॥
सुष सरूप भोग बन। सजल लच्छी बुधि सागर॥
सुतन मंत चिंतवै। चित चिंतै न कोइ नर॥
रतिमत्तौ राजान को। सुगुदरै दुष अन्दर॥
सामंत सब्ब अच्छै विरत। राचा वंड वेरिय भर्यौ॥
कैमास सग्ग[1] जातह सकल। सुवर मत्त[2] सथ्थह सर्यौ॥
छं० ॥ १६६ ॥
धामारी पर चित्त। विरत किन्नौ चहुआनह॥
जो बुज्झै सम विषम। ग्यान अप्पनौ परानह॥
मधू साह परधान। सोय दरबार न दिष्षहिं॥
रयन कुमर सामंत। सोंह सोइ पित न परष्षहि॥
अनि तरुनि नेह छंड्यौ तमकि। कोइ न सुधि न्रप वर कहै॥
संजोगि नेह रत्तौ नृपति। मनमत्तौ निस दिन रहै॥
छं० ॥ १६७ ॥
पुच्छिय रा कामधज्ज। सोइ जुब्बन गुन मत्ती॥
रूप द्रव्य सिंगार। नेह उर चौजन रत्ती॥
नेह बुज्झै पर अप्प। तैन रस राजन बंध्यौ॥

(१) ए. को.-सुर्ग (२) ए. कृ. को - तत्त

जिम अलियज अनुजहि । गई वासुर निसि सध्यौ ॥
चित्र ग राह आयौ सु घर । भये वीस वासुर सुथह ॥
नन भई बुभ्भिक्कि राजन किनो । तौ को गुदरै अप्प कह ॥
छं० ॥ १६८ ॥

श्रीपति साह का सब साहुकारों को लिवाकर गुरुराम के घर जाना ।

भुजंगी ॥ तवै उच्चर्यौ साह श्री पत्ति ताम । सवै मत्त मंडौ जुपंडौ विराम ॥
भए सब्ब सामंत चित्त विरत्त । दर तेन तज्यौ न्रिप मन्नि मत्त [1]॥
छं० ॥ १६९ ॥

पुरष्य [2] दरव्वार पावै न जान । रहैं चीय रक्कै पुरुष्य पुरान ॥
विरानन [3] अप्पन वुग्गौ न साय । करं वेत लट्टी तरस्सीत राय ॥
छं० ॥ १७० ॥

न्रिप रस्स वंधे सुपंगानि तास । भए तीस अग्ग वर पंच मास ॥
निसा वासुर संधि भूल्यौ नियान । लगे मीनकेत क्रत पंच वान ॥
छं० ॥ १७१ ॥

चाहै कोय राजंग सुभ्भै न अप्प । ग्रिह राज चल्यौ गुर राजविप्प ॥
लहै भंति एकंत कुम्मार यान । विना सेव देवन्न आहार पान ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पुछै वैरि वर वीर चामंड धार । करै कानि मानेज रेन कुमार ॥
घर धालि वरदाय सूतो सुअप्प । करै किति आनूप प्रागट्ट तप्प ॥
छं० ॥ १७३ ॥

कहै गुद्दर अन्य सूझै न राज । विना राम देव जिन दिल्लि लाज [4] ॥
मतों मंडि उट्ठै सवै साहि ताम । चलो प्रज्ज सथ्थै ग्रिह विप्प राम ॥
छं० ॥ १७४ ॥

(१) ए. रु. को. मत्त　　　　(२) ए. गुरुष्य
(३) मो. विरामन्ना　　　　(४) ए. रु. को. काज

चढ़ै जान एकं सुएकं अनोपं। नरं जान जानं चवं डोल ओपं॥
बहिल्लं सु अत्थं सजुत्ते बनेयं। केयं अश्व रोहै सुपं राह रेयं॥
छं० ॥ १७५ ॥
बसंनं अनूपं जरावं सुधारे। मनों धूंम रूपं धरन्नीव तारे॥
चली प्रज्ज सथ्थं ग हंकार सद्दं। गए विप्र गेहं गहं माह नद्दं॥
छं० ॥ १७६ ॥

गुरुराम का सब सेठ साहूकारों से सादर मिलना।

दूहा ॥ सुने गहं मह विप्र दर। आयौ उट्टे ताह॥
तब दर पति सनमुष कहिय। आये श्रीपति साह॥ छं० ॥ १७७॥
प्रजा षल्लक सथ उग्गाही। जे बड़ दिल्ली साह॥
सो आये दरबार तुम। कोइ इक काज उगाह॥छं० ॥ १७८ ॥
आए आतुर राज गुर। करिय विवह महमान॥
आदर करि आसन्न दिय। संबोधे बर बानि॥ छं० ॥ १७९ ॥

श्रीमंत सेठ का गुरु राम से शाह की चढ़ाई का समाचार कह कर सारा दुःख रोना।

कवित्त। सुनि अवाज सुरतान। षलक भज्जिय नद मंडल॥
कर कुसाव भेहरा। दान अरु मान अषंडल॥
मिलि परवान पुंडीर। सहर लुथ्थौ द्रब साइय॥
हनि सोदागिरि बानि। बनिज उन्नित पट पाइय॥
अग्यान लुपै अग्या नृपति। सत संपति संभर धनी॥
गुर राज काज अवसर अवसि। प्रज पुकार मंडिय घनी॥
छं० ॥ १८० ॥

दूहा ॥ तुम सम राजन राज हित। बित रष्षन चित अग्ग॥
कानन मंडै करन सों। तू धर रष्षन अग्म॥ छं० ॥ १८१ ॥
कवित्त ॥ मंद राज माल दे। देष चिय तन असि किन भौ॥
लोहानो आजानबाह। अजमेर द्रुग्ग गौ॥
पावस रा पट्टनी। महि महि सार निरत्तौ[1]॥

(१) ए.-नारंनौ, नारतौ

जर जोवन तन मद। तुग तेजी रन असुभो ॥
दाहिम्म दोह बछै बिषम। चरन बीर बेरी बहन ॥
घर घालि भट्ट सूतौ धरह। सुवर बिप्र ताही कहन ॥
छं० ॥ १८२ ॥

का कालह तरि नारि। धारि आनी घर मभ्भै ॥
रवि समान प्रथिराज। गिल्यौ गोरी जिम सभ्भै ॥
जिहि परिगह परिवार। मारि मारत उप्पारिय ॥
जिम रावन मंडलिय। बलिय बन्दर हनि वारिय ॥
इच्छहु जो बिप्र पच्छहि मरन। तौ अग्गै सोइ कहौ ॥
कर दरभ कमंडल छाग म्रग। बादरि द्रुग मारग गहौ ॥
छं० ॥ १८३ ॥

पाहुनौ रावर नरिंद। बर प्रथा सपत्तौ ॥
सोइ अचिज्ज गरुहा। सुनत मन मझ्झह सतौ ॥
ता सज्जन दी लज्ज। बज्ज गोरी धर चंपिय ॥
नद नाहर पट्टन। प्रवेस अवनी आकंपिय ॥
इम सुपम निद आवै न्रपति। बिषम अप्प डंकह डसिय ॥
गुर राज काज अवसर बसिय। किम सुनेह छंडै रसिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

राजहौं कूरम्म। हथ्थ लडू बिय बंधे ॥
चाहुआन सुरतान। कूर कावरि इन बंधे ॥
देव राज षीची प्रसंग। गंग टह पट फुट्टिय ॥
जैत राव हय गय। भंडार साहन सह लुट्टिय ॥
गुज्जर गमार सत्तह बली। मत देव द्रुग्गन गनै ॥
बर बिप्र राज राजंग गुर। कहै आज तोही बनै ॥ छं० ॥ १८५ ॥

गुरु राम का कहना कि मैं तो ब्राह्मण हूं पोथी पाठ जानता हूं राज काज की बातें क्या जानूं।

प्रोहित वाक्य।

हम सु काज्ज प्रव पंच। पढ़ै पचा प्रभु रजहि ॥

हम जु लच्छि आस रहि। चरन चंदन धसि बंदहि ॥
हम सुदेव जग्योपवीत। सोहै तन मंडन ॥
हम विरद बंदि न पढ़त। पापह पर षंडन ॥
इह विकट भट्ट चंदहि चरित। कहै सुमानै न्रप नवल ॥
परतष्षि द्रुग्ग पुच्छन चलौ। मंत्र घत्त सम्रह सबल ॥
छं० ॥ १८६ ॥

शाह का कहना कि राज गुरु होकर अब आप भी ऐसा कहते हैं तो हम किसके होकर रहें।

प्रजा वाक्य।

धर बाहर पंडवन बुद्धि। बंधवन रुद्धि छुट्टिय ॥
धर बाहर वामंन। छलित्त बल दोष सुथट्टिय ॥
धर बाहर जुरि जरासिंध। गुर गजा जुद्ध किय ॥
धर बाहर सुर पत्ति। अस्ति दधीच मंगि लिय ॥
जिहि जियत धरनि धर और प्रभु। तिहि जननी जुब्बन हरिय।
बंभन सुकज्ज इह अज्ज तुम। प्रज पुक्कार मंडी करिय ॥
छं० ॥ १८७ ॥

गुरु राम का श्रीपत साह और राव महाजनों सहित कविचन्द के घर जाना।

दूहा ॥ प्रज्ज सु करिवर विप्र काज। सीस तिलक तन तुंग ॥
कुसुम गंध सव सथ्थ मिलि। मनहु कमल रस भ्रंग ॥
छं० ॥ १८८ ॥

जब सहाव चद्दर उठी। तब गलहां फुटि चाय ॥
प्रज पुकार गुर सों कहिय। चंद कहन गुर आय ॥ छं० ॥ १८९ ॥

कवित्त। राज गुरू दरबार जाय। घर चंद सपत्तौ ॥
छत्र चौडोल रु जान। दिव्य[1] आसन दीपत्तौ ॥
हेमहार मुद्रित उ चंद। किरनिय जगमग्गिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दिष्य।

तिमिर पाप कट्टन। लिलाट प्राची दिसि उग्गिय॥
प्रज सोर रोर पावस मनों। सुगर भट्ट चदह मुनिय॥
भट्टनि जगाय जग्यौ पुरस। सुगुर पच्छ सहह दुनिय॥
॥ छ०॥ १९०॥

कवि का स्त्री बालकों सहित गुरु राम की पूजा करना और गुरुराम का कवि से अपने आने का कारण कहना।

चद वदनि जगि चद। चद वदनी मुख चाह्यौ॥
हे चद्रानिनि चद्र। कत चदहि न सुहायौ॥
अम्रित मित्त कलमित। मित्त व दिन इह वढ्ढिय॥
छिन छिन घटि वढि वढै। राह भय भवन सुजढ्ढिय॥
दुज पुज्जि अज्ज लज्जा न करि। राज गुरू आयौ धरा॥
सापग धूप दीपह चरचि। सुवर विप्र मडल वरा॥
॥ छ०॥ १९१॥

मुरिल्ल॥ सकाल लोइ पुच्छन गुरु अप्पहि। गुरु षट मास राज विन दिप्पहि॥
तव पर जानि प्रपच उपायौ। तव गुरु पुच्छन चदहि आयौ॥
॥ छ०॥ १९२॥

दूहा॥ आदर चद अनत किय। ग्रह आवत गुरु राम[1]॥
सम सुत त्रियनि सु चरन परि। सिर फेरिग सव दाम[2]॥
॥ छ०॥ १९३॥

मुरिल्ल॥ तव गुरराज राज कवि वुझ्झै।
तुहि वरदाइ तीन पुर सुझ्झै॥
अहि निसि देव सेव गुरु ठानिय।
सो षट मास मिले विन जानिय॥
छ०॥ १९४॥

(१) ए कृ को राज।　　　　(२) ए कृ कों साज।

कवि का कहना कि जिस स्त्री के कारण सर्वनाश हुआ राजा उसी के प्रेम में लिप्त है।

दूहा ॥ हस्यौ चंद वर बिप्र सों। तुम जानहु बहु भंति ॥
जिहि कामिनि कलहौ कियौ। सो जामिनि बिलसंत ॥
॥ छं० ॥ १९५ ॥

गुरुराम का कहना कि पृथ्वीराज ऐसा उदंड पुरुष क्योंकर स्त्री के वश में है।

मुरिल्ल ॥ कही चंद वर बिप्र न[1] मानिय।
रहि रहि कवि तैं बात न जानिय॥
जिहि धनु चिय रन चिन वर आनिय।
सुक्यौं देव चिय बसि करि मानिय ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवि का कहना कि अभी आप वह बात नहीं जानते।

तुम सम दिष्टि अदिष्टि न दिष्यौ। जब असीलष्य दलल गहि[2] भष्यौ ॥
प्रान समान परत दप छोह्यौ। मरन छंडि महिला सुष[3] मोह्यौ ॥
॥ छं० ॥ १९७ ॥
तिहि महिला महिला बिसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साई ॥
बिभौ भूमि भ्रित जाहु सुजाही। सुनि सौ समौ राज गुर नाहीं ॥
॥ छं० ॥ १९८ ॥

गुरुराम का कहना कि हां कवि कहो क्या बात है।

दूहा ॥ समौ[4] जानि गुर राज रहि। कहि कहि कवि इह बत्त ॥
किहिवै किहि रूपनि रवनि। किम राजन रस रत्त ॥ छं० ॥ १९९ ॥

कविचन्द का संयोगिता के रूप राशि का वर्णन करना।

जुब्बन ज्यों तन मंडनौ। सिसु मंडन तन डोल ॥

(१) मो.-सु। (२) ए. कृ. को.-गहि गहि।
(३) ए. कृ. को.-मन। (४) ए.-मनौ।

वालप्पन सह विच्छुरन । तिहि चित च चल लोल ॥
॥ छं० ॥ २०० ॥

गाथा ॥ जजोई सजोई । जोईत सिद्ध अम्माई ॥
नजोई सजोई । गोईत सिद्ध अम्माई ॥ छं० ॥ २०१ ॥

मालती ॥ गुरु पच सत्तति चामरे । चहुआन अच्छर धामरे ॥
सति पीथ पिंगल बधए । गिय मालती प्रति छंदए ॥
॥ छं० ॥ २०२ ॥

स जोगि जोवन ज वन । सुनि सर्वदा गुरु राजन ॥
नग हेम हंस जुथ्थ्यन । गै मग्ग हंस उथ्थ्यन ॥
॥ छं० ॥ २०३ ॥

तल चरन अरुनति अहय । जनु ओप ओपंड लहयं ॥
नष कुंद मल्लि सुवेसन । प्रति व्यंब ओन सुदेसन ॥
॥ छं० ॥ २०४ ॥

करि कासमीर सुरंगन । विपरीत रंभति जंघन ॥
रस नेव रंजि नितंबिनी । कुसुमेष इक्क विलंबिनी ॥
छं० ॥ २०५ ॥

उर भार मध्य विभंगन[1] । दिय रोम राय सुथंभन ॥
कुच कंज परसन ज अली । मुष मधुप[2] देषि[3] कलकाली ॥
छं० ॥ २०६ ॥

हिय[4] अथन सयनति सिद्धयौ । भजि ग्रहन ग्रहनति रिद्धयौ ॥
उर झीन झीलति कंचुकी । भुज ओट जोटति पंचकी ॥
छं० ॥ २०७ ॥

नलि नील पानि वअचछयौ । जनु कुंद कुंदन सुच्छयौ[5] ॥
कल नीव रेह त्रिवलयी । जनु पंच जन्य सुथलयी ॥ छं० ॥२०८॥

अधरेव पाक सुबिंबन । सुक सालि आलिन खंडन ॥
दस नेव मुत्ति सुनंदन । प्रति भास मुद्रित वंदन ॥
छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए. कृ. को. विभंगन　　(२) को. नुधुप　　(३) मो. दोष
(४) ए. हिय　　(५) ए. चच्छयौ

मधु मधुरया मधु सद्दया। कलयंत कोकिल बद्दया ॥
भ्रम भवन जीवन नासिका। नसु अंजनी पिय पासिका ॥
छं० ॥ २१० ॥

गिल मलत श्रवन तटं बता। रथ भंग अरक बिलंबता ॥
तुछ तुच्छ इछ्यहि इच्छसी। षष लज्ज सैसव संकसी ॥
छं० ॥ २११ ॥

सित असित उररि अपिंगज्यौ। जनु सेड बंदर वच्छज्यौ ॥
तसु मझि म्रग्ग मद बिंदुजा। दुति इंदुनिंदत सिंधुजा ॥
छं० ॥ २१२ ॥

कच वक्र चक्रति कुंतलं। तसु ओपमा नह भूतलं ॥
मनि बंध पुहपति दीसए। जनु कन्ह कालिय सीसए ॥
छं० ॥ २१३ ॥

चिस रावली वनि बंनियं। अवलंबि अलि कुल स्रिनियं ॥
चित चित्र चित्रत अंबरं। रति आनि हंद्यति संमारं ॥
छं० ॥ २१४ ॥

जनु सीस फूलति अच्छयौ। मनु कन्ह कालिय सुच्छयौ ॥
* * * * * * * छं० ॥ २१५ ॥

संयोगिता के शरीर में १४ रत्नों की उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ जिहि उदद्धि मध्य ए। रतन चौदह उद्धारे ॥
सोइ रतन संजोग[1]। अंग अंगह प्रति पारे
रूप रंभ गुन लच्छि। बचन अम्रत विष लज्जिय ॥
परिमल सुरतरु अंग। संष ग्रीवा सुभ सज्जिय ॥
बदन चंद चंचल तुरंग। गय सुगति जुव्वन सुरा ॥
धेनह सुधनंतरिसील मनि। भौंह धनुष सज्जों नरा ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ समर समंडन समर ग्रह। समर सुरप्पर भोग ॥
समर सुझ्झित्तिय पंग नृप। तिहि[2] चल्लन संजोग ॥
छं० ॥ २१७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सोइ संजोग सुअंग (२) ए. कृ. को.-वल्लह।

मन्नि राज गुर राज रस। कवि वर वरनिय सत्ति॥
जस भावौ तस भुग्गवै। तस विधि अप्पै मत्ति॥
छ०॥ २१८॥

उभै उभै रस उप्पयौ। मिले चंद गुर राज॥
कब वयनन आनन मिलहि। नयन निरप्पहि राज॥
छं०॥ २१९॥

कविचन्द और गुरु राम का सब महाजन मंडली सहित राजद्वार पर जाना।

भुजंगी॥ मिले विप्र भट्ट अनूप सधाम। मनोहि दवान सवान[1] तकाम॥
उभै सूर साईं सु अग्या विनोन। चढे एक चोडोल नर एक जान॥
छं०॥ २२०॥
महा प्रीति अंग मन एक कीन। मिले हथ्थ हथ्थ सुतालीय दीन॥
उभै ओपमा सूर चंद सु चंद। उभै पूजन राज राजन बंद॥
छ०॥ २२१॥
अनेक सुभती उभै जानि वान। उभै अग्ग किती रथ चाहुआन॥
उभै आस पास महाजन चालैं। जिन देख देस महानीच हालैं॥
छ०॥ २२२॥
कहे जे समाचार दूरम होता। मिलै लोक सथ्थें तमासा निजोता॥
* * * * * * * छ०॥ २२३॥

कवित्त॥ एक रथ्थ आरुहिय। सरद दिन इंद मनोहर॥
समुह राज दरबार। पलक उम्महिय सगोहर॥
कलस बंधि बंधियन। सगुन सचारि विचारिय॥
वढे किति वल्ली[2] सुघट्टि। घट आउद्दि हारिय[3]॥
उच्छह उतंग छ दह बयन। गयन गज्जि बज्जिय जलह॥
दरबार राज धुधरि धरनि। सरन रष्पि दुग्गा वलह॥
छ०॥ २२४॥

(१) ए कृ को सनानम
(२) मो-वेली　　(३) मो भट आय निहारिय

संयोगिता की ओर से नरभेष धारण किए हुए पहरे-दार स्त्रियों का राव लोगों को मार कर भगा देना।

दिष्षि दइय दरबार। पंग कुंअरि चर बारहि ॥
नारि भेष नर वस्त्र। सस्त्र लकरी कर भारहि ॥
मार मार उच्चार। बाल तरुनि सुगंध रस ॥
तुरिय नथ्थि गज नथ्थि। नथ्थि रथ विरद बंदि जस ॥
बाजहि विसाल रन तूर रव। भवर भीर भामिनि भवन ॥
दिठि परत लरथ्थर पय परत[1]। नकरि जीव अग्गह गवन ॥
छं० ॥ २२५ ॥

षलक भग्गि गय सथ्थ। छंडि चौडोल लोग गय ॥
लाल लहरि लक्करिय। छाह सिर विप्र भट्ट भय ॥
बिन अलच्छि लच्छि नहु। विहनि इच्छा भइ सुगंह ॥
उच्छाह आह मिल्लिग[2] पवारे[3]। रवरि राह ठिल्लित ठिल्लिग ॥
दासी दिवंग सम अच्छरिय। मिलित दरह दोउनि बुल्लिग ॥
छं० ॥ २२६ ॥

कविचन्द का ड्योढीवाली दासियों से बात करना और कंचुकी का कलरव सुनकर कवि के पास आना।

चंद्रायना ॥ मिले चंद गुरराज विराजत राज दर।
जहां पंगा प्रभानु कियो प्रथिराज बर ॥
तहां अपुब्ब रस रास विलासति सुंदरिय।
भ्रित बिन न्रप दरबार जिनग बिन सुंदरिय ॥
छं० ॥ २२७ ॥

दूहा ॥ इम जंपै कविराज गुर। कंपिग पहन वार ॥
को गुर देव नरेस सों। दिसि गज्जनी पुकार ॥
छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिटि परतल रध्धर पय परत। (२) ए. कृ. को.-पिल्लिग
(३) मो-दवरि, ए पवरि

सुनि सुनाइ आवन मिटि। दिष्षि कविद न्वप थान ॥
जै जीवन तौ पच वुल्लि। दर बोले दरवान ॥

छं० ॥ २२९ ॥

वर किंचिक पुछ्छह न्वपति। सुनि कलरव कवि वानि ॥
धाय चद दरसन कियौ। भ्रम्म परिग्गह ठानि ॥

छं० ॥ २३० ॥

सुनि कवि वानि प्रमान धन। कहि इछनी सें आइ ॥
जु कछु कहौ वरदाय वर। ज्यौं हित दिसा पसाइ[1] ॥

छं० ॥ २३१ ॥

अन्दर से दस दासियों का आकर कविचन्द से कहना।
कि क्या आज्ञा है सो कहिए हम राजा से निवेदन करें।

चद्रायना ॥ तव कुटिल भौंह चख सोहति मोहति दासि दस।
कछुक हँसिय[2] पय लग्गिय जपी अलीय[3] लसि ॥
तुम सरवग्य सुकब्बि राज गुर राज सम।
तुम तन समुह निरष्षि गये पति पाय हम ॥ छं० ॥ २३२ ॥

दोहा ॥ आसन असु दिय चरन रज। कच झारिय तन रेन ॥
सब्ब सिंगार सु सुंदरिय। आदर आभर नेंन ॥

॥ छं० ॥ २३३ ॥

दिट्ठौ सो दिट्ठौ नहौ। अनदिट्ठौ दिट्ठाय ॥
तुम सरवगिय कवि सुनिय। इह अचिज्ज किहि भाय ॥

छं० ॥ २३४ ॥

कवि अचिज्ज सव अप्प घर। तरह तरह वतिनोइ ॥
नैम्रिय धन तिन नाव दस। किह भूत गीताय ॥ छं० ॥ २३५ ॥

आदर दर दिन्नौ कविहि। आयस मग्यौ दासि ॥
कहा पय पहु न्वपति सों। कहौ चद गुर भासि ॥

छं० ॥ २३६ ॥

(१) मो-पठाइ
(२) ए. कृ. को. हसीय (३) ए. कृ. को. अलिय

कविचन्द का राजा को एक पत्र और सँदेसा देना।

कग्गर अप्पह राज कर। भुप जंपह इह बत्त ॥
गौरी रत्तौ तुअ धरनि। तूं गोरी रस रत्त ॥
छं० ॥ २३७ ॥

कवित्त ॥ नथ्थि कन्ह चहुआन। धीर पुंडीरन निड्डर ॥
नहि सुमंत कयमास। राय गोयंद अषंडर ॥
नहि सुलोह लंगरिय। अत्ततार्ड सुभंग भर[1] ॥
नहि पज्जून पंवार। सलष लष्पन बघघेल नर ॥
भोहांन भूप बंधुन बरन। सरन जाहि ढिल्लिय नयर ॥
घर नयर राय रावर समर। सक सहाव गोरी वयर ॥
छं० ॥ २३८ ॥

दासियों का पृथ्वीराज के पास जाना और कवि का पत्र देकर सँदेसा कहना।

दूहा ॥ दासि संपत्तिय तिहि महल। जहं संजोगि नरिंद ॥
सनमुष सबौ निरष्षयौ। मनो पृथ्वीपुर इंद ॥ छं० ॥ २३९ ॥
क्रम क्रम दासिय संचरिय। दस दस दिसि दरबार ॥
पग मुक्कत उक्कत लिषिय। न्निप निय नयन निहारि ॥
छं० ॥ २४० ॥
अन्य महल दासिय निरष। परषि पयंपन जोग ॥
उन्नित मुष रुष राज किय। न्नर्पाति सपत्तौ लोग ॥
छं० ॥ २४१ ॥
इय कहि दासिय अप्पि कर। लिषि जु दियौ गुर चंद ॥
पहिलौ औलौ बंचियौ। भूमिय जाय नरिंद ॥
छं० ॥ २४२ ॥

कविचन्द का पत्र।

* षग तिस जस तिस दान तिस। तिस लग्गै हरि नाम ॥

(१) मो.-मह सुम्भर

* यह दोहा मो० प्रति में नही है

अह निस तें मन वीर वर । तिस रष्षे सग्राम ॥
छ० ॥ २४३ ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आयौ असम । सह सेन सकिल्लिय ॥
दै चादर आदर अनद । दिल्लिय दिसि मिल्लिय ॥
दस हजार वारूनि विसाल । दस लाष तुरगम ॥
तह अनेक भर सुभर । मीर गभीर अभगम ॥
आवरन वत्त चहुआन सुनि । प्रान रष्षि प्रारभ करि ॥
सामत नही सोमत करि । जिन वीरहि ढिल्लिय सुधर ॥
छ० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज का पत्र फाड़ कर फेंक देना और शृंगार से वीर रस मे परिवर्तित हो जाना ।

दूहा ॥ सुनि कग्गर फाऱ्यो सुकर । धर रष्षै गुर भट्ट ॥
तरकि तोन सज्यो न्त्रपति । जिम वद्ल्यौ रस नट्ट ॥
छ० ॥ २४५ ॥

कल कि चत किचित भयौ । गुनियन मयन उढारि ॥
वर पचों छिन छिन छुटति । लज्ज पच वढि पार ॥
छ० ॥ २४६ ॥

राजा का कुछ विमन होकर सयोगिता की ओर देखना और सयोगिता का पूछना कि यह क्यों ।

प्रिय अप्रिय दिष्षौ वदन । किय जिय न्त्रप भौ सष्ष ॥
इछँ पूछों वर वरह तुहि । कहि सम दौरति कथ्थ ॥छ०॥ २४७॥

राजा का कहना कि मुझे रात्रि के स्वप्न का स्मरण आगया है ।

अदभुत इक दिष्षौ न्त्रपति । रयनि गलित [1]पिन प्रात ॥
सुरति एक सम्मुह रही । सा सुपन तर बात ॥
छ० ॥ २४८ ॥

(१) ए कृ को बिन

संयोगिता का कहना कि यह तो हुआ ही करता है।

कवित्त ॥ कहै पीय पोमिनिय। कंत धन धर्यौ तौन धन ॥
सुष सुमार आरोह। सार संमार मरन मन ॥
दिन दिनयर निसि चंद। रैनि दिन दिनयर आवै ॥
जंतु मंतु इह बरनि। श्रवन लग्गवि समुझावै ॥
अरधंग धरा अरधंग हुअ। अरि अंग रंग अरधंग करि[1] ॥
जिम हंस रहत तस हंसनिय। सर सुक्कै जिम पंक परि ॥
छं० ॥ २४९ ॥

राजा का कहना कि नहीं वह अरिष्ट सूचक अपूर्व स्वप्न ध्यान देने योग्य है।

दूहा ॥ कहै राज संजोगि सों। अदभुत चरित सुनंत ॥
निय पाइन लग्गिय सुप्रिय। कहि कहि कंत सुमंत ॥
छं० ॥ २५० ॥

संयोगिता का हठ कर कहना कि अच्छा तो बतलाइए।

कहै राज संजोगि सुनि। सुकथह कथ्थ अकथ्थ ॥
श्रवन मंडि कनवज्ज निय। सा सुपनंतर अथ्थ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

राजा का रात्रि के स्वप्न का हाल कहना।

कबित्त ॥ अज्ज सुपन सुंदरिय। रंभ लग्गिय परि रंभह ॥
तहं तुअ संग सुकिय। तेज अच्छिय रवि गिम्मह ॥
तहं तुम मिलि झग्गरौ। गहहि करिवर कर जंपहि ॥
तहं अदिष्ट आरिष्ट। दुष्ट दानव तन चंपहि ॥
तहं तून हून नन अच्छरिय। हर हर हर सुर उप्पज्यौ ॥
जानै न देव दैवान मति। कहन्निगान कह निप्पज्यौ ॥
छं० ॥ २५२ ॥

(१) ए. कृ. को.- अरि अरधंग अरंग करि

राजा का महलों से निकल कर कवि के पास आना।

सुनि उद्दिय संजोगि। वचन जै जै जपत जस॥
धनि सूरति चहुआन। राज सिंगार बीर रस॥
इक मरन सुर नरां। मरन सिध साधक मुक्कै॥
मरन रहै जग नाम। चित्त रप्पत मत चुक्कै॥
अध अध करै अरियन दुअध। तू उधतहि अरधग हौं॥
सामतन को सो मत करि। राजस अप्प पधारिहौं॥
छ० ॥ २५३ ॥

राजा के स्वप्न का हाल सुनकर कवि और गुरुराम का वलिदान और दान पुण्य करवाना।

सुपनतर पुच्छनह। राजगुर कविगुर बुल्लिय॥
सो सुपनतेर सुनवि। तेन मुष तिन प्रति षुल्लिय॥
सुवर द्रव्य दै मध्य। अभय पंजर पढि दिन्नौ॥
सहस कलस भरि पीर। अरघु रवि ससि को किन्नौ॥
दस वलि दिसान दस महिष हनि। मित अनत मित दान दिय॥
तिहि दिवस देव प्रथिराज दर। सब्ब सुभर भर महल किय॥
छ० ॥ २५४ ॥

दूहा ॥ आवस्यक भावी विगति। कहा महिष वध होइ॥
जो जतननि टारी टरै। नल[1] पडव सम कोइ॥
छ० ॥ २५५ ॥

पृथ्वीराज का बाहर के सब समाचार और रावलजी की अवाई की खबर सुनकर पश्चात्ताप करना और मंत्रियों से कहना कि जिस तरह हो रावल जी को लिवा लाने का उपाय करो।

पद्धरी ॥ किय महल राज आरंभ सभ्भ। पद्धरी छंद बन्नौति मभ्भ॥

(१) मो भल।

धुक्किय निसान हुक्किय जिकीव। दिसि दिसि रिसान धाए नकीव
छं० ॥ २५६ ॥

षोलिय सुषग्ग है गै पलान। रथ अरथ दिष्ट गुट्टिय गुमान ॥
पट नरम गरम जरि जिमित षान। जे लए दंडि सुरतान षान।
छं० ॥ २५७

आवध अरद्ध सिलहन सकोड़। जंपरिय किरन किरनाल होड़।
उच्छरिय सुच्छ बंकुरि कपोल। विदिन विरद उत्तंग बोल॥छं०॥२५८

छह रंग छक्क आवत्त दान। इल मग्फ्फ नंज बंबरि विपान ॥
लिषि भित्त भित्त काग्गर सुदृष्ट। जोगिन जमाति जन मिलि गरिष्ट
छं० ॥ २५९ ॥

सनमंध प्रिथापति चित्रकोट। बहु लज्ज बीस बासरति ओट ॥
पुछ्यौ प्रधानह हंकारि हक्कारि। कह करी प्रथापति जनु जुहार।
छं० ॥ २६० ॥

कामंध अंध बीसल कुलेन। अपराध कोटि कामिनि रसेन ॥
जित महल पुरष रस बस अरक्क। भुग्गवै भूप ते निज नरक्क ॥
छं० ॥ २६१ ॥

मो बर समान धरपति सुदृष्ठ। मो कहि न कवन डर कवन कष्ट
गोग्रहन धरनि ग्रह अतिथ राज। रष्षहि सरीर सुष[1] कवन काज
छं० ॥ २६२ ॥

अप अप्प दोष चित चिंति बीर। इहि लज्ज अज्ज छंडो सरीर ॥
धरनर नरिंद जोगिंद मंत। पति चित्रकोट अरु प्रिथा कंत ॥
छं० ॥ २६३ ॥

उतर्यौ आय धर निगम बोध। मुहि दइन सुगध किन आय सोध
अब करिव कोइ जिहि तिहि उपाय। जिम चलै अप्प ग्रिह समरराइ
छं० ॥ २६४ ॥

रिस दिसर जान संजोगिवान। फिरि मग्फ्फ बोलि पिय सुनहु आ
मह्हिलान मंत पुच्छै न कोइ॥ हुं कहौं नाथ ज्यों समझि होइ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुष।

सब चिया बुद्धि नीची गिनत । मानै न सच्च जो फुनि सुनति ॥
संसार चिया बिन नांहि होत । संजोगि सक्ति सिव मांहि जोत ॥
छं० ॥ २६६ ॥
एह रन सरन्न बहु भांति जानि । गुन अगुन अविधि विधि सवै ठानि ॥
ग्रह चरित लपै जोतिग्ग मांहि । चिय चरित कारत कवि सुद्धि नांहि ॥
छं० ॥ २६७ ॥
अनादि रीति सुनि एह बात । तिन काज कहै हम बुद्धि धात ॥
हम सुख्ख दुख्ख वटन समथ्थ । हम सुरग वास छंडै न सथ्थ ॥छं०॥२६८॥
हम भूष ध्यास अंग मैं देव । हम सर समान पति हस सेव ॥
छं० ॥ २६९ ॥

संयोगिता का दासी भेजकर राजा को दरबार में से बुला भेजना।

कवित्त ॥ अंग रष्षि संजोगि । नाम सुभना सुभ लच्छन ॥
रूप तेज अति तास । सकल कल ग्यान विचष्षिन[1] ॥
आइसु सम्भ्भ भइस । देषि द्रिग राजन उच्चिय ॥
गहर लज्ज बर बान । नेम निज नाथ स दुच्चिय ॥
इच्छै सुभम्भ संजोगि तुम । आवन राज पिनक्कनह ॥
सुनि सुभर सबै वैठन कहिग । संजोगी सपत्त ग्रह ॥ छं० ॥ २७० ॥
दूहा ॥ उठत राज मुह मुह हसनि । भरमडौ सन सन्न ॥
त्रिया रेसन तृपतो नहीं । राज कोज नह मन्न ॥ छं० ॥ २७१ ॥

राजा का संयोगिता से पूछना कि तुम मन खिन्न क्यों हो।

दिष्षिय राज संजोगि द्रिग । मन मलिन्न चलचित्त ॥
कहै राज पगानि किम । तू तन मनं अहित्त ॥ छं० ॥ २७२ ॥

संयोगिता का कहना कि जिस विषय पर दरबार में बात चल रही थी उसीके लिये मैंने भी आपको कष्ट दिया है।

कहै संजोगिनि स्वामि तुम । सभा सु जपिय वत्त ।

(१) ए कृ को सुलच्छिन ।

सोइ कारन प्रभु संभर्यौ। सुद्दों पगि कहों सत्त ॥
॥ छं० २७३ ॥

संयोगिता का कहना कि मैंने रावलजी का उचित आदर सत्कार साध दिया।

कवित्त ॥ प्रथौ कंत आगमह। कंत मोंकलि प्रधान दिय ॥
सुसर अन्न वस्तर सुगंध। आदर अदब्र किय ॥
ननद देउ सिंगार। हार उत्तंग दुति मुत्तिय ॥
विजै करत विजैपाल। तात कौ तात लिए निय ॥
विस लेप[1] प्रीति अंतर निमय। भवन राज आनंद दिय ॥
गुरमंच तंच जिम प्रौढ तिय। पिय पियूष ज्यों रेनि पिय ॥
॥ छं० २७४ ॥

पातिव्रत वर्णन।

चिय जु प्रीय उच्चरिय। चिय जु प्रिय बिन जिय[2] रष्षै ॥
अग्गि लोपि रव रवन। रवन बिन घटिन परष्षै ॥
पवन पंथ हाहंत। रहिन ग्राहत ग्रह तन्नै ॥
अंसु रष्षि तजि अंसु। हार सिंगारत जन्नै ॥
जुरि[3] चक्र चक्रि बोलह अगनि। चरित चित्त सुज लोक चितै ॥
अरधंग अंग संदेह नहि। सुद्दो मोहि पिय पंग पित ॥
छं० ॥ २७५ ॥

दूहा ॥ पिय बिन तनपन अनन धन। भूषन वसन न रत्त ॥
जीवन बिन जीवन रषन। लो पति एह परत्त ॥
छं० ॥ २७६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को आलिंगन करना।

* हँसि आलिंगन अंग दियं। जुरि लोयन पिय पीय ॥

(१) ए. द. को.-विषलेष। (२) ए. द. को.-तिय।
(३) ए. कृ. को.-सुरि।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

लव लावन्य समुद सर। समुध सुधा रस दीय॥
छ० ॥ २७७॥

आलिंगन समय की शोभा वर्णन।

कवित्त॥ हँसि आलिंगन देत। उपजि आनंद अपारह॥
कनक लता जनु उमडि। लपटि लग्गी सहकारह॥
नृप पयान सुनि कान। असु फिरि उअर समावत॥
मानो आगम झरमडि। विरह पावक बुझावत॥
चहुआन चलत संजोगिता। पग आनि करि कै कहै॥
सदेस सास सभरि धनी। पलन प्रान पच्छै रहै॥
छ० ॥ २७८॥

पृथ्वीराज का इछनी आदि अन्य सब रानियों से मिलना।

दूहा॥ अंतर गति अंतर मिलन। ए सुष बुझि न कोइ॥
कै जानै बिछुरन मिलन। कै सरवग्य जु होइ॥
छ० ॥ २७९॥

चिपति नयन वयनह चिपति। चिपति अलिगन देह॥
रमन रमन्न विलास करि। फिरि दिय गंठि अछेह[1]॥
छ० ॥ २८०॥

इछिय इछिनि बछिनौ। सथ्थनि सुचछ सुहाग॥
दस रवनी दस धटिक मिलि। जानि भवर कुसुमांग॥
छ० ॥ २८१॥

कवित्त॥ सुनि इछिनि पम्मारि। लज्ज सागर मति नागर॥
सील लील लच्छिन वतीस। परसी रति आगर॥
लज्ज मेर दुति तन सुमेर। सत्त सीताहि समानन॥
अलप बानि नव रसति। जानि षट भाष प्रमाननि॥
जानै न मानि पट्टै विनय। अम्म रूप लच्छी सहज॥
मडिनि निवच्छ चहुआन कौ। बदि काम लीनी गहज॥
छँ० ॥ २८२॥

(१) ए कृ को गंठिय छेह।

दसर वनि दस घटति। फिरिग कुसमंग भवर जिम ॥
ग्रह ग्रहग्गि अलि मुक्कि। फिरिय कुंडली वाम द्रुम ॥
नयन कंति फिरि देषि। चंद ओपम फिरि पाई ॥
कमल कोस ग्रह गुथ्थ। भंवर फिरि फिरि लग्गाई ॥
संभरे चित रावर समर। दइ दुबाह दुज्जन हरन ॥
जोगिंद राव जुग उप्परह। नर नरिंद कारनी करन ॥
छं० ॥ २८३ ॥

पृथ्वीराज का दरबारी पोशाक करके रावलजी से मिलने के लिये निगम बोध को जाना।

दूहा ॥ चल्यौ राज संबोधि तिय। लिय बहु भांति वसत्त ॥
प्रीति सहित अंतर उमग। कारन सु सीतल गत्त ॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ कुसुम पट्ट सिर पग्ग। कुसुम रस गंध भवर सम ॥
श्रवन साष दोउ लष्ष। द्रव्य बहु मोरि[1] जोरि जम ॥
सुरत रत्त अंतरह। रत्त तन बिरत मोहि मनि ॥
फुरत हथ्थ आतुरत। धुरत नीसान धुक्कि सुनि ॥
मन मुरित मोह सेना सुरत। करत रात[2] सामंत सथ ॥
न्रिप समर सीह राजन मिलन। निगम बोध भिट्टन सुतिथ[3] ॥
छं० ॥ २८५ ॥

दूहा ॥ करिय मतौ मंडली महल। छंडि चावंड वर बंद ॥
बगरि देव दरस्यौ न्रपति। सुमन मानि आनंद ॥
छं० ॥ २८६ ॥

आनंदेम्रत भर सुभर। दिन दुलंभ न्रिप काज ॥
सुबर बंध बंध्यौ न्रपति। साहि गह्यौ जिहि साज ॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-मोंहि।
(२) मो.-रास
(३) ए. कृ. को.-कथ

तब न्रप उत्तर अप्प दिय। समर सपत्तौ ग्रेह ॥
तास मदन विधि अप करौ। होय भविस्यति[1] तेह ॥
छं० ॥ २८८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामतमंडली सहित निगमबोध स्थान पर पहुचना।

भुजंगी ॥ चल्यो भेटन राति आवाज वज्जौ। दियौ रत्ति निद्धौर हौ ताहि लज्जौ।
चव मास पट्ठ छह रत्ति गज्जौ। क्रम मोह छुछे ग्रिह काम लज्जौ ॥
छं० ॥ २८९ ॥

फिरै कुंडली डोरि निस्सान तज्जौ। मनों पातुर चातुर नृत्त सज्जौ॥
मय मोर सुत्ती हय हीर मंडे। मनो सेत नेत सुमेर प्रचंडे ॥
छं० ॥ २९० ॥

चल्यौ चाह चहुआन दै बाघ पानी। भई जैत आजैत आकास बानी ॥
रवी जोग बैठौ अकास सनीर। दिस बाम ईसान सधौ[2] करीर ॥
छं० ॥ २९१ ॥

फल फूल पत्र सुवन्न उडाये। मनो बार बार सुवाह चढाये ॥
सबै बोलि सामंत सामत मन्ने। भई अग्गि या चहून सब्ब जन्ने ॥
छं० ॥ २९२ ॥

चढे सथ्य सामंत सब्बै समथ्थ। बजेह नीसान सद्दे अकाथ्थ ॥
चढ्ढे सेन चल्ले निगवोध मग्ग। गए पासि सिध चर चारि अग्गं ॥
छं० ॥ २९३ ॥

चल्यौ रावल समुद्द मगि वाजी। चढी सब्ब सेना भर नामसाजी॥
मिले समुष सेन दो राज राज। दिठे[3] दिट्ठ दिट्ठी रसाल विराज ॥
छं० ॥ २९४ ॥

मिले प्रेम पूरन्न सामंत्ति राज। बजे अत्ति उच्छाह सुच्छाह बाज॥
भए चित्त आनंद मानंद दून। बढी प्रेम बान कुसल्ल सजून ॥
छं० ॥ २९५ ॥

मिले जाय बैठै निगबोध थान। चित दोय रजै प्रिय प्रेम पान॥

(१) ए कृ को भविष्यति　　(२) मो चधौं　　(३) ए कृ को ठिले

घने आदरं सादरं सहि बैठै। मनों काम देवं दोऊ रूप पैठै॥
छं॥ २९६॥

एक दूसरे की कुशल प्रश्न होने पर पृथ्वीराज का रावल जी से अपना सब हाल कहना।

दुहा॥ कुसल तान पुच्छिय नृपति। हय गय भूमि भरान॥
ता पच्छै सुत सुति सुपरि। सुष दुष पुच्छि परान॥
छं॥ २९७॥

चौ अग्गानी सद्दि वर। पंगानी प्रभु आनि॥
रहें सूर सामंत ते। नव जगाहि पहिचान॥
छं॥ २९८॥

सा संषेपक उच्चरिय। विहुन विरद्दह तोल॥
जगयराज जयचन्द ग्रह। पुच्छि करै तिहि बोल॥
छं०॥ २९९॥

रावल जी का कहना कि स्त्री संभोग से भला कोई भी संतुष्ट हुआ है।

कवित्त॥ * सोम वंस राजिंद। नाम ससि वंध विचक्षन॥
घर घर प्रति इक रूप। रूप लावन्य सुलच्छिन॥
दस हजार तिय परनि। करेहु अग्गैर महस्सं॥
एकादस हज्जार। गए संवच्छर चस्सं॥
चय कोडि लाष पचास हुअ। पुच तास बलवँत सरस॥
रावल पयंप प्रथिराज सम। ते पन धपिय न काम रस॥
छ०॥ ३००॥

कविचन्द का नवीन सामंतों के नाम कहना और रावल-जी का प्रत्येक से सादर मिलना।

दूहा॥ सामंतनि भेब्यो समर। प्रति प्रति आदर दीन॥
नाम कहे कविचंद नै। छंद अनुक्रम कीन॥ छं०॥ ३०१॥

* यह कवित्त मो. प्रति मे नहीं है।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-19

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B A

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju

CANTOS LXVI *Continued*

19



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया ।

पर्व्व ६६

PRINTED BY THAKUR DAS MANAGER AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1911

मूल्य १।)] Issued 15th October 1911 [*Price Rs 1/4*]

सूचीपत्र ।

नवीन सामंतों के नाम ग्राम इत्यादि का परिचय ।

भुजंगी ॥ अपं अव्व बुआ राव भेट्यौ नरिंद । सतीधार राजा सुलज्जी समुद्द ॥
मिल्यौ बग्गरी देव षीची प्रसंग । गुन दान मान जयो जास अंग ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

लगे पाय कुम्मार दोनों सलोंह । लये लाय कंठ सनमान ओंह ॥
मिले सिंघ पामार साधार भार । कामधज्ज आरज्ज सारज्ज वार ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

तबै आय परिहार सिंघ महल्ल । सम पीप बंध सुभेट्यौ सहल्ल ॥
तबै आइयै ताम आजान बाह । अजम्मेर हुतौ समत्तौ उछाह ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

लगी रावल पाय सा चाहुआन । सम प्रीति रत्तौ सुमत्तौ द्रिसान
मिल्यौ चंद चंडी बिरद्द सुवाच । बल बुद्धि पग्ग सुअ भ्मासाच ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अवद्दूत राजग गोरष्प राय । कालक सुराय सु अंग उछाय ॥
सुअ जन्ह हत्था सुमत्या कालेव । धरा भ्रम्म रूप कलौ देव एव ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

गुर राजजोगिंद इंद सुमास । अविध्यात मचा सन सब्लितास ॥
अठ सिद्धिनीरष्य मो अज्ज पाया । मुष देषते चिंच कोट सुराया
छं० ॥ ३०७ ॥

कवीताम आभासि जोगिंद राय । मिले पुच्छि बत्त कुसल्ल प्रहायं[१]
मिलेताम माल्हन्न सो बीर बीर । धरै स्वामि भ्रम्म सदा पग्ग धीर
छं० ॥ ३०८ ॥

लगे ईसर दास चहुआन पायं । नर नाह कन्ह सुअं सबभायं ॥
पऱ्यो राव परताप राय प्रुमान । बर लज्ज दाहिम्म कैमास पानं ।
छं० ॥ ३०९ ॥

सुअ भिट्टि गहिलोत गोयंद राज । समंतोल सामंत सोह सु ताज ।
जय जाम देव सुजुद्ध जुधान । चिय भूप भोर सु जोर विधान ॥
छं० ॥ ३१० ॥

(१) मो -प्रासाय

बियं तेजमुत्ती सु जोति क्रिसानं। इमं तेअ अंगं सुरंगं दिसा
सदा एक पेमं रनं एक राजं। धजा एक बानै सदा एक साजं॥
छं० ॥ ३११ ॥
दिठे दिट्ठ नेनं दुनेनं दुरूरं। दिसा दच्छिनी उत्तरे एक सूरं॥
मनो भेद पाटं सु घाटं पिछानं। पिता एक माता भयौ अगाथा।
छं० ॥ ३१२ ॥
बलीराइ बलिभद्र किय दास केली। जदों जामनी राज सोमेस गेलं
नयं जीयविचार दुहुमात पित्ती। जयं जादवं संभरी रत्त रत्ती
छं० ॥ ३१३ ॥
दियं चित्रकोटं सोइ सुन्नि भारी। उठ्यौ षीचि पांवार बोल्यौ बिच
लग्यौ गुज्जरं पाइ षीची रिसानौ। मनों डंकिनी डक्क अग्गै उभा
छं० ॥ ३१४ ॥
तुमं पंच पुत्तानि सोमेस राजं। तमं बुग्गझियै सब्ब सामंत लाः
तुमं मंड के डंड के बोल छंडौ। विना हथ्थ राजंन की हथ्थ षंडं
छं० ॥ ३१५ ॥
अरी सिंधु लोपी जमं संधि रंगं। नही मग्ग लग्भों इको रन अं
सबै कूर कूरंम की बात षोटी। हसै जादवं पानि पामार जोटी
छं० ॥ ३१६ ॥
बढ़ी हास रासं रसं प्रेम बेली। बढी प्रेम नेमं सु मग्गं सहेली
मनों प्रेम बानंक सज्ज्यौ अनूपं। कला नेह बढ्यौ रजे राजरू
छं० ॥ ३१७ ॥
बढ़ी जोति जोती रसं रास रंगं। कला कुंदनं ओप बढ्यो सुअंग
तबै बद्धि परिहार अप्पै सजोई। कही बात षुम्मान आसन्न होः
छं० ॥ ३१८ ॥
सषंसी कुसीहं परीहार बंगं। रनं रामदेवं सु षीची प्रसंगं॥
इमे दाहिमं सूर जोरं जुनेकं। परै जुद्ध सुरतान चामंड मेकं।
छं० ॥ ३१९ ॥
समं ग्राम देवं तनं सब्ब काजं। सवै[२] अन्नइ राज जद्दों सु जाज

(१) मो.-घटे बढे संग्रहं जीव सेली। (२) ए. क. को.-सजै।

घन तर्क अवतर्क करि राजवेह । मनो बेरि पुम्मान चावड एह ॥
छं० ॥ ३२० ॥

रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय बिचारो।

कवित्त ॥ देषि चरित चहुआन । चित्त वत्तह बिचारिय ॥
भय भवस्य न्निम्मान । कन्न ज पिय उच्चारिय ॥
घटै बढै सग्रहै । जीव साथी सुष दुष्यह ॥
नव जम्मह चित्त ग । चित्त कोटह बंध रष्यह ॥
सम्भाव मरन गज मत्त जिम । पै सकार बधी सरर ॥
आमंत मंत सामंत हौ । कौन मंत रष्यो सुधर[1] ॥ छं० ॥ ३२१ ॥
चहुआना वर बंस । ब्रह्मवेदी जगि जन्ना ॥
ता राजन क्रत काज । सित्त सामंत उपन्ना ॥
पंच हूर इक अग्ग । जथ्थ काथ्था कुल जाए ॥
दइय क्रम्म करि जोग । भोग जोगनिपुर आए ॥
ता अनुज राज भगिनी प्रिथा । वर सु केलि रावर समर ॥
सगपन सु प्रीति वासुर दुदस[2] । निगम बोध उत्तरिय धर ॥
छं० ॥ ३२२ ॥
बोलि मंत सामंत । समर ज पहु न समर बर ॥
अग्गै ही चितरंग । बंध जस बंधि अप्प घर ॥
ए अभंग राजंग । मरन जानै तिन मान ॥
इन काल कनन ग्रेह । बीय काल कान भान ॥
सुम्भर सुमहन रमह सुभर । वर बीरंग विहारि घन ॥
जोगिंद राज जग हथ्थ वर । बर बिढार बिरस्माय रन ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

रावल जी का राजमहलों को आना।

मिले राज रावल नरिंद । पूरंन प्रेम भर ॥
अति अनन्द मन चंद । नेह उच्छंग देह बर ॥

(१) मो० कौन मत रषहु सुधर। (२) मो० दुदस

मिलिय सुभर उम्भय नरिंद। पित नाम जाति तव ॥
कुसल बत्त पढि तत्त। हित्त आभित्त चित्त सब ॥
बैठे जुपंच सत्तह घटिय। लै रावर संमुह चढिग ॥
आए सुग्रेह नद्द त नद। अति उच्छव सुच्छव बज्जिग ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पृथ्वीराज और रावल जी का संयोगिता के महलों में बैठना रावलजी का सरदारों सहित भोजन करना।

बाधा ॥ बैठे आइय ग्रेह पँगानी। अत संबोधि रुचिय रस बानी ॥
धवल उंच साला सम रुत्तं। अति सुभ्यानं मान थल सुत्तं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

आरोहित आसनयं सारं। अति गति रूप व्रन्न तन पारं ॥
जरा जरान अति अंग उभारं। देखत चित्त चढे के बारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

जे जे अस्थि पंग ग्रह उत्तं। देषन चातुर चित्त अभूतं ॥
ग्रिह साला सिंगारि अनूपं। समताहीन इंद्र पुर रूपं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

तहां ग्रासन्न उतंग विराजं। जे मानिक्क विवह मनि भ्राजं ॥
तहां रावल सम रोज अरोहं। मानहु इंद्र उदे उभ सोहं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

बोले सुभट सब्ब नर तथ्थं। जे भर अप्प जुरावल सथ्थं ॥
मुष मुष किन्न प्रसंस विचारं। जे भर सथ्थ सुरावल सारं ॥
छं० ॥ ३२९ ॥

विवह सु सुद्ध वास रुचि रासं। मुक्कि गंध वर धूम सुवासं ॥
साष जाति अत्ति हित्त सुभावं। विवह सुगंध प्रसंसन पावं ॥
छं० ॥ ३३० ॥

कुसुम सुवास जाति अत्ति भत्ती। रूप अनूपम गुंथि सुगत्ती ॥

(१) ए. कृ. को.-सुषासन

कासमीर म्रगजा घनसार । कर्दम जरछ दच्छ तातार ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

विधि विधि भति सुरावल रच्चै । पूजा देव समोन सुसच्चै ॥
अति आनन्द सेव' सह सार । तव सुअ पग आय परिहार ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

भोजन कजि अतर आभास । साला पहु सपन सहास ॥
साल असन अनुपम रूव । आसन बैठि नेह पहु हूव ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

बैठे सुभट सथ्य सम थान । आभासित भोजन विधि वान ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन के समय किन किन पशु पक्षियों को रखना उचित है।

दूहा ॥ * कुर्कट निकुल करोंच कपि । हिरन हंस सुक मोर ॥
असन करत न्रप रष्षि ढिग । सूचक जहर चकोर ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ हंस होत गति भंग । मोर कटु सबद उचारै ॥
रोवत क्रौंच कुरंग । सुकपि छडत आहारै ॥
सूआ वमन करंत । निकुल कुर्कुट मिचाई ॥
ऐसे चरित करंत । जानि आगम दिनाई ॥
चकोर परस्पर हित रहित । कहत चंद पारष्ष तहि ॥
तिहि काज आनि रष्यत इनहि । भूपत भोजनसाल महि ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

षट रस व्यंजनों का ब्योरा।

दुविध अन्न फल त्रिविध । साक पंचम सुडार ॥
जुग त्रिधि गोरस गुनित । ईष गति इक्क विचार ॥
लवन तेज साहिग । अट्ठ दस भोजन भत्त ॥

(१) मो० देव

* यह दोहा मो० प्रति में नहीं है

ता अनंत गति रचे। गनिक को गनै कवित्त ॥
संजोगि एक अनेक सचि। षट रस षटु विधि लहिग सुचि ॥
सारदा मंति समुझै भलै। जुपहु आहारै अन्न रुचि ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

साटक ॥ त्रिविध मुदित मन्नं शृंग घटं सुसीषं।
जड़ दल पल पुहपं पल्लवं पंच साकं ॥
जल थल नभ मेतत् सास मेनं त्रिधापि।
षट रस अत जुत्तं षटू त्रिधा भक्ष्य[1] भोज्यं ॥ छं० ३३८ ॥

भोजन हो चुकने पर दरबार होना। पृथ्वीराज का कवि चन्द और गुरुराम से कहना कि ऐसा उपाय करो जिसमें रावल जी घर चले जावें।

पद्धरी ॥ भोजन कीन रावल नरिंद। मन्नेव रुचि आनंद द्वंद ॥
आहार जुत्त कपूर पन्न। सुर वास रोहि सो सोभि तन्न ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

कसमीर अंग रचै सुरंग। गिय गान तक्कं मानि सुचंग ॥
रस रास हास बढ्यौ अपार। गुन गुंथि नेह बल्ली सुसार ॥
छं० ॥ ३४० ॥

अब चक्क चककरि सिंघ ताम। अग्गियां मंगि सासुर सुथाम ॥
चढ़ि चल्यौ अप्प पति चित्र कोट। सम चढ़े सब्ब सामंत जोट ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

संप्रेरि सब्ब रावर सुताम। सामंत सपत्ते निज्ज धाम ॥
संवित्त अद्ध निसि घटी दून। सुष सेन किन्न रस रत्ति जून ॥
छं० । ३४२ ॥

उग्गौ सु सूर बज्जे घरयार। सम देव संष गज्जे सरयार ॥
जग्गे वितास संजोगि राज। विचार मंत सामंत काज ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-भष्य

ग्रिह आइ अप्प जौ प्रिथा कंत। सुद्दरै काज अप्पा सुसंत॥
थपि मंत वोलि सामंत तत्र। आये सुनंत सोतर्ह सत्र॥
छं०॥ ३४४॥
बुझ्झैव मंत सत्रा समूर। विधि कही राज कज्जा सजूर॥
सम चल्यौ ताम दिल्लिय नरेस। गौ सिंघ ताम चिंता सुभेस।
छं०॥ ३४५॥
मिलि उभै राज आनंद अंग। बरनेह देह रज्यौ सुरंग।
मिलि बैठि तत्त सम सथ्थथान। अन्योन्य रंग बढ्यौ रसान॥
छं०॥ ३४६॥
पल बीह धर्द्धि उप्पर दिनेश। दिन आय रुद्र मौ रत्त रेस॥
गुर राम आय वरदाय ताम। पठुए काज पंगजा जाम॥
छं०॥ ३४७॥
आसिष्प उभै दिय राज हित्त। बैठे व कह्यौ न्रप कारन वत्त॥
उट्ठेव बैठि न्रिप अन्य थान। करि मंत कथ्थ रावर समान॥
छं०॥ ३४८॥
पठ्ठए चंद गुर राम ताम। जामानि जइ गुज्जर सुराम॥
पीची प्रसंग पम्मार जैत। विधि कही अर्थ[1] कारन सुभंत॥
छं०॥ ३४९॥
सो करौ सबै बर विधि उपाइ। जिम चलै अप्प ग्रह समर राइ॥
सो चलै जथ्थ[2] रावर नरिंद। लग्गी सु तत्तव कारज्ज भिंद॥
छं०॥ ३५०॥

दूसरे दिन प्रातः काल से दरबार लगना और पृथ्वीराज का रावलजी की बिदाई की तैयारी करना।

कवित्त॥ प्रथम जग्गिय घरियार। सेष रजनी परगट्ठिय॥
फुनि जग्गिय तमचर। प्रसिद्ध करि सद्द उघट्टिय॥
पूरब दिसि त्रिय जग्गिय। मुकुर जिम आनन मंजिय॥
रवि कर जग्गिय अरुन। बदन रंगन जग रंगिय[3]॥

(१) ए. कृ. को. अत्थ　　(२) ए. कृ. को. सथ्थ
(३) ए. कृ. को. बदन रंग निज गुर गिय।

दुज कमल जगिय किन बचन अलि। जगिय जगत प्रथिराज ज
बरदाय चंद जग्गिय धरम। मारतंड मंडल दरसि ॥छं०॥ ३५

हा ॥ सब सामंत सुबोल लिय। और चंद बरदाय ॥
सुफल काज मन्नेव सब। जो प्रिया कंत घर जाय।
छं० ॥ ३५२ ॥

सोचि समझि सामंत सब। मिलि आए सब थान ॥
स्वामि अग्ग हित चिंत कौ। काम करन सु प्रमान ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

वित्त ॥ ता सम दम सामंत। राज संजोगि सपन्नौ ॥
हय हथ्थी सृंगारि। हेम नग मुत्ति सु दिन्नौ ॥
प्रिथो कंत घर जाहु। हमहि गोरी घर लग्गिय ॥
को जाने किं होय। कोय सज्जिय को भग्गिय ॥
संचरो जाय संभरि धरो। अरु संभरि अव धारयौ ॥
सब जंत रीति जम्मन मरन। समर राय विचारियौ ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

रावल जी का चित्रकोट जाने का नाहीं करना।

ंडलिया। जंत रीति जम्मन मरन। चाय जु सुन्यौ नरिंद ॥
तुमहो जान प्रमान बर। बर दंपति सुष बंद ॥
बर दंपति सुष बंद। रत्त सहजंत सुजानं ॥
मरन मोह मोहन्न। मोह मस्सं रस ठानं ॥
अंक निद्धि चित बंध। उलजि निधि मुक्की अथ्थह ॥
उत्त ढुंढ बंस बर चतुर। मरम जानै सब जंतह ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

पृथ्वीराज का पुनः विनीत भाव से कहना कि यह अरज मानिए परन्तु रावल जी का पुरुष हो कर उत्तर देना।

चित्रंगी चितवनि परषि। निरषि बदन कुंभिलान ॥
मै अदक्ष हम रष्षही। इत्ती बेर प्रयान ॥

दूती वेर प्रयान । कहत तुम लज्जा नहीं ॥
कोन कार्ज जीवन्न । काज जस सच्चौ आही ॥
तुम चित छंडि हम घर चलहि । इह अवय पत्तग ॥
जुद्ध जुरो चित्तग तौ । अग चैाहान नरिंद ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

कवित्त ॥ समुद विहि सभरिय । राज अग्गिय अहुट्ट पति ॥
अत दान कालिंद थान । राजग पान गति ॥
देस काल पातर पवित्त । सभरि सभारिय ॥
अत दान सकलपि । सोम कन्या अवधारिय ॥
भूरप सुपग तौ अग सौ । प्रान देह दावन सुवन ॥
प्रिथिराज सथ्य सामंत सौ । धुनि निसान मच्चौ सुदिन ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

दूहा ॥ धन चोरी मुक्को सु धन । सही न पुट्टि अवाज ॥
मोहि चलतह चितवन । धर चित्त कोट सुलाज ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

कवित्त ॥ विभौ जाय जौ भ्रम्म । कम्म जौ जाइ भजत हरि ॥
मान जाइ सम प्रान । ग्यान जौ जाइ तत्त जरि ॥
अत्थ जाइ विन लज्ज । हेत सों जाय कपट्टह ॥
चित्त जाय पर नार । नारि जौ जाइ लपटह ॥
रस जाहु जाहि अपजस लगै । वस जाय जौ जुद्ध सुप ॥
प्रति प्रथिराज रावर कहै । इनहि जत लग्गै न दुप ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

चदानो आयास । वास भ्रगुटी रुद्रानी ॥
द्वै नयना द्वै सूर । तेज अश्विनि ना सानी ॥
जीह-वरुन जल स्वाद । कर्न मंडल वायालय ॥
बाहु इन्द्र आसरै । ब्रम्ह इंद्री दासालय ॥
सब देव विसन अग्यार मै । आन अनदे तौ फिरै ॥
चित्तग राय रावर चवै । प्राहुना भग्गा भिरै ॥
छं० ॥ ३६० ॥

मो[1] भग्गो संग्राम। मोहि भग्गै भग्गै अरि॥
वसों साज रन सूर। सुमत मुक्कै कलहं करि॥
तत्त पांच पाहुना। भगत चुक्कियै न कित्ती॥
नव ग्रह ग्रह फिरि ग्रेह। मुक्कि जीवन ग्रह जित्ती॥
सगपन सुनेह सनमंध नहि। लज्ज अग्ग धन चुक्कियै॥
चित्रंग राय रावर चवै। तत्त पंथ नहि मुक्कियै॥
छं० ॥ ३६१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि आप हमारे पाहुने हैं अस्तु हम आपको विदा करते हैं आप जाकर अपने राज्य की रक्षा कीजिए।

तुम पाहुना परदीप। राज पर कै का म्रुंझयौ॥
चहुआना कुल पुज्ज। राज दुज की वर पुज्जौ॥
तुम पुट्ठे गिरि जंग। द्रुग्ग दारुन गंभीरा॥
गुज्जर वै माल वै। हम भज्जौ हम्मीरा॥
फल फूल पान अंबर सुवर। मुकुट बंध चामर सरज॥
सामंत सूर जों राज घर[2]। एक सुदिन मानै बरस॥
छं० ॥ ३६२ ॥

एक बरष सामंत। जानि गोरिय भिरै भर॥
एक बरष सामंत। बंस सिसपाल पलह जर॥
एक बरष सामंत। बीर अब्बू गढ़ छंड्यौ॥
एक बरष सामंत। जुड़ भोरा भर मंड्यौ॥
दिन इक सोय सामंत को। पंग अग्ग दरहंत जिय॥
साधम्म बाल बोल्यौ तहां। मरन छंडि महिला रजिय॥
छं० ॥ ३६३ ॥

रावल जी का उत्तर देना कि मैं सुरतान से मिलूंगा।

मो मुंजानी ढाल। माल कमला रुद्रानी॥

(१) ए.-सो (२) ए. कृ. को.-रा वरह, मो

मो नाग सुपी सिलार । ब्रह्म मोगर सिझानौ ॥
हो सिंगी रा अवधूत । जोग वच्छो जुझानौ ॥
हो आहुठाम भामि । स्वामि कहि जों सुरतानौ ॥
सामंत मंत केते कहो । केते घर गोरी वहन ॥
हों कालक राय कय्यन बिरद । महन रंभ चाहो कहन ॥

छं० ॥ ३६४ ॥

महन रंभ आरंभ । छत्र जैजै तप वारिय ॥
महन रंभ आरंभ । राय जद्दो पग झारिय ॥
महन रंभ आरंभ । साहि बथ्थौ गुज्जर वै ॥
महन रंभ आरंभ । पग्ग भट्ठी करि छैवै ॥
कालक राय दुज्जन दवन । निगम सोह बंधे रवन ॥
भग्गौ सुबंध संग्राम कौ । जो चित्त गि कीनो गवन ॥

छं० ॥ ३६५ ॥

रावल जी को कुपित देख कर पृथ्वीराज का उनके पैर पकड़ कर कहना कि जो आप कहें सो करु ।

सुनि सुमत्त चहुआन । नयन सम सिंघ निरष्यिय ॥
भ्रकुटि वक्र द्रगरत्त । कारन मुष वरन सु दष्यिय ॥
अक तेज असहेज । ग्रीषम मध्यान भान सम ॥
गहिय पाय प्रथिराज । कहहु सोइ मत मन्न तुम ॥
जंपै सु सिंध चहुआन सुनि । हम अयान मत न कहै ॥
पुच्छौ सुमत सामंत सब । जिन बोला धर उग्रहै ॥

छं० ॥ ३६६ ॥

कहै राज प्रथिराज । सुनौ पति कोट चित्त तुम ॥
तुम वड्डे वड्डाय । सव्व राजन्न देस जुम[1] ॥
तुम जुगिंद जग जित्त । तुमह हम पुच्छि प्रीत गुन ॥
मति अथाह जुध राह । दछ्य सत्र नीति मत मन ॥
तुम वत्त मत्त कुन उच्चरै[2] । तुम उप्पार हम को हि तुअ ॥

(१) मो सब सामंत है तुम,　　(२) ए कृ को तुम सच मत्त कों नुच्चारै

उच्चरौ एक बत्तिय तुमै। सो हम मानै मन्न भुत्र॥
छं० ॥ ३६७ ॥

रावल जी का कहना कि तुमने और अनर्थ तो किये सो किये परन्तु चामंडराय को बेड़ी क्यों भरी।

क्यों ग्रहियौ दाहिमौ। राज गंजन कां[1]गज्यौ॥
पातिसाह परबंध। ताहि भर मह कां भज्यौ॥
मान हीन क्यों कर्‌यौ। तुच्छ करि कांइ दिपायौ॥
भिरि भारथ सम पथ्थ। नाहि पुरपत्त गमायौ॥
प्रथिराज काज साधन समर। गय[2] घट संमुह टिल्लिय॥
चामंड राय दाहर तनौ। तिहि पग लोह न मिल्लिय॥
छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि उसने मेरा सर्व श्रेष्ठ हाथी मार डाला।

इसौ हार सिंगार। जिसौ ऐरावति इंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ लिष्षमी गयंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ गज ग्राह स्याम घन॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ सुप्रति करि नंगन॥
कुवलया पील जनु कंस कौ। बरन सोभ गनपति बनिय॥
चिचंग अग्ग चहुआन कहि। सो दाहिमै किम हनिय॥
छं० ॥ ३६९ ॥

हा॥ संभरिवै रजबट रहन। पनि रावल इह कथ्थ॥
सिंधुर भाम उलालि रिन। गय नंगन भारथ्थ॥छं०॥ ३७० ॥

रावल जी का कहना कि चामंड राय को छोड़ दो।

सिंघ कहै प्रथिराज सुन। एक मत्त बर सत्त॥

(१) ए. कृ. को.-क्यों। (२) ए. कृ. को.-गज।

दाहिमौ छंडौ न्रपति। एह मत्त सुम्मरत्त[1] ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

कवित्त ॥ मइन रंभ आरंभ। राज रावल रा हिंदू ॥
सत्त मत्त वर बैठि। जवन जोगिन ग्रह जिंदू ॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी वड गुज्जर ॥
जादौं रा रघुवंस। पार पुंडीरति पव्वर ॥
रट्ठौर पवार सुरस्थलिय[2]। ब्रह्म चालुक्क जंगल भरा ॥
चामंड राय कढ्ढौ न्रपति। जो किवार संभरि धरा ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

मइन रंभ आरंभ। साँई सामंत विचारौ ॥
तौ छंडौ चामंड। ढिल्ली मंडल उच्चारौ ॥
समर चलत रष्षियै। समर बंधियै समर वर ॥
सुवर सूर गोरी नरिंद। दह गुन्न[3] सज्जि दल ॥
कोलहत केलि लग्गिय विषम। हैवै सिंधु समुत्तरौ ॥
मंडियै जुद्ध सुरतान सौं। सुगति मग्ग धुसहि दरौ ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज का चामंड को छोड देने पर राजी होना।

दूहा ॥ छंडन कहि चामंड रा। जुग जोगिंद सुदेस ॥
धर रष्षन जो तोहि नृप। करि सामंत नरेस ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

पगी पाय[4] सुरंग जग। सामंतो सत भाव ॥
जुद्ध निवंध्यौ साहि सौं। छंडो चामंड राइ ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चामंड की वेडी उतारने के लिये पृथ्वीराज का स्वयं चामंड राय के घर जाना।

कवित्त ॥ वंभन बाहौ वद्धौ। ठेलि ठट्ठौ पर जारिय ॥
जिहि मुगल मैवात। मारि मोहिल उज्जारिय

(१) मो मुझ परत। (२) ए कृ को सुरस्थलिय। (३) मो दहगुनौ।
(४) ए रु को पाग

जिहि केहरि कंठेरि। तारि कढ्यौ तत्तारिय ॥
जिहि राया रघुबंस। आय संभर संभारिय ॥
इंद्रपथ्थ सुपंथह कारनै। बाहर बीर बिचारियै ॥
इहि बार बेरि कढ्ढन न्रपति। राजन पोरि पधारियै ॥

छं० ॥ ३७६ ॥

दूहा ॥ मन्निय राजन सिष्य सब। संबोधिय सब नाम ॥
आय परंतै अबसरह। पुरषहि सिझ्झहि काम ॥

छं० ॥ ३७७ ॥

इक सुरतान अबाज सुनि। बिय राजन ग्रह आय ॥
द्वै आनंद बधाइयां। है घर चामंड राइ ॥

छं० ॥ ३७८ ॥

चामंड राय की माता की प्रशंसा।

सोला संगर मात तुहि। तिहनौ षीर पियाइ ॥
सिंघनि सिंघ सु जाइयौ। दंगे दाहर राइ ॥

छं० ॥ ३७९ ॥

राजा का कविचंद और गुरु राम को चामंड के पास भेजना

तब बिचार न्रप संचुकिय। पठए सब तिहि ठाय ॥
आप राज फुरमान दिय। कढ्ढौ लोह सुपाइ ॥

छं० ॥ ३८० ॥

गये चंद सामंत तहं। जहं चामंड वर बीर ॥
देष्यौ देव समान तहं। सूर सत्त रन धीर ॥

छं० ॥ ३८१ ॥

चामंड राय का कहना कि इस समय मेरी बेड़ी उतारने का क्या प्रयोजन।

ए सम राजन राज कौ। राज काज तुम जानि ॥
लाज उरै धरि रष्पना। कहि संजोगि पगानि ॥

छं० ॥ ३८२ ॥

जाहु सबै सामंत हौ। कहौ न्रपति प्रथिराज ॥
ता दिन मुक्यौ लोह पग। अब मोसो कुन काज ॥
छं० ॥३८३॥

कविचन्द का चामंडराय को समझाना।

कवित्त ॥ दाहिम्मा को फेरि। दियौ उत्तर कविचंद ॥
सकल सूर सामंत। सुनत चित्त ग नरिंद ॥
नीसरनौ असमान। तुहिज कालौ हर वेहर ॥
तू पाताल कुदाल। हथ्थ सत्तौ ना लेयर ॥
दीपक पतंग जिम तुट्टि के। सम रँगनमै परन भय ॥
चामंड राय तिहिं तुच्छ पग। लोह धलि चहु,आन लय ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ लाज राज निकोसन्न धन। अप्पा नैन दुराइ ॥
सामंता बर हु,कम करि। कहौ लोहनि पाइ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

औलौ रघ्घिन आलि करि। वड्डे बोलन वोलि ॥
तै रन जगो बज्जिहै। ढीली हद्दे ढोल ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कवित ॥ जे रन जोग जुसद्द। ढोल वज्जै ढिल्लिय धर ॥
जस औजस तन मुक्कि। जोगि जूह स जोगि वर ॥
तनु जानै तिन मान। सूर अवसर कि मुक्कै ॥
सूर कित्ति ग्रहि जाय। सुवर अवसर क्यों चुक्कै ॥
चामंड राय दाहरतनौ। जुग्ग जात तन मंडियै ॥
तो भुज्ज अज्ज जोगिनि नयर। रोस छिमा छिम पंडियै ॥
छं० ॥३८७॥

दूहा ॥ से वेरि पग समुहौ। से राजन पग लग्गि ॥
से ठट्ठ ठट्ठाइया। जानि उन्हइया अग्गि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ भट्टी अग्गि अबुझ्झ। ठाढि भग्गी सुरतानी ॥
तरुन तप्प गोरी नरिंद। हेवरन विप्र चढानी ॥

चामंडारै भाग। समर रावर ग्रह आइय ॥
जंपि बीर प्रथिराज। दई सुरतान बधाइय ॥
लभ्भ चय लभ्भ दाहिमा करहु। मुगति मग्ग रावर दरसि ॥
सुरतान जुद्ध चहुआन रिन। दैन बीर चाल्यौ उलसि ॥
छं० ॥३८६ ॥

दूहा ॥ पांमारां पुंडीरियां। कूरंभा जद्दूनि ॥
गुज्जरिया दाहिम्मिंयां। घर हस लग्गी दोनि ॥ छं० ॥ ३६० ॥

कवित्त ॥ जिहि जद्दों जामानि। राज लग्यौ कूरंभ्भां ॥
वीची राव प्रसंग। देव बग्गरी दुरग्गां ॥
गुज्जर रामह देव। जैत साहिब अब्बूरा ॥
होइ अबारी होस। क्यों सुभग्गौ बंबूरा ॥
मुख जीह लोल बोलै बयन। राजन काज बरद्दिया ॥
पावै न पीर पंजर तनी। मन पथ्थै भट्टह बिया ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

दूहा ॥ तब तरिवारन बंटनो। इह बंटनी न देस ॥
मोसा बोलि न दाहिमा। होइ अपानै भेस ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

इह बंटना न देस धर। इह बंटनीन लच्छि ॥
तन तर वारिन बंटना। चावँड राइ सु अश्थि ॥
छं० ॥ ३६३ ॥

बर बानै बंधै सकल। अप्प अप्पनै भाग ॥
ते बांधी सुरतान पर। षंगे षंगी पाग ॥
छं० ॥ ३६४॥

को बंधै ग्रहनी ग्रहन। को बंधै बिन मान ॥
ते बंधी सुरतान पर। मालिम सो चहुआन ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

चामंडराय का कहना कि राजा की पहिनाई बेड़ी मैं कैसे उतारूं ॥

जौ मंड्यौ नपपग्ग हम। सो किम साहों हथ्थ ॥

न्रिप अपान पासन तजहु । कहौ चंद कवि कथ्थ ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

पुनः कवि चन्द का चामंड की वीरता का बखान करके समझाना।

कवित्त ॥ तें जित्यौ गज्जनौ । तू जु अड्डौ हम्मीरा ॥
तें जित्यौ चालुक्क । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
तें दल पंग नरिंद । इंदु ग्रहियौ जिम राहा ॥
तें गोरी दल दह्यौ । वार पट्टह वन दाहा ॥
तेग तेग तुअ उच मन । ततो पास न मिल्हियै ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज[1] उप्पर पिल्लियै ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

तो सज्जत गज्जनै । हकई कंप उठें अति ॥
परै उचकि सुरतान । हरम हूहै आतुर गति ॥
तें जित्यौ परमार । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
जा बूदल तें सहै । तें जुहीरा रघुवीरा ॥
पहु मीस राम हनुमान सम । ततो पासन मेल्हियै[2] ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज उप्पर पेलियै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

दूहा ॥ राजा मान पुंडीर कुल । तेहनो पुत्र प्रताप ॥
से राजन पग लग्गिया । आज हनदे पाप ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

कवित्त ॥ आज हनदे पाप । दरसि रावर बर भग्गा ॥
कप्पन बिरद कलंक । जीह किल कित्तिय लग्गा ॥
आहुट्टा मझ्झमि । छित्ति छत्री परमान ॥
हिंदवान तुरकान । ससि उग्गै जिम भान ॥
औधूत राद माया अडर । गोरष रा गोरष्य जिम ॥
बर तिथ्थ तिथ्थ रावर समर । मार[3] रूप भजन विक्रम॥छं०॥४००॥

(१) मो भुअ (२) मो ना मलियो।
(३) मो सार

पृथ्वीराज का चामंड को अपनी तलवार देना।

दूहा ॥ छोरि तेग न्रप अप्प कर। अप्पी हथ्थति सूर ॥
लै चामंड सु बंधि द्रिढ़। तू धर रष्षन नूर ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

चामंड राय का प्रणाम करके तलवार बांधना और बेड़ी उतारना।

तब सामंत सुसिर धरिय। मुष जंपिय इह बैन ॥
जौ सिर पर प्रथिराज है। तौ कित्तक गोरिय सैन ॥
छं० ॥ ४०२ ॥

बेरी कढ्ढत चरन न्रप। नमित कियौ तिहि सीस ॥
राजन मनह प्रमोद करि। दैन कही बगसीस ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

जा न्रप रुट्ठे भय नही। तुट्ठै नह धन आस ॥
अहनि ग्रह नाहीं समथ। ता न्रप वृथा प्रयास ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

पृथ्वीराज का चामंड राय को सिरोपाव और इनाम देना।

डेढ़ हजार तुरंग बर। हसती तेरह तीन ॥
मुत्तिय माल सुरंग दस। राजन अप्पि नवीन ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

चीर पटंबर फेरि सिर। बज्जा बज्जन बग्ग ॥
बर बरदाइ बरद्दिया। बोल समंगल लग्ग ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

चामंडराय के छूटने से सर्वत्र मंगल बधाई होना।

कवित्त ॥ चीर पटंबर फेरि। बज्जि बाजिच राज बर ॥
अति अनंद मन चन्द। करै मनुहारि देव नर ॥

राजा मानि पुंडीर। राजसुत बरनं दिपारिय॥
ता छुडन चहुआन। करिय सो मत्त विचारिय॥
आनद राज कुम्मार ग्रह। मातपष्य आनद हुअ॥
राम ति सब्ब पष्यी फिरै। भिरि चामंड सुवज्ज भुअ॥

छं० ॥ ४०७॥

दूहा॥ लोहानी पग कढ्ढिकै। लज्जानी पग बंधि॥
लज्जि लज्जि गुन लज्जि कै। तेग धरी भर कंध॥

छं० ॥ ४०८॥

घर घर मंगल बोलिये। घर घर दीजै दान॥
से सुष धनि धनि उच्चरै। मल छोरयो चहुआन॥

छं० ॥ ४०९॥

कवि का कहना कि लोह की बेडी के छूटने से क्या होता है नमक की बेडी तो पैरों मे और राजा के आनकी तोष गले में आजन्म के लिये पडी है।

हथ्थ हथ्थ करि प्रेम की। पाइन बेरी लोन॥
गलै तोप न्त्रप आन की। छुट्यौ कहत है कोन॥

छं० ॥ ४१०॥

लोक लज्ज ग्रह लज्ज उर। हठ न रही रिस एक॥
लोह लगर कढ्ढत चरन। लरन हथ्थ लइ तेक॥

छं० ॥ ४११॥

कुंडलिया॥ लरन हथ्थ गहि तेग बर। बोलि समीप प्रमोन॥
बर बंधन सुरतान को। रिन अप्पन चहुआन॥
रिन अप्पन चहुआन। कहै चावंड समेरी॥
लोहानी कर कढ्ढि। लज्ज बंधी बर बेरी॥
हठनि ग्रहन ना करै। करै निग्रह रन मरनह॥
तेगे सिषर जलाइ। देह रावल रन लरनह॥

छं० ॥ ४१२॥

(१) ए कृ को चरन।

पृथ्वीराज का सामंत को घोड़े देना। उन घोड़ों का वर्णन।

भुजंगी ॥ गही तेग भू दंड सामंत राजी। दियौ बाज राजं सुजक्की सुताजी ॥
छवी रत्त स्याहं हवी जानि जंबू। रच्यौ रूप राकी पक्यौ जानि जंबू ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

जरी जीन साकत्ति हेमं हमेलं। निसा निम्मलं किस्न नष्षित्र झेलं ॥
उचं कंध कन्नं नयन्नं न नासं। गनै रंध्र रंध्रं सुधा स्याम सासं ॥
छं० ॥ ४१४ ॥

नषं मंडलं डंड संधं सुधारै। उवं पुट्ठि मंसं दु पुट्ठं उचारै ॥
दुमं इंछनं चाय ढारंत बायं। छिमा छत्र छाया तनै बाजि रायं ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कवित्त ॥ नटिय नट्ट जिम चपल। बदन जिम सरस सद्द कवि ॥
बग्गह मुनि मन गहिय। तिम सु उड्डिय सुरंग दवि ॥
इम चब्बिय करियार। तिम सुमुहरस मुहभिट्ठिय ॥
तिष्षन तरुन कटाच्छ। तिम सुमन मोहन दिट्ठिय ॥
अभिसार रसन उच्छाह जिम। तुंग प्रमत्त सुसील मय ॥
हिंसत[1] हसंत हरसंत नृप। बाज राज दिन्नो तुरिय ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

पवन पाय पूजयो। बेग पुज्जिय कवि चित्तह ॥
पिट्ठि चाप पूजयो। पसम पूजिय नव नीतह ॥
पुच्छ चमर पुज्जयौ। कंध केसनि पुजि केहरि ॥
श्रवन अग्र पुज्जयौ। अग्ग तिष्षह सुडग्गार सर ॥
पुज्जयौ जगत जिहि पूजयौ। सालिग्राम सुंदर सुद्रिग ॥
संभरिय तुरिय पुज्जिय जगत। षंजन नट भट मीन म्रग ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

सूर्य्य के रथ के घोड़ों की चाल का वेग।

दूहा ॥ देषि अश्व दाहिम्म कौ। पुच्छि चंद चित्तंग ॥
कहौ कित्ति कत तौ षडै। रैवत रथ्थ पतंग ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

(१) ए. कृ. को. हिसतह सतह।

कोस सहस नव पट्ट सय । अपिनि अरथ पूरक ॥
गय न गन कविचंद कहि । अश्व काम तें अरक ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

सूर्य्य के रथ की सपूर्ण दिन की चाल ।

गाथा । * ॥ गुन चालीस अरद्ध । अठ्ठ परव अस्सीय लष्ष ॥
असी कोरि परिमानत । दिन मान कोस भानय चल्ल ॥
छं० ॥ ४२० ॥

दूहा ॥ सो बाँज राज दिनौ बगसि । मिलि मगल गल लग्गि ॥
निसि निसान भेरिय सबद । जनु बीर जगावति वग्गि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

सब सामन्तों और रावलजी सहित पृथ्वीराज का युद्ध विषयक सलाह करने के लिये निगम बोध स्थान पर जाना ।

कवित्त ॥ अप्पि न्रपति हयराज । कह्रि वेरी वर छंडे ॥
हरनि सुनी सुरतान । दुला अग्गर भर मंडे ॥
मत्त सूर सामंत । मिलिव मत तत्त विचारौ ॥
सबला सों संग्राम । मत बिन मत सुहारौ ॥
चित्रंग राव रावर समर । समर विद्धि जानै सकाल ॥
बिय निगम बोध धनुह सुदिति । मत्त राज मोहै अकाल ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

एक शिला का डोलना और सब का विस्मित होना ।

दूहा ॥ धर धर धरनिय धरहरिय । कुंडलि किय फनि पुच्छ ॥
तेग पकरि सामंत तब[1] । मिलि बर घल्ल्यौ मुच्छ ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

कवित्त ॥ सिला एक पाषान । हथ्थ तीसह बिय लषिय ॥
दोइ दसकार षवसट्ठि । सट्ठि अंगुल उदर भिय ॥
ता नीचे कंदरा । तहा को सूर निद्रामै ॥

* यह छन्द मो० प्रति में नहीं है ।
(१) ए० कृ० को०-सव ।

ता उप्पर तिहि दिवस। राज बज्जै सादानै॥
आघात सुनत करवट्ट लिय। बज्जै बज्जावन गुरिग॥
अचरिज्ज[1] करिग सामंत प्रभु। भट्ट सहित पारस फिरिग॥
छं०॥ ४२४॥

इक कहै भुअकंप। इक कहै सेसह हल्लिय॥
इक्क कहै उट्ठवै। याहि उठवत भ्रम षुल्लिय॥
छह लंगर गर घल्लि। आव लीनौ उच्छंगह॥
मुष अनिंद चष निंद। अग दिष्यौ बहु रंगह॥
प्रारथ्थि चंद पुच्छै तिनहि। कहं सुजाम कहं उप्पनिय॥
को मात पित्त को[2] नाम तुम। किम सुधान इह नींद किय॥
छं०॥ ४२५॥

शिला के नीचे से एक भीमकाय वीर का निकलना। कवि चंद का पूछना कि तुम कौन हो।

विराज॥ बरंन्नति स्यामं,समंरत्ति कामं। नषं पंडि पीतं,भयं भीम भीतं॥
छं०॥ ४२६॥
जगं जानु रत्तं, हवी जानि लत्तं। कटिं नाभि नीलं,उरं सु अपीलं
छं०॥ ४२७॥
चषं धूमरूपं, मुषं जोग भूपं। भुजा ग्रीव भूरी, सुरं सिद्धि मूरी॥
छं०॥ ४२८॥
सिरं सेत नेतं, विरागी पवेतं। रजंताम नेनं, सुसातुक्क हैनं॥
छं०॥ ४२९॥
डकारंत डक्कं, द्रिगं कंप हक्कं। महावीर वल्ली, दया अग्ग पल्ली॥
छं०॥ ४३०॥
वरं वप्पुजीहं नको लोपि लीहं। गयं गात गेनं, चुलै चंद्र वेनं॥
छं०॥४३१॥
वरदायि बाचं, कहै बीर[3] साचं। * * छं०॥ ४३२॥

(१) मो.-अंरज।
(२) मो.-किहि। (३) ए. कृ. को.-कवि।

वीर का कहना कि मैं शिवजी की जटाओं से उत्पन्न वीर भद्र हूं। वीरभद्र का पूछना कि यह कोलाहल क्या हो रहा है।

कवित्त ॥ दच्छ प्रजापति जग्य। रुद्र निंद्रा सति समरि ॥
तनु तिनु जिमि जग्गयौ। जलन जग्गिय मन मजरि ॥
हय हय हय त्रिभुवन। नाग सुर नर गंध्रव गन ॥
भिरि भिरि न दिय सुभग। भेइय पुकार छंडि दिन।
भयभीत भूत वेताल धन। कंपिल कंपि कैलास डरि ॥
तिहि त्रिसल तेज लग्गिय नयन। जट जुगिंद पिट्टिय सुफिरि ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

सो जटा जनम तिन दिनह। नाम सुहि बीरभद्र धरि ॥
तात नाम त्रिपुरारि। जग्य विध्वसि सीस हरि ॥
सतजुग सकार पनिय। तत्र त्रेता तु बालिय ॥
द्वापर सुमभर सलित। धम्म धरनिय प्रतिपालिय ॥
आनन्द निंद जोगिनि पुरह। काल नाम कलजुग्ग लहि ॥
आवत्त सोर फट्टै श्रवन। किम सुसोर कविचंद कहि ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का कहना कि युद्ध के लिये चामंडराय की बेड़ी खोली गई है उसीके आनंद बधावे का शोर है।

इह सुसोर सुनि स्वामि। इन्द्र वृत्ता सुर लग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वामि। राम रावन घर भग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वामि। पंड कौरव फट्टै अभु ॥
इह सुसोर सुनि स्वामि। जरा सिंधव जद्दव प्रभु ॥
इह सोर स्वामि सामंत मिलि। सुपति साह गोरिय वयर ॥
चावंड राइ कढ्यौ लरन। इह सुसोर ढिल्लिय नयर ॥
छं० ॥ ४३५ ॥

वीरभद्र का कहना कि मैंने बड़े बड़े युद्ध देखे हैं यह क्या युद्ध होगा।

इह मनुष्य मत्ताई। देव देवासुर दिष्षिय ॥
से रंभातारिका। जुद्ध रोजस्तु परष्षिय ॥
रामाइन मंडलिय। मग्ग मागध मँधाता ॥
मान तुरंग दुरजोध। पथ्थ पंडव छह भ्राता ॥
बरदाय द्रुग्ग द्रुग्गह सुजिय। भट्ट जाति जीहं दुनौ ॥
सा भग्ग जुद्ध हिन्दू तुरक। कथ समंत ताथें सुनौ ॥
छं ॥ ४३६ ॥

...वि का कहना कि आपकी देव रांशा है आपने देवताओं के युद्ध देखे हैं यह युद्ध देखकर भी आप प्रसन्न होंगे।

तुम देवह समदेव। जुद्ध देषैति सषाने ॥
ए सामंत उमंत। झझझ देषत विरुझानै ॥
इन आवध आवधै। झक बज्जै झक झाइय ॥
उत्तमंग उत्तरै। सीस हक्कै धर धाइय ॥
जित रुधिर बुंद कांदल परहि। ते कांदल उट्ठहि भिरन ॥
उन बीर संग तुम बीर हुअ। निमिष नेह नच्चै फिरिन ॥
छं० ॥४३७॥

देव देवानहि जुद्ध। ते पुब्ब देषे पुरषारथ ॥
पन्न बीर अति सौम। धीर देष्यौ धट भारथ ॥
देषि बीर मनि[1] हसिव[2]। कह्यौ मन्नौ नहि सच्चौ ॥
उत्तमंग उत्तरै। सूर सथ्थह होय नच्चौ ॥
बज्जै विसाल असिवर निझर। सिव समाधि साधक षुल्लिय ॥
जे पुब्ब देव भारथ दिषिय। दिषि भारथ चिंता डुल्लिय ॥
छं० ॥ ४३८ ॥

तुम मनुछ गति देव। बोल बोलौ मनुच्छ सम ॥
में देषे जदु महिष। तौ न नच्च्यौ छुट्टिय भ्रम ॥

(१) मो.-थनि। (२) ए. कृ. को.-हसत्रि।

धरी एक भै भीत। एक आचिज सुनि वीर॥
रंगत वीर जसमान[1]। लच्छि दह होइ सरीर॥
अचरिज्ज मेर परवत ढहै। धर हल्लै पटतार वर॥
कालक रूप कालो धरा। सुपनि वीर दिष्यो समर॥
छं०॥ ४३९॥

वीरभद्र का कहना कि मुझे युद्ध दिखाने वाला दुर्योधन के सिवाय और कौन है।

दूहा। तब जग्गि वीर मडिग नयन। वयनह अलप प्रबोध॥
मोहि जगावनं जुद्ध को। विन दुरजोधन जोध॥
छं०॥ ४४०॥

रुधिर बूंद कद्दल परहि। असिवर सज्जिय हथ्थ॥
कहै वीर न्रप वीर कहि। अमितचद इह वत्त॥
छं०॥ ४४१॥

कवित्त। जग्गि वीर भैभीत। मुष ज्वाला छवि छुट्टिय॥
डक डकार कंपै त्रिलोक। कपि कधर जग षुट्टिय॥
छिन एक छिमि समूह। वीर हुहुं उच्चार॥
विन दुरजोधन जोध। जोध दिष्यो न विचार॥
आमते मनुष आनत सुनि। पुब्ब कथा दुरजोध सुनि॥
करि राज जग्ग यगमन्न वर[2]। मन जग्गत नीसान धुनि॥
छं०॥ ४४२॥

दुर्योधन की बीरता और हठ रक्षा की प्रशंसा।

जिहि दुरजोधन जोध। सधि मानी न दैव वलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। भूमि दीनी न जीव कलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। दवा अब दसन परष्पिय॥
जिहि दुरजोधन जोध। चीर कढ्ढत नन रष्पिय॥
भष्पिया भष्य[3] पर भूमि पर। धर समान धर नषयौ॥

(१) मो० रगल मज्ज वीर जस मान। (२) मो० करि राजगाइ गमन्न वर।
(३) ए० कृ० को०— मेष।

संकल कलप्प रुधि मंस सों। पंड भोग भुअ चष्षयौ ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

महाभारत के युद्ध की संक्षेप भूमिका।

प्रान रष्षि रा पंड। डंड आरन्नि वास किय ॥
हेत रष्षि बलिराय। सपत पाताल जाय जिय ॥
भगत रष्षि प्रहलाद। तात दिषि नष्ष विदारत ॥
क्रमा रष्षि रघुराइ। दैत जुरि जग्य बिगारत ॥
धन धवल गरुव गंधारि उर। गदा कदंब वपु अटल धुअ ॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। मान रष्षि दुरजोध भुअ ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

न को जियत दिष्षियन[1]। मरन दिष्षियै न लोई ॥
मात अभ्भ जनमीय। काम अवसर जुग सोई ॥
क्रोध लोभ माया न मोह। तार तंत्री जिड भोगी[2] ॥
विक्रम क्रम नचियन। जोग नंचै विधि रोगी ॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। बहुत काल इहि थान भय ॥
हा हंत हंत तत गुर गनिय। सुनो भट्ट तत मत्तलय ॥
छं० ॥ ४४५ ॥

भीषमजी के विषम युद्ध का संक्षेप वर्णन।

भुजंगी। जिनै जोध दुरजोधनं जुद्ध कीनौ। जिनै दीहनौ दूनकौ ब्रत्तलीनौ ॥
जिनै अप्प आपं प्रतंग्या निवारी। जिनै नंदनंदं[3] परं पैज पारी ॥
छं० ॥ ४४६ ॥

जिनै चक्रधारी कियौ चक्ररूपं। जंही जांहि रुंधे तहीं तांह जूपं ॥
जबै पथ्थ रथ्थं चषं लोपि कोपं। कियौ षंड षंडं रथं बान धोपं ॥
छं० ॥ ४४७ ॥

(१) ए० कृ० को दिष्षिगन। (२) मो० जोगी।
(३) मो०—नद नंदी।

हनूमान पत्थौ¹ पताकी पतंग । हन्यौ सेत बाजी गुऋ जोगि भग ॥
अर्ध तीन कर्यौ नग जीव गज्यौ । दियौ देवदत्त धनुजीव बज्यौ॥
छं० ॥ ४४८ ॥

कियौ छीन छीन सनोहति छीन । जटू देववादौ रुधिर्द्व भीन ॥
सुभ स्याम रत्त सु स्याम सुदेस । मधू माधवें जानि माधुर्ज्य केस ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

जकी जोगमाया बकी थान थान । कहै देव देवान जान न जान॥
न जान न जान न जानति जान । न तचौ न जचौ न मचौ न मान॥
छं० ॥ ४५० ॥

हयती हयती हयती प्रमान । भरती भरती धरतीति बान ॥
रथती रथती रथग सुपान । * * * * छं० ॥ ४५१ ॥
कुर पडपड पल्ल पड जूर । सुरग सुरग बर बाल रूर ॥
ततथ्थे ततथ्थे तथ न्नत्य वार । निरपत फट्ट करत उधार ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

चवट्ठी चवट्ठी चवै सिध पूर । बिताली बिताल करै तार तूर ॥
फिरै जोगिनी जोग माया सतत्य । हुढे लोक लोक नलोक सुनथ्य
छं० ॥ ४५३ ॥

स्वयं ब्रह्म पूछ्यौ धरै ध्यान ईस । दिषे देव देवाग² भारथ्थ रीस ॥
तहा आय दिध्यौ स्वयं ब्रह्मनाथ । कियौ वज्र रूप कियौ वज्र हाथ
छं० ॥ ४५४ ॥

पथत पथत पथ पार पार । भरती भरती भरतीति सार ॥
कथती कथती कथ मार मार । * * छं० ॥ ४५५ ॥
बजती बजती बज³ धाय धाय । नवती नवती नवतीत पाय ॥
लुटे⁴ पट्ट पीत करी तेज वान्यौ । धवै सिघ सैल महामत्तजान्यौ ॥
छं० ॥ ४५६ ॥

करै चक्र वक्र उनके प्रवानी । भुले भट्ट नाही चित मत्त बानी ॥

(१) ए० कृ० को—छट्यौ । (२) मो०—देवज । (३) मो०—जनती निघाप ।
(४) ए० कृ० को०—तुटे ।

उचै चरन उट्ठै लगे भूमि आवै। पिछे बीर अप्पै जु पाताल पावै॥
छं० ॥ ४५७ ॥

कटी पट्ट छूटौ लुथ्यौ पट्ट पीतं। नसंभूल बंभू भया भीम भीतं॥
छं० ॥ ४५८ ॥

दूहा ॥ अभय भीति भीगम सुभर। रूप दिय अरध उदार॥
आनु आनु अवनिय धरन। कह्यौ संतन राजकुमार॥
छं० ॥ ४५९ ॥

भै भ्रित रोम सभ्रित्त भर। तारस लागि क्रिसान॥
दसों दिसिनि द्रिगपाल डर। भै अरन्य भ्रिह्मयान॥
छं० ॥ ४६० ॥

वीरभद्र का कहना कि ऐसा विकट युद्ध देख कर तब से मैं सोया हुआ हूं।

छित श्रोनित छिछै सुतन[1]। सुतन लागि चष दून॥
जनों अमर पूजहि अमर। बर बंधन परसून॥
छं० ॥ ४६१

सुकरि ग्यान स्तुतौ सुमरि। हिय धरि ध्यान गुविंद॥
मंद हास मंडिग बयन। कहि कविंद[2] कविचंद॥
छं० ॥ ४६२

तल वैतल धुक्किय धरनि। कारस चक्क लिय धाय॥
सुर नर नागनि बंधि घन। भै भग्गै अकुलाइ॥
छं० ॥४६३

चरन नीच उंचिय अवनि। कमट पिट्ट दर नाग॥
चकित अट्ठ द्रिगपाल कुल। सुष चिक्करि भै भाग॥ छं० ॥४६४
प्रलै जलह जल हर चलिग। बल बंधन बलिचार॥
रथ चक्कह हरि कर करिय। परि पर बत परतार॥
छं० ॥ ४६५

(१) ए० कृ० को०--सुवन। (२) ए० कृ० कों०--कहिद।

वीरभद्र की सुसुप्त अवस्था का भयानक भेष।

भुजंगी ॥ धरे ध्यान हूतौ बली वीरभद्रं । मनों पेपि आकास विद कविद्रं ॥
हय जोय एकं चार चक्र एकं । प्रलै कोल सज्यौ मनों ईस वक्र ॥
छं० ॥ ४६६ ॥

भुञ भार भार सुभार सुनेन । दिसा रत्त अरविंद सवै सवैन ॥
सपा भीर हूई धर भार भान । चिपा छत्र छची न छनी दिदान ॥
छं० ॥ ४६७ ॥

भ्रिगू पत्ति जान्यौ सु तान्यौ धनुक । करो हन जानौ सुतानौ पिनक॥
जुरी डंड षंड पिता माहि मुक्क्यौ।तुमैं जानि षंड परा काम चुक्क्यौ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

रज ताल बीछौ रथ वधि उच्च । सिध सस्त्र कढ्ढौ धरा पारि नच्च
महारेथ्थ सारथ्थ पारथ्थ पान । लघु लाघ विद्या सुपूजै गियान ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गुन दिठ्ठ लोन[१] जुधानं धरान । क्रिपाल क्रिपाकी क्रिपाके निधान॥
सुप तो मुकद मुकत्ती प्रसाद । प्रतग्या प्रमान केली क्रांति वाद ॥
छं० ॥ ४७० ॥

अभेद सरीर द्रस तोपि नैन । क्रित लोक सोक भय भै अभैन ॥
क्रित पुन्य पुब्ब न जानौ गुसाईं । ग्रसै कोल व्याल भए को सहाईं ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

दूहा ॥ मैं दिठि दिठ्ठि निहट्टि हरि । धरि मिट्टिय निज निंद ॥
जिहि सुकज हूरति हियै[२] । बिसरि जाइ तेगंद ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

कवि का वीरभद्र से कहना कि आप हमारे राजा की सभा मे चलकरे सलाह सुनिए क्योंकि आप तीन काल की जानते है।

कहन चंद उद्दिम कियौ । सुनन वीर धरि कान ।
भापा सब्ब परप्पहु । नव रस सब्ब सुरान ॥ छं० ४७३ ॥

(१) को तोन। (२) ए कृ को तिहिजिये।

तुम भवस्य जानहु सकल। अकल अपूरब बत्त ॥
सुमत बैठि सामंत सब। सुनहु तौ कहुं कवित्त ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

कवित्त ॥ अगह मगह दाहिमो। देव रिपुराइ पयंकर ॥
कूरमंत जिन करौ। मिले जंबू वै जंगर ॥
मो सहनामा सुनौ। एह परमारथ सुझझै ॥
अष्पै चन्द बिरद्द। बियौ कोइ एह न बुझझै ॥
प्रथिराज सुनवि संभरि धनी। इह संभलि संभारि रिस ॥
कैमास वलिष्ट[1] बसीठ विन। म्लेछ बंध बंध्यो मरिस ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

दूहा ॥ सभा वत्त इह चंद कहि। सुनिय वीर धरि कान ॥
राजन मन अदेस धरि। जु कछु बिद्धि निमान ॥
छं० ॥ ४७६ ॥

वीर का जंभाई लेकर उठना और पृथ्वीराज की सभा में जाकर बैठना तथा सामन्तों के नाम पूछना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त कविचंद। वीर अदभुत्त मंनि मन ॥
एह वत्त आचिज्ज। सूर सामंत कहिय जन ॥
उठु वीर करि जंभ। अंग मोरिय उत्तानह ॥
जाय बयट्ठौ पास। सूर सामंत सभा महि ॥
पुच्छी सुवत कविचन्द सों। अहो चन्द बरदाय सुनि ॥
लै नाम सूर सामंत सब। मोहि दिषावहु मंत गुनि ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

कवि चंद का सामन्तों के नाम बताना और जामराय यद्दव का कहना कि कैमास के मरने से मुसलमानी दल सहजोर हो गया है।

इ जैत राव चामंड राव। इह देव रा बग्गरिय ॥

(१) ए. कृ को बासिष्ठ.।

इह वलिय राव वलिभद्र। राम कूरभ सभरिय॥
इह पीची राव प्रसग। जाम जादो भर भष्पिय॥
रवनि[1] राज पहु प्रान। साम दानह धर रष्पिय॥
सामंत मंत कैमास विन। वल वध्यौ सुरतान दल॥
सामंत सिघ दुज्जन सया। दया न किज्जै काल पल॥

छ०॥ ४७८॥

चामंडराय का कहना कि गत पर सोच क्या, जो आगे आई है उस पर विचार करो।

कहै राव चामंड। जाम जदों सुनि वत्तिय॥
गत्त सोच जिन करौ। सोच भग्गै वल छत्तिय॥
सुष अंतर दुष होइ। दुषह अंतर सुष पाइय॥
सुष दुष वध्यौ जीव। जीव वध्यौ मन गाइय॥
मन स्वामि भ्रम्म वध्यो रहै। स्वामि धरम वधिय मुगति॥
सा मुगति वध सुरतान दल। मथिन सूर कढ़ौ जुगति॥

छ०॥ ४७९॥

जामराय का कहना कि तुम्हारी तो अकल मारी गई है इधर देखो सौ में से सात वाकी है।

पुनि जंपै जद्दो जुवान। चामंड राव सुनि॥
तुम पग लग्गो लोह। लोह लग्गै गत मत[2] हनि॥
साम दान अरु भेद। वका तौ काक करिज्जै॥
काक वक भरि होइ। वक भर भूपति छिज्जै॥
सुरतान षान षुरसान पति। दल वद्दल पावस मनो॥
प्रथिराज साथ सामंत सौ। तिनमहि छह सतह गनो॥

छ०॥४८०॥

चामंडराय का वचन।

तब जपै चामंड राइ। जादो जम वत्तिय॥

(१) ए० कृ० को०—वरनि।　　　　(२) ए० कृ० को०—मत्तानि मतानि।

हम पग लग्गो लोह। लोह लग्गो गत मत्तिय ॥
जौ तो सूं तूं कहै। तो राज को काज विनासै ॥
अद्ध रयनि उठि जाहि। करै दुज्जनपुर वासै ॥
हम पगनि बहुरि बेरी मरौ। लरि न मरैं जहों कहै ॥
जहं जहं सुदैव कुल संसवै। तहं तहं पंजर पुरस है ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

बलिभद्रराय का बचन।

तब कहै राव बलिभद्र। काम कूरौ मंतानिय ॥
सबलों सों संग्राम। राज भज्जै राजानिय ॥
कहं कहां को ढोलरै। ढाल ढोरी ढुंढारी ॥
कूरंभा ऊपरें। डाढ़ ढिल्ली उच्छारी ॥
औरैं सुमुष्ष अंसर उरी। मन साषी जानैं जनां ॥
असुमेध जग्य यौ है तनौ। जनमेजै वरज्यौ घनां ॥ छं०॥ ४८२॥

रघुवंश राम का रात्रि को धावा करने की सलाह देना।

बर बीरह रघुबंस। राम रति वाह उचारिय ॥
जीव संक छची अग्ग। मिलि जु संकर पह सारिय ॥
आगैंही इहि बंस। बाच दिठ मरनह डिठ्यौ ॥
सांम अग्ग समलोह। अजै गिरि में रचि गढ्ढौ ॥
तुट्टै कमन्ध उट्ठै धपिग। बिपथ सीस हंकारयौ ॥
प्रथिराज संग बन्धौ मरन। परिय नृपति अरि धारयौ ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

रे गुज्जर गांवार। अब्ब तजि सज्जि सुमंतं ॥
मोहि ईस आसीस। लागि अंगन रवि रत्तं ॥
मरन सोय अरि हरन। सेन साहाब सबन मथ ॥
भान रथ्थ षंचि है। देव देषै सु सक्कि रथ ॥
भारथ्थ थंभि रष्षै अरी। रतन रष्षि बर रतन लजि ॥
चहुआन आन सुरतान सों। सामर[1] सजि लज्जी बरजि ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सागर।

बलभद्रराय का बचन।

फिरि उच्चरि कूरंभ। तत मतह उच्चारिय॥
जै पुब्बह बन्धान। टरैं सनबन्ध न टारिय॥
व्यास वचन जनमेज। सत्त जानी असत्ति करि॥
कूम बन्धन पै आहि। मन्ति आयौ सुभ ढि धरि॥
आचिज्ज हरिय उत्तर दिसा। मद्धे बडवानल बिसहि॥
वरजयौ सत्त वचननि तबै। तात जानि नाही असहि॥
छं०॥ ४८४॥

सुनि अचिज्ज है हेरि। राज स मुह उच्छाइय॥
हरि दिष्षौ मनु फिरैं। जग्य बड वाजि वसाइय॥
वड वन्धा करि वन्ध। उच उंवी जु सेमेरी॥
व्यास वचन करि असति। जग्य जपन कहि फेरी॥
सोइ जग्य कियौ पहु पडकुल(१)। तरुन वीर वभन्न वरि॥
सनमध जीव जुड्ह सुगति। सो न टरै टारीय टरि॥ छं०॥ ४८५॥
दूहा॥ ए उदार लज्जिय सुजल। कवि वृधि उठ्ठिय आस॥
मरन सुलज्जी व धयौ। जपि उदार प्रयास॥
॥ छं०॥४८६॥

रामराय वडगुज्जर के वचन।

कवित्त॥ कहैं राय रामदे। राइ रावत अज्जून॥
हैं हथ्यौ नौसाज। राज(२) लद्दौ पज्जून॥
सामता उभ्भार। जुद्द अथ्था सथ्थानौ॥
सौ अग्गानौ सट्ठि। सट्ठि आनौ पगानौ॥
म्हैं गामी गुज्जर गहिलया। ह साई ह साइया॥
रतिवाह देहु सुरतान दल। रपि राजन लगि पाइया॥
॥ छं०॥ ४८७॥

तुम भोरे भीमकैं। रत्ति सोमति ज्यो जित्तिय॥
ज्यौ दुज भोरे अव। धाय धत्तूरस पत्तिय॥

(१) ए० कृ० को० पहुपग कुल।　　[२] ए० कृ० को० रात।

आसामी असपत्ति। लाष कुरकार[1] चढाइय ॥
हस्तीनी चिक्कार। फटै रासभ उरझाइय।
पुंडीर राव भग्गौ भिरां। जे सुरतान बंधाइया ॥
आभंग जंग[2] अनभंग भर। ते कनवज्ज जुझाइयां ॥ छं० ॥४८८॥

चामंडराय का रामराय को व्यंग बचन कह कर हँसी उड़ाना।

दै गारी गुज्जरह। राय चामंड कहानौ ॥
ए जादों कूरंभ। जिय न बंछै सु सदानौ ॥
षीची राव प्रसंग। चोर बंधे सुपुराना ॥
ते वीरंग बिडार। डाक वज्जे उम्भाना ॥
गोयंदराज बोला बरै। महिल केलि कलपंत किय ॥
पंजाब पंच पंचह सुपथ। जात गात रष्यौ सुजिय ॥
॥ छं० ॥४८९॥

दूहा ॥ लछ बल छुट्टे पंग पहि। सत छह छचनि छच ॥
समर सगण्पन देव तन। कहौ न मुह भरि तच[3] ॥
॥ छं० ॥ ४९० ॥

सब लोगों का हँसना और बलिभद्रराय का रावको धिक्कारना।

कवित्त ॥ तब सुराव बलिभद्र। हथ्थ जद्दों दै धारिय ॥
बड़ गुज्जर दाहिमा। बोल लगै अधिकारिय ॥
को सेवक को सांई। कोन भर धर किन षाइय ॥
केहुं ना घर जरै। हाससे कैको आइय ॥
सनमंध राय सगपन कियौ। पच्छै को केही कहै ॥
सहगवन राज सुरपुर करै। ढोली कछु वासन लहै ॥
॥ छं०॥ ४९१ ॥

[१] ए० कृ० को०-साकुर। [२] ए० कृ० शो०-बुज्झ।
[३] ए० कृ० को०-वत्त।

रामराय यादव का चामड की चिध्धी उड़ाना।

तब कहै जैत पवार। साम भ्रम्मह इन जानिय॥
कारन अग्गै द्रौपदी। चीर दुस्सासन तानिय॥
पिता दोष जान्यौ न। सेव अंगद घनमडिय॥
बध दोष बेगी प्रमान। राव चामडह छडिय॥
जो दोष सामि तुछ उप्परै। काम दुप्प बहु कर॥
परसग राव पीची सुनै। मुकि राज छडिय बर॥
॥ छ० ॥४९२॥

चामंडराय का गुस्से होकर जैतराव की तरफ देखना।

दूहा॥ चिसल तेज लग्गी बिभुअ। चपरता हवि जान॥
जैत राव वरजो इन्हैं। इकटिह देलवियान[१]॥
छ० ॥ ४९३ ॥

इन कठन दिल्लिय नगर। इन कठन लगि राज॥
इन आवध काढै न्रपति। साहि आज की काज॥
छ० ॥ ४९४ ॥

जैतराव का दोनों के शान्त करके राजा से कहना कि लोहाना से पूछिए ?

कबित्त॥ राज काज पामार। सिघ उच्चार वार तिहि॥
हो जादो जामानि। वलिय बलिभद्र वार इहि॥
वह गामी गामार। राम रति वाह सुजपै॥
ससि पडौ पुरसान। अधर गुज्जर ग्रह जपै॥
न्रिधात पात भज्जै सयन। गहन राज रवि उग्रहै॥
आजान वाह पुच्छौ न्रपति। स्वामि भ्रम सिर न्रिब्रहै॥
छ० ॥ ४९५ ॥

लोहाना का कहना कि जहा रावलजी उपस्थित है वहा और कोई क्या कह सकता है।

तब लौहानौ आजान। वाह वह वह वक्कारिय॥

[१] मे एक टह दिपालेया पान।

समर सिंघ रावर। समुष अग्गै हक्कारिय॥
तुम सुधरम राजन। अनेय लज्जा अधिकारिय॥
जो अमंत सामंत। ताहि मंता उत्तारिय॥
दस लष्ष भष्प सुरतान दल। तनु तुरंग उत्तंग वर॥
रुधि मंस अस्ति बस प्रान तुम। कन पिसान दृपहि सुकर॥
छं० ॥ ४९६॥

पुनः लोहाना वचन।

तब चिचंग नरिंद। चिंत चिंता चिंतोनी॥
भव भविष्य निम्मयौ। ब्रह्म जानै न बिनानी॥
तुम अजाब अंगवनि। जंग सुरतान विचारिय॥
रत्ति बाह दिन बोह। कलह केली सु सुधारिय॥
सुभ थान प्रान पतिसाह कौ। राज पान संमुह लरै॥
बत्तीय बिकत्ति जंपै सुकवि। बहसि बहसि बुल्ल्यौ बुरै॥
छं० ॥ ४९७॥

चामंड राय बचन।

कहै राव चामंड। अस्ति कर दुष्पिन सागर॥
काली कर दुष्पैन। रकत वर जोगिनतावर॥
इन्द्र आदि दुष्पैन। पंक्ष प्रव्वत्त प्राहारै।
चंद हथ्थ दुष्पैन। गुड्ड तारक्क वीचारै॥
थक्कैन हथ्थ वर करन सुत्र। मंस काज विभ्भूत बर॥
संग्राम काम कारन भिरन। सो न थक्कै रजपूत कर॥
छं० ॥४९८॥

पृथ्वीराज बचन।

पहुमि ईस पलटौस। रोस तजि रहसि विचारिय॥
प्रिथा कंत सोमेस। तनं हँसि हँसि दिय तारिय॥
निसा अद्ध वत्तरी। देव कंदल नहि पिष्पै॥
हम मनुष्य तन रूप। कित्ति कहि कहि कह भष्पै॥
धवली सुरेंन धवली दिसा। धवल कंध सनमुष लरहि॥

सोमेस आन सुरतान सो। जौ न जुद्ध इत्तौ करहि ॥
छं० ॥ ४९९ ॥

लोहाना आजान बाहु वचन।

अद्ध रयन अतरिय। जाम जामानि भतारिय ॥
सामंता रौ साथ। अरध चढि[1] अरध उतारिय ॥
मुक्कि बान कम्मान। तुग तरवारि कटारिय ॥
हथ्थ[2] घल्लि सिर मडि। रुद्र लोह उचारिय ॥
आजान बाहु इम उच्चरै। बावारौ लबौ भुआ ॥
प्रथिराज काज इक्कै सरै। पै चित्रकोटि रावल दुआ ॥
छं० ॥५००॥

प्रसगराय खीची वचन।

विहसि राव परसग। पिज्जे पीची चमरालिय ॥
राज नैन दिय सैन। वयन बुल्ल्यौ बढारिय ॥
रे गुज्जर रे जैन। अरे चावड राइ सुनि ॥
राजादो क्रूरभ। बलिय बलिभद्र सीस धुनि।
सुरतान छच अनछ्च करि। राज सीस छचह धरो ॥
इह समर सिध रावल सुनै। जौ न जुद्ध इत्तौ करो ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

चामड राय का वचन।

पिभ्भयौ राव चामड। चित्त लग्गि चय भृत्र वरा ॥
अवर मत्त सामत। बोल बौलै ति मत्ति धरा ॥
राज मद्द धन मद्द। मद्द जोवन धन धारौ ॥
सवै मद्द उत्तारै। यग्ग सुरतान सुभ्भारौ[3] ॥
जे होय सूर सूरह सुबर। निपन सूर जुद्ध जई ॥
बोले न बैन समझे घन। सग्रामह अरि हकई ॥

छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चढ। (२) ए० कृ० को० हाथ्थ वघ गर घल्लि।
(३) मो० सूपारी।

बरहमंड चामंड । षग्ग उर्चरिग मंत मह ॥
षग्ग मग्ग अन दग्ग । अप्प स्वामित्त रत्तरह ॥
उभरि साहि बिधि बद्ध । छिनन इत उत बर बज्जै ॥
टरै न द्रिग टारंत । बीर गाजै धर गज्जै ॥
नर मंत देव मंडल मुषह । सुषह सद्ध अध अद्ध हुअ ॥
बर बरै बीर दाहर तनौ । रहति चंद मन्नेति धुअ ॥
छं० ॥ ५०३

जैत प्रमार बचन ।

कहै जैत पामार । बार बिग्गरी तुम्हारी ॥
कही सुनी चामंड । जाम जद्दों अधिकारी ॥
अप्प पान तोलियै । सेन सुरतान निहारौ ॥
मवन मंत चुक्कियै । धरम छत्रौ जिन हारौ ॥
सर बर सुबीर[1] संभरि धनिय । मुहि प्रतीत राजन तनी ॥
जै अजै भाग भूपति बढ़ै । पै चढ़ै धार धारह धनी ॥
छं० ॥ ५०४

गुरुराम प्रोहित का बचन ।

तबै कहै राम गुर राज । सेन तोलौ राजानी ॥
सुनौ सूर सामंत । मंत कलहंत प्रमानी ॥
किं जानै किं होय । सूर उट्ठै ढिल्लानी ॥
उतराधी उत्तरै । जाय संमद साहानी ॥
भज्जै भरम्म चहुआन कौ । मंत मफ्फ कलहंत भौ ॥
जानहि न जुद्ध बंभन मरन । इन महि छुट्टिय सग्गभौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

देवराज बग्गरी बचन ।

देव राज बग्गरी । बीर बीरह बरु बंध्यौ ॥
करौ जु कोइ करि सकै । साम दानह मिलि संध्यौ ॥
मोहि राज प्रथिराज । काज केवल कलहंतिय ॥

(१) मो.-रस वर सुवर

जन जोर सुर सारि। सार भग्गै रहि ततिय॥
जीवन हथ्थ तुम सथ्थ सुर। तनक लाज दुहु भुज धरौ॥
मो बुझ्झि जुझ्झि समुह लरौ। न लरौ तौ फुनि पच्छै मरौ॥
छं० ॥५०६॥

गुरुराम वचन।

कुसुमै जुध कीजै न। सार भर धार भिरै कस॥
अजै होत अरि हसै। विजै सदेह देव बस॥
ता कारन घर घेरि। भिरत जुटि प्रथम जोरी॥
इन बात करत कुढंग। मूल वहुरतर फोरी॥
गुरु राज राम इम उच्चरै। समर सिंह प्रथिराज प्रति॥
धर साम दान भेदह रहैं। जु कछु करौ सो मंत मति॥
छं० ॥ ५०७॥

पृथ्वीराज वचन।

तू कुपट्ट दुजराज। राज राजन क्रित कथी॥
जुद्ध रूप पुर प्रथम। जुद्ध करि जुद्ध निकथी॥
वहू जाइ भर जीय। सुकति कित्ती भर[1] अग्गा॥
सोइ जब सुह भोगवै। चिहुट चीर जिम लग्गा॥
कायरन काज आवै वसुह। वसुह न काइर घर रहै॥
ज्यौ वसुरत्ती सुर सूर सुआ। त्यौ राजा वसि इल रहैं॥
छं० ॥ ५०८॥

वीर माल्हन वचन।

समुह वीर समवीर। मत माल्हन इह सारिय॥
राज समुह रासलह। दिठ्ठ सूरति सचारिय॥
सुमन जेम जन महै। क्राम गोरिय गुर ढिल्लन॥
इअ अजथ्थ मन मत्त। टरहु जीवन कलि पिल्लन॥
अनुचरहु धरम चहुआन रन। मन सुसाहि साहाव सम॥
दुरजथ दुराय छुट्टन सुगति। निय नियान पुट्टै सुदम॥
छं० ॥ ५०९॥

(१) मो॰ भग

गुरुराम वचन ।

बहसि गुज्जर परिहार। जियन जुग तत्त बिचारिय ॥
सुभट मंत जानहु न। राज भंजै पचारिय ॥
मत पष्षै कैमास। जुद्ध बंध्यौ सुविहानं ।
बिरद मंत मंतयौ। सबर अरि तजि सुरतानं ॥
जप होम मंत्र बलिदान तप। दुष्ट ग्रहं ग्रह टारियै ॥
चौरासि जीव भोगै मनिछ। सो जीव मत्त विन डारियै ॥
छं० ॥ ५१० ॥

राम राय रघुवंसी वचन ।

सुनि गुज्जर गांवार। राम उच्चरै सत्ति बर ॥
सर पुट्ठै गा हंस। अद्ध पिष्पियै अधा धर ॥
दै अचार कुल अधम। राम रोगौ नह बुझ्झै ॥
ताव जुरा धृत देइ। कित्ति अन कित्तिय सुझ्झै ॥
सुरतान सेन कित्तक बहन। अरु कित्ती कुल भंजियै ॥
पारथ्थि राव रावल सुनै। जिन कित्ती ते लज्जियै ॥
छं० ॥ ५११ ॥

आल्हन परिहार वचन ।

परसि अमत परिहार। गुज्ज गांवार बात सुनि ॥
जनम लोभ इह जानि। कित्ति मंडियै तनह पुनि ॥
जु कछु जंत निम्मए। कहै सब माया मेरी ॥
माया मेरी कहत। निमुष चलतें नह हेरी ॥
सो मित्र नंद अप्पन मुगति। जुगति मोह भंजै गिरै ॥
भोगवै दुष्प जीवै बहुत। कहौ जु कछु जिहि उव्वरै ।
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रसंगराय खीची वचन ।

पुनि कहै राव परसंग। बिहंसि बुल्ल्यौ चमरारिय ॥
इनहि सूर सांमंत। बार बेरह नह[1] झालिय[2] ॥

(१) ए० कृ० को०—हरन। (२) ए० कृ० को०—डालिय।

विषम दोह लग्गी प्रमान। रति वाह करिज्जै॥
अजहु हमे संग्राम। फेरि सुरतान गहिज्जै॥
रष्षनह राह ज्यौ उडगनह। सयन चंद चँपि चंद गहि॥
ग्रह भजन भरम जामन मरन। कित्ति काल कूटी फुरहि[1]॥
छं०॥ ५१३॥

सुनि सुमत सामंत। सुचिय बंधवति पुत्र सम॥
साम अग्गि गुर मंच। तत्त जानौ सु छुट्टि भ्रम॥
सहस धीर ज्यौ सूर। सहज लग्गीत ग्रहन[2] वर॥
वुद्धि[3] पराक्रम बंध। सुरन अप्पौ राजी वर॥
चित्रंग राव रावल समर। समर मोह ग्रह जस छुटी॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। यों अवाज सम्मर फुटी[4]॥
छं०॥ ५१४॥

देवराज वग्गरी वचन।

दूहा। देवराज जंपि जैत सों। तुम जानौ सब तंत॥
उहि दिन वहु जित्तेरवंद। इहि दिन इह गत मंत॥
छं०॥ ५१५॥

कवित्त। एक सुदिन सामंत। साहि गोरी गहि बंध्यौ॥
एक सुदिन सामंत। पग जग्गह घर रुंध्यौ॥
एक सुदिन सामंत। चाय चालुक्क विडार्यौ॥
एक सुदिन सामंत। राज रिनथंभ उधार्यौ॥
दिन एक स्वामि सामंत कौ। मत छंडि कलहंत रजि॥
मुष लोकि लोकि जीवंत जरिय। घरिय षट्ट घरियार वजि॥
छं०॥ ५१६॥

सब सामंत अमंत। सुनिय वोल्यौ गिरवर पति॥
अहो सूर सामंत। अंत कालह विगरिय मति॥
अप्प अप्प मुष चवै। भेद अंतर गति मंडै॥

(१) ए० कृ० को०—लुराहि। (२) ए० कृ० को०—ग्रहत।
(३) ए० कृ० को०—वहत। (४) ए० कृ० को०—पुटी।

इहै अष्टम अत होय। अहित दित दोऊ पंडै ॥
तुम करहु मंत एकंत मिलि। जुड्ड अग्ग छत्रपत्ति छिति ॥
जानौ न और उपजै न कछु। इहै पंथ आदिहि विगति ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

दूहा। समर समर बत्ती सुनी। हुए सबै मति एक ॥
इह जुगिंद अग्या दई। ग्रहैं लरन कर तेक ॥ छं० ॥ ५१८ ॥

सामंतों की बात सुन कर रावल जी का किंचित रुष्ट सा होना।

कवित्त। जुड्ड मंत सामंत। थपिय चहुआन प्रान धन ॥
सबै सूर सामंत। चिंत लागै सु जोर मन ॥
मुष्ष तेज असहेज। नेंन नंचै सु सूर रस ॥
उड्डलोक आपेष। अग्ग अम्मैव स्वामि तस ॥
सा लष्षि अष्षि गिरि चित्रपति। दुसह काल कारन धर्यौ ॥
सनमंध सगप्पन जानि जिय। सुअन सोम प्रति उच्चर्यौ ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सब सामंतों का कहना कि जो कुछ रावल जी कहैं सो हम सबको स्वीकार है। रावलजी का कहना कि कुमार रेनसी को पाट बैठाल कर युद्ध किया जाय।

पद्धरी। उच्चर्यौ इष्षि दष्षिन नरेस। मन्नेव विषम क्रित काल एस ॥
थंभ्भ्यौ भेव अंतर उरेव। जग्गयौ बीर दैवात देव ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दिल्लीव बंध बंधौ सु पथ्थ। रष्षहु कुमार भर रेन सथ्थ ॥
समरे वत्त सा संभरेस। मन्नेव मत्त हित्तं हरेस ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बोल्लयौ राज ज्ञामानि ताम। साहाब अव्व बल बिषम काम ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनंत। मडौ बधिग्ति पच्छेव मंत ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

जपी सुवत्त रावल सहित्त । सची सुसोय सुम्मा सुमित्त ॥
सुम्मान ग्यान जोगिंद राज । त्रैकाल ग्यान सुभझ्झै सुभ्राज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

त्रयगुन अतीत बुझ्झै त्रिलोइ । जग तत्त मत कारन सुजोय ॥
वैदेह जेह वैदेह अप्प । पग्गाह सुबुद्धि सुव गग तप्प ॥छं०॥५२४॥

ब्रह्मंड पिंड बुझ्झै पुरान । पट दुम्म दुम्म विद्या विनान ॥
आगम गम बुझ्झै गुनाह । बुझ्झैव ग्यान मग्गा अथाह ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

अवधूत राइ गोरष्य ग्यान । नर लोइ देह देवग जान ॥
सनमध सगप्पन अप्पनेह । जप्यौ सुकित्य कारन्न तेह ॥छं०॥५२६॥

इम हीन आउ सोमत सूर । बुझ्झैव पच्छ मडी समूर ॥
रष्यौ सुपच्छ रैन समुझ्झ । रष्यहि सु देस दिल्ली सु गुझ्झ ॥
छं० ॥ ५२७ ॥

उच्चर्‌यौ ताम जादो सुजाम । धनि मत्ति गत्ति चहुआन ताम ॥
रष्यौ सु इह भर पच्छ काज । थभै सुदेस रष्पै सुलाज ॥छं०॥५२८॥

जिहि पुत्त एक सा पुत्त ग्रेह । थभै सुराज कुल वट्ट तेह ॥
विन पुत्त जेम देवल अथभ । ढहि परै भिन्न भिन्नह अचभ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

विन पुत्त पच्छ जानै न नाम । सुभ क्रम धम्म को करै काम ॥
देवत देव देवीन लोक । मागत पुत्त विन सबे फोक ॥
छं० ॥ ५३० ॥

तिन काज राज इह मतौ मन्नि । चित्रग राज जपै सु धन्नि ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

पृथ्वीराज का रावल जी का वचन मान कर जैतराव के ऊपर कुमार का भार देना ।

कवित्त । सुनिय बत्त चहुआन । हित्त आमित्त मन्नि मन ॥
पहु चित्यौ पामार । छोनि[२] कुम्मार लाज तन ॥

[१] मो०-चित्त　　　　　　　　(२) को०-छोर ।

मंत गंठि मन संठि। जैत रष्षहित राज रह ॥
घरिय होय साधीय। अप्प गंभीर धीर तह ॥
सनमुष्ष आय सिर नाय करि। कहि राजन परसंस करि ॥
राषहु सुराज ढिल्लिय सुथल। राज चित्त जानहु सुपरि[1] ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सो संभरि ढिल्लीस। जैत अप्पह आभासिय ॥
करिय कित्ति विधि नीति। रीति राजंग रहासिय ॥
रयन पान संग्रहौ। देस सिर भार सुधारौ ॥
रष्षहु रज चहुआन। प्रीति अप्पा प्रतिपारौ ॥
उच्चर्‌यौ गरुअ पामार गजि। पग्ग सीस आयास सजि ॥
आरत्ति नेन श्रुति बेन तन। उहसि रोम मुछां उसजि[2] ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

जैतराव का राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार करना।

तबै कहै जैत पामार। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
अज्ज कज्ज मोकंध। रेन कारन्न आनि गुनि ॥
आदि छच तुम सीस। अज्ज सिर सुक्क्‌ह्न कित्ति पल ॥
भर गोरी गरुअत्त। करौं उभक्‌झार झार दल ॥
संचरो संक्‌ह्न बिंबे बहरि। विधि कारन मो कंध दिय ॥
को करहु बंध संधहि सकल। मैं जित्त हरि लोक लिय ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

प्रसंगराय खीची और अन्य सब सामंतों का भी दिल्ली में रहने से नाहीं करना तब रावलजी का अपने भतीजे बीरसिंह को राज्य का भार देना और सामंत कुमारों को साथ में छोड़ना।

पद्धरी। सुनि बत्त सच्च संभरि नरेस। परसंसि जैत अप्पह असेस ॥
परसंग राव षीची स बोलि। गरुअत्त गात उत्तंग लोलि ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

(१) ए० कृ० का०—सुपरि। (२) ए०—उसामि।

तुम धरौ पानि कुम्मार रेनि । रष्यौ सु रज्ज कज्ज हत्ति रेनि ॥
बोलयौ ताम पीची सुगाजि । उभ्मेर अग्ग सूरत्ति भ्राजि ॥
छं० ॥ ५३६ ।

जित्तौ सुलोक सुरपत्तिराज । उद्धरौं सीस पग स्वामि काज ॥
कूरंभ राव बलिभद्र बोलि । पामार सिंघ ओढे सु ओलि ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

जादव सुजात आरज कमध । आभासि कहिय न्रप कारु बध ॥
उभ्भरे सोथ भर च्यार भार । गज्जेव गेंन असि सद्द झार ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

जित्ते सुलोक जे उद्ध उद्ध । सज्जै विलास सुरतरु निरुद्ध ।
जे जे सुराज आभासि सूर । जपैव भेव तेते करूर ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

अति दुमन देखि जंगल नरेस । चिंत गराव चिंते सहेस ॥
निज बंधु सुअन बरसिंघ बोलि । सूरत्त गहर जिन लाज तोलि ॥
छं० ॥ ५४० ॥

रष्ये सुभट्ट सै सत्त तथ्थ । सूरत्त धत्त सग्राम हथ्थ ॥
सह रष्यि पोस रेंन कुमार । बधेव बंध सारज्ज सार ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

ईसरह दास सुअ कन्ह सादि । कामधज्ज वीर चंद्रह सुवादि ॥
कैमास सुअन परताप मानि । सुअजैत करन आभासि आनि ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

सामंत सिंह गहिलोत गानि । परतोप सुअन परताप जानि ॥
जयसिंह मदन सुअ बोलि बदि । परिहार तेज सूरत्त नदि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

आभासि सब्ब परसस किन्न । गुन जपि प्रथक उचान भिन्न ॥
रष्यै सु पान रेंन कुमार । बाजे अनंत बज्जे उदार ॥
छं०॥ ५४४ ॥

हय दोय दोय दिन्ने सउच । राषे सु सब्ब भर राज सच ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

यह समाचार सुन कर कुमार रैनसी जी का युद्ध में जाने के लिये हठ करना।

कवित्त। तब सुनि रैन कुमार। पच्छ रष्षै राजानं॥
पंच पथ्थ कै काज। मोहि ढिल्ली धरवानं॥
इंद्रपथ्थ तिल पथ्थ। पथ्थ सोवन पानीपथ॥
बाग पथ्थ धर काज। और रष्षै सामंत सथ॥
छचीन ध्रम्म धर राज सुनि। जौ आपन अनकन करै॥
हरै जनंम मानुष सुपति। अरु निहचै नरकह परै॥छं०॥५४६॥

पृथ्वीराज का कहना कि पिता का वचन मानना ही पुत्र का धर्म है।

दूहा। तब राजन बोलै सुपुत। आदि ध्रम्म सु विचार॥
पिता वाच मानै सु सुन। ते धर राषहिं सार॥छं०॥५४७॥

कुमार का योग लेने के लिये उद्यत होना परंतु राजा और गुरु राम और कवि चंद के समझाने से चुप रहजाना।

भुजंगी। तबैं जंपि तामं सुरेनं कुमारं। सज्यौ साथ राजंगं जगं सुभारं॥
पिता देव सेवं[2] सुसेवं विरंची। न चुकै तनं षचि राजं सु अंची॥
छं०॥५४८॥
करौ चूक सवि लागि राजं सुकाजं। सजौ बन्न मारग्ग बद्री सुआजं॥
जटा बधि लंगोट अंगं तपेसं। महा मोनधारी वधं पंडवेसं॥
छं०॥५४९॥
तपै जाय कासी प्रयागं सुथानं। ग्रहै धोर तप्पं करै धूम पानं[3]॥
इला आदि छची कर्‌यौ छित्ति कामं। रहौ लोभ माया धरे पच्छधामं॥
छं०॥५५०॥
इसी बात कढ्ढैति कै मूढ प्रानी। कही बाद बादै कुमारंति बानी॥
सने[4] उच्चर्‌यौ ताम दिल्ली नरेसं। सदा विद्धि सिद्धी व राजंग एसं॥
छं०॥५५१॥

(१) ए० कृ० को०—रापै। (२) ए० कृ० को० देवं।
(३) ए० कृ० को०—नही मोह कामं पिता राजधानं। (४) ए०—मते।

महाजन्न सारम्म बूझौ विचार । तर बेलि कित्ती चढै भ्रम्म धार ॥
तन रीति आदित्त गत्ती समान । पुन जात अत पुन्न जात आन ॥
छ० ॥ ५५२ ॥

अह सक्रम प्रान सुरतान साथ । सजौ सूर राह चलै कित्ति काथ॥
कहै राज राम गुर पुच्छि दिष्यौ । कवीचंद बानी सुबानी विसिष्यौ॥
छ० ॥ ५५३ ॥

गुर राज बोलै भट चंद सायौ । पिता वाच मानै इहै पुच भायौ ।
अहो आदि माता पिता मूल जान । पछै तीरथ आठ सट्ठ प्रमान॥
छ० ॥ ५५४ ॥

कहै गंग गोदावरी ग्रेह माहै । जिनै मात सेवा पिता सेव ताहै॥
धरा भ्रम्म रापे पिता वाचमानै । ग्रहै राज भार सुर पथ्थ थानै॥
छ० ॥ ५५५ ॥

व पूछित्ति काजै धर्यौ सूर लाजै । अरी आय लागै तबै जुद्ध साजै ॥
तुम काज ढिल्ली गरै लोज आनौ। जबै आय लागै तबै काम जानौ॥
छ० ॥५५६॥

तुम सथ्थ सामंत पुत्र सुभट्ट । सजै भारथ सार ठेलै सु थट्ट ॥
इन वत्त कज्जै तुम पच्छ रष्प । सनौ राज पुत्त न वोलेति भष्प ॥
छ० ॥ ५५७ ॥

उस समय नाना प्रकार के भयानक अशकुनों का होना और इसके निर्णय के लिये राजा का ज्योतिषी को बुलाना ।

सोइ विद्धि आरिष्टसोचै अपार । धरा व्योम पान तर बन चार॥
धरा धूरि गाजी रहै वारि वाह । रस छोनि सुक्कै दिग दाह दाह॥
छ० ॥ ५५८ ॥

फलत विकालि तर सुम्म नार । स्रव श्रोन धार बन वार वार ॥
गहक्कंत गाजै चहंत चिकार । दिन सद्द वद्दंति फेकी पुकार ॥
छ० ॥ ५५९ ॥

करे मालय धप्पि प्रासाद कोट । प्रतिम्मा प्रतत्ती चलै आस नोट ॥
सुप धोन छोन सनेन प्रचार । प्रती थान छुट्टै अपुट्टी उसार ॥
छ० ॥५६०॥

बहै अम्ब सम्मीर नीरं अपातं। भ्रमै गिद्धिनी चिल्हनी रूप रातं॥
विकंतं सकंतं अनूपं उहासं। घरी गोप जायं गवायं परासं॥
छं० ॥ ५६१ ॥

सिरं दून चेवं अनेवं प्रसायं। नयंनं बयंनं श्रवंनं विथायं॥
बड़ं बागवा चीय माछीष तामं। प्रसंवं सरुंडं अभूतं दुरामं॥
छं० ॥ ५६२ ॥

तनं कंप स्वेदं फुरक्कंत रोमं। मनं भीत रीतं चरं चंच लोमं॥
सु पन्नं दुपन्नं सुदीसै उरानं। लपै सूर सामंत कैलास थानं॥
छं० ॥ ५६३ ॥

महा बुद्धि दैवग्य बुझझै बजामं। जगं ज्योति व्यासं हरी जोति तामं॥
लहै सब्ब जोतिष्य विद्या विनानं[1]। उरं इष्ट भासे सरूपं सन्यासं॥
छं० ॥ ५६४ ॥

दुअं पुच्छि आभासि दिल्ली नरेसं। कहौ अंत आरिष्ट सोचै असेसं॥
कहौ विप्प भा सैंवरा सेव सब्बं। निरष्षै सु कालं दुरासद्द अंवं॥
छं० ॥ ५६५ ॥

ज्योतिषी का अशकुनों का और ग्रहचाल का फल बतलाना।

कवित्त। तब जंपत जग जोति। व्यास हरि जोति अपारं॥
सुनौ राइ दिल्लीस। तजो मन षेद सुभारं॥
काल व्याल संसार। ग्रसै सब सिद्धि लोक रह॥
करौ न रोस सदोस। हम जंपैं सुविद्धि इह॥
उच्चरै राज प्रथिराज तब। कहौ चित्त छंडैद्र भय॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनत। हिय हम मानहि अंत षय॥ छं० ॥ ५६६ ॥

हनूफाल। जंपे वतं जगजोति। हरि ज्योति वयासह जोति॥
विधि काल वयाल विनान। सुक मुनिय जान गियान[2]॥
छं० ॥ ५६७ ॥

आगंम आगम विद्धि। अति इष्ट बुद्धिय सिद्धि॥
ग्रहचार वक्र विगत्ति। षिति सयल भेद विभत्ति॥
छं० ॥ ५६८ ॥

(१) ए० को० कृ०—विज्ञानं। (२) ए० कृ० को० ग्यान विनान।

सनि वक्क दिल्लिय देस। सुरभन नयर विरेस॥
अरि ग्रेह कोप्यौ अप्प। सुर असुर मन्नि यदप्प॥छं०॥ ५६८॥
ग्रह विषम तन चहुआन। ग्रह दुष्ट छन्नि छितान॥
हुअ हिंदु युद्ध तुरक्क। रह उच्च सज्जहि ढुक्क॥ छं०॥ ५७०॥
दिल्लीस' गज्जन ईस। सम चल्लहि प्रान पुरीस॥
दिल्लीय के दिन राज। चहुआन रेन विराज॥ छं०॥ ५७१॥
साहाव हूअ सहाव। अति तेज होय सताव॥
करि बदि जीतहि देस। दल जोरि जर अस हेस॥छं०॥५७२॥
सब करहि धरनिय पानि। सजि चलइ कानवज थान॥
नन जुरहि कमध नरेस। सिर करहि गग प्रवेस॥छं०॥५७३॥
पिति जीति गज्जन ईस। सम जरहि दिल्लि सरीस॥
सम जुद्ध जंगल राज। मिलि करहि आमि स आज॥छं०॥५७४॥
सम जग्गि गोरिय जुद्ध। पद रेनि पामहि उद्ध॥
दस एक सवत सट्ठ। सवि अग्ग द्वादस तत्त॥ छं०॥ ५७५॥
ताव तत्तेव समथ्थ। असुरान दिल्लिय तथ्थ॥
एवत्त बुझ्झि कय राज। स सच्चौ करध काज॥ छं०॥ ५७६॥

ज्योतिषी की वाणी सुन कर राजा का कुपित और क्लान्त चित्त होना और सामंतों को समझाकर कहना की गोविन्द का ध्यान करके अपना कर्तव्य पालन कीजिए।

कवित्त। सुनिय वत्त दिल्लीस। रोस उब्भार अप्प तन॥
मन उदास चितास। कोल मन्निय सु क्रत मन॥
निरषि स्वामि सामंत। ताम पुम्मान स जंपिय॥
अब्ब काल सग्रहै। छोनि इह फेरि न कंपिय॥
रष्षहु सुरेन कुम्मार रज। धरोवध्ध बध्यौ सुभर॥
मम करौ मोह चितौ सुहरि। सजौ स्वरग मारग सुभर॥
छं०॥ ५७७॥

(१) मो०—दिल्लेस।

तब जलद मेघ मंडिलिय। नयन पुंडीरिय सुसोभित ॥
चिसल पीत अंमरिय। गुंज मंजरिय अरोहित ॥
श्रुत कुंडल मंडरिय। मोर पंषरिय सिरोयनि ॥
मुरलि मधुर मुष्षरिय। चक्र वंकुरिय करोयनि ॥
इय ध्यान मंन राजन धरिय। मत्त धत्त पच्छै सरिय ॥
कैलास वास सामंत सथ। कलह केलि रची ररिय ॥ छं० ॥ ५७८ ॥

हनूफाल। वपु स्याम धर मति मेघ। चष पुंडरीक सुरेष ॥
कच वक्र कुंतल लीन। मकरंद जै मुष पीन ॥ छं० ॥ ५७९ ॥
सुक्रीट हार बिहार। तम हरन किरन प्रहार ॥
श्रुत कुंड लेन बिलाल। सक सकल ग्रीव बिसाल ॥ छं० ॥ ५८० ॥
निज नास मोति सुहंद। तिलकं सुसम अति बिंद ॥
तें प्रतिय[1] अमर प्रतीत। रघुवंस राजस रीति ॥ छं० ॥ ५८१ ॥
करि करिय सिंगिनि पानि। मधु मधुर मिष्टित बानि ॥
धरि पुट्टि तूर धनुक। जिय जासि जानि जनुक[2] । छं० ॥ ५८२ ॥

कवित्त। सुमन मयन मंजरिय। रमन षंजरिय बिरंगिय ॥
तिलक अलक जंजरिय। असित अंजरिय द्रिगंमिय ॥
सुश्रित चिसिति अगारिय। चिहुर उगारिय सिरन्निय ॥
सरन[3] हंस झंझरिय। डंड डंमरिय करन्निय ॥
बर बिदुष सुष्ष कह हंकरिय। धरिय भगति दिसि नंजरिय ॥
अद्दय द्रुग्ग पंपं परिय। राज ध्यान उमया धरिय ॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दूहा। हरि माया उमया सुहरि। न्रिपवर चिंतिय ध्यान ॥
मन एकंत समंचरिय। प्रति बोधे सब्बान ॥ छं० ॥ ५८४ ॥

क्रोध और क्लान्त अवस्था में पृथ्वीराजकी मुखप्रभा वर्णन।

कवित्त ॥ अति तरक्क[4] बर तिष्ष। षंभ तिष्षन[5] तररक्किय ॥
बंस अंड विहरिय। मनहु दारिम दरक्किय ॥

(१) ए० कृ० को०—प्रीति। (२) मो०—जनक्क। (३) मो०—रसन।
(४) ए० कृ० को०—तरप्प। (५) ए० कृ० को०—तष्षन।

फनिन परिय फु फरिय। फेन फुकारिय फनिदह ॥
परम उग्र वपु दुर्ग। दिग्ग मुद्दिग दिग अंतह ॥
नर हर अपुब्ब नहपुब्ब पर। दुरद दनुज दारुन दिसनि ॥
जन हेत विघुन्निय अधम उर। रुहिर चंद घुटिय रिसनि ॥
छ० ॥ ५८८५ ॥

नद्दिय भीमह नद। घुम घुमिय अररकिय ॥
अध धकिय धर धरनि। सीस फनपति मुररकिय ॥
पिष्षिय रूप अपुब्ब। सब्ब लोयन बल घट्टिय ॥
अट्टहास टह टह उघट्टि। बरपुंज निघट्टिय ॥
गहि पलय ताहि तिम दुग्गं द्रिग। नर हर तप्पिय तीन पुर ॥
चष्षिय बहहु विहरि नयन। दप्पह चंद दवित्त उर ॥
छ० ॥ ५८८६ ॥

काल चक्र की प्रभूति और राजा का रेनसी जी को समझा कर उन पर दिल्ली राज्य का भार देना।

वाधा ॥ इह भविष्य बीतय दिलेस। आवरि वीर अंग अस हेस ॥
मनि काल कित कारन रूप। सादैवत्त आदि गति ओप[2] ॥
छ० ॥ ५८८७ ॥

काल दैव देव संहारं। काल मंदिर मेर ढहार ॥
काल जगत जगत्त विलोम। काल सिध साधक न ओम ॥
छ० ॥ ५८८८ ॥

काल अजा जठर हरिवास। काल मानुष इंद्र विनास ॥
काल लंका गढ़ किय पाज। काल दिय भ्रभषन राज ॥
छ० ॥ ५८८९ ॥

काल जादव कुल संहार। काल द्वारिका समुद सिधार ॥
काल जलथल एक पसार। काल कान्ह वडपन्न संघारं ॥
छ० ॥ ५८९० ॥

(१) ए. कृ. को. तवित। (२) ए. कृ. को. सा दैवत आदि गति ओपं।

काल बाल काल वृद्ध । काल जोगी काल सिद्ध ॥
काल सूरिज काल चंद । काल नवै डुंगरी नंद ॥छं०॥५९१॥
काल ब्रह्मा केइ संहारे । काल अह नव नाथिन तारे ॥
मन्नि काल गति उति चहुआनं । आवरि निज मारग कुल कानं[1]॥
छं० ॥ ५९२ ॥

तब सुनि रेन कुंअर कहि सारं । इह गति इह संसार असारं ॥
इतनी बार न बोल्यौ एसं । गुरु भट न्रप तीने सविसेसं ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

इह अब काल बयाल गति जानी । ते हम अहै तेग परिमानी ॥
बोलै अग्गर रेन कुमारं । किय परसंस राजगति सारं ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

राषहु रयन थान गति थित्ती । जानहु चित्त रीति रज गत्ती ॥
का जानै सज्जी का भज्जी । जग जानै दुज्जर गति लज्जी[2] ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

रष्षहु रयन दिल्ली रजभारं । तुम जानहु षिची षग सारं ॥
राषहु बंध नयर सुभसाजं । जं निरमितं सकल कुल काजं ॥
छं० ॥ ५९६ ॥

तब जंपै नमि रेन कुमारं । सेवा बाह पिता अगि सारं ॥
कै साजो सेवा जुध अप्पं । कै परसंन बंद्री पति दप्पं॥छं० ॥५९७॥
बार बार जंपन नहि कामं । अब हम तुम रष्षौ रजमामं ॥
तब जंपै रावल प्रति राजं । तुम रष्षहु पुत्र्याव्रि सुत आजं ॥
छं० ॥ ५९८ ॥

तब धरि पानि षुमान कुमारं । किय संबोधि सुचित चित सारं ॥
किय अप रेन कुमार सुचित्तं । जंपे सहु चहुआन सहित्तं ॥
छं० ॥ ५९९ ॥

राषहु कुमर सथ्थ भरसारं । जे रज्जै साजै रज भारं ॥
उद्विय मंत चिंत करि राजन । बाध्यौ बीर धीर सब ताजन ॥
छं० ॥ ६०० ॥

(१) ए. कृ. को.-आवारिन मारग कुलेकानं । (२) ए०-लग्गी ।

जै जै जै बानी आया सद्द। सुनिय मनि क्रित काल सुतासद्द॥
छं० ॥ ६०१ ॥

रेनसी जी का कहना कि मैं तो युद्ध में पराक्रम करूंगा।

कवित्त ॥ * चक्रव्यूह भारथ्थ। रचिय द्रोण आचारिज ॥
दुरजोधन नृप कुंअर। नाम लषमनो मद्धि सज ॥
दस हजार अनि कुअर। रष्पि पारथ्थ जुध काज ॥
एक एक भुजबल प्रमान। भद्र जातीक अयुत गज ॥
ते हनिवि सकल कहि रयनसी। भजि व्यूह लगि षग्ग रस ॥
अभिवन्न कुअर अरज्जुन को। काम आय षोडस बरस ॥
छं० ॥ ६०२ ॥

कविचन्द का कुमार रेनसी को समझाना।

पद्धरी * ॥ कविचंद जपि मधु वचन जोह। राजिंद कुअर सुनि रयनसोह ॥
सत एक पुत्त हुअ रिषभ देव। वड पुत्त भरथ तिहि सुनहु भेव ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

'वैराग चित्त लग्गौ सुरग। माया अलिप्त भेदै न अग ॥
तप करन चलिय तजि राज पाट। परमोधि आय मिलि रिषप घाट॥
छं० ॥ ६०४ ॥

पित मात जियत तू तजहि देस। अपहास करहि अनि सुनि नरेस
उत्तानपात सुत ध्रुअ जेम। रहि जाय वत्त इल अचलतेम ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

पाटवी पूत छंडहि न रज्ज। आगम निगम बेदन बरज्ज ॥
इन भंति उत्ति अनेक उत्त। तिहि काज राज नवषंड भुत्त ॥
छं० ॥ ६०६ ॥

समझाय आनि ग्रह फिरि भरथ्थ। दै राज रिषभ निज हुअ अतिथ्थ
भागवत कथा सभलि प्रबन्ध। नगहट्ठ छंडि मन महि समध ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

* ये दोनों छन्द मो. प्राति में नहीं हैं।

पृथ्वीराज का कुमार रेनसी का राज्याभिषेक करना।

कवित्त ॥ करिय सुचित भर सब्ब। रोज दिन्नेव द्रव्य भर ॥
मंगि मदन श्रृंगार। गज्जबर पट्ट मद्द झर ॥
रयन कुमर आभासि। दीन माला मुत्ताहल ॥
असी बंधी निज पानि। बंदि कीनौ कोलाहल ॥
आरोहि गज्ज कुमार निज। पच्छ बंध सा सिंधु किय ॥
जोगिनिय बंदि चहुआन पहु। क्रत्य काज मन्नेव द्रय ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

दूहा। रेन कुंअर सोचित्त थपि। ठयौ जुद्ध मति मानि ॥
उट्ठि राज सब ग्रेह कों। दिय अग्या बर बानि ॥ छं० ॥६०९॥

दरबार बरखास्त होना और पृथ्वीराज का रावलजी को डेरे पर पहुंचा कर महलों को जाना।

अरिल्ल ॥ उठ्यौ मंत चित्त करि राजन। जै जै जै बानी आयासन ॥
बढ्यौ धीर बीर रस ताजन। सुनिय मंच किलकान सुतासन ॥
छं० ॥ ६१० ॥

कबित्त ॥ उट्ठि महल प्रथिराज। मंगि आरोहन बाजिय ॥
रावल प्रथम चढाय। चढ्यौ चहुआन सुताजिय ॥
करि अस्तुति सम सिंघ। तुमहि बड्डुं बड्डाइय ॥
तुम जोगिंद जग जित्त। कित्ति तुम कहिय न जाइय ॥
परसंस करत अन्नेक परि। करि डेरा रावर समर ॥
चढ्ढनह[1] बर निसि सेष कहि। आयो बज्जन बजत घर[2] ॥
छं० ॥ ६११ ॥

इधर से शहाबुद्दीन का सिंधु नदी पार करना।

बाजि घरिय घरियार। साहि उत्तरिय सिंधुनद ॥
विषम वाव उड़ि भ्रिंग। सिंधु छुट्यौ कि सद्द मद ॥
तमसि तमसि सामंत। राज राजस किय तामस ॥

(१) मो.-चढतिहि। (२) मो.-आयौ वजत बजन्न रंघ।

घुमरि घुमरि नीसान। थान जग्गे मन पोवस ॥
निसि अद्ध अनेही पीय तिय। पिय पिय पिय पप्पीह तिय ॥
प पनिय फरकि अंपिय अनपि उदय अनद सुवीर किय ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय पृथ्वीराज को शाह की अवाई का समाचार मिलना और उसका सब रसरंग त्याग कर जंग के लिये सजना।

उदै अनंदिय वीर। बाजि रनजग वीर वर ॥
क्रोध लोभ मद उतरि। मद पिन्नो मुगत्ति सर[१] ॥
अद्ध अनैही[२] राति। अद्ध नेह सुलितान ॥
दुहु मिलंत महिलानि। मिलत चित अच्छरि धान ॥
तिय मद्धि प च घट्टीय घटि। वर मिलान पोमन्न करि ॥
वर वीर वेलि वड्डिय विपम। करन[४] छिमा छिम छन उसरि ॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मोतीदाम ॥ सुवीर अनंद अनंदिय नंद। नच्यौ भ्रम छंडि भयानक छंद ॥
कला काल अप्पिय सुच्छिर वानि। सिपी सिप अभ्भ सिकंडिय जानि ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

गये निज मंदिर समंत सूर। मिले नर नारि महारस नूर ॥
मिले रस राजस पंग कुआरि। करी परिक्रम्म सुनेहिय नारि ॥
छं० ॥ ६१५ ॥

अनेक सुगंध सउद्ध अनूप। मिलंत[५] छिनेक सु मन्नहि भूप ॥
करी घन नेहिय नेह प्रकार। मिलन सुमंनहि मंनहि सार ॥
छं० ॥ ६१६ ॥

करी नर नारि सुरंग उधंग। पुछै चर आगम साथ सुरंग ॥
रजनिय अंतरही इक जाम। कहै दोड़ दूत सुआइय ताम ॥
छं० ॥ ६१७ ॥

(१) मो अनदिय। (२) ए कृ को वर। (३) ए कृ, को सनेही, सेनेही।
(४) ए कृ को करिय। (५) ए कृ को मिल्लन।

पिय करुना मुष पी मुष वीर। दियौ रस संकर अंतर चीर॥
संयोग वियोग नवै रस बंध। लही चक चक्किय है निसि अंध॥
छं० ॥ ६१८ ॥

षिय पिय पिट्टन दिट्ठ भवन्न। रहौ चित पुत्तलि जनि भवन्न॥
पुरं पुर भग्गानि केवल साहि। मनो बिंब चोल करन्न मिलाहि॥
छं० ॥ ६१९ ॥

त्रिया त्रिय कंपिन जंपिन सेइ। को पुच्छहि काहि को उत्तर देइ॥
कथौ कथि अंगन अंगन ताहि। रहे चष जानि टगट्टग चाहि॥
छं० ॥ ६२०॥

काम क्राम जग्गिनि लग्गिन नैन। गये रस छंडि मनो असु हैन॥
रसौ रस सिद्धिय विद्धिय मोल। असे सब सुष्प[1] भयानक वयाल॥
छं० ॥ ६२१ ॥

निमेष करी करुना रसकेलि। उठी वर वीर वरल्लट बेलि॥
दिषे दिषि कंत सु दंपति चाहि। मिले चित मित्त सु अंगन साहि॥
छं० ॥ ६२२ ॥

जनौं पर निद्धि सु देषिय रंक। टरै नहि चेतन ज्यों निधि संक॥
भये रस सत्त प्रभात प्रामन। बजे रन जंग चढे चहुआन॥
छं० ॥ ६२३ ॥

सुने धुनि राज गवन्न गवन्न। तजे तिन मत्त भवन्न भवन्न॥
घनंकि निसाननि नादनि बद्द। षलक्कि जंजीर उमद्द निमद्द॥
छं० ॥ ६२४॥

षनक्किय संकर अंदुनि अद्द। ठनंक्किय घंट सु घंटन हद्द॥
घुरक्किय घुघ्घर दादुर भद्द। * * * छं० ॥६२५॥
जयंजय सद्द बदै चहुं ओर। करै जनु प्रात सिषं डिय[2] सोर॥
झनक्किय भेरि सु झभ्भर बद्द। रनक्किय वीरन फेरिय सद्द॥
छं० ॥ ६२६ ॥

(१) ए० गुष्प। (२) ए० कृ० को०—सिकडिय।

हरक्किय झूझ सुराज रवद्द। भरक्किय नाग गयो सिरलद्द ॥
तुरक्किय तुग तुरगन होस। सरक्किय सप्पथ सेसनि सीस ॥
छं० ॥ ६२७ ॥

परक्किय पष्षर पष्षर तोन। ढलक्किय ढाल सुढिल्लिय प्रोन ॥
ढलक्किय हाल फवज्जिय सूर। धरक्किय घाम सु कातर क्रूर ॥
छं० ॥ ६२८ ॥

कथं कथमोन गुमान उमान। दुअ दस कोस मिलान मिमान ॥
सु हि दुअ मेछ बज्यो रन तोल। गयौ दिव देव कह्यौ दिय बोल ॥
छं० ॥ ६२९ ॥

निभेयक भूमि अयासह अग। चब्यौ जनु इंद्र धनुक्कह रग ॥
जय जय सद्द कारी तिहि बीर। कह्यौ तिनि राज रवन्नह पीर ॥
छं० ॥ ६३० ॥

कविचन्द का वीरभद्र से युद्ध का भविष्य पूछना और वीरभद्र का कहना कि पृथ्वीराज पकडा जायगा।

दूहा। तुम सु वीर जानहु भवसि। कहौ राज निम्मान ॥
बीर कहै समर परै। ग्रहै मेछ चहुआन ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली से चलकर दस कोस पर पडाव डालना।

साहस गहन सहन किय। फेरिग राम चहुआन ॥
प प सबद वज्जिय सघन। दिय दस कोस मिलान ॥
छं० ॥ ६३२ ॥

पृथ्वीराज के कूच करते समय संयोगिता की विरह विथा का वर्णन।

कुंडलिया। नृप पयान पोमिनि परषि। घटि साहस घटि एक ॥
सुकथ केलि पियूष प्रिय। जतन करहि सपि केक ॥
जतन करहि सपि केक। हाय करि जौं जौं अ पहि ॥
दृत कह्ह कर मिंढि। थरकि थरहर जिय न पहि ॥

(१) ए० कृ० को० तिहिं।

इह प्रयान नृप करत। परी संजोगि धरा धपि ॥
सषी करत सब जतन। चलत पयान तहां नृप ॥
छं० ॥ ६३३ ॥

त्रोटक ॥ जतनं जतनं किय भंभरियं। दिषि दीपक भौन भर्यौ सुहियं ॥
भवनं भवनं भवना गरियं। धर मुच्छि परी बुधि सागरियं ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

ससि सूर चयं रवि जोग ससी। विष ज्वाल असी सुमनं विगसी ॥
द्रिग चंचल अंचल सोमुदयं। विरहा उर उग्ग ग्रसी सुधियं ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

अहि धुट्टि लियं बयरं जुलियं। यह तुट्टि सुधा निधि की विधियं
बर बिंब बिलोकि सषी करियं। असु आसिक नासिक सें भरियं॥
छं० ॥ ६३६ ॥

अह कट्टहि निट्ठ निसान घटे। बिरही घटिका जनु अग्गि पढै ॥
बिरही बरनेह अनंग कसं। भए जानि किरोग चिदोस बसं ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

सुबढी विरही न घटे न धटं। सु चढी जनु वेलिय क्रष्ण बटं ॥
जल नैननि बूंद परै कुचयं। तिनकी उपमा नयनं सचयं ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

जुरठी दुति पुब्ब कमोद कली। तिहि तारक सोम बसीठ हली ॥
इहि सारन प्रान न मुक्कि पती। तिन मंडि रहे दुष देषि जती ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

चल चंदन चीरति सीर करैं। लहरी बिष आनित प्रान हरै ॥
सषि सूंठिन सूढ़ रसे सुतनं। घन सार निहारनि नारि थनं ॥
छं० ॥ ६४० ॥

नटि नारिय नारिय पानि गहै। तजि जाहिन अंक वियोग सहै ॥
पल भ्यानननि आननि नैन चहै। अलि ओटन जोट वियोग सहै॥
छं० ॥ ६४१ ॥

घन धूमरि झूंमि समीप रहै। ठग ठग्ग लगी चष कोन चहै ॥
षिन दाषिन षीनह षीन भई। घरियार निहारत प्रात भई ॥६४२॥

कुंडलिया ॥ घर धयार वज्जिग विषम । हलिग हिंदु दल हाल ॥
दुतिय षंद पूनिम जिमैं । वर वियोग वढि बाल ॥
बर वियोग बढ़ि बाल । बाल प्रीतम कर छुट्टौ ॥
है कारन हा कंत । आस आसु जानि न फुट्टौ ॥
देषत नेन सुभर्झे न दिसि । परिय भूमि सथार ॥
स जोगी जोगिन भई । जब वज्जिग धरियार ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

कवित्त ॥ वढि वियोग बहु बाल । चंद विय पूरन मान ॥
वढि वियोग बहु बाल । वृद्ध जोबन सनमान ॥
वढि वियोग बहु बाल । दीन पावस रिति बहु ॥
वढि वियोग बहु बाल । लच्छि कुलवधु दिन चहु ॥
बहु वियोग बालनि विरति । उत रावन सेना चढिय ॥
करकादि निसा मकरादि दिन । बाल वियोगत सम बढिय ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

वही रत्ति पावस्स । वही मघवान धनुष्य ॥
वही चपल्ल चमकंत । वही बगपंत निरष्य ॥
वही घटा घनं घोर । वही पप्पीह मोर सुर ॥
वही जमी असमान । सही रवि ससि निसि वासुर ॥
वेई अवास जुग्गिन पुरह । वेई सहचरि मंडलिय ॥
स जोगि पय पति कंत विन । मुहि न कछू लग्गत रलिय ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

दूहा । जल अधार रष्यो जियन । व्रत रष्यौ नन प्रान ॥
अब रवि मंडल वर मिलन । कै जोगिनिपुर थान ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

हरिहु आदि अमर सकल । अलि रष्यहु अलि झोर ॥
जोग भोग पिय संग रहि । तियन अम्म घर और ॥
छं० ॥ ६४७ ॥

कै धरणी कै अम्बरह । कै अंतर तरु मूल ॥
दैवकाल बातूल मिलि । उडहि तंत तन तूल ॥
छं० ॥ ६४८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अबीर ।

पृथ्वीराज की चढ़ाई की तैयारी का वर्णन।

पद्धरी॥ चढि चल्यौ साह चहुआन सूर। धुंधरी बिदिसि दिसि दिपि करूर॥
सुर धुनि निसान बज्जे सुरंग। नफ्फेरि रंग सिंधू उपंग॥
छं० ॥ ६४६॥

दल चलहि दवरि चंपे दुरंग। उरझंत पंथ इत्ते कुरंग॥
सो सद्द बद्द संभरे सूर। उट्ठे ति मुच्छ बंकी करूर॥
छं० ॥ ६५०॥

चिंतवै सूर सा ध्रंम हेरि। मन कहै गहै सुरतान फेरि॥
बाहन्नि बहै गजदाम भद्द। क्रोधद्द कुरंग दीसै रवद्द॥
छं० ॥ ६५१॥

आरुहै मिट्ठु गज तुरंग बढ्ढि। कातरिति कंमि गिरि धुम्र चढ्ढि॥
धावंत तेज पुच्छेन धाइ। छुट्टै न प्रान जिन कार[1] छाइ॥
छं० ॥ ६५२॥

मद सरक धरक जोगी समान। क्रम क्रमनि असी पयपयन जान॥
दीसै तुरंग अवधूत धूत। मानौ सुदंति पब्बै सपूत॥
छं० ॥ ६५३॥

चतुरंग सेन सजि बर प्रमान। सिंधूरन अस्स चढ़ि चाह,आन॥
षोले किपाट बर मुगति रूप। सोमेस पूत अवधूत भूत॥
छं० ॥ ६५४॥

चहुआन को चलते समय अशकुन होना।

त। चढ़त राज चहुआन। छीक अगनेव देव दिसि॥
मिल कुंजर बिन दंत। अश्व अपलानि चिंत वसि॥
हूच मंत तुट्ट्यौ। राज दिट्ट सु विचारय॥
गौर कुंभ उप्परै। स्याम कुंभह अडारिय॥
तजि मोष रस्स संधी चिषा। आवै कित गवनन छचौ॥
असु नौम जोग पंचमि दिवस। चढयौ राज निस[2] तुछ षचौ॥
छं० ॥ ६५५॥

(१) ए० कृ० को०—कार्य। (२) ए०—निज।

गजनी के गुप्त चरों का शाह को पृथ्वीराज के कूच का समाचार देना।

दूहा। इह चरित्र पिष्षिय चरन। वह चरित्र नंह राय॥
सो चरित्र सुरतान सौं। सिध उल्ल घिय धाय॥
छं०॥ ६५६॥

हुवि हंमीर दल हाम करि। मन करि अग्गो पच्छ॥
दूधें दद्धौ ब्यौ पियै। फुकि फुकिं के छच्छ॥
छं०॥ ६५७॥

कुंडलिया॥ कूच कूच पधार यरि। हलिग हिंद दल हीच॥
काह्यौ राज सुरतान कह। सिंधु बिहट्थै बीच॥
सिंधु बिहट्थै बीच। फेरि पुच्छै चहुआन॥
कहौ मग्ग परिमान। जेह संख्या तुम जान॥
कौन ठौर जुध मेल। छोड़ चितौ तुव सोचह॥
सकल सबै सामंत। करौ नदि उत्तरि कूचह॥
छं०॥ ६५८॥

राजपूत सेना का पहला पडाव पानीपत में होना।

दूहा। जाय जलह पथ उत्तर्यौ। दिल्ली वै चहुआन॥
सूरन अति आनंद हुअ। सहि संजोगी हान॥
छं०॥ ६५९॥

शाही सेना का चिनाव नदी पार करना।

कवित्त। दिल्लिय ते सत कोस। अग्ग सिध[1] नदी कहिज्जै॥
द्वादस नद संतनज। तहा न्रप दल सलहिज्जै॥
दिल्ली ते सत दोइ। नगर लाहौर सु थान॥
असी कोस नदि बियह। परें लाहौरयि जान॥
उत्तरी सिंधु साहाब दी। बिहय परै आयौ सुरजि॥

(१) ए०—सिंध, कृ० को०—सिंह।

दिन सत्त अट्ठ महि जानिहो। ओ आयो चिन्नाव गजि ॥
छं० ॥ ६६० ॥

दूहा। सा चिन्नाव लाहौर तें। कही कोस च्यालीस ॥
अप्पन सेन समाहिकै। जाय मिलौ दिल्लीस।
छं० ॥ ६६१ ॥

पावस पुंडीर का उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज के पास जाना और क्षमा मांगना।

कवित्त। इह अवाज पुंडीर। सुनिय वह रोस उपन्नौ ॥
पावस राइ हिंसार। कोट छंडवि संपन्नौ ॥
आज राज कौ काज। करों तिल तिल तन बंटौ ॥
तौ धीरंज। धीर। स्वामि अग्गैं रन नट्टौ ॥
इनवार भ्रत्य जग्गौ नही। छोनी छल कायर करै ॥
हारै जनंम मेटै सुजस। कहर क्रूर दोजिग परै ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

आयौ छंडि हिंसार। राज सतरंग मिलन्नौ ॥
सबैं सूर सामंत। जाय अग्गें होय लिन्नौ ॥
लग्यौ पाइ रा जान। भाव रष्षै मन उंचो ॥
हेत बत्त पुच्छी न। नैन ते नैन दुसंचौ ॥
यौं कहै सबैं सामंत तब। राज पाय पुंडीर गहि ॥
अपराध कोटि बगसंत न्नप। हूई बात पिछली सही ॥
॥ छं० ॥६६३॥

पृथ्वीराज का पुंडीर वंश का अपराध क्षमा करना।

कुंडलिया। तब तुम लुटि छंडिय सहर। अब आए जुध भीर ॥
धीर लाज कबि लगी गनौ। रे पावस पुंडीर ॥
रे पावस पुंडीर। धरि लाजह जल रष्यों ॥
नत[1] सोमेसर आन। मान गढ़ते गहि नष्षों ॥
हंसहि[2] मोहि सामंत। लैजु आय तुम सब्बह ॥

(१) मो० नत। (२) ए० कृ० को—सहहि।

कहै राज पृथ्वीराज। सहर लुटयौ तुम तब्बह ॥
॥ छं० ॥ ६६४ ॥

कवित्त। तुम लुट्यो लाहौर। भौमिभज तुमौ भग्गा ॥
साम ध्रम्म पथ मुक्कि। पथ सो द्रह सुलग्गा ॥
ध्रम्म धीर अरु सुकथ। पुन्न भग्गा चदानौ ॥
राज मह चहुंगौ। भगि अग्गा राजानौ ॥
पुडीर राइ साधन सकल। अकल मोह बधौ नजिय ॥
दिन अठ्ठ द्रह्ठ चहुआन कौ। रहा न न्नप दरबार विय ॥
॥ छं० ॥ ६६५ ॥

घरिय चयारि पुंडीर। छिमा छिम अदब परय्यौ ॥
सासतन सब सुनत। मत अच्छौ मिलि भय्यौ ॥
हमहि द्रोह लग्यौ दिवान। सुतौ सुरतानह जानै ॥
दोह सत्त अद्दमै। होइ मौलिप चहुआनै ॥
जब लोह कोह परियारतें। काटि अरिन भजौ सुरिन ॥
प्रथिराज काज तरवारि झर। जीव उडघि लग्गौ तरनि ॥
॥ छं० ॥ ६६६ ॥

शाही फौज की चाल और नाके वदी का समाचार पाकर पृथ्वीराज का कविचन्द को हम्मीर को मनाने के लिये लेजाना।

दूहा। धरिय पच वत्ती सुवर। कागद आय सपन्न ॥
अरियन दिसा जु विह्नी। जोग नेव कर दिन्न ॥
॥ छं० ॥ ६६७ ॥

सोटक। सोत श्री फल लाभ राजन वर गोरी ग्रह बंधनं ।
पावक अरि रोह दाहन वर भूभार उत्तारय ॥
भान पगय पग जग्य सरस वेग्ग वर छोमय ॥
नेय श्रूत विधान न्निमित वर साम भुज राजय ॥
॥ छं० ॥ ६६८ ॥

दूहा॥ ॥ सो मतन मतौ न्रपति। वामन जब राइ ॥
और काम चहुआन कौ। कहै सुकिज्जै धाइ ॥
॥ छं० ॥ ६६९ ॥

कवित्त ॥ सुभर उतरि सतनंज । चंद पहुौ कांगूरह ॥
लै आयौ जालंध । राइ हाहुलि हमीरह ॥
अरु जाल पाप रसि परस । परस दरसत दुष भष्यौ ॥
आदि जुद्ध दय दौंन । सिंघ पष्परि किन दिष्यौ ॥
हम नमसकार करि पुचछयौ । अरु पुछ्यौ पछलौ बिगति ॥
हुं कहौं सुतुम जानहु सकल । चलहु चंद अग्गे निरति ॥
छं० ॥ ६७० ॥

कवि चन्द का जालंधर गढ़ जाना और हम्मीर को समझाना।

मुरिल्ला ॥ मग्गह चलंत नहि करि बिरम्म । सामंत सूर सुभर सुदित्त तम्म॥
जालंध जाहु नृप पति सुकाज । राषहु तवाज प्रथिराज आज ॥
॥ छं० ॥ ६७१ ॥

कवित्त ॥ कह्यौ चंद बरदाई । बत्त हाहुलि हमीरह ॥
स्वामि ध्रम्म चिंतियै । दोस टारियै सरीरह ॥
चहुआना दौ राज । धान जंबू ग्रह लग्गौ ॥
बोल वंक तजि कंक । साम भ्रमाह पथ जग्गौ
जंमन मरंन भंजन भिरन । अंत रीति सह जानियो॥
कांगुरह राइ बत्तें अचल । भई बचन परमानियो ॥
॥ छं० ॥ ६७२ ॥

चलत मग्ग दुह मंगि । राजा तव लगि इहि धीरह ॥
लै आउं जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
नदि बिषाह उत्तरिग । आय कांगुर सपत्तौ ॥
पंच सत्त पंच पेडि । आय अग्गौ होइ लिन्नौ ॥
भोजन भगति बहु भांति किय । सब पुच्छिय राजन बिगति ॥
जालंध राइ जंबू धनि । सुनि हमीर चंदह सुमति ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

प्रथम बाह असनान । अष्ट भुज देवि परसनयौ ॥
तहं सुदेह रा ग्राम । बान गंगा अब दरसौ ॥

गए पाप जनमत। भेट कगुर गढरानी ॥
ओर मिले हम्मीर। सामि अम्मह सहि नानी ॥
तुम कहि जुहार सामत सव। अरु राजन वहु हेत धरि ॥
इन वार तुम्म हम्मीर नृप। सजो सेन सुरतान परि ॥
छ० ॥ ६७४ ॥

दूहा ॥ मुष मिट्टी रुट्ठी सुजी। हाहुलि राय नरिंद ॥
बोल वक सो कक करि। जपि सु मुष जै चंद ॥
छ० ॥ ६७५ ॥

कवि चन्द का हम्मीर से सब हाल सुनकर कहना कि इस समय पृथ्वीराज का साथ दो।

कुंडलिया ॥ ढिल्ली वै है गै दिसा। ता राजन लगि भीर ॥
हा तौत रन आतुरह। चढि दैवर हम्मीर ॥
चढि दैवर हम्मीर। सोहि नदि सिंधु समुझौ ॥
राह रोस गोरी नरिंद। चहुआन सरुझौ[1] ॥
षग्ग मग्ग अकलंक। कित्ति बोहिथ चलाई ॥
तौ लागो संग्राम। भार अप्पौ ढिलाई ॥
छ० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ कै कारन भौ वै दिसा। चढि ढिल्ली वै भद्द ॥
वक विसाहन भरह घौ। लै लाहौरी हद्द ॥
छ० ॥ ६७७ ॥

कवित्त ॥ इन लाहौरी हद्द। कक करि बैर बिसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। बीर व्यापार बसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। मूल विन व्याज साहि लिय ॥
इन लाहौरी हद्द। बाल चहुआन सत्य किय ॥
लाहौर हद्द अजहू सफल। करि जग्य व्योपार बर ॥
हाहुलि हमीर दौ पम्म वचि। करो धरहर साहि बर ॥
छ० ॥ ६७८ ॥

(१) मो०—भान चहुआन ह रुक्की।

बीरां बंकस कांक। केलि संभलि रा गोरी ॥
वे उन्हीं उन्हां कहे। पंचौ नद मेरी ॥
गुआनी वज्रागि। लागि बीरां उन्हाई ॥
हो हमीर नरिंद। चंद गायो न बुझाई ॥
षगधार अग्ग षची तनौ। चूकै नक निवासियै ॥
जै काम सूर साधन चलै। धूधू मंडल वोसियै ॥

छं० ॥ ६७९ ॥

हम्मीर वचन।

के दीहां[1] लगि केलि। करौ काहे लगि झुझझौ ॥
हट गलहां सों लागि। जाइ कौरव[2] कुल बुझझौ ॥
हो हमीर हमीर। चंद बत्तां करि दिष्षौ ॥
जो पंचानदि पंच देस। अड्डा अध नष्षौ ॥
कहियै न सुष्ष नर लोक को। किंसुर लोक सुहाइयां ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन। पुच्छो तोहि कहाइयां ॥

छं० ॥ ६८० ॥

कविचन्द वचन।

ध्रिग्ग सुष्ष संसार। ध्रिग्ग मिष्ठान पान वर ॥
सुपन में ईषह षत्त। मिष्ट लग्गै हाहुलि पर।
नक संधि में परै। अग्ग घर बंध भार गिर ॥
कातर मन छंडियै। जीह सल बंधै दुद्दर ॥
सुर लोकहु नर नक्कपन। जस अपजस बंधी रवन ॥
मो बुझि झुझिझ पच्छै मरौ। जानि वक्र ग्रह सुगति पनु ॥

छं० ॥ ६८१ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। नाम तुम चंद न्याय धरि ॥
कहौ मंच कुल वद्द। कबहु उतरै न संभरि ॥
राज नीति जानहु न। साहि दिष्षौ दल त्रप्पन ॥
गलहां करि मरिहौ जु। विरद लभ्भौ उर कंपन ॥

(१) ए०कृ०को० हीरां। (२) ए०कृ०को० कोरों।

जद्यपि सुभोन उग्गर तपै। अदपि संभ च पिह गहन ॥
चहुआन अग ते दिन नही। गहन राज ते रिपु रहन ॥
छं० ॥ ६८२ ॥

कविचन्द वचन।

सुनि हम्मीर नरिंद। विधिनि व षे व धन वर ॥
डोरी धन त्रिम्मान। काल षचौ निकह कर ॥
पय लग्गोनिय मीच। मत को करै जियन कौ ॥
विधि विधान त्रिम्मान। झूठ उच्चार कियन कौ ॥
गल्हा न सच सचै ननह। सो न' रहै गल्हा रहै ॥
उच्चरै चद जबू धनी। साच एक जुग जुग चहै[2] ॥
छं० ॥ ६८३ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चद। हुअे दिन अदिन विचारौ ॥
जब रावण हरि सीत। कियौ गढ लक सघारौ ॥
अदिन काज पडवनि। जूअ सों हेत बिचारौ ॥
अदिन काज परिछत्त। रिष्प गल अप्प हकारौ ॥
इह अदिन बुद्धि सामत सब। कलह केलि अति बल सरिय ॥
हरि हर। देव इद्रादि सुर। वरजि गये अति गति वुरिय ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

मिटै न वर सबध। इता अनयो क्यों सहिय ॥
च द बिब चहुआन। भूमि भारह त्रिग्रहियै ॥
जैत सुभर बलिभद्र। बीर ब धन सुविहान ॥
बड गुज्जर रा रोम। झूठ ब धै वर बान ॥
बीरम भग्ग मन जिहि बरनि। नर बरनि तिहि सोइ नर ॥
जानियै न मन छिज सबर सुगति[3]। यो धर ब धे पूरन कर ॥
छं० ॥ ६८५ ॥

कविचन्द वचन।

चद कहै हम्मीर। अनय षची क्यों आवै।

(१) ए० क० को०—मोन। (२) मो रहै। (३) ए० कृ० को०—सुगति।

जब्बहि समर संपजै। तब्बहि अंबर सिर लावै।
जहां रुथ्यौ तहां मरै। घाट अवघट न बिचारै।
जस लज्जा गल बंधि। स्वामि अस्सह उच्चारै॥
संसार अथिर सामंत मत। सक सहाब बंधम भिरिन॥
जानहि पराक्रम पुच्छ तम। इन अंगों को वर करम॥
छं०॥ ६८६॥

हम्मीर बचन।

काली काल बिष धरै। डंक बीछी उच्छारै॥
नीलकंठ सिव वरै। मोर महौरंग निहारै॥
काल अंब हरि जाहि। जीह पथ्थीह पुकारै॥
धर्म्यौ वहै गयंद। चढै शिकार सिआरै॥
सुरतान काम सद्दै सलष। जैत राइ बिरदां वहै॥
हाहुलि राइ भट्टै कहै। को अनंष इत्तै सहै॥ छं०॥ ६८७॥
दावानल पांवार। अनल चहुआन सहाई॥
घटजनमा रिषिराज। समद सोषै धरताई॥
जैत राव कंठीर। हथ्थ सामंत राज सिर।
पर्हु पहार पांवार। घडै भंजै गोरी धर॥
अंबुआ राव अग्गै पहर। बिन न जोर जंबू रहै॥
चुंगलिय बाज जोगिनि पुरिय। जं जं भावै तं कहै॥
छं०॥ ६८८॥

कविचन्द बचन।

सुन हम्मीर नरिंद। मरन आवै अभाग मति॥
अंत काल बिक्कम नरिंद। भष्षि वायस अविद्वि गति॥
मरन वार बहु भोज। धूम्र सुक्क मलेच्छ भौ॥
मरन काल पंडवन। ग्यान छुट्टौ मोहि लभ्भौ॥
चित्तौ न चित्त चिंतह नहौ। नरक निवासी होहि नर॥
धिग धिग सुबीर बसुधा करै। तौ न छुट्टै नर काल गर॥
छं०॥ ६८९॥

(१) पृ०कृ०को० - संसार।

हम्मीर वचन ।

सुनौ भट्ट कविचद । रहसि बुल्यौ जब पति ॥
मो जिय इय अदेस । मत पुच्छौ जालंध गति ॥
उभै लिषें कागद प्रमान । राज राजन सुलितान ॥
बीय अग्गौ सुक्कियै । सोइ अप्पै फुरमान ॥
बत्तौ विवेक द्रुग्गा सुमत । हथ समप्पि हम्मीर कर ॥
आरंभ होइ इह बत्त गति । सुबर बीर जपौ सुबर ॥

छ० ॥ ६६० ॥

कविचन्द वचन ।

असत राज जब ग्रहै । नीति भ्रम दूरि निडारै ॥
सती असत जब ग्रहै । पैसि भाडै भडारै ॥
जती असत जब ग्रहै । कनक कामिनि मन मडै ॥
सूर असत जब ग्रहै । मरन माया तन मडै ॥
हो अबुधि न करि जबू धनी । इह सुबुद्धि कौ पुच्छियै ॥
जालंध देवि गम अगम बुधि । सो बुधि पुच्छन इच्छियै ॥

छ० ॥ ६६१ ॥

हम्मीर वचन ।

कुंडलिया ॥ मगि वायस जग्गिय अलुक । धपि परवार कपोत ॥
भौम नही बधाइ बंध । धरक न मानै जोत ॥
धरक न मानै जोति । धरक मुक्कै न धरहर ॥
धर मुक्कै मुक्कहि न मान । सिध सा पुरिस बाज बर ॥
ऐव दिसित चढ़ि चरौ[1] । चद जन मातहि पग्ग ॥
कौ अनप इह सहै । कहै सामंत सुर मग्ग ॥

छ० ॥ ६६२ ॥

कविचन्द वचन ।

कवित्त ॥ सोइ ज सूर सा ध्रम्म । जुग्ग सा ध्रम्म न पुज्जै ॥
दया दान दम तिथ्थ । सबै सो ध्रम मनि रुझ्झै ॥

(१) ए० कृ० को०—चले ।

साँमि अग्गा वर मुगति। नरक बर तिथ्य निवासौ ॥
सुनि हमीर सा अग्गा। करै सुरपुर नर बासौ ॥
सा अग्गा मुकति बंधै रवन। सांमि अग्गा अस मुगति वर ॥
अब किति किति करतार कर। नरक चूक गहुगहगौति नर ॥
छं० ॥ ६९३ ॥

हम्मीर वचन।

अक्षूरा पांवार। जैत हाहुलि कहि बुल्लै ॥
सुनि कन्हां चहुआन। ताहि प्रथिराज न पल्लै ॥
पूछानी चामंड। डंड मंगै लाहौरी ॥
जिम खाना गंधान। कोल लद्धौं कारोरी[1] ॥
उच्चार भार बोलै हरै। राज उलथ्थौ साहनी ॥
उपरैं जांम नहीं लगर[2]। सुभर उभारै घाहनी ॥
छं० ॥ ६९४ ॥

कविचन्द वचन।

इन वेरां हम्मीर। नही औगुन बंचीजै ॥
इन वेरां हम्मीर। छचि अग्गाह संची जै ॥
इन वेरां कै सिंघ। बर विषर जेम उंभारै ॥
इहि वेरां हम्मीर। सूर क्यों स्यार सँभारै ॥
बेरां हमीर पौरुष पकरि। इह सु बात रंडां ररी ॥
सामंत राज काजह समथ। न करि ढील निंदा करी ॥
छं० ॥ ६९५ ॥

हम्मीर वचन।

की लोहानै जंग। सोम लग्गा अजमेरी ॥
कैमासें उच्छेरि। तुरी तूंवर विच्छेरी ॥
जेतौ तारूंगांमि। ठाम ढंढा ढुंढारा ॥
क्रूरंभा पज्जून। काम किन्नो कुछारा ॥

(१) ए० कृ० को० कालोरी। (२) ए० कृ० को० गरला

सारुडं भुझझ उलझिझया। लोहानै लग्गी वही ॥
ऊछगा व धन सेवरा। तें भट्टा द्रुग्गा लही ॥

छं० ॥ ६९६ ॥

कविचन्द वचन।

सलष अलष करि जुद्ध। साहि गज्जन वैसाह्यौ ॥
कैमासे वर वधि। भीम भोरा घर गाह्यौ ॥
तूवर वर उच्छारि। अप्प वाचा कहि फेरौ ॥
कमधज धरधक धोरि। धरनि जित्ती अजमेरौ ॥
हौं भट्ट चट्ट जस अजस पढि। भरौं साषि ह्वरह समर ॥
हम्मीर मत चुक्कत सभर। हसहि देव दानव अमर ॥

छं० ॥ ६९७ ॥

हम्मीर वचन।

भोरै रा भारथ्थ। कहथ जाने तू भाई ॥
पामारा पज्जून। लिये पट्टन वै साई ॥
मे कह्यौ कैमास। हथ्थ भीमा वट्टानौ ॥
तू जानै चहुआन। बार बर तू इच्छानौ ॥
सलर्षा सलम्भ अब्बा हुआ। अब लग्गाई वत्तरी ॥
सुरतान कालिह आनों धरा। आज तुम्हारी रत्तरी ॥

छं० ॥ ६९८ ॥

मुह कट्टानी बत्त। चद जानी पहिलाही ॥
ते सोई रै काज। भरकि उट्ठे अच्छाही ॥
तु आरज आजान। बार ढिल्ली घर[1] अट्टा[2] ॥
तू रप्पन हिंदवान। पान राजन तो चट्टा ॥
आगर बुलाह गो व मना। गर वट्टा पट्टा मुहा[3] ॥
जालपा जागि पुच्छाइया। जी रापै अम्मा दुहा ॥

छं० ॥ ६९९ ॥

[१] ए० कृ० को०—वर। [२) मो० चढा।
(३] ए०कृ०—गर वट्टा पट्टा सुहा।

चह,आना रै रजधान। सोमंत सड़ाई॥
ते मोलो वर लागि। जाइ कमवज्ज कराई॥
ए गोरी साहाव। दीन जानै पहिलोना॥
हसम हय गय रेस। देह दष्यो दह गोना॥
कै काम कलह कंदल चढौ। कै कमा मरा गढौ।
बे काम भट्ट गलहाँ पढै। जिन भंजो दिल्ली सढौ॥

छं० ॥ ७०० ॥

कविचन्द बचन।

हां काज हमीर। देव देवी सिर दिन्ना॥
हां काज हमीर। अग्ग सध्यौ गुउजिन्ना॥
हां काज हमीर। राज मुक्यौ रघुराई॥
हां काज हमीर। मंस कप्यौ सिव सांई॥
न गलहलांन गलहा करैं। तुम गलहां लग्गै बुरी॥
त लोक जीव जम पंजरै। तुम जानौ छुट्टै दुरी॥

छं० ॥ ७०१ ॥

हम्मीर बचन।

रे चंद तुम गलह। इहां नाही अधिकारिय॥
घर जानो षेल। नही डिभरु षिलारिय॥
है अग्गि नहि दीप। अहै आगैं होइ दिष्षैं॥
पुट्टै आकास। कोंन थिगरी लष्षैं॥
म दुरैं नही जीवन मरन। नह लागै गलहां बुरी॥
ो मत्ति इहै अप उब्बरो। करो मंति गो ब्रह्म छुरी॥

छं० ॥ ७०२ ॥

चन्द बचन (आख्यान कथाओं का प्रमाण दे कर हम्मीर को समझाना)

न हमीर इक अलुक। गरुर गाढी मिचाई॥
ब उलूकह देषि। गरुर जोरा मुसकाई॥

[१] ए० कृ० को० सग।

तब अलूक भय भयौ। गरुर अग्गैं करजोरै ॥
मोहि तहा लै जाहु। जहां कोई जीव न तोरै ॥
धरि पय ढंकि साइर गुहा। तह बिलाव भष्यह भवन ॥
सनमध देह जष्यह परन। मिटै न सो राजन मरन ॥

छं० ॥ ७०३ ॥

दूहा ॥ पारधि बागुरि सिंघ कौ। दावानल भय मानि ॥
ससि मंडल मैं मृग बसत। ग्रहन राह सोइ आनि ॥

छं० ॥ ७०४ ॥

गाथा ॥ ईस सीस मयंक। सरन रष्षिय जा भय मने ॥
दंड माल छल राह। अनचिंतिय आय घेरिय मध्ध ॥

छं० ॥ ७०५ ॥

हम्मीर वचन।

कवित्त ॥ केहरि कंदर द्वार। भिल्ल मुगतो फल पायौ ॥
फिटक जानि पाषान। मूढ अज गल बधायौ ॥
कोइक समै पारषी। मिल्यौ जवहरी बिचष्यन ॥
मुह मंग्यौं दै मोल। तोल करि आनि ततष्यन ॥
अवलोकि तेज पानी सरस। महिपति जरिय किरीट मधि ॥
इहि रीति चिंति कविचंद कहि। हाहुलि राव हमीर कहि ॥

छं० ॥ ७०६ ॥

पुनि अष्षिय हम्मीर। सुनहु देविय वर दाइय ॥
मार पिट्ठ मोरिंग। अंग सोभा दरसाइय ॥
तिन कों लै मदमति। चोटि नषत करि लघुता ॥
मंडल ग्रसी रमत। बढिय सो पावत प्रभुता ॥
ब्रजनाथ हाथ गहि माथ धरि। मुरली सुख बज्जावही ॥
मिलि सकल गोप गोपंगना। मुकता फल सुवधावही ॥

छं० ॥ ७०७ ॥

कविचन्द वचन।

परथि तेल सिंदूर। बहुरि बंधे सिर चमर ॥
आभूषन पहिराइ। ढंकि ऊपर पाटंबर ॥

बलावंत मुह अग्ग। दुरद नरपति कैं दिट्ठे ॥
सागरि गुंड में पोत। साथ बन मंगर अपुट्ठे ॥
अप अप्प उतन लग्गत सदा। मिट्ठौ हाहुलि राव धन ॥
कविचंद कहत पिछतादूगौ। भत्ति करै दिसि जवन मन ॥

छं० ॥ ७०८ ॥

हम्मीर वचन।

दूहा ॥ बहुत कहत हम्मीर सुनि। अब कछु रहत रमन्न ॥
थान भिष्ट सोभत नही। नर नष केस दसन्न ॥

छं० ॥ ७०९ ॥

कवित ॥ दसन दुरद सों भइय। पहिर बनिता कर चूरिय ॥
सरहि केस सोभइय। राज सिर सभा संपूरिय ॥
केहरि नष सोभइय। कनक मढि कुंअर घलत गर ॥
सूर बीर सोभइय। सिंघ सा पुरस परहर ॥
हाहुलि कहंत कविचंद सुनि। अब जुगति बन बहि घनिय ॥
पहिले न करिय आदर भरनि। मन विचारि संभरि धनिय ॥

छं० ॥ ७१० ॥

कविचन्द वचन।

धरनि मद्धि धसि कूप। परत नर पथिक अद्ध फार ॥
बट बल्ली अवलंबि। नाग अवलोकि चरन तर ।
सिर पर सिंधुर आय। सुंड गहि साष हलावत ॥
तुह छत्ता मुह आलि। उड्डि तिहि तन पलटावत ॥
मधु बुंद परत चट्टत अधर। सकल दुष्प जिय भुल्लइय।
इम विषय सुष्ष कविचंद कहि। किम हमीर मन डुल्लइय ॥

छं० ॥ ७११ ॥

कविचंद और हम्मीर का जालंधरी देवी के स्थान पर जाना।

[illegible]ा ॥ तत्त वत्त जानौ सबै। इम माया इच्छांमि ॥

चलि जालधर दहरै। मिलि जालय पुच्छामि ॥
छं० ॥ ७१२ ॥

नालिकेर फलदल सुफल। सार कपूर तमोर ॥
उभै सुनर पुजन चलै। दै सब सथ्थ बहोरि ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

जालपा के स्थान का वर्णन।

कवित्त ॥ देषि थान आलध। पथ षोडस बारस गुर ॥
करित कोट अछिरन। पति पतिनि दिप्पत बर ॥
मनि त्रिप उत जनु नरिंद। चंद बंदी बदत उर ॥
मनो बडवा नल लपट। कोटि फंदी आलधर ॥
मनो मोहनी रूप ह्वै अवतरी। कै महिल काइल भांई बंधी ॥
ससि एक कोटि घर ज्यौ जुवह। सो कविराज ओपम सधी ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

च्यारि कोट बज्जग। मद्धि जालपा सुथानह ॥
हम छत्र जरि मुत्ति। मचद गंगा जपानह ॥
करिय सनान पवित्र। धोइ धोवत तन मंडिय ॥
सम सुगंध षढि छंद। जाय कुसम जलि छंडिय ॥
करि धूप दीप नैवेद मिलि। राज अंदेस संदेस कहि ॥
बोली न बयन देवि तदिन। अजुत हमीर सुवत्त लहि ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

कविचन्द का देवी की पूजा करके स्तुति और निवेदन करना।

दूहा ॥ कुसुम मंडि मंडलि सिरह। चंदन चर्चित चंदि ॥
सुकि गंध दिय धूप दिव। जै जालधर बंदि ॥
छं० ॥ ७१६ ॥

अवनी अंबी अंब सुनि। अंबी अंब सुबंभ ॥
अंवनि चंद उचार किय। सुतन अनंदिय संभ[1] ॥
छं० ॥ ७१७ ॥

देवी (जालपा) जालंधरी की स्तुति।

भुजंगी ॥ द्रुग्गो हिंदुराजान बंदीन आयं। जपै जाप जालंधरं तूं सहायं ॥
नमस्ते नमस्तेह जालंध रानी। सुरं आसुरं नाग पूजा प्रमानी ॥
छं० ॥ ७१८ ॥

ह्रीं कार रूपं सुआपे विराजी क्लींकार झंकार ह्रंकार साजी ॥
ॐकार रूपं औंकार धारी[2]। प्रियं कारनं कारनं सार सारी[3] ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

सिवं संपुटं बीज पनव्व रूपं। स्वहाकार षटकार ह्रंकार ओपं ॥
सुरं षोडसं रूप चोदसा मानी। त्रयं जीस[4] ब्रन्नं सुवृन्नं प्रमानी
छं० ॥ ७२० ॥

त्रयं रूप ब्रह्मादि संध्या सकत्ती। त्रयं काल त्रैलोक त्रै बेद रत्ती
अद्भभूत रूपं सुअव्वै समायो। गुनातीत आतीत[5] जालंध राया
छं० ॥ ७२१ ॥

जपै तोहि जापं सुधामं प्रमानी। दियौ अब सिद्धिं सुरिद्धी सुरानी
प्रथीराज चहुआन दीनो उतारं। तहां कुंद भामी करै अब्बसारं
छं० ॥ ७२२ ॥

कह्यौ तोहि प्रनाम[6] मो मिश्री देवी। प्रकारं सुधारं विवद्धी सुसेवी
अहं मोकल्यो हाहुली पास काजं। तिनं पुच्छमं माव साक्रित रा
छं० ॥ ७२३ ॥

कह्यौ कारनं अब साराज अंबी। पुहं पंजली छंडि सीसं सुलंबी
रह्यौ आप थहो दुअं पानि मंडी। अगं कारनं जानि बोली न चं
छं० ॥ ७२४ ॥

(१) ए० कृ० को० सिंभ। (२) ए० कृ० को० साजी।
(३) ए. कृ. को -राजी। (४) ए.—त्रयं जीम।
(५) मो. आनीत। (६) ए. कृ. को. प्रमान।

हम्मीर का देवी से निवेदन करना।

कवित्त ॥ कहि हमीर सुनि देवि। तत्त वादी कवि आया ॥
कै को हिंदू को तुरुक। कौन रंक सु को राया ॥
को रविद को जिद। कौन तापस को छाया ॥
को साहब को राज। कवन सुकवि कह गाया ॥
इह परम हस संसार छित। तु माया तू मोह मत ॥
जानौं न बाम दच्छिन करन। हौं साईं संसार रत ॥

छ० ॥ ७२५ ॥

कविचन्द का देवी के मंदिर में बन्द हो जाना और हम्मीर का शाह की सहायता के लिये जाना।

इह परत्तर दीह। चंद जान्यौ चहुआन ॥
जिन भुजानि धर भार। भोमतीय अधर भान[1] ॥
इसम हय गय देस। दीह घट्टै बल घट्टै ॥
धन्न मरन तिन आनि। मद्दल सिर सारे पट्टै ॥
आवृत्त बात जोगिनि पुरह। भव भवस्य इह न्त्रिमयौ ॥
कविचंद रुक्कि अच्यौ जियन। म्रिह गोरी हाहुलि गयौ ॥

छ० ॥ ७२६ ॥

उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त चहुआन न्त्रिप। धरिय धीर मन पान ॥
हौं अभंग अनभंग बर। हौं भंजन सुलतान ॥

छ० ॥ ७२७ ॥

कुँडलिया ॥ रोकि कवि दहि अप्प मिलि। सो सुरतान अबुझ्झ ॥
सुनत राज प्रथिराज कै। हवि लागी उर मझ्झ ॥
हवि लागी उर मझ्झ। सभ्भ आई गुर गल्हा ॥
भट्ट बसीठह रोकि। अप्प है वै दिसि हल्ला ॥
दस हजार हैवरनि। लष्प पयदल अभ वृंदा ॥

(१) ए० कृ० को—भोमाति अधर भ ग।

मिल्यौ जाइ सुलितान। रोकि देवल्लं कविंदा॥
छं० ॥ ७२८ ॥

चामंडराय का कहना कि सब लोग चार चार तलवारें बाँधें, जो जिसमें जा मिला सो जानदो।

दूहा॥ चवै राइ चामंड इम। अहो राज प्रथिराज॥
च्यारि च्यारि तरवारि झरि। भर बंधै सब आज॥
छं० ॥ ७२९ ॥

मरन तुच्छ मारन बहुल। हम उन अंतर एह।
एक सु पक्की निजर की। अरि कार कच्ची देह॥
छं० ॥ ७३० ॥

क०। सुनिय राज इह रीति। बीर संसार सपन्नौ॥
अवर रत्त संकुचित। गुनज मुक्कित अपन्नौ[1]॥
सहन अगर[2] तन संग[3]। मनह छंचिय छल लग्गा॥
क्रोधतआ भयिवचन। लोभ लग्गो सह अग्गा॥
सल्लिता सुनीर वित्तं सरद। अबब सुष्ष दंपति मिल्ली॥
चासौज बीज संसार कार। रंज रंजि राजन मिल्ली॥
छं० ॥ ७३१ ॥

पृथ्वीराज का धीर के पुत्र पावस पुंडीर को हम्मीर को रोकने के लिये बीड़ा देना।

बोलि राज प्रथिराज। पान अप्पै से पानं॥
तूं धीरं जा धीर। भीर भंजन सुरतानं॥
है हमीर आधीर। सांइ द्रोही सिर बंधी॥
लाज बडप्पन घाइ। सिंधु हम्मीर जु संधी॥
सामंत सूर सगपन सरै। सुतेग बेग बंधै न कोइ॥
पुंडीर राइ पावस्स सुनि। बंधि तेग रावत्त होइ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

(१) ए० कृ० को० -अवसर तहां सकुचि गुन जनुकंत अपन्नो।
(२) ए० कृ० को०—अंगार। (३) मो०—अंग।

पावसपुंडीर का बीडा लेकर तैयार होना।

पानि सामिलिय हथ्थ। वंदि सुरसरि चढि आइय॥
बीर द्रगनि झलकंत। काच कंचन जलझाइय॥
सुबर राज प्रथिराज। सजिय बर अप्प तुरंगम॥
नृप सनाह पावस नरिंद। हरषंद अभंगम॥
दल मलन अरि आवृत्त बर। बंधन हाकुलि रोष भर॥
रनधीर धीर तन तन दलन। पुहप भूसम पावस सहर॥
छं०॥ ७३३॥

चौपाई॥ मनो नागपति कन्ह जगायौ। कै प्रलै काल चैनेंच लगायौ॥
कै हर हरन चिपुर सुरधायौ[1]। कै छिति हरन हरनाकुस सायौ॥
छं०॥ ७३४॥

जामराय यादव का मुसल्मानी सेना के निकास का रास्ता बांधना और पावस का सीधी पसर करना।

कवित्त॥ तब पावस पुंडीर। बोलि राजन जमजद्दों॥
कै कोसन सुलतान। कोस कै प्रहत बद्दों॥
बोलि राव रधरौ। निरत कीनी कीहानी॥
पच पान परवत्त। सत्तपान सुलितानी॥
जगती धाम सामंत सह। सेन बढी बाढी कलह॥
हम रुप्प ओहि मीरां दिसौ। चढि पावस पावस कलह॥
छं०॥ ७३५॥

तब पावस रा पुंडीर। सज्जि सन्नाह सं पन्नौ॥
तीन सहस पुंडीर। बंध अग्गै रस भिन्नौ॥
अप्प अप्प चितयौ। होय अग्गौ जन मान।
लच्छि सु लूटन काज। रंक धावै धन धान॥
लियै रावत्त कित्तिय कला। छै गहि मोह माया तजे॥
दुति अम्म अम्म सोमंत दुति। धीर धवल कंधह सजे॥
छं०॥ ७३६॥

(१) मो०—कै हरन्न हर त्रिपुरार सुधायौ।

पावस पुंडीर की पसर का रोरा और कांगुरे को तिरछा देकर सीधी राह जाना।

दूहा ॥ पावस चढि, पावस अगमि। घन छत्ती छिति रूप ॥
गावहि नीर हमीर घर। सुकि जवास उर भूप ॥
छं० ॥ ७३७ ॥

चढि पावस पावस रवनि। गजि दल बद्दल निसान ॥
धनि षग पंति[1] सनाह तुअ। मनु बद्दल विज्जुल भान ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

पावस पावस मेघ सम। कै सम मुरति[2] प्रमान ॥
चित्त सुमन पुंडीर परि। बाजि गुड्डिग्ग निसान ॥
छं० ॥ ७३९ ॥

कवित्त ॥ सह सेना चालीस। मध्य सत पंच तुरंगम ॥
टारि सूर सामंत। बज्र करिवार वज्र सम ॥
सस्च तेज जम जुत्त। जुद्ध आकूत अभंगम ॥
पुच्छि अग्ग सा ध्रम्म। क्रम्म बंधीन बंध भ्रम ॥
कांगुरौ तिरच्छौ मुकि कै। बर अग्गें को धाइया ॥
तिन ठाम चूक चिंत्यौ हतौ। मिलन सरोसन पाइया ॥
छं० ॥ ७४० ॥

हम्मीर की ओर पावस पुंडीर की आगे पीछे छुआ छाईं होते जाना।

यौं छूटौ भंजीय। मुद्ध भंजै नर धायौ ॥
चच्छया अवा भज्जंत। गरुर आगें नन जायौ ॥
ज्यौं अरथ न छिपै कविंद्र। मोह मन जाय ग्यान अग ॥
मुनि न जाय गम भावि। रूप नन जाइ दिष्ट अग ॥

(१) ए० कृ० को०—पंति।

(२) मो०—गुरति।

वन जाइ म्रिग्ग म्रगपति सुअग। आप जाइ नन गुरव अगि ॥
नन सकै जाय हम्मीर तिम। इम हक्यौ पावस सुलगि ॥
छं० ॥ ७४१ ॥

पावस पुंडीर का नदी का घाट जा बांधना।

प्रात गयौ हम्मीर। सांझ पुंडीर सपन्नौ ॥
रच नाव थकि गयौ। अजहु पत्तयो जिवन्नौ ॥
पथ वान पुच्छयौ। वग्गौ पावस धर जित्तौ ॥
रा हमीर उत्तरयौ। राव वीरत्त विरत्तौ ॥
आडौ उलगि परिव वजि। धार धार सों उत्तरी ॥
सोहा सुलहरि तप छंडि वपु। दिसि कगुर समुद्द भिरी ॥
छं० ॥ ७४२ ॥

तेंही वार सलित्त। नीर लग्गौ दो कठ छलि ॥
ज्यौ वछैल तिय मिलत। पाप छम्मै सुभ्रम्म कलि ॥
ज्यों समद सित पय प्रमान। किलि पाल करै सलिता ॥
मिह कलक छिप ईस। फूल चम्मै सुप हलता ॥
यों परम जीव दावह सुहत। बज्ज कोट तारन सुगुर ॥
दुहु सेन मझि सलिता परिथ। सो ओपम जपी सुवर ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

वज्ज काय दिष्षियै। सूर दिष्षियै नीर सुर ॥
ज्यो मृनाल दिष्षिये। कमल दिष्षियै उपर धर ॥
प्रबल वाल सैसव समूह। मझिझ जोवन चिन्ह न लपि ॥
अरुन उदै ज्यौ भान। किरन रत्तौ सुमत पिषि ॥
द्रिग लपै क्रोध हिय मझझाते। अंजुलि मे जल दिष्षियै ॥
सुर सहस मझझ वङ्केति पट। सत वज्ज बढाई अष्षियै ॥
छं० ॥ ७४४ ॥

हम्मीर की सेना के नदी पार करते समय पुंडीर सेना का हमला करना। दोनों की लड़ाई।

तजिय राव हम्मीर। वीर उत्तरति विषम घट ॥

(१) ए० कृ० का०—पषि, पप।

दुइ जोजन संभवति। रोकि पुंडीर सतें[1] थट ॥
अंतर फिरि रोकि। बार उतरि हथि पारं ॥
मार मार उच्चार। दीह धट्टति पछिवारं ॥
पुंडीर धीर नंदन नवल। दिसि हमीर असिवर कढिग ॥
उच्चरिय बेन पछिवान अरि। बीर बलिय संमुह चढिग ॥
छं० ॥ ७४५ ॥

रा पावस पुंडीर। बोलि षंगा[2] रस पुंछी ॥
बे बरह लिषि धीर। बीर बीरा रस कंछी ॥
कंक बंक रस पंक। बीर षुत्त रस जुट्टी ॥
दोउं बल धुनि प्रान। कंक क्रित कुंभ अवट्टै ॥
बिभ्भाय भाय षंजर कढिग। बढिग बीर बल्ली सुभर ॥
मद मोष जामि छुट्टे जुरन[3]। बजिग लोह सह सूर धर ॥
छं० ॥ ७४६ ॥

ऋं धीरं जा धीर। सरस छुट्टै पुंडीरं ॥
पावस पावस राव। धार उज्जल झरि वीरं ॥
षग्गानी किसोर। सार बुट्टै तिन गानी ॥
मनों बीजली बाल[4]। सथ्थ उभ्भासैं पानी ॥
घरी एक जुद्ध आवृत्त करि। जुद्धानी गंजागि लगि ॥
हम्मीर राव पावस पुरिस[5]। बरिषा जिय आवृत्त जगि ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

दूहा। जंबू हाहुलि राव सों। जज्जर बज्जि सना ॥
भिरि सँमुह पुंडीर बजि। बन जज्जर अगि दाह ॥
छं० ॥ ७४८ ॥

(१) ए. कृ. को. सवें।
(२) ए कृ. को. षंधार।
(३) ए० कृ० को० लरन
(४) ए०—बाज
(५) ए० कृ० को०—सरिस।

इस लड़ाई में पाच पुडीर योद्धा और हम्मीर के दो भाइयों का मारा जाना। हम्भीर का भाग जाना।

कवित्त ॥ निवारि वीर अस छंडि। रुक्कि जय पति भग्गा ॥
भग्गा वर हम्मीर। पुष चिय फेरि विभग्गा ॥
पंच सहस पुडीर। जुद्ध कीनौ अधिकारी ॥
दो हम्मीर नरिंद। षेत बोल्यौ हक्कारी ॥
पुडीर राव पावस पहर। भार उभार लग्गो गयन ॥
कट्टंति लोह परिवार तें। सुनहु सूर सूरन वृनन ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

बीर रूप उन्नयन। सरुच विज्जल कड्ढी वर ॥
भय पावस पावस प्रमीन। गज्जि धन बात रस्सगिर ॥
क्रोध पवन तट ईट। टाढ़ कंपे कर कारिवर ॥
सागर सलित सुसरुच। रुधिर अस वहै सारभर ॥
सुष हुए सूर सजोगिनो। बीर वियोग कारन कथ ॥
कैठेति चित पोवस रिपह। सजोगिनि नरपत्ति हय ॥
छं० ॥ ७५० ॥

दूहा ॥ उभै पूत रन परिग वर। वर बंधे गिरि पुत्त ॥
रोस चढ्ढि फिरि वज्जि वर। उतरि सवित्त सुरत्ति ॥
छं० ॥ ७५१ ॥

पुडीरा भग्गा भिरै। गहन हर जुध भीर ॥
विषम तज आवृत्त नर। धनि धीरजा धीर ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कवित्त ॥ सो पुंडीर वर जुद्ध। भिरे बुड्ढे सा रानी।
तीर छुटे जह नीर। तहा हम्मीर जुठानी ॥
बरषि मिले सो बीर। तुटि मंडे वर नीर ॥
मनु वृछय भार सो भज्जि। रुरै तुटि अतर भीर ॥
उरभौ सरीर तुट्टे पगा। तार जेम बज्जे सुभिर ॥
निवरत्त सिंह मिटि ककरव। पन हमीर मुक्कि षेत तर ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

उभै बंध हम्मीर। षेत बंध रधुबंसी ॥
पंच बीर पुंडीर। मुगति लद्धी रन गंसी ॥
ज्यौं बाहनि मुष्कि धाइ। लग्गी पानी बर भग्गा ॥
गहवि बाग पुंडीर। नीठ फेरे बर अग्गा ॥
यौं लहरि लोह बाजी विषम। रा पुंडीर भारथ्थ जित ॥
हम्मीर भंजि हम्मीर पें। चढि तुरंग गोरी सुगत ॥
छं० ॥ ७५४ ॥

दूहा ॥ असी सत्त ग्रह गगन बर। परे झुहिं[1] पुंडीर ॥
सामि दोह नट्ठी गयौ। मिले राज रनभीर ॥
छं० ॥ ७५५ ॥

चरन लागि सो राज कौं। जे बीरौं गिर युत्त ॥
सकल सूर धनि धनि कहैं। जिति हाहुलि राधुत्त ॥
छं० ॥ ७५६ ॥

पावस पुंडरि के हम्मीर पर विजय पाने पर पृथ्वीराज का पुंडीर योद्धाओं को चौतेगी होने का हुक्म देना।

बद्धाइय बाजी घरह। ढिल्ली वै वर थान ॥
हम्मीरह भज्जे भरह। जित पुंडीर प्रमान ॥
छं० ॥ ७५७ ॥

राजन अप्पन उचित करि। दिय सिर पाव सुच्यारि।
हुकम वेग बंधन कियौ। च्यारि च्यारि तरवारि ॥
छं० ॥ ७५८ ॥

पुंडरि वंश की राजनई का ओज और शाह का समाचार पाना।

कवित्त ॥ च्यारि च्यारि तरवारि। बंधि पुंडीर सहस चिय ॥
बज्र काल बज्र बहन। बज्र झल्ल सुबरन निय ॥

(१) ए० कृ० को०–झुंडि।

यो पन ब धन हमीर। छडि पष्पर सनाह अंग ॥
बीर सर साधिक। पच बीरह पावस मग ॥
भै दुग्ग बीर निधि लज्ज जग। दुसह साहि अड्डो सुचलि ॥
अगि लग्गि धीर पडोन ज्यो। सजत सथ्थ उत्तरह षुलि ॥

छं०। ७५९ ॥

इह सुनि बत सुलितान। चर[1] धाय साहि पे पत्त ॥
कहिय चरित पावस सरिस। साहिब धीर नमत्त[2] ॥

छं० ॥ ७६० ॥

हाहुलिराव हम्मीर का शाह के पास पहुंच कर नजर देना।

कुंडलिया ॥ चमर पमर[3] म्रग मद मधुर। बाजी कट्ट कठौर ॥
मिल्यौ जोइ गोरी धरा। हाहुलि राव हमीर ॥
हाहुलि राव हमीर। साम[4] द्रोही घर लग्गो ॥
सील साच[5] तप तेज। ध्रम्म धुर धारनि भग्गो ॥
गो विग्रह पप छडि। और प्रक्षत पति पामर ॥
मिल्यौ जाप सुरतान। मधुर मृग मद लै चामर ॥

छं० ॥ ७६१ ॥

दूहा ॥ च्यारि च्यारि तरवारि भर। भर बधै चर धाय ॥
इह चरित्त चहुआन दल। कह्यो साहि सों जाय ॥

छं० ॥ ७६२ ॥

शाह का कहना कि पक्की पकड़ी हुई एक तलवार चार को मात करेगी।

तबै हाथ वज्जी सुबर। सुनि पुच्छी सिसुताइ[6] ॥
भुम्भ परट्टयौ हिंदुदल। रहै निदान कि जाइ ॥

छं० ॥ ७६३ ॥

(१) मो०—वर।
(२) मो०—साहि बब रन मत्त।
(३) ए० कृ० को०—परम।
(४) ए० कृ० को—साव।
(५) ए० कृ० को०—साइ।
(६) ए०कृ० को गात।

बास वृद्ध जुव्वन कहिय। वे मरो मत्ताय ॥
तेग एक पक्की ग्रहैं। चौ कच्ची भग्गाय ॥

छं० ॥ ७६४ ॥

करि निवाज सुरतान कहि। खिजिय बुद्धि दिसीस ॥
गहिव साहि कंधै हनो। अब जित्तौं हमि' रीस ॥

छं० ॥ ७६५ ॥

शाह का काजी से भविष्य पूछना।

कुंडलिया ॥ इह गंदी मट्टी मुरद। तुम मरदों मरदानि ॥
तुम अक्की सक्की हरन। मैं फकीर सुलतान ॥
मैं फकीर सुलतान। आप कहि पुच्छिय काजी ॥
भिस्ति भाष जो कही। छोड़ हाजी के गाजी ॥
जो उमेद जिय होइ। राज दोइ अलह मंदी ॥
कोइ गुमान जिन करो। कहै काया इह गंदी ॥

छं० ॥ ७६६ ॥

पृथ्वीराज की सेना का हिसाब और उसकी अवस्था।

दूहा ॥ सज्यौ सेन सोहन समंद। जंगल वै चहुआन ॥
घर अंगन मंगन सरिग। सुनत सूर अकुलान ॥

छं० ॥ ७६७ ॥

सबैं सेम सारि सहस। घटि वढि अन्नत बार ॥
जे भर भीरह सुह सधै[2]। ते बत्तीस हजार ॥

छं० ॥ ७६८ ॥

सहहि भीर नृप पीर जिम। लज्जा धर भर भार ॥
धरनि धरनि तिन वर गनत। ते मर[3] बीस हजार ॥

छं० ॥ ७६९ ॥

बीस हजारन मद्धि दस। जे अग्गा बर स्याम ॥
कर वज्जह वज्जी सहैं। ते पहु पंचह ठांम ॥

छं० ॥ ७७० ॥

(१) ए० कृ० को० इहि।
(२) ए० कृ० को० सजै।
(३) ए० नर।

तिन महि कवि गनि पच से । साय भाय द्रढ काज ॥
देव गत्ति दैवान सौं । तिन महि पहु प्रथिराज ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

पृथ्वीराज का पुंडीर पावस को शाह के पकड़ने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ चढी सेन न्रिप राज । बधि पुंडीर तेग चव ।
धीर बोल बर पुत्र । दाय चहुआनह हथ्थव ॥
सुरहर चष सुलितान । बधि अप्पौ परिमान ॥
दई दुवाह पावस नरिंद । गहन उत्तरि सुविहान ॥
करतार हथ्थ केतिक कला । नर अवरै जंपै वयन ॥
सबूह वार भावी सगति । पग्ग काम लग्गै गयन ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ देषि सेन बर साहि पे । लै चरित्त चहुआन ॥
च्यारि च्यारि तरवारि बर । सह बधी सुविहान ॥
छं० ॥ ७७३ ॥

पावस आगम धर अगम । दल साजे दोउ दीन ॥
अबर छायो अभ्भरन । छिति छाइय छवीन ॥
छं० ॥७७४॥

उक्त समाचार पाकर शाह का सरदारों से कसमें लेना ।

कवित्त ॥ सिंधु उतरि सुलतान । बत्त कहि षा षुरसानह ॥
षा ततार रुस्तमा । हुओ तुम साच मुसाफह ॥
मे आलम आलम । सकल हिंदू रा उप्पर ॥
जिहि ग्रहि हुओ वार । बेर सो आप अप्प कर ।
तिहि अहन हेत इछौ सुमन । साच झूठ करतार कर ॥
भग्गहु अभग्ग मत सग्रहै । धरहु लाज निज कुलन भर ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

सरदारों के शाह प्रति वचन।

बोलि षान षुरसान। षान रुस्तम षां ताजी॥
षां ततार षीरोज। षान असमान विराजी॥
षां नूरी हुज्जाब। षान षाना षुरसानी॥
हबस षान हबसी हुरेब। षान सुविहान बयानी॥
सुविहान षान षुरसान पति। बीरम सूरति रत्ति करि॥
इहि बेर मरन जीयन भिरन। गहैं साहि चहुआन लरि॥
छं० ॥ ७७६॥

शाह का पुनः पक्का करना। और सरदारों का करार खाना।

षां ततार रुस्तम। साहि अग्गें करि जोरें॥
आन साहि सुविहान। हिंदु दरिया ढंढोरें॥
गहि सुसाक गोरी चरन। परत भज्जन भज्जौ बर॥
हों ग्रहयौ उन बेर बेर। छुट्टैव डंड भर॥
बर बंटि फौज दिष्षौ निजरि। सिंधु उतरि सुविहान बर॥
सत पंच सूर सोलषि घटी। बंधी बीर द्रोनति सुधर॥
छं० ॥ ७७७॥

पुनि षुरसान ततार। षान रुस्तम कर जोरहि॥
आन साहि मरदान। आन चहुआन विछोरही॥
है हमीर हिंदून। दीन रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज बे काज। जाय गोरी गुमानहि॥
सुलतान आन चहुआन सों। जो न चाल बंधे भिरहि॥
दै मथ्थ हथ्थ सिर अज्ज हम। नहि दरोग दोजिग परहि॥
छं० ॥७७८॥

शहाबुद्दीन का सेना सहित सिंधु पार करना।

चितिय षट्ट सेना सुलष्षि। सजिय सन्नाह सदिष्षिय॥
अद्ध सेन किय अच्छ। वज्र सस्त्रं झिल अष्षिय॥

तिन मे पंच तिलष्य । वज्र क्रिस्सै कर वज्जी ॥
एक लष्य दस भाग । फेरि दीय न सुसज्जी ॥
तिन मझ्झ एक सहस सुभित । अद्व पंच प्रप चनि अधिक ॥
तिन मे सव सत समुद्र वर । पुन जेही गुन गुन सधिक ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

दूहा ॥ सजी सेन गोरी सुवर । सिंधु उतरि सुविहान ॥
राति सब्ब वर तिन सयन । आन पान पुरसान ॥
छं० ॥ ७७८ ॥

महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ समन कमन मो नदी । मीर महमुद रोहिल्लौ ॥
नव सुकोरि भुअ दंड । एक इक लष्षे इकल्लौ ॥
कितीक गढ्ढ ढिल्लरी । कोन मंडल इह बारह ॥
कितेक सूर सामंत । कोन हम सम झुझ्झारह ॥
साहाव दीन सुरतान सुनि । प्रगट एह पर तग वहि ॥
दी जिग्ग मग्गहम संचरहि । जौन देइ चहुआन गहि ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

शाह का चिनाब के उस पार तक आ जाना ।

सजल पूर सतनज । चरन साहाव सुमुक्किय ॥
पा कमाल गप्परिय । निरति सेना रसु लष्यिय ॥
परि प्रतीत सत्तन सघन । टेस नव नव वल तोलन ॥
अय जुवार[1] परवर दिगार । जुम्मी[2] जुर बोलन ।
दिव निसा देषि हित चित्त दल । चलन लोह कुंजर हयन ॥
बचन भेय[3] लष्पन पिषन । करि कग्गर अग्गर वयन ॥
छं० ॥ ७८० ॥

तम जित्तै जित बचलिय । राज राजन ग्रह गुद्दर ॥
हमस हाँम सामंत । मत पूरन भर सुभ्भर ॥

(१) ए० कृ० को०—जुआर । (२) मो०—जम्मी ।
(३) ए० कृ० को०—भाष ।

राज मिलन सुलतान। लिपि सुकग्गर फुरमानं ॥
हवि वचन्न असमान। असंप गज्जिय सुरतानं ॥
सम सिफति सील उत्तर तरह। दिसि दुत्तर संग्राम रन ॥
सम विषम वत्त पारसि कुसल। स्वामि वचन हिंदू सधन ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के पास खरीता भेजना।

वचनिका ॥ बंधानौ कै लाजरी। कागर बंधी हेमांजरी ॥
मसि रुह्वीई मद्दे। काजी कतेव सद्दे ॥
मुल्लांन उचार उर्स्सै। बंचन राजा श्रोतान सर्च्चै ॥
राजा प्रथिराज आगें। सामंत सूर संचार लागे ॥
इन विधि सरजन हार जोरे। सुरतान जलाल दीन लोरे।
इनि विधि हिंदू मुसलमान मुहानी। वयन नीरां रा जंजे सुरतानं
छं० ॥ ७८२ ॥

शहाबुद्दीन के पत्र का आशय।

भुजंगी॥ बने भिन्नि वेषा षमे षान मंडौ। सजे षंभ थंभं नए रंड डंडौ।
इला सस्च रत्ती न केली मुहावं। जमी जोर मंनै न औरं किसाव
छं० ॥ ७८३ ॥

हमं तुम्म एकं दुरं देव दाने। समं सिंध लोरै नहीं एक बाने
विनै देव अम्मां कुरानं पुरानं। न जानं सुने है कि आने सुमानं
छं० ॥ ७८४ ॥

उभै रीति उत्तंग दुत्तंग देही। छिनं भंग भंजे सुकामंध केही ॥
मिलौ आदि मीरा सुमीरा भिरंदे। विबो गरुह मल्है सुसद्दै सिरंदे
छं० ॥ ७८५ ॥

प्रियं प्रीति पैगंबरं साहि सज्जौ। सुअं जोर बंध्यौ सुलितान मज्जौ[1]
मिले हाहुली हेत हिंदू हमीरं। जनं जोर ठट्टै गुमानं गंभीरं
छं० ॥ ७८६ ॥

कियौ साहि सिष्टा सआपै आपनं। छलं छच हिंदू सिरं दीन मान

(१) मो०- षुरसान

मिलौ साहि साहाव सोहैत बधी । दहै देस छन ज पजाब अही ॥
छं० ॥ ७८७ ॥

बर पग्ग षुरसान सो मडि छडो । सुत रेन उहेव सौ सेव मडौ ॥
इला जुद्द कीने कहा लाभ पडो । निय नेहनी जोतिसों सेव पडौ ॥
छं० ॥ ७८८ ॥

सदा जोर हिंदू नये मुसलमान । जुराजोध दुर्ज्जोध ससार आन ॥
उव जराव देह सुमामत राजे । तट चन्द्र चिन्हाव सुरतान बाजे ॥
छं० ॥ ७८९ ॥

वर बोल चामंड राय सुनदे । चित चेत चिता सुदेही भरदे ॥
छं० ॥ ७९० ॥

शाही दूत के प्रति चामंडराय के वचन ।

कवित्त ॥ सुने सह चामंड राइ । सुरतान बसीठ ॥
अप्रमान बोलहु बयन । राजन सों ढीठ ॥
तुम जानहु सामंत । मत जेहा अभ्यासै ॥
साहडै पट्टनै । पन पानी पथ आसै ॥
बोला न बोल कित्ती बढै । हेला हकि हमीर सुनि ॥
जालिम जोर मै मेछ धर । सार बहटै धार धुनि ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

पुहवि नरेसर सबल राइ । है वै हठ जित्तौ ॥
काटि सुभट थट बिकट । कलह घघ्घर में बित्यौ ॥
गजि गोरि सभी तुरक । मरिया पत्ताई ॥
बंधे साहिब दीन । लियौ अजमेर चढाई ॥
इम जपै चद बरद्दिया । कपिसुलिङ्ग कुदी कनै ॥
दस सहस लह तें डंड मे । अजहुँ सुथकै गज्जनै ॥
छं० ॥ ७९२ ॥

सिंध स्यार परधान । वध कीनौं इक जतह ॥
मिल्यौ न भष्य दिन एक । स्याल आन्यौ पर मत्तह ॥
सिंध [illegible] । गयौ घर जौवत [illegible] ॥

फुनि आन्यौ समझाइ। हन्यौ केहरि वलवानं ॥
विश्राम सिंघ हिरदै सुकान। भष्षि गिद्दर जव पुच्छयौ ॥
नहि कान रिदै इहि सिंघ सुनि। देषि गत्त पच्छौ अयौ ॥
छं० ॥ ७९३ ॥

दूहा ॥ इहि बिधि तुम पति साह कौ। कहौ सुवंचा ध्यान ॥
निलज मेछ लज्जै नहीं। हम हिंदू लजवान ॥
छं० ॥ ७९४ ॥

दंत दरिद्री द्विपद रज। एपरि निपट घटंत ॥
सिंघ सिंचानौ सापुरिस। ए परि परि सुउठंत ॥
छं० ॥ ७९५ ॥

जद्दव जुआन और वलिभद्र का वचन कि तुम नमकहराम हम्मीर के भरोसे पर मत गरजौ।

बर जंपै जद्दू जुआन। वलिभद्र सुध्रम्मं ॥
हम सुलतान सुकम्म। सेव कीनौ वहु भ्रम्मं ॥
तुम आछानौ तक्कि। बक्कि हाहुलि हम्मीरं ॥
थट्टा बंभन बास। पास उतरे गंभीरं ॥
हम तुम्म तेक में सोस धरि। बीच करीम कुरान कौ ॥
वंचौ जु सौंह सांइ्राइ दर। लम्भौ लम्भ पुरान कौ ॥
छं० ॥ ७९६ ॥

मुसलमांन दै हथ्थ। हाम हम्मीर मुहाई।
राज कुमारह रेन। सेव संचार दुहाई ॥
तुम मांगै पंजाब। अद्ध पहु ग्राम न मुक्कै ॥
दोइ मित्तह उद्दोत। परी जम्मौ जित सुक्कै ॥
हम लम्भनि तुम्म लराइयां। नर भराहिं सिंघह समर ॥
गुफ अभै स्रूनि संचरि रहै। सुभ सियार चष्षहि अमर ॥
छं० ॥ ७९७ ॥

समझह रावल समर। सिंह सिंह तन पुच्छिय ॥
जे मंता मंतेह। हवै लद्दू दुअ लच्छिय ॥

(१) ए० कृ० को० -यह। (२) मो० दुअ।

जौ जीवद्दे जित्त । मुत्ति तौ सरग समानौ ॥
ना दिप्पो प्रथिराज । मुरै मुग्गल चहुआनौ ॥
अवृत घत्त मता लहौ । पर काज्जा सज्जा समर ॥
ततराहत तत्र पराइया । अपै देव दानव अमर ॥
छ० ॥ ७६८ ॥

शाह के यहा से आने वाले सरदारों क नाम और पृथ्वीराज का उनको उत्तर देना ।

पा पट्टीय नसीठ । सथ्य सुरतान कहद्दे ॥
तुम सारा है भुज्ज । डड भरि जीव रहद्दे ॥
के भूले उपगार । कन्ह उपगार सुझझझा ॥
होहि न बड्डा बोल । चढे चपो अन बुझझा ॥
दिय दूत हथ्थ कागर दुजर । अगर पच मन साहि दिसि ॥
सोनौ सुजान नौसथ्थ कथ । कहन बोल वर बोल विसौ ॥
छ० ॥ ७६६ ॥

सा वट्टू की थलौ । पच तेरह करि मडिय ॥
लष्या छप्पिय च्यारि । पाम कागर करि छडिय ॥
पान पान ततार । पान रुस्तम पौ हाजिय ॥
पा पीरोज कुताब । हिदु तुरकौ पढि काजिय ॥
दीहाइ पच पथे वद्या । दल सुरतानति समुडा ॥
पजाब मड्डि टिल्ला पहर । मिलि मथ्यानति विम्मुदा ॥
छ० ॥ ८०० ॥

कहि सोनौ पतिसाहि । दुष्ट होइ कै सट भगिय ॥
या लज्जो' सुरतान । सिधु कह कज्ज उलघिय ॥
पैगबर दै बौच । मिटै वाला बर सधिय ॥
एक वेर दूवेर । वेर वेरह इन वधिय ॥
सौ न होइ पहिलोन हल । मुप देषावन देपिया ।

(१) मो०—लज्जीना । (२) ए० कृ० को—एक वार दुरवास ।

क्रित हित्त चित्त मलौ[1] नहीं। कहै बढ़ै गुर सिष्पियां ॥

छं० ॥ ८०१ ॥

सतलज पार करके शाह का आगे बढ़ना और दिल्ली से लौट कर गए हुए दूत का समाचार देना।

त्रिपथ पंथ पव्वा पहार। गट्ठी दिसि वामह ॥
जेलं लंगर आव। बिहथ बंधी जथ नावह ॥
सोहि तक्कि ताजिय चढंत। मुनाम मुनारह ॥
टैकागर दूतान। कियौ सोनार सलामह ॥
ओ बंचि अप्प कुध्याहिया। न किहु किय करतार कर ॥
बच अद्ध कहि षिज्जिय षलां। बंधि याहि चंपौ सुधर ॥

छं० ॥ ८०२ ॥

तब बोलै साहाब। प्रति पट्टए चहुआनह ॥
सो आयौ सानंमि। पान जोरे खवानह ॥
बुझ्झै गोरी नरिंद। सयल जंगलपति जानह ॥
तब बोल्यौ कम्माल। सुनौ बत्तां सम्भामह ॥
सामंत सूर सब जोर बर। बिन वेरी चामंड किय ॥
भ्रित अप्प स्वामि रत्ते रहसि। तिन बर सज्जौ तांम जिय ॥

छं० ॥ ८०३ ॥

चहुआन सेना का बल सुन कर शाह का शंकित होना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त गोरी गरुअ। तनमन कंप्यौ ताम ॥
चल्यौ मंद गति मन विकल। ज्यौं ग्रेह नउढा काम ॥

छं० ॥ ८०४ ॥

अन्य दो दूतों का आकर कहना कि राजपूत सेना बड़ी बलवान है।

कवित्त ॥ विहथ कंठ साहाब दीन। सुरतान संपत्तह ॥

(१) ए० कृ० को०—मिट्ठ।

दल बद्दल दरिया हिलोर। उप्परि कलि ऋतह ॥
समय ताम दुअ दूत। आय अति हित्त मत्त वर ॥
सोलष्षे सुरतान। बोलि बुज्झै सुवत्तचर ॥
नमि कहै गरुअ गौरी सुनौ। चाहुआन वर जोर जुति।
मिलि आय सुभर सामंत सब। प्रांन कलप्पे काज पति ॥
छं० ॥ ८०५ ॥

शाह के पूछने पर दूत का राजपूत सेना के सरदारों का वर्णन करना।

दूहा ॥ पुनि गोरी पुच्छेव चर। दल संष्या चहुआन ॥
जे आगम सजोर दल। कहौ सुभट सथान ॥
छं० ॥ ८०६ ॥

पद्धरी। सवचहि दूत प्रति गज्जनेस। चहुआन सुदल बल असहेस ॥
उत्तर्यौ आय सतनज सेन। सामंत सूर सिर लग्गि गेन ॥
छं० ॥ ८०७ ॥

षुम्मान राव पति चित्रकोट। सनमथ सगप्पन आय ओट ॥
दह तीन अग्ग सेना समथ्थ। भर लाज सुदल बल सिद्ध हथ्थ ॥
छं० ॥ ८०८ ॥

कळ्या गुलोह चावड राव। चित्तं सुधत्त जुद्धा जुदाव ॥
पुंडीर आय चव सहस सथ्थ। चव तेग बंधि सज्यौ समथ्थ ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

पामार तेत अब्बुअ नरेस। पहुमी सकाज आयौ असेस ॥
पोमार सिंघ अनभंग जंग। लग्गौ सुअप्प रन रोह रंग ॥
छं० ॥ ८१० ॥

परिहार महन सम पीप बंध। लग्गौ सुलाज भर जुद्ध कंध ॥
आरंभ राव बलिभद्र सथ्थ। परसंग पग्ग जा जुलिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८११ ॥

जामानि राव सब सथ्थ ताम। जा काज सोज साजंग साम ॥
बग्गरी देव देवंग पेत। परसंग राय पीचिय सनेत ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

मालहन सु तेज बीरत सहेज। गुज्जरह राम जज्जा[1] अजेज ॥
आजानबाह भाजे जुधान। अनभंग सूर जुद्धह जुतान ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

मोकल्यौ चंद कंगुर सुठांम। हाहुलि काम जुद्धा जुराम ॥
मुक्काम आय सम संतुलेस। संजुरे सुभर सर्ब्बा असेस ॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चै अग्ग सयन[2] अणीस उद्ध। भर सबे सुद्ध एकंग जुद्ध ॥
दुहि बिधि सबै सेना सुगाजि। जानेव साहि साजौ सुकाज ॥
छं० ॥ ८१५ ॥

* जिहि थान उग्ग हम रहे जाई। सो भू दुहथ्थ नंपौ पुदाय ॥
हिंदू तुरक्क घन परिय अंटि। छिति छोति मेटि जलगंग छंडि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

सुभि श्रवन बचन साहाब दीन। छन एक रहिय मन होइ मलीन
दिल्ली दिसानि तरवारि तोलि। गज्जनेस गज्जि पुनि कुप्पि बोलि
छं० ॥ ८१७ ॥

हिंदवान थान नंषो उपेरि। कौ बच्च बेलि जिम कप्पि हेरि ॥
वार फेरि मुंछ दह्री सुलग्ग। असपति परत्त घरि फेरि पग्ग ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

जितौं संग्राम चहुआन जब्ब। सनमुष्ष करौं सिर पछ्घ तब्ब ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

शाह का सब सरदारों को बुलाकर सलाह करना।

दूहा। सुरग पेच पुनि बंधि सिर। कर षंचै कम्मान ॥
सब उमराव बुलाई ढिग। मतौ मंडि सुविहान ॥
छं० ॥ ८२० ॥

सरदारों का उत्तर देना कि अबकी बार चहुआन को अवश्य पकड़ेंगे।

कवित्त ॥ चिंति साहि सोहाब दीन। सुरतान तांक कवि ॥
बोहि सबै उमराव। मंत सोचिंत स्वामि तबि ॥

(१) मो० जाजा। (२) ए० कृ० को०- अयन।

* छन्द ८१६ से लेकर छन्द ८२१ तक मो० प्राति में नही है।

घर चरित्र चहुआन। कहिय सो आदिरु अंतह ॥
सोइ चित चितेव। सबौ सब्ब मिलि मंतह ॥
जपेव ताम ततार तमि। करै चित साहाब चित ॥
कै सजहि भिस्ति मारग सकल। कै तुम आनहि जुद्ध जिति ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

काजी का शाह से कहना कि मेरी बात पर विश्वास कीजिए अब की चौहान जरूर पकडा जायगा।

भुजगी ॥ तबै बुझयौ ताम काजी मदन्न। तम वृद्ध विद्या सुरज्जै[1] सदन्न ॥
सदा बंदिगी साइ लागे सुमन्न। सदान[2] कुरानं सुभासै सवन्न ॥
छं० ॥ ८२२ ॥

कहै ताम काजी सम साहि गोरी। धरी मुझ्झ बात चर चित्त छोरी ॥
दिन कालिह कुह्ह दिन उघ दीन। गहौ चाहुआन कला इंद पीन ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

परै सैन दूनी भर भार भार। रन रौद्र वित्तै अभूत सुसार ॥
पल रुद्र रसस अभूत भयान। बिभछ्छ समथ्थ उहथ्थ सयान ॥
छं० ॥ ८२४ ॥

चढे कालिह चषौ चिर हिंदु सेन। न चुक्कै कुरान सुभान सवेन ॥
गहौ जीन हिंदू पल दुष्ट जेस। करौ षोदि षोली तनह प्रवेस ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

सब मुसलमान सरदारों का वचन देना और शहाबुद्दीन का आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब सोइ। बध्यौ जोर जुरान ॥
षक्यों अनी[3] नीसान दै। चिंति चित्त ईमान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥

कवित्त ॥ आनि षान सुरतान। साजि साहाव सुहित्त ॥

(१) ए० कृ० को०—सज्जै। (२) ए० मदान
(३) ए० कृ० को०—अप

डेरा षाना मानि। करो प्रस्थान मिषानं ॥
धरे धीर उछंग। पंग सुरतान चढंदे ॥
मन बढ्ढै हम्मीर। सत्य लै षीह कढंदे ॥
दस सहस संग आलम्म के। एजु देह दह पंच वस ॥
संसार सकल पूजै बली। करो जोर छोनीय गस ॥
छं० ॥ ८२७ ॥

दूहा ॥ अेछम स्रूरति सत्थ किय। बंचि उराम कुरान ॥
बीर बिषारति रत्ति हुअ। दिय मैलान मिलान ॥
छं० ॥ ८२८

शाही सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सजि सेन सुगोरिय साहिरनं। सु मनों दल वद्दल पंति बनं ॥
दसमत्त पयोहर पंच गुरं। इह तोटक[1] छंद प्रमान धरं ॥
छं० ॥ ८२९ ॥

घन ग्रग्ग निसान दिसान सुनं। थलहूं जल जल्ल सुपल्लवनं।
बिसरी द्रिग अट्ठ न सुग्गभयनं। गु बजे घनघंट निसान[2] घनं
छं० ॥ ८३० ॥

रन नंकहि भेरि न केरि धुरं। सुबजे घन सिंधुअ राग सुरं॥
सुभयं गजराज उतंग उभे। सुचलै गिरि कैं मनु नंम सुभै ॥
छं० ॥ ८३१ ॥

गज गुघघर उघघर यों गुबरै। सु मनों तम के तन सो बुहरै ॥
बर गात परब्बत से दिषियं। छर वच्छर मेरति तेज लियं ॥
छं० ॥ ८३२ ॥

दिन छिप्पिय रेन दिसा गुनियं। वर सद्दन कान नही सुनियं
छं० ॥ ८३३ ॥

१ ॥ सबद कान सुनियै नही। मुंदि निसा दिन जान ॥
मीर पीर पैगंबरहु। सजि चल्लौ सुरतान ॥
छं० ॥ ८

(१) ए० कृ० को० मोदक।
(२) ए० कृ० को० निघट।

सुसज्जित शाही सेना की पावस से पूर्णोपमा वर्णन।

पद्धरी॥ सजि चल्यौ साहि आलम असम। उप्पन्यौ जानि सा‌इरन अभ॥
अथ तथ्थ साहि सेना सुदीस। उनयौ मेछ[1] वर बैर रीस॥
छं० ॥ ८३५ ॥

बाजहि निसान धन जिम दिसान। दामिनी तेग वर बक्कमान॥
बाहनि बहत मद बूंद गध। सुझ्झै न भान दिसि बिदिसि धुंध।
छं० ॥ ८३६ ॥

धुम्मलिय मिलिय कलग मिगसद। झमझलग[2] ह्वर सुह सुरिग मद॥
प्रज्झरहि पथ पहननि सिंध। मिलि चलहि सिगि आरम्भ गिद्ध॥
छं० ॥ ८३७ ॥

सिंधुर धरनि सषरिहि सान। सुनिये न बयन सह दुरिग कान॥
चक्कीय चक्क मुष विक्कलत[3]। निसि दरस सरस सारस मिलत॥
छं० ॥ ८३८ ॥

प्रतिबिंब अंब अवरनि तार। मुकते न सुगति मजर सिवार॥
धुंकार धुनति गाजहि निहंग। इस दिग्ग धरा पूरे सभग॥
छं० ॥ ८३९ ॥

षक्रित सुचित्त मन मित्त हित्त। रस उभय अम्म आनंद चित्त॥
दीपै अद्रप्प आलोल नैन। बिसरीय कोक सुर मग्ग वेन॥
छं० ॥ ८४० ॥

निठुरिय ठाल धर धरिय कोक। सचिय सुसाल समरिय सोक॥
हसि चक्क चकी सो कहिग छंद। माननिय जानि दामिनिय चंद॥
छं० ॥ ८४१ ॥

असपति असभ धर गहन हिंद। कोप्यौ कमाल गोरी नरिंद॥
[4]दिवि दिवस स्यार इक करहि फेर। जोगिनि अनंद अच्छरि सुमेर॥
छं० ॥ ८४२ ॥

(१) ए०—मेघ। (२) मो०—झझछि।
(३) मो०—विच्चलत। (४) मो०—माधव दिवस्स इक कराहिं फेर।

कुह किलकि सौन बर बरहि बीर। उच्छरहि मीन धर गरुव नीर
आवरत सेन दल छलिग[1] साहि। गाहन असंपि अदि भीम धाहि
छं० ॥ ८४३ ॥

अग्गें सुरेंन पच्छैं पुकार। भावसिय संक्रमन सन्निवार ॥
रवि घरह राह अरु केत गत्ति। जानी न चंद ग्रह ग्रहन मत्ति ॥
छं० ॥ ८४४ ॥

दूहा ॥ कहहि चंद रन सम्भरन। मरन सुधन्न धनाह ॥
बर नरिंद दल हिंदु कौ। भई सनाह सनाह ॥
छं० ॥ ८४५ ॥

राजपूत सेना की तैयारी वर्णन।

पद्धरी ॥ कहि कुहु बहि सन्नाह सद्द। भंगिय सुहिंदु षुरसान रद्द ॥
डंमरिय डहकि अंमरिय रत्ति। संभरिय रोव रावल सुवत्त ॥
छं० ॥ ८४६ ॥

बंबरिय बीर रोमंच उट्टि। ब्रह्मान भ्रंम कसि अंग पुट्टि ॥
अब्भानि हेम कमलानि कंट्ठि। बंदिय विभूति सिंगिय सुगंठि ॥
छं० ॥ ८४७ ॥

अवधूत धूत जोगिंद राज। चढ्ढी सुसक्क गढ़ चित्त लाज।
धज मुंज धज्ज नीसान नद्द। आहुट्टि राइ असि कसिग हद्द ॥
छं० ॥ ८४८ ॥

सक सकति नाग भुज भाग साजि। प्रज्जारिग क्रन्न मुष ब्रन्न गाजि
नभ मिलिन रन्न चष दिट्ठि दिट्ठि। मंडिय सुटोप सिर[2] निट्ठ निट्ठ
छं० ॥ ८४९ ॥

मृग्ग जाति काय पष्षर पवंग। सित असित पीत कुंजनि कुरंग ॥
उर राह बाह रावत्त भीर। निरमल्लिग नेह जनु लज्ज नीर ॥
छं० ॥ ८५० ॥

गुन गनत तत्त वज्जी सुवत्त। बंधिय सुहंसि सिर छहति सत्त ॥
हिल्लुरिग अंब बर बरन बीर। प्रिय प्रियम हेत निप तिरम तीर
छं० ॥ ८५१ ॥

(१) ए० कृ० को० लहिग। (२) ए० कृ० को०-सन।

पडव सुपड चहुआन चड। सजि चढिग राज जोगिंद दंड ॥
सुनि निज नफेरि सजोई कंत। आल्यौ गरूर हय हय हसंत ॥
छं० ॥ ८५२ ॥

जामराय यादव का पृथ्वीराज से कहना कि ईश्वर कुशल करे रावल जी साथ में हैं।

कवित्त ॥ पानि जाम जद्दों जुवान। लगि कान कह्यौ इह ॥
प्रिथा कंत इह वार। तात कुसलत्त होय ग्रह ॥
छंद राई कूरंभ। सिंभ पूजन[1] पति जंपिय ॥
करुन हथ्थ पुंडीर। राव पावस क्रत कंपिय ॥
महि मइन सोइ सिह गुरिग। तिह सहाय रावर समर ॥
तुम सम न कोइ हिंदू तुरक। भिरि न सकहि दानव अमर ॥
छं० ॥ ८५३ ॥

पृथ्वीराज का समरसी जी से कहना कि आप पीठ सेना की देख भाल कीजिए।

गरूर हकि दानव नरिंद। दिसि वाम काम तत ॥
झलकि झलकि झिगुरिग। नेन द्रग[2] बेन कहत वत ॥
तुम दुष्पिन गिरि गरूअ। सग रन रग हरष्षिय ॥
तुम समान कोइ आन। हमहिं[3] हम हिंतू न दिष्षिय ॥
जब लगि मुभझ भीर न परे। तब लगि भट भिरन न करौ ॥
आरज्ज सोम सकट सतिन। सजिन सेन च पत परौं[4] ॥
छं० ॥ ८५४ ॥

(१) ए०–पजून।
(२) मो०—द्रग।
(३) मो०–हमहि हिंदू नह दिष्षिय।
(४) ए० कृ० को०–फिरौ।

रावल जी का कहना कि समर से विमुख होना धर्म नहीं है।

हंसि नरयंद आनंद। राज राजन प्रति पत्तिप।
तुम सनेह सम्भरिय। मोहि दष्षन लगि वत्तिप॥
ना हं ना तुं ना जगत। न मिच्छ इच्छ मन॥
नहिन सूर सामंत। सूर अंकुर गहन मन॥
संग्राम धाम धर छत्रियन। पर हत पुर परतर लहै॥
चहुआन आन सोमेस सुअ। विमुष जीह जंतनि कहै॥
छं० ॥ ८५५ ॥

रावल जी और पृथ्वीराज दोनों का घोड़ों पर सवार होना।

दूहा॥ दय दच्छिन दच्छिन अपन। प्रथम प्रिथा पति कंत॥
गरुर कंध यप्परि प्रथुत। प्रभु प्रथिराज सुभंत॥
छं० ॥ ८५६ ॥

असुर सेन सम संचरिग। दल बद्दल बिष मंत॥
बहुरि बियौ प्रब्रत सुभित। प्रथुर संजोई कंत॥
छं० ॥ ८५७ ॥

भुजंगी॥ दुअं सेन आवृत्त उत्तंग अंगं। दुअं छत्र सेतं पियं नेत रंगं॥
दुअं सार सिंधू उरं अग्र दीनं। दुअं बीच सा चंग लंकाल झीनं॥
छं० ॥ ८५८ ॥

दुअं पथ्थ रथ्थं सरथ्थं परामं। दुअं सेन आपासि आपा विरामं।
दुअं जोर जीवा रजं नार कंधं। समय एन संमं कलिं कहत धंधं॥
छं० ॥ ८५९ ॥

रावल जी का पृथ्वीराज से इशारे से कुछ कहना और राजा का उसे समझ जाना।

दूहा॥ तन अलंग अंगह उभय। अप अप्पानैं सेन॥

कच्छु सुकन्न लगिके कह्यौ। [1]सुन नृप परपिय वेन ॥
छ० ॥ ८९० ॥

रावल जी के इशारे पर सेना का व्यूह वद्ध किया जाना।

पद्धरी ॥ रस प्रीति सुसाजन सार तिन्न। जप भेटि समर रावर सुकिन ॥
रस करन सथ्य पावस पुँडीर। हनिवत जिसो धीरह समीर ॥
छ० ॥ ८९१ ॥

उनल क जालि परवत्त पारि। अजनिय अनिल ग्रम्भह विचार ॥
रस मरद देषि आदौनि जाम। वय रूप रूप एकह सुभाम ॥
छ० ॥ ८९२ ॥

गल कठ माल मोतिय सुमेलि। स जोगि तात दन्नियत[2] केलि ॥
लिय लष्य हेम कैलास गूर। रेसमिय सीप उद्दोत भूर ॥
छ० ॥ ८९३ ॥

अदभुत देषि बलिभद्र सद्द। गाजने साहि जे हरन मद्द ॥
अभिलाप हास्य घट जीव कीन। अनवधिय आन लषियै प्रवीन ॥
छ० ॥ ८९४ ॥

बीभच्छ नेन मस लुछन सोह। जय लागि गरुअ हय छडि लोह ॥
निरवान राइ रघन सुसत। गल गलिय[2] नेन लागत पत ॥
छ० ॥ ८९५ ॥

स जोगि सयन अगुलि बताय। सम समर साहि रावल दिपाइ ॥
नर सहित नेत बधै नरिंद। मनि मरन भौन जिम सुक मुनिंद ॥
छ० ॥ ८९६ ॥

पहु परी छित्त अवतार सुम्भ। हरि चक्रवान राधै सुजम्भ ॥
उहि बरन भेष चित्र ग राव। मिलि दैव जोग स जोग दाव ॥
छ० ॥ ८९७ ॥

इन लम सुलम्भ लाह्न विधानि। इन मरन जियन देषियन हानि॥

(१) ए० कृ० को०—सुनत परच्छिय वेन।

(२) मो०—[दि]छियत, ए०—दिन्नियत।

दरसी दल की दल ढल्लरियं । सुमिरैं घर कायर बल्लरियं ॥
छं० ॥ ८८० ॥

जिनकौ मुष मुंछनि मच्छरियं । निरषें तिनके तन अच्छरियं ॥
न्रप जोड़ फवज्ज सुबंटि लियं । मुह मारक चावंड राय दियं ॥
छं० ॥ ८८१ ॥

भुज दच्छिन अब्बुअ राव रच्यौ । सिर छत्र सपेद सुआनि सच्यौ
भुज की दिसि वांम पुंडीर भरी । कटि कंध कबंध गिरंत लरी ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

कूरंभ परंभति अप्प अनी । सुधरी कविचंद सुनी सुभनी ॥
दल पुट्ठ सुमोरिय राव सुन्यौ । कवि उत्तिन संच सुनयौ सुभन्यौ ।
छं० ॥ ८८३ ।

निरवान चंदेलति जुद्ध मिले । हय मुक्कि लरें जम सों जुरले ।
तिन मद्धि सुसंभरि वार इसौ । भुज अर्जुन अर्जुन वार जिसौ ॥
छं० ॥ ८८४ ॥

अमरावलि छंद प्रमान कियं । न्रिप जोड़ फवज्ज सुबंटि दियं ॥
छं० ॥ ८८५ ॥

राजपूत सेना की कुल संख्या और सरदारों की स्फुट अनिकिनी सेना की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ अप्प अप्पनी फौज बंटि । नाम ठाम सामंत ॥
संख्या दल कविचंद कहि । तिन बल जुद्ध अनंत ॥
छं० ॥ ८८६ ॥

भुजंगी ॥ सबं सेन साहस्स अस्सी अयग्गं । चवै फौज साजी जयं जुद्ध जंगं
सुरं संषि हज्जार सा फौज वामं । पतिं चित्र कोटं जयं क्रत्य कामं
छं० ॥ ८८७ ॥

तहां साजि साहाइ साजाम देवं । बलीभद्र कूरंभ सथ्थे सुनेवं ॥
सुअं धीर पुंडीर पावस्स तथ्थं । तहां पारिहारं महन्नं समथ्थं ॥
छं० ॥ ८८८ ॥

सजी जैत अन्नी सुदाहिन्नि भारं । भरं राज हज्जार इकईस सारं

तिन मझ्झ भारज्ज कामधज्ज राज। अचलेस भट्टी सुजादव्व भाज॥
छं० ॥ ८८९ ॥

तहां चकटी राव पामार धीर। बड गुज्जरं चन्द्र सेनं सुवीर॥
बर सिंघ पचाइन चाहुआन। धरा अम्म रापै पल्ल पित्त टान॥
छं० ॥ ८९० ॥

न्रप देवती लष्पन धार ईस। बिजै राज बघेल सष्षे सजीस॥
तहा दच्छर परिहार ते जल्ल डोड। सजै जैत भीरं अरी साल सोढं॥
छं० ॥ ८९१ ॥

नृप अग्ग सेना सुचामड राजं। तहा साजि साहस्स सासच् काज॥
तहां पीप परिहार भारथ्थ राय। भर दाहिमा जगली राव सोय॥
छं० ॥ ८९२ ॥

रचै ढठरी ठाकुर पुज पचार। भरे भीम चालुक्क वज्जैन सार॥
तहा राज रावत्त सध्यं सपेत। सजे जूह दाहिम्म सा सुम्मनेत॥
छं० ॥ ८९३ ॥

सजे सेन पुट्ठीय सा चाहुआन। भरं तथ्थ च्यार उनईस थान॥
सथं सिंध पामार पीची प्रसंग। बडं गुज्जर राम देव अभग॥
छं० ॥ ८९४ ॥

तहा बग्गरी देव आजान बाह। गुरू राम देवं सुसध्येव ठाह॥
गुर चाल गे हिल्ल सो पच थान। भर अन्य सज्जे न्रप ठान ठानं॥
छं० ॥ ८९५ ॥

सजी फौज लष्षे सुदिल्ली नरेस। चढे इछ्यन इम्भ राज सुरेस॥
चढे व्योम विम्मान अप्प अपान। मिली अच्छरी मंजि रज्जे सुजान॥
छं० ॥ ८९६ ॥

पिलै नारद तुमर तति तार। करे ह्रह हाक गुरगे उछार॥
मिलै वीर वेताल पेयाम्प पेत। मिली चौसठी सकत्ति सोय अनेतं॥
छं० ॥ ८९७ ॥

घन धप्प गोमाय गिद्धी गहक्कै। पल'चार ओन चर दद हक्कै॥

(१) ए० कृ० को०—नरेस।

मिलै श्रोनचारं लषे मोन[1]भारं। अनी जाम बंधी त्रिपत्ती करारं
छं० ॥ ८९८ ॥

शाही सेना का संतूलपुर के पास आना।

कवित्त ॥ सजि आयौ सुरतान। जूह सेना अति आतुर ॥
तुरिय लष्ष दह सुभर। दंति दस सहस मंत वर ॥
पुर संतुल सा निकट। आय दलबल संपत्तौ ॥
सज्यौ देषि दिल्लीस। नाम गोरी अनुरत्तौ ॥
पुछयौ सुमंत ततार षां। षुरासांन साहाब सदि ॥
टट्टों सु सज्जि जंगल सुपह। रचौ बंध अप्पान[2] रदि ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

शहाबुद्दीन के आज्ञानुसार ततारखां का अपनी सेना को व्यूहबद्ध करना, शाही सेना के सरदारों के नाम।

पद्धरी ॥ संबच्यौ तांम ततार तंमि। षुरसान षान साहाब समि ॥
बंधी सुअनी साजै सुबानि। संहरौ सेन ग्रहि चाहुआन ॥
छं० ॥ ९०० ॥

संची सुबत्त सब्बान ताम। बंधी सुअनी पंचौ दुराम ॥
दाहिनी सेन सज्ज्यौ ततार। द्वै लष्ष तुरिय सारह्न सार ॥
छं० ॥ ९०१ ॥

द्वै सहस दंति उनमत्त मंत। संजूह सब्ब बानै अनंत ॥
नौ चम्म षान रुम्मी समथ्थ। नारंग निस्सुरनि सिंघ हथ्थ ॥
छं० ॥ ९०२ ॥

साहाब बंध सुअषान षान। महमुंद षान रुस्तम षान ॥
गज गरुअ षान तह षुरेस षान। भे हान षान जंगी जनान ॥
छं० ॥ ९०३ ॥

हब्सियाम षान भै[3] रुस भार। मीरां मसंद षल्ल षित्त ढार ॥

(१) ए० कृ० को० जुद्ध।
(२) ए० कृ० को० आनद।
(३) ए० कृ० को० मैरू।

काजी कमाल हवसी हुसेन। सादी मलिक अद्दिय अनेन[1] ॥
छं० । ९०४ ॥

मालहन हस हम्मीर तथ्थ। सह स च यच गप्पर गुरथ्थ ॥
सज्जे सुसद्ध सेना ततार। वधी सुखनी भर भीर सार ॥
छं० ॥ ९०५ ॥

बाई दिसान पुरसान सज्जि। हैसप्प मीर गरुअत्त गज्जि ॥
गज सहस इक्क सारद्ध सथ्थ। बाने विरद्द वषरि बिहथ्थ ॥
छं० ॥ ९०६ ॥

ईसप्फ पान आली अपूव। गाजी वषान गर वर हबूव ॥
आलील पान दम्माद ईस। सारीर पान सुरतान जीस ॥
छं० ॥ ९०७ ॥

पीरोज पान पाहार पीर। अलि असद पान उम्माद मीर ॥
महमुद पान मीरन सुधारि। सारीर पान सेरन सुभारि ॥
छं० ॥ ९०८ ॥

ताजन पान तुरकाम ताम। कम्माल पान गरवर गुराम ॥
रीचन्न पान रोहन्न राज। सलेम पान सेकद ताग ॥
छं० ॥ ९०९ ॥

महमुद सैद फत्तेन खूब। अवदुल्ल मीर मुलतान जब ॥
साजे सजूह मारूफ पान। सावह नह अनभूल वान ।
छं० ॥ ९१० ॥

साहाव सेन परठे सुपुट्ठ। सारद्ध लष्प सेना सुदुट्ठ ॥
गय सहस एक साजे सुभार। वानैत वान अनभूल सार ॥
छं० ॥ ९११ ॥

सथ्थेव साजि मारूफ मीर। पीरोज पान फत्ते नसीर ॥
पीरन्न मीर सेरन सादि। मरहट्ट मान गाजी सुरादि ॥
छं० ॥ ९१२ ॥

कनर कनक हरचिच सेन। सारंग देव गब्बर सबेन ॥

(१) ए० कृ० को०—अलेन।

उम्माद षान फत्ते फरीद। वंकट्ट राव वामन मरीद॥
छं० ॥ ६१३ ॥

संचे सपुट्ठि सेना सहाव। परसंमि सूर मधान श्राव॥
सजि मध्य सेन गज्जन नरेस। द्वै लष्ष मीर साजे सुभेस॥
छं० ॥ ६१४ ॥

गज सहस पंच मंते उमंत। बंबर बिरद्द बाने वहंत॥
षालिन मलिक गालिब्ब बंध। बाजंन पान गोरी बिरद्ध॥
छं० ॥ ६१५ ॥

मंगदह राव मरहट्ठ मेह। कोतन अमंन गष्षर अरेह॥
सनमुष्ष सज्जि मारूफ षान। सुअ गज्जनेस गरुअत्त बान॥
छं० ॥ ६१६ ॥

चै लष्ष मीर सेना समाज। द्वै सहस इम्भ सारद्ध साज॥
संमन कमंन महमुंदमीर। मों नदी अग्र सेना सधीर॥
छं० ॥ ६१७ ॥

तोसंन मीर ताजंन षान। श्रालीन सैद षाना सुवान॥
सादीप षान हबसी सलेम। आबूब षान रुम्मी अलेम॥
छं० ॥ ६१८ ॥

महदीय सद्दही मीर बंध। रत्तेव कन्न वक्रंत कंध॥
सल्लेम षान साकत्त सेष। जाजन्न जमन मीरां विसेष॥
छं० ॥ ६१९ ॥

सल्लेम सैद सेना सरूप। मोसल्ल मीर सुलतान रुप॥
हाजिय षान न्याजी सताज। अहमद्द षान पिति पग्ग लाज॥
छं० ॥ ६२० ॥

साजिय अनीय साहाब पंच। गज बाज बिरद बाने न संच॥
उग्गारा मीर साजे असंष। को गनै पार अप्पार तंष॥
छं० ॥ ६२१ ॥

संषैप चंद जंपै समूह[1]। आभूत सेन गोरी गरूह॥
षट तीय लष्ष संष्या गिनंत। सेना अनंत पयदल मिलंत॥
छं० ॥ ६२२ ॥

(१) ए० कृ० को० सतूह।

सर बंधि संधि सोजूह भार। आवरै अग भर अनिय धार॥
गज बाज सुदल बल पय पगार। बाजे अनंत ब्भों करार॥
छं० ॥ ९२३ ॥

जबूर भूर हथ नारि भार। आतस चरित्त अद्भूत पार॥
बाजत राग सिंधूर वद्द। धर पूर व्योम नीसान नद्द॥
छं० ॥ ९२४ ॥

बहु रूप बिरद बाने अनंत। सुरपत्ति विपन रड्यौ बसंत॥
आरोह एक डमर डरान। लोपत व्योम सुझ्झै न भान॥
छं० ॥ ९२५ ॥

सुर बैठि रथ्थ साजे अनंत। धर अतुल चार अडेन अंत॥
पल चार ओन चर डुपि अनंद। हसि हसिस धीर नच्चें पसंद॥
छं० ॥ ९२६ ॥

दुअ सेन साजि राजे रवद्द। उट्ठै सुआय आसुर उरद्द॥
छं० ॥ ९२७ ॥

श्रावण वदी अमावास्या शनिवार को दोनों सेनाओं का मुकाबला होना।

दूहा॥ साक सु विक्रम रुद्र सौं[1]। अट्ठ अग्र पंचास॥
सनि वासर संक्राति कंक[2]। श्रावन अंसौ मास॥
छं० ॥ ९२८ ॥

सावन मावसि सूर सुअ। उभय घटी उदयत्त॥
प्रथम रोस दोउ दीन दल। मिलन सुभर रन रत्त॥
छं० ॥ ९२९ ॥

दरसे दल बहल विषम। रागरुलाग निसान॥
मिले पुब्ब पच्छिमह ते। चाहुआन सुलतान॥
छं० ॥ ९३० ॥

सारन धोरी सारहै। धीर न धरी प्रमान॥
चाहुआन गोरी सरिस। गोरी रा चहुआन॥
छं० ॥९३१॥

(१) ए० को० को०—सत्त सौं। (२) मो० क्रम।

बड़ी लड़ाई का संक्षेप (खुलासा) वर्णन*।

भुजंगी॥ मिले चाय चौहान सुलतान षग्गं। मनो बारुनी छकि वे बार लग्गं
उठे हथ्थ हक्कं कहं क्रूहकालं। जुटे जोध जोद्धं तुटै ताल तालं

छं०॥ ६३२॥

भए सेल मेलं दुहुं मार मारं। बढ़ी संग लग्गी वजी धार धारं
सुभट्टं सुथट्टं सुरीसं समेकं। भई सेलमेलं अनी एक एकं॥

छं०॥६३३॥

परें घाइ अघ्घाइ केकेन सुद्धं। कटै अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं॥
परै सूर सम्फ़ाफं उतंगं सुधारं। भ्रमै व्योम विम्मान आरंभ हारं

छं०॥ ६३४॥

छुटे बान चहुआन आवद्ध राजं। लगे मेछ अंगं मनों वज्र बाजं
फुटे संगि संनाह के अंग अंगं। उठै ओन छिंछें जरैं जानि दंगं

छं०॥ ६३५॥

हते राज प्रथिराज सामंत सेतं। भए मेछ अद्धे मनों राह केतं
बब्यो बीर नच्ची सुसूली अनच्ची। नचै भूत भैरू बकें जानि बच्ची

छं०॥ ६३६॥

भिरें जुद्ध जानीय जुथ्थानि जुथ्थं। ग्रहे गिद्धि सेवाल लुथ्थानि लुथ्थं
चुवै ओन सट्टी किलक्कंत धुंटै। ग्रंह मेछ लागें जुरै सूर छुट्टै॥

छं०॥ ६३७॥

भिरै जाम दुअ जुद्ध हिंदू सुमीरं। परें पंच पंचास चोवंड बीरं
परे दाहिमा बग्गरी हक्कि दूने। परे देवरा जेद्ध ते दून ऊने॥

छं०॥ ६३८॥

परे सांषुलो सब्ब भाटी सुराने। परे हंस मालहन मिलि हंस थाने
परे राह रट्ठौर रनभूमि ठोरे। मनों सार संसार रन सामि छोरे

छं०॥ ६३९॥

परे चाइ चालुक्क ते सार दूने। मुरे मोरिया सव भए जाति सूने
परे सहस षट सूर क्रूरंभ वाला।[१] परै गज्ज सिंदूर कते ढालढाला

छं०॥ ६४०॥

[१] मो० "फिरै गज्ज सिंदूक ठालेति ठाला"

परे पीचिया पग्ग षेतै सुपाला । परे टाक चंदेल पुंडीर माला ॥
सहै भीर रन रंग जे तुंग लाला । चले ब्रह्मरंध्र पुले मुत्तिमाला ॥
छं० ॥ ६४१ ॥

परै जैत पंमार आबु सुराया।करी अप्प चहुआन प्रथिराज छाया॥
परे पंच से पंच चहुआन वड्डे। रहे सत्त सर सत्त प्रथिराज ठड्डे[१]॥
छं० ॥ ६४२ ॥

परे सहस पच्चीस सब सेन गोरी । रहे तुरक हिंदू मनो षेलिहोरी ॥
भिरे देव दानव्व जिम बैर बित्यौ।सुरयौ सेन चहुआन सुरतान जित्यौ ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

परे लष्षि अगिनत जानौं न सष्षा।रची जांनि जोगिंद सा मुनि दष्षा॥
मिले पान सुरतान रनभूमि पिष्यौ । तहा एक देवास मे देव दिष्यौ ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

परी बिट राजग सा अग मीर । करी कुंडली काल रच्यौ कठोर ॥
कथे काव्य कुब्बेर साईं सु अग्गे । चित अत्ति आनंद उभ्भास लग्गे ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

देवी जालपा, वीरभद्र, सुवेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना ।

कवित्त । ताम ठाम ज षप्प । जाय जटधार सपत्तौ ॥
आहुत्तौ बलिभद्र । बीर बीराधि सहित्तौ ॥
आति आदर दिय देवि । पुच्छि परपंच सच विधि ॥
बर आसन उत्तान । मान रष्षिय सु प्रान उधि ॥
आयौ सु जच्छि सुबेर तह । संग जोगिनि वेताल साथ ॥
वीतौ सु जुद्ध हिंदू तुरक । कहिय ईस दिय भेट अथि ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसलमान के युद्ध का हाल कहो ।

तब कहै ईसमन मंडि । [२]अहो सुब्बेर दच्छ सुनि ॥

[१] ए० कृ० को०—वड्ढे ।　　　　(२) मो०—अहो सु बेर द्रव्य सुनि ।

किम हिंदू तुरकानि। पान[1] जंपो जुद्ध गुनि ॥
दूहै जोग सारत्त। मंत दिष्यौ जुध जग्गिय ॥
दूहै बीर उनमद्द[2]। साषि भष्षी सा अग्गिय ॥
बलिभद्र कहिय अति उद्ध कथ। रुद्र सूर सामंत रन ॥
भारथ्थ कथ्थ लग्गै अतुल। कहौ पान उत्तान तन ॥

छं० ॥ ९४७ ॥

सुवेर यक्ष का कहना कि प्रथम युद्ध के पाहिले राव वलिभद्र और जामराय यादव का रावलजी से नीति धर्म पूछना और रावलजी का नीति कहना।

दूहा। कहिय दच्छ कैलासपति। सुनि रन संकुल सार ॥
चाहुआन सुरतान षिति। जे भर जुद्धै धार ॥

छं० ॥ ९४८ ॥

कहै सूर सामंत सह। जस जीतन यों काज ॥
जो जीतन तुम होय नहि। तो रष्षहु प्रथिराज

छं० ॥ ९४९ ॥

प्रथम जुद्ध आवृत्त मचि। कर यक्ष दोउ दीन ॥
औसरि दल दूनौ रहै। ज्यों प्रमुदा रस भीन ॥ छं० ॥ ९५० ॥
मिले सूर सामंत मत। पति चित्रंगे पुच्छि ॥
तुम माया मद जित्त हौ। हम मानव मन तुच्छ ॥ छं० ॥ ९५१ ॥

बलभद्र और जामराय का रावलजी प्रति प्रश्न।

कवित्त। विपथ राव बलिभद्र। सुपथ जादौं पति कथ्थिय ॥
समरसिंघ रावलह। समर साहस गति पिथ्थिय ॥
राज अग्ग स्रत अम्म। अग्ग छत्री सालोकिय ॥
कह सु हंस आनंद। बुद्धि कहि तत्त सलोकिय ॥
कहँ कहां सु मोह मरयाद कह। कहां सुजोति जोतिहि लहै ॥
जोगिंदराव जगहथ्थ तुअ। जग सु देव तत्तह कहै ॥

छं० ॥ ९५२ ॥

(१) मो० पात। (२) मो० उदमद।

रावल जी का उत्तर देना।

विपथ सुबंधयौ मोह। सुपथ जिहि स्वामी निवरतै ॥
राज सु अग्या रवन। सेव तिन वज्ज प्रवत्तै ॥
ध्रित सु स्वामि सोरत्त[1]। नीय निद्रा न प्रगासिय।
अह निस व छहि मरन। सु पहु सकुरै निवासिय ॥
हा हस हस मंडल रूरै। मन अनंत अतहि रूरत ॥
सामंत सिंघ रावर चवै। सुगति मुगति लभ्भै तुरत ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

प्रश्न "क्षत्रियों का धर्म क्या है और सायुज्य मुक्ति किसे कहते हैं।"

कहै राव जामानि। अहो चित्रंग राव सुनि ॥
तुम सु जोग जोगिंद। जोगधर मूल अन्द गुनि ॥
तुम सुधीर अवधूत। व्यास जिम लहौ सकल गति ॥
तुम सुभ्भै त्रयलोक। सकल काल कलय तुम्भ मति ॥
हम कहौ धम्म छत्रिय सुधर। राज धंम सत धंम ॥
सालोक साज सज्जौ प्रथम। कहौ मुत्ति[2] सारूप भर ॥
छं० ॥ ९५४ ॥

रावल जी का बचन कि धर्मरहित मायालिप्त पुरुष नरकगामी होते है।

तब कहि रावर सिंघ। सुनहि जामानि राज वर ॥
भल पुच्छिय भर समय। सार संसार कला धर ॥
कहिय पुराननि वत्त। रिष्य आगम बहु विथ्थरि ॥
कपिल गाय कह्यौ भरथ। कहिय पारथ ग्यान सु हरि ॥
इन काल द्रष्ट इय चित्त निज। मुप अग्गै आसुर सयन ॥
संषेप कहौं तुम तत्त मत। मझ्झ गहि रापौ सुमन ॥
छं० ॥ ९५५ ॥

काल तिमिर पर वर्यौ। चिति तिहि भ्रम न बुझ्झै ॥

(१) ए० कृ० को०—सौरत्त ॥ [२] ए० कृ० को०—मुत्ति ॥

अंतकाल मुष अद्ध। ग्यान चय कालह सुमभै ॥
जनम भयैं भयौ मूढ़। राति त्रै कालै[1] पलट्टै ॥
निंद मद्द धन काम। धाम आवरदा घट्टै ॥
बंधनह अप्प अ रमुष्प किय। गज्ज जेम उनमद फिरै ॥
रिधिजात जंत दिष्यो नयन। नहि अचिज्ज नरकहि[2] पिरै ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

प्रश्न क्षत्री भव पार कैसे हो सकता है।

दूहा। [3]कहैं राइ जामानि तव। किमि भव तरियै पार॥
कहौ राइ जोगिंद तुम। गुरमति त्रिभुवन सार ॥
छं० ॥ ९५७ ॥

रावलजी का वचन-क्षत्री धर्म्म और सालोक मुक्ति कथन।

कवित्त। जाग्रति सुषपति सुपन। तुरिय अवस्था ये च्यारहि ॥
ता मध्ये वय ग्रहै। लहै सद असद सु सारहि ॥
मात पित्त मानै सुदेव। देवकरि आवध मानै ॥
स्वामि ध्रम्म आचरै। दुष्ट क्रित धरै न कानै ॥
समपै सुक्रंम सह हरि सहस। अगम गंम पायन धरै ॥
सुष दुष्प स्वामि निज सुद्धरै। इम पत्री पारह तिरै ॥
छं० ॥ ९५८ ॥

बेद[4] नीति धर चलै। स्वांमि ध्रम्मह नन चुक्कै ॥
जोग विद्ध जोगवै। अप्प हरि ध्यान न मुक्कै ॥
सबद जोति रहै लीन। अग्गि कृत वासर क्रम्मै ॥
जुद्ध काल संपत्त। आय अरि षुत्तह ध्रम्मै ॥
संकलपि सीस सांई सरिस। मनह निरंजन जोति द्रग ॥
मधि रचै सूर बिंबह सुमन। एह मुगति[5] सारूप मग ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

(१) ए० कृ० को० त्रैनेह (२) ए०कृ०को० नरकह पैरे।
(३) ए० कृ० को० "कहौ राय जोगिंद गुर, तुम मत त्रभुवन सार।
(४) को० देव। (५) मो० मुकति।

पियै सगति धर ओन। पिड पावक आहारै ॥
साइ समप्पै प्रान। सीस उर प्रकार धारै ॥
अत तुट्टि पय चपहि। डिभ लग्गहि स्रग गिद्धिय ॥
जय बछै निज स्वामि। लगै ताली मन बद्धिय ॥
मडलह हस हसह जुरै। जीय जोग गति उद्धरै।
निरकार ध्यान रापै जु निज। इम भव सारूपह तिरै ॥
छं० ॥ ६६० ॥

नृबैर भूत भव सकल। अकल आनद कलन मन ॥
काम क्रोध मद रहित। अहित हित चित्त ग्रेह तन ॥
निंदा अस्तुति समति। रमति स्वा मित्त समर रन ॥
लज्जा धर कर बज्ज। अड्ड बज्जग अरिन गन ॥
जप्पौ सुपम जामानि जद। अनहद सद मत्ता मवन ॥
जानत विदुष मति सकल तुम। बहुत बात जपत कवन ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

प्रश्न-राजनीति का क्या लक्षण है।

दूहा ॥ राजनीति पुच्छिय सुपरि। जद्दव जाम सुभाइ ॥
किम छत्री भव उत्तरै। जपि समर न्रप राइ ॥ छं० ॥ ६६२ ॥

रावल जी का बचन-राजनीति वर्णन।

पद्धरी ॥ भव पार तार उद्धार बात। सुनि कहो जद्द जामानि तात[1] ॥
रजनीति विद्द पहिलै सुधम्म। मालीय काम ज्यों[2] न्रपति क्रम्म ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

लटि गये मूर तर जरनि हीन। तिन पोषि पानि फुनि पुष्टि कीन ॥
तिम करै सुहित ते हीन पुष्टि। मनसा प्रसन्न सद रहै तुष्टि ॥
छं० ॥ ६६४ ॥

फल फूल डार लुनि लेइ कच्छि। न्रप सचिय करपि कर हरै लच्छि ॥
नहि लेइ मोल न्रप करि उपाइ। सरिजाइ सुफल त्यों लच्छि जाइ ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

(१) कृ० ए०—जात, मो०जात।
(२) ए० कृ० को०—ज्यों।

सिरजोर सीस सचित्र जौ होइ। होइ साप भेद बिपरीत कोइ॥
ज्यों कीन पातवै रोचनेव। नृप सावधान मन रहै तेव॥
छं० ॥ ६६६ ॥

लधु बढ्ढि बृछि ज्यों करि उतंग। त्यों हीन नरनि[1] नृप करै चंग॥
हुअ बंक डार जे चलहि झूलि। तिन छंटि छुंटि बढ्ढवै थूल॥
छं० ॥ ६६७ ॥

जे भ्रत्त राज मन्ने न पंक। तिन जर उपारि कढ्ढै सुवंक॥
बंबूर बारि ज्यों बाग होइ। कंटकनि बंक भट रष्षि जोइ॥
छं० ॥ ६६८ ॥

जे धरा काज धरधरै धाइ। अंकुस गयंद त्यों जोर जाइ॥
वर जोर सचिव बघकार अषान। द्रिष्टतव[2] सरप ज्यों दुगध पान॥
छं० ॥ ६६९ ॥

परधान चीय नृप जोर जाहि। धर जात वेर लग्गै न ताहि॥
[3]सेवकिनी पत्ति जित रामै नाह। विलसै ससचिव लै लच्छि लाह॥
छं० ॥ ६७० ॥

दूहा ॥ इह जामानी कथ्थ कथि। कहि संषेपिय उह्र॥
सजौ जूह सज जुद्ध भर। सनमुष अरि वेनु युद्ध[4]॥
छं० ॥ ६७१ ॥

रावलजी का सब राजपूत योद्धाओं को समझाना और सब का रणोन्मत हो कर युद्ध के लिये उद्यत होना।

पद्धरी। संबोधि सुभट षुम्मान राइ। आभासि सबें अप्पा सुभाइ[5]॥
सामंत सीह अरसिंह बोलि। जैतसी लषमन लष्ष ओलि॥
छं० ॥ ६७२ ॥

साजंन सीह सदि लषम सीह[6]। सत स्याम सीह[6] रतनं अबीह॥
तेजसी राव कुंडल्ल करंन। देवरा देव न्त्रिभ्भै सरन्न॥
छं० ॥ ६७३ ॥

(१) ए० कृ० को०—जनानि। (२) ए० कृ० को०—दृष्टंत।
(३) ए० कृ० को० ज्यों सव किनी पत्त जिम रमै नाह।
(४) ए० कृ० को०- वे वुद्ध। (५) ए० कृ०को०—राइ (६) ए०कृ०को०—बामंनसिंह।

आभासि भीम भय अभय सिध। सूरत्त दत्त एक ग रिघ॥
सामंत राइ भर समर राउ। उड्डसे रोम भ्रगुटी उयाउ॥
छं० ॥ ९७४ ॥

जपेव ताम दष्षिन गुरेस। आयस्स साइ अप्पौ सुदेस॥
उच्चरहि ताम आहुट्ट ईस। अप्पौ सुमंत सामंत दीस॥
छं० ॥ ९७५ ॥

प्रौकम्म कम्म उब्भार इट्ठ। असि दाव घाव न पौ अदिट्ठ॥
दैवत्त कत्य आधात अप्प। रष्षै सुदंड चारी सु दप्प॥ छं० ॥९७६
तुम उच नाम सूरत्त साप। लष्षियै एक मभ्भेव लाप॥
सव सजौ उड्ड सौजुड्ड मत्त। कीरत्ति अत्ति बढ्ढै कवित्त॥
छं० ॥ ९७७ ॥

जपहि सुभट्ट सुनि समर राज। लष्षहु सु घत्त सात्रत्त काज॥
असि झाक वाक वर्ज्जै अयास। सम मिलहि सूर नर जोति भास
छं० ॥ ९७८ ॥

उच्चरिग ताम सामंत सीह। निज भ्रात जुड्ड लष्षहु स लीह॥
सामंत सूर चहुआन भार। वुभ्भामि धीर बाजंत सार॥
छं० ॥ ९७९ ॥

आये सुभट्ट रावल रहस्सि। उब्भरे व्योम लग्गे उहस्सि॥
आयो सुकन्ह सुहवन्न तोम। सुअ अनुज बंध सिरपहि सुरोम॥
छं० ॥ ९८० ॥

वाने विरद्द बंधे सुच्चार। आवरिय अधिक सूरत्त भार॥
भर हरिय भीर अग्गार सहार। सकरहि विषम सुर सोइ पार॥
छं० ॥ ९८१ ॥

भज्जना राइ सकर पगार। सरनैत भ्रत्त वाहा उगार॥
झल हलिग तेज वर भाल भास। सूरत दत्त लग्ग अयास॥
छं० ॥ ९८२ ॥

उड्डसे रोम भ्रगुटी उयाह। वीरत्त घत्त बढ्ढै बराह॥
विस्साल अंग आरत्त ओप। जग्गैव प्रलै मनु काल कोप॥
छं० ॥ ९८३ ॥

रोमंच उर्द्ध झर्सरि उयाल। उच्चर्‌यो सिंघ अग्गे सुढाल॥

इह मत्त रत्ति अगाव सानि। उतमेछ सज्जि उम्भै उतानि।
छं० ॥ ९८४ ॥

बलिभद्र वीर कैलास वान। कुब्बेर दच्छ मंते मतान ॥
इह जुद्ध विद्धि अप्पै वषान। कलहंत केलि लग्गी भरानि ॥
छं० ॥ ९८५ ॥

उम्भरै सद्द सुनि सुनि निसान। संभरिय राइ चहुआन पान ॥
आतुर अनंत पग मग्ग दान। पति सरस सुगध वांछित विहान ॥
छं० ॥ ९८६ ॥

शिवजी का यक्ष से कहना कि इस युद्ध का संपूर्ण वर्णन करो।

कवित्त। सुनिय बत्त जटधार। चित उम्भार रहसि रजि ॥
मन विलास तन भास। रोम उल्लास तास सजि ॥
कहै दच्छ सम ईस। कहो वेताल विवरि कथ ॥
अति लग्गै आनंद। प्रेम पूरन भारथ्थ कथ ॥
प्राकंम नाम सुभटन प्रथुक। कहै वीर सा विवरि विधि ॥
असुरान पान हिंदू तुरक। ताहि सु जंपौ जुत्त अधि ॥
छं० ॥ ९८७ ॥

यक्ष का युद्ध का विधिवार हाल कहना।

दूहा ॥ कहै दच्छ कैलासपति। सुनि धर श्रवन सुठान ॥
सुभर जुद्ध लग्गे अतुल। चाहुआन सुलतान ॥
छं० ॥ ९८८ ॥

प्रातःकाल होतेही राजपूत वीरों का घर द्वार को तिलांजुली देकर युद्ध के लिये उद्यत होना।

कवित्त। होत प्रात सब सूर। बज्जि घरियार फट्टि पहु।
मिलि बारन बर राज। वीर संदेस तत्त कहु।
स्वर्ग मग्ग रुक्किये। चित्त रष्षो पुनि धीरं ॥
अच्छरि वर संग्रहै। लेहु अच्छरति सरीरं ॥
इत्तौन हेच दंपतिय हित। दुहुंन सरन हित ओजयौ ॥

जाने कि चित्र पुत्तरि लिषिय। औव कविन इन लग्गा ॥

छं० ॥ ६८६ ॥

दूहा। दे पानी ढिल्ली धरा। मन सा पानी रष्षि ॥
सो चित्त्यो सभरधनी। जन्म सुकित्तिय अष्षि ॥

छं० ॥ ६६० ॥

लज्ज सुदो गहिये इला। कदृय कित्ति न लग्गि ॥
दिन सो नर मिल्लि आइये। गोरी अग्गि सुजग्गि ॥

छं० ॥ ६६१ ॥

रावल जी का कन्हा से कहना कि तुम पीछे की सेन की सम्हाल पर रहो।

जोर मद्धि कन्हा रहै। बड गुज्जर रव्याइ ॥
सज्जि सेन चतुरंगिनी। उत्तर रतन बजाइ ॥

छं० ॥ ६६२ ॥

हात सूर सो उग्गते। बहु आनो सह पार।
कुंभ मच्चि सन्हो मरिय। जग्गि अभंग भार ॥

छं० ॥ ६६३ ॥

सूर सुधन जुद्धित अथिग। गई सु तिथित अतीत ॥
वाम कलह कदल अनी। भी प्रतिपदा अदीत ॥

छं० ॥ ६६४ ॥

कन्हा का कहना कि हम तुमसे पहले जूझेंगे।

चित्रकोट पति सों कहै। कन्ह सुभर वर तोह ॥
हम तुम अग्गे झुझिहै। इह जुझानी रोह ॥

छं० ॥ ६६५ ॥

कवित्त ॥ गिर सभरि दच्छिन नरेस। निज मत्त मत वर।
तुम जपहु सामंत। सूर अति तेज जुद्ध जुर ॥
आज देव तुम सेव। कौन साजै जुध दय्य ॥
पल असंष बुद्धि। पयार बधी नर दब्ब ॥
पल परहि जाम तुहहि धरनि। जाम इक्क कहै सुभर ॥

दह गुनौ बीर बीरत्त जगि। तांम तेज बंधहि सुभर ॥
छं० ॥ ९९६ ॥

रावल जी का पुनः समझाना परंतु वीर कन्हा का हठ करके युद्ध में प्राण देने को उद्यत होना।

बिअष्षरी ॥ तब रावर जंपै सम जानं। हों बुझझौं तुम तेज महन्नं ॥
तुम रष्षहु सुपच्छ धर बंधं। तुम राजौ गति राज सु संधं ॥
छं० ॥ ९९७ ॥

तुंधर तेज मेज दल तोहं। तू रापै दष्षिन गिरि सोहं ॥
[1]तो पच्छा जेहौं बर बीरं। है सुर है राजै तो नीरं ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

तब हसि कन्ह कहै पति बंधं। रजै नही तुम बिना निबंधं ॥
हौं बंधो बर बिरद चियारं। लहियै सो[2] लागंते सारं ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

में बंधेव बिरद तुम सोहं। सो जागें भिलंते सोहं ॥
अज्जा[3] कज्ज साईं मो कांधं। मो कंधै जोगिनि पुर बंधं ॥
छं० ॥ १००० ॥

जुद्ध अज्जा[4] मो इन्द्र निरष्षै। अज मो कांदल देव दनु लष्षै ॥
पल परबत्त रचौं गढ़ भारं। सलिता श्रोन प्रगट्टै सारं।
छं० ॥ १००१ ॥

जुध कौतिग कारी आनंदं। जोगिनि जच्छ बीर उनमदं ॥
रनचर आस करौं पल पूरं। को सामंत मत्त भर सूरं ॥
छं० ॥ १००२ ॥

तब समसिंघ कहै धुमानं। हौं बुझझौं तुम तेजर नानं ॥
मैं रष्षन तुम दिल्ली न किन्हं। सोइ कारन मैं चिंतन चिन्हं ॥
छं० ॥ १००३ ॥

रहैं नही बर सिंध पच्छ बर। बिनसै क्रात कारन जोगिनि पुर ॥

(१) मो० तो पच्छै जैहै बर बीरं। (२) ए० मौ।
(३) मो० अन। (४) ए० कृ० को०—कज्ज।

तुम प्राक्रम्म लह्यौ भर सार। वषहु वंध भिरौ भर भार॥
छं० ॥ १००४ ॥

तब रावर मिलि कन्ह प्रससे। आलगे राजे रह अंसे॥
छं० ॥ १००५ ॥

रावल जी का कन्ह की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ धरिय हथ्थ सिर कन्ह। अप्प श्रुति अति प्रससे॥
आभासिय बर भर। अपान जपे गुन अंसे॥
उभै पष्प सम सप्प। बंध बषे भर रष्षै॥
न्त्रिमल नेह निज लोह[1]। धम्म स्वामित्त सुलष्षै॥
उभ्भारि तेग एकेक अग। स्वामि अग्र बोलै बिहसि॥
दूष्षैव अग्र आसुर सयन। गयन लग्गि गज्जै रहसि॥
छं० ॥ १००६ ॥

रावल जी के आज्ञानुसार राजपूत सेना का गरुडव्यूहाकार रचा जाना।

अप्प सुभर आहुट्ट। ईस देषे आति दुज्जर॥
ताम हरषि सुष तेज। गज्जि बीरत्त बीर बर॥
तब जद्दव कूरंभ। द्रुग्गि चिते मन अप्प॥
अनिय व्यूह सज्जन। सुभार उभ्भर दल दप्प॥
बुझ्झंव ताम चिंत्रंग पहु। बर आसुर झुझ्झार बर॥
भिर्इं न अकल अरिहर गहर। अति आवट्टहि दुट्ठ पल॥
छं० ॥ १००७ ॥

तब जद्दव क्रूरंभ। राय रावल[2] प्रति बद्दिय॥
चामर छत्र रषत्त। अद्ध व्यूह रचि गट्टिय॥
एक पष बलिभद्र। एक पषह जामानिय॥
चुंच[3] कंध पुंडीर। सेन सम्मुह सुरतानिय॥
मग पिठ सिंध आहुट्ठ पति। पुच्छं रचि मारू महन॥
बामंग अग्ग प्रथिराज कौ। सुभर जुद्ध मत्तौ गहन॥

(१) ए कृ को नेह। (२) मो जद्दल। (३) ए कृ को–चेंच।

छं० ॥ १००८ ॥

उधर हम्मीर को बीच में देकर यवन सेना का चन्द्र व्यूहाकार होना।

॥ उत आसुर सेना रची। मध्य भये[४] चाहुलि जंबु ॥
बह देवी चहुआन नृप। मुष झलहलि लगि लंब[५] ॥
॥ छं० ॥१००९ ॥

पुंडीर सेना का धावा करना।

॥ अरध चंद्र तत्तार। पान पन पान पुरेसी ॥
षां हस्साम मारुफ। गरुअ गब्बरनि गुरेसी ॥
चाहुलि राव हमीर। समर बंधै दल दोही ॥
जिहि संसारह आय। सोइ दोही सिर जोही ॥
निहु भाय ढलनि बद्दल मिलिग[?]। कारिगह मीरह दुअ बहसि ॥
पुंडीर राइ पावस निपति। लरन ओह कहु सुहसि ॥
छं० ॥ १०१० ॥

॥ पुनि पावस पुंडीर पति। बरु करि बिनवै बत्ति ॥
गहि आनो सुरतान कों। कै हमीर सिर लत्ति ॥ छं० ॥ १०११ ॥

पृथ्वीराज का पावस पुंडरी से कहना कि नमकहराम हम्मीर का सर अवश्यमेव काटा जाय।

तब राजा प्रथिराज कहि। सुनि पावस पुंडीर ॥
इतनौ परिहस सार[६] तुअ। काटहि सिर हम्मीर ॥
छं० ॥ १०१२ ॥

जब्ब गरुअ गोरी सयन। गगन लग्ग पुंडीर ॥
हुकम हंकि प्रथिराज दिय। तब्ब भिरन पुंडीर ॥
छं० ॥ १०१३ ॥

(४) मो.-मद्धे। (५) मो.-मझझ लहलि लागि लंब।
(६) ए. कृ. को.-साह।

पुंडीर योद्धाओं का युद्ध।

रसावला ॥ जे पुंडीर जत्ती। महामम्म धत्ती।
लगैं लोह गत्ती। मनो बीज पित्ती॥
छं० ॥ १०१४ ॥
अविहात छत्ती जुटे मेछ पत्ती॥
भुदगी सुरत्ती। रसी भोरि' मत्ती॥ छं० ॥ १०१५॥
गज घाय अत्ती। सत बानि रत्ती॥
गहे दंत दत्ती। चढी कुंभ मत्ती॥ छं० ॥ १०१६ ॥
मषै जुग्गवत्ती। मनो इन्द्रपत्तीं॥
रुधी धार रत्ती। मनो इन्द्र छुत्ती॥ छं० ॥ १०१७ ॥
इसो बीर बत्ती। सु भारथ्थ नत्ती।
निरष्षी फिरत्ती। मन बेन रत्ती॥ छं० ॥ १०१८ ॥
दुह सेन अत्ती। सुभ जानि रत्ती' ॥ छं० ॥ १०१९ ॥
कवित्त ॥ मरी अष आहत्त। मेछ हिंदुअ जुध जुट्टं॥
सार धार निहार। सार झर सारह तुट्टं॥
हुई बाह आहुट्ट। समर पारस रह धाइय॥
घरिय एक घरियार। सार बज्जै घन घाइय॥
आहार धार धारह धनी। कन कलक सम्हो चढ़िय॥
प्रतिपदा सधन आवत्त जुध। घरिय एक आवृत बढिय॥
छं० ॥ १०२० ॥

हम्मीर की रक्षा के लिये तीन हजार गष्षरों सहित कई यवन सरदारों का घेरा रखना।

सहस तीन गष्षर गुराय। हाहुलि हमीर वहि॥
मुरगि मुरगि मारूफ। ओट ततार षान रहि॥
षल षुरेस षन षान। जानि छंडिय षग झिल्लिय॥

(१) ए. कृ. को—मीर। (२) ए. कृ. को वर्त्ती।

मनहु महिष मय मत्त। [1]कहर कानी दइ ढिल्लिय ॥
पुंडीर राइ पावस पहुर। झर उझ्झार लग्यौ गयन ॥
क्रारंभराय अरु जादवनि। अमर मोह भुल्ल्यौ सयन ॥
छं० ॥ १०२१ ॥

पुंडीर सेना का हम्मीर पर धावा करना।

हाय हाय उच्चार। भिरे पुंडीर स्त्रर झलि ॥
बजिग लोह तन घन विहार। ब्रह्म संधी न मुष्ष षुलि ॥
पग्ग झटकि पायक प्रमान। बीर उत्तरे सरम्भर ॥
रज्जि मेर बज्जे प्रहार। घाय अभंग भंग धर ॥
चढि कंध कमंधन जोगिनी। सह मह उन मह फिरि ॥
नारद सु तुंमर जुद्ध पर। जै जै जै उच्चार करि ॥
छं० ॥ १०२२ ॥

रसावला ॥ सु पुंडीर भारी, मद्दमे पचारी। सुअं षग्ग झारी[2], सु सौभै उभारी ॥
छं० ॥ १०२३ ॥

सो नंगा सु नारी, हकारे उभारी। दई देवि तारी, गिधिं उत्त फारी ॥
छं० ॥ १०२४ ॥

करि नैर तारी, गिरिचा प्रहारी। कुलं सत्ति तारी, लगैं जानि भारी ॥
छं० ॥ १०२५ ॥

भिरै बीर कारी, रतं नैन सारी। मदं मोह धारी, छिनं मैं विसारी ॥
छं० ॥ १०२६ ॥

कहूं अस्स तारी,[3] सुभै रथ्थ कारी। उतंमंग पारी, धवै षग्ग धारी ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

निषंदी विधारी, असीसं उचारी। षग्गं जोग गारी सुकत्तीन[4] हारी ॥
हु...
छं० ॥ १०२८ ॥

(१) मो.-कहर काती दई ढिल्लिय। (२) ए. कृ. को.-नारी। (३) ए. कृ. को.-सारी गारी। (४) मो.-मद्दै गीत।

पग मग्ग पारी, झिन मझ्झ पारी॥ सिर ईस सारी, हर यौ ब्रह्मचारी॥
छं० ॥ १०२९ ॥

हम्मीर के एक भाई, पुंडीरों में से बारह योद्धा और वैजल खवास का काम आना।

कवित्त ॥ परिग धाय नारेन। बंध हम्मीर मुकतिवर॥
द्वादस पट पुंडीर। सुभट उत्तरिय पग्ग भर॥
धीर षवास वैजुला। भार धर धर तुटि बधर॥
उप्पर मंडि उचार। बस्यौ हाहुलि इसमर॥
भजि बंस अग्ग पारिग परी। परिग्गह सीसह सीर धरि॥
जीवत मरत्त भजन दुजन। साम द्रोह कीजै न बर॥
छं० ॥ १०३० ॥

पुंडीर सेना के धावा करते ही यवन सेना के एक लाख जवानों का हम्मीर को घेर लेना।

दस हजार असवार। लष्ष पैदल सुपति करि॥
जबर जंग डरवान। छूटि हथनारि कूह करि॥
सघर सूर पुंडीर। सार सहि सन्हो धायौ॥
मार मार उचार। बीर बर बीर उचायौ॥
पन बढ्ढि सूर कायर घटे। धरिय दीह दुर्व्वीय बर॥
हम्मीरराइ जंबू धनी। सरन लोह पावस पहर॥
छं० ॥ १०३१ ॥

पावस की पावस से उपमा।

मुरिल्ल ॥ झरि पावस सिर बर आसार। बरषत रुहि धर छिछ्वार॥
घग विज्जुल जोगिनि सिरधार। बग्गी सौ जंबू परिवार॥
छं० ॥ १०३२ ॥

चोटक ॥ कटि टूक करे जिनके किरच। मनो इंद्रवधू धरमे रचय॥
[1]झमकै सघग्गीन घग्गनि बजै। सुनि बद्दति झिंगुर सद्द लजै॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) ए कृ को—झमक्कै ॥ घग्गा नग्गन बजे।

लपटाइ सुमोकिय वेलतरं। पर रंभन रंभन रंभ वरं ॥
अकुरी बढि वंलि सुवीग वरं। बहि पावस पावस भारभरं ॥
छं० ॥ १०३४ ॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सिर काट लेना।

कवित्त ॥ स्वामि बचन संभारि। हकि हैगै पावस तह ॥
लाषति दल मिलि गयौ। साम द्रोही हंमीर जह ॥
उठि सौही करि संग। इच्छित कर षग्ग समाह्यौ ॥
धरी सुतन षिजि षेत। सीस दुरजन कौ बाह्यौ॥
बाहंन षग्ग कंप्यौ पिसुन। धमकि अंग धरनिहि परयौ ॥
नारद्द बीर बेताल मिलि। जोगिनि सद जै जै करयौ ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

दूहा ॥ सीस छेदि लिय संगि वर। मरि साह दल गीर ॥
आय सूर सामंत पें। धनि धनि जंपत धीर ॥
छं० ॥ १०३६ ॥

कवित्त ॥पिषिग धरनि हमीर। भीर भंजी सेना भिरि॥
निघटि सेन हम्मीर। तदिन ठढ्यौ पुंडीर लरि ॥
षान षान षावास। षळ्यौ धोराहर तह ॥
स्वामि ध्रम्म पावस सुपति। चढे कित्ती चित सद्दौ ॥
दलमलिग नाम दुज्जन सुपर। दह भज्जिय प्रथिराज घर ॥
धीरंज धीर धीरहु तनौ। जस सुध्रम्म लीनो सुघर ॥
छं० ॥ १०३७ ॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सिर काट कर राजा के पास आना और राजा का उसे स्वामिधीन कहना।

जित्ति सेन हम्मीर। मान मद्दे हम्मीरं ॥
बजिय बाजन नीसान। धज्जिय गज सबद सुबीरं ॥
रूप अग्गी उर प्रगटत। सुतन चंदन भो चंदन ॥
अंकुत संचिमन उलमि। भयौ अरि कंद निकंदन ॥
सौं देह कहौ चहुआन वर। तिन सुष सौं साध्रम्म नाहि ॥
पुंडीर धीर तसलीम करि। तेग बेग चौहथ्थ गहि ॥
छं० ॥ १०३८ ॥

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-20

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B A
With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju

CANTOS LXVI-LXVII



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने
कुँअर कन्हैया जू की-सहायता से
सम्पादित किया।

पर्व्व ६६-६७

PRINTED BY PT BAIJNATH JIJJA MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA
BENARES

1911

मूल्य १।)] Issued 5th August 1912 [Price Rs 1/4/

सूचीपत्र ।

—०

स्यारि ध्यारि वर तेग। राज अप्पी पुडीर ॥
वर बध्यौ हम्मीर। बध बधन हम्मीर ॥
तु धीर जा बीर। धीर किन्नौ सोइ किज्जै ॥
चहुआना सुलतानं। हथ्थ तेगह सब दिज्जै ॥
सो जननि भूत अंब गरिय। पुत्तह मंगल गौन वर ॥
जो जीवत पवह पजरै। गहै साहि ज्यौं स्वामि धर ॥
छं० ॥ १०३९ ॥

तू चंदन कहि चंद। धीर सम धीर समान ॥
तू अजब बधै पग्ग। पग्ग पट्टौ षुरसान ॥
तु चालुक्को चुकि। भयौ सनाह जु साई ॥
तैं वर जित ते तही। दहूय दाहिम उग्गाही ॥
अड्डौ नरिंद गोरी दलहं। तो अग्गै जिनवर असुर ॥
बधी सुतेग[1] सुरतान पर। दै दुवाह दुज्जनह उर ॥
छं० ॥ १०४० ॥

दूहा ॥ धनि पावस पुडीर पति। धनि धनि कहै सुदेव ॥
लै सिर अरि नृप पैं गयो। कह्यौ आगिलो भेव ॥
छं० ॥ १०४१ ॥
हम तुमसो बहु वचन कहि। तब लाहौरी बत्त ॥
अब दग गज्जनै साहि कौ। पग बज्जन रह घत्त ॥छं० ॥ १०४२

पावस पुडीर के भाई का मारा जाना और पुंडीरों का पराक्रम वर्णन।

रसावला॥सुलित्तान रज्ज, बजे पग्ग सज्ज। चढे लोह पज्जे, बधे ग त्ति लाः
छं० ॥ १०४३ ॥
सुने सह अज्ज, निसान निगज्ज। हरी अत रज्ज, भ्रिमालौ विरज्ज
छं ॥ १०४४ ॥
तुटे कंध गज्ज, फामह ति भज्जं। भ्रमै पग्ग छज्ज, मनो बीज पेज्ज ॥
छं० ॥ १०४५॥
भयानक कज्ज, तुटै वाजि मज्ज। परे भूमि तज्जं, ॥
छं० ॥ १०४६ ॥

(१) मो०—पग।

हरै हूर अंती, गजं सोम दंती। कढ़ै भूमि छत्ती, सुभारथ्थ सत्ती।
छं० ॥ १०४७ ॥

सुतं सुत्त मानं, उच्चारै उमानं। कही देवि जीयं, बरदाइ दीयं ॥
छं० ॥ १०४८ ॥

हिंदू मेछ सूरं, तुरं बाजि तूरं। उपगाम पूरं, गुरं मोजि धूरं ॥
छं० ॥ १०४९ ॥

दुधं मट्ट धूरं,........................। दे। उंता उतारी, ...॥
छं० ॥ १०५० ॥

धार रुद्री छरी, काल नट्टै जरी। चट्ट पट्टं अरी, वाहवानं सुरी ॥
छं० ॥ १०५१ ॥

हिंदवानं गुरी, रन्नती अच्छरी। कीय सूरं शुरी, ज्यों भरथ्थं च्छुरी
छं० ॥ १०५२ ॥

घरीं[1] च्यारं चुरी, चवं जे पुक्करी। भेद हिंदू अरी, मेछ प्रत्तंतरी
छं० ॥ १०५३ ॥

पार पारस फिरी, सुरत्तानं गुरी। मान बिंटं परी, ससी रद्दं जुरी
छं० ॥ १०५४ ॥

कवित्त ॥ धरिय सुच्चारि चरित्त। उदै पति अरुन चढ़त बर ॥
[2]परि पारस लहु बंध। मथिय गोरी सयन्न भर ॥
त्रिदस असुर नर नाग। जीति पुंडीर उचारिय॥
जीति कित्ति अमनीति। जित्ति षल कुल षय कारिय ॥
दंपत्ति हंस जय जय कहय। पंषिन जं जै उच्चरिय ॥
सुरंत चुक्कि हयथान[3] कजि। जै अच्छरि पंकति फिरिय ॥
छं० ॥ १०५५ ॥

शहाबुद्दीन के हाथी का वर्णन।

सेत छत्र सुलतान। सेत चोरनि ढुल्लावै ॥
गज्ज मेघ आरिष्ट। सेन संमुह हल्लावै ॥
जूह जुद्ध आवत्त। चाव चतुरंग चंपि चलि ॥

(१) ए० ह०—धरीं
(२) ए० कृ० को० जीत की तिम जीति। (३) ए० कृ० को-हयथान।

धुह मिहचल चह् ,आन । मेर आनद चिंत डुलि ॥
मधपान मान घरि अह टलि । हिंदु मेछ कहूँ चिपग ॥
जगत्ती जुद सामत सहर । सिर बज्जौ घरियार मग ॥
छं० ॥ १०५६ ॥

दोपहर को रावल समर सिंह जी और ततार खा का मुकाबला होना ।

समर सिंह रावरह । सहस तेरह हय छडिय ॥
उत ततार गोरिय । विसप्प रोषौ रन मडिय ॥
मिदल डाल घोडन । अभग पग पेलि विहथ्यह ।
कहैं चद बरदाय । सुनहु छपिय इह कथ्यह ॥
भजि भर भरम जमन मरन । तिरन तुग सद्दै समर ॥
मुरि गये छंडि भारथ्थ में । कोइ मग्गै मग्गौ अमर ॥
छं० ॥ १०५७ ॥

दूहा ॥ मिले सूर सामत सब । असुर तेग सम कढ्ढि ॥
समर सिंघ रावर समर । समर सुभ्रन बर चढ्ढि ॥
छं० ॥ १०५८ ॥

भजि भरम ज मन मरन । कर नन सिंघ समार ॥
[1]मुरिगम छिन भारथ्थ किय । चपौ अप असार ॥
छं० ॥ १०५९ ॥

रसावला॥ हिंदू मेछ भुर, तार बज्जे हर । पग्ग पेलै चिय, घाइ बज्जे निय ।
छं० ॥ १०६० ॥

सार सार भुर, मंत मत्ते पर । बारुनी बारया, सूर पाना रया ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

दंत कट्टै करी, बीर नच्चै अरी । ढाल माल ढरी, गज्ज जुथ्थ परी ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

थान थान थरी, रास ज्यों विच्छरी । जीत जीत जुरी, काल बयाम्न फिरी ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

(१) मो०— मुरिग जिन भारथ्थ किय ।

घाट आ उत्तरी, फंद कट्ठे नरी। सीस जा उत्तरी, दोम नंचै धुरी॥
छं० ॥ १०६४ ॥

समर सिंह जुरी, भार बितं तुरी .... ।
छं० ॥ १०६५ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ भारथ्थ मिलि। उत मिलि षान ततार ॥
अप्प अप्प भीरग्ग करि। ज्यों बद्दल घन सार ॥
छं० ॥ १०६६ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ हुअं सेन हक्कै हलक्कै गुमानं। बजे तुंब तुंबो द्रुमं के निसानं॥
भयं नफ्फेरि भेरी भयानं। मनो मेघ गज्जै दिसानं दिसानं ॥
छं० ॥ १०६७ ॥

बजे धाइ आवद्द बज्जी हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई ॥
हबक्की हबक्का करै नेग्र नेजं। मद्दा मल्ल वल्लै अमं जानि तेजं ॥
छं० ॥ १०६८ ॥

गिरै उतमंगं उठे श्रोन सल्लै। सुभै दंग लग्गे सुपावक्क प्रल्लै ॥
नचै कंध हीनं कबंधं कलापं। जगी जोगनी जोग जापं अलापं।
छं० ॥ १०६९ ॥

रंगी रंग भूमी विताल उसद्दं। धरै कंध उद्धं बिरद्दं बिरद्दं ॥
गयं नंति गिद्धं सुसिद्धं विमानं। बरं रंभ रथ्थं सुरं लंत यानं ॥
छं० ॥ १०७० ॥

चवं लोकपालं कहं क्रूह भीरं। लियौ तात संगं मद्दा मल्ल बीरं॥
जयौ आप जोगिंद जालप्प थानं। दजी डक्क डोंरो सु सिंगी गियनं॥
छं० ॥ १०७१ ॥

तहां तत्त बेदो कवी चंद गट्ठौ। उमा ईस दीसं बलीभद्र ठट्ठौ ॥
तहां सुष्प दुष्पं न मानं न तातं। चयं तुंग तुंवी [२] महा मोह बातं
छं० ॥ १०७२ ॥

दूहा ॥ जालप सों जटधार कहि। समर समर आवृत्त ॥
देव न दानव असुर सुर। इह जुद्धानी बत्त ॥ छं० ॥ १०७३ ॥

(१) ए० कृ० को०-लगी। (२) ए० कृ० को० त्वंग त्ववी।

तत्तार खां के मारे जाने पर निसुरत्त खां का समर करना।

कवित्त ॥ सुरत षान तत्तार । ताम निसुरत्ति षान लषि ॥
अनुज बंध साहाब । भ्रम्म स्वामित्त सूर तषि ॥
सहस दून सेनो । सुभार गज्जे गरुअत्त ॥
बीर धीर बर बस । जुद्ध जानै जुर घत्त ॥
उचरै मच घर जासु चिर । अनिय बुध चल्लै बिहसि ॥
चमरै त बीर बिरदैत घन । कलपि प्रान उम्भारि असि ॥
छं० ॥ १०७४ ॥

चपत आसुर सेन । हक उम्भार झार असि ॥
हल हलत दल हिंदु । भइय षुम्भान भीर वसि ॥
तोम कन्ह गुरु मन्न । पग्ग सज्जो सु ब्योम सिर ॥
सिघ कज्ज चिचग । लाज गज्जे व भार सिर ॥
सय सत्त सथ्थ भर बीर बर । हक षुक बोले बिहसि ॥
बधेव चाल मन मडि हरि । लोहरिम्म खग्गे रहसि ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

मुकुंदडामर ॥ मिलि लोह उहस्सि उहस्सिय हस्सिय आवरि[1] बीर सुधीर भर
सब जपिय इष्ट अभिष्ट तन पति जग्गिय अस्सि उहस्सि झार ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उम्भर आनन सूर उवन उच[2] ॥
असि ब्योम सुधूम भरे धुअ मंडल सूर प्रसस्सिय सूर सुच ॥
छं० ॥ १०७६ ॥
मिलि षग्ग उनग्ग करूर करष्यिय षडहि षड बिहग पल ॥
धरकंत धरद्धर झार झरग्गर होय हल मल दून दल ॥
बिहरंत धराधर सार विपंडल तुट्टित बाह दुबाह दुर ॥
मुरकंतह इक्क कडक्कडत कंधर श्रोन दउक्क दउक्क जुर ॥
छं० ॥ १०७७ ॥

हहकंत हकंतह चकत चकत सैल हवक्कह बक पग ॥
बचय भर आनदु आनदु अप्पति कठह कठ सुकंठ लग ॥

(१) मो०—आदरि । (२) मो०—अनच उच ।

किमनं कित बाजिय सार सुसाजिय तुट्टि सुसुंड षिकारि भजं ॥
पल पूरिय गूंदह कोष परारिय श्रोन प्रबाह दुवाह सजं ॥
छं० ॥ १०७८ ॥

धननंकित[1] घंट सकत्ति स छूरिय पूरिय कंठ पिपास धरं ॥
धर नंचिह बीर सुभीर बजामह गिद्धि झरझ्झर होर झरं ॥
तब गज्जिय कन्नह महाभर उब्भर दुब्भर हंकि हिलोलि दलं ॥
दह पिंड अहुट्टिय आसुर सुभझर हंकिय चंपिय हिंदु दलं ॥
छं० ॥ १०७९ ॥

निसुरता के एक हजार योद्धा मारे जाने पर शाह का उस की मदत करना।

कवित्त ॥ दल आसुर दह पिंड । लोह झर भर आहुट्टिय ॥
सहस एक निज सेन । देषि निसुरत्ति सु घट्टिय ॥
तब आवरतन बीर । सेष सेना आभासिय ॥
मम भज्जौं धरो लाज । करौं कंदल असि रासिय ॥
परसंसि सहस सेना सकल । बल बंधयौ साहाब गजि ॥
तजि मोह पिंड सजि भिरति मन । भाय दीन महमुंद भजि ॥
छं० ॥ १०८० ॥

दूहा ॥ इह कहंत दल बल भरिग । धरि दिसान सुलितान ॥
उररि सेन उप्पर परिग । चहुआना सुविहान ॥
छं० ॥ १०८१ ॥

कन्हराय और निसुरता खां का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं कन्ह आवंत सेनं । सयं तीन सेषं भरं अप्प खेनं ॥
तजे इन छोडंन गज्जे गहक्के । दुअं पास कप्पान धारे सुबक्के ॥
छं० ॥ १०८२ ॥

करें झार उभझार झारं करारं । समै छूर कम्मै थलं सार सारं ॥
हहक्कंत धक्कंत धक्कंत धीरं । दुए षग्ग षंडे धरं षग्ग झीरं ॥
छं० ॥ १०८३

(१) मो०—धननंतिय।

बटै जघ जग बनं रभ जान । पल गूद हड्ड थर सम्म थान ॥
अलुभ्भत अत सुभट्ट सुपाय । करै धाय सेल दुहथ्थे दुहाय ॥
छं० ॥ १०८४ ॥

फरक्कत फेफ सरक्कत डिभ । धरक्कत भुम्मि धर हकि सिभ ॥
पलचार ओन घर हस भार । अघाय सु घाय नचै सुभ्भकार ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

लगे आसुर हिंदु सो षग्ग पारे । करे घाय गज्जे गहक्के गुरारे ॥
सयतीन ताई परे जाम मत । सत बीस अग्ग करें हिंदु अत ॥
तबै कन्ह देव निसुरत्ति पान । मिल दिट्ठ दिट्ठी करूर दुरान ॥
छं० ॥ १०८६ ॥

दुअ हक्क हक्के गहक्केव सूर । बिरहैत दून दुअ जुड़ पूर ॥
धरै स्वामि भ्रमा दुअ उड्डकम्म । दुअ तेन धारौ जुरे जुड्डम्रम ॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दुअ हक्कि आसासि साभासि हून । दुअ सगि उभ्भारि निभ्भारि जून ॥
करीसिह साहाब सोराहि आन । मिले झुम्मक ढिक्कं हुकठौर जान ॥
छं० ॥१०८८ ॥

चल्यौ कन्ह गज्जेव लग्यौ अयास । दुअ आय अड्डे निसुरत्ति तास
दुअ षध हम्माम कम्मामपान । हवस्सी चलेह कि सो कन्ह ढान ।
छं० ॥ १०८९ ॥

करै मार भार स उभ्भार मेज । फटै टट्टर टून तुछ म रंज ॥
हने षग्ग कध दुअ सीस भारे । मने। श्रीफल फट्टि मल्ल सुठारे ॥
छं० ॥ १०९० ॥

बिभा असुतास्सेवर कंन्ह न पोषस्यौ रिम्म संम धरेजुद्ध षषे ॥
मिले हक्कि कन्ह निसुरत्ति पान । करेषग्ग उभ्भै चवै ठान ठान ॥
छं० ॥ १०९१ ॥

हए षग्ग भार दुअ सीस तुट्टे । लगे व्योम कमध साहूर उट्टे ॥
दुअ वाह षग्ग उछ्ज्जे बिराजे । बिना देवल इंदु धज्जा सुसाजै ॥
छं० ॥ १०९२ ॥

असी भार भारें तिनं बध्य लग्गै । धर छोनि स्तुट्टै जुरै वीर जग्गै ॥
उठे सेन कास्सवर स्तूर षेतं । दुअं वीर भभभभै निजं स्वामि हेतं ॥
छं० ॥ १०९३ ॥

प्रसंसे तुरक्कं सबै हिंदु तासं । धनं धन्नि जंपै सुरं सो अयासं ॥
कसूरं मुगत्ती जगी जोग राहं । लहै अच्छयं लोक सो हंस ठाहं ॥
छं० ॥ १०९४ ॥

इसो जुद्ध कन्हं महाबीर कीनं । महा जोति में जोति संथान लीनं ॥
महाजोग ध्यानं सुध्यानं जुमत्ती । जुरै जुद्ध पार्वतिका सार हत्ती ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

जिके कन्ह चिचंग सों बोल बोले । तिके षंग मग्गं दरंबार षोले ॥
इसो जुद्ध सेनापती राउ कीनो । जिने षान निसुरत्ति कों भिस्त दीनो ॥
छं० ॥ १०९६ ॥

कवित्त ॥ परे षान निसुरत्ति । करै प्राक्रम उद्धअति ॥
सुभट सहस सारद्ध । सथ्थ निज रोह मुत्ति षिति ॥
सो सुनि असुर सेन । भयौ हलाहल चालमनं ॥
सायर लहर उलट्टि । कप्पि थट्टं थट्टं घन ॥
संभले तांम साहाब तमि । क्रमि सुअंत झलझाल चषि ॥
कलमलिय कोप आरत्त तन । फिरै तप्पि सामित्त लषि ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

मियां मुस्तफा का धावा करना ।

मियां मान मुस्तफा । उभै बंधव असि उभ्भर ॥
धरा रोम उद्धरन । धरा स्वामित्त समुद्धर ।
सोय निरषि साहाब । दई अग्या तमि तामं ॥
तुम लग्यौ तत्तार । भार मंडे सिर कामं ॥
निसुरत्ति हयौ रावर भरन । हलहलंत तत्तार दल ॥
तुम जाय जुरौ उप्पर करौ । परौ बुध बंधेव भर ॥
छं० ॥ १०९८ ॥

(१) ए० कृ० को०— चले ।

रावल जी के सरदारों का अतल पराक्रम और दोनों भाई मुस्तफा मीरो का माराजाना ।

भुजगी। दुअ सभले थाच गोरी नरिंद। सजे वयोम सीस बिकस्से सुविंद॥
दुअ नाथ सीस चले भ्रम्मधारी। मनौं उभ्भरे बीर बीरत भारी॥
छं० ॥ १०६६ ॥

सहस्स दुअ चेव सध्यो सभीर। चढौ बाग उसै बिरच्चै अभीर॥
मिले आय अड्डेव आहुट्ट राय। भर अत्ति चिंते वनी धन्निताय॥
छं० ॥ ११०० ॥

गजै जैत सिंह अरस्सीह बीह। तमे तेजसी वीर बावन लीह॥
भर सिंह साजन सो बधिचाल। रजै तेज रत्त नसारत भाल॥
छं० ॥ ११०१ ॥

बधे वीर सामंत सौ वीर ७५। अरज्जुन्न जेम अरज्जुन्न ओम॥
भर भीम जेम गजे भीम देव। जग मात्त जग्गे अरी साथ जेवं॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सहस्सं समेक सत एक सथ्थ। मिले षेत षग्ग गजे हथ्थ हथ्थ॥
तिन मुस्तफा मान सो सेन हक्के। धरावीर वाजिंत्र नीसान धक्के॥
छं० ॥ ११०३ ॥

सुरं पूरि सिंधुर वद सुयेतं। झलक्के झलक्के बंधे बंध नेत॥
तबै आसुर दीन गोरी दुहाई। जपै आन धुमान हिंदू लराई॥
छं० ॥ ११०४ ॥

दुअ सभरे इष्ट अप्प अपान। मिले नेत धारी उभारे क्रिपान॥
हक्के वान भासग मुहै मरीच। तिरच्छे मिले षग्ग तत्तं तिरीचं॥
छं० ॥ ११०५ ॥

तिने तार आवध्ध वक्कै निक्कूटं। हुवै षंड षंडं लगैं जूट जूट॥
कटै जंघ रंभ सम षेम भास। ढरैं बाह कम्मोद नालं सुरास॥
छं० ॥ ११०६ ॥

परी सीस हुक्कै सुधक्कै फलेवं। रजे वीर रस्सं विसम्मे सुदेवं॥

(१) ए० कृ० को०—लान

षलक्कंत ओनं अवोलं प्रवाहं । पलं कीच मच्ची मलामज्झे मर
छं० ॥ ११०७ ।

धरं गज्ज भारं दुआरं करारं । तरं ढाल नेजा दुरोजा उभारं
घनं वालुका वाहु आसक्ति रेहं । रसंमं असंमं उतं रम्भ[1] दे
छं० ॥ ११०८

नदी रत्त पूरं गजं सीस कच्छं । समं अप्प वेनी नरं तंत म
रजे केन उस्नीष आवृत्त रूपं । जलं जात वेनं अली नेन ओप ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

कटे कुम्भ बाहं सग्राहं करूरं । मिले कम्म है गात भातं दुरूरं ॥
मराली ग्रहे तंत अंतीस मद्धी । रजे पंप हारी उदारी सुसिद्धी ॥
छं० ॥ १११० ॥

इसौ जुद्ध आमुद्ध मन्नौ[2] अपारं । मिले वाहु घत्ता तुटे मुग्ग सारं
लषे देव आहद्ध कौतिग्ग उत्तं । न दिट्ठौ मनं अप्प मन्नै अभुत्त
छं० ॥ ११११ ॥

जुटे मुस्तफा सीह सामंत षग्गं । दुअं वृत्तधारी क्रितं स्वामि अग्गं
उभै धारि उम्भारि संगी दुहथ्थं । जपै आनदैसं जपै इष्ट तथ्थं
छं० ॥ १११२ ॥

दोऊ लग्गि[1] जरं चले चंपिपूरं । लगे हथ्थ वथ्थं जमं जद्दु सूरं ।
तनं षंड षंडं समं सानि मंसं । चले उत्त गत्ती न लष्षेव अंसं
छं० ॥ १११३ ॥

महाजोध चित्रंग औधूत राजं । अयो जानि मेरं डिगै नाहि वाज
प्रलै काल लग्गी सुअसुरान सेनं । करे देव जै जै उचारं तिवेनं ।
छं० ॥ १११४ ॥

धरं जुद्ध बिरदैत रावल समानं । नहीं सूर कोई इसे नेजवानं ॥
छं० ॥ १११५ ॥

(१) ए० कृ० को० इत्त
(२) ए० कृ० को० मत्तौ । (१) ए० कृ० को० लान ।

मीर मुस्तफा के मारे जाने पर शाही सेना में से ग्यारह मीरों का धावा करना।

कवित्त ॥ पर्‌यो मान मुस्तफा। इष्षि धर रोम समुद्धर ॥
हल हलि सेन ततार। पच्छ दह पिड धरद्धर ॥
तब मसद दह एक। आय अड्डे वर बीरह ॥
मिले सुभर चिचग। जग उत्त असि धीरह ॥
गजनेस साजि आयास सिर'। लगे लोह तत्ते तरसि ॥
रन परे विहडे पड ह्मर। अनिय धार सोनं[2] धरसि ॥
छं० ॥ १११६ ॥

अरिल्ल ॥ पर्‌यौ देषि मुस्तफा महाभर। हल हलि आसुर सेन रि घन
लग्गे दोय बीर रस बयोमह। गज्जहि सूर चाढ़ि पलकौ मह ॥
छं० ॥ १११७ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं में घोर युद्ध।

त्रिभंगी ॥ इष्षि ततार सेन सुभार मुस्तफ छार हलिहाल ॥
जग्गे तन बीर अध्य सनीर धीर सुधीर लषि ढाल ॥
चपे चहुआन कर उत्तान जपै आन सुभ्भान ॥
गज्जे गह मीर सेन सुभीर बधे तीर चलिचाल ॥
० ० ० ० ० ० छं० ॥ १११८ ॥

बज्जे घज्जान रन रहान मय महोन ढरि ढाल ॥
सिध सुररह बीर बिरह रज्जे नह रन' चार ॥
चौसट्ठि सुरार गाजि गुरारं महि मदार जैकार ॥
छं० ॥ १११९ ॥

आहुट्ठ ईस चपि सुरीस लेहु बचीस बीरेस ॥
हिंदुअ असुरान पग्ग पिलान बज्जि विनान नीरेसं ॥
हकं हहकार होड़ हलार ढहै ढलार सहारं ॥
गज्जय चिकारे हय हिसार षुदि षुरार रुदार ॥
छं० ॥ ११२० ॥

(१) ए० कृ० को०—धर।
(२) ए० कृ० को०—सन्ने। (३) मो०—रुच।

कड़ कांधे कंधं संध उसंधं तुट्टि दुरंध भयकारं ॥
उर श्रोन दडक्कं हड्डुकडक्कं पग्ग कनक्क पैकारं ।
गज्जहि रन सूरं बिर विरूरं अच्छरि हूरं बजि तूरं ॥
रत्तो रन चारं देषि दुरारं रज्जि उरारं ओपूरं ।

छं० ॥ ११२१ ॥

फेकी फिक्कारं गिद्धझरारं सिद्ध मुदारं जैकारं ॥
कट्टे फार जरं अत अदूरं डिमरूरूरं भैकारं ।
आयौ गजि मानं हनि जिहानं मीर विहानं दिषि पानं ॥
जै जै विग्गित्तं हरी सुइत्तं कढि कावत्त कृप्पानं ॥

छं० ॥ ११२२ ॥

भेलें असि धातं सूर सुभात बाहु दुबातं दुझझारं ॥
तुट्टे मझ्झार दुक्कक्कर सारं कंठ उझारं हसि हारं ॥
जग्यौ जम दट्टं घाव पहट्टं धारह डट्टं बरि बीरं ॥
मुत्तिय चलि राहं सूर सुढाहं भौदिव राहं दुद्धीरं ।

छं० ॥ ११२३

जुद्धं जुद्धानं पत्त फट्टानं बीर रसानं सद्धानं ॥
कविचंद कहानं कित्ति बषानं उभै पुरानं बतानं ।

छं० ॥ ११२४

ग्यारहों मीरों और सरदारों सहित रावल जी का खेत र

कवित्त ॥ पस्चिम संद दह एक । सत्त परि रावर सिंघं ॥

उद्ध जुद्ध उद्धरे । इक्क एक रजि रिंघं ॥
रतन सिंह अरु सिंह । सिंह तेजस्स समथ्थं ।
बीर देव बानैत । कारै प्राकृम्म अकथ्थं ॥
अरिजुन जेम अरजुन करि । सामंत सिंह हुब्बे[1] बरन ।
साजैति सूर भेदे वरह । षल अनंत षुट्टे वतन ॥

छं० ॥ ११२५

गाथा ॥ सहस च्यार सधि मीरं । निबड्डे विषंस नंद बिय सत्तं ।

(१) मो० – हूब्बे वे बरन

न दे पलचर ओन । हालाहल विति विष माइ ॥

छ० ॥ ११२६ ॥

जामराय जद्दव का हरावल में होना ।

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ । गिद्ध जबुक कोलाहल ॥
रगत बुद निम्झरहि । अत डवर[1] डोलाहल ॥
वार बार गुन धुक । इक्क श्रवने झक झाइय ॥
हो बलिभद्र सुभद्र । सिघ रुक्यौ रन साइय ॥
संग्राम बत्त रम्भिय कहे । लग्गै गत्त दुहोइया ॥
गोडनह[2] गरुअ गोरी धटा[3] । सु जद्दव तेग उचाइयां ॥

छ० ॥ ११२७ ॥

तब रन रत्तौ बलिभद्र । राइ पावस पग लग्गौ[4] ॥
तु धीर जा धीर । भीर रावत[5] ते भग्गौ ॥
हो ढ ढेरी ढाल । हाल कहौ सुरतानी ॥
बड गुज्जर दाहिमा । बोल वढ्ढै उरतानी ॥
प्रारम्भ राव पज्जून सुअ । वडारू वटै भरा ॥
असवार सनाहरू सत्त । वे वधव वटै धरा ॥

छ० ॥ ११२८ ॥

शाही फौज में से सुभान खां का धावा करना ॥

घग्गैं बद्दय[6] पिआय । पच्छि जद्दव दव लग्गिय ॥
हय गय नर आरुरिय । भरि गोरी घर भग्गिय ॥
पग छुट्टत पतिसाह । पान पाना षुरसानी ॥
हिंदवान की हद्द । बोलि अग्गें सुरतानी ॥
सिरदार सिवान निसान पति । सुविहान असमान मति ॥
हो हाल गहो चहुआन को । तौ पठान अगिवान पति ॥

छ० ॥ ११२९ ।

(१) ए० कृ० को०—अत्र ।
(२) ए० कृ० को०—गोडनह ।　　(३) ए० कृ० को०—सुघर ।
(४) ए० कृ० को०—लग्गे ।　　(५) ए० कृ० को०—रावर ।
(६) मा – पुठवे बे अरना

जामराय जादव और सुभान खाँ का युद्ध ।

त्रिभंगी ॥ लहु[1] गुरु छह सत्ता तेरह मत्ता एहा अच्छिर[2] अंदोई ॥
घगपत्ति सुनंदा नाग भनंदा त्रभंगी छंदा एदोई[3] ॥
कूरंभा बाले संमर गाले सिंधुर ढाले उच्छाले ॥
गोरी घर धाले[4] असु करि ढाले परि बेहाले तन लाले ॥
छं० ॥ ११३० ॥

बर धरि सुलतानं से षुरसानं तरतुरकानं भुज भानं ॥
डह डह नीसानं बज्जि दुआनं असि झंझानं उभानं ॥
जद्दव जामानं कहि धरि धयानं गहि गैबानं सुरतानं ॥
सुनि सुनि सविहानं बक्किय आनं तेग उचानं असमानं ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

बहु मिलि मरदानं झरझर घानं असुकिय ढानं परधानं ॥
आवध तुटि तानं मिलि बथ्थानं जानि बिनानं मल्लानं ॥
धम धम्म लतानं बहु रग नानं[5] राजा मानं सु बिहानं ॥
तरकिय तष तानं नह[6] सितपानं रहसि रिसानं विरुझानं ॥
छं० ॥ ११३२ ॥

कवित्त ॥ हूक सबद उचार । सुन्यौ जद्दव जुआनै मन ॥
मनहु मेघ गरजहि दिसान । नीसान सुहम[7] घन ॥
रन छीतर तोषार । हरसि हालाहलि दिट्ठौ ॥
मनो कुमुद मुहयौ । चंद लग्गौ नह मिट्ठौ ॥
भरभार कीर कूरंभ कर । कमल अमल मुष उचर्यौ ॥
विधि जुद्ध रुद्ध सांइय सधन । सुगद[8] गिद्ध मिट्ठौ चर्यौ ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

दूहा ॥ रवि चक्का चक्की चरन । दिठ लग्गिय असजोई ॥

(१) मो.-लघु । (२) ए. कृ. को.-अच्छिर ।
(३) ए. कृ. को.-बिज्जूमाला छंदोई । (४) मो०--काले ।
(५) ए, कृ. को.-लालं । (६) ए. कृ. को. तह । (७) ए. कृ. को.-मु
(८) ए.-सुगंद ।

गहर करै सिद्ध तिय मन। धन रष्षै नव लोई ॥
छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ उए सेन आलमम। आय आलम सपतौ ॥
ए हिंदू आलम। आय जदु पर हहकतौ ॥
हुए उए अकुरिय। धरिय वज्जी झर झझर॥
नरे नरा वित्तरिय। हरिय अम्मन आवन घर ॥
रन राम दुजोधन भर भिरन। बालमीक व्यासह करिय ॥
हुए न होहि हिंदू तुरक। मुगति मग्ग वित्तिय धरिय ॥
छं० ॥ ११३५॥

जामराय जादव का खेत पडना।

पर्यौ षेत परि जाम। लियौ धर साहस झोलिय ॥
तह आयौ वलिभद्र। पग्ग पेलत रस होरिय ॥
असिवर ओडन झोरि। तार वज्जत निधाइय ॥
परि पथार अगवान। थान थर हीय थराइय ॥
मज्झि ढाल धरिग गोरी गरुअ। मुच्छि वहुरि जग्गिय धरिय ॥
वलिभद्र जुद्ध दिष्षौ करत। हनौ हनौ[1] अप्पन करिय ॥
छं० ॥ ११३६ ॥

पज्जूनराय के पुत्र वलिभद्र राय का धावा करना।

वलिभद्रह आगमन। पुट्टि नव आय महाभर ॥
समर सीह सेवज। लहै लज्जिय अद्ब हर ॥
सिंघ राव सापुला। रोव पूरन परिहारह ॥
पति पहार सारंग। वेन वध्धेल सुभारह ॥
देवरा राव सारंग समय। षीची हर देवह सुहर ॥
चालुक्क वीर डोडह रतन। तोंवर सागर तेगतर ॥
छं० ॥ ११३७ ॥

नौ सरदारों का वलिभद्र राय की सहायता पर उतरना।

नवै सुभट वै नुत्त। गात उत्तंग तेग गुर ॥

(१) ए कृ को हनों आप अप्पन करिय।

कुल अरह सुषद्दह । जुद्ध उद्धरिय केय धुर ॥
स्वामि ध्रम्म समरथ्थ । अथ्थ बर हथ्थ प्रचारन ॥
अगम मग्ग नन चहै । धार षग तिथ्थ सुधारन ॥
दिष्यौ सुराज प्रथिराज तिन[1]। करन अप्प[2] रिमहर कचर ॥
[3]अनु नंमि सीस असमान लगि । आय प्रचारिय तेक गर ॥
छं० ॥ ११३८ ॥

बलिभद्र के मुकाबले में जलाल जलूस का आना और दोनों का खेत में पड़ना ।

दाम ॥ समैं तिन सथ्थ बलीभद्र बीर। लगे अरि सौं असि तेग तरीर ।
सनंमुष आय जलाज जलूस । ततारह बंध जरे तन जूस ॥
छं० ॥ ११३९ ॥

रचे सथ पंच सु सथ्थिय मीर । तरक्कस नंषि कमानस तीर ॥
धरै कर षग्ग उनंगिय ताम । अगें पर पुट्ठि सुधारिय काम ॥
छं० ॥ ११४० ॥

करै असि हंकि बलीभद्र बीर । मनों मधि दंतिन गज्जि कंठीर ।
संभारिय अप्पन इष्टह संभु । तरक्कि बढ्यौ बल सायर अंभु ॥
छं० ॥ ११४१ ॥

धरी वर उज्जने उत्तर षान ॥ झनक्किय दच्छिन षग्ग षिलान ॥
मच्यो तन मार करीर असंभ । निरष्षहि आतुर उप्पर रंभ ॥
छं० ॥ ११४२ ॥

बलीभद्र हक्कि हन्यौ नृप कांन । चंपे कजि उप्पर वाह विधंन ॥
चले भर सथ्थ गहक्कि गुनब्ब । करन्नह उप्पर आतुर रब्ब ॥
छं० ॥ ११४३ ॥

तिनं बजि आवध रीठ अपार । कटक्कट लग्गिय सोर करार ॥
कटै धर सीस बिसंधह संघ । तुटै पय पानि सु जानि बिरंध ॥
छं० ॥ ११४४ ॥

(१) ए. कृ को. तन । (२) ए. कृ. को.-किरत अपरि ।
(३) ए. कृ.को. नमि सीस राज लगि गैनतर, आय प्रचारिय लेकझर ।

पलकहि सुम्भर श्रोन प्रवाह । पलम्मय सीस त्रिगुट्ट गुराह ॥
बलीभद्र पारस एक पठान । कुम्यौ अप लष्पि जमाखन ठान ॥
छं० ॥ ११४५ ॥

करेष्पि जमाल कमान करूर । हयौ तिनकै वर कुंभ उर ॥
सनमुष चष्पिय अस्रव जून । ग्रहे तन मंडिय पोनिय पून ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

नष सिष भजिय हड्डरू मस । करै धर न पिय पिंडन अस ॥
दिये तव तम्मिय ताजन षोन । भगन्निय युत्त ततारह मान ॥
छं० ॥ ११४७ ॥

हहक्किय धक्किय धामिय ताहि । परयौ दिषि बंधव लग्गिय दाह
सनमुष सारिय झारिय षग्ग । परयौ वलिभद्रह सीस अलग्ग ॥
छं० ॥ ११४८ ॥

हयौ बिन सीस असीवर झाक । परयौ सिर सथ्थह तुट्टिय साक ॥
विना सिर धष्पिय धामिय वीर । परे सय दून सुहथ्यिह मीर ॥
छं० ॥ ११४९ ॥

धरी दुअ केलि करी सु विसम । सिरप्पर न पिय देव कुसम ॥
छं० ॥ ११५० ॥

गिद्धिनी का संयोगिता प्रति संवाद वर्णन ।

कवित्त ॥ परयौ राव वलिभद्र । झंझिझ धर अग्गर साइय ॥
गय रवि मंडल भेदि । जोति हर जोति सहाइय ॥
परे मीर से तीन । परे पट सुम्भर राजह ॥
भित्त सु गावर सिंघ । लगी उर अच्छरि साजह ॥
सुभट च्यार सो राज रहि । गहकि भग्गि आलम्म भर ॥
गिद्धिनिय कहै संजोगि सुनि । धनि सु जुद्ध तुअ कंत गर ॥
छं० ॥ ११५१ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ भर जुद्ध परि । अनी वाम दिसि भंजि ॥
ता उप्पर पुंडीर गजि । हनन मीर धर सज्जि ॥
छं० ॥ ११५२ ॥

१९०

कवित्त ॥ परे विषम पथ्थार । वीर पावस गुर गज्यौ ॥
गाजी षान गहंति । वंधि सो साहिव सज्यौ ॥
उभै सहस भर मीर । सहस पुंडीर सहत्तौ ॥
विषम वीर उभ्भार । उभै लग्गै उत तत्तौ ॥
झर झार धार लग्गिय विषम । सिर धरि पत पुन पूर धर ॥
तुट्टंत असिय उड्डै अलग । मनों घन दीमिनि दपि झर ॥
छं० ॥ ११५३ ॥

गाजी खां और पावस पुंडीर का द्वन्द युद्ध । पावस का मारा जाना ।

पद्धरी ॥ लग्गे सु घाव पुंडीर मीर । जग्गयौ विषम वसरुद्र वीर ॥
कट कटी षग्ग लग्गे विरूर । आवरे वीर गाजंत सूर ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
गाजीय षान पुंडीर बोलि । उत्तंग गात गरुअत्त तोलि ॥
नयभाग संगि तोलो सुवीर । मनु सिखे सिंघ गज्जे गुहीर ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
विक्कसे नयन सिखि मुंछ मोह । भ्रकुटी सु सीस मिलि जम्म जूह ॥
उट्टिय सु वीर वंवरि दुआन । त्रिकुटीय साजि कारूर कान ॥
छं० ॥ ११५६ ॥
मुष रत्त ओन बिंवह सुनेन । जंपेय उभय भर उंच वेन ॥
होउ स्वामि अम्म रत्ते सुराह । उत्तरहि आन दुअ ईस दाह ॥
छं० ॥ ११५७ ॥
मुक्किय जु संगि उन्हे उनाह । लग्गिय सुउअर फुट्टिय पराह ॥
चल्ले सुसंग बर बीर दून । असिझ्झाक सीस तुट्टे सऊन ॥
छं० ॥ ११५८ ॥
सिर परे दून लग्गे सुबथ्थ । चंपयौ षान गाजी सुहथ्थ ॥
नष्पयो धरनि गाजी सुषान । संमुहौ सूर धायौ परान ॥
छं० ॥ ११५९ ॥
बिन सीस हंसासे तीन मीर । धर ढर्‌यौ धरनि सा सुतन धीर ॥

धनि धनि सब्द उट्ठे अधास। आकुम्म देवि देपे सुरास॥
छं० ॥ ११६० ॥

दून किये जुड चय दून वार। पछिम की सख को गिनै पार॥
हाहुलिय राय को जैत वार। सुरतान सेन को पयकार॥
छं० ॥ ११६१ ॥

चहुआन पान को रप्पवार। धर पर्यौ स्वामि कौं' पत्त फारि॥
धीरजधीर कीनी प्रमान। भावी विगत्त मन चाहुआन॥
छं० ॥ ११६२ ॥

दूहा ॥ अदिन राज परिछन मनै। जब छीजै वर सत्त॥
कै अनीति राजन करै। कै बल छंडै चित्त॥
छं० ॥ ११६३ ॥

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। मीर बज्जे बहु बज्जे॥
मनहु भाद्र पद रैन। गैन गेना घन गज्जे॥
अचल चमू चतुरंग। कुप्पि कुप्पार अपारह॥
असिनि भरनि तर अंतर। परन कर दंड सपारह॥
जै जै चवंत चव रुप्प चर। बरनि बरनि अच्छिर छरनि॥
भव भाव भवन हिम हय तजि। बसि पावस आवस धरनि॥
छं० ॥ ११६४ ॥

रावित्रार पारिवा का युद्ध समाप्त।

मोतीदाम॥ ॥ पर्यौ धर पावस राइ पुंडीर। कियौ बर कासिवर अकरीर[1]
धरुर धार सुधार अरीर। सच्यो[3] करि मावस मत्त कठीर॥
छं० ॥ ११६५

तिल्ल तिल तेगहि बट्टिनि मीर। झरै कुस मगन अंगन झीर॥
नचै धर सीस अते धर बीर। नचै धर सीस अते धर बीर॥
छं० ॥ ११६६ ॥

बजै मृदु मद्दल आनक भीर। हलज्जल सैल सरत्त तथीर॥
गजै गज बाजि बजै तम तीर। छयै रवि आरथ पारथ बीर॥
छं० ॥ ११६७ ॥

(१) ए० कृ० को—मों।　　(२) ए० कृ० को०—गरीर।
(३) ए० कृ० को—मच्यो।

परै षग लग्गत बय्यनि हीर। जरैं जनु मध्य महा भर पीर॥
टगट्टग चाहत तुंडन लीर। मिलै झलि गंग उदद्धि सुनीर॥
छं० ॥ ११६८॥

हकै हक हक्क सुकातर ईर। झुकैं झुक झुंतनि झुक्क झुंकीर॥
भकें भक रत्त लिषत्त भकीर। धुकें धुक धुक्क उभाझकि उझीर॥
छं०॥ ११६९॥

पर्यौ षन षान उषान उषीर। कटे धट धुम्महि मीर सुपीर॥
सुजद्दर हैदरषान दरीर। मुर्यौ मपिषांदस पेंड अरीर॥
छं०॥ ११७०॥

षहै षुरसानत कित्तकि तीर। झरे असु मध्य तनं धर धीर।
* * । * *॥
छं०॥ ११७१॥

दूहा॥ परिविसि निसि पत्तिन उदै। ठठुकि सेन दुअ दीन।
सहस एक आहुट्टि परि। मन न छीन तन छीन॥
छं०॥ ११७२॥

तजि सुनेह संकित सयन। थान थान गहि भीर॥
प्रात तार से दिष्षियै। जोध जोध बर वीर॥
छं०॥ ११७३॥

कवित्त। भयत भीति निसि अद्ध। मेघ डंबर दिसि छाइय॥
विषम बाय बर बज्जि। भूत बेताल चिघाइय॥
बज्जि घाय रन हक्कि। करै नारद किलकारिय॥
गिद्ध सिद्ध जोगिनी। भंक्कि[१] काली दै तीरिय॥
बर बीर भद्र नच्चै तहां। धक्कि हक्कि दैकार फटै॥
अच्छरिनि गोन गावै उमा। चित्त ऊर ढुंढै भटै॥
छं०॥ ११७४॥

बीर भद्र अरु वीर। जीति जालपा जलप्पिय॥

(१) ० कृ० को० तरी दै कारिय।

कहौ वीर वेताल। सूर सामंत कलप्पिय ॥
कहौ वीर सक्रमन। वीर सनि ज्यौं रन मंझौ ॥
को हिंदू दल आनि। ग्यान दिन एक न पंझौ ॥
आरिष्ट राह झंपै रविहि। चंद जोति चहु दिसि द्रवै ॥
ग्रह माल जोड़ बद्दै नहीं। नीर मझि रप्पै हवै ॥

छं० ॥ ११७५ ॥

द्रच्छ बंध कुव्वेर। नाम सुव्वेर सु प्रतिय ॥
तुम सह क दल कल्यौ। सूर सामंत कलप्पिय ॥
के मनु छिंदनु रूप। भूप वंवरि करि उट्टिय ॥
किम अरिष्ट आवड्ड। संगि बाना बलि फुट्टिय ॥
किम किम सु पग्ग पंजर वध्यौ। किम सुराह गह गह गहिय ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवहि। द्रच्छ राज अच्छौ कहिय ॥

छं० ॥ ११७६ ॥

कै इन्द्री बल सूर। गुरू ग्याहौ सनि तीजौ ॥
नोंम सुक्र विन सुक्र। जनम मंगल बुध बीजौ ॥
राह केत सुय रप्पि। विप्र दच्छिन हरि चिंतिय ॥
जोति चक्र जुध चन्द्र। दुष्ट दानह करि भिंतिय ॥
चय त्रिपुर जीति त्रिपुरारि हुअ। पलनि मझि रप्यौ तिनहि ॥
ग्रह ग्रहनि गठि पूजै पुहप। सुपहु जुद्दध जै ते पिनहि ॥

छं० ॥ ११७७ ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध वर्णन।

अरिल्ल ॥ वाम अनी कदल सों बीत्यौ। प्रती पद आदित्य अतीत्यौ ॥
सोम दिनह दुतिया तिथ रज्यौ। दाहिन कलह सुक दल सज्यौ।

छं० ॥ ११७८ ॥

निसा भई आकम्मि सुसेन। दल बल अप्प अप्प मिलि एन ॥
फुनि सामंत सेन बर गज्यौ। दिच्छिवध¹ चाहनह को सज्यौ ॥

छं० ॥ ११७९ ॥

(१) ए०—दिसी बध।

दूहा। अति आतुर जित्तन असुर। अरु जित्तन सुर लोक॥
प्रतिपद रवि निसि यों गई। ज्यों रस रमनी कोक॥
छं० ॥ ११८० ॥

दोनों सेनाओं का द्वितिया के प्रातःकाल का मेल ॥

भयत प्रात निसि मुदित हुअ। उदित सूर छिन मंभ॥
बीर बीर संमुह चढे। चाहुआन सुर तंभ॥
छं० ॥ ११८१ ॥

शाही व्यूह का बल वर्णन।

कवित्त॥ सेत छत्र सिंदूक। सेत चामरन सेत धज॥
सेत धजा आभरन। शुद्ध आवरन पाट गज॥
हेम मुत्ति गज झंप। दंत कलयंस कटारह॥
चवनि अंग भारहि। भनंक पायक पुंतारह॥
सुरतान अग्र षुरसान षां। षां अग्गे महह सरक॥
दुअ वाह सैन सन्नाह बनि। मनु पच्छिम उग्यौ अरक॥
छं० ॥ ११८२ ॥

राजपूत सेना का व्यूह बल वर्णन।

सेत छत्र नीताय। जैत उब्भौ दिसि बांई॥
चाव चलन चित धूअ। धूअ रष्षन चित सांई॥
दिसि दच्छिन चावंड। पाय मुक्के सिर नग्गा॥
समर सिंघ रावर नरिंद। साहि रुक्के रन अग्गा॥
सुरतान छत्र पावार परि। चतुरंगिय चंपिय सयन॥
आहत्त रत्त दुनियां विषम। देवरथ्थ बंधे गयन॥
छं० ॥ ११८३ ॥

दूहा। उन जीते जित्ते तुरक। उन भज्जे भज्जाइ॥
उररि सेन पम्मार परि। सेत छत्र नेताइ॥
छं० ॥ ११८४ ॥

कवित्त॥ तब हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट भामंड अंबरिय॥
रे जद्दव वग्गरिय। राम कूरंभ संभरिय॥

पीची राव प्रसग । सोधि पावस पुडीरह ॥
अप्प अप्प मुप छडि । आय भज्जो भर भीरह ॥
न्रप जैत राय उप्पर करन । दई दुवाह दाहर तनय ॥
तिरछौ सुतकि लग्गौ करन । मनौ अग्गि जज्जर वनह ॥
छं० ॥ ११८५ ॥

चामंड राय के मुकाबले पर गाजी खां का उतरना।

दूहा ॥ विषम सत्त्र सुरतान दल । वल प्रति वज्जो धाय ॥
जैत छत्र सित ऊपरै । तुरी वज्ज वर साय ॥
छं० । ११८६ ॥

कवित्त ॥ एक सूर सामत । दत दती उप्पारिग ॥
सिध हक्कि गय सिघ । अम्भ लगि पग्ग उपारिग ॥
सुछल सोम नदनह । रत रावत्त विरुद्धौ ॥
अति करकस जु कमध । पित्त को रहे जु सुद्धौ ॥
भर हरिग पान प धार लपि । वर विरुद्ध दाहर तनय ॥
विम्भार हस धर सिर जुरन । सुकाल किति सुर वर सुनय ॥
छं० ॥ ११८७ ॥

चामंड राय का विषम युद्ध।

रसावला ॥ मेछ हिंदू दल । हाल लग्गी दल ॥ वीरवीर वुल । सीस हक्कै चल ॥
छं० ॥ ११८८ ॥

त्रभ कौतूहल । जोग जोग गलं । पान हुल्ली पल । छत्र पत्ती चल॥
छं० ॥ ११८९ ॥

मोर मुर मलं । उड्डि लग्गी कल । काजसाई छल । दीन दोई दल॥
छं० ॥ ११९० ॥

घाय घाल वुल । दाहिदाहि मल । उंच साहीथल । मिच्छ किन्ने तल॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दोय दोय डल । मेछ हिंदू थर । एक एक गर । झारि वड्ड कर ॥
छं० ॥ ११९२ ॥

कारिजा कप्फरं। गेन लग्गा बरं। गिद्धि आला अरं। दोमि नंचे धरं

छं० ॥ ११९३ ॥

सीस हक्का करं। दंति दंत सरं। अंत आलुझ्झरं। झुम्भ सोहै परं

छं० ॥ ११९४ ॥

नाल कट्टै सरं। ढाल पील परं। केलि सापा ढरं। वीर सा बंबरं

छं० ॥ ११९५ ॥

जानु कट्टै परं। कंध बंधे भरं। ताल बज्जे हरं। सट्टि कंठे तरं।

छं० ॥ ११९६ ॥

पंच पंचं घरं। मुत्ति लद्धी नरं। राइ चामंडरं। वीर गोरी लरं ॥

छं० ॥ ११९७ ॥

मुत्ति लद्धी भरं। पंथ बेली दरं। रुद्धि नद्दी षलं। पंक पंनं पलं

छं० ॥ ११९८ ॥

साहि साहं गलं। अस्सियं झलझलं ॥ .... । ... .

छं० ॥ ११९९ ॥

कवित्त ॥ झलकि सेन सुरतान। कलकि हिंदू कर बज्जिय ॥
सार धार आकुत। बाज राजह तुटि तज्जिय ॥
स्वामि मंस है मंस। मानि संकट किय एकं ॥
लोथि हथ्थ सें पंच। नेह कीनी निजु केकं ॥
निज भृत्त निरष्षत संभरिय। राज रंजोइअ अंषरिय ॥
संग्राम धाम तुट्टिय सकल। साग सुनाई पंषरिय ॥

छं० ॥ १२०० ॥

पहकि पंति पंषिनिय। हकि मंकिनिय सुझ्झा रुअ ॥
जहकि जच्छि अच्छरिय। कहकि अच्छरीव सु हरुअ ॥
हनकि जग्गि जोगिनिय। रहकि रुधि रंग सुरत्तिय ॥
दहकि मंस जंबुकिय। हलकि सिद्धिनि असु बत्तिय ॥
धर नरन हरन हिंदुअ तुरक। अरक मरफ चामंड किय ॥
दव दिष्टि मिष्टि सारह सरस। सुकाल कित्ति कलजुग्ग जिय ॥

छं० ॥ १२०१ ॥

दूहा ॥ लगि गोरी चहुआन सों । भरे रुधिर जल पूर ॥
'बहु दल अरि तन गजि कै । तिन सधारिग सूर ॥
छं० ॥ १२०२ ॥

जैतराव का धोड़े पर सवार होना।

चढ्यौ जैत है मगि कै । थप्परि कध सुपानि ॥
दल सुमिच्छ तिल तिज कारन । करि जुहार चहुआन ॥
छं० ॥ १२०३ ॥

चामडराय की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ऐ साहस सातरह । करिय पावारह आन ॥
लष्य दलह मिलि गयौ । कियौ साहस आजान ॥
लत उलत्त पेलत । धार उद्धार पिलतह ॥
सिर तुट्टै समुहै । भिरयो कमध सिर वत्तह ॥
सिर तुट्टि सुधर सभौ भिरयौ । धर काटत सिर विप्फुरिय ॥
बिन सीस सहस अध पारि रन । इम सु केलि कासिम करिय ॥
छं० ॥ १२०४ ॥

रसावला॥पग्ग पेखे पन। साहि गोरी अन ।जैतछत्र तन । अनुसारायन ॥
छं० ॥ १२०५ ॥

मेछ भज्जै जिन । अद्ध अद्ध तन । वाह वाह घन । रुड मुड विन ॥
छं० ॥ १२०६ ॥

वेलित। लमानन । पेषि साच मन ।उक्क लग्गी वन । इप्पि थोर थन ॥
छं० ॥ १२०७ ॥

बदि बद्दे लिन । लोक खोक गन। मग्ग मग्गे सन ।जोग मग्गे जन ॥
छं० ॥ १२०८ ॥

पग्ग लग्गे छन। देव पत्तीयन ।स्वामि छुट्टे रन ।श्रोन रेन पन ॥
छं० ॥ १२०९ ॥

पिड सारे घन ।सूर भिरित यन । कांक्षि चिच किन ।बद बदाइन ॥
छं० ॥ १२१० ॥

देव बरदायन । गरुअ गोरी सन ॥..........|........॥
छं० ॥ १२११ ॥

कवित्त ॥ भिरि भारथ दाहिम्म । छुट्टि रन चीय प्रकारं ॥
मात पित्त अरु स्वामि । बाच मन क्रमा सुधारं ॥
वेद मग्ग उथ्थापि । मग्ग थप्पे धर धारं ॥
जोग मग्ग लम्भैन । कम्म नष्षै भरतारं ॥
आहत्त जुद्ध गिरि गुरिग[1] भर । भिरिग सूर सामंत नर ॥
जग षित्त षगिग दोउ दीन वर । चढ्ढि भंति वर विप्पहर ॥
छं० ॥ १२१२ ॥

दो पहर होने पर जैतराव का हरावल सम्हालना।

भर विपहर संमान । जैत रुधयौ गज गोरिय ॥
दुह दुबाह पावार । बज्रपित वज्रह जोरिय ॥
दंति अंति आघात । तंत जरि मंच समाइय[2]॥
आवल पीर ज्यों कन्ह । दंति गावहि रुकि धाइय ॥
प्रथिराज वीर उप्पर करन । सिंह समर सो रंग भर ॥
वर विषम तेज घन छांह छल । हक्कार्यौ वर वीर वर ॥
छं० ॥ १२१३ ॥

मियां मनसूर रुहिल्ला और चामंड राय का द्वंद युद्ध। दोनों का स्वर्गवासी होना।

मोतीदाम *॥ सबैं दल गज्जन वै सुरतान। हलकि गहन्न चल्यौ चहुआन।
बजावति नौवति सिंधुअ राग। देवासुर कंक मनों फिरि लागि॥
छं० ॥ १२१४ ॥

छुटे हथनारि तुवक्क जंबूर। पिवै जनु बीज गरज्जि गरूर॥
बगत्तर पष्षर टोपन थाग। बचै किमि सिप्पर उप्पर लागि॥
छं० ॥ १२१५ ॥

कबूतर ज्यों धर लोटन लोटि। परै चतुरंगिनि एकहि चोट॥

(१) ए० कृ० को० भरिग।
(२) कृ० ए० विचारिय, को० उचारिय। *यह छन्द मोतीदाम मो० प्रति में नहीं।

मचै भय भीति प्रकारिय बार। भयौ तब सभरि वार कि वार ॥
छं० ॥ १२१६ ॥

सहस्सह च्यारि गिरै असवार। नच्यौ हय दाहिम बग्ग उपारि ॥
झलमलि लोह अनी इक मेक। हयग्गय पाइल पारि अनेक ॥
छं० ॥ १२१७ ॥

बही असि कुंत सरजम दट्ठ। धरातर मस्त घर चक चट्ठ ॥
भ्रमक्कत स्रोन चले परवाह। मनो नदि पावस मास अथाह ॥
छं० ॥ १२१८ ॥

चमू असुराइन चौसठि पग्ग। दई सुत दाहर ठेलि अलग्ग ॥
जहां जह आइ पर्यौ नृप भार। तहां तह पारय हथ्थ दिषार ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गहक्कह सेन करतह चूर। दिष्यौ मफरह मियां मनसूर ॥
चवद्दह से तजि अस्व रुहिल्ल। धरै कर सिंगिनि साइक चिल्ल ॥
छं० ॥ १२२० ॥

कटि बस कंध भुजा उर थूल। सधे तस पाइक वद्द अभूल ॥
क्रमे करि साहिब दीन सलाम। गहे मन वेगम सुट्ठि विराम ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

कहैं मुष जीवन लेहु सुबद्धि। ल कापति जो हनुवत उदद्धि ।
निजै मन आगम जानि मरन्न। पवगम पागर काटि चरन ॥
छं० ॥१२२२ ॥

उपानह छंडिय चावड राइ। पवन्नह वेग जवन्नह धाइ ।
जिन पथ भारत पार उतारि। तिन हरि को उर ध्यान सुधारि ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

करे किलकार प्रकारिय संग। फुटी सुफरद्द हिये अरधंग ॥
करष्षि कमान तज्यो सर मीर। लग्यौ उर मध्य कैमासह वीर ॥
छं० ॥ १२२४ ॥

तिनें मनसूर पहु चिय आय। छल करि पिट्ठ कियौ असि घाइ ।
कटे सिर दाहिम कट्टिव पग्ग। हयौ मनसूर पर्यौ कटि भग्ग ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

दूसी कर मद्धि सुभै किरवान। जिसी सुतद्रोन कौं दी सिवदान ॥
रही षष जीव सहाव कि ओर। धकें परि सिंधुर ढाल ढंढोरि ॥
छं० ॥ १२२६ ॥

हिल्यौ पहिलें गज मारन राज। ढहावत सोव गयंदन आज ॥
गए घर कट्टुन राजन लोह। लरै इन भंति सुन्याय ससोह ॥
छं० ॥ १२२७ ॥

कमंध कियौ षपि ऊधम एम। मनौं फारसी हर अंधक जेम ॥
करें असतुति षरे दुइ दीन। रिनंमद चढ्ढि अछक सुपीन ॥
छं० ॥ १२२८ ॥

मिले रिन अंगन बीर बिताल। धुसी होइ नाचि बजावति गाल ॥
दिषे कलि कौतिग कोरि तेतीस। अपच्छर ईस कि पूरि जगीस ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

चवद्दिय तुट्टिय संषह पूरि। अपुट्टिय फौज फिरी सब सूर ॥
घनं घन जंगन के जितवार। तिनं तिन सुम्भर पारि पयार ॥
छं० ॥ १२३० ॥

संघारिय भारिय गोरिय सेन। सक्यौ नह कोइ सुगोरिय लेन ॥
करे घन उप्पर जैत पवार। दुअंतिय बार बजाइ वें सार ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

चवद्दह सें कटि षेत मसंद। पर्‌यौ धर दाहिम जंपिय चंद ॥
छं० ॥ १२३२ ॥

कवित्त ॥ च्यारि सहस असवार। मद्धि चामंड दहिग्गो ॥
चौदह सें मफरद्द। मियां मन सूर रहिग्गौ ॥
हूह हक्क किलकार। सीस तुट्टहि धर धावहि ॥
आनंदित अपछरा। आज इच्छावर पावहि ॥
चावंड राइ दाहर तनय। हर हारावलि सठ्यौ ॥
मफरद्द षान पीरोज सुअ। तेजवंत भिस्तिहि गयौ ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

जैतराय का वीरता के साथ काम आना।

पर्‌यौ जैत पांवार। छच नीचै छिति पूरिय ॥

ढाहे मीर मसद। पति पष्खि[1] परि नूरिय॥
सहस वीस इक जन्न। सकल आसुर परि सथरि॥
हड्ड मस कट्ठवमु। श्रोन गूदह तथ्थ करि॥
किलकत जुथ्थ जोगिन नची। रची रथ्थ अच्छरि वरी॥
डहकत डक्क सुर वीर हर। रजिय गनन जबुक ररी॥
छं०॥ १२३४॥

जैत के मुक़ाबले में ग्यारह हजार सेना के साथ शाह के भाजे का आना।

सजिय जूह साहाव। रौद्र बज्जी रिन संगिय॥
परे पेषि पामार। पूरि असि छच उछंगिय॥
या ताजन सा तष्प। पेलि गज जीत समो अरि॥
देषि दिष्ट प्रथिराज। कोपि तनताम थरथ्थरि॥
इक्क व अप्प उप्पर जवन। भिरन अप्प जपै अटल[2]॥
षष्यो[3] सु गज्ज राजन जुरि। ताहि सार सुबुदि पल॥
छं०॥ १२३५॥

पद्धरी॥ समरिय राम ढिल्ली नरेस। दिधाय जाति उकासिन सेस॥
विरसाल विब सम प्रात रत्त। सम ललित लाँम सुष तेज तत्त॥
छं०॥ १२३६॥

थरकत अद्दर फाकत वांह। रोमंच अंग मुक्का उछाह॥
उघरिय भ्रकुटि त्रिकुटी करार। कोपे सुसार कर दंड धार॥
छं०॥ १२३७॥

उप्पारि षग्ग उभ्भारि षग्ग। सारथ्थ हंससम सूर अग्ग॥
सूरिमा सुथ्थ हकारि हक्क। न्रिघात जेमधावत धक्क॥
छं०॥ १२३८॥

(१) ए० कृ० को०—सुष्पालि।
(२) मो०—अतुर।
(३) ए० कृ० को०—भज्यो

हय छंडि दंति गहि दंत दंपि । सिर फेरानि पि उग्गार झंपि ॥
हुअ हड्ड चूर धुर हंस गज्जि । धर नंपि छोनि ताजन्न तज्जि ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

राजन्न षान ताजंन बंध । भानेज साह साहाब संध ॥
नव सहस मीर सम आय गज्जि । आतस्स जानि आहुत्ति जज्जि ॥
छं० ॥ १२४० ॥

लग्गे सु घाव सम चाहुआन । षट पट्ट षग्ग गाजी षरान ॥
तुट्टति घाव जोसन्न होय । हल हूर सिलाह होयं विभाय ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

आसन्न युद्ध लग्गो अपार । तुट्टंत सुधर झार मुझझि यार ॥
उड्डंत ओन तन उड्ड अत्ति । दव लग्गि जानि आयोस भत्ति ॥
छं० । १२४२ ॥

देखियन जुद्ध दावन दनेव । नच्चंत नचि नारद्द भेव ॥
राजन्न लग्गि राजन्न मुष्ष । चहुआन रज्जु संगी सुवष्ष ॥
छं० ॥ १२४३ ॥

धर धार धरनि राजं न झारि । दल भग्गि फारि मनु फुट्ठि पारि
फिरि आय राज उप्परि पवार । अरि जित्ति राइ बुल्ले विचार ॥
छं० ॥ १२४४ ॥

जैतराव की मृत्यु पर पृथ्वीराज का दुःख करना ।

दूहा ॥ पर्‍यौ राव जैतह सु रन । पति अग्गू घन घाय ॥
सूर राय सोमेस सुत । करिय अप्प सिर छाय ॥
छं० ॥ १२४५ ॥

कुंडलिया ॥ हम दिय छत्र गुछांह कौं । तुम लिय छत्र मरन्न ॥
हम दुर्जोधन जोधमय । तुम कलि करन करंन ॥
तुम कलि करन करन्न । हंकि उठि सिंध सिंघ पर ॥
झार उझारि झंझोरि । तोरि गहि दंति दंत धर ॥
गौ वच्छां प्रति मोह । दोह लग्गौ सुदाह कह ॥
कहै राज प्रथिराज । छत्र हम दियौ छांह कह ॥
छं० ॥ १२४६ ॥

दूहा ॥ राजन चर छोरु करि। जैत प्रसन्न काज ॥
दिल्ली धर अग्गर इहै। जुझ्झ पर्यौ धर आज ॥
छं० ॥ १२४७ ॥

गवरि हार उच्चिग अवनि। पुच्छिय दच्छ प्रबंध ॥
समर सुपन सुपन सि समर। आपु सुनै कविचंद ॥
छं० ॥ १२४८ ॥

खीचीं प्रसंग राय का युद्ध के लिये अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हस्ति पीत पष्पर्यौ। पीत चावर गज गाहिय ॥
पीत टोप टट्टरिय। लोह हय चप्प सनाहिय ॥
सारि सिलह प्रज्जरिय। पीत बानावलि सोभित ॥
राज राव परसंग। पिक्ति झुझ्झ परिया भति ॥
तनसार धार घटि भार घट। अवर लष्ष बर पंच सै ॥
अनभंग बीर आइय न्रपति। सौस नवाइय सत्त सै ॥
छं० ॥ १२४९ ॥

शाही सेना के राजा के ऊपर आक्रमण करने पर प्रसंग राय का युद्ध करना और मारा जाना।

गीतामालची ॥ बिटयौ मीर राज धीर अस्स हीर असिसय।
गज्जे सनूर सूर सूर सा करूर कस्सिय ॥
उंचे सुगात सुष्प रात तेग तात रोसए ॥
माते मसंद असि वंद सा गिरंद गोसए ॥
छं० ॥१२५० ॥

बिटयौ राज मीर गाज सब्ब साज संकुल ॥
चौ अगति सैन गज्जिगेन अप्प तेन उज्जल ॥
वज्जे सुवाज सिंग राज, जेर नाज जंगय।
जरियो गोरी झल्ल पोरी जुद्ध रोरीं रंगय ॥
छं० ॥ १०५१ ॥

गज्जौ सुम्रानं चाहुआनं रन्न ढानं रज्ज ए।
संभरी मीरं अप्प मीरं संगु हीरं गज्ज ए॥
हक्के मसंदं लेहु बंधं राज सद्दं संक्रमे।
देषे प्रसंगं सूर अंगं जुद्ध अंगं उम्म्रमे॥

छं० ॥ १२५२ ॥

गज्जं सुराहं गज्ज गाहं रघै ढाहं रज्जए।
बाहंत मीरं बंधि तीरं नेह भीरं जे जए॥
लग्गे करारे अनी धारे पित्त पारे पग्गए।
बाजंत तारं षग्ग थारं जोह मारं जग्गए॥

छं०॥ १२५३ ॥

ओनं प्रवाहं पूर पाहं राह राहं रत्तए।
मारंन षानं मीर मानं राजधानं धत्त ए॥
देषे प्रसंगं संसु षग्गं आय अंगं अंग ए।
बाजे विहारं हार मारं रोहि आरं रिंगए॥

छं० ॥ १२५४ ॥

सेलं प्रहारं अग्गि भारं सार सारं बज्ज ए।
झाक झरक्के धक्क धक्के दोय हक्के गज्ज ए॥
प्रस्संग राजं बीर गाजं मीर साजं दुट्ठए।
मल्हे प्रहारं तीन तारं झार झारं बुट्ठए॥

छं० ॥ १२५५ ॥

चय बीर जुट्टे दुट्ठ दुट्ठे मिले रुट्ठे मत्तए।
वे हथ्थ षंडं हथ्थ थंडं तुट्टि रुंडं गत्तए॥

छं० ॥ १२५६ ॥

दूहा ॥ दुने मीर षीची प्रसंग। सानि अनो अनमंस।
बाज षड्ड समुष्गि न परै। भयौ कीच पल अंस॥

छं० ॥ १२५७ ॥

कवित्त ॥ परयौ राव परसंग । पग्ग पीची पति पुत्तौ ॥
पोर मोर गजगाह । भार पारथ ज्यौं जुत्तौ ॥
से हथ्थे से हथ्थ । गेन गंध्रव किय गानह ॥
वरन इच्छ धरमिच्छ । द्रोह श्रोनह किय पानह ॥
संभिरय राव संभरि धरा । सघन घाय संमुह लरिय ॥
जिम जिम सुजुम्भिक्क धरनि परिय । तिम तिम इद्रासन टरिय ॥
छं० ॥ १२५८ ॥

बग्गरीराय की वीरता और उसका पाच मुसलमान सरदारों को मार कर मरना ।

मोतीदाम । पर्यो रन पीचिय राव प्रसंग । तिलत्तिल वीर सुबट्टिय अंग ॥
धुसी भय मेछ गहक्किय ठान । कूमे फिरि कुंडलि राजन थान ॥
छं० ॥१२५९ ॥

धन घन पष्पर पारस भीर । ढनक्किय घंट रनक्किय तीर ।
हन हन सद्द सुवज्जिय हाक । धरद्धर वज्जिय[२] पग्गनि धाक ॥
छं० ॥१२६०॥

चमक्कहि पग्गरि मत्तिरि राज । मनो घन मज्झि सु वीज विराजि ॥
फडप्फहि फेफ तडप्फहि मोर । [३]नचै तिन नद्द सुनद्दिय वीर ॥
छं० ॥१२६१ ॥

पलक्कहि पोनिय श्रोन[४] सपूर । वरै वर अच्छरि सुच्छरि सूर ॥
प्रबोधहि जोधहि गोरिय अप्प । करै प्रयुसिध समावरि घप्प ॥
छं० ॥ १२६२॥

गहक्किय गज्जि मसद्दह राज । चले गुरु हक्कि गहक्किअ गाज ॥
नयो सिर साइ सुबग्गरि वीर । मिल्यौ मनु कुंजर मज्झि कठीर
छं० ॥ १२६३ ॥

नच्यो हय मज्झि सु ताजिय तार । जप्यौ मुष रुच्चित उच्चित मार

(१) ए० कृ को०—पुत्तौ ।
(२) मो०—गज्जिय ।　(३) मो०—नचै तिन सद्दह मद्दह वीर ।
(४) मो०—श्रोनाहि ।

हुए चव मीर मसंद सुढाह । पर्यौ हय षेत सुघाय अघाह ॥
छं० ॥ १२६४ ॥

लयौ हयराज सुमार मसंद । दयो तब बग्गरि राय सुविंद ॥
चढ़े हय नंषिय राज प्रसंग । चढ्यौ हय ताम हुओ हय अंग ।
छं० ॥ १२६५ ॥

हयौ फुनि राज हए अरि बाज । चढे सोइ भंजिय बग्गुरि गाज ॥
हयौ फिर राज सु बाजह देव । कढे हय दस्स अनो अनि एव ॥
छं० ॥ १२६६॥

टर्यो रनि बग्गरि घाय अघाय । हुए दह पंच मसंद सुराइ ॥
.... ॥
छं० ॥ १२६७ ॥

कवित्त । पर्यो स्रुक्षिक्ष बग्गरिय । वरुन भग्गरिय सुरंगिय ॥
सुरहलोक शिवलोक । लोक जारथ्थ कुरंगिय ॥
बालप्पन जोवनह । वडे वडपनह वड़ाइय ॥
समर राज प्रथिराज । बाज दस बेर चढाइय ॥
दिव दिवसु देव जैजै करहि । पुह पंजरि अच्छै धरनि ॥
तजि लोक लोक लोकन[1] सघन । वर्यौ देव मंडलि तरनि ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

शाही सेना का पृथ्वीराज को घेरना । सिंह प्रमार का आड़े आकर १५ झुंड सरदारों को मार कर आप मरना ।

भुजंगी॥ पर्यौ बग्गरी देषि गोरी नरिंदं। भयौ राह रूपं ग्रस्यौ जानि इंदं
कहैं सब्ब मीरं समं सद्द नंषे[2] । चितं आतपं जानि ग्रीषम्म धंषे ॥
छं० ॥ १२६९ ॥

धरे लेहु लेहू सबै हिंदु राजं । चले चाल बंधे गुरं मीर गाजं ॥
परे पारसं कुंडली चाहुआनं । मिले मीर हक्कें ढुके राज थानं ॥
छं० ॥ १२७० ॥

(१) ए० कृ० को० लोकत ।
(२) ए० कृ० को० तंषे ।

गजै नद्द गीसान भेरी भयद्द । रन्न तूर पूर नदे सिंघ नद्द ॥
गज बिटय राज मद्द सुमत्त । ठनक्के घन घूघर घटयत ॥
छं० ॥ १२७१ ॥

घनक्के पित पष्षर षान पानं । फिर ढाल ढाल पताक परानं ॥
झलक्कै सबे धीर बानैंत बान । इन छन्न सद्द बुल चाहुआन ॥
छं० ॥ १२७२ ॥

चमक्के चमक्क सनाह सनाह । किलकार धक्कार धकार ग्राह ॥
गहे हथ्थ हथ्थ कमान कमान । धरे नेज षग्ग उचक्के उपान ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

वचे दीन दीन सुरन मसद्द । झलक्कै मुषें मीर तेज सुद्द ॥
दिपे मीर राजे गिरद्दे गहक्के । कढे चाहुआन कृपान सुहक्के ॥
छं० ॥ १२७४ ॥

दिषे राज पामार सिंघ समुष्षं । नयौसाइ सीस फिर्यो रिस रुष्ष ॥
हनूमंत इष्ट जपै जाप ताम । क्रम्यौ सिंघ जेम गजेंदति दाम ॥
छं० ॥ १२७५ ॥

मिल्यो धाय गज्जे गजे मीर जूहं । घटं धीर षडे कल मचि कूह ॥
हने सिंघ षग्ग गुर गज्जि गज्जं । हने सुंडि दंत पय कंध भज्ज ॥
छं० ॥ १२७६ ॥

धनक्के धरा नाग नाग सभाग । भजै केवि चिक्कार छडे बिभाग ॥
धकै बीर पामार रूप बिरूर । ढरै मीर सीस धरन्नी करूर ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

भ्रमै आवध भूर सामुष्प मुष्प । यल अबुज पूरि सा सीस रुष्प ॥
कर अग्ग कट्टै तिन बाहु तुट्टै । मुष अग्गहे धरा नाम लुट्टै ॥
छं० ॥ १२७८ ॥

द्रिग मंडि देषै सिर तुट्टि तेषै । हय मस मीर कटे सानि सेषै ॥
भरक्केस भज्जे सवाज्जे सुमीर । करी मझ्झ पामार गज्जो कठीर ॥
छं० ॥ १२७९ ॥

फिरै कुंडली तेक तार[1] करोर । फिरै मीर जे ममनों दड धार ॥

(१) ए० कृ० को०—त कतार ।

सुषै द्रिग्ग पामार सा। मुक्कि थामं। मनो प्रातमीरं ढकै मैनं तामं

छं० ॥ १२८० ॥

गजं बाज तुट्टै असी सिंघ सेसं। पलक्कै सुधोनं परे षंड वेसं।
भरक्कै विभज्जौ द्रिगं जेय सथ्थे। रुवं भान मध्यान ग्रीषम्म रथ्थे

छं० ॥ १२८१ ॥

जबै देषियं सोह भाअंत सेनं। जपे तात मातं विरूरं सुवेनं
तबै षान राजन्न ताजन्न सेरं। असी षान आकूब षोरंन फेरं।

छं० ॥ १२८२ ॥

अली मीर रोसंन दोसंन दाहं। अलीषान आसन्नि अलीषां उमा
दहं पंच साहाव सापास वानं। वरं तेक सूरं समं प्रान थान

छं० ॥ १२८३ ॥

विषल्ली जवे सिंघ साहाव सेनं। करे हक्क कग्गो दहं पंच तेन
सयं आप सिंघ समं जुद्ध लग्गो। सहा सार आवद्ध आवद्ध जग

छं० ॥ १२८४ ॥

दहं पंच मीरं पवें सिंह हथ्थें। सय सेन धायं अधायं सम

छं० ॥ १२८५ ॥

महावीर ज्यों भूत सेनं सुनं चौ।सकै[३] क्षोनि नाही धरं ढाहि रं
तबै पेलयौ गज्ज गोरी सहावं। हयौ षग्ग पामार भासुंड तावं।

छं० ॥ १२८६ ॥

कटे सुंड दंतं समं जार धारं। फिर्यौ गज्ज भग्गौ विरग्गौ विर।
धुक्यो धाय अद्धाय सा सिंघ सारं। सिरं देव सुम्मन्न नंषे अपार

छं० ॥ १२८७ ॥

ढर्यौ अप्प सुभ्भाय तब्बे परन्नं। सुतं निरभयं निरभयं अप्प म
पर्यो सिंघ पामर सामार बच्चौ। षलं षेत ज्यों भूत भैरूं सुन

छं० ॥ १२८८ ॥

पुलै देषि सिंधं भभक्कं सुमीरं। रहे वान मानं फिरै फौज तो

(१) ए० कृ० को० नेनं।
(२) ए० कृ० को० मार।
स(३) मो० - समो क्षोनियं नाहि धर ढार

ढुर यौ सिघ ज्यो सिघ छोनी सुषेतं। गहक सुमीर रजेही रहेत॥
छं० ॥१२८९॥

कवित्त। परत सिघ आचिज्ज। विरद साईं भुज पंजर॥
सुनहिन कह्यौ जीह। नतरु रष्यौ मुष मंजर॥
ते कतार कुंडलिय। राम मंडली उल्लसिय॥
दल दल मुष मुष चंद। इंद वर सरवर फुल्लिय।
घनघाय अघाय निघाय अरि। सत सुभाय परतग करि॥
दल होत जोन जोतिहि तिनहि। मिलत सूर दिष्यौ सुहरि॥
छं० ॥ १२९०॥

शाही सेना का और जोर पकडना और लोहाना का अग्रसर होकर लोह लेना।

उत्तम सद्द सत्त। इत्त सामंत अट्ठ परि॥
धरिय वीह दिन वित्त। वहिय सलिता ओनह भर॥
उभै ईस छत्र विभर। विरस हालाहल विंतौ॥
थके अंग समेत। करत जुद्धह तन रित्तौ॥
दिष्यौ सु राजन सीस पर। करत युद्ध हक्कत सुभर॥
मोनहिय मीर मीरह समन। गहन राज दोरे दुआर॥
छं० ॥१२९१॥

दूहा। आवत अमीर अभीर दै। विन है गहन सुराज॥
देषि लोहानौ दौरिपरि। नहि असिवर गुर गाज॥
छं० ॥ १२९२॥

लोहाना का खंड खंड होते हुए भी अतुल पराक्रम कर के अपने मारने वाले को मारकर मरना।

भुजंगी॥ तबै गज्जिय बीर आजानबाह। मिल्यौ मीर अड्डौ सुर जुद्धराह॥
असी वक्र उभ्भारि गज्जे निहंग। लई अस काजै रजं कज्जि जंग
छं० ॥ १२९३ ॥

लगै मीर सो धीर जुद्ध जुधार। तबे आय अड्डे भर साठि सार॥

तिनै जुद्ध अनभूत मत्तौ अपारं। तिनं तेग बज्जे अरुझ्झे करारं॥
छं० ॥ १२९४ ॥

तबे संभरे दुष्ट आजान बाहं। मुषं उच्चर्यौ बीर मंचं विवाहं॥
तिनं छाक धाकं सुबज्जी विरूरं। मच्यौ जुद्ध आनुद्ध जूरं करूरं॥
छं० ॥ १२९५ ॥

सिरं तेक तुट्टे न उड्डंत दीसं। बिना पंष पंषी परे नभ्भ सीसं॥
कटे मुष्ष बाहं लषे उद्ध जानं। मनो आननं पंच चीलं चिरानं।
छं० ॥ १२९६ ॥

दियौ तार तारी चवट्टी अनंदी। दिषै बीर कौतिग्ग सारंग मंदी।
झरं झार उझ्झार लाहं लुहानौ। किअं लत्त आलत प्राहार प्रानं
छं० ॥ १२९७ ॥

परे मीर बीसं उभै अग्गिवानं। तबै आयसं मंत तेगं उभानं॥
दिषै मोन दीनं जये दीनं रहं। समं राज दौरै गजे मेघ भद्दं॥
छं० ॥ १२९८ ॥

तिनं उंच गातं बरं उंच हाथं। अंग अंग तुट्टै तिन लात धा
तबै आइयं अद्ध आजान बाहं। तिनं जुद्ध लग्यौ करूरं कराहं।
छं० ॥ १२९९ ॥

मिले लोह लोहान सम्मान मीरं। उभै सूर साअग्गा गज्जे गहीरं॥
उभै तेक उतंग उम्भारि भारं। मिले बीर तत्ते उभै नेकतारं॥
छं० ॥ १३०० ॥

हयौ झाक तेकं सुउन्नै उनाही। उभै सीस तुट्टे परे भूमि थाहं
लग्गे बथ्थ हथ्थं बलं दून सकं। हयौ मीर कट्टारि लोहान धक्क
छं० ॥ १३०१ ॥

पर्यौ मीर संमन्न भूमी भयानं। चढे देव कौतिग्ग देषंन जानं॥
तबै आय तेकं हयौ मोन दीनं। कटी मध्य तुट्टी दुअं भाग कीनं
छं० ॥ १३०२ ॥

धर्यौ अद्ध भागं धरन्नी सुएसं। उधं भाग कंठं लग्यौ काल भेसं
हयौ मोनदी ताम कट्टारि जूरं। धरा ताम नच्यौ महामेर्छ गूर
छं० ॥ १३०३ ॥

परयौ जाम लोहान पड धरन्नी। जय सद्द भासत सेना परनी॥
*　　*　　*　　*　　छ० ॥ १३०४ ॥

कवित्त। परयौ हाथ आजान। बाह चयपड धरन्नी॥
जै जै जै जंपत। मुष्प सब सेन परन्नी॥
धनि धनि जपि सुरेस। सु धुनि नारद उचार॥
करिग देव सव कित्ति। वुट्ठि नभ पुहुप अपार।
कौतिग्ग सूर थक्यौ सुरह। भइय टगट्टग भुअ भरनि।
आसस करैं अच्छरि सयल। गयो भेदि मंडल तरनि॥
छ० ॥ १३०५ ॥

लोहाना के बाद कमधुज्ज राजा का धावा करना।

स्वामि चढ्ढु निज अंत। जानि कोप्यो कमधज्ज॥
पग्ग आरुहि वर देह। आनि कुल अप्पन लज्ज।
परे सु धन सामंत। अग्ग देषे सुरतान।
सजे हयग्गय सूर। वीर वर वीर कमानं॥
जुध कारत राज दिष्यो दुहर[1]। अप्प मच भैरव जप्यौ॥
उभ्भारि पग्ग ओडन उकसि। करि किलक समुह धप्यौ॥
छ० ॥ १३०६ ॥

आरज्ज सिंह का पराक्रम और एक मुसल्मान सरदार का उसे पीछे से आकर मारना।

भुजंगी॥ किलक्कार हक्कार कम्यौ कमद्ध। सथ भैरव आय सौमच वद्ध॥
चली जोगिनी सथ्थ सद्दं भयान। चढे आयस सद्द देपंत जान॥
छ० ॥ १३०७ ॥

भर आरज रूप देष्यौ अनूप। किते नेन ढक्के किते जुद्ध जूप॥
अरी जुद्ध मध्यं कम्यौ पग्ग धार। गजे सिंध आवद्द वाहै अपार॥
छ० ॥ १३०८ ॥

विय पड वाजी नर तेक तुट्टे। तर जानि कट्ठारिया कूट कुट्टे॥
॥ निज पान पडे करे विन्नि पड। भजै गज्ज चिक्कार फुट्टै भसुंड॥
छ० ॥ १३०९ ॥

(१) ए० कृ० को०—सुहर।

असीतार नचंत बीरं विधाई। नचै जोगिनी श्रोनधुटै अघ
सहस्सं च पंच पंचं मधे सहि दिथ्यौ।चल्यो तथ्थ मग्गं जुद्ध तंजु
छं० ॥ १३१० ॥

जबें आय अड्डे सतं मीर एकं।मिल्यौ मझि जुद्धं तिनं तंमि
करे लाघवं षग्ग वाहंत बेगं।सरं केवि तुट्टै धरं केवि रेगं
छं० ॥ १३११ ॥

परे मीर षंड विहंडं धरन्नी। टगं टग्ग लग्गी जुधं ओय र
सिरं तेग तुटंति उड्डंति दीसें। झरे बाय मानो फलं ताल
छं० ॥ १३१२ ॥

परे पग्ग आयास तुटटी धरन्नी। मनो अच्छरी मालनंषै व
परे षोल उड्डे जनची जुवासं। परे मानु जोतिष्य विृक्षं अ
छं० ॥ १३१३ ॥

पलं कीच मच्यौ धरं श्रोन धारं। करै भैरवं मद्द मत्तौ फिका
परे बीस अग्गं दहं पंच मीरं। बिए निक्करे षेत नट्टे सभीरं
छं० ॥ १३१४ ॥

पर्यौ दिट्ठ आरज्ज साहाब सग्गं। मध्ये पंच साहस्स मीरं दु
चल्यौ मार मारं जपे जीह तामं। भजै आसुरं सेन देषे दु
छं० ॥ १३१५ ॥

षंच्यौ साहि बाजीसनं मुष्ष अप्पं। करीआरजं सिंध जेगं सु
करं जच जभार षंडौ करूरं। भरक्कंत सेना करै ऋूर ऋूरं।
छं० ॥१३१६ ॥

दिष्यौ साह संमीप सारूप षानं। चपै अश्व आयौ चपी अस्स
तुनें आय पुट्ठी हए असि तामांवरं सीस तुट्यौ फिर्यौ भूमि
पर्यौ।
छं० ॥ १३१७ ॥

तबै आय साहाब संमीप मन्ने। बिना सीस धायौ करे षग्ग उ
...ायं हयं कंध तुथ्यौ।हयं जुत्त साहाब साभूमि लु
धर्यौ अद्ध भ।
छं० ॥ १३१८ ॥

गिर्‌यौ भूमि आरज्ज सारज्ज छूर । कुसम सुनर्य सिर देय भून ॥
छं० ॥ १३१९ ॥

सोमवार के युद्ध का विश्राम।

दूहा ॥ मिले पान पट्टान सब। ग्रहे पंचि लिय साहि ॥
भयौ श्रम्म विश्रम्म जुध । धनि धनि जपिय ताहि ॥
छं० ॥ १३२० ॥

योगनी और वेतालों का शिव के समुख युद्ध की प्रशसा करना।

कवित्त ॥ नह देवासुर जुद्ध । चद तारका न होई ॥
नह पारथ भारथ समान । राम रावन जुध जोई ॥
नह सुचि पुर त्रिपुरारि । देव दानव नन मानव ॥
समर सिंध नारद²नरिंद । सतु कहै जुध जानव ॥
चामंड राइ बर जैतसी । समर सिंध राजन्न बलि ॥
संग्राम जिम्म³ भारथ्थ जिन । ⁴अमर मद्दा वलवेर दुलि ॥
छं० ॥ १३२१ ॥

दूहा ॥ हथ्थ एक एकह विहथ । विहथ एक टूक षंड ॥
दल राजन समुझि न परी । वाज राज चामंड ॥
छं० ॥१३२२ ॥
तब कूकस वज्जिग दसन । जसन जेम चितिनार ॥
कलह सुप्रिय मनमथ मथन । सुनि गवरिय⁵ उर हार ॥
छं० ॥ १३२३ ॥

यक्ष का वीरो के शीस ले जाकर शिवजी को देना और मृत वीरों का पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ दच्छ सीस लै पंच । ईस अग्ग सुसपन्नौ ॥
समर सिंघ चामंड । जैत जद्दव बल दिन्नौ ॥
ओर वित्त मारथ्थ । सेन षुट्टी सुलतानी ॥

(१) ए० कृ० को०—जै। (२) ए० कृ० को० रावल। (३) ए० कृ० को० सिम्म।
(४) ए० कृ० को०-अमरहा वर तेज दुल्हि। (५) मो० गरिय।

है हुबाह दुअ जुद्ध । जास बोली सुर बानी ।
दिन अथ्थित निसि वर उदित । सर भग्गी दिव दीन सौ[1] ॥
सामंत सत्त पेतह परिग । एक समर रावर उभौ ॥
छं० ॥ १३२४ ॥

अद्ध रयनि अंतरिय । जुद्ध वतरिय संपत्तिय ॥
अट्ठ अट्ठ जोगिनिय । अट्ठ बेताल विछन्तिय[2] ॥
आलंधर संमुपिय । ईस अग्गें इह कथ्थिय ॥
भिरि जिते हिंदुअ तुरक्क । भारथ्थ जो वित्तिय ॥

पावंड राय की तारीफ ।

पावंड राइ सिर समर सिर । सिर जद्दव कूरंम बलि ॥
पांवार सीस पंचौ पवित । रुद्र माल गंठिय सुगलि ॥
छं० ॥ १३२५ ॥

महन सीह बलार । नाम जानौ रोहिल्लौ ॥
दल सोसन सुरतान । अग्ग अग्गों सु इकल्लौ ॥
ताइय धर झल्लरिय । सार हिंदू सर वुट्ठै ॥
पग पच्छा न फिरंत । पग्ग फेरे मुख उट्ठै ॥
षग भार मान तेतीसनौ । रुहिर भषै झल्लोरियौ ॥
कट्टिय कुलाह[3] कलहंत रह । ढकी ढाल ढंढोरियौ ॥
छं० ॥ १३२६ ॥

मारू महनंग राय की तारीफ ।

मारु रा महनंग । धक्कि नीसान दियंदे ॥
बर कंबर बंगाल । तरसि तोप्पर चढं दे ॥
समर सिंघ रावर सभीर । बीर पावस रा अग्गी ॥
सारप्पर षरप्परहि । तेग तेरह से भग्गी ॥
कचरत्त षान ततार सों । वर बिचाल बोल्यौ समुष ॥
सुहि मरद जानि मिलि मरद हौ । हौं सुहिंदु तुअ मेछ रुष ॥
छं० ॥ १३२७ ॥

(१) मो०--सौ, मौ । (२) ए० कृ० को०--विवथ्थियय ।
(३) ए० कृ० को०--कहार ।

परत पान ततार । परत मारू रा भग्गन ॥
हय कधह दिय पाइ । उतरि वियक्कन सुमग्गन ॥
उच गात उरहाथ । तेग लबी उब्भारिय ॥
धात पभ त्रिघधात । जानि भल्लरि भल्लारिय ॥
वर करिय तुट्टि फुट्टिय सुसिद । रुहिर धार समुह ढरिय ॥
सोभियहि सुभट हिन्दू तुरक । जस जोगिनि जै जै करिय ॥
छं० ॥ १३२८ ॥

नाहर राय परिहार की तारीफ ।

इत नव सहस नरेस । उत्त पधार ततारह ॥
इत गोरिय कुल सवल । उत्त नाहर परिहारह ॥
दुवै सेनपति सूर । पूर हंकार हवाइय ॥
इत संभरिय सहाय । उत्त पुरसान सहाइय ॥
मद मोप छुट्टि जुट्टिय विसर । दुब्भर[१] तेग लगिय सुभर ॥
श्रौ उदर वृत्त लज्जिय सुभर । दुहु नरिंद फुट्टिय जुसिर[२] ॥
छं० ॥ १३२९ ॥

जिहि मुप क्रूर कपूर । सुवर तंबोल प्रकासिय ॥
जिहि मुप मृग मद वद । सुद्ध किसना गिर वासिय ॥
जिहि मुप रम्यह रम्य । अधर रसधरनि पराइन ॥
जिहि मुप हरिहर भजन । मुक्ति लब्भय पाराइन ॥
सो मुप्प परपि परिहार पर । पग ततार समुह मिलिय ॥
सोइ साम काज हिन्दू तुरक । सो मुप षंड विहंड किय ॥
छं० ॥ १३३० ॥

यक्ष का रावल समरसिंहजी की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सिल सदेह समुच्चरिय । कथ कुबेर सुबेर ॥
दिसि दस राय दलत रहि ॥ समर समप्पन वेर ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

(१) मो०-दुतर । (२) को०-सुमिर

कवित्त । दिपित राव दिल्लेस । देप मंगल पुर बासिय ॥
समर सिंघ रावर रव । अग्गे ग्रह गासिय ॥
मंच जंच तंचह छलंग । छित छैल बल जग्यौ ॥
भिरन तेक गोरिय ततार । गज्जवि गल लग्यौ ॥
महि महन सीह उप्पर करन । हरन हार सिर मुक्कयौ ॥
स्वाचग्ग बीर हथ्थह सुहथ । धरनिधार धर धुक्कयौ ॥
छं० ॥ १३३२ ॥

परत ताहि परतष्षि । बीर अहव असु लिन्नौ ॥
ओति जगत उच्छरिय । महन सीह दिट्ठ दिन्नौ ॥
कलि कलाप रंधरिय । राय बंसं छल बुट्टौ ॥
तन तिल तिल व्है मत्त । मरन जीवन पहि छुट्टौ ॥
सामंत राय सिर सिंघलय । कच्छु सुबार बीरह बहिय ॥
सित कंत तंत तिहि बार तब । विवरि विवरि अप्पह कहिय॥
छं० ॥ १३३३ ॥

दूहा ॥ सुविधि ऐक हम कुल कलिय । कै सुनि दक्षन कान ॥
गुरजन गुर बंचत रहै । अमी पयंपि पुरान ॥
छं० ॥ १३३४ ॥

कवित्त ॥ एव देव सन्यास । सुगंध तारुनि व्रमचारिय ।
इन्द्रिय दल दलमलिय । पुरुष पर चरन न नारिय ॥
एक सचल छंचिय संध्रम्म । ध्रमंत सवामि सुभ ॥
गुन गै ग्रह ग्रह धंनि । बीर बहिय सुबाद उभ ॥
मंडलिय मरद मेवार पहु । मिलि प्रधान पुच्छिय प्रसन ॥
रिषि कहिय सहिय संभ्रित सकल । सुविधि वेद बंचिय[1] सु सुन ॥
छं० ॥ १३३५ ॥

दूहा ॥ तुम वय उद्दिम मोर मन । उन रस सरस न दिट्ठ ॥
इस दस रंध बिरंध काय । सुनहु सुनावन इट्ठ ॥
छं० ॥१३३६॥

(१) मो० वंचिय ।

कवित्त ॥ बीर मच्च बावरिग । राय दिष्षत देवग्गिरि ॥
समर सिंह रावल रवह । भिरनह बाहू बरि ॥
ते उधान मडल नरिंद । छत्र ग छत्र धर ॥
सन्य ससी उद्दय गलग्ग । पूजिग गवरी वर ॥
सिर सिरह दीन सुरपति सुपति । विपति वीर गवरिय दलह ॥
तत्तार षान सुरतान छल । विषम वीर कंदल करह ॥
छं० ॥ १३३७ ॥

अन्यान्य मृत सरदारों के नाम और उनका पराक्रम ।

तव सुरत हिंदुअ नरिंद । सुह किय मह न सिय ॥
पारिहार परतष्षि । इष्षि मडलह न ह सिय ॥
जुरि जुआन सारग । अ ग ठेलिय दल गोरिय ॥
उह समेछ सम सूर । रहत हिंदुअ वर जोरिय ॥
प्रिथ प्रथम राव षीची पिज्यौ । षिग षिन षिन सारह झरिय ॥
अरू अ त दत दतीय तन । सुपति राव पुनर परिय ॥
छं० ॥ १३३८ ॥

दूहा ॥ घट अ सिय निसि घट घरिय । भरिय सुभूमि भयान ॥
पलचर षरवर विधु विनह । सुरत भूमि सुलतान ॥
छं० ॥ १३३९ ॥

एक सूर साम त घट[1] । सह परिगह घट दून ॥
चिटि राज प्रथिराज कौ । फिरि पारस दिसि सून ॥
छं० ॥ १३४० ॥

कवित्त ॥ छक्कै सार नरिंद । पग्ग पारस दल सक्किय ॥
वर आतुर पतिसार । सैन चावद्दिसि मक्किय ॥
सवै सथ्थ प्रथिराज । रष्षि साईं दल ढुक्किय ॥
पग्ग मग्ग बोहिथ्थ । बीर अवसान न चुक्किय ॥
लोपत लोह गोरी सुभर । पति अड्डो पति मेर भौ ॥
तन लग्गि धार धारह धनी । पर्यौ बीर सिर भग भौ ॥
छं० ॥१३४१॥

(१) ए क को सत ।

सारंगराय के मारे जाने पर परिहार वीरों का पराक्रम करना।

परत भोमि सारंग। गुरज बज्जिय सिर गोरिय॥
बज्ज बीर कर वज्ज। बज्ज अग्गे वर जोरिय॥
सस्त्र घात आघात। कट्टि कुट्टर ग्रहि तारं॥
पल्लै पति तब बिंठि। मेछ लगि असिवर झारं॥
परिहार परिग्गह सामि सम। फेरि राज पारस परिय॥
चहुआन बीर संमुह असुर। गह गह गोरी उच्चरिय॥

छं० ॥ १३४२ ॥

सुनि गह गह सुबिहान। भाव भर मान रष्षि रथ॥
चरन अचल चल हथ्थ। चित निहि निह निहचल कथ॥
सस्त्र तेज जम जुत्त। दंत कट्टै मतवा रुन॥
दोउ अस्तुति उच्चार। पुहय नंषै सुरताउनि॥
पितभार अग्ग जल सामि कौ। धार असीधर धार बर॥
बुड्यौ विंब पामार भर। प्रकृति बुझै नन अप्प कर॥

छं० ॥ १३४३ ॥

परत षेत पामार पान। बर धार धार चढि॥
बर द्रौपति जिम चीर। सत्त वेली सुरंग बढि॥
बर गौरी बै सेन। प्रंच क्रम मग्ग चलावै॥
परि पावस चहुआन। फिरत छिन मग्ग छुड़ावै॥
साध्रम्म मग्ग जिहि बंधयो। सो धार धार होय उत्तरिय॥
चंपयौ फेरि गोरी गरुअ। फेरि राज पारस परिय॥

छं० ॥ १३४४ ॥

॥ कटि मंडल सहसेन वर। उभै परिग्गह राज॥
गई आस गोरी गहन। गहन मोह गह आज॥

छं० ॥ १३४५ ॥

१ ॥ उभै बंध परिहार। सन दुहु मग्ग समाही॥
दल धथ्यौ प्रथिराज। बल न घथ्यौ बलधाई॥

वार वेर चहुआन । साहि मुष चढि गज चढ्ढी ॥
सज्ज पट्ट तिन छीन । आय अत्तर अग वढ्ढी ॥
फिरि वाम मग्ग उभ्भौ न्रपति । है हक्कै चल्लै नही ॥
मधयान कत कौ नीर ज्यौ । कछु अग्गा भजै जही ॥

छं० ॥ १३४६ ॥

परत मीर मारत्त । वीर बज्जिय सुरतानह ॥
देव भूमि दस षान । जान जानीहि रसानह ॥
एक राय दस षान । धान घु टिय धर मग्गह ॥
आसमान अच्छरिय । भयौ कोतुहल मग्गह ॥
सुर कहिय ससीहर आपनौ । अप अपलोक सुपन्नौ ॥
बर बीर बीर सित कत सहु । जोनि सुहागिन सुपन्नौ ॥

छं० ॥ १३४७ ॥

सब हिन्दू या मुसलमान वीरों की बहादुरी ।

सारग सारग रूप । मिले दसषान महोमद ॥
यौं गज्जयौ गुर रन्न । जत मुनि हक गरुअ सद ॥
षग वंवरि उच्छारि । ढारि हथ्थर पथ्थार ॥
सार स्रोन झझरिय । नष्प प्राक्रम्म सथ्थार ॥
ताजीय कह जगदीस दिय । सुष सुम्रद्धि सभर धनिय ॥
नवलोक लोक मडल गयौ । धरकि ह स एकह मनिय ॥

छं० ॥ १३४८ ॥

षूब षान तत्तार । षूब मारू महन सिय ॥
षूब षान आषूब । जेन सध्यौ रन गंसिय ॥
षूब ध्रम्म सामित्त । षूब सिर तेग प्रहारिय ॥
नाहर राय नरिद । परिय पष्पर प्रहारिय ॥
अदिघार हिन्दु साहिब सुदिन । बह झोरी बह षेत सुअ ॥
ढालक नेज नीसान ढरि । सेन सयन मडी सुभुअ ॥

छं० ॥ १३४९ ॥

दूहा ॥ गिरिजा गुन पुच्छिय गुपत । सुनिय सुपुण्य निधान ॥

जुद्ध धरिय लग्गिय लरत। चाहुआन सुरतान ॥
छं० ॥ १३५० ॥

दूतिया सोमवार का युद्ध समाप्त।

कवित्त ॥ दुतिय दिवस संग्रम। धाम धवरिय दिसि उत्तर ॥
देवराज दीसति षान। जुट्टिय रन दुस्तर ॥
दुओं राय सामित्त। मुंह मुंह झरि झरि आवध ॥
सिर सिर सिर तुट्टंत। तंति बज्जिय सुरगावध ॥
काथ कमल केलि कमला पतिय। दुअग दच्छि दुआह कथियय ॥
सुनि सुनि श्रवन जट धर जुगह। भुगति मंगि नंदि पारथिय ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

सुबर बीर बन सिंघ। धीर जिहि धर उत्तारिय ॥
मिच्छवान सुरतान। लोह लाहौर उबारिय ॥
ता पौरुष परतष्षि। इष्षि अष्षर कबि चंदह ॥
देवासुर दलन हिय। भिरिय मुअ पर भुज दंडह ॥
आवरत रीठि नन पिट्ट दिय। पहर एक वज्जिय बिषम ॥
जम जुरन हथ्थ लग्गिय न कछु। सूर मंडि मंडल सुषम ॥
छं० ॥ १३५२

रात्रि व्यतीत होने पर पुनः दोनों सेनाओं का युद्ध आरंभ होना।

नववति निसि नंसीय। बज्जि नीसान सवज्जिय ॥
हिंदवान सुरतान। हिंदु धर बर करि सिज्जिय ॥
गय भग्गिय अग्ग लह। सह्ल संभरि संभरयौ ॥
षिन षिन जन मन जुरन। कीलि गोरिय घर धरयौ ॥
तद्दिन तुरंग मोहिल मरद। अरुन अरुन मंडल गहिय ॥
चुचकारि चित्त चिचंग पहु। बर विषान रंधह रहिय ॥
छं० ॥ १३५३॥

गर्ज्जि सेन हिंदुअ नरिंद। चंप्यौ धरि आवध ॥
तब आए भर दुसह। सीस धारंत साइ उध ॥

सत्त सुभट सामंत । चेव भर रावर सिधइ ॥
तिन दिष्यौ प्रथिराज । जुद्ध रस रप्पत रिधइ ॥
नृप नाइ सीस अम्मर उकसि हक्कि सुलग्गो वीर रस ॥
उट्टे सुलोह दुअ सामि छर । एक तत्त अस्सिय उकसि ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

पृथ्वीराज के रक्षक सरदारों के नाम, राजपूत सेना के पराक्रम से यवन सेना का विचल पड़ना ।

विअष्परी ॥ सोलंकी भीमह वर वीर । पारिहार दच्छर्न रनधीर ॥
कमधज्जह रयसिंघ महाभर । भाटी अचल अचल आवध भर ॥
छं० ॥ १३५५ ॥

विजय राज बघेल गुभभग्ग । मोहन से गर रत्त जुद्ध रग ॥
मल्लन सायर असी सूर । आए निज पति अग्ग करूर ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

तीन सुभट रावर नमि सिधं । आए पहु प्रथिराज उरध ॥
सिलहदार भापर वर अंग । सुअन धाय दुज्जन छल जग ॥
छं० ॥ १३५७ ॥

पग्ग धार देहल पावास । अयें चपि वहु जगल पास ॥
बीर करारे आवध वज्जे । भरहरि मीर अपुट्टे भज्जे ॥
छं० ॥ १३५८ ॥

परिय भीर देषिय पहु सिंघ । दिय आयस प्रथिराज अरध ॥
गये सूर दह रावर चढ्ढे । आए षान साठि तमि अड्ढे ॥
छं० ॥ १३५९ ॥

षा पिरोज नव राजन सूवं । आलम सालम फते अपूवं ॥
षीरन रेसन महबति मीर । राजन ताजन हाजन पीर ॥
छं० ॥ १३६० ॥

तोगन कालन हाजी गाजी । सेरन षान गनी षां न्याजी ॥
हासन षा विरहमषा षान । गजनी षान दादुषा मान ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

मुस्तफा षां उम्मर षां अत्तन । को अग पान जलाल समत्तन ॥
हीरन मीरन देगन दोसन । लाल नगालिब पान समोसन ॥

छं० ॥ १३६२ ॥

ए रन मीर एलची षानं । तोसुन मूसन सो सन बानं ॥
अलीषान सूरेम सुरेजं । सकत षान जलूषां जेजं ॥

छं० ॥ १३६३ ॥

कायम षान मीर जा महदी । जोसन षान जलेवस हद्दी ॥
मत्तो मार समर सी अग्गें । मनो कज्जि सिंघं मो लग्गे ॥

छं० ॥ १३६४ ॥

आवध आवध बज्जि अपारं । सेलह्वि सेल सों सारे सारं ॥
अस्सी झार कर पटा पहारं । धरव झार चढ्ढिय षग धारं ॥

छं० ॥ १३६५ ॥

रूझो कंठ कंठ एकेकं । करे घाव छलि का छल वेकं ॥
अंत अंत रुभ्झै सम सूरं । मानों कचर जुद्द करूरं ॥

छं० ॥ १३६६ ॥

केस उकस्से तुट्टे आवध । धर ऊपर भर करें महाजुध ॥
श्रोन प्रवाह षलक्कै षालं । फुरके फेफर तुट्टै बालं ॥

छं० ॥ १३६७ ॥

धरिय पंच जुद्दह परचारं । हिंदु मेछ घन परे पथारं ॥
साठि षान दस राय रवद्दं । परि धरनी क्रित करे रवद्दं ॥

छं० ॥ १३६८ ॥

आर्या ॥ यह रावर बर बीरं । सद्दिय षान ठान भर धीरं ॥
रुझझे गये सुरेहं । रोहत रवि बिंब राय षुमानं ॥

छं० ॥ १३६९ ॥

दूहा ॥ भगी सेन सुरतान रन । गए पास बन षान ॥
देषि अप्प दोर्‍यो बिहसि । सज्जि सीस असमान ॥

छं० ॥ १३७० ॥

शाही सेना में से शाह के भांजे खानखाना का अग्रसर होना और उसका पराक्रम वर्णन ।

भुजंगी ॥ तब तज्जयो पान पानी करूर । सुरतान भानेज जुध्ध जरूर ॥
सहस्सच पंच बर बंधि फोज । बचै वाच दीन सुदीन सरोज ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

हहक्कारि गज्जे सुमीर गुहीर । करी सब्ब मान सुरक्की कठीर ॥
सनमुष्ष रा स्वामि चिंत्रंग कोट । सहस्सं त्रिवीर बर बंधि ओट ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मिले धाय दून उभै हिंदु मीर । वकै उच वाक जुटै जुद्ध धीर ॥
दुव डारि ओडन गज्जे गहीर । घन घाय अध्धाय तुट्टे सरीर ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

फारक्कत फेफ सुस्रत अंतुरंभं । चलै श्रोन धार पलक्कीच ऋुंभं ॥
परै अंग अंग सुभट्ट सुरेस । कटै गात गौर व्रध बाल वेस ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

हहक्कत हक्कत धार करूर । उभै हथ्थ बथ्थ मिले सूर सूर ॥
मचै वीर आवद्ध तारी चिधाय । उकस्सत कस्से छुरिक्का छुराय ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

मिले दिठ्ठ पान षुमान सजूरं । चलै सम्मरी मग्ग हक्के करूर ॥
चढे जन दून भर बीर रूपं । मिले वोल बोल सुभै सब्ब जूप ॥
छं० ॥ १३७६ ॥

हयौ पान षुम्मान सगी सजूर । चले पग्ग सीस हय षग्ग सूर ॥
समजीन फुट्टी हय जीन जाम । धन धन्य जपंत आयास ताम ॥
छं० ॥ १३७७ ॥

फिरे आय पुट्टे सुषीनं जमान । हय षग्ग लग्ग कटिं तुट्टि थान ॥
करै धार छमेल लीनौ समुष्ष । हयौ ताम कट्टार नासुष्ष(१) कष्ष ॥
छं० ॥ १३७८ ॥

चली जोति पानं षुमानं अयास । सम तेज तेज समं सूर नासं ॥

(१) ए० कृ० को०—सुष्ष ।

परे सहस त्रय मीर हिंदू सहस्सं । कटे मंडलं इन भर रूका रा
छं० ॥ १३७९ ।

खानखाना के सिवाय अन्य १४ मीरों को मार कर रामर सिंह जी का स्वर्गवासी होना ।

दूहा ॥ मचि आहत्त सुजुद्ध बर । तुटि घुट्टे सब सस्त्र ॥
अनो अन्न सममंस सुनि । किरच किरच बहु अस्त्र ॥
छं० ॥ १३८० ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ सिर सीस । छंद छलनी कृित आसह ॥
इह अमुष्य नन भाष्य । हयं कूदति आरासह ॥
नन आई आचरन । आन अच्छरी उछंगह ॥
धर धरन्त तुटि तन्न । तान जोगिय भग्गा मह ॥
असवार सनाहति अस्सु बर । धार पार होइ उत्तरिय ॥
चित्रंग राइ रावर समर । बिहुन पला सम्मह न परिय ॥
छं० ॥ १३८१ ॥

जब दल षान ततार । मार मथ्थे परिहारं ॥
समर सिंघ अवलोकि । हयौ ओडन करिवारं ॥
चपल हथ्थ बरमथ्थ । सीस तुथ्यौ रडवंडह ॥
रुडं मुंड हुअ षंड । सुंड कट्टे दती बंडह ॥
परि टोप अग्ग बगतर जिरह । षां अपुट्ठ भेरें भरां ॥
ढहि गजराज साज झलपट भयौ । समर सिंघ पावक करां ॥
छं० ॥ १३८२ ॥

बर दिट्ठ मुट्ठि षंधार । षान नवरोज सिसानिय ॥
भिसित छंड़ि दोजिग परंत । तुच्छ अग्गैं हिंदवानिय ॥
वे भग्गिन मारूफा । गुलब गाजी सुनि संमन ॥
क्या काफर फारजंद[२] । फते पीरोज षां कामन ॥
दूहा ॥ भगौ सूरेज गुंजार षां । पढ़ि कलमा मुष करिकहौं ॥
देषि अप्प्न चहुआन सम[३] । सब हिंदू एकत ग्रहौं ॥
छं० ॥ १३८३

(२) ए कृ. को.-फरइंदं । (३) ए. कृ० को०-कैं

दूहा ॥ समर सिघ केते कते । जइ तह कहु मार ॥
गनै कोन हयगय भरे । परेपान दस च्यरा ॥ छं० ॥ १३८४ ॥

कवित्त ॥ *परे पान नवरोज । टूक टूकह तन तच्छिय ॥
जो भग्गिन मोरूफ । सार सुभ्भिय मुष अच्छिय ॥
परे पान गुसाव । समन रेचम मम रेजह ॥
गुजार पान वाजी । समर सिघ से हथ्थ ढहि ॥
पीरोज पान मीया मरद । वे ओडन घल्ले सु वथ ॥
चित्र ग राव चावद्दिसा । चवै ईस अच्छरि सु कथ ॥
छं० ॥१३८५ ॥

दूहा ॥ सिरदारह दस च्यार गिरि । समर सिघ धन घाइ ॥
रह विहान उत्तरि परे । चहु पील मगाय ॥ छं० ॥ १३८६ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि पान पुरसान । गुर वर जमथ्थ उपट्टिय ॥
समर सिघ सुप चहर । हिंदु मेछन मिलि जुट्टिय ॥
गिद्धिन पल सग्रहन । जुथ्थ लवे रन आइय ॥
ओन परत निज्झोरत । पच जुग्गिनि लै धाइय ॥
पल चरिय मेछ हिंदू सहर । अच्छरि मल अति जग्ग किय ॥
महदेव सीस बंधे गरा । काल झरपि लीनौ नुजिय ॥
छं० ॥ १३८७ ॥

प्रिया कत परदीप । लज्ज सकर गर वधिय ॥
जिय वासुर दोइ च्यार । बहुरि कलिजुग्ग सुपडिय ॥
सोई लज्जा के कज्ज । रज्ज मुक्यौ रघुराइय ॥
रावन लक विनास । लज्ज बध्धौ सरिताइय ॥
लज्जा सु कज्ज नग देव न्रप । सीस कट्टि हथ्था धरे ॥
इह कवित एक लष सरिस । लरनहार लज्जा भिरे ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

मोतीदाम ॥ पर्यौ धर रावर सावर धाइ । पय पग षेग तन मिछताइ ॥

* इस छन्द के चतुर्थ चरण से मालूम होता है कि बीच में कोई एक आध कवित्त छूट गा है केवल उसके पचम या षष्ट चरन की यह एक पक्ति शेष रह गई है ।

(१) मो० लीयौ ।

घटसठ घाइ निघाय अघाइ । कटे कट युत्तर उत्तर नाइ ॥
छं० ॥ १३८९ ॥

उथ्यौ दल षां षुरसान अपार । मनो दधिगंग मिलान प्रचार ॥
अगें गजबाज चिकार हंपार । भंडी धर बाधुर घोर निकार ॥
छं० ॥ १३९० ॥

फरक्कत नेजनि नेत उतंग । मनौ रति राज विराजत दंग ॥
झरै गज रत्त द्रवै गिरि धत्त । परै गन मोतिय आरति तत्त ॥
छं० ॥ १३९१ ॥

चमू चतुरंग चवै चवसट्ठि । बजावत ताल वितास अतट्ठि ॥
परे मह मीर महाभर भार । वजै पग कुंतनि तारनि तार ॥
छं० ॥ १३९२ ॥

लरथ्थर लुथ्थि अलुथ्थि पलथ्थि । झरप्फर गिद्ध तरफ्फर तथ्थि ॥
उड़ै घन छिंछ लगै असमान । उठै जनु होरि फुलिंग प्रमान ॥
छं० ॥ १३९३ ॥

लगे वर सावध आवध वथ्थ । नचै धर मीर विना धर मथ्थ ॥
जयज्जय सह सुबद्दहि एत । पर्यौ कटि रावर राइ सु पेत ॥
छं० ॥ १३९४ ॥

मिल्यौ प्रथिराज विराजत (१) रेन । पर्यौ गज सिंघ अवी हन सेन ॥
कर्यौ पयपान धरी गज भाल । कढ़ै रथ कालिय नथ्थ गुपाल ॥
छं० ॥ १३९५ ॥

ढरै धर गज्ज वहै रत झार । निसातम भै चँप छुट्टि अपार ॥
हुए सम षानहि एहक सेर । उरप्पर ऊरध अद्ध विरेर ॥
छं० ॥ १३९६ ॥

मनों द्रुम राज लगे दोउ वीर । निकाय एमय पारनि सीर ॥
भरे अगतून तनं तन राज । लगे अहि धाय मनों तर राज ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

लगी मुष संगिवि षान षँधार । बजावति मागध भेरि भँकार ॥
परे कर कुंत गहै कर षग्ग । महब्बह सेन वियं गज मग्ग ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

(१) ए० कृ० को०-विराज विरेन ।

परी गज कुंभनि कुंभनि तार । घयघ्घन बीज छुटी अतिभार ॥
इते परि सीस पुतार समेत । उते परि नोग सिंदूक समेत ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

भए चव कोदनि मोरनि मोर । लगे रवि ते घट बीरनि बीर ॥
लग्यौ न्रप रस्स झरज्झर घग्ग । जगो जनु बीज घन घन बग्ग ॥
छं० ॥ १४०० ॥

चलै रत बान चलै घन बुंद । गन रज निद्धि अनु मिटि दुंद ॥
गिरे दह दाह मसद सु घाय । गिनै कुन नाम तिने अततार ॥
छं० ॥ १४०१ ॥

पटा झट कुंतनि बाननि मान । परे गज कुंभति कुच्छ प्रमान ॥
परे कटि पट्टनि पंडनि पंड । फरस्स फिरत्त तरप्फर तुंड ॥
छं० ॥ १४०२ ॥

बिथारिय दृरिति स्रोन अपार । मनो नयि धीमर जार मझार ॥
गहै द्रत उत्त सु गिद्धनि गिद्ध । मरालिय अंचि सिवाल अतिद्ध ॥
छं० ॥ १४०३ ॥

बिचे सिर रूह तिरै सिर सार । तिरै मनु वारि बतकनि लार ॥
करै चवसट्ठिनि मंगल चार । नचै नव नारद जुद्ध बिहार ॥
छं० ॥ १४०४ ॥

कटे जुग तोन दह नवस्सर । रहै चवकट्ठि सबे वर सूर ॥
छं० ॥ १४०५ ॥

दूहा ॥ के सांई भर उप्परह । के भर उप्पर साइ ॥
कटि मंडल हिंदू तुरक । हय गय धाय अघाइ ॥ १४०६ ॥

बाईं अनी का युद्ध समाप्त हुआ जिसमें दस राजपूत सरदार और ६० यवन सरदार मारे गए।

रावर सिंघ रहत रहि । साठि पान दसराइ ॥
परत महन परिहार रन । भेछति सहस सवाइ ॥ छं० ॥ १४०७ ॥

भुजंगी ॥ परे साठि पान दस देह राय । ढहे ढाल नेजानि नीसान ठाय ॥
छुटै मंत मैमंत दीसै दिसान । चढी पंति पंपी परे पीलवान ॥
छं० ॥ १४०८ ॥

उल्लोलं म आलं म छची छितानं । जुटे जोट जुट्टे भए भै भय
रुप्यो रंघरी राव बाराह षेतं । रह्यौ रोह चापूव षानं सु जै

छं० ॥ १४०९ ॥

भरै बान सन्नाह सुर्गां सु देही । वियौ चष्ष लष्षै अषे जानि
गहै षग्ग धावै सु बाहै पचारै । लगै धाइ पुंडीर सांई सभा

छं० ॥ १४१० ॥

नियं अंम रष्षै सदाव्रत गेही । छडुछ्व षेलंत बालक्क जेही ।
परी का भषै का जरै का हुतासं । अलूतीन तेकै घरं को अ

छं० ॥ १४११ ॥

कियं जुट्टि हड्डं रनं रत्त रत्ती । लही मुत्ति छचीन सुछिग्ग ग
फटे सेन दूनं भरंगो उभारं । दिषें थान थानं जिसे प्रात त

छं० ॥ १४१२ ॥

म्लेच्छ सेना द्वारा पृथ्वीराज के घेर जाने का वर्णन ।

दूहा ॥ वाम अनी कंदल भयौ । सो जान्यौं[1] दछिराज ॥
सित संदेह समुच्चरयौ । अवरन रुंध्यौ राज ॥

छं० ॥ १४१३ ॥

भुजंगी ॥ चंपी सेन दूनं चहूआन गोरी । वजे घाइ आवत्त असुरत्त
उवं धाइ छिंछं सु सोहै प्रकारं । मनो बीर रायं वसंतं सव

छं० ॥ १४१४ ॥

तुटे मंस अंसं चलं स्वर स्वरं । तिनं देषियं भंति कंती कल
वजे घाइ भांई मिटे जो निसानं । उडै गिद्ध सिद्धी सु पावै न

छं० ॥ १४१५ ॥

उडै बीर बत्ती सु भारथ्थ जित्ती । मिसे मत्त मंतं लगे लोह त
.... छं० ॥ १४१६ ॥

रसावला ॥ इत्त असे भरी, सेन भग्गा परी ।
सोहि जा ढल्लरी, चोहु पष्षा फिरी ॥ छं० ॥ १४१७ ॥
राइ जा संभरी, लेहु, लेहच्छरी ।
ढिल्लि रा जंभिरी, उट्ठियं अग्गरी ॥ छं० ॥ १४१८ ॥

(१) ए० कृ० को० अष्षौं ।

नैन रत्त भरी, षोलिय षभरी ।
एक एकतरी, आनि विज्जु झरी ॥ छं० ॥ १४१९ ॥
अद्ध अद्ध धरी, भूमि लुट्टै परी ।
वारि तुच्छ परी नेज चोरी सुरी ॥ छं० ॥ १४२० ॥
श्रोन रंग तरी, देव देव हरी ।
वरन अछी वरी, मुगति षोली दरी । छं० ॥ १४२१ ॥
दोन दौउ टरी, सामंत षै परी । छं० ॥ १४२२ ॥

पृथ्वीराज को अपने को घिरा हुआ जान कर गुरुराम को कुंडल दान करना ।

कवित्त ॥ या रष्षै गुरराज । राज विग्रह मुष चायौ ॥
पंच इत्त कुंडलिय । लष्षै द्रव्य कोरि सवायौ ॥
जा जोगिनिपुर देव । राज राषहु चहुआनिय ॥
मों काया बल भग्ग । संग हुं हु सुरतानीय ॥
दुग्ग हत्त मंडि छत्री तुरयौ । [1]मोह्ह जुद्ध विरुद्ध दिन ॥
छिन भंग देह विज्जुल छटा । दुष्य न करहि मह्हत जन ॥
छं० ॥ १४२३ ॥

गुरुराम का कुंडल लेकर चलना और मुसलमान सेना का उसे घेर लेना ।

पानि मंडि लिय दान । सुत्ति भनि वेद संष दिय ॥
मंच जाप आलपा । राज अंगह अभंग किय ॥
सार धार न्त्रिघात । भेद छेदन राज[2] वप ॥
सिलहदार सारंग । सथ्थ किय इन्द्र देव जप ॥
वज्जंग पाट गाजीय सकति । धरि घट गोरीय सुधर ॥
सुनि एक धक हैगय मुरिय । सहस पंच उत्तरिय भर ॥
छं० ॥ १४२४ ॥

रहस पंच उत्तरिय । षान षुरसान सपत्तौ ॥
पहु पच्छै पतिसाह । आय सुरतान मिलत्तौ ॥

(१) ए० कृ० को० मोह रुत्त विरुद्ध दिन । (२) मो० राय ।

तीन वान पज्जून। मारि अंकुस गज फेरिय ॥
चक्रवान चहुरंग। चंपि चावदिसि घेरिय ॥
परि सिलहदार सारंग दे। गरुअ षान गोरी गसिय ॥
उर उरझि उरझि अच्छरि अछिनि। उर बंसी हिरदै वसिय ॥
छं० ॥ १४२५ ॥

कुंडलिया ॥ दिव कुंडल चालुक्क थपि। फिरि दष्षिन गुर राज ॥
मरन जानि इच्छ्यौ मरन। स्वामि सु भुल्ल्यौ काज ॥
स्वामि सु भुल्ल्यौ काज। सु दल धायौ दल प्रोनह ॥
वहै न सस्त्र समथ्थ। उभै वड गुज्जर द्रोनह ॥
उर चंप्यौ कह्लार। सेल हथ्थह रन मंडलि ॥
विप्र जाति न्त्रिप ऐल। अपिय मवसिाय दिय कुंडलि ॥
छं० ॥ १४२६ ॥

बहवल खाँ का गुरुराम का सिर उड़ा देना, गुरुराम का पड़ते पड़ते शाह के भाँजे को मार गिराना।

कवित्त ॥ गुर ढिग कुंडलि देपि। पेषि बहवल्ल षान धपि ॥
द्रोपद सुत जिमि वेग। वेग झारी अनंग^१ झपि ॥
राम सीस लिय ईस। कमल बिन पंजर कढ्ढयौ ॥
हथ्थ छेदि उर षान। पीठि पच्छै दल वढ्ढयौ ॥
वाम अंग हथ्थ अधरिज सुनहु। अरि कटि तें असिवर लियौ ॥
भानेज साहि साहावदी। उय सबेत चव षंड कियौ ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

दूहा ॥ द्वै बंधव भानेज द्वै। द्वै दुष कीनौ साहि ॥
दुज को दुज प्रथिराज भय। गुरु बिन बंदो काहि ॥
छं० ॥ १४२८ ॥

गुरुराम की मृत्यु पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। बाज तजिहौं पनि झुग्गरौं ॥

(१) ए० कृ० को०—करंक।

मुश्री राम गुरु राज । मंत कासौं मिलि बुझ्झौ ॥
आज मुश्रौ सोमेस । आज कैमास झुझ्झौ ॥
आज करह गोयंद । सूर सामंत न सुझ्झयौ ॥
इह जान दयौ कुंडल करन । हम घाल्यौ गुर आय घर ॥
कूरंभ कहै चहुआन सुनि । दुष्प न धरहि महंत नर ॥
छं० ॥ १४२९ ॥

दूहा ॥ हम अब दुष्प न सुष्प मन । मह दिष्षिय धम धाय ॥
मोरे मेछ मसंद जुरि । इह लग्गौ मन चाय ।
छं० ॥ १४३० ॥

पृथ्वीराज को म्लेच्छ सेना का घेर लेना ।

भुजंगी॥मिले चाय चहुआन सुबिहान गोरी॥मणा हमंमंथ रच्यौ जानि जोरी॥
तिनकौ उपम्मा कविचंद भट्टे । उभै छूट षीलं सटं इट्ट भट्टे ॥
छं० ॥ १४३१ ॥

तिनं मझ्झ भग्गं सुवक्की चमक्कै । लिये भेस चंदं चकं बान हक्कै ॥
धवै गिद्ध सिद्धौ दुअं पेम पग्गा । धनं रत्त धारं बरष्पन्न लग्गा ॥
छं० ॥ १४३२ ॥

निसानं सु घायं अघाजं फुरक्कै । सुटै सद्द तिष्षं पजै धार वक्कै ॥
चली लालची जोगिनी पथ छक्के । घुटै घट्ट रत्तौ सुरत्तौव कक्के ॥
छं० ॥ १४३३ ॥

तुटै सीस भारी द्रयौ द्रोन नच्चै । मनौं बीर नट्टं सयं भग रच्चै ॥
पिथ्यौ पान ततार चंपे सयन्नं । दिषे साहि गोरी झुकै बीर तन्नं ॥
छं० ॥ १४३४ ॥

कवित्त ॥ सकल सूर सामंत । परी पावस चहुआन ॥
षेत हथ्थ चढ्यौ । तारि कढ्यौ सुरतान ॥
षा ततार मारूफ । इकि चतुरंग चलाइय ॥
विषम लोह वज्जौठयौ । बीर बर मचि नचाइय ॥
तुटि बंध कमध नचिवर । धार धार धर उतरयौ ॥

पत्तेहु समर सौभाग हर[1] । असु भुव मंडल चितार्यो ॥
छं० ॥ १४३५ ॥

गुरुराम के दिए हुए कवच के प्रताप से राजा की रक्षा होना ।

घह धारिष गुर राज । मंच सन्नाह कवच दिय ॥
नष रष्या नर सिंघ । चरन चच भुज रक्ष किय ॥
पग पिंडी अग पिंड । वसे वैकुंठ जंघ वर ॥
रोम रवनि कटि रष्षि । गूढ़ गोविंद गदाधर ॥
थल उरद्द पाहर परजयौ । भुज वामन कंठह हरी ॥
मुष रसन कान द्रिग केस वर । काल बंध इत्ती करी ॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दू० ॥ मच अगंम सुगंम करि । षग असग्ग चहुआन ॥
दिसि दच्छिन प्रथिराज पर । उसरि सेन सुविहान ॥
छं० ॥ १४३७ ॥

कवित्त ॥ प्रथु आवध फुट्टिहं न । गुरज बज्जिय गुज्जर पर ॥
जनु पषान पर बुंद । रुंद लग्गिय दुज्जर धर ॥
टुटि टट्टर सिर ओन । छिंछ उट्ठे भुम्मि बुट्टिय ॥
सूर गिरद्द मन मंत । सहस आवध लै उट्टिय ॥
असुलित आय[2] इक्कत घरिय । जरियति जीय डरियति परिय ॥
धन सेन साहि गोरी गरुअ । तिरन तुंग तिनवर करिय ॥
छं० ॥ १४३८ ॥

रामराय बड़ गुज्जर और वीर पंचाइन का पराक्रम ।

बड़ गुज्जर रा राम । ढान ढुट्टहि सुरतानह ॥
ह्वै गै नर बिच्छियन । जानि अगराज अगानह ॥
सबें सेनपति साहि । कंध कढ्ढिन फक फुक्के
कुटिल दिष्ट जहं फिरै । सकल मिलि मित्तह लुक्के ॥

(१) ए० असुक्रव मंडल वित्तर्यौ ।
(२) ए० कृ० को० आउ ।

उभ्भरिय उहकि जोगिन हँसै । जिम जिम धज वबरि लसै ॥
दनु देव दच्छ गध्रब्ब नन । सकति रूर कित्तिहि कसै ॥
छं० ॥ १४३९ ॥

दुहा ॥ मत मत के दल पर । हनी सग वर राम ॥
कहूँ कार उकढै नही । वत्त कहत भए ताम ॥
छं० ॥ १४४० ॥

कवित्त ॥ लष्प लष्प कहु गहिय । कठिन कुकस कुस मानिय ॥
सुरिन मीर मारत । साज ससारह जानिय ॥
सुर नर गन गध्रब्ब । तिनहि लगि सत्त न छंड्यौ ॥
अगद जिम अकुरयौ । भीम जिय भारथ मड्यौ ॥
हहे बहरनि छिदू तुरक । घरह लाज सो विस्तरन ॥
करि उर हनत तुट्टिय कटकि । मुरी सगि कारन कवन ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

सुहिन दोस यह देह । सु मेरौ बचन इक्क सुनि ॥
स्वामि काज सदेह । करत विसठार सवनि सन ॥
एक धरनि लरपरहि । एक गहि धरनि पछारै ॥
तीये तरल तुपार । तिनहि तिनुका करि डारै ॥
न्त्रिम्मलिय सगि कुअर डरह । तुम सु तेग अग्गर वहिय ॥
मन सुरिय राम रजवि'मनह । रुहिर पीयत लुम्भि सुरहिय ॥
छं० ॥ १४४२ ॥

घोटक ॥ नचि नचि नरे' जुयय जुयय । ततथे ततथे तह यान थय ॥
असिज असिज असि कमकलय'। लुयि लुयिय उलटिय मसै पयय॥
छं० ॥ १४४३ ॥

गज बोज फिरकि फिरै हयय । गन गध्रव अप्प कथै कयय ॥
जुध भारथ पारथ जेम यय। दिवि दिट्ठिय सोन सुनी अथय ॥
छं० ॥ १४४४ ॥

(१) ए० कृ० को—रजाहि ।
(२) ए० कृ० को०—जुरे ।
(३) मो०—ह्यलिय ।

उड मंडल लो उड़ता कथयं । ठग ठग्गिय नैन निमेन थयं ॥
छं० ॥ १४४५ ॥

भुजंगी ॥ सक साल सुसाल सु चाल सुचाल हहंकि जमाल हलं मिलयं ॥
अगिवान रुवान विवान कमान किवान रुपाने किसान जलं ॥
घर जा पढ़ि अंग सु सजत समस्त रनोरन रत्तिन छत्र हलं ॥
किल किंचित बीर सुमीरहि मीर गए रन भीर अलोग थलं ॥
छं० ॥ १४४६ ॥

किन नंकि तुरंग कुरंग कि चाह विश्राह सुविंत्तम भार भरं ॥
घटि कायर सिंघ गए दिव विद्ध परे इत हिंदुअ मेछ धरं ॥
.... छं० ॥ १४४७ ॥

कवित्त ॥ मुष निहारि छन धार । पर्यौ पंचो पंचानन ॥
गोरिय दल बल अग्यौं । चुंगल चंप्यौ मेछानन ॥
एक सार उर धरिय । एक धारह उर धारिय ॥
एक मार सम्मार । एक झारह उर झारिय ॥
बर बरनि विहसि दच्छि जु कथै । रहसि रहसि पुच्छे जुरह ॥
धरि एक तरंगिनि रुधिर पल । कमल आनि नचै जु सर ॥
छं० ॥ १४४८ ॥

राज राव परसंग । देव वग्गरी चड़ गुज्जर ॥
षग्ग मग्ग अकलंक । सिंघ सांई भुज पंजर ॥
राज गुरू दुज राम । कलिय बंभन भय भंजन ॥
सिलहदार सारंग । सार सिंधुर भर गंजन ॥
छिति छुच धार पंचाइनौ । लहस अश्व अडस सर ॥
सिव सुनि सुद्दरं अस्तुति करै । साषि भरै गिद्धिन समर ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

एक गिद्धनी का संयोगिता के पास युद्ध का समाचार वर्णन करना ।

पंन धारि दिय पंच । कंन लग्गवि कर सायौ ॥
पंग पुच्छि किय पनि । बंचि संदेस सुनायौ ॥
अमिय गयौ कल चंद । कमल मंडिय सुमान सर ॥

गति गयंद गत इंद । रूप रति रंभ सुरच्छर ॥
मति[1] मान विनय लच्छी सहज । मोर पंछ केसो समन ॥
हाहंत तार छक्कयौ हियौ । उडै न हंस तुअ हंस बिन ॥
छं० ॥ १४५० ॥

संयोगिता का संकट में पड़कर सोच विचार करना और गिद्धनी का संक्षेप में वर्णन करना ।

सोचे सर न्रप फुट्टि । हंस पंजर दुष विद्धे ॥
दस लष्षा बरनेव । बीर मंजुर आलुद्धे ॥
प्रीति आउ उर हंस । हंस बिन हंस न उड्डे ॥
छिन पंजर परि भई । वाम कढ़ि माया चड्डै ॥
भकौव हंत चलै नहीं । चित्त पंथ उत्तर गही ॥
हंसनी हंस औ हंस कों । हंस हंस करती रही ॥
छं० ॥ १४५१ ॥

रे पत्रधार परिहार । हंसनी हंस हंस किय ॥
हंस परा भव गत्त । उडै पष्षा नहि मुक्किय ॥
सोइ हंस हंस सो नेह । हंस बिन नेह न जोई ॥
मोह हंस सों बंध । हंस बिन मोह न होई ॥
आवुद्ध हंस हंसह सरस । मुन्यौ मोह छंड्यौ हियौ ॥
उड्डै न हंस न्रप हंस बर । जोग मुद्र मुद्दह कियौ ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

पत्रधार परिहार । गुम्भ गामार वार तिहि ॥
सु ग्रह नारि उर धारि । कहै स देस वार इहि ॥
निबर पेम संकरिय । सबर संकर गल लज्जिय ॥
अस बल काल छुट्टै न । जोनि जिम बाल सा सज्जिय ॥
तुअ वाम नाम केहरि कमल । सार धार चड्डै विमल ॥
मल चारिय जाइ जोगिनि पुरह । कहै कथ्थ गिद्धिनि सकल ॥
छं० ॥ १४५३ ॥

(१) मो०—मन ।

कुंडलिया ॥ अलम आनि अंतर गिलन । जोगिनि पुरह अवास ॥
चरन खग्गि वंछ्यौ मरन । सह परि गड्डरू पवास ॥
सह परि गड्डरू पवास । अन महिय आनि अंगोरह ॥
काल धास धग्गारि । पार छंडिय परिहारह ॥
छत्र धार सुरतान । मारि सिरषां सनमुष्षह ॥
करहि देव बंदना । पग्ग पावास अलम कह ॥

छं० ॥ १४५४ ॥

दूहा ॥ इह कहंत क्रूरन बयन । उद्दै अनंदी वीर ॥
चाहुआन उप्पर परिग । दोउ दीन अहमीर ॥

छं० ॥ १४५५ ॥

गिद्धिनी का संयोगिता के महल में राजा का चमर डालना और सखियों का उसे पहिचान कर दुखित होना तथा संयोगिता का गिद्धिनी से हाल पूछना ।

कवित्त ॥ चमर जंग नीसान । षान वर बाग विछुट्टिय ॥
भुअ[1] विहार औराक । गोर जंबूरन छुट्टिय ॥
चीर ढार चा चिग्ग । चोर ढारत कर भग्गिय ॥
धर अंबर संचरिय । चंद करि सावसि उग्गिय ॥
गहि चुंग घरी इक सुअसरिय । जोगिनी पुर जोगिनि विमल ॥
हिंडोल हेम संजोगि ग्रह । चमर डारि गिद्धनि समल ॥

छं० ॥ १४५६ ॥

कुंडलिया ॥ हाहंतन कीनो सषिन । दिषि गिद्धिनि हिंडोल ॥
चमर दृष्षि चिंतलु कियौ । नग मोती अंमोल ॥
नग मोती अंमोल । सोहि तरुनी उर चंप्यो ॥
इह सांई संदेस । समल गिद्धिन सुष जंप्यो ॥
उदिक अघ आरम्भ । कह्यौ भारथ कथ कंतह ॥
चमर चंपि उर तरनि । सास कढ्ढन हा हंतह ॥

छं० ॥ १४५७ ॥

(१) ए० कृ० को० भुंइ ।

गिद्धनी का आरंभ से युद्ध का वर्णन करना ।

चोटक ॥ पति वृत्त सुनंत संजोगि सती । समझी घरु गिद्धनि उग्र मती ॥
उह कालिह कुह दिन कद लभौ । घटि एक घट भषि ष्यिन ज्यौ ॥
छं० ॥ १४५८ ॥

प्रथम प्रथ कंत कथंत कथं । फुनि राज बधू नय राज रूथ ॥
दिसि वाम उठी पुरसान घनी । तिनके मुष रावर लिय रनी ॥
छं० ॥ १४५९ ॥

कर सिगि गुमान सुषी विगसी । पषिके दिस दस्तम षा नगसी ॥
न सद्दी प्रभु जंबुक की जरखें । धक्की धक धीग वरखी धरदें ॥
छं० ॥ १४६० ॥

गिरयौ षग' षान पुरेस गिरयौ । दस षेढ दिवान तसार ठिरयौ ॥
विभ्भि षेत रह्यौ षग पानि जिहा । ते आम मुवान अजान तहा ॥
छं० ॥ १४६१ ॥

षग सेल हुलैं हमला धर पै । गिरवानइ मेरु भुजा बर के ॥
उर पार फटे हुलसे निकसे । मनो पल्लव कोतिक्कि के विगसे ॥
छं० ॥ १४६२ ॥

जिन रावर राइ पुंडीर बरयौ । तिग धार नग्गहथ कोन रहयौ ॥
मनु पंच हजार तिलंथ्थि मिले । दस तीन समथ उठंत थिले ॥
छं० ॥ १४६३ ॥

सिर हक्कि सियाल सुगिद्धन सौ । इति कथ्थ कहौ समझौ सरसौ ॥
फुनि गिद्धनी ध्यान कहै रहसी । धिम विदुष जेद्द भए विहसी ॥
छं० ॥ १४६४ ॥

दूहा ॥ ते सब मिलि बर जंपि कथ । रावर राअ नरिंद ॥
सो वित्त भारथ्थ मे । सो कहि दुष्य सनंद ॥
छं० ॥ १४६५ ॥

हे चिल्ही भारथ्थ कथ । जंपि सुगिद्धनि सुद्ध ॥
सुनिय श्रवन भारथ्थ कथ । उहै हस बर सुद्ध ॥
छं० ॥ १४६६ ॥

(१) मो०—मग ।

कवित्त ॥ प्रिथी धांत सुनि बत्त । जुद्ध सामंत समर कौ ॥
वर मनुष्य जानै न । जान दानव अमर कौ ॥
सिर तुट्टै धरि रुक्ख । द्रोन नचि असि वर झारिय ॥
सबै सेन सुलतान । थान अस्तुति उच्चारिय ॥
सिर तुट्टि कमधज्ज मथिय दल । सो ओपम बरदाय बर ॥
वर जपत जिसी गज्जे बरह । बरजोरी जुग्गिनि नर ॥
छं० ॥ १४६७ ॥

दूहो ॥ दय बंध दुह बरन किय । सीस ईस को दीय ॥
तन धारा धर उत्तरिय । पलचर भूषन कीय ॥ छं० ॥ १४६८ ॥
कहि गिद्धन समझी सुबहि । ज्यों पित्थौ भारथ्थ ॥
समर नीर सथ्थह परी । सुकहिन सुमर भर कथ्थ ॥
छं० ॥ १४६९ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सुमर षावास । सेन सुरतान ढंढोरिय ॥
षरि सुगौर नाहर नरिंद । देह रष्षिय अजमेरिय ॥
पर्यौ बंध मुरकिल्ह । बंध हक्किग नवंध बनि ॥
परि भुआल गुज्जर सुबेर । सार सुरतान भज्जि मन ॥
रावर नरिंद सत जंघ परि । परि भग्ग भग्ग न कज ॥
तातारषान षुरसानपति । भुष चढ्ढे आहुट्ठ रज ॥
छं० ॥ १४७० ॥

साटक ॥ आचिज्जौ आचिज्ज राजन रनं भूपाल भूपालयं ॥
भारा क्रांत निवर्तयंत धरनी निर्घातयं धातयं ॥
धारा धाक सु धुक्क धक्क धरनी छारं सुरत्तानयं ॥
गोरी सेन चिवार तुंग तरुनी तारा य तारायनं ॥
छं० ॥ १४७१ ।

दंती दंत उभत्त मत्त उभरी कुहाई कुहाइनं ॥
ढालं ढाल उढाल भाल उलल मभ्भाइ उनं ॥
हाथं हाथ सु हंस हंस तुअगी जूते जटो जूटनं ॥
लूटा लूटि सुषग्ग षग्ग षचरं षद्धामि षायानन[2] ॥
छं० ॥ १४७२ ॥

(१) ए० कृ० को०—सत । (२) ए० कृ०--सायइनं, को०-षायइम ।

अंती अत सु अत रोइ उडन सुगाय सुपुट ॥
रभी रभ सुरमयाइ वरणी बभोइ रभाइन[1] ॥
षाम हाथ प्रषंड जैत छितयं मेछ समुद्र मही ॥
नेज नेज सुनेत मेत किरय लम्भाय सुत्ती सही ॥ छ० ॥१४७३॥
नव स्वरा षड गुज्जराइ सिरय ओन छिता ओनय ॥
सारूर[2] घर ढकि गोरिय घरं घर नाभित गिद्धरं ॥
ताके लत्तत वकत कुड लि जिम वाना छिता वानय ॥
सा वान सुनि मिषड इच्छ उवन ओरामितं घसर ॥
छं० ॥ १४७४ ॥
मष भीमच्छ पुंडीर पावसरस सिंधा दिनंरावरं ॥
षा पाना षुम्मान जोति उभय दु छानि दुछ उर ॥
वोइते कूरभ पग्ग पलय आमानि अहों दल ॥
है है कति कहति हु ति उरवी लक्क ति नाय पुर ॥छ०॥१४७५॥
सा सुनय चहुआन सीस धुनयं भूमी विघराइनं ॥
चोर ढार सुचोर पानि उडय सकातस्य उच्चोरय ॥
सा सक तिग रजत साह पुलय होसत देवं पुर ॥
अगी अंग विछुट्टि छुट्टि भरय चढाय आयासनं ॥
छ० ॥ १४७६ ॥
चामर चुंगल चंपि अम्रमिय एकं घटी गुलय ॥
सा जुद्ध प्रथिराज राजन इक भेछानि से सत्तय ॥
सै सुष्प षुरसान पान भेरिय हिंदवान हिंदू हद[3] ॥
काहं साहि सहाव गोरिय घर षम्मान भूनप्पाय ॥
छ० ॥ १४७७ ॥

अरवखां उज्जवक का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ सारे आलम का गुमान । आरव उजवक्किय ॥
मासवान सुरतान । सार लग्गै नह छक्किय ॥
दह भारा कम्मान । तीन सायक तेरह सैं ॥

(१) ए० समाइनं ।　(२) मो०—सासूर ।　(३) ए० कृ० को—दह ।

अठारह लोहंपा। अंध कढ्ढै मुर हंसै ॥
वेहध्थ करार्ऊं हथ्थ को। बध्थ राज घरान कहै ॥
सुजनंक मुसाइत[1] छंडि हय। तकि तकि संमुह रहै ॥
छं० ॥ १४७८ ॥

वह तक्षै प्रथिराज। राज कै उद्दितोरन ॥
दिट्ठे दिट्ठ सरस्र। लिये सरदां लुष ओरन ॥
वाई उर्ष आई। चाप पुंगप उच्छंद्दिय ॥
सारंगी सारंग। मीस वनसद्धि उपट्टिय ॥
पहुआन कमान। कर्ष्षि करि। अग्गिवान ठट्टर वट्टिय ॥
सनि षान पषान षिसान उड़ि। बहर नकि मक्षी रट्टिय ॥
छं० ॥ १४७९ ॥

पृथ्वीराज की बानावली से यवन सेना का छिन्नभिन्न होना।

बीय बान सिंदूष। मद्धि सुरतान आन वहि ॥
यहबत्त षां छिल्लरिय। सीस सिप्पर समेत ढहि ॥
तीय बान ताब्बंत। ओहि करि आलम गोइय ॥
वेद बान पुरसान। षान मुष मद्धि समोइय ॥
पंचमी षरग षर्षिय षरकि। मरकि पुट्ठि गोरिय सुभर ॥
अस उंच बाह अस्तुति करै। पूव पूव हिंदु सुहर ॥
छं० ॥ १४८० ॥

मोतीदाम ॥ धरै गुन पंच उभै दुक तोन। रच्यौ नपिराज गुरू जिम द्रोन ॥
सुरंगिय सूसिय पथ्थ अोन। तजी तलके मति घट्टित जोन ॥
छं० ॥ १४८१ ॥

सभी सम सुद्ध पिथ्थनि भान। क्रूमे पहु पंजुलि अंमर गेन ॥
भ्रमी क्रमि अच्छरि कच्छरि छौन। बदै बर गिद्धनि संमर दौन ॥
छं० ॥ १४८२ ॥

मुरी घर गोरिय साहि सुदुट्ट। पराक्रम राज प्रथी पति रुट्ठ ॥
.... छं० ॥ १४८३ ॥

(१) ए० कृ० को०—मुसाइत।

संयोगिता का कहना कि युद्ध का अंत कहें।

दूहा ॥ रन रुध्यो गिधनि कहै। सिद्धि सजोइय कंत ॥
समली स्याम सुलच्छनिय। जड जिय कहि न्रप अंत ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

अस्तु गिद्धनी का सारे युद्ध का वृत्तांत कहना।

हनूफाल ॥ कर करषि कांड बान। फटि थान अगिभर बोन ॥
बजि पष तेज प्रमान। लगि उपल उड्डत किसान ॥
छं० ॥ १४८५ ॥

जनु होरि जारिय अग्गि। लगि सजर उड्डि गय नग्ग ॥
दुति तोमर सिदूक। ढहि कंक जोगिनि कूक ॥
छं० ॥ १४८६ ॥

सुरतान बसत सनूर। बह बल्ल ढलरि चूर ॥
चिय बान तकि करष्पि। धन सेन सिध भरष्पि ॥
छं० ॥ १४८७ ॥

बरबड्ड वेदहि सष्पि। बढि छुट्टि अचि परष्पि ॥
षुरसान रद्दन सुपडि। धर दसन इक्क सुमडि ॥
छं० ॥ १४८८ ॥

धर धरनि पंचम बान। वहि पिट्ठिय सुरतान ॥
सुर असुर कोतिग कीन। दिन अवधि अनहि सुभीन ॥
छं० ॥ १४८९ ॥

गज मत्त जिहि सर फुट्टि। पहु प्रान तजि धर लुट्टि ॥
लषि दीह अन सुरपत्ति। वर वरनि अंत सुगत्ति ॥
छं० ॥ १४९० ॥

कर मच्छ करि भर पाज। रन विटयौ प्रथिराज ॥
फिरि घेरिय न्रप मीर। जनु गिरन लागे बीर ॥
छं० ॥ १४९१ ॥

बल प्रबल करि करि सेन। रन रेन छहित गेन ॥
गज कंध गोरिय साहि। गन सूर सनमुष चाहि ॥
छं० ॥ १४९२ ॥

षुरसान षां गज चूरि । सनमुष चासन पूरि ॥
अनु अनल अग्ग उतंग । चिहुं पास विंटित गंग॥
छं० ॥ १४९३ ॥

भर मेच्छ कूट प्रकार । मधि इंद मनो सुनारि ॥
धरि कंध धनु नृपचास । गहि कुलिस सुत नित तास ॥
छं० ॥ १४९४ ॥

दिव देव देवै रूप । अरि वलनि वल्लिय भूप ॥
जल जलधि विथरित वद्धि । अनु मंदिरा गिर मद्धि ॥
छं० ॥ १४९५ ॥

गह अमन भर सुरतान । प्रिथिराज वधन प्रमान ॥
धरगेन सुर सुअ सूर । तिय लोक चरपति सूर ॥
छं० ॥ १४९६ ॥

कविचंद दंदन देषि । इह दइय रोस अलेषि ॥
छं० ॥ १४९७॥

वीरभद्र का शिव से कहना कि सब रोना के मार जाने पर पृथ्वीराज ने एकाकी युद्ध किया।

। ॥ सनुष गव्ह सिव अग्ग कथि । बीर भद्र सम वीर ॥
रह्यो एक संभरि धनी । लाज ओटले धीर ॥
छं० ॥ १४९८ ॥

टक ॥ कृप्पानं कृप्पान मांनय पनं दति वंस पासज्जरं ।
पुंजं कुंजर कूटि तूटि समयं पौरस्स जा सिद्धरं[1] ॥
तरुनं तेज समान गैन हनयं धूह्हीर धत्तं घनं ।
सा षग्गं किरपान पत्त गहियं उम्भारि बंका दिनं ॥
छं० ॥ १४९९ ॥

।ा ॥ है चिलिहनि गिलहन सुजग । धज सम धवल नरिंद ॥
और न पल पंपिन परै । अलप जलप्पय निंद ॥
छं० ॥ १५०० ॥

उड़ि पंषिनि अंषिनि निरषि । अषिल[2] अषंडल लागि ॥

(१) ए० कृ० को० सिंद्धयं । (२) ए० को० अषिष ।

घरी एक पाछैं प्रगटि । बीर बिभाई जागि ॥
छं० ॥ १५०१ ॥

दूहा॥ चय जु समर गिद्धिनि समर्व । कहि षहपत्ति सहाय ॥
प्रथिय कुक्क जुद्ध सुबुधि । आइय काहन बिभाइ ॥
छं० ॥ १५०२ ॥

युद्ध की रात्रि को संयोगिता का एक डंकनी को स्वप्न में देखना ।

कवित्त ॥ डवरु हथ्थ डकिनिय । दसन एकय अधरानन ॥
स्याम तिलक जुप्पियन । कन लवे कधानन ॥
उरध केस सिर हरिग । नेन पगिय कुल नगिय ॥
पिय आलिगन अलग । चमर अंबर कटि ढगिय ॥
पुस्तक प्रसंग वचय विहत । राजरवनि मंडेहि श्रवन ॥
बेरवान विप्रनी पंचमी । सुनि सुन्दरि जुद्धहि रवन ॥
छं० ॥ १५०३ ॥

डंकनी का युद्ध का समाचार वर्णन करना ।

भुजंगी॥ उव जुद्ध हद्द सुज पै बिभाई । जहा सेन छंच पती पातसाही ॥
जहाँ सेत चोर जु मोरं धिमाही। जहा वैरय सेत ता गज्जगाही ॥
छं० ॥ १५०४ ॥

जहाँ सेत गज्ज झंप गज्ज मुत्ति भौरं । जहां पष्षरी सेत भौज हिलोरं ॥
जहा सेतवासं सिता नेज झंडे । जहा सेत दंतीन आवद्ध मंडे ॥
छं० ॥ १५०५ ॥

जहाँ सेत आरंभ पारंभ सेतं । जहा सेत ताजी सिता ग्रीव नेतं ॥
जहाँ सेत उच्चारिका सेत साजं । जहा सेत सारंगही फौज राजं ॥
छं० ॥ १५०६ ॥

जहाँ सेत सिंदू सिता लागि वाजी। जहा सेत ढाल सुआलम्म गाजी ॥
तहाँ नषि बाजी धरे लाज राजं । जुटे देषियै सूरते स्वामि काजं ॥
छं० ॥१५०७॥

पद्धरी ॥ भर हरत भार नृप सार मार । घरहरत पलक सरकार अपार ॥

थरहरत मेछ सुजाण हमीर । सरहरत सेस धर हरत धीर ॥
छं० १५०८ ॥

फरहरत एक धर परत तुट्टि । झरहरत रगत सिर गुरज फुट्टि ॥
छरहरत छुट्टि सत एक षेत । ढरहरत ढार ढरि लाग सेत ॥
छं० ॥ १५०९ ॥

तरपरत एक उप्पर चढंत । धरपरत कंध धर असि कढंत ॥
परहरत धीर धावंत रुंड । पारंत चीह वकि वेंन मुंड ॥
छं० ॥ १५१० ॥

बरहरत बीर घर चरन बार । भरहरत तुंग त्रसिवर दुमार ॥
उड्डंत सार बुड्डंत भीर । रुडंत अंत जल रत्त नीर ॥
छं० ॥ १५११ ॥

फारंत फरड हडमंस तुट्टि । इम समर सूर तुअ नाथ जुट्टि ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

पृथ्वीराज का अतुल पराक्रम वर्णन ।

त्त ॥ वज्रपात निरघात । धरनि की अंबर तुट्टिय ॥
दरिया दधि किय मथन । अद्रि गिरराज अहुट्टिय ॥
हनुअ द्रोन उप्पारि । आनि नंषिय किलंक तट ॥
गोरवधन गोकुल कि नाथ । छंडौ किसौर घट ॥
दल धरनि सिरन सिष्षर रहै । दैव कि किन उप्पर परै ॥
डंकिनिय करै तुअ कंत इम । सुर विहान अस्तुति करै ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

री ॥ देषेव थान चहुआन च्यारि । प्राक्रम तास लम्भं न पार ॥
कीनौ सुजुध आजुध तेम । उपमान मनहि आवै न नेम ॥
छं० ॥ १५१४ ॥

मन भयौ विकल गोरी नरिंद । मग्गै सुमीर जग षे रविंद ॥
अखि खसे मीर महमुंद तास । आएव साहि कीनौ सलाम ॥
छं० ॥१५१५॥

(१) ए० कृ० को०—रकत।

उत्तग अग परचड भुत्र। भुज लहै कोरि एकोक जूश्र ॥
हय उच जाति ऐराक बस। आरोहि तेन बाली उधस ॥
छं० ॥ १५१६ ॥

सम पूरि सिलह दोउ अग आप[1]। अंदभुत तेज पग पचि ताप ॥
कम्मान काल सिर धारि ढाल। पेपत सेन भज्जै पराल ॥
छं० ॥ १५१७ ॥

बोलयौ गाजि सम गज्जनेस। चहुआन पान कट्टन[2] सरेस ॥
जपयौ ताम गोरी सहाव। बिन हयं कित्ति बढ्ढै सुभाव ॥
छं० ॥ १५१८ ॥

हम बेर बेर इन गहे मुक्कि। करतार ताइ कट्टै सुसुक्कि ॥
सग्रहौ तुम्म जगल नरेस। हम तेज ताप दयौ असेस ॥
छं० ॥ १५१९ ॥

सुनि फिरयौ सज्जि महमुद मीर। [3]बधन सुपानि चहुआन धीर
सम आय पास हय तक्कि तार। प्रथिराज दिठ्ठि दिठ्ठी करार ॥
छं० ॥ १५२० ॥

महमूद खां का राजा के साम्हने आना और राजा का उसे मार गिराना।

कवित्त ॥ निरषि राज प्रथिराज। दिठ्ठ महमुद करारिय ॥
मुठ्ठि बान सडयौ। तक्कि ताजी उप्पारिय ॥
बथ्थ तथ्थ चित्तिय समथ्थ। चहुआन मनि मन ॥
धरिय झलक सिगिनिय। सुलल विषझाल काल फन ॥
नषयौ तानि छिद्द विहद। आवतो सर मार मनि ॥
षचेवि हयौ केवर कहर। तुट्टै मढ्ढि निरुद्ध उन ॥
छं० ॥ १५२१ ॥

पुष भाग पवि अग। उद्धि आयाम पौनि पर ॥
लागि बान सपष। मनो विन हस धरा ढरि ॥

(१) ए० कृ० को० पार। (२) मो०—कट्टने।
(३) ए० कृ० को०—बधनि सुपनि चहुआन धीर।

अग्रबान लगि उरनि । भयौ महमुंद सुरेसं ॥
बड़ौ अंग बिहंग । मनो बिल उरग प्रवेसं ॥
महमुंद विकल तन परि अवनि । जानि कि नट्टह लाग सजि
धन धंन्य सयल जंपिय सकल । विकल चित्त विभ्रम्म रजि ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

कुंडलिया ॥ जिहि बिध्धौ सुरतान दल । सो रुंध्यौ रन रप्पि ॥
गुरु गुरुतानो वज्जिया । बीर बिभाई भष्पि[1] ॥
बीर बिभाई भष्पि । खेल नंच्यौ पतिसाही ॥
गजकंधां आरोह । दिट्ठ दिट्ठे सिरताही ॥
राजबान उज्झान । समर तक्यौ करि संध्यौ ॥
सो रुक्यौ रन राज । जनही पति साह सु बंध्यौ ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

महमूद के मरने पर ३१ गोर सरदारों का राजा पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ देष्यौ देव रस महयत । रन उट्ठौ चहुआन ॥
फिरि घेरयौ गोरी सयन । मनो नछत्र नभान
छं० ॥ १४२४ ॥

कवित ॥ चिहुटे बाम बिछुट्टि । दिट्ठि उन्निय मुठि भिन्निय ॥
कछु घन तारे घत्त । सगुल झंझारि बर धुन्निय ॥
कछु आवरदा सान । मास अट्ठा दिन उन्निय ॥
टोप सहित सिंदूक । छुट्टि सुझी रहि झुम्मिय ॥
अलि अलिय बंध लग्गिय कहर । धरधमंक सुच्छिय धरह ।
एकतीस षान सुरतान सम । धरनि राज गह गह भरह ॥
छं० ॥ १५२५ ॥

लेहु बंध तुम हिन्दु[2] । राव बाराह करन भष[3] ॥
पैगंमर कै पास । बान हिंसान भरन लष ॥
हथ्थ मंडि आरज्झ । लइ मांमा महि छिन्निय ॥

(१) ए० कृ० को०—लाप्पे । (२) ए० कृ० को० हिन्दुअ तुम्म ।
(३) ए०.नप ।

जं चंदा बल पाय। तेक तिस ऊपर किन्निय ॥
कै वीर[1] हथ्थ दीय। हिया[2]। अब लम्भै पच्छो किया ॥
इकतीस मसद विसद फिरि। लेहु लेहु राजन जिया[3] ॥
छ० ॥ १५२६ ॥

मीर सरदारों का कहना कि कमान रखदो। राजा का न मान कर बाण चलाना पर चूक जाना।

दूहा ॥ कहहि मेछ मुह अग्गरे। वे कोफर फरजंद ॥
बाह पान पुरसान की। सिंगिनि अप्पि नरिंद ॥
छ० ॥ १५२७ ॥

सह्यौ न बोल सम्मुह ह्यो। वाह पान पुरसान ॥
इह अपुब्ब संजोगि सुनि। दिन पलट्यौ चहुआन ॥
छ० ॥१५२८ ॥

दिन पलट्यो पलट्यौ न मन। मुज वाहै सब सस्च ॥
अरि भिटन मिट्टै कवन। लिष्यौ विधाता पच ॥
छ० ॥ १५२९ ॥

श्लोक ॥ विधाता लेषित यस्य। तन्न मुचति मानवा ॥
म्लेछाना बधन हस्ते। सुविहान दिल्लेश्वर ॥
छं० ॥ १५३० ॥

[4]यत्र सुष्ख तत्र दुखं। उभयो प्राणधयो ॥
नहीं सुष्ख नही दुःख। प्रान जविधयो लयो ॥
छ० ॥ १५३१ ॥

कबित्त ॥ जो पलटै सुंदरिय। पै जीय पालन पिय चायौ ॥
यो पलटौ प्रथिराज। सीस लग्गा गुन पायौ ॥
पां पुरेस सुध षप्प। गोन काम पट्ठ सहसपत ॥
परो सीस कम्मान। पान लग्गी सस सो गत ॥

(१) ए०— गाई।　　(२) ए० कृ० को० दीना किया।
(३) ए० कृ० को०—हिया।　　(४) मो० कहा सुष्प तहा दुष्प।

भिरि भीर मीर पंतर सुगत। टरिय राज जिय गोपरी ॥
जानें कि द्रोन बलिभद्र ने। सुत पर जद्दव सम्भरी ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

राजा का कटार निकालना और पकड़ा जाना।

एक बान कम्मान। साहि चहुआन कोप गहि ॥
षां ततार लहु बंध। कढ्ढे सुरंग बहि ॥
ओड़न लंघि नरिंद। वार कढ्ढिय कट्टारिय ॥
दिन पलथ्थौ चहुआन। हथ्थ छुट्टै नह तारिय ॥
भावी बिगत्ति भजंन घडन। दइ दुवाह इह निम्मयौ ॥
[1]पृथिराज गहन सुरतान कौं। मुष जंपन बर सुम्भयौ ॥
छं० ॥ १५३३ ॥

होतव्यता की प्रभूति वर्णन।

भरत बार दुरजोध। पानि संग्रहि रोरह वर ॥
नल मुक्कै भट नट्ट। गोपि ग्राहत तन पंडर ॥
मलह सिंह कढ्ढि छदंग। गूजर राव अंगन ॥
छूर राह संग्रहन। दान छुट्टंत सो पुनि घन ॥
राजेस छूर संभरि धनी। अरि वसि परि मंचन सुगुर ॥
सामंत छूर सब्बैं परैं। रह्यौ एक रूपे[2] पहर ॥
छं० ॥ १५३४ ॥

पुंआपै जपहार। बलिय बंकट बध नौरौ ॥
जोगिनपुरिय सनाह। देव देवर रन वौरो ॥
दहिया जंगल राइ। चन्द सेनापति तारं ॥
भारी भारथ राइ। अरक करिवर उच्छारं ॥
ठंठरिय टाक चाटा चपल। चावद्दिसि रष्षे जपहि ॥
देवतिय तुंग चहुआन प्रभु। विग्गाइ भोयन जपहि ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

रति वाहां सोभंति। राइ जाजा गज चढ्ढे ॥

(१) ए०कृ० को०—सुरतान गहन पृथिराज को।
(२) ए० कृ० को०—रूप्यौ।

गज उप्पर ढहि पर्‌यौ । जानु तुट्टिय जिय कट्टै ।
कम्माला कालक । बिरद बाहाँ जिस ऊपर ॥
पहुपी नगौ ढाल । छूर सुद्दै जुग जुप्पर ॥
सुरतान काम सद्दै समर । राज सथ्थ जद्दो विधन ॥
अरिवान अ औलो बोलनौ । बोलै ड किनि याहि मन ॥

छं० ॥ १५३६ ॥

भूत होतव्यता का सकीर्तन ।

लोहानौ आजान बाह । पानी पति गड्डे ॥
लहुआ लोलहु आइ । बीर वड्डा ही वड्डे ॥
पानी पन्न सुअन्न । धन बसतर बास दे ॥
हय हथ्थी चय वास । ग्रास उप्पर ग्रास दे ॥
अथ्थाय स्वामि स्वाना गहै । चामडा वेरी भरन ॥
विभाई भीम भारथ भिरन । हय हना अग्गे लरन ॥

छं० ॥ १५३७ ॥

दिन चवथ्थि चतरंग । मंत सुरतान निघुट्टिय ॥
विभ्भाई भारथ्थ । बान प्रथिराज विछुट्टिय ॥
ढरिय ढाल वेहाल । परिय पथ्थार सुनार ॥
धन धन धन चहुआन । देव सुरलोक उचार ॥
प्राकृम्म काथ्य संजोगि सुनि । इह दिष्षी दिष्षी न कहु ॥
पारस पतंग दीपक जवन । चाहुआन क्रिस्तान सहु ॥

छं० ॥ १५३८ ।

करन राइ कुंडलिय । समर रावल वज्जीर ॥
अनहल पुर आभ्रन्न । राज रावत तिन भीर ॥
धोरै धुम्मिल्ल केस । राइ कन्हर कान्हर वै ॥
क्रूरभी बलिभद्र । वध आरज निड्डुर वै ॥
सुरतान ढान ढुंढत फिरै । रन वज्जित प्रथिराज लहि ॥
ड किनिय दुसह दुज्जन समर । बोलिय विद्रुम छंद कहि ॥

छं० ॥ १५३९ ।

दूहा ॥ दस सत्ता सामंत रन । दहतिय एक मसंद ॥

कहर कलह बलहनि सुनि । है संजोगि नरिंद ॥
छं० ॥ १५४० ॥

जिहि गुर पंच विपंच लहु । मंत विसोरह बंद ॥
डंकिनि डंवरु डहडहिय । रन हवि दुरगम छंद ॥
छं० ॥ १५४१ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ने वाले मीर योद्धाओं के नाम।

दुर्गम ॥ इवि हथ्थ तथ्थ असीसनं । गल कथन वथ्थ ग्रहीयनं ॥
भर भरनि भर सुर भारनं । झुकि झुम्मि होय मेछारनं ॥
छं० ॥ १५४२ ॥

धर धक्कि धमिक्कल धारनं । मिलि असुर सूर प्रहारनं ॥
पहुमोल मह मद आरनं । धकि जंग पान सुधारनं ॥
छं० ॥ १५४३ ॥

आलील आघुब षानयं । सारीर षां सुरतानयं ॥
पीरोज षान-प्रमानयं । उज्जारि गाजी पानयं ॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अरि बाह ईसफ पानयं । नारिंग नोचम जानयं ॥
चहुआन गहि वथ्थानयं । अविहात भूप रिसानयं ॥
छं० ॥ १५४५ ॥

अलि अलूषान सषानयं । कासिम्म कायम षानयं ॥
धर पंथ सेरन संचबी । महमुंद जैन सुने दवी ॥ छं० ॥१४४६॥
विपरी तभर भिरि मीरने । मुहिमास षान सुधीरने ॥
अलि आल आलम काम को । आकूब सामिस नाम को ॥
छं० ॥ १५४७ ॥

दूहा ॥ इलि गज्जहि अज्जम सुवन । भिरि भिर हिंदुअ मिच्छ ॥
आलम बिन हिंदु आलमहि । साहन सहु ग्रह इच्छ ॥
छं० ॥ १५४८ ॥

मारंगि मैरौं भूत तन । अरि गिल आलम षान ॥
पुछि[1] पिरोज नौरोज नै । सुबर[2] चंप्यौ चहुआन ॥छं०॥१५४९॥

(१) ए० कृ० को० पुष्टि । (२) ए० कृ० को० सुबर ।

कवित्त॥ बान एक बाराह। पान ढाहे धर उप्पर॥
करन राय कलहत। पिनक भिथ्यौ सिर जुप्पर[1]॥
श्रौहट्टी हम्मीर। बीर विच्यौ वारुन बर॥
दस मसद मसलिग। महत श्रावलि करि उप्पर॥
सोवलिग सिघ पट्टन पती। मति सुमेर सुरतान सम॥
ढकनिय कहै सजोगि सुनि। सच पयप्पौ सुमति हम॥

छं०॥ १५५०॥

वेलीद्रुम॥ डहडहति ड वरु डकिनिय। कहकहति कूकह जोगिनिय॥
तहतहति तेग तरंगनिय। वहवहति वान विरुहनिय॥

छं०॥ १५५१॥

हरहरति बज्जन बज्जनिय। पलपलति श्रोन पलक्कनिय॥
धरधरनि सिर विन नचियन। परपरति पजुलि प जियन॥

छं०॥ १५५२॥

कवि करत कलह न कज्जियन। रस निरति नोपुर रजियन॥
अति राज राजन अज्जियन। ॥ छं०॥ १५५३॥

कसि माह मार मसदय। इसि पार पच्छति छदय॥
उडि[2] हस हसनि इ दय। नत[3] अच्छरी प्रभु वदय॥

छं०॥ १५५४॥

डंकनी का मुसलमान योद्धाओं का पराक्रम वर्णन करना।

दूहा॥ छिति छत्री सद्धे धरम। सुद्धह मन समूल॥
वीर इष्ट सभारि करि। मडि पग्ग सम झूर[4]॥ छं०॥ १५५५॥

गाथा॥ पति अग्गिनि विभ्भाई। वित चतुरथी समर सौ वुद्ध॥
प चमि कलह सगुर श्रौर। कथि कविचद साइ निज धाम॥

छं०॥ १५५६॥

कवित्त॥ आलम षां इक बान। इक बानह भुअ भेरू॥
एक बान गारि गनेस। ज गिय कुल केरू॥
छचचोर सम्रान। नेज झडे झकझोरिय॥

(१) मो०—सरजू पर। (२) मो०—उड़।
(३) ए० कृ० को०—तन। (४) ए० कृ०—कूर।

कहुँ अरि अंकुरिय। तिष्प तोरन तन तोरिय ॥
हिंडोल लोल छिन छिन फिरिग। कर कमान कंदल करह ॥
बारधि विलोरि सुरतान दल। जदौं जाजु अतुलित बलह ॥
छं० ॥ १५५७॥

अतुलित महमद मद्दि मसंद। असु असन न एतिग ॥
सतुलित सारथि कर कमंध। जंबूर वहं तगि ॥
मतुलित मीरां मद्दिरवान। धुक्किय धर नंपिय ॥
धरपरंत सामंत। मार मारह करि हंकिय ॥
जग्गयो जाज आवाज सुनि। सजि परिंत गेवर धटिय ॥
हय हय जुसद्द त्रिभुवन त्रिपुर। वर विमान कुलटह छुटिय ॥
छं० ॥ १५५८॥

पारि हारि पीपा प्रसिद्ध। सुरतान जु दिट्ठिय ॥
बिहर कुंत सामंत। अंत अंतरिय सुनट्ठिय ॥
पति पसाव पंडव जुरंत। हक्किय हक्कारिय ॥
उल हल्ल हलकारि। कुंद वंदन उच्छारिय ॥
बल विषम सुषम स्वामित मतह। हित सुराज रंज्यौ रनह ॥
इय बाह वाह हिंदुअ तुरक। समर सत्त तुट्टिय तनह ॥
छं०॥ १५५९ ॥

दूसासन दिट्ठिय षंधार। आडौ पुर पारिय ॥
केस साहि उर चंपि। बीर बंवरि उच्छारिय ॥
षान आन चहुआन। बान वर धरनि पछारिय ॥
रे हिंदू रे मुसलमान। भिरि भिरि पुक्कारिय ॥
छंडौ जुगौइ छंडन जुगति। बर निसान बुल्लै मनह ॥
सक सिंघ नाद सिंघह गुरिग। गहर गिंभ सिंघौ घनह ॥
छं० ॥ १५६० ॥

घन धुरंत गोरिय सयन्न। पीरोज षान धपि ॥
तिहि टट्टर तक्कि तेग। बेग झारिय झनंक झपि ॥
षूब साहि साहाब। सनमान मुहन्निय ॥

गहि गष्पर[1] परिहार। अस्त सम सम दुय अन्निय॥
नीधक्क धाम डिग[2] महर। हट्टुम स मि डिग असन॥
वाजी वनिक करि कुथ्थरिय। जनौं पारिक पलहक्क सन॥
छं० ॥ १५६१ ॥

आनन अन ज वूर। बीर विह्निग धर तुट्ट्यौ॥
तव व कट वधनौर। राइ केहरि कर छुट्यौ॥
गौरिय गज्ज गुजार। हलि हथ्थ हक्कारिय॥
छल पुच्छै पच्छारि। वाघ लगयौ वक्कारिय॥
गहनाय गरुअ गे वर मुरिग। ढाल ढाल आलम डरिय॥
वलि अट्ट वलिय ओनह अवनि। पति पवित्त कीनी धरिय॥
छं० ॥ १५६२ ॥

जूना चित्तह कूट। राम रावन भर भारौ॥
समर सिंह की आन। साहि लग्यौ ग्रह कारौ॥
दान मान छुट्टैन। गरुअ गे वर गुरि हल्लिय॥
आउ ग्रह उग्रहिय। राह धुति ते वर पल्लिय॥
पर पुट्ठि दिट्ठ नयनह पिसुन। वारर वर आय वुहहै॥
सुरतान षान पजर वहिग[3]। जग हथ्थह जीवत रहै॥
छं० ॥ १५६३ ॥

नूफाल ॥ इति अत कालनि इक्क। सुरतान मुच्छिय गच्छि॥
भै भीत जननिय लच्छि। परि भूय आवलि कच्छि॥
छं० ॥ १५६४ ॥

इसि असद षान कमान। निय नषि दै अहुआन॥
परिवार पारस झुझ्झि। दस दैव गति आवुझ्झि॥
छं० ॥ १५६५ ॥

कवित्त ॥ इकतीसौ आसद। मारि मसद महाभर॥
दह सत्ता सामत। सूर जजुरिग धरा धर॥

(१) ए० कृ० को०—पप्पर।
(२) ए० कृ० को०—मींडिग, मिंडिग।
(३) ए० कृ० को०—पगर।

द्वै घायां कलहरिय। सोम जीवत उप्पारिय ॥
अग्गामी अग्गिवान। राज बथ्थां पच्छारिय।
ए बथ्थ परं दादिट्ट भें। भग्गा भग्गा इन हर्यौ ॥
सावन वदि पंचमि पंच कर। सांई मैंछाइन धर्यौ ॥
छं० ॥ १५६६ ॥

संयोगिता का डंकिनी से कहना कि राजा का पराक्रम कह।

दूहा ॥ हे डंकिन भष्षिन सुजन। मंस रुधिर सम अध्ध ॥
कहिन पराक्रम राज कौ। मीर समाहत वथ्थ ॥
छं० ॥ १५६७ ॥

कै रामायन कप्पिवर। भारथ भीम न पुट्टि ॥
पिथ्थ पराक्रम पथ्थ सम। भावी दैव न छुट्टि ॥
छं० ॥ १५६८ ॥

सकल सूर सामंत रन। भए छिन भिन्न सरीर ॥
उदधि बिषम सज्ज्यौ नृपति। हय गय नरनि अरीर ॥
छं० ॥ १५६९ ॥

पृथ्वीराज की वीरता पराक्रम और हस्तलाघवता का वर्णन।

मोतीदाम॥ रुप्यौ रन राज सुरज्जिय अच्छि। मनों दसकंध सभा वलिवच्छ॥
रहे करि कुंडलि मिच्छ करेर। मनों लघू पब्बय सेवहि मेर ॥
छं० ॥ १५७० ॥

महा महि गोरि समुद्द सयन्न। मनो वड़वा नल रज्जि रयन्न ॥
चिह्न दिसि चंपहि बग्ग उठाय। ते दीप पतंग ज्यों मध्य समाय ॥
छं० ॥ १५७१ ॥

झरप्पहि बाज ज्यौं मीर झुझार। लुहार जलं जिम बुड्डहि सार॥
सिहद्द जलद्द ज्यौं भद्रव सूर। तरप्पहि बीज ज्यौं राज करूर ॥
छं० ॥ १५७२ ॥

गहौ कर संगिनि संभरि वार। मनों दल दंगति दीसय सार ॥

परें द्रिढ मुट्ठि निहन्नत तक्कि । परीकम पिप्पि रहैं सुर जक्कि ॥
छं० ॥ १५७३॥

भरीकर कन्न लगै तिन पार । धुकै धर यौ भर ज्यौं पहतार ॥
सविह्व हयग्गय पष्षर घाइ । लगत गिरत फिनग न पाय ॥
छं० ॥ १५७४ ॥

मयंद गयद गिरैं बल फारि । लगत नियान गिरत चिहारि ॥
ढलतिय ढाल सुभ्भड निहारि । मनों गिरि तें गिरि सप वधारि ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

चलत अनी लगि टोप सिरन्नि । मनो रवि उड्डि उरग्ग धरन्नि ॥
करी तनय हय हनत तक्कि । बगत्तर पष्षर भक्खि सनक्कि ॥
छं० ॥ १५७६ ॥

भची धर धुधि न सुभ्भझय नेन । श्रवन्न न सुन्निय सद्द सवेन ॥
पहचरय धर पसन सुभ्भिझ । मनों दव दगल¹ गाधर बुभ्भि ॥
छं० ॥ १५७७ ॥

सिवाल रु स्वान ते अत अलुभक्खि। मनो छद पारधि पग्ग अरुझ्झ॥
रहीं कर सिगिनि पुट्टिय तोन । जितत्तित उड्डुत दिष्षिय श्रोन ॥
छं० ॥ १५७८ ॥

किरवान कटी सुमनो डुडवारि । नचौ कर जोगिनि पष्षर डार ॥
दुहथ्थ नहनत हथ्थिनि सीस । मनो दल लग्गिय पव्वय दीस ॥
छं० ॥ १५७९ ॥

भसुडनि दतनि टूक उडति । ससि अप्प मनों जल रत्त बुडत ॥
उठै बहु छिछ करी निधरन्न । मनो भर बट्टुति नन² धरन्न ॥
छं० ॥ १५८० ॥

घन जिम बज्जहि घाय घनक्कि । लगै तिनयतन तच्छ छनक्कि ॥
टुटै पग द्वैकार सगिय सज्जि । मनो बन षड धनजय रज्जि ॥
छं० ॥ १५८१ ॥

हनतति तानति तामस मच्चि । मनों बलिभद्रह लपल पच्चि ॥

(१) मो०—दल दैग । (२) ए० कृ० को०—नीन ।

किधौं हनवंत गदा कर कीन। दुनों दल दुंदुभि रावन भिन्न ॥
छं० ॥ १५८२ ॥

रही नन अच्छरि इच्छि वरान। जयज्जय जंपहि देव विमान ॥
चवंसठि नच्चिय रच्चिय रारि। रहे रस रचि पडं अटधार ॥
छं० ॥ १५८३ ॥

निरत्तहि नारद बज्जिय तंत। उभं यति साचरु भूतनि भंति ॥
जुटे सब सस्त्रन आवध हथ्थ। वढ्यौ वल राज समाहिय वथ्थ ॥
छं० ॥ १५८४ ॥

धरें पग हथ्थ हनंत धरन्न। रजक्क सिला पट पीटि वरन्न ॥
गहै भर नंपत हथ्थिन ठेलि। मनों मद गंध चलाइ चवेल ॥
छं० ॥ १५८५ ॥

सिर सों सिर हैकार हंनत दीस। ज्यों जोगिय तुम्मर फोरत सीस
वड़वा वढ़ि वाय सहाय ज्यौं दंग। [1]इसे न्नप इष्ट वर्ल रन रंग ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

सहै न मसंद सनंमुष जंग। मनो दल दानव ज्यों कपि पंग ॥

पृथ्वीराज को पकड़ कर हाथी पर बैठा गजनी ले जाना।

करी मति धेरन हथ्थिय गंस। सुत रावन ज्यौं चतुरानन पंसि।
छं० ॥ १५८७ ॥

परी चिहुं कोदह घेर नरिंद। कढे कर दंत ज्यौं भिसिय कंद ॥
सुसंग्रहि संकट सूर निसंधि। लियौ न्नप गोरिय साहि सुरुंधि ॥
छं० ॥ १५८८ ॥

गजंभर ढाल बैठाय नरेस। चल्यौ गुरि गोरिय गज्जन देस ॥
छं० ॥ १५८९ ॥

दूहा ॥ ग्रहे राज गज्जन चल्यौ। तब रन रत्ता सूर ॥
अछु आवध वज्जि अत। संधारिग भर सूर ॥
छं० ॥ १५९० ॥

कवित्त। गहत राज प्रथिराज। भोम कंपिय पायालं ॥
भौ अंतर ग्रह पत्ति। पति अंमर मंतालं ॥

(१) मो० इसे नृप इष्ट वलं च परंग।

गै अभग लै व द । मत्त भग्गै भ्रम मग्गा ॥
घरन च पि दर पार । बीज हिदवान दिपग्गा ॥
हि दवान प भ भग्गे उमै । समरसि ह चहुआन वर ॥
कालक सकाल प्रगट्यौ भुवी । दीऊ अवनि कलि भग्ग धुर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

दूहा ॥ भग्गे दोय वियान वर । सत भग्गा बल भग्ग ॥
चाहुआन सुरतान कर । परग बीर लग्ग ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

गहि चहुआन नरिंद वर । षेत ढुंढि सुविहान ॥
भर प्रथिराज नरिंद को । गवन कीय ग्रह थान ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

भज्जि परी प्रथिराज ग्रहि । जमुन नीर दल सज्जि ॥
तदिन साहि गोरी ग्रहन । वज्जे मंगल वज्जि ॥
छं० ॥ १५९४ ॥

पृथ्वीराज का बंधन सुनकर संयोगिता का सहसा प्राण त्याग देना ।

कवित्त । अनाचार परवरयौ । परयौ यातिक सह भुक्तिक्षय ॥
हाहुलि राइ हमीर । साइ दोही तिर बुक्षिक्षय ॥
सिव केसव करि भेद । भेद करि देवह नयौ ॥
पचतत्त प्रमरत । सत्त भजि साहस सयौ ॥
पहुपग राइ पुत्तिय सुनहि । मुत्ति[1] विलब न कत मिलि ॥
षट मास बीस बासर विहत । लहित सोममडल सुहलि ॥
छं० ॥ १५९५ ॥

त्रोटक । हति[2] ह तति हतति ह त तिह । डवरू डहकतति जोगिनिय ॥
भवरी वर हसनि हस तिन । फुटि रभ्र दिसा पहुप्रान विन ॥
अलि आलिनि आलिनि सोह सिय ।　　छं० ॥ १५९६ ॥
चिग तत अनत सु मच मन । छलही छलहत सुहत हन ॥
छं० ॥ १५९७ ॥

(१) मो० सुचि ।　　(२) ए० कृ० को० तिहि ।

पद्मा पद्मा सन आसनयं[1] । पिय प्रेम प्रबंध सुवासनयं ॥
भरि ध्यान उमा मनसास लयं । उडि सिद्धि अयासन आसनय
छं० ॥ १५९८ ॥

कवित्त । संजोगिय आसनह । जीव जंजरिग जरिय गत ॥
षंजरीट म्रगराज । इंद गय हंस भ्रिंग पति ॥
अप्प अप्प अप्पियन । सपन जंमन दिठि अप्पन ॥
निभै राज गत[2] काज । काज किन्नौ क्रम नप्पन ॥
चिंतिय सुचिंत डंकनि उड्डिय । षुडिय परंत परेव ग्रिह ॥
संचरिग जुद्ध सामंत दह । उगति बंध कविचंद कह ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

न मिटै लिषित लिलाट । लिष्यौ ब्रह्मासिर अष्पर[3] ॥
असुर गह्यौ प्रथिराज । सुनत संजोगि परिय धर ॥
चंद्र सूर ग्रहरिष्य । इंद्र सुर नर असुराइन ॥
सिध साधक मुनि राइ । मंत तंतिय तारायन ॥
को सकै अवर आरंभ करि । जो विधिना विधि गति भन्यौ ॥
निग्गान बात जुग जुग लगै । नह दिट्ठौ मिंटन[4] सुन्यौ ॥
छं० ॥ १६०० ॥

दूहा । बहु बिलाप सब मिलि करहि । नहि सुधि बुद्धि गियान ॥
प्रीय बचन अप्रीय सुनि । गये संजोगिय रान ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

प्रान जात नह पल लग्यौ । सुनि संदेस विराग ॥
सुनत बचन प्रियजन कु काल । धन्नि त्रिया तो भाग ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

दह सामंत परंत रन । ग्रह उग्रह न मरंत ॥
सत्त सुराजन ग्रहत जुध । मुरि मुरि मेछ मुरंत ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

(१) मो० बासनयं । (२) ए०कृ० को० गज ।
(३) को०—इष्षर । (४) मो०—मिंतन ।

पृथ्वीराज के पकड जाने पर शाह का पडाव साफ करना ।

कवित्त । आनि गह्यौ प्रथिराज । टट टठरिय ठुक्कि दल ॥
धक्कि धार धारिय । परत वार उह विरद बर ॥
हसम गरुअ गोरिय गुमान । भुअवल उप्पार्‌यौ ॥
साई काज सग्राम काम । धरति तिल तिल करि डार्‌यौ ॥
सुरतान अग्र अग्रह कियौ । सुर गह सभु न दिष्षयौ ॥
असमान आस असपत्ति अस । कसि कसि कद्दल पिष्षयौ ॥
छं० ॥ १६०४ ॥

कासमीर कामरूअ । टक टकह उप्पार्‌यौ ॥
भड कराड हमीर । धीर पच्छै पति पारौ ॥
साहि सब्ब गिल करत । तेग झझरिय न झिल्लत ॥
छत्नि छत्रपति छत्र अस । भूमी गहि[1] मिल्लित ॥
आलम लभ्भ आलम न हुअ । आभन असमानहि धरत ॥
रस रासि रसातल जाति गति । जौ न सूर इत्तौ करत ॥
छं० ॥ १६०५ ॥

पैज वलिय पाहार । देव दहिया दल पित्तह ॥
ओछभ्भौ ओछाय । घाय राजन इत उत्तह ॥
चाय गरुअ चहुआन । राइ देवत्तिय दिवानौ ॥
परत घाइ[2] धिध राइ । सहन तक्यौ सुरतानौ ॥
वड व्रत्ति गत्ति छचिन तनिय । कुल घटि वढि न वधान कुय ॥
भंडार विधाता मुकति दिय । लुट्टन हार सुलुद्धि सुय[3] ॥
छं० ॥ १६०६ ॥

तब राजा गोरी जवाव । दीनौ हम्मीरा ॥
औ चट्ठी गभीर । राय पहु कर पहु भीरा ॥
सामि साथ चढाइ । सामि अड्डा सनाही ॥
नाजानो मे मिच्छ । तेक कैसी सा वाही ॥

(१) ए० कृ० को०—महि ।
(२) ए० कृ० को०—राइ । (३) मो०—लिय ।

रे राजपुत्त राजंग छल। पलक भान रथ छंडि[1] रहि ॥
मंडलह भेद भेदिग भुअन। उर अलोक सब्बह सुकहि ॥
छं० ॥ १६०७

दूहा ॥ भर भिरि सुर मंडल भिदै। ग्रहि लीनौ सुरतान ॥
ए तीनो सामंत ने। घर घल्लिय[2] सुविहान ॥
छं० ॥ १६०८

कवित्त ॥ इह भाष्यौ संभरिय। बात वज्जरिय दिसा दिस ॥
राइ केलि चहुआन। समर बित्तयौ गसा गस ॥
नील गात पग पीत। भीत भेरिय भुंकारिय ॥
तं बरिया पहु फुट्टि। भ्राम फुल्लिय संसारिय ॥
निग्रहयौ राज सुरतान छल। रुधिर धार छबि उच्छरिय ॥
चहुआन अनावध आन नह। सु कबिचंद भनियन धरिय।
छं० ॥ १६०९

जिहि करिवर अरि जरहि। जर्यौ तिय कर तिहि कट्टुति ॥
जिहि संकति सुह सकति। सकति षंचि न सक छंडिति ॥
जिहिं बाना बरि षान। प्रान कंपहि मधु सिंधुर ॥
तिन मद सिंधुर सुंडि। डंड सिर छच चिपति पर ॥
जिमुष सहाब संभुहल सहि। तिहि मुष जंपत गह गहन ॥
प्रथिराज देव दुअ ननि ग्रह्यौ। रे छचौ गुर ग्रब्बहन ॥
छं० ॥ १६१०

सूर गहन टरि गयौ। सूर गह भयौ राज तन ॥
भारथ भर बित्तयौ। भार उत्तर्यौ भुअन यन ॥
हर हरानि मंडयौ। सार संभरि[3] तन तुल्यौ ॥
रे हिंदू रे मुसलमान। बज्जह षल षुट्टयौ ॥
संचरिग गल्ह संसार सिर। षरह संक ग्रब्भह भरिय ॥
घन धाय साहि चहुआन दिय। गज्जनेस दिसि संचरिय ॥
छं० ॥ १६११

(१) मो० छोडि। (२) मो० घर घल्यो ।
(३) ए० कृ० को०—संभरि

पृथ्वीराज को पकड़ कर शाह का गजनी जाना और इधर देवी के मंदिर से कविचंद का मुक्त होना।

गहि चाहु,आन नरिंद। साह गज्जनै संपत्तौ ॥
थान रष्षि ढिल्ली प्रमान। साहि पीरोज प्रमत्तौ ॥
उत उतंग वाजिन। नहसहनाय सुमेरिय॥
जीति लियो चहुआन। दोउ दिष्षत दल फेरिय ॥
सुरतान गह्यौ चहुआन वर। कवि छुट्टौ जालंध ते ॥
सपन्न हूर पत्तह दिल्ली। भौ कवि रत्त सुअ मतै ॥
छं० ॥ १६१२ ॥

दूहा ॥ तन मझ्झे वर ब्रह्म है। ब्रह्म्य उतप्पत हार ॥
लगै न तरवर फिरि सुक्रम। फिरि लग्गै सो वार ॥
छं० ॥ १६१३ ॥

चौपाई ॥ सो दिष्टान सुतत प्रमान। तर वर वीज तुटे धर थान ॥
सुक्रम वीज लै विदुर वर चल्लै। कुक्रम गार सिरने कह धुल्लै॥
छं० ॥ १६१४ ॥

ब्रह्म वीज के ब्रह्मह माई। भ्रम नीर रसु सत सर माई ॥
क्यों दिन व्रत वयोतपकर धारी। क्यों क्रम क्रम यूलारत पसारी ॥
छं० ॥ १६१५ ॥

कवित्त ॥ उर उकट्ठ तम दीह। सुनहि जो काल प्रान रहि ॥
जम्र कुमत्त गतमत्त। वढत गुन अग दीप महि ॥
मोहन मत गजदेह। हरहि अके सोए थित ॥
हरि कामलन मन भमर। गाढ बधिय एह मित ॥
पंच जैत वर लग्ग। बीर त्यापोसु जुड छिन ॥
हरि पावस भृगुलता। बंध सुगति लहै न धन ॥
छं० ॥ १६१६ ॥

देवासुर उद्दम। भयौ उद्दमन भारथ ॥
गदा प्रब उधम। वान उद्दमन पारथ ॥

(१) ए०—उन। (२) मो०—विदुर। (३) ए० कृ० को०—गढत।

मेछ हिंदु उद्दम । भयौ गोरी चहुआनह ॥
भिरत पंच दिन पंच । रनि बित्ती सुबिहानह ॥
लिष्षिय वमिच्छ हिंदुअ बयत । पित्त इयग्गय अयुत इछ ॥
[1]संग्राम कथन कथ्थह तनी । कहिय चंद कब्बी सुइछ ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

दिल्ली में पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार पहुंचना और राजपूत रमणियों का सती होना ।

कुंडलिया ॥ चर आए ढिल्लिय नयर । दसमि सुदिन अंगार ॥
बुद्धबार[2] एकादसी । चली वरन सुगदार ॥
चली वरन सुगदार । सूर सामंत तीय वर ॥
सब परिगह प्रथिराज । भयौ मंगल मंगल भर ॥
घट सुरतिय चहुआन । अग्गि आलिंग अंगवर ॥
प्यहु बंधि संजोगि । जोग संजोग कहै चर ॥ छं० ॥ १६१८ ॥
गाथा ॥ संचाह संझ रयनी । नक्षति बिताह वीर वताहं ॥
दहकोह गिद्ध गोमं । रन थल थल रहिय पंच दीहाई ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

पृथा का रावल जी के शस्त्रों के साथ तथा और राजपूतनियों का अपने पतियों के अस्त्रों के साथ सती होना ।

कवित्त ॥ निरषि निधन संजोगि । प्रिथी सज्जिय सु सामि सथ ॥
हकि हंस तत्तारि । वीर अवरिय प्रेम पथ ॥
साजि सकल श्रृंगार । हार मंडिय मुगतामनि ॥
रजि भूषन हय रोहि । जलज अच्छित उछारति[3] ॥
हैहया सद्द जंपत जगत । हरि हर सुर उच्चार वर ॥
सह गमन सिंघ रावर चलै । तजि महि फूल[4] श्रीफल सुकर ॥
छं० ॥ १६२० ॥
प्रथा सथ्थ सह गवन । रवनि साजिय सुराज दह ॥
सघन कुसुम सुर बास । सिल्लिय सुष गुंज मुंज तह ॥

(१) ए० कृ० को०—संग्राम कथ्थ नथ्थह तनी । (२) मो०—बंधबीर ।
(३) मो०-उछारहि । (४) ए० कृ० को०—महिसुष ।

सुगता मनि उच्छार । भार आयौ सु समुज्जल ॥
अग रष्षि दुअ सत्त । तिके आवरिय अप्पहल॥
विम्मान बान सुर अच्छरिय । वहु पजलि पुज्जं सघन ॥
सुर रिष्ष जष्ष तच्चिय धरन । कल कौतिग देषहि सुतन ॥
छ० ॥ १६२१ ॥

सहस पच सह गवनि । अवर सामत सूर भर ॥
चलिय मिलिय मन सधि । सकल निज नाह साह वर ॥
भूषन सवनि विराजि । साजि सिगार सैल तन ॥
मन अनत उद्दरिय । करिय हरि हरि सुदान दिय ॥
जहा जुयान सुनि प्रिय गवन । न करि विरम मन धरिय ध्रुअ ॥
धनि धन्य सह आयास हुअ । लषि कौतिग अनभूत भुअ ॥
छ० ॥ १६२२ ॥

षदन मदिर दार । रचिय वर दिग्घ लघुदर ॥
विवह[1] कुसुम वर रोहि । सोहि पट वसन सुरह वर ॥
जिय जबू नद दान । रथ्थ हय गय सुगता मनि ॥
विप्प वेद उच्चरहि । धेन सुरवर आयासनि ॥
किय[2] लोक लोक अजुलि कुसुम । सजि विमान सुर सिर फिरहि ॥
सक्रमिय अप्प साहागवनि । मझि गवन हव्विहि हरहि ॥
छ० ॥ १६२३ ॥

विविह तरुनि दिय दान । अवर सामंत सूर भर ॥
अप्प अस्स हय लीय । मिलिय रह हित धाम धर ॥
चित चिंते रव रवनि । गवनि पावक प्रज्जारिय ॥
प्रम प्रीति किय प्रेम । नेम गेमह प्रति पारिय ॥
उज्जलिय झाल आयास मिलि । हर हर सुर हर गोम भौ ॥
जह जहा सुवास निज कत किय । तह तहा तिय पिय मिलन भौ
छ० ॥ १६२४ ॥

एकादस से सत्त । पच पचास अधिकतर ॥

(१) ए० कृ० को०—विविधि ।
(२) ए० कृ० को०—दिय ।

सावन सुक्ल सुपष्य । बुद्ध एकादसि बासुर ॥
बज्र बिद्धि रोहिनी । करन बालव धिक तैं तस ॥
प्रहर सेष रस घटिय । आदि तिथि मकल पंच पल ॥
बिहथ्थुरिय बल्त जुद्धह सयल । जोगिनि पुर बासुर लिपम ॥
संपत्ति थान सरि सतिभ्र जुरि[1] । रह सुरधि कीनो बिरम ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

शाह का गजनी पहुंच कर पृथ्वीराज को हुजाब खां के सुपुर्द करना ।

गहि चहुआन नरिंद । गयौ गज्जनै साहि घर ॥
दिल्लिय हय गय द्रव्य । ताहि तन इह सुअप्पिधर ॥
बरस अट्ठ तस अट्ठ । सुद्ध कीनौ नयन्न बिन ॥
जन्म जन्म जुग अवरु । जाय प्रथिराज इक्क षिन ॥
कह करै न्रपति समुझै मनह । अप उपाव सो बहु करय ॥
बिधिना बिचित्र निरम्यौ पटल । निमष न इक लिष्षित टरय ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

तब सुसाहि गज्जनय । ग्रहियं जंगल पति तानह ॥
हथ्थ समप्पि हुजाब । सुबिधि रष्यौ बल मानह ॥
भैडिय कोट महल्ल । अप्पि दिसि दष्षिन धामह ॥
तहां रष्षिय प्रथिराज । सुबल रष्यक हहमामह ॥
बिग्गह सुरष्षि पारस्स दस । बेनिय दत्त दये सुलुष ॥
नन करय राज आहार कछु । कहिय तेज हुज्जाब रुष ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

हुजाब का शाह से कहना कि पृथ्वीराज क्रूर दृष्टि से देखता है ।

बिरदावलि बिरदाइ । पाय अंदू कर ढीले ॥
तामस बुझवन काज । बोलि मधु वचन रसीले ॥
गढ़ गिल्लोल गज बाग । लागि सक्कै न डरहि उर ॥

(१) ए० कृ० को० सर सुनिय जुरि ।

नीठ नीठ रष्पयौ। आनि उभ्भौ जल ऊपर ॥
नरवदा तट कज्जली सुबन। जूथ हस्तिनि सभरिय ॥
पीय न उदक कबिचद कहि। मद सिधुर जिम बलभरिय।
छं० ॥ १६२८ ॥

तव चिंतिय हुज्जाव। गयौ अप्पन गोरिय प्रति ॥
किय सलाम तिय वार। धरिय अगुरि धनिय नति ॥
कीय अरज कर जोरि। सुनहु साहाब मन्नि धुअ ॥
विन अहार चहुआन। पष्प सारद्ध तीन हुअ ॥
कलमलिय चित्त सभलि सुचिर। अप अमुपति चहुआन गय ॥
आरुह्यौ विकट रस न्रिपति बर। दिट्ठौ दिट्ठ करूर मय॥
छं० ॥ १६२९ ॥

दूहा ॥ प्रथुल पभ साला प्रथुल। सकल प्रथुल परीभ ॥
बन आरोहिय सिघ जनु। अनुक्रम कज्ज ईभ ॥
छं० ॥ १६३० ॥

शाह का पृथ्वीराज की आखें निकलवाने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ चमकि चित्त साहाब। सुनिय चहुआन सु अथ्थह ॥
बोलि हुजाब सुआब। सेष कालन समथ्थह ॥
तुम कहहु चहुआन। नयन दिठ बकान छडय ॥
जौ वधन बधियौ। तौइ समुप द्रिग मडय ॥
सिर धारि बोल कानै फिरिय। सहस मीर मिलि अप्प बग ॥
भ्रम पारि तेन चहुआन गहि। बधिय राजन कढ्ढि द्रिग ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

नेत्रहीन होजाने पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना और ईश्वर से अपने अपराधों की क्षमा मागना।

भुजगी ॥ पर्यौ बंधन गज्जनै मेछ हथ्थ। विचारै करी अप्प करतूति पिथ्थ॥
हन्यौ दासि के हेत कैमास बान। गज घून चामड वेरी भरान ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—गुदरि।
(२) ए० कृ० को०—दिष्षिय।　　　　(३) मो०—सम।

बंधे पा-९ काका चषं पट्ट गाढे । बिना दोस [1]पुंडीर से अत्त काढे
बर्ज्जंत चंदं चल्यौ हूं कनौज। तहां सूर सामंत कटि घट्टि फौजं॥
छं० ॥ १६३३ ॥

लियें राज लोकं रमंतं सिकारं । भ्रसं केहरी कंदरा रिष्य जारं ॥
रह्यौ गैर महलं लियें राजलोकं । कटे सूर सामंत कीयौ न सोकं।
छं० ॥ १६३४ ॥

भुलानौ सरूपं भयौ काम अंधं। निसा बासरं चित्त जानौ न संढं।
दरब्बार मेटी अदब्बं बड़ाई । छरी ऊपरी सीस हम्मीर राई ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

करन्नं पुजारं प्रजा पौरि आई । बरद्दाइ प्रोहित्त से विस्सराई ॥
षड़ आय साहाय काजं घुमानं । गयौ चूकि अवसान सनमुष्ष जानं ।
छं० ॥ १६३६ ॥

भई बुद्धि विपरीति इह होनहारं । छलं पारि सुविहान चष्षं बिकारं
पलट्यौ सुदीहं रही लग्गि तारी । भले राज गोविंद थम्भाप्रहारी ॥
छं० ॥ १६३७ ॥

सहौ फूल की फूलनी नाहि नाथं । तुरत्तं तरायौ जु मालीन हाथं
नहीं सूर सामंत परिवार देसं । नहीं गज्ज बाजं भंडारं दिलेसं ॥
छं० ॥ १६३८ ॥

नहीं पंगजा प्रान तें अत्ति प्यारी। नहीं गोष महिला इतं चित्तसारी
नहीं चिग्ग अग्गें सुनं षे परदा। नहीं क्षोक हम्माम गरमी[2] सरदा।
॥ छं० ॥ १६३९ ॥

नहीं रेसमं के दुलीचे गिलम्मे । नहीं हिंगु बाटं सुवन्नं हिलग्गे
नहीं सीरषं रूप रंके उसीसा। नहीं पस्समी तक्किये पल्लिंग पोसा
छं० ॥ १६४० ॥

नहीं गद्दियं सुथ्थरी भूपि छोरा । नहीं मैन बतीन के दीप जोरा॥
नहीं डंमरी योंन आवै सुगंधा । नहीं चौसरं फूल बंधे अबंधा ॥
छं० ॥१६४१ ॥

नहीं मृग्ग नयनी चरन्नं तलासै । नहीं कूक कोका सबद्दं उलासै ॥

(१) ए० कृ० को.-पृन। (२) ए० गरमी।

नही पातुर चातुर न्रत्यकारी। नही ताल संगीत आलापचारी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥
नही कथ्थक सथ्थ जपै कहानी। पय संकर छत लग्गै सुहानी ॥
नही पासवान पवास हजूरी। सबै मंडली मेछ लग्गे करूरी ॥
छं० ॥ १६४३ ॥
नही रूपक राग रंग उचारं। सुनो कान साबद्द वंग पुकारं ॥
नही चोम मौज करू लप्प दानं। नही भट्ट चंदं बिरद्द बषानं
छं० ॥ १६४४ ॥
षय मंजरी के रत्ते चौगिरद्द। दव दग्ग ज्यों लग्गि देही दरद्द ॥
कहा हाल रेनं कुमारं धरत्ती। कहां कोन सों कोन आनै निरत्ती
छं० ॥ १६४५ ।
निराधार आधार करतार तू ही। बन्यौ संकटं आय मो जीव सोई
कह्लौ कृद मगाय बृंदावनी को। सभालौ नही तौ कहा श्रीधनी कं
छं० ॥ १६४६ ॥
करै उंच नीचं कृतं दास काजै। भए सारथी पारथं के न लाजै
प्रभु रष्षि भारथ्थ में इंड साजै। प्रहलाद भभीषन भू निवाजै ॥
छं० ॥ १६४७ ॥
श्रिया द्रूपदी सीत को मेटि दुष्षं। गजं गोप गोवर्द्धन धारि रष्ष
चरावंत धेनं वनं अग्गि लग्गी। करयौ पान दावनल्ल होय अग्गी
छं० ॥ १६४८ ॥
हन्यौ कंस राजं दियौ उग्रसेनं। प्रत्यौ पारथी फंद में कढ्ढि एन
पचाए पजावै मंजारी कुमारं। उग्गारे इसी दास केइ हजारं ॥
छं० ॥ १६४९ ॥
न्रप आठ से बीस हज्जार पासे। जरा सिंध कौ बंदी मे ते निकासे
रषे अंबरीक परीयत्त चेनं। अजामेल उद्धारि राजीव नेनं ॥
छं० ॥ १६५० ॥
भए अर्जुनं नारद आप दीनं। नल कूबर फेरि सा रूप कीनं ॥
डस्यौ पन्नगं नंद कौं मग्ग जाते। दई गत्ति गंधर्व को लात घाते
छं० ॥ १६५१ ॥

दुजं दीन गोदान फिरि पच्छ आयं। गिरे कूपकं निग्ग स्वग्गं वस
स्वयं पूतनो विष्य दाता तिराई। गऊतम्म नारी सिला कीनि पाई
छं० ॥ १६५२ ।
पढ़ावंत सूआ। सुरं रघुराई। गनिका गयन्नं विमानं चढाई ॥
जरासंध षोजी किये अथ फौजं। तिरे तीकमं तक्कि चरनं सरोजं ॥
छं० ॥ १६५३ ॥
जरा नाम व्याघात करि घात पग्गे। मुकंदं मुकत्ती दई तीर ल
पवारै गिनाऊं कहां लग्गि तोरे। करों वीनती इत्तनी हथ्थ जोरै
छं० ॥ १६५४ ॥
विसार्यौ न बिश्वंभरं विश्व सारौ। अना अप्पराधं अहं क्यो विसार
अबे होय निरदै न देषौ तमासौ। ग्रह्यौ ग्राह ज्यों गज्जसाई निकास्यं
छं० ॥ १६५५ ॥
विना राज आजं सरै कौन काजं। निबाहौ विरुद्धं गरीबं निवाजं
सदाई कहाऔ करुन्ना निधानं। करौ आय साहाय कह्वि चाहुआ
छं० ॥ १६५६ ॥
करुन्ना करे फेरि अप्पौ संभार्यौ। हरै पिच धृम्मं दियौ सों विचार्यौ।
ग्रह्यौ बार बेरां सु आलम्म वंदी। क्रिया मान अभिमान नष्यो निक
छं० ॥ १६५७ ॥
ग्रह्यौ तेन दिल्ली सुरं कालगत्तं। इवं मेघनादं हनूमान तत्तं ॥
तिनं लंक जाली प्रजाली लकालं। ग्रह्यौ साहि गोरी तिनं काल चाव
छं० ॥ १६५८ ॥

पृथ्वीराज को विष्णु भगवान का स्वप्न में दर्शन देकर समझाना।

गाथा संभरि पाले सवदं, संभरि दीन श्री धरं सुपनं ॥
ब्रह्मा विश्नु महेसं, मूरती तीन एकयं देवं ॥
छं० ॥ १६५९ ॥
इरी ॥ संभरि परि पति सवद्दं। संभरि जेपि श्रीधरं रामं ॥
सुपनंतर दे संभं। समझायौ आय राइ दिल्लेसं ॥
छं० ॥ १६६० ॥

पद्धरी ॥ बिन द्रग्ग भयो चहुआन रान । मनं मझि रोस सुभिझग परान ॥
उदास रोस घ,टहि नरिंद । आहार पान अघ तजिग निंद ॥
छं० ॥ १९९१ ॥

रजनी सुअ त महुरत्त बभ । देषत दरस सुपनंत सिंभ ॥
आरोहि वृषभ सिर पच तुंग । अवह उद्ध सरि चर्म अंग ॥
छं० ॥ १९९२ ॥

उर रुड उरग कंठ कालकूट । रजिभाल चंद बुध जटाजूट ॥
इह बाह पूरि आवह अप्प । रज्जिय विभूति प्रमि पार तप्प ॥
छं० ॥ १९९३ ॥

त्रैनेत तुंड प्रति वर विसाल । बडवान मद्धि झलकंत झाल ॥
इह रूप आय उचर्‌यौ ईस । मम भनिषेद चहुआन जीस ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

आहारि अन्न मति होइ पीन । छुट्टौ सराप पूरब मचीन[२] ॥
आहारि अन्न मति छंडि मंद । उहरै[१] आय तुहि भट्ट चंद ॥
छं० ॥ १९९५ ॥

कारन्न परहि तुअ अध मान । मम करहु पान बल आसमान ॥
इम कहि ईस हुअ अचध्यान । जग्गयौ राज सौभर[३] विहान ॥
छं० ॥ १९९६ ॥

शाह का वेनी दत्त ब्राह्मण को पृथ्वीराज का भोजन कराने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ भौ विहान सुविहान । बोलि हज्जूर बुलावहि ॥
वेनीदत्त सुविप्र । आय सनमुष्ष सितावहि ॥
दिय आयस साहाब । रहौ तुम राजन पासह ॥
सो उपाय तुम करो । भषे जिम अन्न उदासह ॥
आए सु उभै राजन्न प्रति । बेनीदत्त सुविद्धि कहि ॥
प्रथिराज अहारो अन्न रस । हम जच्चे तुम पाय इह ॥
छं० ॥ १९९७ ॥

(१) ए० उहर्‌यौ । (२) ए० कृ० को०—पूरन प्रवीन । (३) ए० कृ० को०—भौं वर ।

बेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करने को कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना।

दूहा ॥ तब बेनी दत विप्र कहि। सुनि बंधन सुविहान ॥
अन्नप्रसाद राजन करौ। आस सांस चहुआन ॥छं०॥१६६८॥

कवित्त॥ तब चिंते चितराज। संभु बर बोल संभारिय॥
मानि कियो आहार। तिने सब परिकर सारिय॥
दस बंभन रहे पास। चिन तरं भोम सुधारिय॥
करे पाक विधि विप्र। विविध ब्यंजन रस कारिय॥
जल उस्न राज असनान किय। बर सोहिय धौतह वसन॥
करि ध्यान संभु जप निति किय। आहारे अन्नह व्यसन॥
छं० ॥ १६६९ ॥

दूहा ॥ इहि विधि विति चहुआन रहि। बर सेज्या सुभथान॥
वत्त पुरान कवित्त प्रति। सुनहि बचन गुर ग्यान॥छं०॥१६७०॥

वीरभद्र का कविचन्द के पास जाना और कवि का उससे युद्ध का हाल पूछना।

चोटक॥ इति दछ्य कथा सुकथी कथियं। अलिकावलि अंग नमं सथयं
भव राजित धूअरसं धुनियं। तन जग्गित रोम रोमावलियं॥
छं० ॥ १६७१ ॥
कर डोरुअ डक डहक्क कियं। बिथुरे सिर अर्क कुसुम हियं॥
उनमत्त पहुप्प पराग कियं। बड़वा नल नैंन गरल्ल मलयं॥
छं० ॥ १६७२ ॥
गल चंद लिलाट अमी षिसयं। पुनि डंमर डौरु पुने उचियं॥
सिर गंग सिरोहिय कै धसियं। सिव आनब देषि लिवा हँसियं॥
छं० ॥ १६७३ ॥
पुनि बंधच चरगा करीम जियं। पुछ उच्चत नंदिय के वछयं॥
पुहकारत मेघ लग्यो अछियं। इय चंद कवी कविता कथियं॥
छं० ॥ १६७४ ॥

(१) ए० कृ० को०—तन।

दूहा ॥ पहिचान्यौ तिहि चंद कवि । वीर भद्र सम वीर ॥
जा जुग्गिनि पुर जगलिय । अब धरनि न रष्षै धीर ॥
छं० ॥ १९७५ ॥

धीर भद्र पहिचान रज । पुच्छिय वत चहुआन ॥
कथ भारथ पारथ सुमथु[1] । किम वित्यौ सुरतान ॥
छं० ॥ १९७६ ॥

वीरभद्र का युद्ध का हाल कह कर पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार कहना ।

भुजंगी॥ बजी हक्क दिग धक्क दुहु कोद मीरा। गही बग्ग छौड़ अग्गान्निय वीरभीरं।
तुटै गेन गुरग्गेर होय घोर सोरा। फटै धरनि दर राय बर राइ जोर ॥
छं० ॥ १९७७ ॥

धरकि सेन सम साहि धरि ढाल सौसातर तरकि भर भरकि मन भुवनदीसं।
पर्यौ चिकुट गढ कूट लंकेस यान । करयि विकट हनुमाल भय चाल पानं ॥
छं० ॥ १९७८ ॥

बरकि पान कर बारकि घन घोर पब्बं । भरनि सम झमझार गहि चक्क गब्बं ॥
ठव्यौ सागर आगरं पब्ब पत्तौ । इसौ उट्ठि चहुआन अनि आन गत्तौ ॥
छं० ॥ १९७९ ॥

पर्यो सिंध धर तुट्टि आधाट बाज । चिहुं ओर सुरतान नीसान गाजं ॥
मनौं पजर बान हनुमान ओपै । घनं घाय सोमेस तन वीर कोपै ॥
छं० ॥ १९८० ॥

चिहु[2] वाह सामंत साधट्ट कट्टै । छत छक्क उड्डि छिछ[3] भुम भीर पट्टै ॥
सुने ईस उम्मा बलीभद्र काथ्थे । भर भीषमं द्रोन भारथ्थ पथ्थे ॥
छं० ॥ १९८१ ॥

पर्यौ कुंभ दल मद्धि चहुआन ऐसौ । घिरे बंनर वीर नीरद्धि तैसौ ॥
परे पंच त्रिवमाल जरि कंठ इब्बे । तहां चंद ठट्टो उर माल दिव्ये ॥
छं० ॥ १९८२ ॥

बलीभद्र जैत जद्दो जाम सिंध । भरं चामंड पावस वीर बंध ॥

(१) मो०—कि मथु । (२) ए० कृ० को०—चिहु वाह सावत सामत कट्टै
(३) ए० कृ० को०—सीस ।

रनं बग्गरी देव गुर राज रामं। हनू लोह लोहान छोहान तामं ॥
छं० ॥ १९८३ ॥

परस्संग भारथ्थ पूजा पहारं। घटं चाट संग्राम बंकट्ट धारं ॥
करन कुंडली राइ अनभंग भारे। जुरे आजु आवाज नयलोक नारे ॥
छं० ॥ १९८४ ॥

अरें सुंधुलं सोषियं ओन कंठं। परीहार पीपा हरं माल संठं ॥
परे सत्त दह सूर सामंत षग्गे। ग्रहं भान जिम मीर चित्रकोद लग्गे ॥
छं० ॥ १९८५ ॥

सुनिय चंद अरिहनेंन जल उरह सोषं। गहें दिष्षि सम देव सुरतान घोषं ॥
छं० ॥ १९८६ ॥

दूहा ॥ कहै बीर हिन्दू तुरक[1]। सुनि कविचंद सुजान ॥
बदि सावन पंचमि दिवस। गह्यौ मेछ चहुआन ॥छं०॥१९८७॥

युद्ध में मृत सामंत एवं रावत योद्धाओं की नामावली।

पद्धरी ॥ सुनि चंद भट्ट कहै भद्र बीर। परि सुभट सूर चहुआन धीर ॥
पति चित्र कोट परि समर राव। दस तीन सहस अरि करन धाव ॥
छं० ॥ १९८८ ॥

चामंड राव परि दंड दाह। जदु जाम जूझि आजान बाह ॥
कूरंभ राव बलिभद्र बीर। पामार जैत जुझि षग्ग धीर ॥
छं० ॥ १९८९ ॥

परसंग राइ षीची प्रचंड। बग्गरी देव अरि पारि ठंडि ॥
परि राज काज गुर राम राज। सक सिलह दार सारंग साज ॥
छं० ॥ १९९० ॥

परि पत्त धार परिहार षेत। [2]गुज्जरह राम परि स्वामिहेत ॥
साहाव सेन करि सूम सोम। दिषि प्रात तार जनुथान थाम ॥
छं० ॥ १९९१ ॥

मुरि मुगध षेत जिन स्वामि जीन। बिन जुद्ध बुद्ध को[3] बुद्ध हीन ॥
सकरह सिंघ मोरी सुराव। बिन लोह छोह छंड्यौ पराव ॥
छं०॥ १९९२ ॥

(१) मो० चरित। (२) ए० कृ० को०-परि जुझिझ जुद्द-राजि स्वामि हेत।
(३) ए० कृ० को०—को।

जगमन्न राव धधेर ¹साम । सम सथ्थ षेत छन्यौ पराम ॥
निकर्यौ राव हाडा सुमेर । हम्मीर सुतन तन लोह भेर ॥
छं० ॥ १६६३ ॥

गध्धरद राव सारंग देव । निकस्यौ पंच हय कट्टि तेव ॥
चालुक्क वंभ वर भान साह । हय अट्ठ कट्टि गुर गिम्म गाह ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

रनसट्टि घाव वीध्यौ जु अंग । उप्पारि लीन जब विंत्त जंग ॥
परिहार वीर² आयौ सुपुट्ठि । रन वीर सुतन करि तिथ्थ तुट्ठि ॥
छं० ॥ १६६५ ॥

सुध्यौ सुपेत नर पुट्ठि आय । उप्पारि षेत भर केकजाइ ॥
सर सत्त रह्यौ रन चाहुआन । तिन कह्यौ सुक्रम अदभुत्त पान ॥
छं० ॥ १६६६ ॥

गुर राम अंग अनभंग कीन । ननभेदि सस्च सब अंग तीन ॥
सथ्थह्यौ मेछ हिंदू नरिंद । कट परे असुर हय गय सुभिंद ॥
छं० ॥ १६६७ ॥

सब सहस वीस परिहदु सेन । दुअलष्प मिच्छ कटि पित्त तेन ॥
अनि सुनिय कथ्थि जे कहिय दच्छ । सुनि चंद श्रवन धर पर्यौ सुच्छि ॥
छं० ॥ १६६८ ॥

दूहा ॥ करि जुहार ढिल्लिय नयर । मुक्कि नयर जुगिनेस ॥
जस भावी तस निम्मयौ । करिन वीर अदेसु ॥ छं० ॥ १६६९ ॥

राजा का वचन सुनकर कवि का मूर्छित होकर गिर पड़ना ।

सुनिय बत्त कविचंद न्त्रिप । तन मन कंप्यौ ताम ॥
पर्यौ विकल धुक्किय धरनि । कट्टि मूल तर जाम ॥
छं० ॥ १७०० ॥

वीरभद्र का कवि को प्रबोध करके समझाना ।

कवित्त ॥ कवि आश्वासित वीर । बाहु धरि धरनि उठायौ ॥
मुष आरोहिग पान । ग्यान गुर तथ्थ सुनायौ ॥
न करि दुष्प हो भट्ट । काल गति कठिन दुरिय जय ॥

(१) ए० कृ० को०–ठेठरे ।　(२) ए० कृ० को०–धीर ।

तुहि रच्यो जालप्प । काज निप काज अरिय तय ॥
तुहि भयो इष्ट आभिष्ट जे । साइ कित कारन आनि जिय ॥
संचरहु दिल्लि मारग सुकवि । करहु राज उद्धारनिय ॥
छं० ॥ १७०१ ॥

कवि का कहना कि मैं बाल स्नेह के कारण विकल हूं ।

कहै ताम कविचंद । अहौ बीराधि बीर सुनि ॥
हम मनुच्छ मय[1] मोह । उदधि बुड्डै सुतत्त तुनि ॥
हमहि राज इकबास । सथ्थ उतपन्न संग सदि ॥
नेह बंध बंधियै । करिय अति प्रीति राज रिदि ॥
सामंत सकल अति प्रेम तर । बाल नेह उर धुर कियौ ॥
बलिभद्र नेह संसार सुष । किम सुनेह छंडै जियौ ॥
छं० ॥ १७०२ ॥

बीरभद्र का कवि से कहना कि अब चिंता न करके राजा का उद्धार कर ।

तब हंसि जंप्यो बलिभद्र । अहो बरदाय मोह मय ॥
कहों ग्यान अति आदि । उअर संग्रहौ सोय सय ॥
तुम उतपन संग राज । षपति होय है जुराज संग ॥
तुम सहाव समान । आय बंध्यौ सुब्रह्म अंग ॥
मम करहमोह चिंता चतुर । धरहु अथ्थ गुर ग्यान हिय ॥
तुम चलो सु कवि जोगिनि पुरह । करहु राज उद्धार दिय ॥
छं० ॥ १७०३ ॥

दूहा ॥ कहै सु कवि गुर बीर सुनि । जिहि आदि अंत जुति संग ॥
नेह गंठि रस रंजियौ । किम चुक्कै चित रंग ॥
छं० ॥१७०४ ॥

बीरभद्र का कवि को प्राचीन इतिहासों का प्रमाण देकर समझाना कि एक दिन सब का अंत होता है होनी अमिट है अस्तु शोक न करके कर्तव्य पालन करो ।

(१) ए० कृ० को० मन ।

कवित्त ॥ परम हंस फल ब्रह्म । रास वासिष्ट मन्त्र सुनि ॥
अवधि राज रघुबीर । नरिंदै सभ मंडि छत्र धुनि ॥
छिन नरिंद लहि निंद । भयौ चंडाल परस तह ॥
न छुअ न छुअ सुचित्त । सुहि, सु लग्यौ कलंक इह ॥
जाग्रत जोग दिष्यौ सुपन । नकरि चद सनमंघ दुप ॥
संचरिय लोक सोकह वसन[1] । पाई कविंद्र सम्भिय समुप[2] ॥
छं० ॥ १७०५ ॥

सोक लोक संसार । मिटै आव सर ब्रत कह[3] ॥
तुअ जुगिंद जट पुत्र । ग्यान गोरष्य तत्त लह ॥
हो मनुच्छ माया समंद । तिर तह तन बुड्डिय ॥
हरि तरंड लागत । कोह कद्दल सों जुड्डिय ॥
बीराधि बीर जपहि सगुरु । जहा सुजीव दुष्पन लहै ॥
देवाधि कम्म पुलय कमल । सो सिव पुत्र सचियं[4] कहै ॥
छं० ॥ १७०६ ॥

जग्य करन भूपति त्रसग । वासिष्ट बुलायौ ॥
विश्वामित्र सो समर । पर्यौ अटो नह आयौ ॥
नेम रिष्य मप मंडि । सुन्यौ वासिष्ट लोपि गुरु ॥
श्राप दियौ करि कोप । भयौ चंडाल भूप डरु ॥
तप जोर और दिस लोक रचि । विश्वामित्र पद इंद्र दिय ॥
कही वीरभद्र कविचंद सम । च्यार जुग्ग लगि अमर किय ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

विश्वामित्र तिहि रचिय । साप तरवर लय मानुप ॥
प्रात समय जिम कुसुम । प्रफुल्लि तन पाय महा सुष ॥
नव रस करत विलास । धरे उर अदर मच्छर ॥
सभ परत कुम्हिलात । कहत बहु जिए संवच्छर ॥
तुम तौ नरिंद राजस भुगति । बहुत दिवस मृत लोक महि ॥
संताप सोक माया तजहु । वीरभद्र समझाय कहि ॥
छं० ॥ १७०८ ॥

(१) ए० कृ० को०—सजन । (२) मो० सुदुप ।
(३) ए० कृ० को०—मिटै आवन सर ब्रत कह । (४) ए० सज्जिय ।

एक भूप रेवंत। तास पुत्री रेवंतीय ॥
पर नावन की बार। सदा सो धनुष   ौ ॥
ब्रह्म अग्ग लै जाय। रह्यौ व ऊभौ सुघरीय दुअ ॥
तिहि घट काके गिनत। लो ष छत्तीस बरष भय ॥
ते परन नरिंद कविचंद सुनि । काल आनि इक दिन हरिय ॥
सामंत सूर नृप मोह तजि। बीर भद्र इम उच्चरिय ॥
छं० ॥ १७०९ ॥

पिप्पलाज रिषराज। करत कैलास तुंग तप ॥
पुत्र हेत मन आनि। गयौ ब्रह्मा देषन अप ॥
होइ प्रसन्न कह्यौ मंगि। तोहि इच्छावर अप्पहु ॥
तिहि अप्पिय सुह अचल। राज कछु वस्त समप्पहु ॥
हँसि कहिय मात सावित्र तब। पुत्र भजन भगवान करि ॥
संसार सकल काचौ अवर। ताहि छंडि आतम उधरि ॥
छं० ॥ १७१० ॥

बीरभद्र का कवि के सिर पर हाथ रखकर मूल गुरु मंत्र देना।

दूहा ॥ तब हथ्थ धर्‌यौ सिर भट्ट कै। षल बंधन कविनथ्थ ॥
तब त्रिकाल सुरझ्झिय मनह। गहि जोगिनिपुर पथ्थ ॥
छं० ॥ १७११ ॥

कवित्त ॥ तब कहै बीर कविचंद। ग्यान गुर कहैं। गहौ उर ॥
नालि एक संषिनी। मद्धि दस लोपि गग्गि गुर ॥
तिहि संपूरन रस भर्‌यौ। ब्रह्म रंध्रह सधि आसन ॥
उलटि कमल उद्धर्‌यौ। बंधि तारी सुर सासन ॥
प्रज्जारि जोति प्रग्गट कर्‌यौ। चढ्यौ तेन आयास दुति ॥
छुट्टौ सुमोह भव पास सह। भिलिय अप्प हरि आस जुति¹ ॥
छं० ॥ १७१२ ॥

(१) ए०-क०-को०-हुति।

आसन मूल उधारि। हंस ससि हर मुरि बंधहु॥
चिसर रोकि द्रिग जोरि। अग्र नासिक द्रिग सधहु॥
सबद एक धुनि रूप। मद्दिता जोग प्रगासहु॥
चमकि चमकि घन गरजि। किरनि विद्दौ न अथासहु॥
झलकन्त नैन अग्रे सुमनि। निकट निरंजन एह नित॥
गुर अथ्थ तत्त ध्यानहि गहौ। जिम छंडौ मन मोह मत॥
छं०॥ १७१३॥

कविचन्द का मोह दूर होकर प्रसन्न चित्त होजाना।

दूहा॥ तब रज्यौ कविचंद चित। उर लद्दौ अविनास॥
जान्यौ कारन अप्प जिय। उर आनंद्यौ तास॥
छं०॥ १७१४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रावल समरसी प्रमुष सामंत मोष, हमीर वधने राजा बल पराक्रम कथनो नाम राजाग्रहन चंद दिल्ली आगमनो नाम छाछठवों प्रस्ताव, समाप्त' ॥ ६६ ॥



पृथ्वीराज रासो।

छठां भाग।

अथ बान बेध प्रस्ताव लिष्यते।

[सड़सठवां समय।]

देवी जालपा के मन्दिर के कपाट खुलने पर कविचन्द का दिल्ली को जाना।

दूहा। ॥ कहै चंद बलिभद्र सम। अहो बीर जटजात ॥
इह बिसम सुसम सुमन। बज्रपाट बिघ्घाट ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ बज्रपाट बिघ्घाट। पाठ उच्चारिग सबद सुनि ॥
घट घोर समानन। भइय आकास सवन(1) धुनि ॥
तप्पि त्रिविध गुन तीन। झीन जोगिनि पुर थानह ॥
गहन चंद चिय अध। सुनिय सखरि किलकानह ॥
परिनाम बिरत उर तन मन। आस बास आसन तज्यौ ॥
रस राज सपिम्मह मित्त तन। भम्म छाडि भ्रम्मह भज्यौ।
छं० ॥ २ ॥

मोतीदाम ॥ चल्यौ रह ईस अलंकह थान। छइक्किय जम्मह घट्ट कारान ॥
नाम्यौ रह सथ्थ बलीभद्र बीर। प्रसंसिय चंदह चित्त सुधीर ॥
छं० ॥ ३ ॥
चल्यौ रह जोगिनि थान सुभट्ट। परी हिय गंठि मनौं परि पट्ट ॥
सुरत्तह चित्त निरंजन अप्प। धर्यौ हिय ध्यान अजप्पह जप्प ॥
छं० ॥ ४ ॥
चल्यौ रह अप्पन मग्ग सुतन। रच्यौ निरकारवि लीयन मन ॥
धर्यौ मन अप्पन हूनि सुभाइ। सुपपति धाम धर्यौ निज माय ॥
छं० ॥ ५ ॥

(1) ए० कृ० को०—सबद।

धरी रह मग्ग अमग्ग सुथान । न मंनहि ऊंचरु नीच नियान ॥
न मुग्गझहि छुद्ध पिपास सुमंन । तरस्सहि सीतरु ताप सुतंन ॥
छं० ॥ ६ ॥

प्रपुच्छहि कोय न उत्तर देय । उलट्टिय जीह सुधारस खेइ ॥
न लष्षहि ग्राम न थान उद्यान । तरस्सहि ताप न सुष्प नमान[1] ।
छं० ॥ ७ ॥

न बूझहि ताप न तस्स सरम्म । निशामन वासुर तास विरम्म ॥
भयौ कवि ध्यान ग्रथस्सित रूप । न मंनहि अंतर अम्मरु भूप ॥
छं० ॥ ८ ॥

नहीं सुष नंषत ताप असीस । चरन्न उलास सुमंनन दीस ॥
सजै सुविराम भिरामह सुष्प । चले षकि दिस्सिय रोष सरुष्प ॥
छं० ॥ ९ ॥

चल्यौ निज मग्ग सुमन्न उषहास । संपत्त सुदिस्सिय सारध मास ॥
छं० ॥ १० ॥

दूहा । कवि आयौ दिल्ली पुरह । देष्यौ नयर विरूप ॥
बिन आभ्भन नर नारि सब । बिना तेज ग्रह भूप ॥छं०॥ ११ ॥

श्रीहीन दिल्ली नगर की दुर्दशा देख कवि का हार्दिक विचार वर्णन ।

ग्रेह गयौ कविचंद तव । मन गज्झनिय दिसान ॥
पुत्र कलत्र मिलंत कवि । सित जट्टे हित जान ॥ छं० ॥ १२ ॥
बर पुरन्न लोइय सघन । कन दिट्ठे नहि राज ॥
मन माया छंडै ग्रहौं । प्रान प्रमुक्कन काज ॥ छं० ॥ १३ ॥
प्रथम वैर भंजन मनह । दुति सांई उद्धार ॥
लोक जोग कित्तिय कहैं । सुकीय चंद सुद्धार ॥ छं० ॥ १४ ॥
वित्त ॥ हक्कि चित्त कवि अप्प । पेम राजन पर अत्यौ ॥
नयन मंडि सब निरषि । दिष्षि सब लोक विरत्यौ ॥
लषि आयौ कविचंद । नयर नर नारि सबनि मिलि ॥

(१) ए० कृ० को० समान ।

मनहु महुर मधु मास। अही अचिज्ज चित्त वलि ॥
पुच्छे न कोय उत्तर दिये। नयन झरै गिर विझ्झरन ॥
उर्द्ध न वच्च आपूर कंठ। रुवेदस वपै ताम मन ॥

छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ निरषे कवि सब लोक सुनि। दुरग काल गति मान ॥
राम प्रेम अति पास उर। चल्यौ अप्प गृह गाम ॥

छं० ॥ १६ ॥

कवि की स्त्री का सब हाल कहना और राजा का बंधन सुन कर कवि का दुखित होना।

इम कवि आयौ जात करि। गृह सुपिष्षि द्रिग काज ॥
पुछ्यौ सुत्त सुतीय तिहि। कहा करै प्रथिराज ॥

छं० ॥ १७ ॥

तब सुनिया उत्तर दियौ। बोलि सुहावने बैन ॥
गौरी दल नृप संग्रह्यौ। कियौ साह बिन नैन ॥ छं० ॥ १८ ॥
सुनत श्रवन धरनिय परिग। हरि हरि हरि सुप जपि ॥
उठ्यौ मनह विश्राम करि। भयौ विभ्रिन[1] मन कंपि ॥

छं० ॥ १९ ॥

कवि का राजा के उद्धार का निश्चय विचार करके योग धारण करना।

मन राजन उद्धार मति। मान काल क्रत नद्धि ॥
भसम अंग औ धूल किय। जोग रूप जट बंधि ॥

छं० ॥ २० ॥

पुचि पुच पारस फिरिग। तब तरसे कवि तंपि ॥
छंडि वसन दिपि रूप दुर। मन विरत्त रत अंपि ॥

चंद वाक्य ॥ छं० ॥ २१ ॥

वृथा गलह ससार सुप। गलह सत्ति अविनास ॥
आवेपित आतम सरिस। करौ गलह गुर भास ॥ छं० ॥ २२ ॥

(१) ए० कृ० को०—विभ्रम।

कवि का भवानी की स्तुति करके निर्विघ्न ग्रंथ की पूर्ति के लिये बिनय करना।

भुजंगी॥*ॐकारं नमो कल्यानी सु कमला। कला रूपिनी काम दाई सु बिमला॥
कुमारी करुन्ना कमंक्षा। कराली। जया बिज्जया भद्र काली कंकाली॥
छं० ॥ २३ ॥

शिवा शंकरी बिष्णु वीमोहनीयं। वराही चमुंडा दुग्गा जोगिनीयं॥
महालच्छमी मंगला रत्त अंषी। महामाइ पारबत्ती ज्वालमुंषी॥
छं० ॥ २४ ॥

तुहीं गंग गोदावरी गोमतीयं। तुहीं नर्वदा जमना सरस्वतीयं॥
तुहीं द्वारिका मथुरा रूप कासी। तुहीं तीरथं अब्ब मद्धे निवासी॥
छं० ॥ २५ ॥

तुहीं कोटि सूरिज्ज लोइं प्रकासा। तुहीं चंद कोटिक्क आनन्न भासा॥
तुहीं कोटि सामुद्र होये गंभीरा। तुहीं कोटि प्राक्रम्म लीयै समीरा॥
छं० ॥ २६ ॥

तुहीं कोटि आकास बिस्तार धारा। तुहीं कोटि सुम्मेर छाया अपारा॥
तुहीं कोटि दावानलं ज्वालमाला। तुहीं कोटि भैभीत जंमं कराला॥
छं० ॥ २७ ॥

तुहीं कोटि सिंगार लावन्य कारी। तुहीं राधिका रूप रीझै मुरारी॥
तुहीं विश्वकर्ता तुहीं बिश्वहर्ता। तुहीं थावरं जंगमं मै प्रवर्ता॥
छं० ॥ २८ ॥

तुहीं पातिकं नासिनी नारसिंघी। तुहीं जग्गमाता अनेकं सुरंगी॥
तुहीं साकिनी डाकिनी रूप धारै। तुहीं आप लग्गै तुहीं यै उबारै॥
छं० ॥ २९ ॥

तुहीं तोहि जानै सुतेरे चरित्तं। कहां लग्गि चंदं लषै तो चरित्तं॥
अज्जमेर थानं सिकारं भुलायौ। तहां बीर बावन्न सिद्धं मिलायौ॥
छं० ॥ ३० ॥

* इस छन्द के कई चरण भुजंगी छन्द के प्रस्तार के विरुद्ध पड़ते हैं परन्तु पाठ चारों प्रतियों में समान है।

पहिले उमा कामती भट्ट किनो। वल सेवरा मन छडाय दिनो ॥
वढे वादे आयौ सुदुग्गा केदार। तहा अविका अव रष्यौ अपार ॥
छं० ॥ ३१ ॥

विना पुन पछै किए एह वोलंगयो रुकि सा द्रोह मझ झे दिवार
पठायो नृप कगुरानी पुकार। उठी बाहर ठाहर फेरि धार ॥
छं० ॥ ३२ ॥

सकत्ती हरी तै सकत्ती सुभाट। ग्रह्यौ मेछ साईन षुल्लै कपाट ॥
गयौ गज्जनै पाति की पत्ति लीयैं। कल्ना न आई पल दुष्ट हीयै
छं० ॥ ३३ ॥

फर्स पत्ति कह्यौ कुपे पिथ्थ अयौ। पर्यौ पजरै आनि वेहाल पयौ
दई गत्ति राज गती कौन जानै। कहा लेष लेष्यौ अजू चाहुआनै
छं० ॥ ३४ ॥

जिनै हथ्थल सिथ हस्ती निपातै। तिनैं घेरि मारै कुरंगी सुलातै
जिनै वाज सिकार पिलौ षवा कीतिनै षग्ग लावै दिपावै द्वरां वै
छं० ॥ ३५ ॥

इसी गत्ति तेरी अलष्यं कहानीकहा लौं गिनाऔं। कहै वागवानं
करौ राव तै रंक रंकं सुराव। कहा हाथ आवै किए ए सुभाव
छं० ॥ ३६ ॥

पराक्रम छत्ते अछत्ते भए क्यौं। दिलीपत्ति से वधि के मा दए क्यौं
हूए अझ झ वैरीन की जित्ति दिघ्यौ।किना चाहियै सेवक कीन पि
छं० ॥ ३७ ॥

बुरे मुष्य वारे लगूरै सुहानै। सुर सारिषे छूर सामत मानै ॥
कर जोरि जपौ सुनौ श्रीभवानी। भली किन्न साहाय ससार जानै
छं० ॥ ३८ ॥

करौं पूरन पुस्तक अब्ब जौ लौ। विघन्न हरौ संभरी राव तौ लौ
छं० ॥ ३९ ॥

दूहा। मीत करन कारज चल्यौ। जौ मात प्रसादे भोग ॥
करि रासौ प्रथिराज कौ। कित्ति चलाऔं जोग ।
छं० ॥ ४० ॥

अन्न पान पोनीय मुकि । षुध पिपास तजि मोह ॥
देव दुग्ग सों चंद कवि । गय राजन वर छोह ॥

छं० ॥ ४१ ॥

कविचन्द का कोरी पोथी हाथ में लेकर भवानी का ध्यान करना ।

कबित्त ॥ भट्ट ग्याति नप पिता । मित्त सामंत सूर सब ॥
उभय सुरिन प्रिथिराज । तेने निवृत्त करौं अब ॥
प्रान कलपि पति काज । एक रिन एम उधारौं ॥
जीह गंठि गुन गरुअ । उभै रिन नाम उतारौं ॥
इम चिंत चिते कविचंद उर । अप्प थान जुग्गिन गयौ ॥
आक्रम्म मंच देवी सुकबि । बिन अष्पर पुस्तक लयौ ॥

छं० ॥ ४२ ॥

रासो की छंद संख्या वर्णन ।

ग्रहि पुस्तक कविचंद । मंच सरसैं उच्चरिय ॥
सुष निवास किय जाम । ग्रन्थ सुर वर विस्तारिय ॥
लिषि पुस्तक कविचंद । सहस सत्तह नष सिष उभ ॥
मूत भयछ्यत वृत्त । सबै भूत वंस क्रम सुभ ॥
इम करिय ग्रंथ पूरन सुकबि । पढ़िय पुच हथ्थे दियन ॥
लिषि मंच पछ्छ कबि जल्ह सुअ । अप्प मग्ग गुज्जन लियन ॥

छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ इम चिंतिन कविचंद करि । भौमन वच क्रम एक ॥
सारद सुभ मति ग्यान धरि । वानी वचन विवेक ॥

छं० ॥ ४४ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का वर मांगना ।

अरिल्ल ॥ लै पुस्तक पढ़ि मंच घनं । करि कविचंद सुवेद धुनं ॥
बहु भंति अनेक अलाप कियं । बहु जाप सु मंचय होम बि[illegible]

छं० ॥ ४[illegible]

दूहा ॥ बानि उमा माधुर सुनी । पढ़ि अनेक रस भंति ॥
देवि दरसि कविचंद कौ । झलहलंत दीसंत ॥ छं० ॥ ४६ ॥

सरस्वती बोचय ॥

जाहु अचिंतिय कवि कहय । वर सुभट्ट गुन वीर ॥
जौ प्रसाद वर मांगिहै । दीय बचन मुह तीर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

कवित्त ॥ वास समपिय भत्ति । भट्ट लिन्नौ संपुत करि ॥
सोगुन मुह अप्पयौ । जिहि सगुन विस्तरै राज धुरि ॥
चलैं कित्ति जग मग्ग । चंद चंदान देव बर ॥
धरन राज अप्पन्न । वास न्रिम्मान अप्प कर ॥
जे देव मनंत तरवारि तन । तिहि अप्पन चहुआन रिन ॥
त तत्त वान जानैं सकल । अकल कित्ति जपौ सुमन ॥
॥ छं० ॥ ४८ ॥

रासो के रचना समय की सीमा ।

दूहा ॥ उभै मास दिन अठ वर । किय रासौ चहुआन ॥
रसना भट्ट सुचंद की । बोलि उमा परमान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
सहस सत्त रूपक सरस । गुन सुंदर बहु वित्त ॥
ले पुस्तक कविचंद कौ । दिय माता बहु रित्त ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवि का अपने पुत्र जल्ह को रासो पढ़ाना और स्त्री से विदा मांगना ।

फिरिय आय जोगिनि पुरह । रासौ गुन दै पुत्त ॥ १ ॥
पुच्छि पीय परिवार सब । कहौ तौ साधौं सुत्ति ॥छं०॥ ५१ ॥
मिलन चंद चहुआन वर । पुच्छि सुचिय मत चार ॥ य ॥
दंपति गंठि अछेह बधि । अह न कि अछिनन चाह ॥छं०॥५२॥तय
वरनिय वर पुछ्यौ सुवर । मम तजि जिय तर जीय ॥ ५ ॥
सो अहि वर पावन्न करि । सो ढिल्लिय अन पीय ॥ छं० ॥ ।

कवि का अपनी स्त्री से कहना कि संसार में एकमात्र कीर्ति ही सार है।

पावचंद वाक्य।

कवित्त ॥ न रहै तन धन तरुनि। तरुनि किरनह उदै अस्तं ॥
चंद कला परिपब्ब। राह करि अस्त विगस्तं ॥
न रहै सुर नर नाग। जोग भग्गै जुग भग्गै ॥
न रहै बापी कूप। संत सायर गिर लग्गै ॥
आवै सुजान अष्षर अमर। विवरि विषरि पूछत रहै ॥
भषि काल व्याल कालि काल सब। रहै तौ गुर गल्हां रहै ॥

छं० ॥ ५४ ॥

रहैं जुगै जुग गल्ह। द्रुग्ग धरहरे अष्ठ गिरि ॥
दिष्टि मान विनसिहै। इंद्र तुटि राह सुसंकरि ॥
तहां हहंत जप बली। बंध नन नाटिक कथ्थं ॥
माया तन१ चुक्कयौ। चंपि कल पंच सु हथ्थं ॥
अब कित्ति कित्ति भाजै नहीं। गयौ प्रान सें संग्रहै ॥
दो हंस हंस संजोगि सों। मिलन हथ्थ अग्गी दहै ॥

छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ सुभ विसोष न करौ त्रिय। गुर गल्हां गुन संचि ॥
जो दिब्बिय सो भज्जिहै। कालन कहौ वर वंचि ॥

छं० ॥ ५६ ॥

कवि का योगी भेष धारण करना और स्त्री का पूछना कि योग की पराकाष्ठा क्या है।

दूहा ॥ दष्षिन लौं वंदै सु कवि। तच दिषावन चीय ॥
जुग गहँनो माया तजन। चित गज्जन दिस कीय ॥

छं० ॥ ५७ ॥

१ ए० तेन।

मोतीदाम ॥ ग्रहै वर द्रप्पन तत्त प्रकार। रसौ रस निद्द सुविद्द सुभार ॥
भयौ करुना बर वीर सुभट्ट । छिन तत पत्त सुतत्त अघट्ट ॥
छं० ॥ ५८ ॥

सुगल्ह बिना दिय वीर सुभट्ट । धर्यो सिर केसन जट्ट सुकट्ट ॥
छिन छिन द्रप्पन लै कर तथ्थ । करै प्रतिव्यंब सुरगिय काथ्थ ॥
छं० ॥ ५९ ॥

इहतुअ इह तु इत अ कौन । सुनत सु सद्द रहै करि मौन ॥
कहौ तुअ जाति सुभत्तिय नाम । कहाँ तिहि जोति प्रगट्टय काम ॥
छं० ॥ ६० ॥

अजन्न गयान कहौ गुर गत्ति । सुष दुष भोगिय कौ जिय पत्ति ॥
सु कौ प्रभु कौन पुरी कह वास । कहौ अविनासिय वादि विनास ॥
छं० ॥ ६१ ॥

सु कौ सुविदाथनि दायन कौन । सु को वर तद्व्य कौन समौन ॥
कहौ रत रत्त विरत्त प्रकार । को जोग तरन्न बुझै नन भार ॥
छं० ॥ ६२ ॥

कहौ कहि मग्ग पिया पिय जोति । कहौ कहि काम सुगत्ति सुद्दौति ॥
कहौ कथि कथ्थि कवी जल बिंदु । सु उत्तर ताहि दियै कविचंद ॥
छं० ॥ ६३ ॥

कवि का स्त्री को योग साधना की विधि और उस की सिद्धि संक्षेप में बतलाना ।

दोधक ॥ द्रप्पन लै प्रतिव्यंब सु सद्दय। चंद सुषद्कला प्रति बद्दय ॥
द्वादस दून तितन तें अग्गिय । पंचनि आस प्रकित्ति सु इग्गिय ॥
छं० ॥ ६४ ॥

ता सर एक कवल प्रगासिय । देषत ताहि गयौ भ्रम नासिय ॥
नीलहि नील बरन्न सु सुत्तिय । जुत्तिय मान प्रमान सु जुत्तिय
छं० ॥ ६५ ॥

तापर सद्द अनाहद होइय । ब्रह्म अनंत अनंद सु जोइय ।

रेचक कुंभक पूरक पूरय । नाभि बटै जुग वह संजूरय[1] ।
छं० ॥ ६६ ॥

उद्दय वीर कलंकल वानिय । भौंर सुभट्ट भयानक आनिय ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अरिल्ल ॥ वेद अभट्ट सुतत्त प्रकारं । पंचह वीर प्रकित्ति सुमारं ॥
सुष प्रति तीन त्रयं गुनवासी । विंदुग लुद्दिय मुगति सुरासी ॥
छं० ॥ ६८ ॥

नीसल नील बरन्न सुमोती । प्रोति प्रमान प्रमान सुओती ॥
भुम्मि द्रवै द्रिग अंमर भीजै । ह्वै भृगुटी रविमंडल[2] लीजै ॥
छं० ॥ ६९ ॥

नासिक अग्र दिठै हिठ रष्षै । ह्वै उर मंझ अलष्ष सुलष्षै ॥
काम विराम षगैं षग षंडय । जीरन वस्त्र जेम तन छंडय ॥
छं० ॥ ७० ॥

जैसौ नीर मनसा निध पायौ । तौ ब्रह्म अनंद अनंदह जायौ ॥
पंच दमै मनसा दम मारै । कृम्म सवै सिर तै भर डारै ॥
छं० ॥ ७१ ॥

आसन इष्ट विभूति सुदीसन । ग्यान सु छन्न विग्यानन सीसन ।
आमन मच्छर मारहि मारं । तौ भ्रम दाह तिरै भव सारं ॥
छं० ॥ ७२ ॥

मारुत रस भोगंतत भंती । ग्यान षग्ग विस्तर कर दित्ती ॥
कहै संकि तजि संक न भट्टं । चलै चंद मुगती वर वट्टं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जो जग दिष्ष सु दिष्पन कव्वी । ज्यौ घटिका पट दस्सझहि हव्वी
ह्वै घट घट्ट घटं बहु जानै । पूरन ब्रह्म ब्रह्म पहिचानै ॥
छं० ॥ ७४ ॥

जोति में जोति सु तोहि बतायौ । सोइ चंद विरलै किहि पायौ
छं० ॥ ७५ ॥

। वपु विभूत बहु विंटयौ । जट बंधी जम जूत ॥
मन माया सुकवि चल्यौ । को पूजै अवधूत ॥ छं० ॥ ७६ ॥

(१) ए० कृ को-पूरय । (२) ए० कृ० को०-तीजै ।

चंदविया वाक्य ॥

कवित्त ॥ सुनौ षट पापंड । केस लोचैं जट धारैं ॥
कीय भसम ऋतु काम । अन्न तापसी विचारैं ॥
वेद कुरान पुरान । ने असा सुर नर प्रधान ॥
धरम मस रावर भगत । कव्वि मुनि सेवि सुजान ॥
त्रिक्रम सबद इह गहद कहि । मच अंचक वेदत पुन ॥
कौ धूत रत्त अनरत्त कौ । सबै तप्प माया तपन ॥छं०॥७७॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ इन विध जोग जुगति लिषि । चिय बुझ्झौ तन ग्यान ॥
क्रोध मोह माया तजे । और विटंबन जान ॥ छं० ॥ ७८ ॥

कवि की स्त्री का शका करना कि एक पथ दो काज कैसे सध सकते है।

चंदविया वाक्य ॥

चौपाई ॥ उत्तर जानि चिया पय लग्गी । सुम पिय नाद अनाहद जग्गी ॥
जोग जुगति उद्दार न साम । दो दो गहद सरै किम काम ॥
छं० ॥ ७९ ॥

कविचन्द का उत्तर।

चंद वाक्य ॥

दूहा ॥ सकल जोग सांइ सुध्रम । तप जप साईं ध्रम ॥
मोहि मुगति सूझत मरम । सुजस कित्ति गुन क्रम ॥छं०॥८०॥
दिवस रयन राजन सुमति । अरु गज्जन वै रोस ॥
मन वच क्रम्म एकग होय । सांमि उधारौ दोस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
[४]उभै सत्त नव रस चिगुन । किय पूरन गुन तत्त ॥
रासौ नाम उदद्धि जुति । गह्यौ मत्ति मैं सत्ति ॥ छं० ॥ ८२ ॥

(१) ए० कृ० को०– क्र । [२] मो०—लोभ ।
[३) ए०—जोर । (४) मो०—उभय सत्तर नौ रस त्रिगुन ।

कविचन्द के पुत्रों के नाम औ सर्व श्रेष्ठ जल्ह को कवि का रासो पढ़ा कर रवाना होना।

कवित्त ॥ दहति पुत्र कविचंद । सूर सुंदर सुज्ञानं ॥
जल्ह बल्ह बलिभद्र । कविय केहरि वष्षानं ॥
बीर चंद अवधूत । दसम नंदन गुनराजं ॥
अप्प अप्प क्रम जोग । बुद्धि भिन भिन करि काजं ॥
जल्हन जिहाज गुन साज कवि । चंद छंद सायर तिरन ॥
अप्यौ सुहित्त रासो सरस । चल्यौ अप्प राजन सरन ॥
छं० ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ दहति पुत्र कविचंद कै । सुंदर रूप सुजान ॥
इक्क जल्लह गुन बावरौ । गुन समंद ससि मान ॥ छं० ॥ ८४ ॥
आदि अंत लगि वृत्त मन । वृन्नि गुनी गुन राज ॥
पुस्तक जल्हन हथ्थ दै । चलि गज्जन नृप काज ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कविचन्द का अपनी धुन में मस्त होकर गजनी की राह लेना।

॥ वपु बिभूति बिंटियौ । केस जग्गन बिधि बंधी ॥
बहु बियोग ग्रह जोग । चित्त गुग गुग्गह संधी ॥
छुध पिपास दम मोह । छोह बिंध्यौ बर सांई ॥
बर बिग्रह चिंतयौ । मुक्ति बिग्रह शुक्र आई ॥
बरदाय चंद दुब्बल अबल । वपु सुवेस मुकंद षुत ॥
मुंकयौ मान अभिमान बस । इह अजुत्त जो पैत जुत ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ एकाकी सह संग तजि । मिलि राजन सुत सोम ॥
[1]तपत तुंग तो व्रत्त जहि । है इह जग षग नोम ॥ छं० ॥ ८७ ॥
इह कहि कवि चल्ल्यौ भवन । गवन कियौ दिसि साहि ॥
दुसह जग्ग सज्जन मिलै । धर गज्जनी सुगाह ॥ छं० ॥ ८८ ॥
सरसैं बर अरु कंठ बरु । अरु सु हियै बर बीर ॥
हिंदु कहै हम देव[2] है । मेछ कहै हम पीर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए० कृ० को० तपत तुंग जो वृत्त काहि । (२) मो० दीन ।

षिति ठाम प्रथिराज कौ। बालप्पन निज नेह ॥
चल्यौ भट्ट सजि जोग तन। ता न्त्रिवहन अछेह ॥ छं०॥ ९० ॥
चल्यो चंद वरदाय वर। तजि समुद्र वर मोह ॥
पट्ट वरन भर भट्ट कौ। दहि विरद वर छोह ॥ छं० ॥ ९१ ॥
गहिग चद रह गज्जनौ। जट पट व धि विधान ॥
प्रान हरौं साधौं मुगति। जो मिलिहौ चहुआन ॥ छं०॥ ९२ ॥
गहिग चद गज्जन सुरह। जह सज्जन सु नरिंद ॥
कवहो नैन निरष्षि हौ। मनो सूर अरविंद ॥ छं० ॥ ९३ ॥
जोग जानि लग्यौ सुमन। जोति सवद जिय लीन ॥
अगम निरंजन आदि सुनि'। तिहि अचित चित चीन ॥छं० ।९४॥
सूर सवर अरु कंठ वर। हिय रोहे वर वीर ॥
सब देयन में देव है। मेछ महमद पीर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दुर्गम मार्ग की कठिनता का वर्णन और कवि का क्लान्तचित्त होना।

पद्धरी ॥ सम चल्यौ भट्ट गज्जन सुराह। वन विषम सुषम उग्गाह गाह
रह उच नीच सम विषम थान। गह वरन सैल रन जल थल
छं० ॥ ९६ ।
द्रिग जोति लग्ग मन सबद भीन। भुल्ल्यौ सरीर निज मग्ग पी
रत्तौ सुजोग मग्गह सरुव। जगमगत जोति आयास भूव ॥
छं० ॥ ९७ ॥
भिद्यौ सप्रीति प्रथिराज अग। निरकार जोय रत्तौ सुरग ॥
भुल्ल्यौ सुमग्ग गज्जनह भट्ट। वन चल्यौ थान उद्यान थट्ट ॥
छं० ॥ ९८ ॥
उम्भरत इम्भ सम अम्भ नद्द। के लरत भिरत भज्जत समद्द ॥
उद्यान तज्जि सथहे एक। गुंजहिति वध्घ मग्गह अनेक ॥
छं० ॥ ९९ ॥

(१) ए० कृ० को०—मिलि। (२) ए० कृ० को०—मेछ कहे हम पीर। (३) मो०—छी

जुग दैत दंति सिंघहि सुरम्भ । म्रिग बघ्घ पंषि अजगर अदम्भ ॥
सा पंच चिन्ह संग्रहै सास । सा वहु बनंचर विषम भास ॥
छं० ॥ १०० ॥

गुंजरत दरिय सम्मीर सद्द । निझझरत झरत नद रौर नद्द ॥
बन विकट रंध कौ चक्र राह । सद्दहि सु ताम संमीर गाह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

उड्डुत उरग्ग धर तर सुलग्ग । सुझझहि न विदिसि दिसि मझझ मग्ग
बन चल्यौ मझझ भट्टह भयंक । रत्तौ सुजोति सज्जे निसंक ॥
छं० ॥ १०२ ॥

निझझरहि झरिय झरहर करूर । उम्भरहि सलित सलिता सपूर ।
कलरव करंत द्रुग नेक भास । तर विकट सघन पंषिनि हुलास ॥
छं० ॥ १०३ ॥

निसि दिवस भट्ट बन चल्यौ जाम । संभर्यो राज भौ श्रम्म ताम ।
वेध्यौ सुअंग छुद्दा पियास । तर धवह देषि लग्गे अयास ॥
छं० ॥ १०४ ॥

बैठौ सुतक्कि भौ संझ स्याम । चितै सुचिंति चंडी भिराम ॥
छं० ॥ १०५ ॥

षट पुरान पारसि निपुन । निगम अगम नह चंद ॥
अद्ध निसा कानन कुहर । भयौ भट्ट गति मंद ॥ छं० ॥ १०६ ॥

छुध पिपास लग्गी तनह । निद्रा भै मिटि गैन ॥
नहीं कहूं चंहु दिसि सुगम । दिसि दिष्षियै जसौन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

दिवस तीन पंथह वहिग । गनी न अह निसि संझ ॥
षट दिन नयन असुझझ भय । थकि रहौ वन मंझ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कवि चन्द का भगवती का स्मरण और स्तुति करना ।

मन वच क्रम चित्तै सुचित । वरदाई वर देव ॥
तुअ कारन तारन तवन । नमो नमो सुर देव ॥ छं० ॥ १०९ ॥

भुजंगी ॥ नमोह नमोहं नमोह सुचंडी । सथान विसच सम्भू पच मंडी ॥
निकार अकार सकार सरूप । मद्दा तत्त सौ तत्त चौबीस नूप ॥
छं० ॥ ११० ॥

चय मभ्भ चेय गुन चेय थान । चय पाय वामन चेय किसान ॥
कला षोडस रूप षोडस्स राया । दुष्य वीस रूप छल छं परीया ॥
छं० ॥ १११ ॥

हय पच बान दहस समीर । दह नारि दुवारि वाह समीर ॥
ऊकार सार श्रीकार सज्जै । ह्रीकार हुकारि सारूप रज्जै ॥
छं० ॥ ११२ ॥

क्लिकार क्रूकार[1] कुकार कारी । स्त्रीकार भ्रूकार श्रीकार सारी ॥
श्रीकार छूकार सामाच माई । नमस्ते नमस्ते नमो जग्ग जाई[2] ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जहा संगट दुष्घट निज्ज सेव । नही मात तात नही बंध देव ॥
नहीं को सहाय जदा कोन चाय । तहा तो अरप्पै निज सेव साय ॥
छं० ॥ ११४ ॥

हरौ मुझ्झ चिंता तन तप्पि भारी । दियौ चित ता सह साथ कुमारी[3] ॥
छं० ॥ ११५ ॥

दूहा ॥ सुमरि देव वरदाय वर । मझ्झ वन बीझ भयंक ॥
लहौ न दिस अरु विदिस निस । जग्गि नहीं मन संक ॥
छं० ॥ ११६ ॥

तिहि पिपास लग्गिय बहुल । धव ढुंढन वन जग्गि ॥
तहा सुइक्क बड तट निकट । कालयल सिंघ सुलग्गि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का अपनी सं विपति निवेदन करके सहायता के लिये वर मागना ।

तिन सिंघह मभ्झह तरनि । कह कह अपिय संत ॥
मनहु धुम्म मझ्झे अगनि । झलहलत दीसंत ॥
छं० ॥ ११८ ॥

(१) ए० कृ० को०—हलव । (२) मो० ज्ञ । (३) ए० कृ० को०—माइ

कवित्त ॥ देखि चंद मन मंद । वृषभ वन महिप सिंघ घन[१] ॥
सिव सिवात सुम्भयौ । बजे डक डकरु गज्जि वन ॥
दरस वान सिंघ घोर । विथै जम धाम पंच मस ॥
रुध तुंबरगि बंधि । बज्जि तारीक तूर रस ॥
मंचह सुजंपि वरदाय वर । चंद पद्धि जंपै रुसि ॥
सह व ध्यान नर कवन ते । वर मनुच्छ उम्भै वहसि ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दूहा ॥ तौ जानै सब देव अस । नर नागिंद्र विचार ॥
आदि असुरां अपहरन । इह विरदावलि सार ॥ छं० ॥ १२० ॥
दरस देवि किय भट्ट वर । कर सिर मंडिन मंत ॥
सो पसाव[२] कवि सुंदरीय । जिहि जप संग सुअंत ॥ छं० ॥ १२१ ॥
तौ जानै सहदेवपुर । पित प्रकृतीय सुतथ्थ ॥
जौ हौं जंपि जानंत तौ । देवि जानयौ नथ्थ ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पुच्छि मात कविचंद वर । सुह दुह कहि वर भट्ट ॥
जो जस[३] संग सुमंगी कवि । कहत काज इहि घट्ट[४] ॥ छं० ॥ १२३ ॥
सुम मनुच्छ राजन सकल । अकल अपूरब कथ्थ ॥
कहौं सवै भारथ्थ कथ । जौ सुनौ छिनक रुकि रथ्थ ॥ छं० ॥ १२४ ॥
॥ पच्छै ही सुरतान । विंदु दल जोर अहुट्टै ।
सुनी कहौं रवि ग्रहन । तदिन भारथ्थ सजुट्टै ॥
उभै बीह[५] वर दीह । भान अच्छै दिन चल्यौ ॥
सुनिधर राव सब्बह । वीर ब्रहमंड सुहल्यौ ॥
चहुआन सेन रावर समर । भीर भगैं प्रथिराज गहि ॥
वर भट्ट रुक्कि हाहुलीय अम । जालंधर वर थान रहि ॥
छं० ॥ १२५ ॥
सुनिय धुनिय वर सीस । उभय उमया पति पुच्छिय ॥
सुनिय ग्रहन विग्रहन । जुह मंड्यौ मति अच्छिय ॥
भेव भवस्य न्निम्मान । जान मत अच्छ विचारिय ॥

(१) मो० सम । (२) ए० कृ० को०—पसाच । (३) ए० कृ० को० जग ।
(४) ए० कृ० को० रम घट्ट । (५) ए० कृ० को०—वाह ।

नरन नाग अरु देव। सुवर अह दुष्ट प्रकारिय॥
सिवसिया जित जित अरि सिवर वर। हेमदान सोभै सुअछि॥
जौ[1] होय प्रेम तो निग्रहै। सोय किति पावन्न अछि॥
छं० ॥ १२६ ॥

भगवती का प्रसन्न होकर कवि को अंचल का चीर देना।

दूहा॥ हँसि हर सिद्धय सुद्ध सुष्प। नृप दुष दहौ भट्ट॥
चरचि चीर अ चल धजा। दिय सिर वदन[2] पट्ट ॥छं०॥ १२७॥

देवी की स्तुति।

मोतीदाम॥ हसी हस सिद्ध तवै सुप पाय। जयज्जय सद्द कहै वरदाय॥
तुही सुभ्र तारन सारन काम। तुही प्रक्रिती[3] पुर पधर नाम॥
छं० ॥ १२८ ॥

तुही ईक्ष अनेक अपभम आय। तुही मति ग्यान तुही रज माय॥
तुही गति काम तुही सुनि धाम। तुही धुर वेद तुही गुठठाम॥
छं० ॥ १२९ ॥

तुही कृत कारन तारन देव। तुही सिध साधक सारन सेव॥
तुही धर सोपन पोपन मात। तुही ससि सूर तुही सरसात॥
छं० ॥ १३० ॥

तुही सिसु जीवन बाल रु वृद्ध। तुहीं षट भाय नवै रस सुद्ध॥
तुहीं विष अमृत समृत सार। तुही घट औघट रप्पन हार॥
छं० ॥ १३१ ॥

तुही नर नागिंद इंद सुरेस। तुही जुग आदि तुही लवलेस॥
तुही तत पंच पलावन भार। तुह गुन तीन करै उपचार॥
छं० ॥ १३२ ॥

अलेप अगोचर तु नर[illegible]। तुही नट नाट नचावन छंद॥
तुही व्रज नारि तुही व्रज नाथ। तुही गिरधार अँधारन[4] पाथ
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए० कृ० को०—जो। (२) ए०—पदन। (३) मो०—प्रकर्त। (४) मो०—अतार

तुहीं धर गंग उधारन सेव। तुहीं त्रय वेनी सुतीरथ देव॥
अकास प्रकास तरायन तेज। नवग्रह नाम तुहीं सम रेज॥
छं० ॥ १३४ ॥

तुहीं सब मंत्रन आगम मांहि। कहै सब ठौर विना तुअ नाहिं॥
धरै कर आवध दंड छबीस। तुहीं तुं नाम तुहीं कर वीस॥
छं० ॥ १३५ ॥

तुहीं अब चंद सुधारन आस। तुहीं चहुआन भुजा करि वास॥
तुहीं पिथ अंत सुधारन काम। तुहीं यवनेस संघारन नाम॥
छं० ॥ १३६ ॥

तुंही तन मुक्ख्य उवारि उवारि। कह्यौ अब कारन संकट टारि॥
छं० ॥ १३७ ॥

ा॥ वर संकट कविचंद कौ। पुर मारे कुर भीर॥
जु कछु मनोरथ चिंतयै। सत्य होय बर वीर॥
छं० ॥ १३८ ॥

भुगति मुगति जस स्वामि क्रित। रिन भग्गै क्रम भग्गि॥
छिन छिन पायौ दरसनह। मिटि चलि चंद सुअग्गि॥
छं० ॥ १३९ ॥

देवी की कृपा से कवि का प्रसन्नता पूर्व्वक गजनी पहुंचना।

सिर पट्टर भट्टर सुभट। भव भै भग्गौ तास॥
परम तत्त रत्तौ वघट। नयर सपत्तौ तास॥
छं० ॥ १४० ॥

इहि विधि पत्तौ गज्जनै। जहं गोरी सुरतान॥
तपै मेछ इछ अप्पनी। मनों भान मध्यान॥
छं० ॥ १४१ ॥

ौपाई॥ इह अरंभ जुग्गिनी पुर अत्तौ। गुर नियान जोगह मन रत्तौ॥
दिसि विचारि लोवह अवलोकिय। गोरिय धर गज्जन वै सोधिय॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ देगै अभूत सुभूत गति । नठ नाटक वहु वार ॥
दूह चरित्त पिष्षन नयन । गयौ चद दरबार ॥ छं० ॥ १४३ ॥

गजनी नगर की शोभा और प्रतिभा वर्णन ।

वृद्धनाराच ॥ हय गय अनेक भति जोध जोध राजय ॥
म्लेच्छ दुष्ट तेज ताम ता कुरान साजय ॥
पढत मीर पारसी गियान सामि भ्रम्मय ॥
नमत चद वीथ चद पीर सीस नामय ॥ छं० ॥ १४४ ॥
निमाज तत अत मीर नीत राज राजय ॥
वहत गज्ज वारुनी सुवारनी न साजय ॥
कोहूत हट्ट हट्ट कका सेर के मनुच्छय ॥
अलच्छि लोइ लच्छन विनान लोल लच्छियं ॥ छं० ॥ १४५ ॥
सुनै न चद वेद सद्द वद्द त कल मयो ॥
मरोरि सु छ उग्र मेच्छ दिष्पयो विलमयो ॥
कमान वीर पचयौ सुटक जो अढारयौ ॥
समोन मेछ दिष्पियै सुजम्म तैसु ढारयौ ॥ छं० ॥ १४६ ॥
विपास वीर चातुरी सुढारह हट्ट सोहय ॥
विभास लभ्भ सामि कौ सुसिद्धि मोह मोहय ॥
कटत ते सुनार हे मतार तार राजही ॥
मयूष साँझ प्रात की किरन्न भान लाजही ॥ छं० ॥ १४७ ॥
अमग्ग हट्ट पट्टन सुरग सुग्र सोभय ॥
ग्रिह ग्रिह सुदिष्पिय तुरग तग लोभय ॥ छं० ॥ १४८ ॥
नाराच ॥ सपत्त भट्ट गज्जन । विभूति घट्ट गज्जन ॥
सुकट्ट जट्ट वधय । प्रगट्ट रूप सिद्धय ॥ छं० ॥ १४९ ॥
सुधट्ट कट्टि तुट्टय । मृग तु चाल पट्टय ॥
सुभोव छड्डि रुद्रय । विराग को समुद्रय ॥ छं० ॥ १५० ॥
हुतौ मनो कविद्रय । अनादि कौ जुगिदय ॥
गयद नैम धुम्मतौ । पग पग विरमतौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥
[1]निरष्षि मदिर सुम्मयो । सुवास रास उग्मयो ॥

(१) मो०—निरष्ष इक्क मदिर ।

गवष्य अच्छ उच्चयं । कनक्क ढारि कच्चयं ॥ छं० ॥ १५२ ॥
जरे जराव थंभयं । जगंमगे अचंभयं ॥
अनेक तथ्थ बालयं । रमंत चित्त सालयं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
परे चचिग्ग ओटयं । उगें कि चंद कोटयं ॥
जुगिंद ते निरंषयं । हिरन्न लग्गि अंपियं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
तमोर कोर रत्तियं । दसन्न में सुभत्तियं ॥
मनों कि डार पक्कियं । अनार ते दरक्कियं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
हलें अलक्क लंबियं । उरोज सों विलंबियं ॥
मनों कि ते उरग्गियं । कली कुसुद्द लग्गियं ॥ छं० ॥ १५६ ॥
जुवन्न मद्द मत्तियं । जुगिंद[1] कों छरत्तियं ॥
रयन्न की उनिंदयं । पवन्न सों झकुंदियं ॥ छं० ॥ १५७ ॥
हरे हरे हसंतियं[2] । विलोकि रूप चंदियं ॥
समान की सहेलियं । रही सुहथ्थ झेलियं ॥ छं० ॥ १५८ ॥
मनों कनक्क बेलियं । लपट्टियं चमेलियं ॥
सकोमलं सुरंगियं । पकी मनो नरंगियं ॥ छं० ॥ १५९ ॥
जवादि कासमीरयं । घरंषि अंग चीरयं ॥
*सुमन्न सत्त भीगयं । सुकेस पास चिंगयं ॥ छं० ॥ १६० ॥
अभूषनं अलंकियं । चलंत सिंघ लंकियं ॥
गुमान लज्ज घेरियं । पयं पती पहेरियं ॥ छं० ॥ १६१ ॥
फिरे न दिट्ठ फेरियं । हैरान भत्ति हेरियं ॥
चल्यौ सुचंद मग्गयं । डगं मगंत पग्गयं ॥ छं० ॥ १६२ ॥
तुही तुही अलष्षियं । सबद्द मुष्ष भष्षयं ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवि का शाही दरबार को जाना ।

नैर निरष्षि परष्षि कवि । धरकि हरष्षि न चित ॥
मात प्रसन्न प्रसन्न पय । तौ मिलियै वर मित्त ॥ छं० ॥ १६४ ॥

(१) ए० कृ० को०—कविंदं । (२) ए० कृ० को०—हसंदियं ।
* इस पंक्ति के दोनों चरण मो० प्रति में नहीं हैं आगे दो चरण बढते भी हैं इससे ज्ञात होता है कि ये दोनों चरण क्षेपक हैं।

उभै जाम वर उत्तरी । पढि सुमत्त वर चंद ॥
गय गोरी दरबार वर । बुझ्यो जगावन दंद । छं० ॥ १६५ ॥

दरबारियों का वर्णन ।

रसावला ॥ दरबार गोरी, भर भीर जोरी । उडै रेन झेन, करैं बत्त सेन ॥ छं० ॥ १६६ ॥
मुष मेछ दड्ढी, पय पेम चड्ढी । कटि तोन ठान, कसे कस्स मान ॥ छं० ॥ १६७ ।
हसै के हलक्के, मधीने अधिक्के । फरी तेग झार, गने के दिदार॥ छं० ॥ १६८ ॥
बहै मोन रज्जी, करैं केन वज्जी । तसब्बी तुसान, पढै के कुरान ॥ छं० ॥ १६९ ॥
पढै पत्ति सोहो, सुरत्तान दोहो । मरोरत मुच्छ, गुर ग्यान तुच्छ ॥ छं० १७० ॥
दिठी दिट्ट भट्ट, हियो पट्टि फट्ट । क्रम चपि पान, दरबार थान ॥ छं० ॥ १७१ ॥

कवि के विषय में लोगों की कल्पना ।

कवित्त ॥ प्रथम मुक्कि दरबार । लज्ज सकर सुरतानी ॥
है गै नट नाटक्क । भ्रम्म दिष्षिय परमानी ॥
एक कहै इह भट्ट । इक कहै सिद्ध प्रमान ॥
एक कहै ठग ठोठ । एक वेताल सुजान ॥
इक कहै जोग पाषंड इह । भ्रम लग्यौ रोकन कवि ॥
तब लगि चंद वरदाय वर । गयो थान दरबार हवि । छं० ॥ १७२ ॥

कवि का राजद्वार पर जाकर द्वारपाल से अपना परिचय देना ।

तह अग्गै गय निरषि । कनक लकुटीय नग जटित ॥
हय गय नर असरान । थान इन्द्रा सम थट्टित ॥

(१) ए० कृ० को०—काहि ।
(२) ए० कृ० को०—विभूति ।
(३) ए० कृ० को०—अरु ।
(२) मो०—सैळ ।

गज्जनवै सुरतान । भान सम तेज सुदिट्टौ ॥
तुछ अंमर संमरन । अहित चित बुग्गि सुमिट्टौ ॥
बुझ्यौ विभूति वपु भंति बहु । चंद धूत सिर बंधि पट ॥
भव भोग भवन रह छंडि कैं । किम जोगी भय भट्ट नट ॥
छं० ॥ १७३ ॥

गाथा ॥ हौं सु जोगिय हौं सुजोगिय जनन पर दार ॥
जोग जम जोगिनि पुरंदर सुरस चबिधि काव्य कवित्त जानौं सव ॥
सरस रसायन भायनह गीय गाह गुन ग्यान ॥
छैल इच्छ अच्छी कहौं जो पूछै सलतान ॥ छं० ॥ १७४ ॥

द्वारपाल का कवि का सादर आसन देना ।

दूहा ॥ हेजम हिय बासी सुबर । दिष्ट परष्षिय भट्ट ॥
बहु आदर आसन दियौ । पाय अरचि दिय पट्ट ॥छं०॥१७५ ॥

कवि का अपनी विद्याओं का बखान करना ।

पद्धरी ॥ कविचंद कहै सुनि जमन मीर । झलमलहि तेज तुम सुमनमीर ॥
लहौं विद्व बल अनत अथ्थि । देषिय जुसाह साहाब तथ्थ ॥
छं० ॥ १७६ ॥

अट्ठ च्यार उच्चार भेद । लघु दिग्घ रुप आनूप छेद ॥
अस्व सस्त्र विद्या गुनाह । लुक अंज गुटिक साजं सुराह ॥
छं० ॥ १७७ ॥

नी भेद तिथि लह्है अप्प । मारनह मोह वसीह जप्प ॥
ग भेद बिधि धिर विचार । रस धात पीत उच्चार सार ॥
छं० ॥ १७८ ॥

भाष रस नव नट्टनाद । जानौं विवेक विचार बाद ॥
दिष्षि जोति जोतिक भेद । गारुड़ह मंच द्रिग पंष षेद ॥
छं० ॥ १७९ ॥

तिहास अट्ट दह अंक माल । पौरान पृथक बुझ्झौं विसाल ॥
टक भरह पिंगल प्रबंध । जानौं सुअरथ उच्चार संध ॥
छं० ॥ १८० ॥

विद्याह चतुर दस चित्त मोहि । बुझझै सुकहो त्रिभुवन होहि ॥
भिट्टै जु एक चिन मोहि साहि । मन उक्ति[1] अथ्थ पुर्ज्जौ सुआहि
छं० ॥ १८१ ॥

द्वारपाल का कहना कि कविचन्द मैं तुझे पहचानता हू जरा ठहर इत्तला होती है ।

दूहा॥ इस्यौ जमन परदार तब । तुहि जानौ कविचंद ॥
छिन इक दरह बिलंबियौ । कवि न करहु मन मंद ॥
छं० ॥ १८२ ॥

हौं रमून जानौं सकल । तुहि जानौं कविचंद ॥
परसादह तुहि देखिहै । पढि आनंद सुकंद ॥
छं० ॥ १८३ ॥

वथुआ ॥ तुह रमूजि सह जमं[2] नरिंद । निपुन वेद सह सकल समझन ॥
तु लहत गुन भेद जान जानन गुनिक जन । तू लज्ज रूप माया अभूप धन
धन पारथन सजन तु वर बुद्धि विनान । जान को नाहिन तज्जन ॥
छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ हित अहित सनमुष पहिचानी । भावी गति आगति सब जानी॥
अंतर दंद[3] चंद मति सज्जिय । छुटन अंग सकार गढ लज्जिय ॥
छं० ॥ १८५ ॥

पद्धरी ॥ परदार मुष्प लष्पिय सुचंद । तू किय[4] विभूति सिर धरै बंद ॥
मुष फेरि हसति दत्तक निपानि । उठि भेद भट्ट जानौं पुब पिछानि॥
छं० ॥ १८६ ॥

कवि का अपना प्रगट होना जान कर वहा से चल देना ।

दूहा ॥ तब विरम्म कवियन करिग[5] । रुचित अप्पनी इच्छ ॥
सह सद्दाव दर दिष्षियै । जि कछु भुमि परि मिच्छ ॥
छं० ॥ १८७ ॥

(१) ए० कृ० को०—उगत ।
(२) ए० कृ० को०—मझ्झ ।
(३) ए० कृ० को०—दंत ।
(४) ए० कृ० को०—वकी ।
(५) मो०—वरिय ।

गाथा ॥ साजति अनेक भत्ती । षुरसान पान सुविहानं ॥
गोरी गुर तुरकानं । दानयं दैव दुरवाहं ॥ छं० ॥ १८८ ॥

शाही पासवान सरदारों का और शाही ड्योढ़ा का औसाफ वर्णन ।

भुजंगी ॥ हहंमी हहंगी सुहिल्ली सुरोगी।तरन्नी नियाजी[1] सुहन्नी कुरोमी ॥
धरंते तरंते सुधारे मुसल्ले । हरव्वी सहेवी सरंते गुमल्ले ॥
छं० ॥ १८९ ॥

सकन्नी तिषन्नी षुरन्नी षुरेसी । सरक्खान भट्टी जिलंगार गोसी ॥
धरन्नी धरंती समल्ले मुसल्ली । तुरक्कान चिंतं चिगत्तं तु सल्ली ॥
छं० ॥ १९० ॥

हबस्सी सुगोरी सुकब्बी सुपन्नी । प्रकारं प्रवानं प्रवानी तिवन्नी[2] ॥
नियाजी सुबाजी सुकाजी कुसल्लै । तजे जम्म तेजं करं वज्र सल्ले ॥
छं० ॥ १९१ ॥

तुरक्की ममक्की सनं भेज[3] लल्ले । पवंगे पवन्ने बनं चार गल्ले ॥
सुभं सेषजादे अबादे पठाने । मदा मंच जुद्धंग सुद्धंग जाने ॥
छं० ॥ १९२ ॥

निमाजं सुरोजं नमो पंच बानं । पढै अथ्थि कौरान सोसान जानं[4] ॥
सिपारा चिबोरा पढै तीस तामं । धरै राह अप्पं सुतप्पं सुधामं ॥
छं० ॥ १९३ ॥

चलै अग्गि आसीमि अप्पं सुराहं । तिनं गात लप्पै गुरंजीव गाहं ।
नही ग्रेह माया निराया विरागं । तिनं राह बंछै धनं तीय तागं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

इसे देस देसं सुवेसं सुरेसं । दिष्यौ साहि गोरी दरब्बार सेसं ॥
अनेकं वरं वंन वंने वियाने । दिठै साहि गोरी गरज्जे सुहाने ॥
छं० ॥ १९५ ॥

बली जिल्ल बानी पबीरज्ज लावी । तुलंगा हरासे हरंमी सुतावी ॥
गनै कौन इच्छै जिते मेछ जाती । ग्रहै आय जानं दरं दिष्षि भाती ॥
छं० ॥ १९६ ॥

(१) ए० कृ० को० निराजी । (२) ए० कृ० को० निवन्नी ।
(३) ए० कृ० को० तेज । (४) ए० कृ० को० बानं ।

कवित्त ॥ दिष्षि धान सुरतान । पान सुविहान मसद्दिति ॥
तीन लष्ष निसि दिवस । रष्षि वज्जग वज्ज भलि ॥
वर वज्जै नीसान । सद्द कन्नारव भग्गा ॥
स्तर तेज तप साहि । गोर गोरी गुर लग्गा ॥
सुरतान सुवर चित पति चढै । पाय विलग्गी षग गति ॥
तहिनह चद वरदाय कौ । रस सकर सकर विपति ॥छ०॥१९७॥

दिन के तीसरे पहर शाह का हदफ खेलने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ इह विध जाम दु वित्ति गय । भयौ त्रतीय पहरान ॥
हदफ साहि पिल्लन चढन । दियौ आप फुरमान ॥छ०॥१९८॥

हदफ खेल के लिये शाही सवारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रथम वज्जि घरियार । वज्जि नवबत्ति पलान सजि ॥
दस दिसि वर धाए नकीव । साहि गजराज ऋौर गजि ॥
दुतिय वज्जि नीसान । सबे चतुरंगनि सज्जिय ॥
षानषि भर पुरसान[1] । आय दरवार सुरज्जिय ॥
बाज तँतीन नीसान वर । वर गोरी वर वीर चढि ॥
आलम अदब्ब देषत[2] कवि । वाम कोद वर भट्ट ठढि ॥
छं० ॥ १९९ ॥

चौपाई ॥ उठि उठि भट्ट कहै हम जान । वषत अनद रह्यौ सुविहान ॥
विस लज्जाह वोल्यौ मेछान । कहिहै सो करिहै सुविहान ॥
छ०॥ २०० ॥

दूहा ॥ चढि अवाज आलम सघन । वहु अदब्ब जमनेस ॥
दिसि दष्षिन लघु वध नृप । चलै अग्र हुअ मेस ॥छ०॥२०१॥

शाही सवारी का निकलना और कवि का शाह का हाथ उठा कर आशीर्वाद देना ।

पद्धरी ॥ चढि चल्यौ साहि गोरी प्रमान । जाने कि ग्रीव ग्रीपम्म भान ॥

---

(१) ए० कृ० को०—सुरतान । (२) ए० कृ० को०—देषन ।

तब सह सलाम मंडीहत मीर । फिरि वंधि फौज रहे तीर तीर ॥
छं० ॥ २०२ ॥

अंगुलि अधरनि[1] करि करि मसंद । सिर नाइ भई जब निजर मंद ॥
पारस सहस्स लकरीय लाल । वरनंत साभ मानहु प्रवाल ॥
छं० ॥ २०३ ॥

अग्ग सुवंध निसुरत्ति षान । दरस पंच हय उत्त सुब्बिहान ॥
[2]गोरीय सुअह तत्तार साह । पुच्छंत वत्त चढ़ि पातिसाह ॥
छं० ॥ २०४ ॥

को गिने साह षानह असंध । दिष्षे सहाव जुग जुगति अंधि ॥
आसनह अंस ताजी सुहाय । नग जटित जीन रवि ससिय धाय ॥
छं० ॥ २०५ ॥

कंचन लोल करनीय जग्ग । चित रहिय चुंधि मन अमय लग्ग ॥
रँग रंग पीत वनि सेत लाल । प्रगटें सु प्रगट मान षिनमाल॥
छं० ॥ २०६ ॥

रँग रंग रंग अंमर सुचंग । दिष्षियै एक चंदह विरंग ॥
आलम अदब्ब दिष्यौ न जाय । रुक्यौ सुमग्ग कविचंद धाय ॥
छं० ॥ २०७ ॥

लक्करिय लाल अड्डिय करंत । उम्भौ[3] सुदिट्ठ दिष्यौ तुरंत ॥
पर दुअन देस जानै अकाज । निय सामि चढ्ढ अप्पन काज ॥
छं० ॥ २०८

मुर एक घटी चित्तत तंम । आवाज साह किन्नौ हुकंम ॥
तब अली वेग आलंम सज्जि । घन जेम भइ नीसान वज्जि ॥
छं० ॥ २०९ ॥

मनन कि मेरि भारथ्थ सज्जि । सुरपत्ति कंपि द्रिग शंपि रज्जि ॥
दिसि दिसा मिले सद्दे सदान । धर धमकि बंध बंधव अदान ॥
छं० ॥ २१० ॥

(१) ए० कृ० को० अधराति ।
(२) मो०—गोरी सूसेहि तत्तार नाम ।
(३) ए० कृ० को० लम्भौ ।

सोभंत पावरी मनौ मल्ल । है रूप होत अमुष्षी हल्ल ॥
लक्करी लाल इतमाम तान[१] । ओपम चंद जंपै सुवान ॥
छं० ॥ २११ ॥

जानै कि साह रिजि सब्ब भूप । निकस्यौ अग धरि कोटि रूप ॥
सुनि हथ्थ राज किलकार कोर । यौ चल्यौ अग्ग सुरतान जोर ॥
छं० ॥ २१२ ॥

मानौ किरीट वैं[२] सीस[३] भान । दुहुं परी होडकिर निट्ठ जान ॥
पहरीय वृन गभीर ओप । [४]जान्यौ कि मडौ मौनज सु कोप ॥
छं० ॥ २१३ ॥

वारुन निसा अप्पि छुट्टि विवाह । जाने कि रूप बहु करै राह ।
मन्यौ सु छत्र सुरतान सीस । सुरतान जित्ति चहुआन रीस ॥
छं० ॥ २१४ ॥

मनौ भान सूर सह हरे छाह । चल्ले मुकाम धरि रूप वाह ॥
दुहु पास वाह चालुक्क हीर । तिन दिष्ष रूप सुरतान मीर ॥
छं० ॥ २१५ ॥

मीयज्जपान निज बध मान । सामुह धरी लज इंद्र जान ॥
बधै सुअग दै दै कुवान । ओपम चंद जंपै निदान ॥
छं० ॥ २१६ ॥

कटि किसल्ल सूर सब बार तोन । जमनेस भेस धन पत्ति द्रोन ॥
सिगिन सवह वेधी सुपान । भारथ्थ वेर अरजुन समान ॥
छं० ॥ २१७ ॥

दह वेर सूर सूरन सलाम । वर हुकुम चढन देपन्न ताम ॥
वर भट्ट भेष पथ अनिव होत । पै भूप जानि सच्चे समोत ॥
छं० ॥ २१८ ॥

विभुत्ति तनह अवधूत दीस । वर दून उन दीनो असीस ॥
छं० ॥ २१९ ॥

(१) ए० कृ० को —ताम, बम ।　　(२) ए० कृ० को०—कै ।
(३) मो०—सिस ।　　(४) ए० कृ० को०—जानैं कि मडौ चहू करिव कोप ।
(५) ए० कृ० को०—त्रुटि ।

कवि का शाह की विरद पढना।

वचनिका ॥ साहि स्मार साहि विभार। वैरिश्रा[1] साह कंद कुदार ॥
सबर साह मान मरदन। * * * ॥
निबर साह थापना चारिज। अखिल रीत दस्माल आरिज ॥
दुरवेस साह धारी तरक। नौरन्न साह खैं गै श्ररक ॥
लोमीन साह उर अंकुसाह। उत्तर दष्षिन दिस साह गाह ॥
इसै कुरान मूसे सुलान। महमंद दीन ईमान आन ॥
हजरति साह आलम जलाल। साहिब करान गाजीय लाल ॥
आषंड जमी कंटक विडार। आदल्ल रीति आलम निडार ॥
फक्कर फरीद रिज कान दार। बगलीस पंनाम काम दार ॥
औलिया पीर पैगंम रार। इक बीस च्यारि कामं ति कार ॥
दावा दरिद्र भंजन विभार। साहन समंद विरदै पगार ॥
तबल तबल घालि तबलेश्वर। अंग उपांग भोग भोजेश्वर[2] ॥
कालि कृतांत कलह कोलेश्वर। खैयौ ईस सुरतान साहवेश्वर ॥
छं० ॥ २२० ॥

शाह का कवि की तरफ मुतवज्जह होना और कवि का अपना परिचय देना।

दूहा ॥ देत असीसह सिर नयौ। विन अप्पन फुरमान ॥
दुसह भट्ट दिष्यौ नयन। वेपुच्छे सुलतान ॥
छं० ॥ २२१ ॥

पातिसाह साहाब दीन वाक्यं।

साटक ॥ दुष्टं तो सुविहान तेज तरुनं भूपाल ऊपालयोः[3] ॥
तो चहू बर बीर जोति जुधयं जित्तंधरं जालयो ॥
बिबौ पान धुरेस बीर बलनं कारनं वधं जंमयो ॥
जुद्धं तो जलि क्रंन बीर उपमा भट्टं सिंचदो मया ॥
छं० ॥ २२२ ॥

(१) ए० कृ० को० बेरिया। (२) ए०- भोगेश्वर।
(३) ए० कृ० को० नूपालयोः।

शाह का कवि को पास बुलाकर सब हाल पूछना। कवि का सब बातों का उत्तर देना और शाह का उसे ठहरने के लिये कहना।

कवित्त ॥ देषि चंद मन मंद । साहि आनंद उपन्नौ ॥
निजरि अप्प सुविहान । बोलि आलम अप लिन्नौ ॥
हथ्थ अप्पि दस तक्क[1] । बत्त पुच्छी दुष सुष्प वर ॥
विधि विधान निम्मयौ । कारन उद्देस कविय वर ॥
संग्राम स्वाम क्यौ मुक्कयौ । क्यो कविंद्र भारथ्थ तजि ॥
किहि थान लोइ संभरि धनी । कहौ सुवत्त लज्जौ न लजि ॥
छं० ॥ २२३ ॥

पद्धरी ॥ सुरतान षान सद्देति मीर । तहा बोलि चंद मन मंद वीर ॥
बिन बोल बोल बुल्यौ सुछंद । हो सुनौ साहि वर भट्ट चंद ॥
छं० ॥ २२४ ॥

अवतार लीन प्रथिराज साथ । वह ग्रह्यौ हौ व अच्छौ अनाथ ॥
संग्राम धाम मोकलि वसीठ । जालंध राव हम्मीर धीठ ॥
छं० ॥ २२५ ॥

तिहि होत वीर सुरतान संधि । जालंध थान मो चंद बंधि ॥
संग्राम राज भारथ्थ कीन । सुरतान बंधि जस जीति लीन ॥
छं० ॥ २२६ ॥

सुलतान बंधि सुविहान सार । आहुट्ठ समर पग छीन धार ॥
छिद्दवान पंभ दोउ असत वीर । सध्यो जुकाम तहिन सरीर ॥
छं० ॥ २२७ ॥

मै सुन्यौ साहि विन अपि कीन । तजि भोग जोग मैं तप्प लीन ॥
वह प्रनग विप्प सुरतान छानि । मै अट्ठ राज मन अनत पान ॥
छं० ॥ २२८ ॥

हू मच जनपालै न जाउ । वैराग राग धुअ मेछि पाउ ॥

(१) ए० कृ० को०—कन्त ।

सुरतान आन तप मपन काज । अस भट्ट सज्जि जोगिंद राज ॥
छं० ॥ २२९ ॥

मैं तक्यौ तथ्य बद्री सुथान । थिर रह्यौ सुनत सुरतान कौन ॥
धरि एक सोचि बोल्यौ सुसाहि । रिस अंग अग्गि पच्चौ बुझाइ ॥
छं० ॥ २३० ॥

बे चंद अंध में रिस न कीन । वर बंक दिष्ट छंडैं न भीन ॥
सुविहान थान रष्ये[1] अदग्घ । करतार हथ्थ लक्करिय ग्रग्घ ॥
छं० ॥ २३१ ॥

करतार केलि जानी न जाइ । चिंतवैं आन आनह सुथाइ ॥
बलिराइ कीन जीतन सुइंद । बंध्यौ विधान थानह फुनिंद ॥
छं० । २३२ ॥

धरि अड्ड रह्यौ तिन वार तब्ब । सुरतान बोलि वर कहिग सब्ब ॥
हम जाहिं चंद पेलनह दष्य । दोय गरुह कालिह करि चलहु तथ्य ॥
छं० ॥ २३३ ॥

सुरतान हरन मायौ सुभट्ट । जिहि काज चंद सिर बंधिय जट्ट ॥
षट मुर पंचवि जो लग्गि घट्ट । सुरतान प्रात बन गहौ[2] वट्ट ॥
छं० ॥ २३४ ॥

दूहा ॥ जु कछु न्नक्खयौ भट्ट वर । तुम जानौ बहु बुद्धि ॥
सो टरै न विधुना सुहथ[3] । सहत न दुष्य अलुद्ध ॥
छं० ॥ २३५ ॥

शाह का पीरोज खां हबशी को कवि की खातिर करने की आज्ञा देना ।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुवीर सुविहान जान । हबसी सबोलि सुविहान षान ।
फिरि सोहि ताहि फुरमान दीन । हम बहुत चंद महमान कीन ॥
छं० ॥ २३६ ॥

(१) ए० कृ० को० निरषै । (२) ए० कृ० को० गसौ ।
(३) ए० कृ० को० विहथ ।

कवित्त ॥ वर हबसी पीरोज । हथ्थ सुविहान भट्ट दिय ॥
पुब्ब दिसा पच्छिय हुजाव । अस्तुति समन्न किय ॥
सुप सुपग मिष्ठान । पान सुगंध धूप घन ॥
दिव्य धाम दह वाम । कुमति पाहार जुद्ध मन ॥
वसतर सुरंग घन सुमन दुति । दुतिन वढिय वर चंद की ॥
आनंद कंद वड्ढन दुतिय । दुति वड्ढिय वर दंद की ॥
छं० ॥ २३७ ॥

दूहा ॥ फिरि सुचंद चलि नगर कौ । दियौ साहि फुरमान ॥
बिधि उद्दय कमुदिनि मुदय । गयौ अस्तमित भान ॥छं०॥२३८॥
करत चंद महिमान सव । अगर धूप दिय देह ॥
भिदै न सुष तन दुष्प वढि । ज्यौ स्रतक वरगनि नेह ॥छं०॥२३९॥
निमासा मनषिन विमुष । पिन रैनी नन चित्त ॥
साहि सहाव अंदर गयौ । मीर समोधन पित्त ॥छं०॥२४० ।
है हदक करि पेदगी । ग्रह आयौ सुरतान ॥
कथत चंद मन में सुनिसि । हुम अप्पै[1] सुविहान ॥छं०॥२४१॥

कवि का भीम नामक खत्री के घर डेरा दिया जाना ।

पद्धरी ॥ हुज्जाव चंद दोउ एक सथ्थ । आए सुग्रेह पचीय तथ्थ ॥
बोलयौ भीम हुज्जाव ताम । वे आम कब्बि रष्यौ सुमाम ॥
छं० ॥ २४२ ॥
सुनि भीम अत्ति आनंद अप्प । लग्यौ सुपाइ पची सुतप्प ॥
हुज्जाव फिर्यौ कवि प्रेरि ताम । लै गयौ भीम कित मंनि काम ॥
छं० ॥ २४३ ॥
किय अर्ध पाद पत्री सुकब्बि । उपचार विमल बोनी सुतब्बि ॥
आसनह सुष्प अति सेव सज्जि । उपचार देपि कवि कित्त रज्जि ॥
छं० ॥ २४४ ॥
अग्गिया मांगि पचिय अहारि । सम रुचिय[2] भाव रष्यौ सहार ॥
छं० ॥ २४५ ॥

(१) मो०—अपै ।　　　　(२) मो०—साहिब ।

कविचन्द का भीम से एक एकान्त स्थान मांगना और कवि की रुचि के अनुसार भीम का एकान्त स्थान देना।

दूहा ॥ रंजि सुकविता षिति सम । कहीं सत्ति साभिष्टि ॥
देहु निरंतर ग्रेह इक । हम सुझ्झै जुनि[1] इष्ट ॥छं० ॥ २४६ ॥
तब षत्री कर जोरि कहि । अहो सुकवि आरोह ॥
अत्ति निरंतर ग्रेह इक । तुम आश्रमहु लेह ॥छं० ॥ २४७ ॥
अद्भुत कवि षिचिय जगति । ग्रिह देषवि मन ल्लास ॥
एक सिंघ अह पष्परयौ । अब मन पूर्गी आस ॥छं० ॥ २४८ ॥

अरिल्ल ॥ कवियन मड्डि ताम आयासह । संपन्नौ जहाँ भासन आसह ॥
देषि अवास रीझि उर बासह[2] । अति निरमल कम्मल सुर रासह[3] ।
छं० ॥ २४९ ॥
तहं विरम्म किन्नो कविरामह । बोलि कवी पिची बर तामह ॥
मंगे परिकर होम प्रचारं । होम जोग प्रति पूजा सारं ॥
छं० ॥ २५० ॥
जे जे परिकर मंगिय कव्वी । ते ते आनि भीम दिय तव्वीं ॥
करि आसन कविचंद महामय । बैठो धारन धयान सज्जि सय ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पूजन की सामग्री जुटा कर कवि का हवन करना।

करे जाप सा मंच बीज सर । लग्गो करन होम सा विधि पर ।
करे ध्यान पूरन जप कव्वी । सनमुष तोन प्रगट्टी हव्वी ॥
छं० ॥ २५२ ॥
मंनिय बेद कविय जन तामं । लग्गे करन मंच स्तुति कामं ॥
न्यास षडंग अंग रष्या करि । बैठो मग वच काया संबरि ॥
छं० ॥ २५३ ॥
द्वार करंक कपट करि दूरं । इन विधि मंडप कुंड सपूरं ॥
अति गुग्गल कनयर जा स्थूलं । मधु दधि दुगध मिश्र लां मूलं ॥
छं० ॥ २५४ ॥

(१) ए० कृ० को० अति । (२) ए० कृ० को० भासह । (३) मो०- राजह ।

जुग जातक सेवा बहु भती । श्रीफल पट्ट पितांबर दती ॥
समिध त्रिष्य ब्रह्मह सनमानी । चाहुति[1] अगुल जुग नषजानी ॥
छं० ॥ २५५ ॥

एक पट्ट पहिरन भट्टान । बैठौ कारन ध्यान तुरकान ॥
प्रानायाम करे आचमन । दस द्रिगपाल षेचपति सुमन ॥
छं० ॥ २५६ ॥

अग्रज दती देव अराधी । इम करि मात उमा कवि साधी ॥
अष्षर आदि अनादि उचार । बीज गुपत जिय काया धार ॥
छं० ॥ २५७ ॥

कवि का बीज मंत्र का जाप करना ।

दूहा ॥ प्रनव आदि षोडस बरन । नाम अनत विचार ॥
इन में त्रिभुवन साधनी । विद्या नेक प्रकार ॥ छं० ॥ २५८ ॥

बीज मंत्र के जाप की विधि और ध्यान ।

लघुनाराज ॥ अहो प्रनव्व रूपय । जगत्त बीज जूपय ॥
त्रिय सरूपय सय । समीर तेजय तय ॥ छं० ॥ २५९ ॥
सवास बीज माइयं । सुवाग बीज ताइय ॥
प्रभास सूर वासय । अनग बीज रासय । छं० ॥ २६० ॥
विधान बीज सारय । सुधा सुभोम कारय ॥
स्वर सरूप षोडस । वरन्न ब्रन्न जोड़स ॥ छं० ॥ २६१ ॥
सकत्ति रूपय तय । प्रचार चार चित्तय ॥
कानक रूप माइय । प्रकार जग्ग ताइय ॥ छं० ॥ २६२ ॥
निबध बध व धय । विलोम लोम सदय ॥
वरन्न रूप मन्तय । विनद्धि विजन मय ॥ छं० ॥ २६३ ॥
अकाल रूप मायिय । न बुद्ध पार पाइय ॥
पुरस्स देक काज्जय । अनेक रूप रज्जय ॥ छं० ॥ २६४ ॥
अहस सद्द सेवय । निबद्ध नेह एवय ॥
दरस्स रूप देविय । सुवाल वद्ध ते वय ॥ २६५ ॥

(१) ए० कृ० को —चाहुनि ।

देवी का प्रगट होकर वर देना कि शाह पृथ्वीराज और तूं तीनो एकही घड़ी अन्त को प्राप्त होगे ।

गाथा ॥ सुनि देवी कवि कव्वं । दीय हुंकार अप्प आयामं ॥
मम करि हुप्प सुभट्टं । दरसन समय नथ्थ लहि वुत्तं ॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ निसि निसद्द उत्तरिय । चंद अग्गे रचि होमं ॥
बेद मंच आरंभ । जाप पूरन पढ़ि सोमं ॥
दियसु[1] मात हुंकार । देवि धुनि सुनिय वीर भट ॥
छंद बंध उच्चार । जंच जंत्री[2] सुमंच पट ॥
उच्चार भट्ट चित कारन बर । बीर प्रबंधन छंद किय ॥
चिंतयो जोग बंछै मरन । और न तात विचार विय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

गाथा ॥ साह बदी सुलतानं । तो प्रथिराज अंत दिन एकं ॥
तो चहुआन स कित्ती । वहै बर बेलि पुहमि परचोरं[3] ॥
छं० ॥ २६८ ॥

करि साहास रचि बुद्धी । सिद्धी सिद्ध मंडि स। कज्जं[4] ॥
उद्दिम सुद्दिम सारं । करि कविराज चित्त थिर थप्पे ॥
छं० ॥ २६९ ॥

तब कहि चंद सुकव्वी । सुनि जग मात मुक्कलि[5] विग्यानं ॥
बालप्पन निज नेहं । सो निब्बाहे नेह सा देवी ॥छं०॥२७० ॥

छंद ॥ सुनि सा सकति किद्ध हुंकारं । झमके विज्जल तेज सभारं ।
सुनि वरदाय धीर मय सारं । मकरि मोह मय षेद अपारं ॥
छं० ॥ २७१ ॥

जे निम्मान विधानं भावं ; सो निम्मान मिटै नह ठावं ॥
बेली कित्ति बंध राजानं । उरध लोक तुम पावै प्रानं ॥
छं० ॥ २७२ ॥

ए० कृ० को० दियत । (२) ए० कृ० को० मंत्री । (३) मो० परिवार ।
(४) मो० कज्ज । (५) ए० कृ० को० बुझि विज्ञातं ।

दूहा ॥ रीझ उमा कहि डरन करि। दरस मिट्टि कविराज ॥
बैठि रसन सुलतान कै। चंद करन क्रित काज ॥
छं० ॥ २७३ ॥

सुनि ग्यान चौ कब्बि जिय। धरिय अंत मन ध्यान ॥
सिद्धो कारन जानि जिय। विरतौ प्रेम पुरान ॥
छं० ॥ २७४ ॥

कवि के पूजन समाप्त करने पर भीम का पूछना कि आप अपनी इच्छा को क्यो कर पर्ण कर सकते है तब कवि का उसको देवी के दर्शन कराना।

कवित्त ॥ प्रान कालपि पति काज। चित्त सर वेद भेद उर ॥
आसन वासन तजिय। पूजि द्रुग्गा पूरन करि ॥
तब दिपि बोल्यौ भीम। एक विग्यान सुझ्झ सुनि ॥
तुम राजिंद सुभट्ट। भस्म अप्पित दुप्पित मन ॥
जल उस्न आनि कुंकुम सक्रित। पर ख्यालन तन ताम किय ॥
वसनह सुदिव्य आछादि मुनि। अति आनंदिय भीम जिय ॥
छं० ॥ २७५॥

दूहा। उमरि साहि घन घाइ दुहि। रस रेती करि दाय ॥
तमनि किरनि लग्गत विषम। बीर मंच परदाय ॥ छं० ॥ २७६ ॥

देवी का स्तुति।

भुजंगी। निराधार विद्या देवी देहि चंद। जपो तुझ्झ तू ही जं तू ही प्रबंध
कहा साहि गोरी असमान सूर। कहा भट्ट फकीर लोटंत धूर ॥
छं० ॥ २७७ ॥

कहा राज अधान बंध विधीय। कहा कोस कम्मान आवै न दाय॥
जही वान आतम्म मातंग भारी। तुही बीर रूपी विराजी करारी॥
छं० ॥ २७८ ॥

तुही सत्य सत्यं षदै वेद मंच। तुही भेद अभ्भेद जायासि तंच॥
तुही तेज सूरज्जि सो वेलि चंद। तुही आसमान तुही भीम नंद।
छं० ॥ २७९ ॥

तुंही प्रकृति पारं अपारं सुरब्बं । तुंही अजै अरधंग अजपादि ि
करामाति कंधं करत्तार काया । तुंही कामनी काम संसार जार
छं० ॥ २८० ॥

कली काल चालंत चामंड माली । तुंही बाल जोवन्न ब्रद्धंति का
रटै नाट रागं विराजी विराली । हरै मोह रंगं बजै बज्र ताली
छं० ॥ २८१ ॥

हरै सच्च बुद्धी कमिच्चं जयंती । जपै तोय सायं प्रली लागियंती
बन्यौ तप्प तेजं जयौ अद्ध मुंडं । अजै वा विजै वासही देह छं
छं० ॥ २८२ ॥

घरी पंचली देवि को तिग्ग देष्यौ । सती साहसी सिद्ध तूंही विसे
धरी ध्यान देषी बढी बीर रूपं । चढ़ी जोति देषी विमानं अनू
छं० ॥ २८३ ॥

जमी अंत सोहंत जालंधराली । सरै सब्ब काजं बरदाय वानी
उमा मो बिसासी परत्तीत पाई । जहां प्रब्बि सासी तहां देविन
छं० ॥ २८४ ॥

नियं देह देषै विरूपं रिसानं । तजै मोह माया गई आसमा
निसा पंग रंगी अरंगी सुजायं । सुभं सुभ्भ जानै लियै हथ्थ ह
छं० ॥ २८५ ॥

सकुन्नं जलंने मरन्नं विहाने । बजै दुंदुभी देवि भूमी निसाने
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा । भई सबद आयास धुनि । भय सुकाम तुह सत्त ॥
तब विचित्र चिंत्यौ सुमन । नीति न रष्यौ हित्त ॥
छं० ॥ २८७ ॥

उस रात्रि को मुसल्मानी जंत्र मंत्र का न चलना और मुल्ला के मन में विस्मय होना ।

भुजंगी । महल साह साहाब सुरतान गोरी । जगी अलनि किरनानि संभान जोरी ॥
किते वे कुराने कुसी कान लग्गे । डरे देव बानी नहीं मंत जग
छं० ॥ २८८ ॥

डरे दान दें ये सुलीए फकीरे। तहा करि सकै कौन ग्रह साहपीरे॥
फिरस्ते न हस्ते न मुल्ला पुकारे। ८ठै मुट्ठि दिट्ठी तहा गातभ्कारे॥
छं० ॥ २८९ ॥

चले सेप सीपी भषे दड लीधा। रहै सत्र मित्ते गुरू ग्यान वीधा॥
¹हित अन हित्त दिपै जा उलप्पै। सत दूअ विधी पर जीष लप्प
छं० ॥ २९० ॥

सयते धन ते तवी वेव तेहा। चित अन्न पाने नहीं आव जेहा ॥
निय भ्रम्मधारी धुर पासवान। सदा सुप्प सेवै जन गातवान ॥
छं० ॥ २९१ ॥

पके पक्क पान समानत नेह। अप अप्प रप्पै जिसे देह देह ॥
वस विस्तरे सा पवास सहथ्थ। अभुत्त सु ज्योतीतग हेम तथ्थ ॥
छं० ॥ २९२ ॥

सुछ चुन पूगी कथा पान धारी। जिके अप्रवाहे जिसे भूप भारी।
जहा मच साधी चिया चेय लोपै। वर कि करै दुष्ट वै रीति कोपै
छं० ॥ २९३ ॥

जितै पान पधार अनुकूल सारे। मन कपट धरियार चित्त बिचारे
छं० ॥ २९४ ॥

दुहा॥ भय विहान सुविहान दर। वजि नववत्ति निसान।
तम चूरन सूरन किरन। प्रगटि दिसान दिसान ॥
छं ॥ २९५ ॥

प्रातःकाल होते ही शाह का कवि को बुलाने की इच्छा करना।

कवित्त। भय विहान सुविहान। सहि वदगी निरामय ॥
वजि नववत्ति निशाय। घाय वज्जिय घरियारय।
नट्ठि तिमर तपि सूर। हवर रह दीन तत्त मति ॥
जग्गि साहि साहाव। काज किन्नो नित्यह गति ॥
आरोहि वसन उस्नीष रजि। पां पियारि धरि आदरस ॥
निरपत निवासह² मडिकिय। चडिय कारन चड रस ॥
छं० ॥ २९६ ॥

(१) मो०—हित अनहित देपि जास उलष्य। (२) ए० कृ० को०—हिरपत निवारह।

दूहा । हरफ हद्दकरि गिल्लयौ । घर आयौ सु विहान ॥
स्रुषत चंद मन मंझ निसि । नीठ सु भयौ विहान ॥छं०॥२९७॥

शाह का हुजाब को कवि के लाने की आज्ञा देना और ततार का उसे मना करना ।

किय आदरस निवास । द्रुग्ग मधि सेव सधारन ॥
तब चित्तह चढ़ि चंद । मिलन मन किन्नौ धारन ॥
तिहि सु समय सल्लाम । आय ततार षान तब ॥
षां रुस्तम षां जमन । आय बर पास सेव सब ॥
उच्चार्यौ साहि हुज्जाब सौं । बोलि भट्ट चहुआन तत[1] ॥
सिर धर्यौ बोल हुज्जाब जब । तब बुल्ल्यौ ततार तत[2] ॥
छं० ॥ २९८॥

चौपाई । इम चिंतत चिंत्यौ सुलतान । वे कहां भट्ट निसुरत्ति षान ॥
बैराग राज बन जाय चंद । दोइ कारै गरुह दुनिया सदंद ॥
छं० ॥ २९९ ॥

कवित्त । सुनिय हुकम निसुरत्ति । करिय तसलीम साहबं ॥
बंदो की इह नाहि । करै सुविहान जुबाबं ॥
अविचारी करि बत्त । हाय पीछै पछितावा ॥
मंत मंति किज्जियै । दोस दुनिया नह आवा ॥
हित कहै स्वामि सेवक सुध्रम । अबर बोलि मत पुच्छियै ।
जानौ न बत्त कपटी करह । क्यौं विसास नस[3] इच्छियै ॥
छं० ॥ ३०० ॥

शाह का कहना कि देखें तो उसमें क्या रहस्य है, बातों बातों में बड़े रहस्य प्रगट होते हैं ।

बैठि मत्त सुरतान । रसनि भिम्मयौ करन बर ॥
अम्म राज दिन पुज्ज । चंद प्रानेज कोल चर ॥

(१) ए० कृ० को०—वत ।
(२) ए० कृ० को०— तस ।
(३) ए० कृ० को०—तस ।

सूर उदै विन भेद। चंद सुरतान सभरिय ॥
बोलि पान निसुरत्ति। धान हुज्जाव उच्चरिय ॥
भट्टहि सु[1] तत्त जानन्त सकल। नवि अकाल गति बुज्झियै ॥
आनै न लोय इह लोक मे। कौन भेद कत सुझ्झियै ॥
छ० ॥ ३०१ ॥

सुनिय पान निसुरत्ति। पान ततार प धारिय ॥
गरुह दद टारियै। गरुह आनद उचारिय ॥
निंदा कुल सपात। काल गच्छै अबुद्धि मति ॥
सिद्धि बोध जिहि होय। काल गच्छै जु गरुह भति ॥
इक रहै गरुह सोई ग्रहन। रहन सोय सो ग्रह नहो।
इहि रोज साहि साहति कुफर। करहि अरज आन न गहि ॥
छ० ॥ ३०२ ॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु और सर्प का विश्वास करना उचित नहीं।

तब तातर निसुरत्ति। पानि बर जोर समीप ॥
वे अदव्व सुलितान। नेक जपौ पुव अप्प[2] ॥
अदब रष्षि दै दान। निजरि दिष्षियै न दुर अरि ॥
बर कुरान काजी कहत। अदव सुविहान पुव्व करि ॥
नट भट्ट सह ड कनि[3] डहर। अप्प वेल दुसमन दरस ॥
विष वाद वाद पाषड विय। करि न साहि आलम परस ॥
छ० ॥ ३०३

सुनि ततार हुज्जाव। करन जुलि साहि सिकदर ॥
कीय बहुत अरिजग। फेरि अग्या सब बदरि[4] ॥
हिंदवान धर कही। कह्यौ सेना सब साजिय ॥
मिले राह विच आनि। स्याह चीटिय दल माजिय ॥
महिमान साहि दल सबै करि। तब पुच्छिय इह कोन गति

(१) ए० कृ० को०—रहै भट्ट। (२) ए० कृ० को०—नेक पुत्र सुनाप
(३) ए० कृ० को० गकनि। (४) मो०—ददिर।

मुक्काम कीय मोदी दियन[1] । पर्यौ षोन षीनौ सुभंति ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

ततार खां का कहना कि खाड़ा खुदा कर तब कवि को बुलाओ ।

दूहा । फिर्यौ सिकंदर बात सुनि । तब कहैं काजि किताब ॥
षाड़ा हथ्थ षुदाय को । आनौ भट्ट सिताव ॥ छं० ॥ ३०५ ॥
फुनि ततार अरदास करि । अप्प अहित जो चम्म ॥
कालिह स पिथ्थौं विकट वित । साहि न कीजै गम्म ॥छं०॥३०६॥
फिरि ततार अरदास करि । बे आलम सु विहान ॥
नट नाटक डिंभी[2] डमरु । ना बूझंहि सुलतान ॥छं०॥३०७॥
बे फकीर अरु जोइ तप । हम करामाति सुलतान ॥
कहिग गल्ह रोय पुच्छियैं । अरु जु लेइ कछु दान ॥छं०॥३०८॥
वेत्त । सुनहु साहि साहाब । वषत या गज्ञिय भ्रम गुर ॥
समय करीम कुरान । सजहु निमाज बंदिधुर ॥
इह अदीन कफरान । कान तस नाम न लिज्जै ।
जिते आनि अप्पनी । तिते या रहन न दिज्जै ॥
तुम ज्ञान ध्यान अति मुनि गरुअ । दैन सीष को तुम समन ॥
अति मान जान गोरी गरुअ । समय विचारौ सत्ति मन ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

शाह का कहना कि वह गुणी पुरुष है मैं उससे अवश्य मिलूंगा तू मूर्ख क्या जाने।

तब जंपै साहाब । सुनहि ततार षान तत ॥
इह सु चंड मति मंडि । दीन मंदित सदा हित ॥
छंद प्रबंध कवित्त । पढहि आलम मन रंजै ॥
विषम बैर उद्धार । ताहि सुनि बोत समुझ्झै ॥
बुझ्झवन बत्त औरन जुगति । इय बरदाइय ध्यान गुर ॥

(१) ए० कृ० को० दियत। (२) ए० कृ० को० दंभी।

चिहु देस[1] चंड मढे सचिर । रसन प्रेम रस ध्रम्म धर ॥
छं० ॥ ३१०

तमि जरै तत्तार । साहि आनौ स बिद्दि वर ॥
इह सु चंद कोपरे गुराह । वलहं अरियन दुर ॥
इह सु सेव सज द्रुग्ग । मच आनै अति आगम ॥
तच मच सुद्धिय प्रमान । बूझिय बीरागम ॥
कीजै न बत्त इह जुगति मिलि । जो बुझै धन चंड सव[2] ॥
इछौ जु साहि गुनियन गरुअ । तौ बहु आनौ भट्ट अब ॥
छं० ॥ ३११ ॥

दूहा । तब जपै साहाब तमि । रे सुनि षान ततार ॥
जे निस प्रेही गुन गरुअ । सुन्यौ सयल मति सार ॥छं०॥३१२॥

तत्तार खां का पुनः मना करना परंतु शाह का न मानना ।

षां ततार तब उच्चर्यौ । सुनि सुलतान सुभास ॥
अरियन जन जेवस्स हो । क्यो मिलियै नर तास ॥छं०॥३१३॥
जिहि छंड्यौ संसार सुष । जिहि छंड्यौ ग्रह वास ।
ता पुरष को दुज्जनह । जो सजन को आस ॥ छं० ॥३१४ ॥
इह सुभट्ट चहुआन को । सुन्यौ वीर वरसत्त ॥
अरजु साहि आलम करै । सु कहैं बनै छत्रपत्ति ॥छं०॥३१५॥
[3]वे ततार गोमर गुमर । बत्त न वुझ्झै तत्त ॥
विधि विधिना भजन मतै । को रष्षै हित गत्ति॥छं०॥३१६॥
सुनि कक्कस बर बेन न्रिप । बरजि अप्प दरवान ॥
गो फकीर बर है सुभट । दुष्ष बहुत चहुआन ॥छं० ॥ ३१७ ॥

कवि का दरवाजे पर आना परंतु तत्तार खां के इशारे के अनुसार दरवान का उसे भीतर जाने से रोकना ।

कवित्त । बोलि षान पचिय हजाब । षान पीरोज बुलाइय ॥
कहा भट्ट कविचंद । हथ्थ अप्पै बरदाइय ॥

(१) ए० कृ० को०—तिहु देस । (२) ए० कृ० को०—सुव ।
(३) ए० कृ० को०— वे ततार गुम रष्ष गुर सुनन बुझ तत बत्त ।

जोग जुगति पुच्छियै। तंत पुच्छियै सुभग्गा ॥
कहि गल्हो लै दान। प्रान संतोष सुजग्गा[1] ॥
बर मित्त अस्तपति भट्ट वह। को भंजै निम्मान गति ॥
तत्तार षान षुरसान षां। हमति जान आनै सुमति ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

दूहा। तब सहाब मुष उच्चर्यौ। मियां मल्लिक्क जु षान ॥
दौरि चंद संमुह चलै। ले बुल्लै सुलितान ॥ छं० ॥ ३१९ ॥
चल्यौ चंद समुहाय तब। मीर मल्लिक्क न सथ्थ ॥
देषि रूप दर जोग कौ। रुकि दरवानन तथ्थ ॥ छं० ॥ ३२० ॥
आवत जान्यौ चंद जब। तब मति षान ततार ॥
साहि अजानै अप्प मति। रुकायौ दरबार ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

कविचन्द का रोके जाने पर देवी का स्मरण करना।

जब रक्यौ कविचंद दर। तब चिंतिय प्रिय धीर ॥
मंच रूप असतुति करन। लग्गौ बर बिधि बीर ॥ छं० ॥ ३२२ ॥
॥ नमो देव देवंस वीरोधि बीरं। स्वयं जापिनोकं स्वयं ना कसीरं
षयं[2] काल रूअं त्रिगुनं चिधामं। हुअं[3] कारनं क्रित अन्नेक नामं
छं० ॥ ३२३ ॥
षेअं लद्धु थूलं सु आयास तूलं। बरं अग्र काली स्वरं सद्दिमूलं
सदा भैरवं रूप बीरं बिराजं। बरं अग्र काही सुधारी सुकाजं ॥
छं० ॥ ३२४ ॥
जहा। संकटं[4] सेव मानै अपारं। तहा आप[5] आयं निय[6] काम सा
रमै बीर लोकं त्रिलोकं त्रिसूलं। गदाचक्र बाहं[7] हथ्थं धंनु जूयं
छं० ॥ ३२५ ॥
मदग्गं त्रिसूलं परीघं सुषासं। ग्रहै ब्रह्म संकीति संगी दुरासं ॥
कनै कुंत कत्ती पुरस्सी कुठारं। धरै सब्बलं सेल नाली कनारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

(१) मो०— सुभग्गा। (२) ए० कृ० को० अयं। (३) ए० कृ० को० हुकं।
(४) ए० कृ० को० सकया। (५) मो०—अयं। (६) मो०—निजं। (७) मो—बान

हर्स मूसल भिडि पाली फरिक्का। जम दड्ढ निढ्ढ परस्स छुरिक्का॥
धरै आवध एक अनेक नाम। जहां सक सेव तहा आय काम॥
छं० ॥ ३२७ ॥

अह सकट आय लुक्यौ अनूप। करौ आज काज अब्ह[1] आय जूप॥
करौ आज माया प्रगट्ट सरूप। महा मोहन आसुर ग्रह नूप॥
छं० ॥ ३२८ ॥

सुनै श्रोद्रय वीर असतुत्ति चंद। भई आसुरान सबै बुद्धि मंद॥
भयौ आय वीर सहुंकार सद्द। धरा धम्म धम्म उड़ी रैन रद्द॥
छं० ॥ ३२९ ॥

फटी पौरि परदार झमी झमीर। भई हाय हाय महो माहि मीर॥
छं० ॥ ३३० ॥

शाह के आज्ञानुसार हुज्जाव का कवि को शाह के समुख लिवा जाना।

पातिसाह वाक्य।

चौपाई॥ तब सहाब बोल्यौ हुज्जावह। अहो भट्ट आनो मित्तावह॥
तव हुजाब आयौ कवि पासह। बोलि चल्यौ कवि अंदर तासह॥
छं० ॥ ३३१ ॥

उस स्थान का वर्णन जहां पर कवि शाह के समुख गया।

पद्धरी। सम कहिय वत्त पर दार ताहि। हित अहित चित्त दिष्यौ सताहि॥
आलम्म कहइ सो करहि तथ्य। आवन्न देहि कै रुकहि पथ्य॥
छं० ॥ ३३२ ॥

बुल्यौ सुचंद हज्जूर साह। बुझझन्न वत्त अप पातिसाह॥
वैराग चंद तुम जोग सत्त। जोगह विरुद्ध हम मिलन[2] मत्त॥
छं० ॥ ३३३ ॥

सग्रह्यौ पान पानह हुजाव। तम चल्यौ चंड बुल्ले[3] सहाव॥
लै रष्षि मद्धि ठड्ढौ महस्स। सुब्बास रास अंदर चहस्स॥
छं० ॥ ३३४ ॥

(१) मो–अम। (२) ए० कृ० को०—मिनव। (३) मो०—बोलै।

बैठक सुरंग सुभ चित्त साल। सोहंत अति उज्जास भाल ॥
बिसाल महल वर रंग भोम। प्रासाद उंच मंडप सिरोम ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

वात्यानि[1] जाल पति मत्ति नूप। हिम थंभ जोति जग मग सरूप
झलकंत कनक कुंदन सुभाल। एकेक रूप रंजत रसाल ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

अग्गहि सजोति नग जटित जास। राजंत रवनि दसकंध वास ॥
चयकाच रूप तरुनी महल्ल। दृह दुक्क भुग्गि रोचित रल्ल ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

जालीय वार छजि मुत्ति दाम। नग जंबु बद्द सज्जे सु काम ॥
सत षन्न उंच साला सु एक। तहां मयन सयन सुष सेज नेक ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

बनि गौष पट्ट सज्जे सुथाल। आछादि साम आसन उछार ॥
मूढाव गादि मंडी सुथान। बैठा सु[2] साहि आसन उतान ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

दस पंच हथ्थ अधि चित्रसाल। सम फिरत मंडि सह मत्त[3] आल
उमराव मीर बैठे सुतथ्थ। कुलवंत सूर संग्राम हथ्थ ॥
छं० ॥ ३४० ॥

उंचे उतान बंधे अनूप। धनि ग्रिज्ज[4] मनहु मंडे सरूप ॥
ठट्ठौ सु कियौ कविचंद आनि। उम्मारा मीर सब अन्नि मानि ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

हा। दिष्षन रूप सु जोग कौ। आए सब नर नारि ॥
अंदर बासी अथ्थि सह। मिले निरष्षन हार ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

टक। मिलि साह हरम्म हरम्म चढ़ी। प्रिथीराजह अंत अनंत बढ़ी ॥
जर कंबर अंबर से पटयं। झमि जानि भुमंकत ता तटयं ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

मिलि तुंगत मासिक ताटकयं। जनु देव विमान सुरा सकयं ॥

(१) ए० कृ० को० बासानि। (२) मो० जु।
(३) ए० कृ० को० सहसत्त। (४) ए० कृ० को० घनग्राज्जि।

दिषिन धन सासि कविद दूह । नव रासित भासि सवद्द काह ॥
छं० ॥ ३४४ ॥

दूहा चित्त[1] रूप कविचद कौ । जै जगि गोरियराव ॥
जिहि दुचित्त अरि गजियै । सो अथवै उग्गाव ॥छं० ॥ ३४५ ॥

गाथा । निरषे रूप सुभट्टं । तन विभूत्ति जट्ट जूटाय ॥
काल पानी षष पानौ । निरषे अद्भुत तेज विधान ॥
छं० ॥ ३४६ ॥

पातिसाह वाक्य ।

शाह का कवि से योग के विषय में प्रश्न करना ।

पद्धरी । बुलाइ चंद हजूर साह । बूझै सुबत्त अप पातिसाह ॥
बैराग जिद कहो जोग गत्ति । जोगहि विहद्व हम मिलन मत्ति ॥
छं० ॥ ३४७ ॥

कविचंद वाक्य ।

मुरिल्ल ॥ एक महूरत रूप निरष्षे । बुल्ल्यौ साह कवी सम सष्षे ॥
माया मोह सुष्ष ससार । दारा पुत्र पौत्र परिवार ॥
छं० ॥ ३४८ ॥

धन धामं चौपय अनि अष्षी । मोह जाल बिलसन बिस बष्षी ।
नह छुट्टै कलि कम प्रकार । जोग भ्रम जतु पड़ाधार ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

बंधे पच इंद्री परिवार । बंधे पच धारना धार ॥
कंचन जेम उपल अवि लष्षे । बंधे गंठि आतमा सष्षै ॥
छं० ॥ ३५० ॥

भ्रंगर विष्पन गिरिवर वास । मिलन एक आतमा सहास ॥
इहि विधि विवरि सु जोगह जित्तै । अवर उभै चुकै सुह रत्तै ॥
छं० ॥ ३५१ ॥

तव जंपै कविचंद महामय । सुनि गोरी साहब गज्जन वय ॥
दरस जात सब लोक समथ्थय । दरसन कारन तीरथ अथ्थय ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चित्त ।

धरपति दरस सदि करतारं। तिहि पहु दरसन वंचि विचारं ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

कवित्त । सो। जोगी परिमान। लेय अहार इन सुभंति ॥
ज्यौ खेपन मिसि ग्रहै। अधिक नन लेप अप्प छंति ॥
सो राजन परिनाम। कबहुं चपै नन संच्छिय।
ज्यौं अंषि रूप नन चपै। सोय राजन मन अच्छिय ॥
पंडित सु विनय विद्या चपै। त्रिपाति स्वामी जिय चपै।
सुत साय तात रिन उद्धरै। पिता सोय अध्थहु अप्पै ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

पतिसाह वाक्यं ।

पद्धरी। कविचंद कही अब इह सुकथ। पतिसाह तबैं अप्पिय सुवत्त ॥
श्रंगार वीर जौ जोग सत्त। जोगह विरुद्ध हम मिलन मत्त ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

दूहा। हमहि निलैं जैचंद सुनि। विरह दरिद्रीय लोभ ॥
अरु जु दुनौ महि संचरहि। हम सौं मिलत न सोभ ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

चन्द वाक्यं ।

तबही चंद कवि उच्चर्यौ। सुभ पुच्छहु सुलतान ॥
जोग भोग इहि रीति तौ। सब जानौ सु विहान ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

पातिसाह वाक्यं ।

कवित्त। जोग सुनीवरदाय। इक्क संतोष तत्त गुर ॥
अप्प पावन रहै प्रान। ग्रहै संतोष मंच उर ॥
कंद मूल जिन पच। रहै मुनि अरघन कालं ॥
बन गज कीटी भ्रंग। अंग संतोष सुपालं ॥
संतोष रतन पर मन्नि नर। तजि संतोष हम चिंतियै ॥
जोगह विरुद्ध हम मिलन मति। इह अबुद्धि इह मंतियै ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ हम अबुधि सुरतान इह । भट्ट भाष सुष काज ॥
नव रस मे रस अप्परस । इहै जोग सुष काज ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

कवित्त ॥ जोय सुष्प कविचंद । होय वितराग देह घत ॥
सुपनि सोय मुनि रुद्र । चक्कवरती न लहु छित[1] ॥
सो न सुष्प हरि हरन । ब्रह्म पावै न नाग नर ॥
लहि न सुष्प ससि सूर । सुष्प लहै न काल वर ॥
लहौ न सुष्प सुर असुर नर । नह लहौ द्रिगपाल किहि ॥
सो सुष्प जोग क्यो मुकियै । क्यौ कविद्र आयौ सुइहि[2] ॥
छं० ॥ ३६० ॥

चंद वाक्य ॥

चौपाई । वीतराग सह चित्त सहायौ । सुपह काज तज्जे सुष भायौ ॥
इक जपूई[3] अरदास नरिंद । करैं साहि तौ मुक्कों[4] दंद[5]॥
छं० ॥ ३६१ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

दोहा ॥ जो कछु मग्गहु भट्ट वर । करैं वनै सुविहान ॥
भुम्मि लच्छि द्यौ चंद तुहि । नह अप्पौ चहुआन ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

चंद वाक्य ॥

नह मग्गै कविचंद नृप । कहौ न रसना छंडि ॥
काथ्य पुब्ब आगम कहौ । छिनक श्रवन जो मंडि ॥
छं० ॥ ३६३ ॥

बालपनैं प्रथिराज सम । अति मित्र तन कीन ॥
गुकछु स्वाद मन मैं भयौ । इच्छा रस मंगि लीन ॥
छं० ॥ ३६४ ॥

(१) मो० छिन ।
(२) ए० कृ० को०—द्रह ।
(३) ए० कृ० को०—जपौई ।
(४) ए० कृ० को०—मुक्कौं ।
(५) ए०—दिंद ।

पुब्ब पराक्रम राज किय । कछु जंपो तुछ ग्यान ॥
अरु जु कछू तुछ जंपिहौं । सब जानौ सुबिहान ॥
छं० ॥ ३६५ ॥

इक्क सुदिन प्रथिराज रस । मुष कही तिहि वार ॥
सिंगिनि सरवर द्रुम्मिविन । सत्त हनन धरियार ॥
छं० ॥ ३६६ ॥

वर सुनंत कंपै हियौ । दिल न रहै सुरतान ॥
सुद्वरोग भौ रोग मन । कहुन कौं सुविहान ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

तौ[1] आयो तुहि आस करि । तो पासे चहुआन ॥
सो दरोग दिल लग्गि सुभ्भ । कहुन को सुविहान
छं० ॥ ३६८ ॥

मैं जान्यो अचरिज्ज मन । नृपति संच कौं लीह ॥
तब लगि इहि विधिना लषौ । आय संपत्ते दीह ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

अरिल्ल ॥ कहुन कौं पतिसाह तुंही । मनमंझ रह्यौ कविसाल जुही ॥
आयौ सु आज करि पैज तही । बन जांउ सुसाह सहाव गही ॥
छं० ॥ ३७० ॥

पातिसाह वाक्यं ।

दूहा ॥ सुनि सहाव गह गह हंस्यो । बे बे भट्ट सुभट्ट ॥
अंषिहीन मति हीन भौ । कहा मग्गै[2] मति नट्ट ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

अंषिहीन सौं बल धय्यौ । मति नट्ठी सुरतान ॥
जु कछु मोहि अप्पन कह्यौ । बोल होय परिमान ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

चंद वाक्यं ।

तबैं भट्ट अरदास करि । सच्च कही सुविहान ॥

(१) ए० कृ० को०—तिहि ।
(२) ए० कृ० को०-मंगौ ।

जु कछु कही कविचंद कौं । सो दिष्षय सुविहान ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पातिसाह वाक्य ।

कवित्त ॥ अवे चद मन मंद । नच भग्गो मृदग भगि ॥
गयौ मुरह मिटि तार । पथ जन्यौ जचह लगि ॥
रहै [1] इक औसाफ । पथ लग्गे पथी सह ॥
अप्प वाट लग्गयौ । पथ कट्टै कहि गह गह ॥
को मात तात को पुत्त को । को सेवक साई सुहुअ ॥
सागम मत लम्भौ रवनि । गयौ राज वल राज तुअ ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

चद वाक्य ।

दूहा ॥ सव विधि धटी नरिंद की । हम जाचक नह पीर ॥
वचन परे सिर कट्टि दे । ते पिचो कुल धीर ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

तब चिंतिय साहाव मन । हँसि वुल्ल्यौ सम चंद ॥
जाय मगि सम राज सौं । हम दिष्षहि आनद ॥ छं० ३७६ ॥

पद्धरी * ॥ सुरतान जाम फुरमान किन्न । हुज्जाव षान तिहि सथ्थ दिन्न ॥
ले जाहु चद प्रथिराज पास । तु मग हम्म दिष्षैं तमास ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूहा ॥ तव गोरी हुज्जाव प्रति । कहै सुकवि लै जाहु ॥
अरस परस विन दूरि तैं । लै आसीस कहाउ ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

हुजावषान वाक्य ।

कवित्त ॥ वोलि षान षवी हुजाव । वोलि पीरोज षान वर ॥
दस हथ्थनि प्रिथिराज । निजरि रष्यौ श्रवन्न कर ॥
दरस द्रिगन अप्पियौ । परस दरस नन पावै ॥

(१) ए० इहे ।

* इस छन्द को ए० कृ० को० तीन प्रतियों मे मुरिल्ल और मो० में अरिल्ल करके लिखा है।

जु कछु कहै संभरी । मंगि सोई यह आवै ॥
घरियार हनन मंगै वरह । अकल्ल अपूरब वत्त इह ॥
दिष्षियै चित्त अंषिन सुचित । कहौं साह अग्गैं सु कह ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के पास जाना ।

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट चित मन्नि कल । संकट तज्जन प्रान ॥
फुट्टत नन [1] दिष्पत नयन । इन अवस्थ चहुआन ॥छं०॥३८०॥
अग्या मन्नि हुजाब पहु । लै चल्लिय कवि सथ्थ ॥
प्रथम राज पासह गयौ । तब रक्षै दह [2] हथ्थ ॥ छं० ॥३८१॥

दर्शकों के बीच कवि का कौतुक करना ।

अरिल्ल ॥ बाल वृद्ध मिलि मत्त तमासै । मनौं इंद्र मिलि मेछ छमासै [3] ॥
गुर जंबू नट नाटक किन्ने । आचिज परवस रासिक भिन्ने [4] ॥
छं० ॥ ३८२ ॥
तारी तीन दई तिन बारह । बज्जन मिसि बुल्यौ बिहु बारह ॥
हहि वेरह कवि रेन उछारिय । टग टग लग्गि रहे नर नारिय ॥
छं० ॥ ३८३ ॥
भुजंगी ॥ टगे टग्ग लग्गी हरम्मी सुभीरं । नटी नट्ट बुल्लै सुवाने गँभीरं ॥
ठटौ दुग्ग रच्यौ घरी पंच नीरं । बटी घट्टि घरियार वंधे सु बीरं ॥
छं० ॥ ३८४ ॥
हहक्कंत कौतूहलं धाम धामं । भई भुम्मि छाया विमानंन जानं ॥
ग्रहं मुत्ति लालं बिहारंत वीरं । ग्रहै पानि उज्जाब बुल्यौ सुधीरं ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

चंद वाक्यं ।

त ॥ सुनि हुजाब सुष आब । उज्जाब पुच्छै सुदि उंतुहि ।

(१) ए० कृ० को० नेन ।
(२) मो० दस ।
(३) ए० कृ० को० छडौसै ।
(४) ए० कृ० को० सिन्ने ।

छडि पानि सुनि वानि । हानि जिन देइ भ्रम मुहि ॥
सेत पीत कल्हरिय । लाल पुत्तरीय सुभ्र बर ॥
तहा उचारत वत्त । हनै गोरीधर उम्मर ॥
आचभ एक नजरहि निरष । हम सीषइ इ सिय दसम[1] ॥
भ्रम लष्य भ्रम ग उचित्त कर। तब सुभट्ट दिष्यौ असम ॥

छं० ॥ ३८६ ॥

दूहा ॥ जब निरष्यौ हुज्जाव उध । मच थभि उचरष्पि ॥
चलि कारन प्रथिराज कौ । कह्यौ सुमीत समष्पि ॥

छं० ॥ ३८७ ॥

कवि का राजा की करुणामय मूर्ति देखकर आशीर्वाद देना परन्तु राजा का कवि को सिर न नवाना ।

पद्धरी ॥ तब गयौ चद नृप तथ्थ थाइ । जहा मिच बयट्ठो दिट्ठ थाइ ॥
दस हथ्थ रष्पि दिनी असीस । सिर नयौ नही मन करिय रीस ॥

छं० ॥ ३८८ ॥

दूहा ॥ चष्य हीन दुब्बल न्रपति । दस बभन रहै पास ॥
रोस अगनि तन प्रज्जरै । चिन्ता अतिहि[2] उदास॥ छं० ॥३८९॥

कवित्त ॥ निम्मिल जीय वर सिध । दई तन दुष्ट भाव करि ॥
रोस अगनि प्रजरंत । जाय आक्रित अग्गि भर ॥
मौक्रित तत्त निकाम । वीर तन छीन सु पजर ॥
अरि तित्तै चित्यौ सुकन्न । सभर्यौ चद सुर ॥
घत सिचि वीर पावक भर । रैस रवत तन प्रज्जर्यौ ॥
कहि भट्ट वीर विरदावली । देत राज रज सभर्यौ ॥

छं० ॥ ३९० ॥

कवि का बिरदावली पढना और राजा का कवि का वाणी पहिचान कर क्रोधित हो उसे धिक्कारना ।

पद्धरी ॥ धम पथ राय आजान बाइ । [3]दुरजनन मरि घर राय दाह॥

(१) मो०—हसम।   (२) ए० कृ० को०—अति।
(३) ए० कृ० को०—दुरजन नरींद्र रा वीर दाह।

चालुक राय पर पैज पार। पंगुरे राय जग जय ढार॥
छं० ॥ ३९१ ॥

वर वीर जित्ति ससिवृत लिन्नि। कामधज्ज राय सिरदार किन्न॥
संभरे वत्त संभरि नरेस। सुर बंधि बंध जिहि कियौ भेस ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

रनथंभ थंभ जस मंडि पान। चालुक चंपि जालौर थान॥
धनु धनुष धीर अर्जुन नरेस। जित्तया वीर दष्यिन सुदेस॥
छं० ॥ ३९३ ॥

मन मध्य राय अवधूत धूत। संभरीय राव सोमेस पूत॥
जग रष्यि नाम जर जर सरीर। चलि संगि संगि आयौ सुधीर
छं० ॥ ३९४ ॥

पहिचानि चंद सिर धुन्यौ राय। संगह सरन्न बुल्यौ जुवाय
छं० ॥ ३९५ ॥

दूहा ॥ सुनि कवित्त चलि चित्त किय। अदभुत भट्ट सरीर॥
मोहि उलंघ्यो जानि कै। चिंतत प्रवुधुन धीर॥
छं० ॥ ३९६ ॥

कवि का कहना कि मैं होनहार को क्या जानूं।

भवति न सुझ्झ्यौ मोहि पै। हैं। क्यौं कंगुर जांउ॥
हम तुम छेहौ इह भयौ। भावी देवह थांउ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

पाई ॥ बोलि चंद संकार वर दाइय। ग्रहै रहैं ज्यौं मनसा धाइय॥
मत्ति कविंद कविंद उपावै। एक चोट षग मग्ग दिषावै॥
छं० ॥ ३९८ ॥

वित्त ॥ दिष्षत षान पीरोज। अग्ग चल्लै विमान वर॥
स्याम सेत अरु रत्त। पीत धज भिरित देव धर॥
पीर फेर तौ जाइ। जाय अच्छरी प्रगुंम्मर॥
इह अचिज्ज दिषियै। इंद्र इंद्रान चंद बर॥
चवरुष उचोर बर मंत्र किय। हल्लेन बन बन रुकि सुष॥

तिहि धरी भट्ट मुप सामि तन। कही बत्त मडीत[1] रुप॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का गला भर कर राजा को समझाना परन्तु राजा का फिर भी सिर न नवाना।

दूहा ॥ नेह[2] नीर रुकि कठ कवि। नेंन झलझ झल पानि॥
विन बोमत[3] बोल्यौ नृपति। चद चिति वर बानि॥छं०॥४००॥
समझि राज मन मझ तुअ। ग्रेह निसा मझ[4] बैठि॥
उलुक अद्ध निसि अत की। ग्यान सवद्दह दिट्ठ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

पद्धरी ॥ विरह सुदेव नवत नह अग्गि। ढरि अ पि पानि मन चित्तह लग्गि
पहिचानि चद वर धुनिग सीस। सिर नयौ नही मन करियरी
छं० ॥ ४०२ ॥

कवित्त। सभरि नरेस करि रीस। सीस धुनिन धनु सज्जहि॥
ईहि मित्त तन चित्त। चित चितत सोइ सज्जहि॥
निकट सुनै सुरतान। वाम दिसि हथ्थ उच सो॥
जस अवसर सत नचि। अथि लुट्टहि न करिन भौ॥

कवि का राजा से कहना कि तू वह वरदान दे जो तूने देने को कहा था।

दै दान जानि सभरि धनी। उहि गड्डहि तुहि जलहि हवि॥
दित अदित हस दोउ उडहि चलि। इह उप्पर कह करहि कवि
छं ॥ ४०३ ॥

राजा का कहना कि मैं नेत्रहीन होकर अब कैसे निशाना वेध सकता हूं।

दूहो ॥ चद मत पुनि जानयौ। एह अवस्थ कवि देपि॥

(१ मो०—मडिय सुरुप।
(२) ए० कृ० को०—नेह।
(३) ए० कृ० को—बोलत।
(४) ए० कृ० गै।

दिष्टमान[1] सेवे सुकुन । बिन दिठ हनै विसेषि ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

वे अंषिन हीनौ सु हों । तूं चव अंषि न चूक ॥
असुर बधों किम बिन सुरह । उर[2] सुर बध्यौ उलूक ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

कवि का कहना कि मैं शाह को बुलाऊंगा आप बचन दीजिए ।

चौपाई ॥[3] तूं राजा समरथ्थ सुजान । सुरग अरथ जानहि सग्यान ॥
अरथी दोष न पूछिय राय । बगसि नरिंद बुलाऊं साहि ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

राजा दनह सुरत्ति सुभेक । धरियार सत्त सर बंधन तेक ॥
अंषि पान मन चित्तव लग्ग । दोइ सुजस तुअ नरपति भग्ग ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

राजा का कवि का अभिप्राय समझ कर शोकित होना ।

॥सुनि कवित्त चल चित्त किय । हय गय भूमि न दब्ब ॥
असमै जो भंगै सुकवि । न्रिपति विचारिय सब्ब ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

बहु बिचारि चिंते न्रपति । विपति तनह मन अंषि ॥
सर सरीर सुक्कत सुबर । तेजति उड्डुहि पंष ॥ छं० ॥ ४०९ ॥
चित चिंतिय मित्तह बयन । दह दिसि भूम पयाल ॥
सिर धुनि सीस निषेध करि । लभ्भै चंद मुहाल ॥
छं० ॥ ४१० ॥

कवि का पृथ्वीराज को प्रबोधन कराना ।

वित्त ॥ अरे नरिंद वा वंध । पिंड कचौ सुर[5] सचौ ॥
अंब तेज संमीर । धरा आकासग पंचौ ॥

(१) ए० मिष्टमान । (२) ए० कृ० को० उह ।
(३) ए० कृ० को० तू राजा समरथ्थह धीर । सुरग अरथ जानहि सब बीर ।
(४) ए० कृ० को० भूप । (५) ए० कृ० को० सर ।

जर। जोल विलयौ। काल आनन महि पिल्लहि ॥
इत पपि ह अजप। जपि सरवर करि मिल्लहि ॥
उडि चलै हस हसह सरस। छडि नेह तन पजरहि॥
प्रथिराज आज सोमत करि। [1]जस नरिद जिहि उव्वरहि॥
छ० ॥ ४११ ॥

राजा का कहना कि कवि सो सब सभव है वा असभव है।

दूहा ॥ समय सुपेती समय रन। समय भोग सुध जोग ॥
असमै कोइ न आदरै। क्यौ आनौ सजोग ॥ छ० ॥ ४१२ ॥

कवि वाक्य कि करतूत लेने को सब समय है।

कवित्त ॥ अरे नरिद नर मत्त। कूहकूह निज रष्य ॥
कगुर गोल सथ्थ्यो। [2]काल भष्पै उन भष्य ॥
काल पग्ग लै जम्म। काल गुरमच उचार ॥
वितति वित्त आवित्त। वित्त ते वित्त निहार ॥
जो होय भेस तौ हाम बल। असमौ समौ परष्यियै॥
ना रहै देव अहि देव बल। देव दहन हर पिष्यियै ॥
छ० ॥ ४१३ ॥

राजा वाक्यं।

दूहा ॥ अरे चद असमैं समै। परष पुरिष दिम होइ ॥
उहै काल अतर परै। नर निरवल पष जोइ ॥ छ० ॥ ४१४ ॥

कविचद वाक्य।

कवित्त ॥ सुनि नरिद सब धध। [3]कोन हतौत तुज नर ॥
जीत वच सजोग। जोग जीव [4] प्रमान वर ॥
जोग क पानी परत। उठै बुद बुद जोनी जिय ॥
पच मूल बँध पच। पच गो बधि सम्भि जिय ॥

(१) मो० जेहि नरिंद जग उव्वरहि। (२) मो कालपै उन भप।
(३) ए क को कौन हतौ तनुजनर। (४) ए क को जिय जत

इक रहै किति चिंती सुचिंत। चित्तनहारौ चिंतियै ॥
नचियै सुजोय अवसर बनै। अवसर नचन मत्तियै ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

दूहा ॥ जस जीतन जुग बत्तड़ी। सह बत्तड़ी अकथ्थ ॥
बोल[1] रहै धर सथ्थियै। [2]वत्त तत्त वह अथ्थ ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

राजा वाक्यं।

बार बार मोही कहै। एक बैन मों मान ॥
धाम धरत्ती जो लहौं। तौं अप्पौ तो दान ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

कविचंद वाक्य।

कवित्त ॥ साठि हजार बरष्य। करत तप पलक चष्य षुलि ॥
गंगा जल महि मच्छ। देषि क्रीड़ंत चित्त डुलि ॥
मानधात पुत्रिका। वरिय प्रारथ्थि पचासं ॥
पंच हजार कुमार। जनमि सुकदेव प्रकासं ॥
सो भरी रिष्य राजस रचे। भंति भंति सुष भोगवत ॥
कहि चंद ग्यान ऊपजि चल्यौ। माया छल तजि सुपन वत ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

षंडीवन प्रजलत। एक पष्षीलक निकासि ॥
जदुपति पेषि पयंपि। पथ सों काथ क्रपा वसि ॥
इह सुजीव करि जग्य। भयौ षटबार पुरंदर ॥
अजहुं क्राम लगि जोग। फिरत चौरासी अंदर ॥
कहि चंद मत्ति मेटै जगत। कीरति सा दाने बजत ॥
संभरि नरिंद संभरि कितक। ता कारन षिचवट तजत ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

पच पुरातन रहरिग। बहुरि नह चढ पल्लासह ॥
इह सुनि संभरि वार। बहुरि ना भोग विलासह ॥
असमै संभरि वार। प्रान जो सत सों मुक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-बोध। (२) ए. कृ. को.-तनन वत्तन अथ्थ।

सुजस होय संसार । बान किम पथ्थह चुक्कै ॥
संसार सकल द्रुम उच्चरत । वेही कठह धवल हर ॥
अवसान गये सा पुरिस कौ । लध्यौ जीवो लघ्य सर ॥
छं० ॥ ४२० ॥

रे नरिंद सह सुपन । अपन दिष्षिस अस जग्गन ॥
नरक राज किय साज । रंक भौ रज्ज सिकंमन ॥
जीव जंत सह रवनि । पंच भूलह प्रपंच वनि ॥
दिष्ठमान विन रह्यौ । मुकल संसै न करै फुनि ॥
सहदेव विस्न अग्गा दवन । गति अगति ससौ न करि ॥
सह मुकति हथ्थ किति सथ्थ बंधि । प्रिहत विना न्रिम्मान धरि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

एक बान कवरी । एक सर एक समुट्टी ॥
इय गुन विन जे जरै । इच्छ विन काम स कट्टी ॥
श्रवन चष्षि कर साहि । साहि दिष्षे दिसि बाई ॥
सूर बंध अरि बंध । चिंत चिंते वहु नाई ॥
न्रप राज गल्ह रष्षै सुजुग । जीव दिसा सो सुक्कि बर ॥
न्रिप रहै जोग तन छंडिहा । तन रष्यौ जुग रहन भर ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

श्लोक ॥ उलूको वक्षतो येन । तादृश क्रियते बलं ॥
अनुसारं स शब्दन । वाक्य म्लेच्छाधिप श्रृणु ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

चौपाई ॥ हो समं अंध जस अंध प्रवीन । बैर अंध आतुर मति हीन ।
अंधा दुष्ष न देषै राइ । वगस नरिंद बुलाऊ साहि ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

दूहा ॥ प्रकृत पुरुष कि(१)ष्यन कहर । काम अंध चित चित ॥
ए पर दुष जानै नही । तु किन जानै मित्त ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

तीन बान चहुआन वर । प्रगट कहै सुलितान ॥

(१) ए० कृ० को०—फुरै गुने ।

काल ग्रहै संभरि धनी । बर अप्पौ मुहि दान ॥

छं० ॥ ४२६ ॥

पथ्वीराज वाक्य ।

सुनौ चंद वरदाय वर । कहि निम्म निगान ॥

सबद प्रगट गोरी कहै । तौं तुम्र अप्पौं दान ॥

छं० ॥ ४२७ ॥

कविचंद वाक्य ।

जौ अप्पौ मुहि दान बर । चंद चित्त बहु धीर ॥

तौ निमान सुनि निगायौ । जीय न तत्त सरीर ॥

छं० ॥ ४२८ ॥

आनंदे प्रथिराज जिय[2] । बंध कियौ कबि सथ्थ ॥

हनौं साहि घरियार सौं । उभै इष्ष मिलि हथ्थ ॥

छं० ॥ ४२९ ॥

जिहि बेधै जग जित्तियै । जिहि बेधै जस होइ ॥

सो विद्धन[3] सोमेस सुअ । कित्ति प्रगट्टै लोइ ॥

छं० ॥ ४३० ॥

हुजाब का कवि को लिवा कर शाह के पास आना ।

कवि बुम्झवि प्रथिराज कौं । गयौ धाय हुज्जाब ॥

सबै रीति किहि राज कूं[4] । [5]जुगति सुवथ्थ जवाब ॥

छं० ॥ ४३१ ॥

॥ भाई या बिध आकर्षि जाम । बुझ्झै न कपट हुज्जाब[6] ताम ॥

घरियार घात हुंकार राज । करि फिर्यौ कवि हुज्जाब ज्वाब ॥

छं० ॥ ४३२ ॥

आए सुपास गोरी नरिंद । बुझ्झयौ अथ्थ घरियार भिंद ॥

बिकस्यौ उअर गोरी सहाव । मानहि सुहीन बलहीन आव ॥

छं० ॥ ४३३ ॥

(१) ए. कृ. को०-तीयन । (२) ए०-दिय । (३) मो०-वेधन ।
(४) ए० क० को०—सौ । (५) ए० कृ० को०- जुगति जुत्थ जुवाव ।
(६) ए० कृ० को०-चहुआन ।

अग्या सुदीन धरियोर साहि । पुर पुरष छोरि आनहु सुराहि ॥
घरिआर आज बधन सुम्रत्त । कौतिग्ग काज[1] मिलि सब्ब सत्त ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का शाह से कहना कि यदि आप आज्ञा देना स्वीकार करे तो राजा दान देना स्वीकार करता है ।

कवित्त ॥ तब सुचद बरदाय । साहि अग्गे कर जोरे ॥
क्रपन गठि जिमि साहि । राज गठि न अब छोरे ॥
नट-नकार नहि करहि । जाउ जिहि आस छडि तब ॥
अद्भुत रस असमान । जाइ मुक्यौ न धन[2] अब ॥
छड्यौ सुलोभ जिय जम कह । और अतिब अतर रहै ॥
फुरमान साहि सत्तहि बंधौ । विन फुरमान न सर गहै ॥
छं० ॥ ४३५ ॥

तत्तार खा का खिझकर कविचन्द को डपटना ।

तब ततार झुकि उठ्यौ । भट्ट जीवन पर रूठौ ॥
पातसाहि गोरी नरिंद । अग्गे भयौ झूठौ ॥
सत्त सुभर घरियार । अग्र बिन इक्क न बिद्धिय ॥
मरद सुमुष उच्चरहि । होइ अग्गे जो सिद्धिय ॥
फुरमान साहि तुहि तौ नहीं । जिय चहुआन न होइ काल ॥
इह बाह एह सिगिन धरिय । ए धरियोर न बिद्धि बल ॥
छं० ॥ ४३६ ॥

कवि का पुन कहना कि यदि शाह वचन दे तो प्रत्यक्ष तमाशा देखलो ।

दूहा ॥ जो फरमानत अप्प मुष । दै तिह बेर हमीर ॥
घर धरियारन वज्जिहै । सर सौ सद गँभीर ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

(१) ए० कृ० को०—राज ।
(२) ए० कृ० को०—बहू ।

सपत घात घरियार धन। पंच घात हनि जान ॥
कठन काम गोरी हनन। अप्प देत फुरमान ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
साहि जलाल दुहाइ कहि। जल जानीत निवाज।
अप्प देइ फुरमान तिय। सुनै सुमत्तिय राज ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

शाह के शब्द देने पर राहगत होना और घरियार मंगा कर सजाया जाना।

सुनि ततार सुनि रुस्तमी। सुनि निसुरति हुज्जाव ॥
दिल्लियपति सो अप्पिहै। देय साहि जो आव ॥ छं० ॥ ४४० ॥
कवित्त ॥ मंगि साहि घरियार। दिसित मंडे उत्तर दिसि ॥
सौ कुम्म नृपति घरीव। कुम्म सत अड्ड साहि लिस ॥
सिंधु राग सहनाइ। पंच सद्दावर बद्दं ॥
मेघ ग्रज्ज आकूत। बीर नीसानति नद्दं ॥
ग्रजपत्ति षां षुरसान षां। चाव दिसा न्रिप बिंटियौ ॥
चहुआन कलातक जग तपैं। किहि लष्यौ वर मिंटयौ ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

कौतुक देखने के लिये दर्शकों की भीड़ होना।

मोतीदाम ॥
[1]चढि बेगम सथ्थ सुगोष हरम्म। चिगजारि न बाल सुवेसन रंम[2] ॥
सुभै थन थान प्रकार निनारि। मनं कुम्म चित्र चितंत सवार ॥
छं० ॥ ४४२ ॥
सकंगुर सोह कुरंग नयंन। किधों गिरि कूट ससीक सवंन ॥
सितं सित कंगुर बाल उझक्कि। तिनं मझि नारि नरीर तलक्कि ॥
छं० ॥ ४४३ ॥
चढे बर पुब्ब उकत्ति हरे। मनु दंपति काम कलास धरे ॥
बिकसंत नरी नर कित्ति मुहं। मनुं अंकरका दिन अड्ड सुहं ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

(१) ए० कृ० को- चढ़ि वेग हरम्म सुगोष हरम्म।
(२) ए० कृ० को० सुकेसन रम्म।

चिहु पास भुवन हूरम रजै। [1] छरिय हथ मजु सुव्रन्न छजै ॥
मनु देषन राज तमास गुरी। ससि सूर अए सन मुष्प जुरी ॥
छं० ॥ ४४५ ॥

उडि धूम बजी विषम पवन। परियौ दस मदरवार मन ॥
छं० ॥ ४४६ ॥

तत्तारखा का कहना कि आज जुमारात है आज रहन दीजिए।

दूहा ॥ देषि भूप नक पून वर। पा ततार कहि भाति ॥
आज रष्षि साहाव वर। पर्यौ दिवस जमारति ॥
छं० ॥ ४४७ ॥

तत्तार खा का शाह से अपने स्वप्न का हाल कहना और समझाना।

कवित्त ॥ वोलि षान तत्तार। साहि सपन तर जक्कहि ॥
अद्भुत चरित मै दिठ्ठ। सीस दिट्ठौ न पोज लहि ॥
ग्रहसार ससार। पीर पैगवर रुट्ठ ॥
विन वद्दर उम्मरी। मेघ आक्रूत सु वुट्ठ ॥
वर स्वान सिध जवुक सयन। हरसिद्ध बीवी झग्गरी ॥
प जरत वार पट्टन सकल। अकल किति सम्ही लरी ॥
छं० ॥ ४४८ ॥

दूहा ॥ सेत वस्त्र कत्ती रही। मो विटे तिनि वार ॥
औ रन सुक्यौ दिष्षियै। राज निद्धि वड सार ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कवित्त ॥ कहै षान तत्तार। साहि दुल्लभ मनुच्छ जम ॥
वार वार पावै न। वहुरि अवतार राज क्रम ॥
छिन मे देह भजत। प्रान धरिजै द्रुह धत्ते ॥
वर कोटर घरियार। उत न वट्ठे जुध तत्ते ॥

(१) ए० कृ० को०—ङरि हथ्थ सुव्रन्न मु हथ्थ छजै।

इह देह जतन करि पारियै। कहै पीर पैगंवरह ॥
षल भट्ट तदिन निधि अष्प वह । सुनौ साहि कहि उम्मरह ॥
छं० ॥ ४५० ॥

छिनू बार धरि भेष। इंद्र हरि जात अग्य यह ॥
अश्ववाजीत कुंवार। कोपि मारंत षग्ग लय ॥
प्रथुराजा पहिचानि। आनि ग्रह मध्य सुमंडिय॥
करे रूप तिन सहित। जियत सुरपति को छंडिय॥
मघवान लाज लुप्पि न सकिय। कलियुग कारन रष्षए ॥
ततार कहत पतिसाह सों। ते प्रगट्ट अप पिष्षए ॥
छं० ॥ ४५१ ॥

शाह का कहना कि मैं तो अब कहा हुआ वचन नहीं पलट सकता।

दूहा ॥ सुनौ षांन ततार इह। गुर गलहां इत तत्त ॥
जु कछु बत्त मुष कढ्ढियै। करैं बनैं सुनि मित्त ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

उवन सूर संभरि अवन। नृप चिंती करतार ॥
उदति दीत[1] दो पंजरह। हंस सु उड्डुन हार ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

कवित्त ॥ जीव सिंघ आसिंघ। सींह उग्गंत[2] ततनय ॥
या फ़रमान अपीस। बाच चंदन बर दानय ॥
जोइ सिंघ आसिंघ। राज सिंधं नन जानं ॥
बद्ध सिंघ सो सिंघ। सेन सिंधसि पुनि पानं ॥
छत्तीस अम्म छत्री धरै। बचन भट्ट जंपै लिया ॥
देहंन छीन भग्गै सया। भग्गै सा पंचन चिया ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

(१) ए० कृ० को० दीव।
(२) ए० कृ० को० उग्गत लात।

तत्तार खां का खिझकर दरबार से उठ जाना।

झुकि ततर षा उठि। हाथ सिर झारि सीस धुनि ॥
वर मुक्कै दरवार। गई सुरतान मत्ति फुनि ॥
विधि विधान नृमान। मत्ति पुट्ठी पैगंवर ॥
बोलि षान षुरसान। दिष्षि तत्तार भित्ति घर ॥
कविचंद राज चहुआन पै। सर अदभुत उच्चार पिय ॥
घरियार एक सत सर इकै। वर वर वद' भारे सरिय ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

शाह का कवि को पान देना कि हमनें दिया तुम राजा से मागो।

दूहा[1]॥ उहै दैन न्रप्पति कह्यौ। उहि मग्यौ फुरमान ॥
सु कविचंद सरसे मिलै। पानि साहि चहुआन ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

कवित्त ॥ भयौ चंद सुष चंद। दंद गय काम सपत्तौ ॥
पाति साहि गोरी नरिंद। दियौ बोल निरत्तौ ॥
तवहि चंद बरदाइ। वहुरि राजन पै आयौ ॥
ज कछु तत को मत। अनि कहि कहि समझायौ ॥
मै दियौ दान चिंता न करि। होइ चंद सद्द निरति ॥
फुरमान कज्ज अग्गें परौ। देहि साहि मग्गे न्रिपति ॥
छं० ॥ ४५५ ॥

कवि का राजा को लिवा कर रंगभूमि में आना।

पद्धरी ॥ कवि चल्यौ राज प्रथिराज लेन। मिलि चले सुरय सुर सवे गेन ॥
वुझ्झवै राज लै चल्यौ भट्ट। उम्मरा[2] मीर सब मिले थट्ट ॥
छं० ॥ ४५६ ॥
जान्यौ सुअत प्रथिराज अप्प। किन्नौ जुगत्ति द्रुग्गा सुजप्प ॥

(१) ए० कृ० को—वेद। (२) मो०—उमराव।

रोमंच अस्स उभ्भार अंग। स्फुरंत अत्ति बध्यौ सुरंग ॥
छं० ॥ ४५७ ॥

चहुआन तेज देष्यौ अनूप। तिम भयौ[1] हित्त सुरतान रूप ॥
भुज धर्यौ चंद कवि चाहुआन। उच्छर्यौ सीस सजि आसमान ॥
छं० ॥ ४५८ ॥

सुरतान निजरि चहुआन आन। भैभीत कालसह मथ्थ जानि ॥
आकूत बजि बर क्किसल वाग। जानयौ सथ्थ न्रिप बर विभाग ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

प्रथिराज सब्ब देष्यौ सु[2]आव। अंतक्क रूप सवगुन सहाव ॥
हप्पयौ राज मधि[3] रंगभोम। कौतिग्ग सब्ब देषत व्योम ॥
छं० ॥ ४६० ॥

संवत अट्ठावन माघ मास। अनसित्त पप्प दसमी सुभास ॥
दिन घटिय पंच पल आदि जात। तारक्क मूल्ल चिव तिथ्थ पात ॥
छं० ॥ ४६१ ॥

प्रथिराज आनि मधि रंगभोम। साहाब उंच गहकंत व्योम ॥
घरियार घात बंधे सलुष्प। पठई कमान साहाब पुष्प ॥
छं० । ४६२ ॥

हुजाब का राजा के हाथ में कमान देना और राजा का कई कमान तोड़ देना।

कवित्त ॥ प्रथम राज कम्मान। आनि दिन्ही हुज्जाब ॥
गहिय राज चहुआन। तानि भंजी तर आब ॥
अवर आनि कम्मान। सोन बलराज समान ।
इम भंजिय दह पंच। अतिहि काठिन्य कमान ॥
उच्चर्यौ बान मीरान इम। हयौ तात हम जेन रन ॥
अर्प्पौ कमान हम अह गरुअ। सोइ समप्यौ साहि इन ॥
छं० ॥ ४६३ ॥

(१) मो० तिन्नयौ। (२) ए० कृ० को० जु।
(३) ए० कृ० को० अंग।

राजा को मीरा की कमान दी जाना और राजा का उसे चढाना ।

तब सुनि साहिब साहि । मगि सित्ताव कमान ॥
तत षिन आनि समपि । अत्ति काठिन्न उतान ॥
ग्रहिय राज कम्मान । जानि मनि आनंद मान ॥
मनु विछुर्‌यो मिलि मित्त । हित्त समकाल दसान ॥
उर वंपि चुंबि सिर धरिग न्नप । ग्रहिय पान मग्यौ सु सर ॥
निज पानि साहि बिन इच्छ करि । नष्यौ पहु प्रथिराज पुर ॥
छं० ॥ ४६४ ॥

दूहा ॥ फिरि ततार देषै न्नपति । रस अदभुत सुलतान[1] ॥
हुकम साहि कहि वान वर । गहन कह्यौ चहुआन ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

पृथ्वीराज का कमान को तानना और उसे देखकर मीरा का कहना कि यदि घरियार फोड दिए तो शाह राजा को छोड देगा और कुछ और भी देगा ।

कवित्त ॥ वचन अप्पि सुविहान । बचन चहुआन वंदि लिय ॥
तिन मगि पुब्ब कम्मान । साहि लीनो सुजुद्ध विय ॥
सो कमान वर तानि । जोर दिट्ठी न अप्प वर ॥
कजानी कम्मान । पान दीनिय सु अप्प कर ॥
गहि वान कमान कसीस कसि । हसी चित माया सवर ॥
ता दिनह चंद वरदाय भनि । बहु विरद गोरी सुवर ॥
छं० ॥ ४६६ ॥

दूहा ॥ बान गहन चहुआन लषि । रीझ विलदी खान ॥
[2]हनौ सुवर घरियार जौ । तौ छंडै सुरतान ॥ छं० ॥ ४६७ ॥
वोल बचन सुविहान सुनि । सो रीझवै प्रमान ॥
आप उचित देहै अधिक । जो वेधै चहुआन ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

(१) मो०—चहुआन ।
(२) ए० कृ० को०—हनौ सुवर घरियार तौ जो छंडै सुविहान ।

कवि का कहना कि राजा को निज कमान दिया जाय यही बहुत है।

चवै चंद बरदाइ इम। सुनि मीरन सुरतान॥
दै कमान चौहान कौं। साहि दियै कछु दान॥
छं० ॥ ४६९ ॥

राजा को हुजाब का वही कमान देना और ततार का पुनः कहना कि यह तमाशा न देखो इस में मारे पड़ोगे।

कवित्त॥ असद सुअन कम्मान। आनि दीनी हुज्जावं॥
निरषि ताम गोरी नरिंद। तत्तार सितावं॥
अति प्रमान उत्तान। भार अनभूत इष्षि वर॥
गुन गुरान धन प्रान। टंक पचीस जोर जुर॥
इष्षे बिसाहि आचिज्ज मन। दैन राज प्रसंस किय॥
उच्चर्यौ ताम तत्तार तभि। धुन्नि सीस कत कंपि जिय॥
छं० ॥ ४७० ॥

अहो साहि साहाब। सुनौ अरदास हित्त हर॥
अरि इह[1] इहै आरिष्ट। दिष्षि अनभूत तेज नर[2]॥
इह कमान उत्तान। जोर जुत्तान समानं॥
नन दीजै था हथ्थ। चिंति प्राक्रम्म पुमागं[3]॥
कम्मान[4] याहि संगह सजै। सु जनु नाग लद्धिय मनी॥
सम पंष चिलह संगह मिलै। चिंति काल क्रन अप्पनी॥
छं० ॥ ४७१ ॥

काल व्याल दसा कराल। समपंष कोप सम॥
ता आनन अंगुरी। कोइ मेलै सुमंत क्रम॥
आय अभुत्त[5] उम्मरा। सोम पंष्षलि सब सज्जै॥
क्रोध सज्जि करिवान। मत्त मारहि[6] विन कज्जै॥

(१) ए० कृ० को० जु। (२) ए० तर।
(३) ए० कृ० को०—प्रमानं, पुरानं। (४) ए० कृ० को०--प्रम्मान।
(५) ए० कृ० को०-या अमुत्त। (६) ए० कृ० को०—मारन।

बच्चै सुसाहि ततार तुअ। मम करि चित ततार गुअ॥
बिन नयन बान इच्छै गुनै। सो नन विद्वै धात तुअ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

सकर बद्धयौ सिध। ताहि पोलिय रस पिल्लै॥
कौन सुगम जग्गावै। कोप करि तासम पिल्लै॥
याहि न रष्यौ साहि। रोस बड्ढै सूरत्तन॥
याहि न पेषौ निजरि। याहि नह मिलियै बत्तन॥
पल दुष्ट एह चहुआन कौ। मम करि सग कमान ग्रम॥
कित्त दुष भट्ट सगह सब्यौ। जौ घन बुझ्झै मति मरम॥
॥ छं० ॥ ४७३॥

कवि की उक्ति।

तबहि साहि साहाब। हुआव हजूर सदि॥
दिय कमान तिहि हथ्थ। देहु चहुआन बाच बदि॥
काल कला किय प्रान। तन्न बुझ्झिय मोह मन॥
दिय दिल्लेसह पान। धर्यौ जीवनि साहि जन॥
हिकमति अनेक बचन कहत। जु कछु साई न्निम्मान सुधि॥
मेटै न मिटै हाकिम हसम। बल अनेक जो करै बुधि।
छं० ॥ ४७४ ॥

राजा का अपनी कमान पाकर परम प्रसन्न हो-ा-और निसुरत्त खां का राजा के हाथ में तरकस थमा देना।

पद्धरी ॥ सगहे पान कम्मान राज। उम्भरे अग अतर बिराज॥
आलिग बुबि उर चपि अप्प। बढ्ढ्व तेज तामस दप्प॥
छं० ॥ ४७५ ॥

कर धरे स धनु आनद चित्त। बिछुर्यै मिल्यौ चिरकाल मित्त॥
कम्मान राज मिलि तेज ताय। अरि मझ्झि विटि मिलि मनु सहाय॥
छं० ॥ ४७६ ॥

आवरे सूर अगह असेस। मन ब्रिद्ध ब्रिद्धि बामन विसेसि॥
तन जग्गि रोम उभ्भारि वीर। लग्गिय सुतप्प मन पास नीर॥
छं० ॥ ४७७ ॥

आवृत्त वरन सम किरन वैन । प्रवलप्प सप्प पारस्स नैन ॥
फारकंत अधर थरकंत बाह । संतकि सूर मंडल सुराह ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

चिंतै सु इष्ट मन जंपि जाप । तासंस तेस तन-तेज ताप ॥
कर रोहि पान धारै कमान । गुंघरै गयन धुंधरि दिसान ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

ब्रिष दाह विषम समबहि समीर । संपात चक्र उल्लका सभीर ॥
आसंन घट्टि मिलिअंत साहि । बुझ्झै न मोह मतिमंद ताह ॥
छं० ॥ ४८० ॥

आमूढ चित्त उम्मरा मीर । टगटगिय लग्गि अंतर उरीर ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अपार । ढंकेव मोह सैं काल भार ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

सनमुष्ष आनि सज्जे घरयार । भुअ पान असिय न्रिप अंतरार
चढ़ि उंच कज्ज कौतिग हरम्म । सम बाल वृद्ध सज्जे सरम्म ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

उच्चर्‌यौ राज सम चंद ताम । मंगहु सु बान मम करि बिराम ।
बरदाय साहि अरदास कीन । न्रप देहु बान कौतिग्ग चिन्ह ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

तब साहि तास बच्चयौ अभीर । निसुरत्ति देहु तरकस्स तीर ॥
निसुरत्ति आनि दिय साहि हथ्थ । तरकस्स तीर गोरी गुरथ्थ ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

राजा का कमान लेकर उसे संधानना, कविचंद का राजा को ज्ञान समझा कर दृढ़ता देना।

॥ ग्रहिय तीर गोरीस । कीन बिन इच्छ अप्प कर ॥
कौल अंत पल प्रेम । बुद्धि भग्गिय समोह गर ॥
दिषि नंष्यौ दिल्लीस । धरिय सज्जै सु सीस कवि ॥
कर दीनौ चहुआन । प्रान बद्धयौ सुईस तब ॥
तामंस रज्ज तन ताम तन । धन बीरत्त उभार भर ॥

सुरतान प्रान दीरन प्रलय । जनु जम सज्यौ दंड कर ॥
छं० ॥ ४८५ ॥

दूहा ॥ लगी टगटगी सोहितन । अरु भत लग्गे मीर ।
क्रित[1] रूप मुक्ष्झैव मन[2] । भरिय[3] घटी अति भीर ॥
छं० ॥ ४८६ ॥

ग्रहिय चंद दीनौ न्रपति । धरयौ पानि प्रथिराज ॥
चंपि अथ सुप सलित विया । करन काल अरि काज ॥
छं० ॥ ४८७ ॥

इल घसि पानि पविट्ट किय । सिगिनि सर गुन बंधि ॥
चरचि चंद मुपचंद भय । मिलिय राज मन तंधि ॥
छं० ॥ ४८८ ॥

त्रित सुधरै सब सुंदरै । कहै राज अब धारि ॥
सुर नर मुनि वर जात सब । राजन मरन सुधारि ॥
छं० ॥ ४८९ ॥

कवित्त ॥ बरन सच्च तन कच्च । सिद्धि साधक इम अप्पय ॥
वापी कूप तटाक । देव सुर नर त्रित भप्पय ॥
पंच तत्त किय पिंड । तथ्य षोडस आधार ॥
सुनि मंडल पट चक्र[4] । वाय मंडल अधिकार[4] ॥
पिसुंजु काल सिर उप्परै । कहि चंद तेन पटतरै ॥
प्रथिराज नृपति धीरज्ज धरि । बोल रापि कल अंतरै ॥
छं० ॥ ४९० ॥

चंद्रायना ॥ बात सबै प्रथिराज सुनी । सर इक्कै आईय ।
सर चुक्कै नृप पाछली । मामूर गमाइय ॥
कोरि पवारा[6] किद्धते । अरि भजे जड्डु ॥
इहि सर आइ विल विया । नही तर सह गड्डु[7] ॥छं०॥ ४९१॥

(१) ए० कृ० को० चकित ।　　(२) ए० वसन ।
(३) ए० कृ० को० भइय ।
(६) मो० चत्र ।　　(५) ए० कृ० कौं० पठवर ।
(७) ए० को० काडि पवाडा ।
० नइ तरु गड्डे ।

दूहा ॥ कहि राजन महि मंडलै । निसिपत्ती रवि सथ्थ ॥
जौ मारै सुरतान कौं । सकल चाव तौ रथ्थि ॥
छं० ॥ ४९२ ॥

सुनि राजन कविचंद कहि । बेल एक इह बेलि ॥
करि धीरज मारे बनै । रज पाछिली उवेलि ॥
छं० ॥ ४९३ ॥

बेली बहुरि न षाइहै । इहै जानि तुम बात ॥
दिल्लीपति जुग जुग अमर । उग्गारौ[1] अषियात ॥
छं० ॥ ४९४ ॥

वेत्त ॥ अहंकार मद मोह । लोभ माया घटि लग्गी ॥
काम क्रोध भय त्रिषा । षुधानीयं तन जग्गी ॥
दुष सुष बंध्यौं जीव । दुथ्थ अंतर सुष पावै ॥
सुष अंतर दुष होय । निगम सुर नर इम गावै ॥
सुष दुष रहट घटिकासु जिम । राजन एह परंपरा ॥
करि मग्ग अचल संभरि धनी । गयौ जोवन आईय जुरा ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

राजा का कहना कि मित्र अब वह पुरुषार्थ नहीं है क्या करूं ।

दूहा ॥ अंषि विनट्ठी हीन मति । हुअ पुरषातन मंद ॥
सुग्रह मुट्ठि द्रिढ़ न रहै । क्यौं मारहु कविचंद ॥
छं० ॥ ४९६ ॥

सिर तुट्टै षत्रिय न्त्रिपति । अरियन गहि दाबंत ॥
गयन ग्रज्ज सुनि सिंघ जिम । तलपि[2] तप्पि जिय दिंत ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

श्रवन सबद जौ संभरौ । अरिमुष बोलै सोइ ॥
तौ मारौं कविचंद जौ । वह कमान बल होइ ॥
छं० ॥ ४९८

[१] ए० कृ० को०-उच्चारौ । (२) मो०-तलपि तप्पि जिय द्धी

कवि का कहना कि तुम वाण सधानों मैं तुम्हें वैसाही न करदू तो कवि नहीं।

सद्द तीन सुरतान के। श्रवन सुनाऊ तुझ्झ ॥
सोइ कमान सो वल करहु। तौ जानैं कवि मुझ्झ ॥
छं० ॥ ५०० ॥

पुरुष बोल इक्कै कहै। वार वार वच दोष ॥
धरि धीरज मैं प्रथम कहि। साहि बुलाऊ मुष्य ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

कवि का राजा को पुन समझाना और उत्कर्ष देना।

बुद्धिहीन फिरि फिरि बुझ्झै। भ्रम छंडिय धरि धीर ॥
अप्प सवारथ मेल्हि दै। परम ततव गहि तीर ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

अप्प मरन सब कौ दियै। लज्जी जीय धरत ॥
सभरेस कविचद कहि। विरले मार मरत ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

अरिग्रह जौ वासुर बसै। अप्प सुआरथ काज ॥
सो जीवत न्रप म्रतक सम। गत म्रजाद गत लाज ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

जौ पिचिय अरि सवद सुनि। जोइ लाज छोरत ॥
ता जननी को दोप न्रप। कछुक जाति महि भ्रति[1] ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

तो तन सब सज्जिय न्रपति। सवद वेध औ हाय ॥
अरि रोपै घरियोर अप। मारि अमाने वात ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

सर फुट्टा बिन माम मति। वल पौरुष पडियोह ॥

(१) ए०—न्रति।

कुक्कर ज्यों अरियन तनी । पापत लप्पडि योह ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

कवित्त ॥ पवन संधि धरि ध्यान । मंडि छल बल करि भूपति ॥
जल थल महिल सुझंति । रहै सु सबद देवंगति ॥
इन पहिली किदि विजै । घरी ऐसी नह पाइय ॥
इह बासुर इह जाम । तुझ्झ बपते इह आइय ॥
दिढ़ राषि जीव संभरि धनी । सो संठी अरिसुप जड़ी ॥
सामंत नाथ कविचंद कहै । रहै जुगे जुग बत्तड़ी ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

पृथ्वीराज का उत्तेजित होकर कहना कि मैं शत्रु को अवश्य मार गिराऊंगा ।

दूहा ॥ लग्गा बोल सु लग्गना । घट उट्ठी धन अग्गि ॥
उस सेबर मुष बुल्लयौ । नृप गय नंगन लग्गि ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

चंद्रायना ॥ तो जानै कविचंद मो मुष तीर लगाउं ।
गंग धरन रबि चंद लग्गि कलि बोलि रहाउं ॥
इह बासुर बेला घडी धौं बहुरि न पाउं ।
ताराइन जिम तूट तौ अरिधरनि घुकाउं ॥
छं० ॥ ५१० ॥

कवि का पुनः राजा को उत्तेजित करना ।

दूहा ॥ बार बेर असपति ग्रहिय । सब नृप लग्गे पाइ ॥
तुअ भुज बल अचरिज्ज कह । अब इह मारि गिराइ ॥
छं० ॥ ५११ ॥

कवित्त ॥ जस काजे कलि कन्न । भार सोव्रन नद अप्पौ ॥
सिवर कथ्थि अप्पयौ । सीस जगदेव समप्पौ ॥

(२) ए० कृ० को—छरकर ।

विक्रम राव नरिंद। कट्टि पर दुष जस झल्लै ॥
राजा रावल राव। सुजस कारज पपि चल्लै ॥
पायो न इसौ तिनह्ह सुजस। कह्यो चंद सो दिठ्ठुय ॥
सर एक वीच दुरयो सुजस। डारि तीर किन कट्टुय ॥

छं० ॥ ५१२ ॥

दूहा ॥ सुरतानह मुर सुवद दै। अरु मिलि हथ्य कमान ॥
अब मुरष कि सोच मन। समझ सधि चहुआन ॥

छं० ॥ ५१३ ॥

पृथ्वीराज वचन।

फेरि राज इह वत्त कहि। वरदिय दै बर कान ॥
हनैं साहि घरियार सो। जो अप्पौ विय बान ॥

छं० ॥ ५१४ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ एक बान चहुआन। राम रावन उथप्पे ॥
एक बान चहुआन। कर्न सिर अर्जुन कप्पे ॥
एक बान चहुआन। त्रिपुर सिर संकर विद्धिय ॥
एक बान चहुआन। भमर लष्मन पारद्धिय।
सो एक बान सभरि धनी। लियो बान नह मुक्कियौ ॥
घरियार एक इक मुग्गरिय। एक बान नृप चुक्कियै ॥

छं० ॥ ५१५ ॥

पृथ्वीराज वचन।

दूहा ॥ कहै राज कविराज सुनि। मो वल्ल सकति अपार ॥
अप्पै सभरि धौरहर। सत्त हनौं घरियार ॥ छं० ॥ ५१६ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ द्रोनाचारिज पास। बान विद्या पढि पंडव ॥

पराक्रम्म पारथ्थ । जोह मै वथ्थ सु मंडव ॥
साषा सत्ताईस । सवा लष पत्र सोष प्रति ॥
पत्र पत्र परिमान । भार मन सवा लष्ष धृति ॥
जपि बान संच अरजुन्न तब । धनुष पंचि जंपिय सुबल ॥
कविचंद कहत प्रथिराज सुनि । पत्रि पत्रि छेदिय सकल ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

कविचन्द का राजा को समझाना कि सात नहीं एक को वेध ।

अरिल्ल ॥ तिहि अर्जुन समान तूं रज्जन । जौ सर संधि हनै पति गज्ज ॥
सत्त घरयार तनौ अचरज्जन । अचरिज प्रान मान सम तज्ज ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

कवित्त ॥ इक्क फोरि संभरी । सत्त फोरै जस नासय ॥
ते दीहा संभलै । जे अंग मलयो गिर बासय ॥
[1]सिर हरयो झंषवै । उरह अरि समो न बुझ्झै ॥
मुऔ न जीवे कोइ । मोहि परमथ्थह सुझ्झै ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । वेधो कंधै धवलहर ॥
औसांन न बुझ्झहे रे हिया । इक्कन फोरै इक्क सर ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

षत्रि होय परधान । षाय षंडौ दिषलावै ॥
साह होय परधान । भरै धर राज थँभावै ॥
कायथ होय प्रधान । अहो निस रहै पियंतौ ॥
बंभन होय प्रधान । सदा रष्षवै[2] अचिंत्यौ ॥
नाई प्रधान कीजै नहीं । चंद बिरद सच्चौ चवै ॥
चहुआन बान गुन सट्ठवै । मम चुक्किस मोटै तवै ॥
छं० ॥ ५२० ॥

जेन बान भारथ्थ । वाय पुत्तह पग बिंध्यौ ॥

(१) ए०—सिर हयोप अवै । (२) ए०-दष्षवै ।

जेन वान त्रियरथ्थ । धरा उप्पर हरि सथ्यौ ॥
जेन वान भारथ्थ । ग्रहै कौरव कुल पोयौ ॥
परदूपर ताडिका । तास सुप अंत समोयौ ॥
सुरतान प्रान तिन वान गहि । सु कविचद सचो चवै ॥
सोई जवान तुअ कर चढे । मम चुक्कि मोटै तवै ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

श्लोक ॥ मादद्वे चित्त पुरानानि । नीति कालानि सचये ॥
अप्पए वान वानानि । कि प्राण मुक्कन श सए ॥ छं० ॥ ५२२ ।

कवित्त ॥ सभरि नरेस करि रीस । सीस धुन्नहि नह स कहु ॥
चलहु चित्त नद करहि । मोहि अच्छरि मन अकहि ॥
उत्तमग कर असिय । वाह उप्पर वामन्नहि ॥
सैल वत्त सचरै । राय भुअपति सव सुन्नहि ॥
सुरतान पान गुर ध्यान गहि । गुर अच्छिर चदह भनिय ॥
मुकहि नसत्त सर सत्त कह । तू सामंत सूरन धनिय ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

प्रथीराज कम्मान । वान दृढ मुट्टि गहिय कर ॥
जिन विसमौ मन करहि । करहि भुअपत्ति अप्पु वर ॥
जु कछु दियौ कैमास । कियौ अप्पनो सु पायौ ॥
सोइ सभरिय सहाय । तुहिज अम्मरपुर आयौ ॥
विधिना विधान मेटै कवन । दीनमान दिन पाइयै ॥
सर इक्क फौज सभरि धनी । सत्तह जुग्ग रहाइयै ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

कवि के इशारे पर राजा का शाह की तरफ मुख करना ।

गिरनारा लगि गौड । देस जीता जगल थल ॥
लका गढ जित्तयौ । समद जित्तौ उर सलियल ॥
हथिना वर जित्तयौ । सीम कधारा वधिय ॥
मथुरापुर जित्तयौ । एक मुप धारन सधिय ॥

प्रथिराज सुनवि संभरि धनी । सुहिनैही मम जानि सुप ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । सजि जालंधर देस सुप[१] ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

दूहा ॥ जल बिन भद्दसु[२] भद्र सें । करि अप्पहि सुप वन्न ॥
परम तत्त सुझ्झ्यौ नृपति । मंगहि फुरमानंन ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

पृथ्वीराज का कमान ले सन्नद्ध होकर शाह के हुक्म की प्रतीक्षा करना ।

पद्धरी ॥ फुरमान मान मंग्यो सु चंद । चपहु अति अंध चप भइय इंद ॥
ठगठगिय लगी बुधि भगिय साहि । फुरमान दियौ मनों करज गाहि
छं० ॥ ५२७ ॥

कवि का डमरू बजाकर शाह से हुक्म देने के लिये प्रार्थना करना और राजा को उत्कर्ष देना ।

दूहा ॥ मानि नृपति बरचंद कहि । डंवरू गहि वर हथ्थ ॥
महि मध्धै गोरी सु बर । कहि कहि जंपि सु अथ्थ ॥ ५२८ ॥

कवित्त ॥ हुंकारै सु गिरद्ध । राम जल सायर बद्धौ ॥
गिर तोल्यौ हनवंत । देव हुंकारै दिद्धौ ॥
हुंकारै अभिमन्न । भवर गय नंगन पार्‌यौ ॥
हुंकारै कलिकन्न । मेर चिट अंगुलि चार्‌यौ ॥
चहुआन रान संभरि धनी । बहु सुबान तुअ कर लह्यौ ॥
छेदै न तीर सत्तह तवै । असपति हुंकारौ दयौ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

शाह की आज्ञा से पृथ्वीराज का सर संधानना और कवि का बिरदावली पढ़ना ।

हुकम साहि गोरी नरिंद । अप्पै फिरि दीनौ ॥

(१) मो०-सुप । (२) ए०-भद्दहि ।

बान सु वर प्रथिराज। काज अप्पनै सु लीनौ ॥
तब पढि वीर नरिंद। छंद विरदावलि पुन्नह ॥
सुनत भयौ ज्यौ नाग। नाग मंतर सुनि तब्बह ॥
अवदात पोर लम्भय नहीं। जीहा सेस सहस्र कहि ॥
लवलेस कृत्य कारन भनहु। छंद पद्धरिय जत्ति महि ॥
छं० ॥ ५३० ॥

पद्धरी ॥ जित्तए जुद्ध गोरी नरिंद। षुरसान जीति गति करिय मंद ॥
आरत्त काल भजि मत्ति जीत। दिष्षियै रूप भै भै अभीत ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

जुत्ति करन जोग तुही नरिंद। नष्षयो भीम उडि हूर दंद ॥
बधयौ आप रघ्[1] जुत्त वीर। जिहि बध्यौ तिमिरलिंगत्त मीर ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सुर जीति असुर सुर भौ प्रमान। मत समद वाच दिट्ठतु बषान ॥
चहुआन बंधि तिहि कियौ बंध। षुज्जी जु साहि जिन पुट्ठि सुद्ध ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

चढि जग पग जिहि भग कीन। परवत्त पारि जिहि हेम लीन ॥
हिंदवान हद्द परवत प्रमान। तहाँ लग्गि कीन सुरतान आन ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

षुरसान हथ्थ नष्षौ पिछान। गजपत्ति बंधि कौ बेर आनि ॥
षुरसान मीर पसु सम सतीन। सौ सूर जीत चतुरंग कीन ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

सुरतान टेक ठाढे सुपास। अदभुत चरित्त मुक्के न गास ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

शाह के हुंकार देने पर राजा का उसके तालू पर निशाना लक्ष करना।

दूहा ॥ बधन घरी चहुआन पै। बचन समप्पै साहि ॥
चित्त तोस तालुक रषि। सब्ब[2] संपत्तौ आय ॥ छं० ॥ ५३७ ॥

(१) ए० कृ० को० नय। (२) ए० कृ० को० सच्च।

पहिले खम्भ पर राजा का सर संधानना, दूसरे पर पठाना और तीसरे पर शाह का तालू बेध देना।

हनूफाल ॥ सुरतान अग्ग प्रथिराज। जनु मत्त मद गजराज ॥
बिन चष्ष उभ्भौ सेर। चिहुं कोद अरिगन फेर ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

रुपि घटिय षान ततार। कविचंद बैन उचार ॥
कर करषि नृप कोवंड। धर धरनि थर ब्रह्मंड ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

दिव देव जै जै बैन। व्योमान सुरछरि ऐन ॥
करि करषि धनु पर बान। सुत सक्र पानि प्रमान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

कहि चंद जंपत साहि। फुरमान धरहु सु वाहि ॥
मुष उच्चरै सुरतान। मैं देउं तिय फुरमान ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

सै अंग साहि जलाल। मुष उच्चरै सद आल ॥
फर फरकि उष्ट फराल। जनौं सुपत गजवत काल ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

फिर चंद राजन पास। इक बान इक घरियास ॥
फुरमान इक भय साहि। सुनि सबद श्रवनं चाहि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

भय उभय बर फुरमान। इक इष्ष धनु कर कान ॥
सुनि चतिय बैन अतिंत। सुरतान भूमि पतंत ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

वरषंत अंबर ऐन। पहु पंजली बर गैन ॥
सुर सूर सुरपति सोषि। दिन प्रबल प्रथुपति आषि ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

सुरतान गौ हरि साज। भिन करै आतम राज ॥
चहुआन भर सुरतान। इक जोति मद्धि समान ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

नव वाक नव रस छंद । सरसे मिले कविचंद ॥
छ० ॥ ५४७ ॥

दूहा ॥ चिंतिय साहि फुरमान सुप । जिम कथ्यौ सुर काल ॥
हन्यौ तांमि प्रथिराज तमि । बचन वचन सुप ढाल ॥
छ० ॥ ५४८ ॥

कवित्त ॥ भयौ एक फुरमान । बान जोगिनिपुर सध्यौ ॥
सोइ सबद् अरु बान । अन अविचल करि बध्यौ ॥
भयौ बियौ फुरमान । तानि रष्यौ श्रवन तरि ॥
तियौ भयौ अनभयौ । पर्यौ पतिसाहि धरतरि ॥
लै दसन रसन तालुअ सधन । सीस फट्टि दह दिसि गवन ॥
सुरतान पर्यौ पां पुकरै । भयौ चंद राजन मरन ॥
छ० ॥ ५४९ ॥

शाह के प्राणहीन होकर गिर पड़ने पर कवि का राजा को हठयोग द्वारा प्राण त्याग करने को कहना ।

दूहा ॥ सिलक बेधि फट्टिय प्रथक । नयन तोल श्रुति-मन्नि ॥
स्रवन कंठि किन्निय विकल । ढर्यौ साहि सम धुन्नि ॥
छ० ॥ ५५० ॥

पर्यौ साहि धर देषि कवि । समझायौ नृप जोग ॥
आसन बंधि उलट्टि चक्र । छंडि प्रान उड्डलोक ॥
छ० ॥ ५५१ ॥

राजा का कहना कि यह मुझसे कैसे होसकता है ।

तब राजन कविराज सौं । कहै भेद पर ग्यान ॥
राजस विच सातुक करन । क्यों आवै कवि जान ॥
छ० ॥ ५५२ ॥

शाह के मरने पर महा हाहाकार होना ।

कवित्त ॥ परत धरनि सुरतान । पान मिलि पलक पिट्टि सिर ॥
मैं बरज्यौ बहु बार । साहि दुसमन असप बर ॥

अस्ति सकल सामंत। तेज प्रथिराज वीर विय ॥
बल विक्रम अति सूर। जोह कविचंद प्रमान ॥
एक ठाम उपज्जै। एक थल मरन निधान ॥
सजाल काल ढिल्ली रहौ। चौसट्ठा टोडर समनि ॥
दैवत्त पह दैवान गति। दैव गत्ति जोगह सघनि ॥

छं० ॥ ५५७ ॥

रिन जित्यौ कमधज्ज। साहि बंध्यौ गहि गोरी ॥
मैवाती मठ किद्ध। दौरि सो क्षत्तिय तोरी ॥
यट्टै भज्यो भीम। धरा गुज्जर दिसि धायौ ॥
इहै करी अपियात। कलस कुल नृपति चढायौ ॥
कीयो न किछू करिहै न को। जग जित्तै जुग जस लियौ ॥
समलौ सकल भूपति वयन। कोजै ज्यौ पिथ्थल कियौ ॥

छं० ॥ ५५८ ॥

भुजंग ॥ परयौ सभरी राइ दीसै उतंगा। मनो मेरु बज्री किय श्रृंग भृंगा।
जिनैं बारबार सुरत्तान साह्यौ॥ जिनैं भंजि कै भीम चालुक्क गाह्यौ।

छं० ॥ ५५९ ॥

जिनै भंजि मैवात दैं बार बंध्यो। जिनै नाहर राइ गिरनार सध्यौं ॥
जिनै भंजि यट्टा सु कढ्यौ निकंद। जिनैभंजि महिपाल रिनथंभ दंद॥

छं० ॥ ५६० ॥

जिनै जीति जद्दौं ससीव्रत्त आनौं। जिनै भज्जि कमधज्ज रघ्यो जु पानं।
जिनै भंजि पंडा सु उज्जैन माही। परमार भीमंग पुत्री बिवाही ॥

छं० ॥ ५६१ ॥

जिनै दौरि कमधज्ज साहाय कीयौ। जिनैं कंगुरा लेय हम्मीर दीयौ॥
जिनै बोलि कजबालका पेत ढाह्यौ। जिनै गाहि रा पंग स जोग लायौ॥

छं० ॥ ५६२ ॥

भए राइ राजा अनेक सु थान। किनै शब्द कै सथ्थ भुक्यौ न बानं ॥
इनै सभरी राइ साहाब हन्यौ¹। उभै दीन जास पराक्रम मन्यौ॥

छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए कृ को सध्यौ, व यो।

सब देव हूरं पुहपपं बंधाए। सुरं जोति जोतिं सजोतिं समाए॥
तिनकी उपमा कवीचंद भाषी। मिले हंस हंसं रवी चंद साषी॥
छं० ॥ ५६४ ॥

कवित्त ॥ नयन बिना नरघात। कहौ ऐसी कहु किद्धी॥
हिंदू तुरक अनेक। हुए पै सिद्ध न सिद्धी॥
धनि साहस धनि हथ्थ। धनि जस वासन पायौ॥
ज्यों तरु छुट्टै पत्र। उड़ै अप सत्तियौ आयौ॥
दिष्यैं सु सथ्थयौ साह कौं। मनु नछिच नभ तें टर्यौ॥
गोरी नरिंद कविचंद कहि। आय धर ध्धर हुम पर्यौ॥
छं० ॥ ५६५ ॥

हरफ षान कहि वत्त। प्रात पहिलै दिन भुल्लै॥
भट्ट देषि दरबार। फेरि देतह किम फुल्लै॥
फुनि पहिलौ सनमंध। बार बारह सु गह्यौ अब॥
सहि सहाब छंडयौ। दियौ भरि दंड तुमहि तब॥
कल्लोन कहर कर सर वरह। गज्जनेस पत तो वह्यौ॥
बहुवास मलय चंदन अगर। दुज कंध भट राजन दह्यौ॥
छं० ॥ ५६६ ॥

सुन्यौ हंस हंसनिय। हंस बिन हंसप सुक्कै॥
दसम द्वार उडि हंस। पंच मिलि पंचह रुक्कै।
इंद्र आप उद्धार। ढुंढ ढिल्लिय ब्रज कंतिय॥
अथ्थ कथ्थ निल्लयै। आय जुग्गिनपुर वत्तिय॥
डंडूर वाय तिन बहु उड़े। वाय भग्गि तिन तथ्थ परि॥
संजोग जंत भंजि जंत्र वर। भगी सार तत्तो निवरि॥
छं० ॥ ५६८ ॥

ति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके पातिसाहि बानबेध मरन राजाचंद सुजसकरण पश्चात् बधनो नाम सड़सठवों प्रस्तावः समाप्तः॥ ६७ ॥

अथ राजा रयनसी नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

[अड़सठवां समय]

पृथ्वीराज के पकड़े जाने पर और कवि के कांगड़े से छूट आने पर राजा रयनसी का पाट बैठना ।

दूहा ॥ पुब्ब कथा प्रारंभ कहि । सिंघालोकन कथ्थ ॥
जब ते गज्जन वै ग्रह्यौ । असपति दिल्ली नथ्थ ॥
छं० ॥ १ ॥

ज्यों रेवा गज अहिय मनि । चातक पावस नभ्भ ॥
ज्यौं दरिद्र संपत्ति यै[1] । यों गज्जन प्रथु लभ्भ ॥
छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ ग्रहिय राज सुरतान । गयौ गज्जन गज्जन वै ॥
पंच पथ्थ पंजाब । थान थप्पिय तज्जन वै[2] ॥
पठ्ठिय षां षीरोज । सोब साहिब करि मंडिय ॥
लगि लाहौर दिसान । मीर मीरन पर छंडिय ॥
पथ इंद्र कोस सत इक पर । मेछ सेन पारस सरिय ॥
एकि रहै रैन राजन रवद । मनो सिंघ सिंघह अरिय ॥
छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ जोगिनिपुर राजै रयन । चंपि न सक्कै कोय ॥
कलह केलि नित नित करै । रज बढ रष्षै सोय ॥
छं० ॥ ४ ॥

भावी गति भव न्त्रिम्मयौ । छुटि आयौ कविचंद ॥
सुष्प कंद सुक्कै सु कवि । दुष[3] पंगुरि वर कंद ॥
छं० ॥ ५ ॥

(१) ए० कृ० को० सपति पयै । (२) ए० कृ० को० तद्दित वै ।
(३) ए० कृ० को० सुष ।

राजक्रित्य कारन सकल । करिय रयन चहुआन ॥
दान न्हान गो ब्राह्मनह । दिए विविध परिवान ॥
छं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ राज देव प्रोहित्त । आय आंभासि उचारं ॥
ढिल्ली धर ढिल्लरिय । होइ निरधार अधारं ॥
सबै सूर सामंत । रेन राजन आचारं ॥
करिय एक मन सब्ब । रीति राजन व्यवहारं ॥
सुभ दिवस लगन सिंधासनह । घरि मूढ़ा गादी सरिय ॥
कढ्यौ तिलक सामंत मिलि । मेघाडंमर सिर धरिय ॥
छं० ॥ ७ ॥

कविचन्द के कौशल से शाह और पृथ्वीराज का मरण सुनकर रयनसी जी का सब सामंत मंडली से सलाह करना ।

कितक दिवस अति बिषम । गए पल पग्ग घटक्कै ॥
सुन्यौ राज बरदाइ । हन्यौ सुरतान सटक्कै ॥
रोस[1] रुद्र उप्पज्यौ । भयौ वीरां रस सारं ॥
धन्नि राज[2] प्रथिराज । गिल्यौ साहाब सुतारं ॥
उक्कसे रयन सामंत सब । मंत मंडि धर धुंसियै ॥
संजुरे बीर अभासि भर । नाम प्रथुक परसंसियै ॥
छं० ॥ ८ ॥

उत्तराधिकारी सामंत मंडली का वर्णन ।

बोलि भान पुंडीर । बीर पावस को जायौ ॥
बोलि पुत्त रनधीर । अनुज धीरत्त सवायौ ॥
सामंत सौं गहिलोत । महन सुअ मयन महन रंभ ॥
जैत करन पांवार । सार परताप रयन षंभ ॥
बीरोधि हड्ड सुम्मेर सदि । वीर चंद जैसिंघ सजि ॥
संकरो सिंघ बनबीर बर । धंध रोजग मन्नि रजि ॥ छं० ॥ ९ ॥

(१) मो०-रीस । (२) ए० कृ० को०-राह ।

भान तेज चालुक । धक्क अरितम्म अहारन ॥
पारिहार रनधीर । भीर भर[1] रेन सधारन ॥
सारंग दे गष्परी । टा कारन डाक बजावन ॥
कूरंभा रघुवंस । वंध रन सिंघ कहावन ॥
ता अनुज बंधि राजसि कुंअर । राजदेव राम दुज सुअ ॥
सब आय सध्य सिरदार लै । वड गुज्जर मोजल्ल भुअ[2] ॥
छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ ईसरदास अनंत वर । भुज ढिल्लिन चहुआन ॥
मंत तंत बुझ्झै नृपति । कहौ कान्ह विधि जान ॥
छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कहत भान चालुक । वार लद्धिय हम याहिय ॥
सारंग दे गष्परौ । तेग तत्ते होइ साहिय ॥
धधेरौ धुमकेस । वेस वड्डौ वड्डा ॥
इनकौ मंत मरन्न । करनपूर वलि चड्डा ॥
लपलेन तुरिय चुकै पुरिय । इह अचंभ नन मानियै ॥
रनभंग लाज रजपूत जौ । फनि अभंग रन ठानियै ॥
छं० ॥ १२ ॥

युवक सामंत मंडली का मत होना कि शाही सेना से छेड़छाड़ की जावे ।

दूहा ॥ इक सो नौ अरु सा पुरिस । भग्गा फेरि जुरंत ॥
कायर पप्पर काच कन । मन भग्गा न मिलंत ॥
छं० ॥ १३ ॥

कहै भान पुंडीर मति । अरु मिलि ईसरदास ॥
पुंडीरा रनधीर कहि । राजन मुक्कै पास ॥
छं० ॥ १४ ॥

सेवक सामि सवंग धरि । चिहुं दिसि चोट अहुट्टि ॥
अनिय धार अड्डौ अरै । टूक टूक होय तुट्टि ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) ए० कृ० को० रन । (२) ए० क० को० मोजिल अभुअ ।

इह मति करि सज्जौ सु दल। कढ़ि सुमेर परताप ॥
संकर[1] सिंघ सामंत सौ। अरिवल तोलै आप ॥
छं० ॥ १६ ॥

धवल दीह संमुह धवल। रथ सामंत सरंध ॥
यों लहि राजन वंस धुर। धवल रतन नव कंध ॥
छं० ॥ १७ ॥

इधर गजनी में शहाबुद्दीन के उत्तराधिकारी का तख्तनशीन होना।

उत गोरी गज्जन दिसा। थप्पिय तिनै सहाव ॥
मेछ मछरति दीन मति। धर्‌यौ गौरि साहाव ॥
छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ धरिय गौरि साहाव। षान मिलि षलक पिट्टि सिर ॥
सहस पंच इक लष्य। करह वंगरिय टूक थिरि ॥
चिहुर रोम उप्पार। भई सब मेष दिवानै ॥
तन तोबह झूरंत। अहो हिंदू परवानै ॥
उत्तारा भीर अल्लह उमरि। इन अभूत काम मानयौ ॥
दुसमन विसास सुविहान किय। तब कुमंत हम जानयौ ॥
छं० ॥ १९ ॥

दूहा ॥ तिया भरोसौ ना करे। अरु दुरजन वेसास ॥
पुब्ब विरोध न वीसरै[2]। ते लभ्भै सुष वास ॥ छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ तब मिलि षान ततार। षान निसुरत्ति सजोरिय ॥
रुस्तम षान हुजाब। षान षानौ मिलि गोरिय ॥
मीर मलिक मीरंन। हदफ षां हद षुरेसी ॥
कालन षां मारूफ। षान सारूफ सुरेसी ॥
षुरसान षान षुरसान षां। जंद जिहाज जादुल्लपति ॥
पव्वीय पंच साहाब सुदि। प्रथुक जात इक नाम भति ॥ छं० ॥ २१ ॥

(१) ए०-संक। (२) मो० वीसरै।

साइत सोधि सहाव । पूछि काजी कुतवानिय ॥
नवल तपत नव रोज । छत्र चामर सो भानिय ॥
पढ़ि कुतवा फातिया । विनै साहाव सुनाम ॥
गज्जनेस गरुअत्त । करै कायाबर काम ॥
दिल्लिय दिसान सलै सरस । अहनिसि नींद न चप धरहि ॥
छिद्दवान राज उप्पर रयन । उक्कसि उकसि असिग्रह करहि ॥
छं० ॥ २२ ॥

सलाह पक्की होजाने पर राजा रयनसी का शाही सेना पर आक्रमण करने को सन्नद्ध होना ।

दूहा ॥ तपत रयनसी राज वर । चित सान्नत चहआन ॥
नोल बोल चीवट परैं । ज्यों भग्गे पापान ॥
छं० ॥ २३ ॥

परहसा पप्पै सरै । एह अनागत बत्त ॥
कट्ठ जलै कोइल[1] करै । बलै लोह लहि धत्त ॥
छं० ॥ २४ ॥

पत्त परप्पन रयन रिधि । बैर बहोरन सल्ल ॥
गति अतर पतर पवित । बछे पुच नवल्ल ॥
छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ वे सामत समथ्थ । जेन सुरतान जु साहिय ॥
वे सामत समथ्थ । बोल बोले निरवाहिय ॥
वे सामत समथ्थ । जुग्गा जुग कीरति रप्पिय ॥
वे सामत समथ्थ । चद सूरिज जिहि सप्पिय ॥
इम रयन काज रप्पहि धरह । अब धीरत्तन मडियै ॥
धर थान पथ्थ पजाब लगि । पग्ग[2] मग्ग पल पडियै ॥
छं० ॥ २६ ॥

(१) ए० कृ० को०—कोइ लकरै । (२) कृ० को०—पग्ग ।

दूहा ॥ रयन राज इह मंत सुनि । मन डम्भरि अमभान ॥
मंत सबै एकांत करि । दल[1] भंजों सुलतान ॥
छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ तंतु एक जो ग्रहै । चिरीय बंधन पग तोरै ॥
सहस मेलि बल भरै । बंधि गजराज अहोरै ॥
एकल्लौ बल करै । बहुत अग्गैं पग छोरै ॥
मिलहि सूर सामंत । करैं बरढान ढंढोरै ॥
सत मत्त मंच हम अरन मत । इह सुधम्म रजपूत नहि ॥
जीवंत धरा भोगै अवर । बलिय रयन इह बात कहि ॥
छं० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ रजवट चूरी काच की । भग्गी फिरि न संघाइ ॥
मनिया नाहीं लाष को । कीजे आंच तपाइ ॥
छं० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ पुनि जंपिय रतनेस । सुनहु सामंत सूर भर ॥
दिग्ग विजय रावन करत । बोलि नारद रिषेसर ॥
सुर नर पंनग बंधि । कहा वड़ बिरद बुलावहु ॥
तौ जानिहिं बलवंत । जीति अंतक पुर आवहु ॥
सुनि तमकि जुद्ध लंकाधिपति । करिय काल सो चाल बँधि ॥
तसलीम तीन करि छुट्टयौ । संजमनी पत षेत मँधि ॥
छं० ॥ ३० ॥

गाहा ॥ दस दस कोटिभ सथ्थं । इक कंगुरिय रष्षि संरिनयं ॥
घौ निसान निसंकं । सुरतान थान भाजनं काजं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ गागरि मद्धि प्रगट्टि रिषि । सागर करि अचवंन ॥
अनल कुंड उतपन्न अग । पग रिन रुपै[2] कवन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए० कृ० धर । (२) ए० उपौ ।

राजा रयनसी जी का सब सेना तैयार करके पंजाब की सर-हद पर स्थित शाही सेना पर आक्रमण करने के लिये कूच करना।

कवित्त ॥ बजि निसान घन आन । उमडि आषाढ डडुर ॥
घमकि धराधर धर हरै । पिट्ठ तट्टि कछ कारूर ॥
हलकि सूर हय चढे । किलकि जोगिनि बेताल ॥
भलकि तेग हथ भले । नचि नारद बेताल ॥
ओपंत टोप सजोसमधि । मनु भद्रव घन भान सरि ॥
नवतीय सहस दल बल अतुल । चलिय रयन सब साज करि ॥
छं० ॥ ३३ ॥

पद्धरी ॥ करि सेन साज चलि रयन राज । बज्जै अनत वाजत बाज ॥
सूरिवा सुभट अग्गै विराज । मन धरे सामिधर भ्रम्म काज ॥
छं० ॥ ३४ ॥

यह धूरि पूरि पिष्षयन भान । धर धरिय धरा मिलि आसमान ॥
सलसलिय सेस कसमस करान । दिगपाल दति पतिय डरान ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सूरम करष्पय पिट्ठपान । फिरि जगे वीर बेताल आन ॥
जोगिनिय गहे पत्तर पयान । सँग चले गिद्धि सिद्धी सयान ॥
छं० ॥ ३६ ॥

सुर असुर जुद्ध देषन उमह। गड़ अडै मत्त गानै कि मेह ॥
हनहनथ सद्द हैहै हिंसान । पर सद्द धरा बज्जै प्रमान ॥
छं० ॥ ३७ ॥

घहरत्ति घट घुघरन सोर । पावस्स जानि बोलत मोर ॥
सज्जिय सनाह घन जेम स्याह। बगयति भति आवधि अथाह ॥
छं० ॥ ३८ ॥

घनु धनु हरत रत पीत तेज । फहरति फिरै जनु अस्मतेज ॥

छुथनारि गोर गंबूर सथ्थ । छुट्टंत अम्भ पावै न पथ्थ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

दिल्लिय धरान चढि चाहुआन । संबोधि बोधि सब्बै भरान ॥
सुर सहस गज्ज सय मीन सुष्प । जानै कि कूट पब्बय सरुप्प ॥
छं० ॥ ४० ॥

नष सत्त सहस सेना सुभार । पायक सहस्स सुर पंच सार ॥
पंचह सुअनी बंधी हिसान । मधि अनिय रयनसिय चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

मुष अग्ग भार पुंडीर सथ्थ । दाहिनी फौज ईसर समथ्थ ॥
रघुबंध बीर सुर बाम कोद । उन पीठ सकल सामंत मोद ॥
छं० ॥ ४२ ॥

छुट्टंत बाय बेगी तुषार । दह कोस उभय संध्या सवार ॥
फिरि उहटि डोरि ज्यौं गुडी हथ्थ । घुम्मलहि देस फिरि मिलहि सथ्थ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दिल्लिय हिसान सें तीन कोस । म्लेछान भंजि उम्भरे रोस ॥
थनथान थान सुबिहान कुक्कि । साहाब बिनै सुनियौ उम्भकि ॥
छं० ॥ ४४ ॥

भ्रिगसाष जान बिंछिय चटक्कि । उच्छर्यौ भूमि तें हाथ इक्क ॥
कोकाल ग्रह्यौ जगयो सजीव । प्रज्जर्यौ जानि अग्गीव घीव ॥
छं० ॥ ४५ ॥

हुंकार हाक नासा फुंकार । सुर चलै जानि मारुत प्रजार ॥
कोपयो कहर असपति गुरेस । सहि सकै कौन पलटयौ भेस ॥
छं० ॥ ४६ ॥

भ्रुकुटिय कराल बल घालि मुच्छ । चंपयौ काल जानें कि पुच्छ ॥
आतुर अनंत बोल्यौ सु दाउ । चापरे करिग नीसान घाउ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

(१) ए० चलक्कि ।

राजा रयनसी का शाही सेना को मार भगा कर लाहौर पर अपने थाने बैठना और इस बात का गजनी में समाचार पहुचना ।

दूहा ॥ घरि निसान सुविहान कर । हय गय इभय पलानि ॥
झलहलिय सायर सपत । प्रलय पलट्टिय जानि ॥
छं० ॥ ४८ ॥

रतन सेन चहुआन वर । रोपि अप्पने वीर ॥
प च पथ्य सुरतोन वर । घन मडिय हम्मीर ॥
छं० ॥ ४९ ॥

धर धुसे चहुआन वर । पय भग्गि तन प डि ॥
धर गज्जनी नरिद वर । रतन लियै अव' द डि ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्दरी ॥ पजाव थान सव साहि म डि । उट्टए सकल रयनस प डि ॥
किय च प साहि ढिल्लिय भरान । अच्छै जु सूर तपि चाहुआन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

लाहोर लीह छडिय सुधाइ । ग्रिह म डि अप्पव जनु पिट्ठराइ ॥
चहुआन सवर दिन दिन प्रकार । गोरी नरि द दर गइ पुकार ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ विनय सूर साहाव । साहि पुकार प्रपत्तिय ॥
मग्ग भजि सु विहान । छडि प जाब जुद्ध तिय ॥
हसम हयग्गय थान । देस लुट्टे सुलतानिय ॥
पुल भग्गा नदि सिधु । आन सज्जिय हिंदवानिय ॥
तुरकान तेज तत्तार वर । करिय रनह भग्गत गिरि ॥
आहट्ट वीर दुसमन वलिय । वर लग्गौ गोरी सुगिरि ॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो०—रत्तन लियै अदड ।

३८. समाचार पाकर शाह का कुटवार खां को अपना प्रतिनिधि बनाना और अन्य सरदारों को हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना।

निसा अद्ध उत्तरिय। भेद चल्लौ चहुआनं ॥
कुंची अप्पि नरिंद। बीर कुटवारति षानं ॥
पल्ली षां पीरोज। लोह लीनौ पुनि भग्गौ ॥
अप्पानं वर थान। दई दुस्समन फिरि लग्गौं ॥
ढिल्ली वंछित्त भग्गा सुबर। षान षान गोरी सुबर ॥
साहाब बिनै साहाब सुनि। तोन बंधि बंधन सुभर ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बोलि षान तत्तार। लज्ज साहाब साहि बर ॥
बोलि षान षुरसान। लज्ज षुरसान कंध भर ॥
बोलि मीर मारूफ। जिनें बंधे चहुआनं ॥
बोलि हबसि जादुल्ल। सत्त[1] बर सहस समानं ॥
साहाब सहित साहाब षट। सा लिन्नें संभारि क्रम ॥
रत रतन बीर बंधन सुदिन। सुनिय सथ्थ पथ्थयनि[2] श्रम ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पत्ति प्रौढ़[3] तत्तार। मंति तजि तमकि तोन बंधि ॥
जल जोबन साहाब। दुत्तुं साहाब तेज संधि ॥
करि मिलान सुबिहान। आनि हिंदवान सुसंकिय ॥
बर निवाज करि बीर। तुंग सुबिहान हथ्थ लिय ॥
पच्छिम एराक पुच्छै नृपति। पुब्ब दिसा पालान बर ॥
द्रिगपाल हल्लि हल्लिय दिसा। चलिय बत्त अरि घरन घर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

(१) मो० तत्ता। (२) ए० कृ० को० पथ्थहाति।
(३) ए० ऊर्द। (४) मो० मन्नि।

शाही सेना का हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना।
शाही सेना के कूच का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ धवलीय सेन चलि धवल छूर। दो मिलिय अट्ठ दिस लगि करूर।
सुज्झै न भान विधि भान तेज। बिच्छुरहि चका बर मिलि सुरेज॥
छं० ॥ ५७ ॥

हल्लै ति नाग गति गिरि समान। रवि रथ्थ भ्रम रज लक्कि मान॥
बर स्याम पीत धवलौ हरत्त। सोभत सेन चतुरंग मत्त॥
छं० ॥ ५८ ॥

नच्चै ति वीर नारद चंग। जट जूट ईस सिर नचि गंग॥
नच्चही वीर चक्रवाक नंद। आनंद रहित ग्रह चक्कि टंद॥
छं० ॥ ५९ ॥

उरझै कुरंग पय बिच तुषार। सिर ढरै नाग नचि नमै भार॥
झुकि कीय नद्द सुर बज्जि रंग। सहनाय नद्द मोहै कुरंग॥
छं० ॥ ६० ॥

त्र्यबक्क ढोल बज्जे प्रकार। बज्जंत तबल सुद्दह टंकार॥
बज्जै मृदंग औपम्म चंग। मंडिय सुरत्ति नारद प्रसंग॥
छं० ॥ ६१ ॥

मुह अरिय सद्द मुह चंग मीर। कट तार तार मंजीर हीर॥
बंसुरिय बज्जि सारंग भेरि। बज्जंत सिंघ झुझझंर फेरि॥
छं० ॥ ६२ ॥

बज्जिय निसान गुंडीर सद्द। बज्जे जंजीर जरि गज्ज मद्द॥
बज्जंत घंट घुंघरन सोर। पष्पर निसद्द सद बंधि मोर॥
छं० ॥ ६३ ॥

साहाब विनै साहाब छूर। उतर यौ सेन सह सिंधु पूर॥
साहाब विनै साहाब दीन। फ़रमान हिंदु बंधन सुकीन॥
छं० ॥ ६४ ॥

अल्लाह अग्ग भौ अप्पहीन। करतार तुंब करि एक दीन॥
उत्तर सिंधु हथ विहथ साहि। मुक्कै बिवाह चिन्हाव धाइ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सतनंज सतन जिम करि प्रमान। चर कहै धाइ सुनि चाहुआन॥
छं० ॥ ६६ ॥

शाही सेना के चढ आने का समाचार पाकर रयनसी जी का राजपूत सरदारों से सलाह करना।

कवित्त ॥ कर बलधान ततार। हबस हरवल हज्जाविय॥
बीच बिलै साहाब। फौज बंधी दरियाविय॥
कूंच कूंच हिंदवान। दिसा दष्षिन पंजाबी॥
जोर सोर सुरतान। सुनिय आवंत सिताबी॥
रस उभै सहस गज हय सुरंग। द्वादस लष सहसंग गिनि॥
पाइक अनंत कहि गिननि मति। चलिय फौज हिंदवान मनि॥
छं० ॥ ६७ ॥

रयनसी जी का कहना कि ऐसा मंत्र करना चाहिए जिसमें बात रहे और हँसाई न हो।

तब सुनि रयन सझाव। आव उत्तरि जुरि मग्गं॥
सोइ सुमंत किज्जियै। मंत सुद्धरै जुअग्गं॥
आगे ही छिज्जिया। सूर सामंत सुभारी॥
हम कंधै इल भार। दियो प्रथिराज विचारी॥
तुम करौ मंत भर इक्क होय। ज्यौं रजवट वट सुद्धरै॥
विन मंत घत पुज्जै नहीं। बोल सु बोला उद्धरै॥
छं० ॥ ६८ ॥

सोचि सब्ब भर सुभर। मूल रष्षन मत मंडौ॥
पावस सूअ सहाय। कन्ह जोगिनपुर छंडौ॥
धर पद्धर मुक्कियै। जोध मंडव धर बंकौ॥

सवर सुनौ सुरतान । पुव्व वर जमी इहक्का ॥
सामंत विना सो मत करि । पट्टी पुत्र न पोइये ॥
हिंद्वान सबै हँसिहै इ,अन । जुद्ध मुक्किय वल जोइये ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सब सामंतों का युद्ध करने पर उद्यत होना और दिल्ली के किले में ही युद्ध होने की बात पक्की होना।

दूहा ॥ धवल दीह दीये सुवर । धवल होय पुनोय ॥
धवल लीह लीहै ग्रहै । मरन धवल यों होय ॥
छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ जैत पुत्त पावार । जैत सम जैत सवायौ ॥
सत सामत न भ्रम्म । भ्रम्म छत्री छिति पायौ ॥
वीर व क वसुमती । वीर व काही व की ॥
वीरनि वर पद्धरी । वीर लिय वीरा सकी ॥
पद्धरी भूमि व केति भट । धर व की न्नप मति नही ॥
जोगिनिय थान जोगिनि पुरह । दुल्ल सामि वल वल जिही ॥
छं० ॥ ७१ ॥

दूहा ॥ रुधि छटी प्रथिराज नै । धर अप्पी सुलतान ॥
कछू छीन घटि तू तपै । पूरन करि चहुआन ॥
छं० ॥ ७२ ॥

अनंत वली ग्रहुआन नै । मुक्कि सूर ससि वेस ॥
सधातक सभरि सुरस । वर आन दे रेस ॥
छं० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ कहै मत्त पावार । रतन रप्यौ लजि रतनह ॥
जस सुभ्रम्म प्रथिराज । तुम प्रगटी सुम तानह ॥
रतन दीप प्रगटियै । कित्ति चिहु मग्गह सुझ्झै ॥
मरन मदन मो पुरय । मोहि परमप्पर[1] सुझ्झै ॥

(१) ए० कृ० को०—परमठर ।

सत बरस आय थानस धटी। अब बाल विरधत्त गय ॥
संताप सुष्य माया विसम। सेष न मुक्कहि सोय अय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

धीरं जो रनधीर। बंध पावस उधारिय ॥
स्वामि रनह नंषवै। हथ्थ अप्पं लगि गारिय ॥
मरन तत्तहय सूर। राज रष्यौ राजानिय ॥
करि काया बल भंग। रहै छुट्टै सुलतानिय ॥
सनमंध जीव जीवन मरन। बर बिधान बर लष्य पर ॥
सत सत्त सत्ति कीजै नही। सत कीजै रजपूत बर ॥
छं० ॥ ७५ ॥

चंद्रायना ॥ थंभ मंडि बर कित्ति सु सोमेसं बरं।
सूर अथ्थि दिल्ली जस जीतियै डंबरं।
इसौ संभरी नाथ राज प्रथिराजरं।
मंडि रत्तन धज्ज यौ जुग ईवल अंबरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली वै ढिल्ली करी। बर ढिल्ली वै तथ्थ ॥
रहै जैत षंभह जितै। सिंध प्रान मति जथ्थ ॥
छं० ॥ ७७ ॥

रज रष्यन रहि राजसी। ढिल्लिय ढिल्ली नथ्थ ॥
आवासर ऊपर चढें। रतन सेन सब सथ्थ ॥
छं० ॥ ७८ ॥

ईसर दास महेस कहि। हम मति इत्ती सार ॥
ढिल्ली गढ़ गह्यौ ग्रहै। तौ हम जुडैं सार ॥
छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ तब षुमान पुंडीर। बीर रनधीर पुंडीरं ॥
चालुक्का भर भान। बोलि जै सिंघ सुधीरं ॥
कारन सुभर परताप। बीर चंदं बन बीरं ॥
सारंग दे गष्परी। टांक चाटा उत नीरं ॥
सुनि मंत मंन एकंत करि। भलौ भलौ भर सब्ब कहि ॥
रयनसी राज ढिल्ली सुबर। गढ़ संग्रही सो चित्त लहि ॥
छं० ॥ ८० ॥

शाही सेना के दूत का आना और राजा रयनसी का युद्ध का प्रस्ताव स्वीकार करना।

ढिल्लीय दिसि सुलतान। साजि चल्लो चतुरंगिय ॥
वज्जि वीर नीसान। षान षुरसान अभंगिय ॥
रेउ बर उत्तरत्त। धाइ घर आय सुगोरिय ॥
कहा गयौ चहुआन। वीर पावस रस जोरिय ॥
ओलम पयान पायाल कंपि। सूर करि पन्नग डरिय ॥
दुसमन सुदेव गढ सज्जयौ। बंधि चाल समुह भरिय ॥
छं० ॥ ८१ ॥

शाही सेना का किले को घेर लेना।

गढ उप्पर सुलतान। चपि चतुरंग चलाए ॥
हय गय घट ठनकि। सूर पष्पर गहराए ॥
नेजा बर बैरष्य। उडिय चुधरि दिसि धोरिय ॥
मुर मारुत मुरि चले। चोर उज्जल ढरि चोरिय ॥
सारस मिलत सारस बिछुरि। चकी चक्क चित चंद बर ॥
रुक्कयौ रतन बर भान अरि। राह रूप गोरीत भर ॥
छं० ॥ ८२ ॥

सुरिल्ल ॥ सक्कि सुवर पावा सर वीर। परि पारस सुलितान सुमीर ॥
गढ गह्यौ देषै पांवार। राजसिंघ चढ्ढे तिहि बार ॥
छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ जोर बरस वर गोरी प्रमान। 'ग्रह ग्रहन राह चहुआन भान[1]
रज कज्ज धाइ रज्जौर षान[2]। असि मन्नि तिष्य धारह मिलान[3]
छं० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ बिनै साहि साहाब। उपटि दरिया हिल्लोरै ॥
गढ घेर्‌यौ चिहु कोर। प्रलै जनु मेर सुबोरै ॥
गोर नार छूटत। मरत मेवाड़न भारी ॥

(१) मो०—ग्रह ग्रहन भान रह चाहुआन। (२) ए० कृ० को०—पति।
(३) ए० कृ० को०—मिलत।

हून हिंदू पति राज। घात लग्गी सुकरारी॥
आवट्टि सेन अध अद्ध अध। बज्र कोट भेदै नहीं॥
सुविहान तमक्कि तत्तार पर। इम हलान बत्ता कही॥
छं० ॥ ८५॥

पद्धरी ॥ रत पीत धवल बर झारि प्रमान। दिसि उभै च्यारि संहेति पान
सुभ्भरन भरन आवृत्त जोट। मनों पावक्ख काल बर विंटि कोट
छं० ॥ ८६॥

कवित्त ॥ सरद काल की चंद। परी पारस बर सुद्दल॥
तिमर भान बिंटयौ। छूट बिंटे लकि बद्दल॥
कै इंद्र पुर बिंटयौ। बलीसोहं बलि रावं॥
कै जलपति विंटयौ। मद्धि बड़वानल पावं॥
कै अ,माल धारि संचरत बर। इह उप्पम राजंत गढ़॥
कवि कहै चंद बरदाइ बर। कै कोट बिंट सुनार मढ़॥
छं० ॥ ८७॥

सात महीने दो दिन पर्य्यंत किला न टूटने पर ततार ख़ा का सुरंग लगा कर किले की दीवार उड़ा देना।

दूहा ॥ सपत मास दिन उभय बर। ढोहन मंड्यौ बीर।
बजे असप्पति साम दह। गज्जि सुगोरी बीर॥
छं० ॥ ८८॥

कवित्त ॥ तब तत्तारहि कसति। सार सोधड़ सुष मारिय॥
करि सुरंग संचार। मद्धि दर मंझ सुधारिय॥
करिय सज्ज सब सेन। आनि आतस संचारिय॥
लगि कसान पाषान। उड़िय असमान अँगारिय॥
आघात सोर सारां सुबजि। लेह लेह, सुष मेछ कहि॥
हिंदवान प्रान अब तुच्छ हैं। फते नाम सुविहान लहि॥
छं० ॥ ८९॥

सुरंग से किले की पश्चिम दीवार का टूटना।

चढ़ि मध्यान सुलतान। साहि फुरमान अप्पि भर॥

(४) ए० कृ० को० धरा।

बाहि बीर परतग । गज्जि आयास लग्गि वर ॥
नर भर गज आहुटिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
दिसि पच्छिम सुलतान । बान सु धा रवि छुट्टिय ॥
पर कोट भग्गि पाषान उड़ि । नर समेट वर उडि चलिय ॥
जानै कि चग रस वाय बंधि । पह सुमग्ग नर चिक्क[1] लिय ॥
छं० ॥ ९० ॥

षा ततार तिहि बार । मंडि फुरमान पान लिय ॥
फिरि चिहु मग्ग सु दिष्षि । चिंति दिसि बान थान विय ॥
विना[2] भीति गढ़ मग्ग । नारि जंबूर लगाइय ॥
अप्प सथ्थ वर अड । कोट पह मग्ग उडाइय ॥
तिहि थान कोट पुंडीर भुज । धीरज ही धीरज्ज वर ॥
चहुं सु सथ्थ सुरतान भर । लोह सार मच्चिय विधर ॥
छं० ॥ ९१ ॥

किले की दीवार टूट जाने पर दोनों तरफ से तलवार का युद्ध होना ।

लग्गा वर सावाति । आनि सूरन मुष रोह्यौ ॥
थक्कि गोर जंबूर । पूर पति साह छंछोह्यौ ॥
जग्गि सोर सावाति । पान दोरे पग साहे ॥
उत हिन्दू आलोल । सामि छल ध्रम्म समाहे ॥
पुंडीर भान परतग धरि । अरि ततार अड्डो असम[3] ॥
संजुरिय झोक झंझार बजिय । वहे धार धारह रसम[4] ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूहा ॥ मग अमग्ग करि रु धयौ । मेछ न लभ्भत पार ॥
झर लग्गो पावस झरत । षग्ग न षंडत धार ॥
छं० ॥ ९३ ॥

(१) ए०—नर चित्त कल्यि ।	(२) ए० कृ० को०—चित्त ।
(३) ए०—असस ।	(४) ए० को०—समर ।

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ धार धारं मिली, सोर छक्कै मिली ॥
ओन धारा चली, बोलि षग्गं षुली ॥
छं० ॥ ९४ ॥

आयुधे अत्तली, बोल बोलै मुली ॥
बंवरी उच्छली, मुंछ मोंहा मिली ॥
छं० ॥ ९५ ॥

काल कंकं कली, ० ० ० ॥
भट्ट चट्टं परी, बथ्थ बथ्थे अरी ॥
छं० ॥ ९६ ॥

धिंग धक्की धरी, कढ्ढियं दुज्जरी ॥
जीन सोहं करी, हड्ड हड्डं जरी ॥
छं० ॥ ९७ ॥

बार पारं करी, लुथ्थि लुथ्थं परी ॥
भान पुंडीरयं, षान षंडीरयं ॥
छं० ॥ ९८ ॥

षान तत्तारयं, पिंड पच्छारयं ।
दूर हुल्लारयं, अच्छरी पारयं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

चौसठी चारयं, पष्परं सारयं ।
ईस सीसं लियं, कंठ मालं कियं ।
छं० ॥ १०० ॥

कवित्त ॥ जुरत षान तत्तार । भान पुंडीर जुरंतह ॥
अस्त वस्त रुधि मंस । सानि एकंग करंतह ॥
पंच सत्त परि मीर । हिंदु सयतीन परंतह ॥
अवर हयग्गय जुथ्थ । षंड मुष परे अनंतह ॥
उप्पर पुंडीर रनधीर करि । संगि समाहि आयौ समुह ॥
माकृष्ण सुष्ष मरदान मिलि । मनुं अनष्ष सोकीभ[1] मुह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए० कृ० को० सौकीन मुंह ।

वीर रनधीर का दरवाजा रोकना और शाही सेना के कई सरदारों को मार कर आप मरना।

मोतीदाम ॥ इते रनधीर समाहिय सेल। उते मारूफ किरौ पग मेल ॥
उभट्टिय ओडन पग्ग सुभारि। निकस्सिय सिंगि फुटे धरपारि ॥
छं० ॥ १०२ ॥

धुकतय पान समाहिय तेक। हयौ हथ दष्षिन अगुरि एक ॥
पर्यौ धर मारुफ पान विहल्ल। उभौ रनधीर जुधं अरि सल्ल ॥
छं० ॥ १०३ ॥

वकारिय ववरि उट्ठिय वीर। जुकालन मीर समाहिय तीर ॥
कर ष्षि कमान छुटौ सर वेग। लग्यौ फुटि टट्टर लीनिय तेग ॥
छं० ॥ १०४ ॥

दुहथ्थल झारिय कट्टकवारि। सुकालन मीर ढर्यौ धर गार ॥
उते रनधीर पर्यौ धर वेत। इते वर सामँत वधिय नेत ॥
छं० ॥ १०५ ॥

भिरै क्षित अप्प उभै दिषि जान। सु ज्वारिय षेत लुनत किसान॥
पचारिय सामँत वोलिय पान। अर्यौ निसुरत्ति उभै घटिजान ॥
छं० ॥ १०६ ॥

कर्ष्षिय पजर पजर भीडि। लगे वय अथ्थ पछारिय मीडि ॥
हयौ निसुरत्ति सुरत्तिन काय। जु सामँत पजर हस उडाय ॥
छं० ॥ १०७ ॥

रहे दोय कठनि कठ लगाय। मनो हित यटहि प्रेम मनाय ॥
किधौ कठ साल भरे पाल लाइ। जुरै सथ सामँत सिह थवाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

पर यौ निसुरत्ति सत सुरघायि।   *   *   * ॥
सिरप्पर नाग चढे जु हुजाव। कहै ठग लेहु सिताव सिताव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

कारन्न पवार पटोधर जैत। उभै पग्ग झारि महापय षेत ॥
ठिल्यौ गजराज हुजाब पचारि। सरोस न झारि कारन्न पचारि ॥

छं० ॥ ११० ॥

उभै दँत षंड भसुंड सुमारि। भरी कंध पब्बय श्रृंग सुढारि ॥
ढर्यौ गजराज करी सु चिकार ॥ * * * *

छं० ॥ १११ ॥

परंत हुजाब अजाब ओसान। गुरज्ज समाहि उथौ असमान ॥
करन्न सिर ध्धर झारिय झाक। फिरच्च फिरच्च कर्यौ तन पाक ॥

छं० ॥ ११२ ॥

सटोप सकुच्चि अकुच्चिय माहि। अह्यौ धुकि षान हुजाब समाहि ॥
षवास पवार सुकेसर नाम। हयौ षग मीर पर्यौ धर ताम ॥

छं० ॥ ११३ ॥

हुजाब परंत हुओ हयकार। सुनी सुरतान हुजाब पुकार ॥
सबै दल एक हजार हुजाब। कढ्यौ दोउ कोद सुछित्त अजाब ॥

छं० ॥ ११४ ॥

करन्न परंत उभै सत सूर। अद्दै सिर ईस भिदे तन सूर ॥
परंत करन्न प्रताप कैमास। तनै सुत संगि समाहिय तास ॥

छं० ॥ ११५ ॥

रुस्यौ दल रुस्तम काटिय तीर। हयो परताप निकस्सिय सीर ॥
लगे सरु धक्कि चलाइय संगि। समेत तुरंग ढह्यौ लगि अंग ॥

छं० ॥ ११६ ॥

दुहूं भर जुट्टत षुट्टन नाहि। बहै धर षंड जु श्रोन प्रवाहि ॥
परे पनमीर मलिक्क अचंक। परें अनु सोर लियै कपि नंक ॥

छं० ॥ ११७ ॥

हजार उभै सत तीन अमंन। परे कटि हिंदु सतं सतमंन ॥

छं० ॥ ११८ ॥

प्रथम दिन के रनधीर के युद्ध में मृत योद्धाओं के नाम

दूहा ॥ उभय सहस सत तीन सौं। रुस्तम वर जुधवान ॥
सें सत्तर हिंदू परिग। हय गय रुद्धि विहान ॥

छं० ११९ ॥

शाही सेना का किले में पैठने के लिये अग्रसर होना और वीर चन्द का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ परि कैमास प्रताप। ठान गोरी ढढोरिय ॥
घुमत मेछ घन धाय। वाल जनु भभा भौरिय॥
लेहु लेहु मुष मेछ। मार मुष अषषि सारे ॥
धुअ सुमेर सामंत। डिगे[1] नहि पाय सुधारे ॥
कोपयौ कहर अतपति जहर। हुकम हक्कि मिल कह कर्यौ ॥
[2]बजग ओट धरकोट सम। आय वीर चदह अर्यौ ॥
छं० ॥ १२० ॥

दूसरे दिन वीरचद के साथ कई राजपूत सरदारों का काम आना और यवन सेना का बल बढना।

मोतीदाम ॥ अयौ अड कोटह बीर सुचद। मनो त्रिकुटाचल इंद सुनद ॥
फारस्सिय ओडन हथ्य करार। वहै जनु कट्टत क्रूर कवार ॥
छं० ॥ १२१ ॥
मिलिकय मीर हुए दुजनेज। समेत फारस्सि हन्यौ करि तेज ॥
पर्यौ धर मीर मलक्क सुमार। मनो चक भांड-उतारि कुलार ॥
छं० ॥ १२२ ॥
अनेक पराक्रम चद सुवीर। अधाय सुधाय कर्यौ भवतीर ॥
सुमेर जादुल हुओ दिठ मेल। उनें उन उन्नहि भेदिय सेल ॥
छं० ॥ १२३ ॥
मनो नट[3] भगुर मंडिय षेल। उरा पर दीसहि अंकुर वेलि ॥
धुनें धुनि दोउ परे धर छोनि। अधाय सुधाय उठयौ हँस रेनि ॥
छं० ॥ १२४ ॥
हठी हडराउ सुचेत परंत। उभै सुर सत्त मलेछ हरंत ॥
इक सत हिंदुअ सद्धिय सार। मिटे भ्रम लभ्भिय कौपि दुवार ॥
छं० ॥ १२५ ॥

(१) मो०—हिंडे। (२) ए० कृ० को० बजग आठ घर कोट सम। (३) ए०—नग।

जै सिंघ पचारि दुआरि अरंत । मच्यौ जुध भारथ साषि भरंत ॥
षलं षल गोरिय जोरिय सार । इसौ जुध जानि महोदधिवार ॥
छं० ॥ १२६ ॥

झरै षग धार चिनंग किसान । मनो निसि कूटहि लोह तपान ॥
घरी अध जुद्ध मच्यौ अनिवार । परे होउ मौछ सुरासुर धार ॥
छं० ॥ १२७ ॥

ग्रहै असि दास महेस अरिंम । करी कुटवार षनेस षरिंम ॥
बधे दिसि संकर सिंघ सुछार । मुषें मँडि मीरन षान छंछार ॥
छं० ॥ १२८ ॥

होज दिसि जुद्ध अनुद्ध अपार । हुऔ सिलि दौउ न एकं कार ॥
हुनै सुष उच्चहि मार सुमार । * * * ॥
छं० ॥ १२९ ॥

बकै सुबिहान कि आन प्रमान । महाभर आन बकै चहुआन ॥
महाजुध जुद्धहि मीछ करूर । कटे धर षंड विहंड गरूर ॥
छं० ॥ १३० ॥

बरै बलबीर पचार किवार । ग्रहै कर आवध लै सथवार ॥
पचारिय मेछ धर्‌यौ धर पार । अहुट्टिय पेंड पचास सुवार ॥
छं० ॥ १३१ ॥

भगे भगि मेछ समाहिय तीर । फिर्‌यौ षाँ दफ्फ सुबुट्टन मीर ॥
मची मुहलेल पर्‌यौ बलबीर । तिलं तिल अच्छरि बंटि सरीर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

जगं मलिराव धँधेरिय आइ । मिल्यौ ततरीस दुसंमन घाइ ॥
भर्‌यौ षंड दफ्फ सुदाब्बिन पाइ । हयौ तिन तेग जगंमनि राइ ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पर्‌यौ बलबीर जगंमन देषि । भर्‌यौ भर चालुक मान विसेष ॥
साऊफ सकत्तिय झलि सरोस । भिरै जनुराह रु भान सकोस ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सहाव बिनै धर षुट्टिय षानि । इतें दल भज्जिय चोलुक भान ॥
पर्‌यौ षुरसान लघू दरसान । सऊफ पर्‌यौ धर पैजि प्रमान ॥
छं० ॥ १३५ ॥

परयौ भर चालुक मारथ पेषि। नच्यौ रनधीर अहै कर तेग ॥
जुरे परिहार पुरेसिय षान। परे रन पच हजार पठान ॥
छं० ॥ १३६ ॥

सवे दल हिंदुअ सत्त सतान। कमान पठान करष्षिय बान ॥
लग्यौ रनधीर फच्यौ परवान। मनो जल जोरिय मछ परान ॥
छं० ॥ १३७ ॥

षिझे समसेर पुरेसिय रूक। हन्यौ मथ उड़ करो दोइ टूक ॥
हसौ जुध ढिल्लिय कोट ढरत। मच्यौ भर मेछ सुहिंदु जुरत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

पलच्चर भूचर षेचर देव। परम मद्द न न दिट्टौ केव ॥
अघाइय सद्द करै जैकार। चवट्टिय पप्पर पूरि प्रचार ॥
छं० ॥ १३९ ॥

परे गज जुथ कटे हय थाट। चले वहि श्रोन नदीरय वाट ॥
सहावनि जे भर पोष समूर। परे कटि मंडल लैं अहि सूर१ ॥
छं० ॥ १४० ॥

गयौ भर भार उतारिय सूर। लयौ चहुआन सु किति पहूर ॥
सहाव न मंडिय दिल्लिय आस। न छोरिय रेन परौ पंड पास ॥
छं० ॥ १४१ ॥

परिग्गह सूर परे पथरार। परौ मनु मेर अडिग्ग अपार ॥
दुहू दिसि तक्कहि मेछ भंभार। करौ मझ सिध मनो सु गुंजार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ उभय दीह रन लग्गि। सेन आलुथ्थि लुथ्थि पर ॥
हिंदु मेछ रन तोल। वीर वज्जे२ अभंग धर ॥
वर आलम नरिंद। दद वज्जे विरझान ॥
कोट ओट छुट्टयौ। सार सेसुष चढि षान ॥
धन धार धार सिव वास वर। असि पहार धारह चढे ॥
संग्राम रवनि भारथ्थ भिरि। कुल संग्राम सगुर वढे ॥
छं० ॥ १४३ ॥

(१) ए० कृ० को० हूर। (२) ए०कृ०को० मज्जे।

किला टूटा हुआ जानकर राजा रयनसी जी का राजगुरु को बुलाकर मंत्र पूछना।

दूहा ॥ गढ़ टुट्टत जान्यौ सुभर। कहूँ रतन न जाइ ॥
राज गुरू बर बोलि कै। तत्त सुमत्त उपाइ ॥
छं० ॥ १४४ ॥

प्रोहित का मंत्र देना कि कट मरना सलाह है।

कवित्त ॥ सुनौ रतन चहुआन। पूर बैरी नदिय तिय ॥
राज रष्षि बर तत्त। सुरै सुर सुम्भर कित्तिय ॥
गगुखि[1] सूर सामंत। गिल्यौ पहु गोरी राहं ॥
उगखि छुट्टि बर भान। चिंति सुविहान सु साहं ॥
निब्बार चीर फल छोइ फुनि। फूल सुहंगे बीय बर ॥
ज्यौं होइ सोइ जो उब्बरै। जोरब्बर धावै न धर ॥
छं० ॥ १४५ ॥

मति घट्टिय रजपूत। सार संसार मरन बर ॥
मुक्ति पदारथ मुक्कि। दीनहु ज्यै न घर घघर ॥
सार हुहै संसार। पत्त मन सथ्थ सजाइय ॥
पति धट्टत मन रहै। जंम षोयौ जिहि जाइय ॥
बर चौंर चीर अच्छार ढरै। बरह बरह जरि झग्गरै[2] ॥
तिसना ह तेज माया पमुक्कि। मुगति काल जित उब्बरै[3] ॥
छं० ॥ १४६ ॥

राजा रयनसिंह का जौहर करना।

जोहर चिंति रयन्न। गढ्ढ संध्यौ रतन्न हुअ ॥
सकल सबै रजपूत। करै अस्तुति तहेव भुअ ॥
कित्ति जिति तन मंडि। [4]काल घट-घटै न घट्टै ॥
असिवर अरि झाकंत। जम्म बंधन बर छुट्टै ॥
सब तंत गार इक संट्ठिवर। बिष प्रवरत प्रवरत्त हुअ ॥

(१) ए०-उगालि। (२) मो०-जग्गरै।
(३) मो० कालति उब्बरै। (४) ए० कृ० को० काल टुटै न घट्टै।

दिन दसमि जीव दिन अद्ध निस। जोइर रषि वर सामि तुअ ॥
छं० ॥ १४७ ॥

षाल बधि अरि बधि। पास बधे सुष बधे ॥
दुह काया कारमौ। जानि भ्रम मारग सधे ॥
जम्म जार तुट्टयौ। भिदे रवि मंडल सथ्थ ॥
अच्छरि वर संग्रहे। मुकति लट्टी निधि हथ्थ ॥
रन धवल धवल कड्डंति सिर। असुर सूर समुह भिरे ॥
उबरौ बार वड, गुज्जरह। ऊक अग्गि लग्गा फिरे ॥
छं० ॥ १४८ ॥

दोपहर ढरते रयनसी का किले से निकलना और मुसलमानों का उसे पकडने के लिये धावा करना।

दूहा ॥ विपहर नमत रवि नमत तम। दीत अदीत वसान ॥
सह सु रट्ट परिवार उत। पच पच पन षान ॥
छं० ॥ १४९ ॥

षड मुषे नग नग करौ। करि पल षट्ट प्रमान ॥
अब सहाब झुकि यों कह्यौ। विग्गह ग्रहौ चहुआन ॥
छं० ॥ १५० ॥

कवित्त ॥ तब सहाव सुनि पच। नाम एकं जति न्यारिय ॥
हबसी औरसि नौर। तीय गजनी सभारिय ॥
मकइ लोदी एह। आप समवरि अधिकारिय ॥
षुरसाना षानेस। जोर धरि जवन हँकारिय ॥
तब पैज करिय अब अग्ग हौं[1]। तुम लज्जा पच्छा फिरे ॥
हहकारि हाक झझ्झौ सजुर। मद्धि हिंदू जिंदू भिरे ॥
छं० ॥ १५१ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ भिरे हिंदु मेछान रोस पचारी। रघूवीर रासिंघ राजेस भारी॥

(१) मो० अब ग्रहौं।

बलीभद्र कूरंभ रारै न आगै। करै हाक गाकं मुरै मेछ भागै ॥
छं० ॥ १५२ ॥

दिसा दष्षिनं राव सारंग नेतं। गुरं गष्परं पष्परं बंधि षेत ॥
बड़ं गुज्जरं भोज रा राम सुत्तं। दिसा वाम मंध्यौ मनौ इंद्र पुत्तं
छं० ॥ १५३ ॥

दुजं राम सुत्तं दिवं राज तथ्थं। पुरं जुध द्रौनं भए जानि पथ्थं।
भरं ईसरं दास का कन्ह आयं। चिहु पारसं कोट चहुआन रायं।
छं० ॥ १५४ ॥

टिक्यौ टाक चाटा सुपं नाट पायं। नटै नाट कोदा चिहु षग्ग धायं
षंपे चोहुआनं सहाबं पचानं। अरे ओडनं नंषि कट्ठे क्रिपानं
छं० ॥ १५५ ॥

रघूबीर कूरंभ नै बंध तथ्थं। बजे आवधं आवधं लग्गि बथ्थं ॥
मची हाय हायं लगै घाय धायं। नही अप्प पारं सुधं जुद्ध ता
छं० ॥ १५६ ॥

गरं लग्गि साहाब कुरंभ एकं। हन्यौ हक्कसी जाति जुद्धं सतेकं
दुती बंध रनसिंघ सिंधं पचारै। तिनें एक साहाब मार्यौ पछा
छं० ॥ १५७ ॥

मुरं राजसी बंध साहाब गाजी। तिनं तेग तेगं अनो अन्य बाजी
लग्गे बीर रत्ता कठं तार तारं। कटे कंध कामंध छोगी पयारं[1] ॥
छं० ॥ १५८ ॥

बड़ गूजरं भोज भक्को सहाबं। दुनै सामि लाजं दुनै मुष्ष आवं
दुनै सज्जरी षंजरी पंजरीयं। दुनै दुज्जरी मह ज्यौं दद्दि कीयं
छं० ॥ १५९ ॥

दुनै दंत दंतं ग्रहे कोट ईसं। उड्यौ हंस हंसं दुनै बाल बेसं ॥
दुजं राज साहाब लोदीस नूरं। दिसा वाम आयौ मनोराह सूरं
छं० ॥ १६० ॥

दिसा वामयं षा गूरज प्रकारं। कर्यौ पुट्टि घाया पर्यौ दुज्ज धा
गजे टाक नाटं चिहूं कोध राजं। तबै छंडियं षंड सुलतान पा
छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए० कृ० को०-पछारं।

मची मार मार मुर्यौ सत्त पाय। इसौ चपिह सेन चहुआन राय॥
जुटे भारथ ईसर दास सूर। उते मेछ झंडा गडे वट्टि नूर॥
छं०॥ १६२॥

थिने साहि साहाव खान काबुर। भिरे मेछ महमद गात गरूर
उते ईसर दास का कन्ह पुत्त। गयौ गज्जमेस हन्यौ गज्ज नेत।
छं०॥ १६३॥

रयैं रेन टेक मुरे पक नाहीं। इसौ जुद्ध आनुद्ध चहुआन साही
बढे आन पुरसान पाँ रोस धायौ। तिन ईसर दास रा पूर धायौ
छं०॥ १६४॥

टिक्यौ टाक पुरसान सों मेछ धाये। सबैं सस्त्र तुट्टे डिगे नाहि पा
घरी एकलो टांक सिर सार तुट्यौ। परौ जानि सम्भ्यार धरियार जुट्यौ
छं०॥ १६५॥

उतै डेढ हज्जार मेछान पारे। परे सात से षेत हिंदू पचारे॥
छं०॥ १६६॥

कन्ह के पुत्र ईसरदास एवं अन्य वीरों का पराक्रम से काम आना।

दूहा॥ ईसर दास जु कन्ह कौ। लगि पुज्यौ पतिसाह॥
मनौं गयंद के सघन सरि। करि दहवट्ट दुराह॥
छं०॥ १६७॥

चढत मेछ तिन दिनह वर। सम्भ सुमिटि भारथ्थ॥
पथ्थ पोप कूरभ रहि। बध तीन पारथ्थ॥
छं०॥ १६८॥

वद्दे आनि पुरसान पति। पाँ पुरसान पुरेस॥
दिसि दष्यिन धवलिय सयन। चपि सभरी नरेस॥
छं०॥ १६९॥

दल भग्गो चहुआन भिरि। रन तज्जी भगि सार॥
रयन सेन नन भज्जई। जानि सुवज्जन हार॥
छं०॥ १७०॥

उभै परिग्गह रयन सौं। लज्ज परिग्गह कोरि॥
अस भावी तस ब्रिगायौ। सत्तिय सत्त न छोरि॥
छं० ॥ १७१ ॥

चौपाई ॥ अरानीय तेलनि चढि वीरं। गय लज्जी सिसु आव न मीरं।
लग्गि न कली फूल बर बीरं। लज्जी गहन रयन भुज मीरं॥
छं० ॥ १७२॥

कवित्त ॥ भय नाटक लज टंक। टंक भय लज्ज सुमेरं॥
चाव दिसि रवि साभि। घाव चहूँ दह बेरं॥
ढंढोरिय बर ढाल। माल हर बंधि कमल बर॥
इंद्र लोक जम लोक। लोक हरि छंडि ब्रह्मधुर॥
रजपूत सोइ रजपूत वट। बट्ट चुक्कि[1] पावै न बर॥
सो करो कित्ति ज्यों उब्बरौ। कहियै जिहि रवि चक्क तर॥
छं० ॥ १७३ ॥

शाह के आज्ञानुसार पीरोज खां का रयनसी के सामहने आकर प्रचारना और रयनसी का उसे मार गिराना।

परे षान षुरसान। पर्‌यौ बड गुज्जर भोजं॥
चंपे बर चहुआन। आन रंग रोस सरोजं॥
देषे बर चहुआन। षान षुरसान सु उप्पर॥
मुष पब्बी पीरोज। धरे सुबिहान भुज्ज पर॥
रे हिंदु दंद असपत्ति अग। को दरिया भुज बर तिरै॥
तसलीम बिनै साहाब करि। सच्च छोरि जिय उब्बरै॥
छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ रे पब्बी पीरोज सुनि। हू ढिल्ली पिय पुत्त॥
जिन गज्जन वै बंधयौ। क्यौं बोलै मति गत्त॥
छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ पब्बिय षाँ पीरोज। रवन समहौ असु नंषिय॥
दो मरदानी दिष्ष। उभै अंकुरि आरुष्षिय॥

(१) ए० कृ० को-मुक्कि।

सधि बान कमान । आन गुन मुच न धारिय ॥
८६१ लगि चहुआन । वीर मन्नाह उच्चारिय ॥
प्रथिराज राज सम बान गहि । फटि ८७१ सधि मीर सिर ॥
लग पप मीर वाहिर रही । मनु राह सूर अधपत्ति सिर ॥
छं० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ परत पान पीराज कौ । दौरिय पान जिहाज ॥
सैद सेप सीनौर मिलि । रुध्यौ रयनसी राज ॥
छं० ॥ १७७ ॥

यवन सेना का रयनसी को घेरना और बड़े पराक्रम से हथियार करते हुए रयनसी जी का मारा जाना ।

मोतीदाम॥रुक्यौ मिलि मेछ रयन्नह राज । करै मनुसिंघ करी पर गाज
उभौ सम रंगन अप्पन एक । लियै दुरजोधन को मनु टेक ॥
छं० ॥ १७८ ॥

जराव को मौर बँध्यौ उतमग । उगै ग्रहनो कि समेर कौ अग ॥
ढलक्कत ढाम बनी गजगाह । घटा घन मानहु गग प्रवाह ॥
छं० ॥ १७९ ॥

रच्यौ पुल वागो रँग्यौ कसमीर । जन उठ्यौ मुत्तिय माल सभीर ॥
पलक्कत सोवन सकार पग्ग । झलक्कत बीच अमोलिक नग्ग ॥
छं० ॥ १८० ॥

दिपै इ बनै तिहि वेर को भूप । कहत बनत न रूप अनूप ॥
घड़ा अवरी वर भार अनीन । दल प्पर गौरिय वाग सुलीन ॥
छं० ॥ १८१ ॥

जपे मथुरेसर नष्पि वृहास । तरक्किय जानि कि बीर अयास ॥
परी अनचित पलट्टल माथ । टगट्टग लग्गिय उट्ठि न हाथ ॥
छं० ॥ १८२ ॥

गये सब कायर भज्जि समूर । मनों उडि पष पवन्न बघूर ॥
रह्यो रुपि एकल पान जिहाज । जिने भुज मडिय गज्जन लाज
छं० ॥ १८३ ॥

तिनें नषि सायक षंचि कमान। गयौ चुकि बाम भुजा चहुआन
बियो सर षंचि कै नंषत जाम। पहुच्चिय आय कै अंतक ताम
छं० ॥ १८४ ॥

भरे नग रोस प्रहारिय सेल। तुरंग समेत कियौ धर भेल ॥
बरच्छिय अच्छिय लग्गिय अंग। रह्यौ थगि हेवर षान दुजंघ ॥
छं० ॥ १८५ ॥

पर्यौ इ रह्यौ धर पंजर जानि। गयौ मनु हंस उडे असमान
चह चह चंबक बज्जत तूर। चल्यौ तिन राज सुरातन पूर ॥
छं० ॥ १८६ ॥

उहौ सिर बंबरि मुच्छ सुबंक। रँगे अग मद्द कि बीय मयंक ॥
अरुन्न वरुन्न भए द्रिग अंत। मनों बड़वागिनि मझ्झि धषंत ॥
छं० ॥ १८७ ॥

प्रगट्टिय आनन द्वादस सूर। भृगुट्टिय चढ्ढि कपाल करूर ॥
कह्यौ परिवार परिग्गह देषि। बिचारिय जीवन अप्प अलेष ॥
छं० ॥ १८८ ॥

करौं कोइ अज्ज बडौ अषियात। हनों असपत्ति धरें मन बात ॥
चल्यौ हय हक्कि दिसा गजनेस। रह्यौ रथ षंचि गयन्न दिनेस ॥
छं० ॥ १८९ ॥

कामे सँग अच्छरि झूरन झूल। लिये कर कंमल चौंसर फूल ॥
हयग्गय मेछ फवज्जिय ठेलि। मनों बिन गेहरि हीरिय षेलि ॥
छं० ॥ १९० ॥

उडे रज डंमर अंबर छाय। मनो घन बद्दर पावस आय ॥
चल्यौ गज ऊपर देषि हमीर। छरे किलकार हँकारिय बीर ॥
छं० ॥ १९१ ॥

धुरी नष बाजि धरन्नि धसक्कि। पर्यौ सिर भार षनंग कसक्कि ॥
उभै नरनाह महा बलवंत। उभै मन मंडिय भारथ षंति ॥
छं० ॥ १९२ ॥

उभै सिरदार रमाइन केक। उभै मद मोकल आनि अरेकि ॥

उभै इक ताक गुमान अमान । उभै कढि पापन छेद रिसान ।
छं० ॥ १९३ ॥

उभैइ पितान को वैर सँभारि । अनो अनि तोलि उभै तरवारि
कर्‌यौ नग को नग घाव पहिल्ल । गयो कटि दंत भसुंड सुढल्ल ।
छं० ॥ १९४ ॥

सहाव बिनै करि फेरि के घाइ । गयौ कटि कै सिर सभरि राय
परोंइ कै मुंजि कि डोरि दिलेस । कर्‌यौ रुडमाल कौ मेरु महेस
छं० ॥ १९५ ॥

उठी रत छिछकमध उतंग । मनो बल छुट्टिय जावक रंग ॥
बिना सिरपे गपरे महाराज । उनगिय तेग अजब्ब बिराज ॥
छं० ॥ १९६ ॥

जहां तहं वाहत मद्द दुरंद । जहां तह मारन मोर मरंद ॥
जहां तह घायल घाइ घुमंत । जहां तह कायर भाजि लुकंत
छं० ॥ १९७॥

जहं तह लोहिन के मचि कीच । जहां तह गिद्ध कलै तिन बीच
जहां तहां लोथि उलट्ठ पुलट्ठ । जहां तह कौन सुघट्ट कुघट्ट ॥
छं० ॥ १९८ ॥

जहां तह कालिज फेफर बूक । जहां तह आमिष अंत जँबूक
जहां तह मुंड रुंडव्व तुंड । जहां तह बांह बगत्तर षंड ॥
छं० ॥ १९९ ॥

जहां तह चोसठि जोगिनि झुंड । जहां तह नारद मंडव तंड
जहां तह अच्छरि छूर हमल्ल । जहां तह विद्‌वरे भल भल्ल ॥
छं० ॥ २०० ॥

जहां तह लेत करीन की गाल । जहां तह संकर गुंथत माल
जहां तह वीर बैताल डकार । जहां तह सिंधुअ राग उचार ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जहां तहं सार की बूर उडाय । जहां तहं टारत ढी सुदिपाइ ॥
इसौ हय वाह वहंत अछोह । हियै चढि कौन करै तह लोह
छं० ॥ २०२ ॥

तबै अप कुप्पि कही सुरतान । करौं किन हल्ल सबें तुरकान' ॥
करिकरि मेछ कलाप करोर । परी करि अज्ज करीन किकोर ॥
छं० ॥ २०३ ॥

तुबक्क अँवगति तीरनि मारि । रयन्न कमन्न धरा पर ढारि ॥
धरा पर दीसत छेक अनेकि । मनो घट रूप घरूख बनेकि ॥
छं० २०४ ॥

कटे नग राज तुरंग समेत । घने कटि धाट मेछायन षेत ॥
करे रवि मंडल अंदर राह । विराजिय जाय कौं वैकुंठ माह ॥
छं० ॥२०५॥

धनिद्धनि जंपत देव विमान । बधावत फूल करंत बपान ॥
रहै भ सुरा सुर मान बगात । रहै न सुमेर धराधर सात ॥
छं० ॥ २०६ ॥

जिसौ नृप पिथ्थ परट्टिय पट्ट । तिसो भुजभार निवाहि निपट्ट
सँसार असार में कथ्थ उगारि । भयौ रज रज्जन पाइ लगारि ॥
छं० ॥ २०७ ॥

पराक्रम पार न पाइय सेस । कहां लगि जंपिय चंद कवेस ॥
बजे असुराइन जीति निसान । परे चहुआन फिरी धर आन ॥
छं० ॥ २०८ ॥

लूटो बन संक छयग्गय देस । रजवट्ट रष्षि गयौ रयनेस ॥
छं० ॥ २०९ ॥

रयनसी के मरने पर दिल्ली पर मुसल्मानी कब्जा होना।

कवित्त ॥ चवर ढारि तजि चवर । नष्षिय षग लागि सुबथ्थं ॥
धर नंषिय चहुआन । पष्षि पारिय सह सथ्थं ॥
गिरि गट्टे चहुआन । बलिय कट्टे निग्गझारिय ॥
बर पंचाइन थक्कि । श्रिग्ग चंषे उग्गझारिय ॥

(१) ए० कृ० -सुरकान ।

अरि ढारि अच्छरि बरै　बाहि बाहि वेहथ्थ बत ॥
ढहि बाज नग्ग वर राज वर। उज्जारे वर मत्त जत ॥

छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ सिर लुट्टत्त सुत्तिय सुवरि। लुट्टि हयग्गय रोज ॥
जीति बद्दे नीसान नद। कर यो साहि वर काज ॥

छं० ॥ २११ ॥

धर ढिल्ली पतिसाह घर। घर घुट्टै चढि हथ्थ ॥
नवो नवेरो थप्पिहै। इह सुविहानी सथ्थ ॥

छं० ॥ २१२ ॥

लगि जोहर भारथ्थ मचि। प्रलै काल मनो अग्ग ॥
डिल्ली धर मेच्छन गहिय। परिय परा क्रम लग्गि ॥

छं० ॥ २१३ ॥

दिल्ली कब्जे में करके कन्नौज पर मुसलमानी सेना का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जीति पथल्लै सथ्थ। हथ्थ पुर पच विलग्गो ॥
घुट्टि पान पुरसान। पान चहुआन सु अग्गो ॥
दिसि कनवज कमधज्ज। सज्जि जैचद सु उप्पर ॥
सुनि अवाज भय राज। आज भज्जत नर कुप्पर ॥
इह मेछ मत्त वारुन विरद। जुद्ध जोर पुज्जै न वर ॥
सनमुष्ष सजौ अप्पन सुभर। करौं भार उब्भ्भार धर ॥

छं० ॥ २१४ ॥

उभय दिवस सोरम। राय जयचद प्रपत्तौ[1] ॥
इत गज्जन वै सेन। धाइ चर पवरि त्रियत्तौ ॥
उभय चतिय दिन प्रात। मात कालिदी तट्टह ॥
मिले पग पतिसाह। बद्दे धर ओन उपट्टह ॥
जुद्धत जोध दिन सत्त भय। झर रम नन रडरिय ॥

(१) ए० कृ० को०—दियंचो।

हर रुंड माल गुंथत गहर। रंक जेम रतनं हरिय॥

छं० ॥ २१५ ॥

असिय लष्ष तोषार। सजड़ पष्पर सायद्दल॥
सहस हस्ति चवसट्ठि। गरुअ गज्जंत महाबल॥
पंच कोटि पाइक्क। सुफर पारक्क धनुद्धर॥
जुध जुधान बर बीर। तोन बंधन सद्धन भर॥
छत्तीस सहस रन नाइबौ। विहि निम्मान ऐसो कियौ॥
जैचंद राइ कविचंद कहि। उदधि बुड्डि कै धर लियो॥

छं० ॥ २१६ ॥

कहि न ईस कहि इंद। कहन ब्रह्मा साविची॥
गन गंधर्व अपछरा। बत्त नारद्द निरत्ती॥
कहि न मेर मद्द महन। मनिष मनषैं को गिलियौ॥
कहौ उडियन आकास। जलनि कौ तें जेलिलियौ॥
संग्राम मिले सुरनर असुर। अनल पंष दिट्ठौ अरनि॥
जैचंद राव किहि परि हुऔ। कहि निसंक सचौ धरनि॥

छं० ॥ २१७ ॥

इस मुसलमानी आक्रमण में जैचन्द का लड़ कर मारा जाना।

इंद्र पथ्थ धर लिद्ध। रयन सभ्भौं असुरायन॥
दिसि कनवज्ज आवंत। सुन्यौ जैचंद पराइन॥
सयन सनम्मुष आय। जुद्ध भारथ भर मच्चौ॥
जित्यौ विनय सहाब। परत धर सिर बर नच्चौ॥
नमान पान भावी विगति। असिय लष्ष जित्ते असुर॥
जैचद कमध सचह सहस। हनिय लग्गि गय धार धुर॥

छं० ॥ २१८ ॥

सु सिर पर्यौ रिन भुअन। तेह गिर धरनि उचायौ॥
गिरधन अपछर लेत। राव चाहत्त न पायौ॥
गिरिधनि कर हवि छुट्टि। पर्यो गंगा जल भीतर॥
गंगह लियो उछंग। लैन चाहै सिर संकर॥

गंगा सुपास लिय चय नयन । हर उछाह किय आप कौ ॥
गल रुड माल लै सठयौ । वह सुसीस जयचद कौ ॥
छ० ॥ २१९ ॥

ग्रंथसमाप्ति उपसहार ।

धन हिंदू प्रथिराज । जिने रजवट्ट उजारिय ॥
धनि हिंदू प्रथिराज । बोल कलि मझ्झ उगारिय ॥
धनि हिंदू प्रथिराज । जेन सुविहानह सध्यो ॥
वार वार ग्रहि मुक्कि । अत कालह सर बध्यो ॥
रनसिंह रयन राजन सुधनि । जिन घर सिर सट्टै दईय ॥
करि सकाथ काय मच्छर मरद । तौ जुग कित्ति वेलिय वईय ॥
छ० ॥ २२० ॥

प्रथम वेद उद्धार । ब्रम मछह तन किन्नौ ॥
दुतिय वीर बाराह । धरनि उद्धरि जस लिन्नौ ॥
कौनारक नभ देस । धरम उद्धरि सुर सष्पिय ॥
क्रूरम सूर नरेस । हिंद हद उद्धरि रष्पिय ॥
रघुनाथ चरित हनुमत क्रत । भूप भोज उद्धरिय जिम ॥
प्रथिराज सुजस कवि चद क्रित । चद नद उद्धरिय इम ॥
छ० ॥ २२१ ॥

पद्धरी ॥ नवरस विलास रासौ विराज । एकेक भाष अनेक काज ॥
जो सुनय विविध रासौ विवेक । गुन अनत सिद्धि पावहि अनेक
छ० ॥ २२२ ॥

स्रुरत्त दान विग्यान मोन । नाटक गेय विद्या विनान ॥
चातुरी भेद वचनह विलास । गति गरम नरम रस हास रास
छ० ॥ २२३ ॥

गति साम दान भर दड भेद । सब काम धाम निवान वेद ॥
वाचत कवित[1] हारत गोप[1] । बर विनय विद्धि बुझ्झय सदोप ।
छ० ॥ २२४ ॥

(१) ए० कृ० को०—कारन्न गोय ।

विधि सरुच सार रिन वहन भार। गतिमान दान निरवानकार
चौबरन धरम कारन विवेक। रस भाष भेय विग्यान नेक॥
छं०॥ २२५॥
पैरान सकल कथ अथ्थ भोय। भारथ्थ अथ्थ वे सन्नताय॥
कलि काव्य रसा प्रहास रंग। बंधनिय छंद बुझ्झै सुअंग॥
छं०॥ २२६॥
विवेकदान विचार चार। गति वाम वाम रति रंग भार॥
नव सपत कला विचार वेद। विग्यान थान चौरासि भेद॥
छं०॥ २२७॥
गति पंच अरथ विग्यान मान। उप्पमा जेव मति अंग थान॥
रितु रस रसानि वेलास गत्ति। मंतन सुमंत आभासि अत्ति॥
छं०॥ २२८॥
भोगवन पहुमिति विचार विद्धि। अरु इष्ट देव उप्पाय सिद्धि॥
गंध्रब्ब कला संगीत सार। पिंगलह भेद लधु गुरु प्रचार॥
छं०॥ २२९॥
पित मात पत्ति परिचरत भेय। राजंग राज राजंत जेय॥
परब्रह्म ध्यान उद्धार सार। विधिभगति विस्व तारंन पार॥
छं०॥ २३०॥
आधुनह बेद हय गय विनान। ग्रह गत्ति मत्ति जोतिग्ग थान॥
कलि सार सार बुझ्झहि विचार। संभलहि भूप रासौ सुधार॥
छं०॥ २३१॥
पावहि सुअरथ अरु अग्ग काम। निरमान मोष पावहि सुधाम॥
आवरत च्यारि जौ सुनहि राज। पावहि सुचित्त बंछहि सुकाज॥
छं०॥ २३२॥
असुमेध जग्य सम फल प्रमान। तुलदान प्रान ब्रह्मंड वान॥
वद्रिका जात फल जगन्नाथ। रामेस सेत पावै समाथ॥
छं०॥ २३३॥
कासीय महाफल माथुरात। अवगाह पुन्य पावै सनात॥
उज्जैनि तिथ्थ माया सुकांति। द्वारिका अयोध्या भुअन भांति॥
छं०॥ २३४॥

ए तिथ्थ मोच्छदायक कहत । ते पुरस सुनत रासो लहत ॥
हर सिद्ध मात तुलजा विष्यात । कसमीर कँगुर हिंगुलाज मात
छं० ॥ २३५ ॥

ज्वाला अनेक मुष कुंड जेह । परस्सौ प्रमान फल लहै तेह ॥
मन वाच क्रम सुनही सुराज । पोवहि सुचित्त अभिलाष काज ॥
छं० ॥२३६॥

प्रतिपदा चंद दिषि सुरह गाय । नौलिक जटत नौलहिल पाइ
पयपान भेद ज्यों हंस जानि । सभलै राजराजन सुजानि ॥
छं० ॥ २३७ ॥

इह ग्रंथ उदधि लहरीत रंग । बाचत सुनत उपजै सुरंग ॥
नन सुनैं मूढ मतिमंद कान । आलसू अधिक निद्रा विराम॥
छं० ॥ २३८ ॥

लालचि लछन्न गुन हीन देह । नन सुनैं कान रासौ सुतेह ॥
सभलै सूर दातार रास । कवियन विलास पूरवन आस ॥
छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ प्रथीराज गुन सुनत । होय आनन्द सकल मन ॥
प्रथीराज गुन सुनत । करय संग्राम स्यार रन ॥
प्रथीराज गुन सुनत । कयन कापटय ते खुलय ॥
प्रथीराज गुन सुनत । हरषि गुंगौ सिर डुलय ॥
रासो रसाल नवरस सरस । आजानौ जानप लहै ॥
निसटौ गरिष्ट साहस करै । सुनहु सत्ति सरसति कहै ॥
छं० ॥ २४० ॥

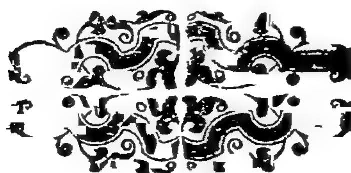
सुनि रासौ सुर राय । रिझ्झ ब्रह्मा हरि संकर ॥
उमया धरि हरि भाव । सुनिय नारद गुनकर ।
गुं ञाछ तत्त गुर ग्यान । दान माननि मन रंजन ॥
सत्त कला साधन । मानि अरियन दल भंजन ॥
सब रस विचार विद्या सुअन । मंच जंच साधन सुतन ॥
कविचंद छंद बंधिय जुगति । पढ़त गुनत पावै सुमति ॥
छं० ॥ २४१ ॥

रामोइन भारथ्थ। ग्रंथ अठ दसै प्रमानं ॥
सुनत सिद्धि घर रिद्धि। होय रासौ सनमानं ॥
अठ सठ तीरथ न्हाय। गाय गुन गोविंद गानं ॥
ता सम वरि श्रोतान। लिषत बाचत विधि जानं ॥
गंगा सनान दिन प्रति लहय। जे नरिंद रासो सुनय ॥
डाकिनिय भूत बेताल छल। रोग सोग दोषन कुनय ॥
छं० ॥ २४२ ॥

मंच सकति या मंझ। धूप अष्पर उष्पेवय ॥
सुनै श्रवन गुन एह। दान श्रद्धा करि देवय ॥
एक चित्त करि भाव। भाव था मगह्गह पावय ॥
अरथहीन ब्रनहीन। हीन छंदह नन गावय ॥
पिंगल प्रमान बहु भाँति जुति। रस रूपक नव नव सरस ॥
बरदाय माथ रसना रसिक। परचि प्रीति पावै सुरस ॥
छं० ॥ २४३ ॥

चिरजीवहु श्रोतान। काम मन वांछित पूरय ॥
चिरजीवहु श्रोतान। दुष्ष आपद भय चूरय ॥
चिरजीवहु श्रोतान। पुत्र परिवार सहेतौ ॥
चिरजीवहु श्रोतान। दान कवियन जन देतौ ॥
है पाट घाट भंडार भरि। आस सास सफली फलय ॥
धरि ध्यान जोग साधय जुगति। जरा म्रत्य तन ना कलय ॥
छं० ॥ २४४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासके राजकुँअर श्री रेनसी अभिषेक दिल्ली नगर वासे गोरी सहाब गौरी धरनम्, विनय सहाब पातिसाह तखत करनम्, परस्पर युद्ध जुरनम्नम्, ढिल्ली जोहर जरनम, राजा, श्रीरेनसी मरणम्, राजा जैचन्द गंगा सरनम् नाम अड़सठवों प्रस्ताव संपूरणम् ॥६८॥



अथ महोबा समयो लिख्यते।

चौहान और चँदेल कुल में कैसे झगड़ा पड़ा इसकी सूचना।

दूहा। कहै चंद गुन छंद पढि। क्रोध उदगल सोइ॥
चाहुआन चंदेल कुल। कदल उपजन कोइ॥

छं० ॥ १ ॥

विवाह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज की सेना का महोबा में पहुँचना।

समुद सिषर गढ परनि नृप। पकरि साहि लिय संग।
चलि बहीर आई महुब। चढिव रंग बहु रंग॥

छं० ॥ २ ॥

समुद्र सिषरगढ से विवाह करके चलने पर सुलतान का बीच में आ घेरना, उसे जीत कर पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर चलना।

कवित्त। समद सिषरि गढ परनि। राज दिल्ली दिसि चल्लिव॥
पातिसाह सुनि षबरि। धाइ बिचह्नी रनि मल्लिव॥
सकल सिमिटि सामंत। चंद कैमास बुद्धिवर।
लरिव जुद्ध चहुआन। गहिव प्रिथीराज साहि कर॥
रजपुत छंडि पचास रन। लूटि जवन सेना घनिय॥
पठान सात हज्जार पर। जीति चल्यौ दिल्ली धनिय॥

छं० ॥ ३ ॥

* इस समय की घटना का सम्बन्ध तो पृथ्वीराज के जीवनचरित से अवश्य है पर अने
ों ने इस कथा के वर्णन में अपनी कवित्व शक्ति दिखाई है पर नाम अपना न देकर च
ई ही का दिया है। इसलिये इस समय के चन्द की रचना होने में संदेह है अतएव यह अ
या जाता है॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्ता भूल कर महोबे में आ पहुँचना, वहां भारी वर्षा होनी, सरदारों का बिकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालियों का रोकना, बातों बात बढ़ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारों का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब वृत्तांत कहना, रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को इन लोगों के पकड़लाने की आज्ञा देना।

पद्धरी। बरनी बिवाह चहुआन रान। ब्यास बचन्न जो करि प्रमान॥
अद्दव गरब्ब भानियौ बीर। कमोदनीति जीते गहीर॥
छं० ॥ ४ ॥

रन कट्टि पंच सत्तह हजार। अद्दव कमोद दल करि दुसार॥
सुलतान पकरि नृप लियौ आप। रुस्तम ततार मिटि पाइ ताप॥
छं० ॥ ५ ॥

जुग्गिनि पुरेस दिसि राज धाइ। भूली वहीर महौबे सुआइ॥
घाइल कितेक रजपूत संग। दासी सुमंजरी अति उमंग॥
छं० ॥ ६ ॥

पहुंचे सु महूबे नगर आइ। बरसियौ मेह बूंदनि अघाइ॥
भए बिकल लोग घाइल उताप। उपबाग मांझ चलि गए आप॥
छं० ॥ ७ ॥

जहं महल ठाम उत्तंग नेक। षलभलिय जोध चढि षलिय नेक॥
बरजियौ जाइ मालीन सोइ। बोलियौ बोल अति क्रुद्ध होइ॥
छं० ॥ ८ ॥

गारी सुदीन उत्तंग हथ्थ। बिरचियौ बाहि पथ्थर समथ्थ॥
लग्गी सुजाय रजपूत सीस। धायौ सु तेग करि करि वरीस॥
छं० ॥ ९ ॥

दीनो सु सीस दुह्न घाल्लि सोइ। उडि पर्‌यौ मध्य धरि बिगरि ष्वं
भइ कूक सुनी परिमाल रोज। पट्टयौ ओध करि हुकुम साज॥
छ० ॥ १० ॥

चंदेल बैस आगरों सूर। चेरे सुसहस इक मल्हन नूर॥
सोलषी सहव सजि अनेक। सजि गहरसार गोहिल अनेक॥
छ ॥ ११ ॥

बाजियौ बनाफर जुध ताइ। हरदास भगेलौ वीर बिभाइ॥
आए सु सज्जि द्रवार सोइ। गुहरिय बत्त दरवान दोइ॥
छ० ॥ १२ ॥

रानी मल्हन देषी हजूर। गुहरिय बात दरवान दूरि॥
उचे अवास छाजे सु सुद्ध। परिमाल राज बैठे बिरुद्ध॥ छ० ॥१३
मालिन पुकारी करि नवीन। परिमाल जुद्ध पर हुकम दीन॥
छ० ॥ १४ ॥

परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकडने के लिये सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों को मारा जाना और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल देव का क्रोध कर अपने प्रसिद्ध बीर ऊदल को बुलाकर उन घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना, ऊदल का कहना कि यह घायलों को मारना वीर धर्म के बिरुद्ध है, राजा का कुछ भी न सुनना।

दूहा ॥ पकरि वाग रजपूत सब। क्रोध जानि परिमाल॥
सिर लग्गो असमान को। पग लग्गौ पायाल ॥ छ० ॥ १५ ॥

तोटक ॥ किये परिमाल सुहुकम गाजि। चले सब रावत जंग पै साजि॥
चंदेल बनाफर मुष्य सुहर। वघेलह गोहिल लोह काल्र॥
छ० ॥ १६ ॥

चले भर आगर मल्हन सोइ । सजे भरभद्दव भद्दव होइ ॥
निवाजिय वैस नरेस हुकम्म । सनम्मुष सुक्क सु वक्क रुकम्म ॥
छं० ॥ १७ ॥

चले हरदास वघेल बलिष्ट । पचारै सक्क उचारै इष्ट ॥
सुनौं रजपूतन बात कुढंग । बंधे वपु घाव सुधाव सुअंग ॥
छं० ॥ १८ ॥

कहैं रजपूत सुलौ जब धर । सुनो परिमाल करौ जिन वैर ॥
सुनो चहुआन न छंडहि दाव । करौ मति अब्ब चंदेल उपाव ॥
छं० ॥ १९ ॥

करौ प्रिथिराज सौं काज विरुद्ध । भजौ जन षेत जुरौ जब जुद्ध ॥
इसौ सुनि वानि कियें रत नैन । कहे नृप मारहु मारहु बैन ॥
छं० ॥ २० ॥

चले सब साजि चंदेल की फौज । पिलै रजपूत सनम्मुष चौज ॥
मिलौ जब दिष्ट सौं दिष्ट करूर । जुरे रजपूत मरद्द मरूर ॥
छं० ॥ २१ ॥

मिले मुष आइ मुछाल जुवान । उछालत आवत क्रुद्ध कमान ॥
लगैं सर साइक छत्तिय आइ । किधौं बिष आसिय पासिय पाइ ॥
छं० ॥ २२ ॥

लगैं उर आनि सकत्तिय सेल्ह । दुहौ कर वीर-इहं विधि षेल ॥
कटक्कत घाइल षग्गन काटि । षटक्कति सेलनि षेलनि राट ॥
छं० ॥ २३ ॥

गटक्कति चोटिय गिद्धनि दौरि । घटक्किति घाइल दाइल मौर ॥
चटक्कत चौप वहै करमाल । नटक्कत नाचइ घाइ मुछाल ॥
छं० । २४ ॥

छटक्कत छूर धरप्पर आइ । जटक्कत गुंथय जुग्गिय धाइ ॥
भटक्कत इक्कन कौं गहि एक । नटक्कत लुट्टय कुट्टय मेक ॥
छं० ॥ २५ ॥

ठठक्कत कोइर देषिव युद्ध । उडक्कत डौरुय वाजि विरुद्ध ॥
ढढुक्कय ढुक्कय रुक्कय पाय । रनंकत रुंड धनंकत काय ॥
छं० ॥ २६ ॥

तथेई नाचत वीर तमक्कि । थरथ्थर काइर जाइ रमक्कि ॥
दरद्धर दौरिय वीर दुरंत । धरद्धर चालि भयानक रत्त ।
छ० ॥ २७ ॥

नरद्दर नूर करूर लधाइ । परप्पर फट्टत जुट्टत काइ ॥
फरप्पर फौज पुरप्पुर मार । वरप्पर वाजत घाइन तार ॥
छ० ॥ २८ ॥

भरभ्भर भाजिव सैन चँदेल । मरम्मर सुद्धिव विद्धिव षेल ॥
वरद्धर छेदिव घाइल घाइ । लरै प्रिथीराज कि सैन सुभाइ ॥
छ० ॥ २९ ॥

तवै उमरावन पाइव चाल । भजी सव फौज लषी परिमाल ॥
हज्जार सुतीन परे धर मद्धि । भजी परिमाल की फौज प्रसिद्ध ॥
छ० ॥ ३० ॥

कटे रन घाइल तीसक सोइ । रुपे रन वीसक पडव होइ ॥
गह्यौ गुन मजरि पानिय धाइ । उठावति प्यावति किए सुचाइ ॥
छ० ॥ ३१ ॥

लगे सर सेलह सुसचह गात । करी गुन मजरी जुग्गिनि वात ॥
निवाजिय वंस चंदेल रतन्न । वली हरदास से कीन पतन्न ॥
छ० ॥ ३२ ॥

तवै नृप ऊदिल लीन बुलाइ । सुनी तव कान पयादेउ आइ ॥
पठाइव मलहन दे तरवारि । रहै नहि घाइल लीजियै मारि ॥
छ० ॥ ३३ ॥

कहै तव उदिल वैन प्रसिद्ध । सुनौ नृप ए रजपूत अवद्ध ॥
नहौ द्रढ राजन कौ अम ताफ । करौ इनकी अव चुक सुमाफ ।
छ० ॥ ३४ ॥

कहै परिमाल सुवैन नवीन । हनी इन फौज हजार सु तीन ॥
हनौ इन कारन उद्दलसोइ । तवै द्रग चैन लहै मम दोइ ॥
छ० ॥ ३५ ॥

ऊदल का फिर कहना कि एक तो घायल को मारना पा
है दूसरे ये पृथ्वीराज के दूत हैं उनसे विरोध न कीजिए
और इन लोगों को जीव दान दीजिए।

कबित्त ॥ तब उदिल्ल उच्चरिग। सुनहु परिमाल अरज इक ॥
धाइल कह्यव अवक। कह्यिय परिमाल वयास अक ॥
होइ चोप चहुआन। रोस सामंत सभारिय ॥
अतुल तेज प्रिथिराज। करौं विनती हित कारिय ॥
चंदेल राइ मानहु अरज। अरथ सरै सोइ कीजिये ॥
रजपूत दूत हनिये नहीं। जीव दान नृप दीजिये ॥
छं० ॥ ३६ ॥

ऊदल के शत्रु महला और भोपति ने राजा के कान भ
कि ऊदल जी डराता है और कुछ बात नहीं है।

चौपाई ॥ सुनि ऊदिल की बानी सोई। महल। भोपति बोले दोई ॥
हम दरबार भये दो दंडय। रजपूतन परिवारन मंडिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

राजा का महला और भोपति की बात मानकर ऊदल क
आज्ञा देना कि तुम तुरंत जाकर घायलों को मारो।

दूहा ॥ महला भूपति की सुनीव। रिस पाइव परिमाल ॥
दोरहु उदिल्ल मारिये। घाइल घाइ विहाल ॥
छं० ॥ ३८ ॥

आज्ञा मानकर ऊदल का बाग को जा घेरना और राजपूत
को ललकारना, फिर घोर युद्ध होना और कनक चौहान
की चोट से ऊदल का मूर्छित होना।

भुजंगी ॥ सुनी बत्त चंदेल भूपत्ति भाषौ। चल्यौ वेगि उद्धाइ है बैन साषी
गहौ तेग हथ्थं सुमथ्थं सधावौ। लहो बाग षग्गं तमासो दिषावं
छं० ॥ ३९ ॥

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-22

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

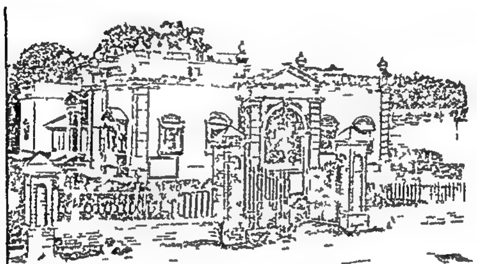
BY

Mohanlal Vishnulal Pandia & Syam Sundar Das, B A

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju

CANTO LXIX

2~



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६६

PRINTED BY PT BAIJNATH JIJJA MANAGER AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA, BENARES

1913

सूचीपत्र ।

०

०

निवेदन ।

इस भाग के साथ यह ग्रंथ और इसका सारांश समाप्त होता है। अब केवल इसकी भूमिका का प्रकाशित होना बाकी है। इसे लिखने का भार पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने अपने ऊपर लिया था पर गत दिसंबर मास में उनकी शोकजनक मृत्यु के कारण यह काम न होसका। इधर ६ महीने से अधिक हुआ कि मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। अतएव मैं भी अभी तक इस काम में हाथ नहीं लगा सका हूं। ईश्वर की अनुकंपा से स्वास्थ्य ठीक होने पर इस काम में हाथ लगाने का संकल्प है और उसे यथासाध्य शीघ्र समाप्त करके रासो के प्रेमियों की सेवा में उपस्थित करने की इच्छा है-आगे उस लीलामय की लीला वही जाने-

२५-७-१३

श्यामसुन्दर दास।

दियो राज फुरमान डेरा सिधारे। किये कवच अंग निहंग हकारे।
दिये पंच हज्जार सथ्थं चंदेलं। चले बाग काजै समाजै सुभेलं।
छं० ॥ ४० ॥

निकट्ट सुबाग बचन्न पुकारे। कढौ वेगि रजपूत प्रिथिराज वारे॥
सुनी कन्ह बानी गुमानी चलाये। अभंग बली बाहु जंग मिलायं
छं० ॥ ४१ ॥

करै षड षडं भसुडैनि मारै। हथ्यार धरै वीर ऊदल हकारे॥
सुनो नंद जस राज के लारवारो प्रिथीराजको लोन पग्गा उजारो
छं० ॥ ४२ ॥

दुहै वोलि बानी दल मध्य आयौ। चिरचे बली बाहु असंच चलायं
चलावंत खूधी बंदूकं विरत्ती। परै फुट्टि न्यारी उडै लागि छत्ती
छं० ॥ ४३ ॥

वर तीर मारे वरन्न बन के। उर फुटि सन्नाह धरती घन के ॥
लगो सेल छत्ती समती भनारे। मनो जावक माठ कीनै पनारे॥
छं० ॥ ४४ ॥

वहै तेग कंध करै सीस न्यारे। परे टूटि तरबूज धरती पनारे।
लगे हीक जमदाढ पीक अटारी। किधौ दुलहनी हथ्य कढ्ढे कटारी
छं० ॥ ४५ ॥

कटारी धर रजक वार नावै। मनों सर्पिनी तक्क पूछ बनावै ॥
सिर छूर प्रिथिराज को नोन कीजे। तजें रजक जीध बाथीन लीजें
छं० ॥ ४६ ॥

भये लथ्थ बथ्थं दुहों सेन वारे। किधौं आमिष काज जुट्टे सुनारे
लगे पंजर पंजर वार कारे। भुजा जारकै तोर मुक्की उरारे॥
छं० ॥ ४७ ॥

भगी फौज चंदेल की ऊद आनी। लषी नैन परिमाल मलहन्न रानी
भ्रच्यो सैन रन है पिल्यौ ऊद भारी। गह्यौ सेल हथ्थं सुमेल पचारी।
छं० ॥ ४८ ॥

उतै कनक चहुआन रजपूत धायौ। वर वीर उदल पै कूदि आयौ

लग्यो कनक चहुआन उदिल मारी।हन्यो सेल छत्ती सुवत्ती प्रचारी।
छं० ॥ ४९ ॥

छुट्यो उद्द नँ अंध धरती मिलायौ।कियौ गुज्ज चहुआन रजपूत चायं।
लग्यौ हीक उद्दिल्ल को आप नेजा।परयौ फूटि चहुआन धर अंतसेजा।
छं० ॥ ५० ॥

लगी तेग कनकेस की वंकवारो। भयौ मूरछित उदिल धरनीन भारो॥
छं० ॥ ५१ ॥

चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस घायल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ कटे खेत चंदेल सूर। इक सहस अमानह।
गिरे बनाफर साठ। इक उद्दल परमानह॥
परि परिहार पचास। परे चेरा सत सोई।
गहरवार सत दोइ। लोइ अंतह सिर होई॥
चहुआन परे घाइल कनक। वीस और सँग पग्गई॥
कविचंद कहत परिमाल सौं। प्रिथीराज सौं लग्गई॥
छं० ॥ ५२ ॥

दूहा ॥ परे बीस घाइल समर। और कनक चहुआन॥
गिरे जद रन मूरछा। कढि दासी वपुयान॥ छं० ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥ कढि दासी वपुयान। लषे परिमाल अवासह॥
सहस एक चंदेल। सेन षेलहैं करितासह॥
लगी राइ परि माल। चाइ प्रिथिराज सु तुग्गार।
कहैं चंद वरदाय। वीस घाइल परि सग्गार॥
सनमद्ध देह जथ्थप परनि। पर घाइल महुवे गवन।
दौनौ विरुद्ध चहुआन सौं। भविषि वात मिट्टिहि कवन॥
छं० ॥ ५४ ॥

चौपाई ॥ परे बीस घाइल रजपूतह। सहस एक चंदेलहि धूतह॥
गहरवार सत दोइ सुभानौ। साठि इक्थोवन सो अति जानौ॥
छं० ॥ ५५ ॥

यह समाचार सुनकर कि चदेलों ने मेरे घायल वीरों को मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ।

दूहा ॥ कहै प्रिथ्थु कानन सुनी । घाइल हनत सुजान ॥
　　चाहुआन ष देल सौ । कलि जगी अति मान ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामतों को इकट्ठा करके यह समाचार कह कर परामर्श करना।

कवित्त ॥ सुनिय बचन चहुआन । करिय च देल विरुद्दह ॥
　　हन धाइल विन चूक । और दासौ तिन सथ्थह ॥
　　सुनौ कन्ह कैमास । सुनौ जादौ रा जाम ॥
　　सुनौं च द पुडीर । सुनौ गुज्जर रा राम ॥
　　चाव ड राइ सुनियौ श्रवन । सलप पजून विचारियव ॥
　　स जम्म राइ निड्डु र सुनौ । तत्त सुमत्त विचारियव ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ५७ ॥

सामतों का महोबे पर चढाई करने और परिमाल देव को मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त दिखलाकर कूच करना और पहिले दिन बाग में डेरा देना।

पद्धरी ॥ उचर बघेल लष्षन समथ्थ । मनियौ देस महवौ सुहथ्थ ॥
　　उच्चरिय वत्त चहुआन कन्ह । भजिये भूप महुवौ सुयन्न ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ५८ ॥
　　चाव ड बोलि विरदालि व क । धारहु टेक मारहु निसक ॥
　　बुल्लियौ च द पुडीर वीर । पकरि नरेस परिमाल धीर ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ५९ ॥
　　सज्जिए राइ बोलिव विरत्त । कढ्ढिये भूप चढ्ढिये सुरत्त ॥
　　सारग बोलि वानी विराट । कढ्ढिये माल परिमाल थाट ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ६० ॥
　　सुनि मत कुमद निढ्ढुरि नरेस । मारिये वेस महुवौ सुदेस ॥

बोल्यौ सुजैत मतनेस सुद्ध । कीजिय जु वेगि चहु,आन जुद्ध ॥
छं० ॥ ६१ ॥

अचलेस बोलि भट्टी सुरद्ध । मौहा चँदेल बुल्लिय विरुद्ध ॥
दाठिय सुदेस चँदेल हीर । गोइंद बोलि रावत्त वीर ॥
छं० ॥ ६२ ॥

कोभिये राज परिमाल साज । कढ़िए वीर चढ़िए समाज ॥
ह्वसो सु सांपुला कढ़िय सोइ । चढ़िये राइ अति मोघ होइ ॥
छं० ॥ ६३ ॥

सामंत सूर अति विरत होइ । थप्पये मत्त कयमास सोइ ॥
दाहिमा बोलि अग्गै नरेस । चिंतयौ मत्त भरसू धनेस ॥
छं० ॥ ६४ ॥

जैचंद करिय ऊपर चँदेल । किजिये मत सविधान वेल ॥
कनवज्ज और महुवौ सुवेस । भंजिये भूप नृप विनय देस ॥
छं० ॥ ६५ ॥

थप्पये मत्त चहु,आन सुद्ध । धरिये परम्म चँदेल जुद्ध ॥
बुल्लाइ चंद बरदाइ सोइ । भव भवषि बात तिह अगम होइ ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बुल्लाय राम गुरराय राज । कढ़िये महूरत वेग साज ॥
रचि कुंड मुंड सुचि होम सार । साकिल्ल कीन मारन विचार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

वनजाय निमष सिवदास चाढि । उत कुंभलान काढीय काढि ॥
अहि अरत माल अपि रुंडमाल । चियलोक विजय भुव मंडिपाल
छं० ॥ ६८ ॥

केतगी पुहप्प हर पर चढाइ । कांसेक फूल हित करि चढाइ ॥
चकोर आप भूर दरस दीन । षंजन सिषंड वपु प्रसन कीन ॥
छं० ॥ ६९ ॥

रवि जोग पुहप तिय थान चंद । पंचमौ सूर आनंद कंद ॥
सातमौ सुक्र दस गुरू जान । नौमौ सुबुद्ध बल अधिक पान ॥
छं० ॥ ७० ॥

तीसरै सनीचर छठौ केत। पंचमों भौम अरि दहन नेत ॥
ग्यारहे राहु बल अति अनद। पारब्ध जेमि बल चढय द्वंद ॥

छं० ॥ ७१ ॥

कीनौ मुकाम नृप बाग आय। छचीय वस हेमर मगाय ॥

छं० ॥ ७२ ॥

रात को वहां रहकर कर घडी रात रहे उठ नित्य क्रिया कर सब सरदारों को पृथ्वी राज ने बुलाया।

कवित्त ॥ गैर महल प्रिथीराज। सयौ सब कारन दिन्नव ॥
कुसुम पटा सिर पाग। लाग कद्रप रस किन्नव ॥
पहर निसा रहि जागि। सुकीन क्रिया क्रम अगह ॥
सौच दीन सुंदरिय। चीर कीनौ वपु जगह ॥
कयमास बोलि अग्गा लियव। दीरघ नाद वजाइ थव ॥
चहुवान कन्ह नृप राम गुरु। सब सामंत सु हाइव ॥

छं० ॥ ७३ ॥

सब सरदारों को इकट्ठा करके सभों की सवारी के लिये घोड़े बाँटना और कूच की तयारी करना।

हनुफाल ॥ नृप जग वम्म कराय। कयमास अग्ग बुलाय ॥
चहुआन कन्हर चंद। गुरु राज आनंद कंद ॥

छं० ॥ ७४ ॥

साहनी सर्व हिय साज। विलहना वटन राज ॥
हय मोर कन्हर दीन। ऐराक वंस नवीन ॥

छं० ॥ ७५ ॥

सिरताज आरब सुद्ध। कयमास दीन विवुद्ध ॥
हयराज चावंड कज्ज। पंधार उपजिव मज्ज ॥

छं० ॥ ७६ ॥

हय रतन चंद पुंडीर। पज्जुन सिंह मर हीर ॥
हय मुकट गोइंद राज। मानिक वाज समाज ॥

छं० ॥ ७७ ॥

हय सूर नरसिंध दीन । तुरकी सुकोह कहीन ॥
हंस राज जैत पमार । लट्टिया सुबेगिन भार ॥
छं० ॥ ७८ ॥

अनख्यार निडुर लाइ । अस कच्छ धर उपजाइ ॥
है तेज रूप सुरज्झ । दिय राज देवन कज्झ ॥
छं० ॥ ७९ ॥

हंजिया सहि मतनेस । वड़ गुज्जरं कनकेस ॥
तुरान के अस दून । समपियौ राय पज्जून ॥
छं० ॥ ८० ॥

बगसी मखेसी काज । समप्पियौ मानिक बाज ॥
अश्व कुसम अरि दल ढेल । विलहना भौंह चंदेल ॥
छं० ॥ ८१ ॥

चहुआन हरि पद काज । समप्पियो मोतिय बाज ॥
सह सिंह हेमर लीन । अचलेस कारन दीन ॥
छं० ॥ ८२ ॥

सुरषा सुसनसुष सूर । दिय अल्ह कारन तूर ॥
नवलेस को हय दीन । नृप हेम सरभरि लीन ॥
छं० ॥ ८३ ॥

हाहुलिय कारनि हीर । ताजी सुतेज गहीर ॥
हम्मीर काजै हंस । उपज्जियौ सुतुरकी वंस ॥
छं० ॥ ८४ ॥

गम्भीर काज तुरंग । रेसमी रंग सुरंग ॥
साषुल सहस मल काज । दिय पुरी राज सुवाज ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सावंत और कुलीन । अन्नेक हयवर लीन ॥
मग्गाम पील नरिंद । बकसीस कीन सुचंद ॥
छं० ॥ ८६ ॥

गुरराय कारन कीन । दोय सहस हेमर दीन ॥
मग्गाय पाट सिंगार । मदगलति गति जिमि भार ॥
छं० ॥ ८७ ॥

उत्तग गिरवर अग । मनु सिषर काजर रग ॥
सिर चरचि लाल सिँदूर । मनु तडित घन मै पूर ॥
छं० ॥ ८८॥

असवार है प्रिथिराज । कयमास सग समाज ॥
ता समय धू धुव पच्छ । चौकीर देवन अच्छ ॥
छं० ॥ ८९ ॥

सनमुष्ष सारद सद्द । अइ जीवन फन मद्द ॥
जा सीस बैठिव देवि । जलजात पजन सेवि ॥
छं० ९० ॥

काग दृपिन ऊचौ पाउ । मुष सै भली भँप चाउ ॥
जल मांझ चकवन मिल्लि । सज करिय हित षति केलि ॥
छं० ॥ ९१ ॥

भए सगुन आनँद कद । हँसि गठि व धिय चद ॥
छं० ॥ ९२ ॥

धूमधाम से चंदेल को जीतने के लिये पृथ्वीराज का कूच करना ।

दूहा ॥ चलिव साजि सम्हरिधनिय । सामँत सूर सकज्ज ॥
ब्यौर नयन चदेल को । लोपिय सागर लज्ज ॥
छं० ॥ ९३ ॥

बीस हज़ार वीरों के साथ पृथ्वीराज का कूच करना । सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ चढिव राज चहुआन । लीन सामत सूर वर ॥
अतुल तेज बल अतुल । सतुल सुर धरम महावर ॥
बीस सहस सब सग । अग कग्गल कसि भारिव ॥
चाहुआन, राठौर । गौर, कूरम,वडवारिव ॥
गहलौत, बघेलौ, वग्गरिय । बडगुज्जर आदिक मिलव ॥
तौमर, पवार, षीची, मल हन । दाहि षाम धाडा चलिव ॥
छं० ॥ ९४ ॥

मोतीदाम ॥ चल्यौ प्रिथिराज सुसज्जिय सेन । सजै सब साँमत सूर सतेन

सजैं चहुआन सुकन्ह समथ्थ । सजै कछवाह सु पज्जुग सथ्थ ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सजे संग चालुक सारंग देव । सजे सकवार सुलष्पन पेव ॥
सजें संग दाहिम चावंड सूर । सजे कयमास लिये सुष नूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

सजे सकमधुआ सु निड्डुर राव । सजे धर संग सुकिम्तिय चाव ॥
सजे संग भौंह चंदेल सुधीर । सजे अंचलेस सु भट्टिय वीर ॥
छं० ॥ ९७ ॥

सजे परिहार सुअल्ह कुंवार । सजे सह सापुल सामंत सार ॥
सजे सुवघेलय लाषन लाय । सजे चहुआन सु संजमराय ॥
छं० ॥ ९८ ॥

सजे अतिताइय सूर सतन्न । सजे संगहाहुल राव रतन्न ॥
सजे संग गंभिर हाडहठाल । सजे भरजह हमीर सुचाल ॥
छं० ॥ ९९ ॥

सजे संग चंद पुंडीर मरद्द । सजे संग गौरस गाहिल हद्द ॥
सजे हरिचंद मलैसिव हद्द । सजे संग नाहर राय समद्द ॥
छं० ॥ १०० ॥

सजे परसंग सुमल्हन देव । सजे संग माल्ह विसाल सुयेव ॥
सजे संग जादव जाम मरद्द । सजे गहलोत सगोयंद हद्द ॥
छं० ॥ १०१ ॥

सगे संग बुद्धय राय पगोर । सजे बिड़राज सुषेत षंगार ॥
सजे संग बग्गर सादुल सोइ । सजे संग माल्ह चंदेल सुजोइ ॥
छं० ॥ १०२ ॥

सजे संग भट्टिय भान गहीर । सजे संग सूर रठौर सुवीर ॥
सजे निरवान सुबीर मवाह । सजे संग वीर प्रसन्न अथाह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

सजे परिहार सुपीय मरद्द । सजे भर भीम जंघारा सुहद्द ॥
सजे संग मोरिय सारंग सूर । सजे संग तेजल डोड करूर ॥
छं० ॥ १०४ ॥

सजे बलिभद्र सुमल्ल सदेस । खलभ्भल पूरन मल्ल महेस ॥
सजे संग धाधुल राव परम्म । सज्यौ संग रावत राम गुरम्म ॥
छं० ॥ १०५ ॥

लिये संग सावंत सूर सपन्न । किए शुध चाव उपाव मगन्न ॥
चले दर कूंच किये चहुआन । चंदेलन ऊपर क्रोध निदान ॥
छं० ॥ १०६ ॥

भजे भुमिया निज छंडिकै देस । बसै वन मंदिर कंदर भेस ॥
चले मगधूद सुघट्ट सु वाट । पिले दल सावंत दारुन ठाट ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सुनौ परिमाल कौ थानव ताम । सिरस्सव कोपि दयो बड़ ठाम ॥
छं० ॥ १०८ ॥

ीराज की सेना की चढाई का समाचार परिमाल देव को ेलना, परिमाल देव का अपने सब सरदारों को इकट्ठा करके सलाह करना। महला भोपाति की चुगली से आल्हा और ऊदल का अलग होना।

त्त ॥ मलिष्षान सुनिपत्त । मत्त बजरंग उपाइव ॥
पीथौरा पा धरै । सैन चौरै सजि आइव ॥
नही आल्हन ऊदल्ल । करहि उप्पर भर संगह ॥
महला भोपति चुगल । चारि परिहार सुअग्गह ॥
अरिसिंघ बोलि नरसिंघ । विर सिंघ मत्त सुलिज्झियव ॥
जयसिंघ सूर बंधव बली । मिली अनी किहि किज्जियव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

ाई ॥ मलिषान अरिसिंध बुलायव । नरसिंघ हरीसिंध सब आयव ॥
जयसिंघ बोलि कीयौ मंप गट्टव । प्रिथीय राज जुध करि विट्टव ॥
छं० ॥ ११० ॥

रेमाल देव की सेना का तयारी करना, पृथ्वीराज और परिमाल देव की सेना का सामना होना, घोर युद्ध होना,

पृथ्वीराज के सरदारों का परिमाल देव के बड़े बड़े सरदारों को मार गिराना ।

भुजंगी ॥ सुनी मल्लिषानं करन जुद्ध मंडे । अरीसिंध विरसिंध नरसिंध दंडे
सजे अंग जयसिंघ भाई सुपंचौ । करैं नौन परिमाल कौ आज संचौ॥
छं० ॥ १११ ॥

सहस्सं सजे संग भाई भतीजे । सहस्सं सजे सूर असवार बीजे ॥
बँधी फौज थट्टं गरट्टं चलायौ । सजे कांगलं अंग नैनं छिदायौ ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कियौ नंद नीसान फौजें सुफेरी, भिदी दिष्टि सों दिष्ट चहुआन केरी
मुषं अग्र कन्हं सुकैमास बीरं । नरं नाह चामुंड कनकं गहीरं॥
छं० ॥ ११३ ॥

बरीसिंध वीरंम गोयंद राजं । इतें अग्र सामंत रषि बुद्धि साजं ॥
बरं बीर सारंग मोरी महन्नं । पवारं सलष जैत जुद्धं सहस्सं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

पजूनं बरं कच्छवायं सपीयं । जुरे जाम जद्दं दिसा दिष्षिनीयं ॥
धरंधीर परमार पुंडीर चंदं । अचल्लेस भट्टी पहारं सुइंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

बघेला लषन भीम मारू महस्सं । भरं हाहुली और हम्मीर पैनं ॥
इते कीन सावंत बांई भुजानं । रची फौज चंदेल गोयं रिसानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥

चिचै राज प्रिथीराज सज्जै सयन्नं । बज्जे नंद नीसान गज्जं गयन्नं ।
लष्यौ मल्लषानं दिष्यौ चाहुआनं । उठो वाग वीरं गहीरं गुमानं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

लषी फौज चंदेल की वीर पिल्ले । धराधीर पत्ती वरावीर मिल्ले ॥
करे षंड षंडं भसुंडै न भारी । छकं छाक लग्गैं बजै षग्ग तारी ॥
छं० ॥ ११८ ॥

अन्यौ अन्नवारी कहै वीर दोई । कटं काट कट कूट घट धूम होई ॥
सटं मागि लग्गो षटं बारि छत्ती । पटं पंक रत्ती विहौ अंग मत्ती॥
छं० ॥ ११९ ॥

घटकै पट सो विहो सूर वारे। गटकति गिद्धनि दोऊ सूर सारे
चटकति धावति नट वीर नचै। चरली चपैया चट चार सचै ॥
छ० ॥ १२० ॥
जट ज्वान के सीस जट्टाल लेई। झरझ्झार झारैं उभारै सुतेई।
टट ओथ रथ्थे रहे अच्छरेस। यट सूर धावत नावत तेस ॥
छ० ॥ १२१ ॥
उडकत डौरू चहू फेर सह। ढढकत ढुकत ढुकत मह ॥
रनकत रोस करे पैज धावै। तटकत छोह सुलोह मनावै ॥
छ० ॥ १२२ ॥
घट काटि चदेल कौ साथ सारौ। दृढ दाठ कन्ह मिल्यौ जुद्ध भारौ
धक मल्ल सानं जुधावै रसानौ। नट जेम नाटत आचेत मानौ।
छ० ॥ १२३ ॥
पठ बीच कन्हं वट विचि आयौ। हन्यौ अग मलिपान धरनी मिलायौ
भग्यौ सर्व थान सुपरिमाणवारौ। चल्यौ सूर नरसिंध पग्ग सुमारौ॥
छ० ॥ १२४ ॥
लषे दोइ नरसिंघ विरसिंध वीर। लपे चदपुडीर सुद्ध गहीर ॥
गह्यौ कुत चद हन्यौ हीकसोई। गिर्यौ सिंघ नरसिंघ चकचूर होई॥
छ० ॥ १२५ ॥
लध्यौ चद पुडीर वरसिंघ तैसौ। हन्यौ धाइ पग्ग घट घाइ एसौ॥
लग्यौ चद कै घाइ घुम्यौ सुअग। पछै मारिगौ चद वरसिंघ जग।
छ० ॥ १२६ ॥
उतै देषि चामुड जयसिंघ धायौ। तजे आयुध मारु वथ्थ भरायौ॥
लरै मल्ल जग अभंगे सुसोई। धरक्कै सुधरनी धरक्कै सुदोई ॥
छ० ॥ १२७ ॥
अन्यौ अन्य मुक्की वर बीर बाहैं। गहीर गुमानी असानी उगाहै॥
उतै दौरि चामुड चरन गह्यौ। समान हय दाटि धरनी मिलायौ।
छ० ॥ १२८ ॥
हन्यौ राय चामुड जैसिंघ भाई। तबै अग वरसिंघ जग भगाई ॥
मुर्यौ सिंघ अरिधग दाड पलाई।लयौ सिरसवा नग्र चहुआन धाई॥
छ० ॥ १२९ ॥

सिरसा के टूटते, बहुतसी सेना मारी जाने पर अरिसिंह का भागकर महोबे जाना।

दूहा ॥ तोरि सिरसवा नग्र नृप । हनै सैन रन भाइ ॥
अरिसिंघ भाइ मराय कै । भग्यौ महोवै जाइ ॥
छं० ॥ १३० ॥

अरिसिंह का परिमाल देव से सिरसा के युद्ध में मलखां वीर-सिंह नरसिंह जैसिंह आदि वीरों के मारे जाने और पृथ्वी-राज की विजय का समाचार कहना।

कवित्त ॥ मल्लषान रन परेउ । जान छुच्यौ पन सिष्षव ॥
करौ तौन हल्लाल । ख्याल देवन गन दिष्षव ॥
परि विरसिंघ नरसिंघ । परे जैसिंघ अमानह ॥
भगि अरिसिंघ से भाइ । गयौ चंदेल सुथानह ॥
परि श्रोढ सहस ठाकुर अवर । चारि सहस संगी रहव ॥
पचास गिरे प्रिथीराज के । लरि सुरपुर इतने गयव ॥
छं० ॥ १३१ ॥

चौपाई ॥ मलिषान अरिसिंघ बिरसिंघ परि । परि जैसिंघ अंग धोवन प्ररि ॥
श्रोढ हजार बंघ परि अंगिय । च्यारि हजार सु ठाकुर[1] संगिय ॥
छं० ॥ १३२ ॥

भगि अरिसिंघ महोवै आइव । सिरसवाह भाई मरिवाइव ॥
सो परिमाल सुनी इह कानह । अंतर उर उपज्यौ बहुआनह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

फिरि फिरि बेगि पुकार सु आइव । प्रिथीराज सब देस दुहाइव ॥
सो परिमाल नृपति सुध लिज्जिय । सनमुष साज जूझ बल किज्जिय ॥
छं० ॥ १३४ ॥

परिमाल देव का यह सब समाचार सुनकर अपने बेटों और

(१) रासो के और समयों में ठाकुर शब्द कहीं नहीं आया है।

सरदारों को बुलाकर परामर्श लेना कि अब क्या करना चाहिये।

कवित्त ॥ सुनिव वत्त परिमाल। काल आयौ प्रिथिराजह ॥
मलिषान की मोरि। मारि विर सिंघ सु साजह ॥
भंजि सिरसवा नग्र। गंजि नरसिंघ वीर रन ॥
हनि जयसिंघ दुवाह। देस दब्बियौ लुट्टि धन ॥
चहुआन सबल सम्भर धरन। पातिसाह गहि छंडियव ॥
बुलाइ कुँवर परिगह सकल। जूझ किद्धी विधि मंडियव ॥
छं० ॥ १३५ ॥

चौपाई ॥ सुत चंदेल बुलाइव दोइय। महला भोपति परिगह सोइय ॥
कोइय श्रीवासह कलियानह। उचरि वचन राज मलियानह ॥
छं० ॥ १३६ ॥

कवित्त ॥ वुल्लि सुतन परिमाल। वुल्लि कोइय कल्यानह ॥
बुल्लि वैस नारैन। गौर सारँग मलियानह ॥
गहर वार गोयंद। भाट जगनंक ढिग बुल्लिव ॥
प्रोहित केशव समुझि। राज वनिय वर खुल्लिय ॥
आइयौ सेन चहुआन सजि। जुध जालिम सब हारियव ॥
हित होइ सोइ जोई कहौ। तत्त सुमंत विचारियव ॥
छं० ॥ १३७ ॥

रानी मल्हनदेवी का कहना कि दो महीना युद्ध बन्द करके जगनक को भेजकर आल्हा को बुलाइए और पृथ्वीराज के पास मल्हन को भेजकर दो महीना लड़ाई बन्द रखने को कहलाइए। राना का मत सब के मन में भाया।

चौपाई ॥ रानी मलहन दे यह भाषिय। राजा जूझ मास दोय राखिय।
जगनंक पठयव आल्ह बुलाइव। पंग काज अर दास पठाइव ॥
छं० ॥ १३८ ॥

रानी बात कही सब मानिव । पीथल कौं सौगात पठाइव ॥
जल्हन पठय नजरि सब दिज्जय । मास दोय मुक्काम सुकिज्जिय ॥
छं० ॥ १३९ ॥

पचास हजार पान, गुलाब, बन्दूक, बछें और कच्छी घोड़े सौगात में लेकर जल्हन का पृथ्वीराज के पास जाना और पत्र देना।

पान हजार पचास पठायव । जे मह छंदनि मह सब गाइव ॥
अन गुलाब बंदूक बरच्छिय । हेमर वाय चढन के कच्छिय ॥
छं० ॥ १४० ॥

लै सौगात जल्हन चल्लिय । प्रिथियराज सु नदी परि मिल्लिय ॥
दै कागद सब नजरि सु दिन्नय । सब प्रमोद मिलन कौ किन्नय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

जल्हन का पृथ्वीराज से कहना कि बनाफर (आल्हा ऊदल) रूठकर कन्नौज जा बैठे हैं उन्हें लाने को राजा ने जगनक को भेजा है सो आप क्षात्रियधर्म के अनुसार उनके आने तक युद्ध बन्द रखिए।

राजा जगनक कनवज पठयौ । जहां वनाफर रूठ सु वठयौ ॥
अल्हा आए जुझ्झ विचारौ । जो पीथल छत्री ध्रम धारौ ॥
छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज ने नजर रख ली और आल्हा के आने तक युद्ध बन्द रखना स्वीकार किया।

पीथल नजरि सौंज सब रष्षय । वचन जल्हन सौं श्रीमुष अष्षय।
सब सामंत लरन कौ भरियौ। आवइ आल्ह जबहिं जुध करियै
छं० ॥ १४३ ॥

जल्हन का महोबे लौट आना, पृथ्वीराज का वहीं डेरा डाल कर रहना।

दूहा ॥ कागद लै जल्हन चल्यौ। चल्यौ महोबै ठाम ॥
डेरा करि सरिता निकट। पीथल कियौ मुकाम ॥
छं० ॥ १४४ ॥

पृथ्वीराज का चंद बर्दाई से पूछना कि आल्हा ऊदल चदेल से क्यों रूस गए हैं।

फिरि राजन बरदाय सौं। बानी बोल्यौ एम ॥
आल्ह ऊद चदेल सौं। रूसि गयौ सो केम ॥ छं० ॥ १४५ ॥

चन्द का कहना कि पहिले चन्देल के यहा दसराज सेनापति था उसने गोंड लोगों की लड़ाई मे बड़ी वीरता की, सिर कटजाने पर धड़ही से सहस्त्रों वीर शत्रुओं को मारकर चन्देल राजा की विजय कराई।

कवित्त। कान मड चहुआन। कहिय बरदाइ मत्त गति ॥
प्रथम देस परिमाल। रहै दसराज सेनपति ॥
गढ्ढौ लौ नृप जाय। करी गोडन सौ जगह ॥
पर्यौ चोल चदेल। मेल घन रन अपु अवह ॥
रष्षियौ तेन अरि सेन सब। माम मरन जुड्डिय धरिय ॥
पिष्षयौ ष्याल बिन सीस धर। काम आय फत्ते करिय ॥
छं० ॥ १४६ ॥

चौपाई ॥ गठा नगर चदेल सुलग्गिव। गौड सिमिटि जुध कारन पग्गिव॥
भगिव सैन लष्यौ जस राजह। दीनौ सीस स्वामि के काजह ॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ चालु परै रूक्यौ सबै। काम आय जसराज ॥
मारि गौड लीनौ गढा। सिर दै स्वामि सुकाज ॥
छं० ॥ १४८ ॥

राजा विजय करके महोबे आया और आल्हा ऊदल को बुला कर बड़ा आदर किया और सेनापति बनाया।

चौपाई ॥ राजा जीति महोबै आइव। आल्हा उदिल पाय लगाइव ॥
दै जसराज महातम सारौ। सैनापति धरती रषवारौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

रानी मल्हन देवी आल्हा ऊदल को अपने बेटे ब्रम्हानन्द की तरह मानती थी।

करै प्यार मल्हन दे रानीय। ब्रह्मानंद जेम सुत मानिय ॥
सब धरनी मह हुकुम सुसाजौ। सुजस जेमि मल्हन कर साजौ ॥
छं० ॥ १५० ॥

महला और भोपति ने राजा से चुगली की कि आल्हा ऊदल के पास पांच बछेड़े ऐराकी घोड़े के बड़े उत्तम हैं।

ऐराकी घर धेरिय जाय। पांच बछेरा लगै सुहाय ॥
महिला भूपति चुगुली कीन्निय। सो परिमाल मानि सब लिन्निय ॥
छं० ॥ १५१ ॥

राजा कालिञ्जर देखने को गया और वहां आल्हा को बुला कर उन पांचों बछेड़ों को मांगा और बदले में बहुत घोड़े लेने को कहा।

नपति कलिंजर देखत किन्नव। राजा आल्ह बुलाइ सु लिन्नव ॥
पाच बछेरा मांगै दीजै। उनकौ साटै हय बहु लीजै ॥
छं० ॥ १५२ ॥

आल्हा की मां का बेटे से कहना कि बछेड़े कदापि न दो बरञ्च देश को छोड़ दो और कन्नौज चलकर रहो।

घर बैठे देवल दे षिज्जिय। पूत बछेरा दै नन किज्जिय ॥

वास छाडि कनवज कहँ चल्लिव । राजा दल पंगुर सह मिल्लिव ॥
छं० ॥ १५३ ॥

परिमालदेव ने फिर कहा कि या तो बछेड़ा दो या हमारा देश छोड़ दो ।

नृप परिमाल्ल कही सुष बानिय । आल्हा देव-बछेरा आनिय ॥
ना तर वास छाडि कै चलियै । आनहि ठाम ठिकानो करियै ॥
छं० ॥ १५४ ॥

आल्हा यह सुन घर लौट आया और अपने घोडे आदि सब साज़ाबाज़ लेकर कन्नौज की ओर चल पड़ा ॥

सुनि करि वचन आल्ह घर आये । छत्रो वास पयान कराये ॥
साहन वाहन सबही लीनौ । कनवज दिसा पयानो कीनौ ॥
छं० ॥ १५५ ॥

भोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड दिया ॥

जागीरी भोपति की मारिय । वसतो मारि सबैं उज्जारिय ॥
परिपाटी परिहार सु बुल्लिय । उहिल सुष काहू नहि हुल्लिय ॥
छं० ॥ १५६ ॥

आल्हा ऊदल का कन्नौज पहुचना, जैचन्द का बडे आदर से उन्हें अपने पास रखना ।

कवित्त ॥ आल्ह गयो कनवज्ज । छाड़ि परिमाल्ल वास वर ॥
भोपित की जागीर । बाध उज्जार जारि घर ॥
करि आदर जैचद । दियव वड देस सुभारिय ॥
घोरे पाच मगाय । दोय हथ्थिय हितकारिय ॥
मोतिन माल उतग अति । हीरा पहुची सवरिय ॥
दसराज सुतन अरचौ अधिक । मिलि माल्ह मगल भरिय ॥
छं० ॥ १५७ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर बनाफर आवेगा और घोर युद्ध मचावेगा।

दूहा ॥ चंद कहै प्रिथीराज सुनि। विरस आल्ह कौ गाय ॥
मनौ बनाफर आइहै। रुंडन मुंड नचाय ॥ छं० ॥ १५७ ॥

जगनक ने कन्नौज पहुंच कर चिट्ठी आल्हा को दी और सब समाचार कहकर महोबा चलने के लिये परिमाल की बिनती सुनाई।

कवित्त ॥ गय जगनक कनवज्ज। दीन आल्हा कर पत्रिय ॥
ऊदल ईंदल जोग। दई देवल दे मंत्रिय ॥
पीथोर। पद्धरिय। साजि महुवे वर आइव ॥
मलिषान बरि सिंध। बलौ नरसंध जुझाइव ॥
भनि भग्गि सिरसवा संभरिय। देस चंदेल दहाइव ॥
परमाल थाम दुइ मास रष। मो तुव पास पठाइव ॥
छं० ॥ १५८ ॥

चौपाई ॥ अब तुम आल्ह बिसरू करि चल्लि। मल्हन दे अति दुष रुष घल्लि॥
बैठो महलै बाट सु जोवै। कनवज दिसा देषि करि रोवै ॥
छं० ॥ १६० ॥
अब दल जोरि पिथोरा आइव। सिगरौ देस उजारि दहाइव ॥
भग्यौ मद चंदेलन कौ सब। आल्हा सुनि पछिताय महा तब ॥
छं० ॥ १६१ ॥
सो गुदराय करौ तुव आइव। जयचंद कौ अरदास पठाइव ॥
कुमक मांगि कैसे गह लीजै। षग्ग न घाल बनाफर कीजै ॥
छं० ॥ १६२ ॥

जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है कि महोबा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को

दूर करै सूर सामंतों को आगे करके बेखटके चौहान से लड़ै।

कवित्त ॥ सुनि जगनक किय वत्त। आल्ह वुल्यौ करि वानिय॥
सुल्यौ महोवौ नगर। कुट्ट चंदेल गुमानिय॥
बिना चूक परिमाल। किये फिर देसह न्यारे॥
काम आइ जसराव। सबै नृप काम सुधारे॥
परिहार सैन आनंद धरह,। चुगुलौ चाहिन कान लहु॥
सामंत सूर सनमुष्यहु। जुद्ध करहु चहुवान सह,॥
छं० ॥ १६३ ॥

चौपाई ॥ सुनु जगनक यह वात सुमानिय। हमनै राज काछु नहि आनिय॥
हम सिर वांधि महोवै रष्षिव। नृप चंदेल चुगल दिसि दिष्षव॥
छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ हम मारे सव गोंड। देवगढ दावा चारिव॥
हम जादौ रन भजि। धरा हिंडोल उजारिव॥
हम कटहरिये काटि। थाहि परिमाल देस दल॥
हम कूरम किरवान। दाढि लीनों सु महावल॥
लीनै सु पील जयचंद के। असी लाष गनिये सु तुछ॥
सुनि वह भट्ट रजपूत की। राजन जानी नाहि कछु॥
छं० ॥ १६५ ॥

हम आगैं पतिसाह। फौज भग्गिय दस वारह॥
हम निसरत घा लूटि। किये दल कूटि वपारह॥
हम जीते घर गाय। दहिव सो प्रवल पठानह॥
हम रेवा तन वैर। वलौ हन्निव सुरतानह॥
मेवात मारि हिंडोरधर। अंतरवेद दहाइव॥
वध्धल मारि वसुधा परिय। घर चंदेलन ल्याइव॥
छं० ॥ १६६ ॥

चौपाई ॥ राजा दस जीते जसराजह। लीनौ घर कंचन नग साजह॥
जाकौ फल राजन इह किन्नव। हमको देस निकारो दिन्नव॥
छं० ॥ १६७ ॥

जिन पाछै हम पेल सु कीनव । राआ जीत चालीसक लीनव ॥
सात वार घाइल परि अंगह । हम जित्यौ परिमाल सु जंगह ॥
छं० ॥ १६८ ॥

सात वार उद्दिस जुध किन्नव । जैतपन चंदेल सु दिन्नव ॥
तीन वार गढ भंजिव भारिय । अंत दया नृप की रषवारिय ॥
छं० ॥ १६९ ॥

कवित्त ॥ सात वार परि घाव । लगे चौरासी गातह ॥
जीति राज हुअ ईस । हसि कहि सैन सपातह ॥
स्वामि धर्म्म संग्रहव । सह्यौ दुज्जन दल जोरह ॥
गौंड मारि उज्जारि । पारि निसरंति अंग तीरह ॥
बाजिव जोह तेरह बरस । पंचासन लगि छोह किय ॥
चंदेल चुगुल आनिय कहिय । तापर हम परदेस दिय ॥
छं० ॥ १७० ॥

जगनक का समझाना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल की बहुत कुछ सहायता की और चंदेल ने तुम्हारा भी आदर किया । तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का धर्म नहीं है ।

पद्धरी ॥ सुनि बत्त उत्तर भट्ट ताम । आल्हा नरेस सुनि श्रवन काम ॥
परिमाल छांडि बालक्क बाप । जंमाय धरा जसराज आप ॥
छं० ॥ १७१ ॥

चांदा सु पास लिय हेतु दंड । वारी सुदेस गढ कीन षंड ॥
रेवा सुपार लिन लुट्टि सर्व । भज्जो सुजोर जोरा सु गर्व ॥
छं० ॥ १७२ ॥

आटवा राइ षग्गनि षिपाय । मेवात मारि धर लियो धाय ॥
पंचाल देस पंजाब थान । बैराठ देस-कोसल दिवान ॥
छं० ॥ १७३ ॥

मालवा देस लिय पास मारि । उदया पमार को घर उजारि ॥
फिरि गढा मारि गढ पेस कीन । चंदेलराय बढाय दीन ॥

छ० ॥१७४॥

यह वत्त सुन्नि परिमालराज । आए सु काम दसरथ्य राज ॥
सिर धुनिय आल्ह लीनौ बुलाय । आपनो देस सुदखल पाय ॥
छं० ॥ १७५ ॥

तरवारि व ध सिर तिलक दीन । गैयर मग्गाइ वह वीर दीन ॥
लिय लोइ अग्ग सिरदार सुद्ध । वजियौ वनाफर नाव जुद्ध ॥
छं० ॥ १७६ ॥

वैठे सु पाट आल्हा नरेस । मारियो जाइ पूरब देस ॥
पट्टान गया के जेर कीन । तह दर्व कोटि तिय लुट्टि लीन ॥
छं० ॥ १७७ ॥

सम सहावाद पग्गनि पिपोय । जीतयौ जुद्ध निसरत्ति जाय ॥
लीनौ सु पील जयचद दौरि । केहरि कठेरि कौ मान मोरि ॥
छं० ॥ १७८ ॥

लूटी सु सिद्ध नव निद्धि भाय । चिडवन देस जद्दव दहाय ॥
मारे सुवेस दल सबल दाहि । बघेल वाघ वारी धराहि ॥
छं० ॥ १७९ ॥

चालुक सिंघ कौ गर्व गारि । पतिसाहि फौज कौ बार मारि ॥
सत वार पेत परियौ सु दद । धरि स्वामि धर्म जस राजनद ॥
छं० ॥१८०॥

यह भभपि वात वर लहै कोइ । स कारै सामि छंडै न कोइ ॥
साकारै सामि को छंडि जाय । अध्धोर नरक रजपूत पाय ॥
छं० ॥ १८१ ॥

साकारै परयौ चदेल राय । तुम सह्यो आज कनवज रहाय ॥
तुव होत वधाई नृपति कीन । सत लष्य हेम भिष्षु,कन दीन ॥
छं० ॥ १८२ ॥

रनवास आइ सब गान कीन । कर चाव मल्हन दे प्रवीन ॥
करि चाउ मल्हन दे कह्यौ मोहि । सो मात दिवल दे कह्यौ मोहि ॥
छं० ॥ १८३ ॥

जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन

दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है तुम्हें आना चाहिए।

दोहा ॥ देवल दे कानन सुनौं। कहि मलहन दे मोंहि ॥
भारि परी चंदेल पै। है मिलिबे की तोंहि ॥
छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ देवल दे तुम वाचा बंधिय। घर परमाल धरा नहि छंडिय ॥
गढ कौ आनि लगै कोइ राजह। आल्हा सीस दियौ तुम काजह ॥
छं० ॥ १८५ ॥

वाचा सार ब्यास मुष गाइव। वाचा जग मैं मुक्ति बताइव ॥
जे कोइ वाचा हार न करई। चंद छूर ते नरक सु परई ॥
छं० ॥ १८६ ॥

दवल दे ने यह सुन बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लडकर स्वामी का काम बनाओ।

सुनि वाचा देवल दे बुल्लिय। आल्हा सुतन महोबे चल्लिय ॥
प्रिथीराज सौ जुद्ध जु किज्जय। स्वामि धरम कौ जस बहु लिज्जय ॥
छं० ॥ १८७ ॥

ऊदल ने फिर कहा जिस दुर्दशा से महोबे से परिमालदेव ने निकाला था वह भूल गईं, जगनक तुम महोबे लौट जाओ।

तब उदिल फिरि बोलिय वानिय। देहु महोबे की चक धानिय ॥
बुरे हाल काढे परिमालह। सो अब भूलि गईं वह ख्यालह ॥
छं० ॥ १८८ ॥

जगनक भट्ट अबै घर जावहु। नगर मोहबा लगे अभावहु ॥
घर घट्टय दसराज उथप्पिय। हम कन्नवज उतन कर थप्पिय ॥
छं० ॥ १८९ ॥

देवल दे ने यह कहकर कि मैं बांझ क्यों न हुई, मेरे बेटे

क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते हैं और संकट में स्वामी को छोडते है, रो दिया।

देवल दे कहि बाक्क न रष्यिय। छत्री धर्म करम मय भष्यिय ॥
सामि साकरैं देह न कट्टिय। हौ करतार कुपि किम फट्टिय ॥
छ० ॥ १९० ॥

माता दीन वचन करि रोई। तुम सब बनाफरन की पोई ॥
अग वचन सुनि कै नहि नच्चय। ते रजपूत धरम नहिं सचय ॥
छ० ॥ १९१ ॥

दोहा ॥ सामि सीकरै जानि कै। रहे अवर घर सोइ ॥
सो रोनी फिर तो लहौ। कुल रजपूत न होइ ॥ छ० ॥ १९२ ॥

मां की बात सुन कर दोनो भाई सूखगए और महोवे चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गए।

कवित्त ॥ आल्हा ऊदल सुनिव। उठे मुरझाय वीर दुहु ॥
माता सुप मन मानि मरै। उहा जाइ कुटम सहु ॥
लरैं जाइ सनमुप्प। करैं अपवात धरा वहु ॥
धरैं सामि भ्रम सीस। कटै किरवान पान रहु ॥
सोमत वश्य धर्म्म विहस। रहसि सूर समर अनिय ॥
उजियालि दुहु कुल में सुघर। जरन भेंट सम्भरि धनिय ॥
छ० ॥ १९३ ॥

दूहा ॥ चलन महोवै कीन मत। देवल सीप उपाय ॥
अरज करन जयचद सौ। चलै सु दोनौ भाय ॥
छ० ॥ १९४ ॥

रपत बपत सब साज करि। कगल अग हुलास ॥
जगनक को सग लै चले। पागुराय के पास। छ० ॥ १९५॥

जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप दर्बार में आए हैं। आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढाई की है सा परिमालदेव ने हमलोगों को बुलाया है।

कवित्त ॥ दिष्षि नयन जयचंद । बुझि आल्हन सहि वानिय ॥
क्यों आवहि दरबार । उट्ठ पावार गुमानिय ॥
सजे कवच किमि अंग । जंग लग्गे भट भारिय ॥
बिदा किये कहु नांहि । नांहि पुक्कारह कारिय ॥
इम कही बनाफर जाइ कर । लेन सु जगनक आइयव ॥
प्रिथीराज महोबे जुद्ध कहु । हम परिमाल बुलाइयव ॥
छं० ॥ १९६ ॥

जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने पाओगे।

चौपाई ॥ नयन रत्त करि बुझय वानिय । मरिवे काज महोबे ठानिय ॥
अचल गढ्ढ हमारो घायो । चंदेलन ढिग लग्गहु लायो ॥
छं० ॥ १९७ ॥

सगरी नाव जाय बंधं किज्जाय । आल्ह उदिल उतरन नहिं दिज्जाय ॥
छावनि करो हमारे पास । छांडो अब महुवा की आस ॥
छं० ॥ १९८ ॥

यह सुन आल्हा की आँखें लाल होगईं और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे।

तब आल्हन रस कीनै नैनह । सुनि जयचंद नृपति दो बैनह ॥
कनवज लूटि ऋद्धि सब हरिहों । पाछै जुद्ध महोबै करिहों ॥
छं० ॥ १९९ ॥

इतने में जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमालदेव ने पृथ्वीराज से लड़ने के लिये जयचन्द्र से सहायता मांगी थी।

जब जगनक कह बिरद बिसालह । दीनी अरज लिषी परिमालह ॥
करैं चाकरी सेवा ठाइय । पिथ्थल पर सुइ कुमक पठाइय ॥
छं० ॥ २०० ॥

पत्र पढ़कर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लड़ने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूंगा और दीवान

को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी।

कवित ॥ बंचि अरज जयचंद। कहिय सुष वचन भाट वर ॥
करहि चाकरी प्रगट। करहु उप्पथ आतुर कर॥
पीथोरा वध बीर। मलख वड जौ मस किन्नव ॥
कूटि सिरसवा नग्र। लूटि धरती निधि लिन्नव ॥
पट्टाय कुमक संग अल्ह के। जुझ समर भार लगत इव ॥
संभरी गाजि विजपाल सह। तुव सुज्जर जुरि पुंगइव ॥
छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ बंचि अरज जयचंद नृप। बोलि दिवान जरूर ॥
विदा करौ सेना सबौ। आल्हा संग गरूर ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि देकर और जगनक को सिरोपाव आदि देकर आल्हा को जयचन्द ने विदा किया।

पद्धरी ॥ विदा किय आल्हन पंगुर राय। दिये दस हैमर साज बनाय ॥
दिये दोउ पील सु उज्जल दंत। छहुरित छाक रहै मद मंत ॥
छं० ॥ २०३ ॥
दई दस बीनि कै मुत्तिय माल। दई कर पौचिय वज्र बिसाल ॥
दिये सिर पावक सज्जिय सात। निरष्षत चंद सुसक्कत जात ॥
छं० ॥ २०४ ॥
कटारि जराव की दीनिय सोइ। रषौ तुम आल्ह छती भ्रम होइ॥
बुलाइव आपनसी कमधज्ज। धरौ भ्रम सीसह छत्र धरज्ज ॥
छं० ॥ २०५ ॥
दई संग फौज पचास हजार। दिये दस डील दंतार जुझार ॥
दिये संग मोरिय रूप सि सुद्ध। दिए संग चालुक के सब जुद्ध ॥
छं० ॥ २०६ ॥
दिये संग तोवर वोहिय वीर। दियौ संग जादव हद्द गहीर ॥
दियौ किरवार सु क्वूंवर पाल। दियौ संग बैसन पंगु सवाल ॥
छं० ॥ २०७ ॥

दियो संग ताल्हन नेज पठान। दिये सत भाव भतिज्ज ववान ॥
हजार पचास दिये असवार। धरैं कुल स्वामि धरमा दुतार ॥
छं० ॥ २०८ ॥

दिये नृप अल्ह को पान मंगाइ। लई नय सीष चंदेल सहाइ ॥
जगनक्क कारन पील मंगाइ। समप्पिय पंगुर साज बनाइ ॥
छं० ॥ २०९ ॥

दिये सिरपाव तुरी दोइ सुद्ध। दिये द्रव साठ हजार सु सुद्ध ॥
दिये दस गांव अखंडलि थाइ। समप्यौ भाट कौ पंगुर राइ ॥
छं० ॥ २१० ॥

उठे जयचंद बिदा कर आल्ह। समप्यो सैन वहै तत काल ॥
पधारिव आल्ह हये लिय सुद्ध। धरै मन मांझ पिथौर सु जुद्ध ॥
छं० ॥ २११ ॥

हवेलिय आइ बनाव सु कीन। मंगाइ कै पालिकी पंच नवीन ॥
चपाय कै देस चल्यौ रन सूर। दुहै ठकुरायनि मेल जरूर ॥
छं० ॥ २१२ ॥

दिये संग ऊदिल जोध दुबाह। गही सु महोबह की फिरि राह ॥
कराय कै पारथ पूजन आल्ह। अगन्नि की आवध दै ततकाल ॥
छं० ॥ २१३ ॥

बंधी किरवान चढे हय सोइ। चढे चलि ऊदिल मुदित होइ ॥
चढे जगनक्क किये जुध चाव। अवै सुष मानि चंदेलनि राउ ॥
छं० ॥ २१४ ॥

निक्कस्सि कन्नौज कै बाहरि सोइ। तहां भय दारुन स्वान सुरोइ ॥
सनंमुष काग करालिय कूक। भयो द्रग जीवन दौर अलूक ॥
छं० ॥ २१५ ॥

ठट्ठकिय भाट निरष्षि सगुन। लषी जब आल्ह मुसक्कि बदन्न ॥
छं० ॥ २१६ ॥

चौपाई ॥ हँस्यौ आल्ह जब बुल्लिय बानिय। तैं कछू होनहार पहचानिय ॥
सावंत सूर जु इष्ट सु रष्षव। अरु कविचंद भवानी भष्षव ॥
छं० ॥ २१७ ॥

इनि सौ जुद्धनि जीतै कोइय । हिंदू तुरक मिलै भर दोइय ॥
पातिसाह लरि उनि सौ हारिव । कनवज पति को गरब जु गारिव ॥
छ० ॥ २१८ ॥

दूहा ॥ होनहार ऐसी लयो । कही जु आल्ह उपाय ॥
हम सावंत सब जूझिहैं । राज चंदेलन जाय ॥
छ० ॥ २१९ ॥

आल्हा का कहना कि जैसे दुर्योधन ने कहा न माना और नाश हो गया वैसे ही ऊदल ने बहुत समझाया पर चुगलखोरों के मारे घायलों का न मारने की बात न सुनकर परिमाल देव ने अपने हाथ से सब बात बिगाडी ।

कवित्त ॥ दुरजोधन परिमाल । सुतौ वर ज्यों नहि मानिय ॥
सब घाइल मरवाइ । कुबुधि तब ही हम जानिय ॥
फिरि ऊदिल बरजियो । कही बिनती हितकारिय ॥
चुगलनि चुगली करिय । बात बिग्गारिय भारिय ॥
हम जीवत परिमाल को । राज दुष्य देषै न हिय ॥
सुनि भट्ट बत्त रजपूत की । बिहंसि आल्ह ऐसी कहिय ॥
छ० ॥ २२० ॥

जगनक ने कहा कि होनहार प्रबल है । अस्तु सब का गङ्गा तट पर डेरा डालना और वहा लाखनसी और तालनसी स मित्रता होनी ।

चौपाई ॥ जगनक कह मं सबही जानिय । होनहार अविगति नहि मानिय ॥
गंगा जु तटि डेरा दिज्जय । सुनो बनाफर ढिल्ल न किज्जय ॥
छ० ॥ २२१ ॥

गंगा तट डेरा करवाये । कुमक दई सो आनि मिलाये ॥
लाषनसी तालनसी दोइव । इन मिलि आल्ह मित्रता होइव ॥
छ० ॥२२२॥

नदी उतर कर जयचन्द की कुमक साथ लिए महोबा ओर सब चले।

दूहा ॥ देवल मिजमानी करी। सब संग एकै काज ॥
अंन धन्न जपट करिव। बहु पकवान समाज ॥
छं० ॥ २२३ ॥

राति रहे उतरे नदी। चलै महोवा वार ॥
कुमक लिए जयचंद की। क्रमै सुवीर जुझार ॥
छं० ॥ २२४ ॥

आल्हा ऊदल का सेना सहित पहुंचना, परिमाल देव का दूत का आल्हा ऊदल और कन्नौज की सेना के आने का समाचार देना।

पद्धरी ॥ चढ़ि चले आल्ह उदिल सोइ। उर स्वामि धर्म रत विरत होइ ॥
गाजिव गम्भीर वाजिव निसान। सज्जिव जवान अति जोरवान ॥
छं० ॥ २२५ ॥

धरि पीर अग्ग पचास पांच। आरन्य मांझ धारीन आंच ॥
जीवनो साजि सारख्ख कीन। सेमली लष्ष मुछ मध्य हीन ॥
छं० ॥ २२६ ॥

चक्कव विछुट्टिय दिसा मांझ। हय नयन झरय विन विपत सांझ ॥
फिक्करी दौरि आडी सु आइ। जंबूक सबद बोले कुभाइ ॥
छं० ॥ २२७ ॥

सूरज मध्य एक कुमद दिष्य। यह चरित जोय लष्षन विलष्ष ॥
हंसि कहिय आल्ह यह हाल गाय। रजपूत मरन मंगल बताय ॥
छं० ॥ २२८ ॥

यह बार सोच कीजै न कोइ। रजपूत वद्ध इक विकट होइ ॥
दर कूंच कूंच कीने पयान। धरि युद्ध चाव अति विबुध मान ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कहुं इक्क दिवस विलमें न चाय। परिमाल हेत वंधि नेत वाय ॥

तारंत तुरिय मारत मृग्ग। भव भवपि भोग तैसा सुरग्ग ॥
छं० ॥ २३० ।

परिमाल प्रतिग्य किय जुद्ध जोध। सह आन पान लषि विषम बोध॥
पठाय दीन कासिद्द एक। परिमाल जोध लिषि अज्ज मेक॥
छं० ॥ २३१ ॥

केसरि मगाय केसर्या कीन। पूजत ईस सेवा अधीन॥
उच्छाह अधिक किय भ्रात दोय। साकरें स्वामि जान्यौ सुलोय॥
छं० ॥ २३२ ॥

कासिद्द आइ परिमाल पास। बैठई भूप ऊँचै अवास॥
गुदराय बैठ दरबार जाइ। आए बनाफर दोय भाय।
छं० ॥ २३३ ॥

दरबान जाइ बुल्यौ दूरि। आये सु आल्ह सेना हजूर॥
सुनि राज हर्ष मन अधिक कीन। कासिद्द बोलि हज्जूर लीन॥
छं० ॥ २३४ ॥

उच्चरै बात चंदेल राय। कित्तनै सैन आल्हन मिल्लाय॥
बुल्लयौ बैन कासिद्द पाय। पचास सहस दिय पंगुराय॥
छं० ॥ २३५ ॥

यह कह वचन्न कासिद्द आन। चंदेल भूप हिय सुष्य सान॥
लषन भतीज नृप संग दीन। सिरदार आठ दुबलार कीन॥
छं० ॥ २३६ ॥

दूत से समाचार पाकर राजा का प्रसन्न होना।

दूहा ॥ सुनि बानिय कासिद्द की। किये नगरिते नैन॥
साज बाज सब सुद्ध है। सजि आवो सब सैन॥
छं० ॥ २३७ ॥

अगवानी के लियें नकीब आदि को तैयार करना।

चंद्रायना ॥ दौरि नकीब बुलाये परिमाल के।
साहन वाहन सज्जि करौ इह हाल के॥
आवै मिलि दरबारि कि सामंत सूरिमा।

परिहा साजि सनाह सरीर झलक्कै पुरिमां ॥
छं० ॥ २३८ ॥

आल्हा की मां देवलदे के आने का समाचार पा मल्हनदे का आगे से मिलने को चलना ।

दूहा ॥ देवल दे सँग भाटकै । चली महौवै आइ ॥
मल्हन दे सुनि कै षवर । साम्ही भई सुभाइ ॥
छं० ॥ २३९ ॥

देवल दे का पुत्र से कहकर जगनक के साथ पालकी में बैठ कर बाग में आकर रानी से मिलना ।

चौपाई ॥ तब देवल दे बुल्लय वानिय। आगे चलौं मिलन कौ रानिय ॥
जगनक संग पठावहु मो कहं । राजा की सुनि कहिहौं तोकहं ॥
छं० ॥ २४० ॥

दूहा ॥ मिली बाग मै आइकै । वपु सों अंग लगाय ॥
एक पालकी बैठि कै । भूप भवन चढि आइ ॥
छं० ॥ २४१ ॥

जगनक का राजा से कहना कि चलकर लाखनसी से मिलिए।

जगनक भाट हजूर गौ । कही खबर जा सोइ ॥
ढीलनि राज पधारिये । मिलिये लाषन लोइ ॥
छं० ॥ २४२ ॥

राजा का ब्रह्मानन्द के साथ सवार होकर आल्हा को लेने और लाखनसी तालनसी से भेट करने को चलना ।

असवारी राजा करी । सँग ब्रह्मानंद लीन ॥
तुरी बैठि परिमाल जू । आल्हनि लावों कीन ॥
छं० ॥ २४३ ॥

आल्हा का लाखनसी तालनसी को साथ लेकर आगे बढ़ना और बीच में राजा परिमाल से मिलना ।

सुनी अरज साम्हैं चले । लायन तालन संग ॥
मिल आइवौ बीच में । भेटे राजन अंग ॥
छं० ॥ २४४ ॥

हनूफाल ॥ चढि चले आल्ह अमान । परिमाल आये जानि ॥
सिर पाव कीन सुअंग । चढि चले आल्हन संग ॥
छं० ॥ २४५ ॥

मिलियौ सु आल्हन आइ । परिमाल हीय लगाइ ॥
मिलि टाक रूप नवीन । चंदल आदर कीन ॥
छं० ॥ २४६ ॥

चालुक्क केसवदास । परिमाल मिलिय हुलास ॥
तोवर सु वोइथ्थ आइ । लगि नृपति कैं मिलि भाइ ॥
छं० ॥ २४७ ॥

चलि आदवा दुव भाइ । मिलि हेत करि परि भाइ ॥
चहुआन मंगल आइ । मिलिवे नरेसुर जाइ ॥
छं० ॥ २४८ ॥

वडगुज्जर सैनिग्ग । मिलिये सु राजन अग्ग ॥
मिलि सत्त कुवरु सु पाल । मिलिये सुराजन लाल ॥
छं० ॥ २४९ ॥

सेंगर सुराय अमान । मिलि रूप भूप अमान ॥
ढिग आइ आल्हन तेग । पट्टान हित मिल वेग ॥
छं० ॥ २५० ॥

नव किए हैवर हद्द । इक हरत ससत दुरिद्द ॥
जयचंद कुसल पुछाइ । फुरमान सीस चढाइ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

दिय आल्ह कारन पाय । परगनैं चारि मंगाय ॥
मंगाय हथ्थिय दोय । समपियौ आल्हन सोय ॥
छं० ॥ २५२ ॥

मंगाय मुत्तिय माल । हीरानि पौचि विसाल ॥
सिर पेंच पंना पान । मिलि जोति भाइय तान ॥
छं० ॥ २५३ ॥

सिरदार लगियौ पाइ । नृप लियौ सीस चढाइ ॥
दिय तुरी तेरह साज । सेवन्न सोज समाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

रानी सुनिकट बुलाइ । निछावर करि दी भाइ ॥
किय अरज मलहन एव । अहबात आल्हा देव ॥
छं० ॥ २५५ ॥

फिरि आल्ह बुल्लिय ताम । मो सीस तुम्हरे काम ॥
मोतीनि आरति कीन । यह भांति आदर दीन ॥
छं० ॥ २५६ ॥

दूहा ॥ आल्हन कज्ज बिदा करि । नृपति हवेली काज ॥
फौज उतारी पंगु की । बागह माउ समाज ॥
छं० ॥ २५७ ॥

देवल रानी गोट रहि । कहि कनवज की बात ॥
बचन कहे जयचंद नै । सो पुनि किय बिख्यात ॥
छं० ॥ २५८ ॥

परिमालदेव का जगनके को बहुत कुछ गांव हाथी आदि देना ।

जगनक को हाथी दिए । चारि गाम आघाट ॥
थाट निवाजि चंदेल नै । करी बडाई भाट ॥
छं० ॥ २५९ ॥

आल्हा के आने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का कन्ह कैमास आदि को बुलाकर युद्ध की तैयारी करने के लिये कहना ।

आल्हा आये सात दिन । भय सुनी प्रथिराज ॥
बोलि कन्ह कैमास भर । कियौ लरन कौ साज ॥
छं० ॥ २६० ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह चहुआन । बोलि कैमास महाभर ॥
बोलि चंद पुंडीर । बोलि चामुंड पुंड वर ॥

बोलि सलप पमार । बोलि पज्जून महामति ॥
बोलिव सभरराय । बोलि कनकेस विरदपति ॥
कमधुज्जराय निट्ठुर बुलिव । अरु बरदाई बुल्लियव ॥
सब मिले सूर सामंत वर । मत्त तत्त सब मतियव ॥
छं० ॥ २६१ ॥

चद का पृथ्वीराज से कहना कि अब युद्ध मे देर न कीजिए, आल्हा कन्नोज से पचास हजार सेना लेकर सात दिन हुए आ गया है ।

दूहा ॥ कहै चद प्रिथिराज सुनि । ढील न करिए नेति ॥
आयो आल्ह कनोज तैं । सहस पचास समेति ॥
छं० ॥ २६२ ॥

चौपाई ॥ आल्हा सहस पचासक ल्यायो । पग जग पर सैन पठायो ॥
आल्हा आय सात दिन बीते । कीजै जुद्ध चदेल चाहीते ॥
छं० ॥ २६३ ॥

पृथ्वीराज का परिमालदेव को पत्र भेजना कि क्षत्रिय धर्म विचार कर हमने दो महीना युद्ध बन्द करे प्रतीक्षा की अब या तो लडो या महोबा छोड़ दो ।

दोय मास हम छावनि कीनी । छत्री धरम कारनै चीनी ॥
अब चदेल जुद्ध वर माँडौ । नातर नगर महोवौ छंडौ ॥
छं० ॥ २६४ ॥

गुन मजरि मोहि साले दासी । धाइल हनै अनाहक तासी ॥
पहले जौम लरन कौ कीनो । अब चदेल कहा बलहीनौ ॥
छं० ॥ २६५ ॥

कवित्त ॥ लिपि पत्री प्रिथिराज । जोग परमाल सु किन्नव ॥
॥ छत्रि धरम धरि सूर । जद्द सुरलोकहि दिन्नव ॥
करै जुद्ध पाधरौ । चदेले घेल फेल कुल ॥
नातर घर तजि ठाम । रहौ आधीन सेव तुल ॥
धरिये धीरज धारना । कादरता सब छडियै ॥

बुल्लाय कुमक कामधुज्ज की । सिंध नाद नृप गज्जिये ॥
छं० ॥ २६६ ॥

चौपाइ ॥ छत्री धरम धरो परिमालह । करी नरेस षग्ग रन ष्यालह ॥
कै तौ ठाम महोबो छंडो । कै सब साज लरन कौ मंडो ॥
छं० ॥ २६७ ॥

पत्र पढ़कर परिमालदेव का आल्हा आदि अपने सब सरदारों को बुलाकर परामर्श करना और लड़ाई आरम्भ करने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

लिय परिमाल पत्रिका बंचिय । सोच करी सज्जन दिल षंचिय ॥
अपनी परिगह सकल बुलाइय । संभरि काज कियौ मति ठाइय ॥
छं० ॥ २६८ ॥

नीराच ॥ बुलाय राज अल्हयं । करंत मत्त षालयं ॥
बुलाय उद्द लीनयं । कुमार दो प्रवीनयं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

बुलाइ काइयं कली । सुचार बुद्धि है भली ॥
बुलाइ राज सीहयं । अनेक जुद्ध जीययं ॥
छं० ॥ २७० ॥

बुलाइ भाट लीनयं । नरेस थप्पि कीनयं ॥
बुलाय वैस वीरयं । चंदेल वीर धीरयं ॥
छं० ॥ २७१ ॥

बुलाय साह सुंदरं । करंत बात अंदरं ॥
गहैरवार रूपयं । सुवग्गरी गजूपयं ॥
छं० ॥ २७२ ॥

तहां समत्त कीनयं । अनेक भर्म लीनयं ॥
पिथौर दूत आययं । जुरन्न जुद्ध ठाययं ॥
छं० ॥ २७३ ॥

सिताब जुद्ध मंडियं । नहीं तौ ठांम छंडियं ॥
बुले सु आल्ह नूपयं । सुनौ चंदेल भूपयं ॥
छं० ॥ २७४ ॥

धिचारि लोग आपनौ । अरिं दल उथप्पनौ ॥
परमार गोहि गोहिल । बघेल ओर मोहिल ॥
छं० ॥ २७५ ॥

कामद्ध क्रूर मामिले । बघेल वागरी चले ॥
जद्दा सुचन्द पौचिय । मिधोर बैंस वीचियं ॥
छं० ॥ २७६ ॥

ससाबुला हडावय । बनाफार जुभारय ॥
गरूर गोहिलोतय । पवै पनीर होतय ॥
छं० ॥ २७७ ॥

बरनि वाल नौतय । चिरत डोड होतय ॥
त्रिपान नद वानिय । कठोर लोह जानिय ॥
छं० ॥ २७८ ॥

पुंडीर दाहिमा मिले । जमहि सिंघु लैं चले ॥
पिलत पारिहारिय । चंदेल सैंन भारिय ॥
छं० ॥ २७९ ॥

सबै सयन्न मिल्लिय । हजोर साठि हल्लिय ॥
पंचास दीन पगुल । कुमक्क राज सगय ॥
छं० ॥ २८० ॥

गयद तीन सेहल । जिल सुपाट अंचल ॥
चंदेल दोई रीसय । दल असेक दीसय ॥
छं० ॥ २८१ ॥

करै संग्राम सुद्धय । पिथोर सौ विरुद्धय ॥
चंदेल चेत कीनय । निकासि डेर दीनय ॥
छं० ॥ २८२ ॥

लिषी पिथोर काजय । करै रन समाजय ॥
मिलत लोह दीतय । दिवस्स दोइ बीतय ॥
छं० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ लिषी पिथोरा कारनैं । सुनि संभरि के राव ॥
दीत वार एकादसी । करै जुद्ध को चाव ॥
छं० ॥ २८४ ॥

चौपाई ॥ पचि लिखि कासीद पठायौ । सिर धरि दिल्लीसुर ढिग आयौ ॥
सुद्ध चाव चंदेल सु कीनौ । यह परिमाल लिओ करि दीनौ ॥
छं० ॥ २८५ ॥

पत्र पढ़कर पृथ्वीराज को आवेश आना और शुक्रवार नौमी को नगारे पर चोट दे लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना ।

दूहा ॥ लियौ वाचि सम्हर धनिय । कियौ जुद्ध कौ चाव ॥
मानौ रावन ऊपरैं । कोप्यौ रघुकुल राव ॥
छं० ॥ २८६ ॥

सुक्रवार नौमी निवटि । सम्हर वीर नरिंद ॥
वैरन धरि परिमाल कौ । भयो नगारे नंद ॥
छं० ॥ २८७ ॥

सेना की तयारी, वीरों के हृदय में युद्ध के उत्साह तथा अप्सराओं के उल्लास का वर्णन ।

चावर नाराच ॥ कीनौं निसानं मद्द पानं विहसि सामंत सूरयं ॥
मरदन कार ए अंग न्हाये पुनि सुठाये पूरियं ॥
उत सुनिय अपक्षर करिय सुछर अंग मंजन कीजयं ॥
बहु फिरैं हरषी बाल सुरषी नैन अंजन दीनयं ॥
छं० ॥ २८८ ॥

हरषे कपाली षुले ताली रुंड माली पूरिनै ॥
चौसठि अंगं वधि उछंगं पान पत्रं नूरनै ॥
पलचरा धावैं गीत गावैं चित्त आवैं मंगलं ॥
चहुआन चंदेलं षेल पेलैं मिलै मेल उदंगलं ॥
छं० ॥ २८९ ॥

चौपाई ॥ सावंत सूर बढ्यौ जुध चावह । सार समाहि संभरी रावह ॥
इले सुघट कब अंगहु लीनौ । सामंत सबै उसाहति दीनौ ॥
छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ सूर कवच बनाय तन । मंगल कीनौ चाव ॥

उतै अपछरा तन सजै । अंजन कीनैं भाव ॥
छं० ॥ २९१ ॥

भुजंगी ॥ इतै सूर न्हाए करैं दान ध्यान । उतै अपछरा अंग मज्जो सुतानं ॥
इतै टोप टंकार कसि सिर उतंगं । उतै अपछरा कंचुकी कस्सि अंगं ॥
छं० ॥ २९२ ॥

इतै सूर मोजाव नावंत भायं । उतै अपछरा नूपरं पारिधायं ॥
इतैं सूर राग बंधे तापतंग । उतै अपछरा चरन पा पहरि जंग ॥
छं० ॥ २९३ ॥

इतै पाग पेंच समारंत सूरं । उतै सीस फूलं गुंधावंत हूरं ॥
इतै सूरमा पाग पै झिलम डारैं । उतै झुंडरं रंभ मागै सवारै ॥
छं० ॥ २९४ ॥

इतैं सूर सर्व परे पग्ग माँजैं । उतै अपछरा भाल पै तिलक साजै ॥
इतै ढाल सूरं अत्तो वच्छ टावै । उतै अपछरा श्रवन ताटंक नावै ॥
छं० ॥ २९५ ॥

इतैं सूर दस्तान हथ्थं सु कीयं । उतैं अपछरा हथ्थ मेंहदी सुदीयं ।
इतै सूर कारके हरी नप लीनै । उतैं अपछरा कंकन पान कीनै ॥
छं० ॥ २९६ ॥

इतै सूर बरछी लिये है अन्यारी । उतै अपछरा हाथ वर मालधारी ॥
इतै सूर तुलसीनि की मालनाई । उतै अपछरा हाथ मोती बनाई ॥
छं० ॥ २९७ ॥

इतै सूर किरवान कम्मान नाई । उतै अपछरा चमकि नैन निचाई ॥
इतै तंग सामंत घोरन लीय । उतै अपछरा साजि विम्मान कीय ॥
छं० ॥ २९८ ॥

कही कब्बि चंद निरख्यौ सुसोई । वरन्नौ समानं परी सूर दोई ॥
छं० ॥ २९९ ॥

उधर परिमालदेव का सेना सजना और नौमी शुक्रवार को आगे बढ़कर दो कोस के अन्तर पर डेरा डालना ।

चौपाई ॥ परी सूर बरनै कवि दोऊ । उत परिमाल सजै दल सोऊ ॥

दोय कोस कौ बीच जु कीन । दुहू दल आय पयानौ दीन ॥
छं० ॥ ३०० ॥

दूहा ॥ नौमी तिथि सुक्रह दिवस । सजे सकल चढ़ि सूर ॥
दोय कोस अंतर करिव । करि मुकाम बल पूर ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

परिमालदेव का आल्हा आदि सब अपने सरदारों को इकट्ठा करके परामर्श करना कि अब क्या कर्तव्य है।

कवित्त ॥ करि मसलति परिमाल । आल्ह ऊदिल ढिग बुल्लिव ॥
अरु काइथ कलियान । धरम धर प्रोहित मिल्लिव ॥
बुल्लिव जगनक भट्ट । बुल्लि लाषन कमधुज्जह ॥
बुल्लिव ताल्हन तुरक । बुल्लियौ भोपति सज्जह ॥
रानी सुबोलि परदै रषी । देवल ढिग्ग विचारियौ ॥
परिमाल कहै सामंत हौ । तत्त सुमत्त विचारियौ ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

चौपाई ॥ बुल्लौ भामासाह सुजानं । राजा आल्हा मातु सुमानं ॥
दावै कारन ढिग बैठारौ । पाछै सरन मतौ सु विचारौ ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

राजा का आल्हा को साथ ले महल में रानी के पास जाना और परामर्श करना।

राजा उठि भीतर को आये । धावै ढिगां आल्ह बैठाये ॥
रानी मल्हन ढिगां बुलाये । पाछें चाते मते घुलाये ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

तेज पिथौरा कौ अति कहियें । तासों जुद्ध किही विधि ठइये ॥
हारे नगर महोबा छूटै । डंड दिये तैं अपजस फूटै ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अब तू स्वामि सांकरैं छंडै । आपन आय फेरि घर मंडै ॥
पवन नीर लौं नरकै परई । ताको साषि व्यास इह धरई ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

फिर देवल दे वुल्लिय बानिय । सुनौ अवन राजा अरु रानिय ॥
नीकौ होइ सो करौ विचार । परिगह बोलि मतौ उचार ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

आल्हा का कहना कि जो स्वामी को विपत्ति में छोडता है वह अनन्त काल तक नर्क भोगता है और जो प्राण का मोह छोड लड़ाई मे मरता है वह सूर्यमंडल को भेदता है।

सुनियो मात आल्ह यों भाषिय । रामायन भारथ की साषिय ॥
स्वामि साकरैं छाडन कहियै । चद सूर तौलो नक सहियै ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

खाइ धान परनोन निहारै । अपनौ अग जूझ सौ टारै ॥
जासौं जार जाति सो कहियै । असल बीज रजपूत न कहियै ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

स्वामी रायै आपन मरै । छत्री धर्म सीस पर धरै ॥
माया घर की दूरि सुषेदै । वै नर सूरज म डल भेदै ॥
छं० ॥ ३१० ॥

मा का कहना कि मुझको बेटों का मोह नहीं है ।

मोहि आस राजा की भावै । वेटा की कछु दया न आवै ॥
वे जीवत सती कहि नारी । पारवती को अ स निहारी ॥
छं० ॥ ३११ ॥

आल्हा का कहना कि मैं पृथ्वीराज की फ़ौज को मार गिराऊंगा सब सावतों को जीतूंगा, माता तुम्हारी लज्या निबाहूगा।

बोल्यौ आल्ह सुनौ तुम माता । कल्हि माझ रायै अस बातो ॥
संभरीस की फौजा मारो । सामतनि विहड करि डारो ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

मै कुल काज चढाऊं पानी । भुव म डल सब हीनै जानी ॥
ईदल की रखवारी कीजो । देवल दे की लज्ज निहिज्यौ ॥
छं० ॥ ३१३ ॥

रानी मल्हन दे का कहना कि दंड दकर देश की रक्षा करो उनके सामंतों की वीरता की बड़ाई बहुत सुनी जाती है।

मल्हन दे फिरि बोली बानिय। आल्हा सुनौ हमारी बानिय॥
राषा देस दंड दे गुनिये। सामंत सूर विषम अति सुनिये॥
छं० ॥ ३१४ ॥

ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी। अब क्या है, अब लड़ो। यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे तब राजा का कुछ होगा।

ऊदिल तमकि बैन सुनि कही। पहिलै ऐसी काहि न लही।
घाइल मारत मैं बरजानै। अब क्यों माता भयौ सयानै॥
छं० ॥ ३१५ ॥

दूहा ॥ च्यार वार बिनती करी। मानी नहीं लगार॥
अब क्यों राजा समझियौ। लषि सामंतन भार॥
छं० ॥ ३१६ ॥

हम्म उभैं निरभैं नहीं। तुमरी बुरी नरेस॥
कामि आवतैं छंडिहैं। नगर महोबा देस॥
छं० ॥ ३१७ ॥

तुम आगें परिमाल नृप। मरिहैं दोनो सज्ज॥
अवस बरैं सुर अच्छरी। राज चंदेल सुकज्ज॥
छं० ॥ ३१८ ॥

देवलदे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती, हे बेटा! तुमलोग चंदेल का नमक अदा करो।

होनहार कैसे मिटै। कहि देवल दे सुद्ध॥
लौन सीस चंदेल कौ। पूत उजालौ दुद्ध॥
छं० ॥ ३१९ ॥

राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना, प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गाँव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िए देर न कीजिए।

मसलति करि बाहर कढे। ऊदिल आल्ह नरेस ॥
उत रैयत्ति पुकारि कौं। चावंड जार्‌यौ देस ॥
छं० ॥ ३२० ॥

जारि उजारि जु गाव सब। लूटी निद्धि अचेत ॥
धरौ लरौ घ देस तुम। थोरे जोरे हेत ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कल्ह लड़ाई करना।

उठे आल्ह वरजे नृपति। आजु सनीचर वार ॥
कालिह करै पहुआन सौ। चौरै जुझ्झ विचार ॥
छं० ॥ ३२२ ॥

आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रिय धर्म नहीं है। इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कहकर सब वीरों को उत्तेजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कल्ह मैं पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा।

जा धरती को पाय करि। धूवा जु देषै सोइ ॥
कहै आल्ह परिमाल सौ। छत्री धर्म न होय ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

पावँद की देषै पुरी। अग रखावन सूर ॥
कहै आल्ह रजपूत कौ। दीजे नरक करूर ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पावँद घर को ताकिकै। इन्द्रिय रस न कराय॥
कहै आल्ह उन नरन कौ। गहरे नरक पराय ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

बिगरी देवे नृपति की। चाकर कसक न होय॥
साठि सहस लौ नर्क में। भ्रमत रहै नर सोय॥
छं० ॥ ३२६ ॥

वैरी सौं हाँसी करै। यार धनी कौ सुद्ध॥
कहै आल्ह उन नरन कौ। कीजै स्वान प्रसिद्ध॥
छं० ॥ ३२७ ॥

चौपाई। एती मैं बानी उच्चारी। अब लगि यह मैं सबै सम्हारी।
काल्हि फौज पीथल की षंडौ। सामंतनि के जुद्ध बिहंडौ।
छं० ॥ ३२८॥

दूहा। आल्ह कही सबही सुनत। पन की मन की बात।
सूरज मंडल भेदिहैं। ते क्षत्री साक्षात॥
छं० ॥ ३२९ ॥

राजन आगैं पैज करि। कही बनाफर सोय॥
प्रात करौं प्रिथीराज सौं। जंग विरुद्ध न होय॥
छं० ॥ ३३० ॥

राव को विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिए सवेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

सबको यह नृप सीष दै। गेर महल फिरि होय॥
रानी सों मसलति करै। मन धरि चिंता होय॥
छं० ॥ ३३१ ॥

चौपाई॥ बोल चंदेल सुनौ हो रानिय। अवतौ दिवस पाछिलौ मानिय॥
आय चढ्यौ चहुआन अषारौ। करता बिन कोऊ न उबारौ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

रानी कहै सुनौ नृप राज। करिये सैन सुएन समाज॥
प्रात जुद्ध करियौ अद्भूतह। मिलियौ आन दुहु दल दूतह॥
छं० ॥ ३३३ ॥

आल्हा ऊदल अपने महल में गए, और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास मे उन्होने आनन्द से रात बिताई।

आल्हन गये हवेली आप्पन। उदिल देवल मिले सु जातन ॥
भोजन किए इकट्ठे होइ। चौथौ उद्दिल मिलियौ सोइ ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन करिकै पौढौ जाइ। आप आप की त्रियें बुलाइ ॥
गैर महल है कद्रप घुले। अधरा रस अमृत फल फले ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

परस परसपर आरस कीनौ। यह विधि ऊदिल रंग रस भीनौ ॥
अधरनि लागि सुप्रेम बढायौ। पाछे भष चीरा रस छायौ ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

पहर रात रहे स्नान कर गोरक्षनाथ का ध्यान, होम, नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का साम्हना करने को घोडे पर सवार हो दोनो भाई का चलना।

कवित्त ॥ पहरि निसा पाछिलिय। न्हान कौ नीर मंगायौ ॥
करि दातौन सनान। ध्यान गोरष को ध्यायौ ॥
कियव बनाफर होम। नवग्रह पूजा कीनव ॥
छनुपताषा जच धारि। करि कटह लीनव ॥
आइयौ तुरिय पहलै पहल। समर समै तापरे चढय ॥
चहुआन पास लै पहु चहौ। छूरन पर धायन चढय ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

ऊदल का मा को आकर प्रणाम करना, मा का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बनाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो।

ऊदिल वीर बुलाय। बोलि इंदल सुत लीनौ ॥
देवी आगे आय। चाप प्रनाम सु किन्नौ ॥
पीथौरा ऊपरौ। पैज करिकै चढि जावहु ॥

सामंतनि सॉकरै । स्वामि छुट मारि दृढ़ावहु ॥
उज्जल जस जस राज कौ । देवल दे उज्जल करहु ॥
परचंड बात परिमाल करि । सीस ईस रुंडह धरहु ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ऊदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खेलूँगा और पृथ्वीराज को भगाऊँगा ।

चौपाई ॥ इह सुनि ऊदिल बचन उचारिव । भाई तुम नीकौ जु बिचारिव ॥
सांमतनि सौं षग्गन षेलहुं । प्रिथीराज के थट्टनि पेलहुं ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के काम में सिर देकर स्वर्ग का राज्य करो ।

देवल कहै सुनौं पुत दोइय । नौन हलाल करौ तुम सोइय ॥
षावंद आगैं सीस जुदीजै । निरभै राज सुरग कौ लीजै ॥
छं० ॥ ३४० ॥

ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुन कर सती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है ।

ठकुरानी ऊदिल की बोलिय । सुनियहु सास बचन यह षोलिय ॥
निहचैं बेद नरक तेहि भाषे । पिय कौ मरत जिया तन राषै ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

दूहा ॥ पीयहिं मरत जीया रहै । करै पुत्र की आस ॥
वह नारी निहचै करै । घोर नरक में बास ॥
छं० ॥ ३४२ ॥

पियन छोड़ जो ना मरै । नारी सती न होय ॥
अगत जाय भटकत फिरै । कही गोरजा सोय ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का सबेरे उठकर नगारे पर चोट दिलाना और अल्हा को बुलाना।

चौपाई ॥ राजा जागि नकारो कीनौ। आल्हा काजै आइस दीनौ॥
सिघ नाद बाजी सहनाइ। बनी पष्षरै हेमर ठाई॥
छं० ॥ ३४४ ॥

आल्हा ऊदल को बुलाकर नागौर की ओर बढने की तैय्यारी करना। तैय्यारी का वर्णन।

पद्धरी ॥ बुलाय आल्ह ऊदिल राज। कीनौ नगोरा चलु बम्म साज॥
साजियौ साज अनेक जोध। सामत सूर करि करिव क्रोध॥
छं० ॥ ३४५ ॥
बुलाय आल्ह नृप अग्ग लीन। बिलहन्न राज बाटन्न कीन॥
अरि दिठ्ठ दीन आल्हन्न काज। मानिक्क दीन पन्नान साज॥
छं० ॥ ३४६ ॥
दलठेल तुरिय आरब उच्च। समपियौ राज उद्दिल समुच्च॥
हारिद् काज हरि बाज दीन। प धार व स उपज्यौ नवीन॥
छं० ॥ ३४७ ॥
गोयद काज दिय मृग्गराज। पर काज देस टट्टी समाज॥
वो दला दीन नव लेस सोय। उपजियौ कच्छ वर सुभट लोय॥
छं० ॥ ४८ ॥
हजि पास दीन भोपत्ति काज। कलिब्बी ऊंच नृप लियौ बाज॥
तारैन काज दिये तेज रूप। ऐराकि जात लियो नप्प नूप॥
छं० ॥ ३४९ ॥
जगनक्क काज हय मोर दीन। दस ठेलि तुरी सुष अग्ग कीन॥
पासे सु तुरिय ग्यारह हजार। दीनै सुबाट करि अरि बिचार॥
छं० ॥ ३५० ॥
हज्जार साठि परिमाल सैन। सज्जियौ सार चदेल तैन॥
पचास सहस प गुर सुदीन। चदेल काज परनाम कीन॥
छं० ॥ ३५१ ॥

पच्चास पांच धरि पील अग्ग । गाजंत मद्द चालै सुरग्ग ॥
बैठियौ वीर हय आल्ह सोय । परिमाल राज ऊचर्यो लोय ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

पंचसौ पील चढि जसरथ्थ नंद । चापू चलाइ गुर कारह, दुंद ॥
उच्चरै बनाफर सुनि चंदेल । हेमर चलाय दल करौ ठेल ।
छं० ॥ ३५३ ॥

परिहार उच्च सब सुनिव राज । असुर सु आल्ह चर रहिव बाज ॥
बैठंत पील पच सबद पूर । परिहि भौरतौ सीस सूर ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

यह सुनिय वीर चहुआन रान । बज्जाय वन्न सामुह चलान ॥
पष अग्ग काए पुंडीर चंद । बिहसियौ बीर सुनि कान सुद्ध ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

दिष्षी सुफौज चंदेल राव । कापंत देह डग भगत पांव ॥
द्रग मूंदि कंपि आल्हा बुलाय । कालिंज मेल सुष मोहि लाय ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

दिज्जिय सुदंड प्रिथिराज काज । छंडहि सुराज सग्हर समाज ॥
दिज्जिय सुताह अधदेस बांटि । चहुआन सँग संगरन मंडि ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

परिमाल देव का डर से काँपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीतकर मुझे कालिञ्जर पहुँचाओगे तो मैं आधा राज्य, पचास लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हें दूँगा।

चौपाई ॥ कॉपि कह्यौ परिमाल नरेसह । आल्हा आधौ दीजै देसह ॥
लाष पचास द्रव्य अरु कन्या । दै चहुआन मिलाइसु मन्या ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

दूहा ॥ देषि कान्ह परिमाल नृप । वचन कहै अति अंध ॥
मोहि कलिंजर मेलिये । दै धर अद्ध सबंध ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

चन्देल की सेना का आगे बढ़ना।

महला भोंपति सग है। दल सौ कढिव चंदेल ॥
पिली फौज चदल की। भिली बनाफर षेल ॥
छ० ॥ ३६० ॥

चन्देल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना। उधर आल्हा और ब्रम्हानन्द का अपनी सेना को सजना।

मोतीदाम ॥ दिषि राजन फौज चंदेल पिली। दरियाव समान अमान इली ॥
इक लष्य बिलोकिय सैन घनो। चहुआन बनाइय चारि अनी ॥
छ० ॥ ३६१ ॥
मुष अग्ग सु कन्ह अमान कियौ। भर चद महीसुर सग दियौ ॥
कमधज्ज सु निड्ढुर लाघन ये। अंग स जमराय सुभावन ये ॥
छ० ॥ ३६२ ॥
कनक बडगुज्जर सार ग ये। जहँ आल्ह कुँआर से तार ग ये ॥
अचलेस नवल हरीसिघ से। जहँ जादो राम रिषी रिष ये ॥
छ० ॥ ३६३ ॥
इतनै सिरदार अगै धरिये। फिरि दाहनि बाजुवकी भरिये॥
कछवाइ पजून रू पाल्ह नय। नरसिघ पहारसुत बरय ॥
छ० ॥ ३६४ ॥
तइँ धावर धीर समो बरिय। बिझुराज समाज समो धरय ॥
पम्मार सलष्य सुय बरय। हनवत समान छठो बरय ॥
छ० ॥ ३६५ ॥
तइँ षीचिय देव रजैत पिले। सँग हाहुलि राउ हमीर चले ॥
दिसि दाहन सामत ए करिय। दिसि बाइय भौह चँदेल किय ॥
छ० ॥ ३६६ ॥
अचलेस मलेसिय सग दिय। दसि दच्छिन सावँत भूमि रय ॥
दोय वीर हमीर गभीर नर। अति ताइँय सभरि इँस वर ॥
छ० ॥ ३६७॥

तहँ माल चंदेलय पूरनयं । तहं बाम दिसा मुख नूर नयं ॥
सइ साँमल साँषुल संग दियं । इतनें सिरदार सुधाम कियं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

कयमास कमध्वज विक्रमयं । तहं टांक सु चाड, सु विक्रमयं ॥
जहां गोड सपत्तिय मोर दयं । तहं षेत षगार सुचार भयं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

कयमासु रु सम्हरि मध्य हुवं । चतुरंगिय सेन दिठालि दुवं ॥
हलकारिय सैन नरेसु रयं । भर चावंड राय बली धरयं ॥
छं० ॥ ३७० ॥

उत आल्हन फौज सु होय कियं । हलकारि बनाफर लोह लियं ॥
कामधज्ज सुलाषन अंग कियं । चहुआन सुमंगल संग दियं ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

तहँ रूप मी कूंवर वांम सियं । सिकवाल सें कूंवर पाल हियं ।
तहँ चालुक सारँग वीर वरं । जहँ जादव रैंनिसि सीस धरं ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

वर तालहन वेग हरोल कियं । हय बीस हजार सु संग दियं ॥
बिचि तीन हजार की गोल रची । सिरदार सुलष्षन मध्य सची ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

तिन पूछि सु आल्ह बनाफरयं । जिन अग्ग सु जुद्ध लिये भरियं ॥
दिसि बांइय मोहन दास कियं । सिर कासी जुद्ध प्रताप लियं ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

अरि सिंघ सु संग समाज बरं । पंमार सुसाजि चल्यो अमरं ॥
तहं सैंगर राय अमान भये । जहं वांम दिसा भरनैंन लिये ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

दिसि दाहनि वीरम वैर पुरं । द्वतियं दलकाइ पतेज नरं ॥
भरनं अति तोवर मोहमयं । परिमाल सबै दल सोहनियं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

महकुन्न सु वागरि धारि हियं । इतनै भर दाहनि फौज कियं ॥
बड़ गुज्जर देव करन्न मिले । दस होइ हजार चँदेल चले ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

चौपाई ॥ ब्रह्मानन्द आल्ह विचि सार । आगैं उदिल वघु सुधार ॥
वाय दिसा कौ मोहन कीनौ । दक्षन पूरनमल्ल सु दीनौ ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

पग हजार पचास चले पिल्लि । और पचास चदेलन के मिल्लि ॥
चारि फौज आल्हन सजि सार । प्रिथीराज के वीस हजार ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

परिमाल देव का पृथ्वीराज की सेना देखकर डरकर दस हजार सेना ले कालिञ्जर की ओर भाग जाना ।

दूहा ॥ देषि फौज परिमाल जू । कापि चल्यौ तजि पान ॥
दस हज्जारह संग लै । तज्यो महोवौ थान ॥
छं० ॥ ३८० ॥

कुँवर ब्रह्मानन्द का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना ।

ब्रह्मादित्ति फिरि आइयौ । सिर छत्री ध्रम धारि ॥
प्रिथीराज सों पा धरै । वज्जावन तरवारि ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

युद्ध आरम्भ होना । कन्ह चौहान का घोर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ दुहौ सेन मिल्ले दुहौ वाग लीनी । दुहौ धारि ध्रम्मं वरं द्रष्ट कीनी ॥
दुहौ सांगि कड्ढी दुहौ कोरवट्टी । दुहौ वार वानी सवद्दं उचट्टी ॥
छं० ॥ ३८२ ॥

वजै भेरि नीसान जंगी तवल्लं । वजै नाद तुरही नफेरी सुवुल्लं ॥
दुहौ नाद कीनै सुरं सष भारी । दुहौ नाम हक्कै सुहां सां उचारी
छं० ॥ ३८३ ॥

कहै चंद कव्वी सुमी चाहुआनं । चलायो गरट्ठं वांधि वांई सुजानं ॥
मुषं पाठ जपै सु ईसं भवानी । मिलाये वली वाहु धावै जुवानी ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

अगो कीन चंदेल सेना सुहथ्थी । रहै पुट्ठि असवार भर भार सथ्थी ॥
चलायौ मुषं कन्ह पट्टी उठाई । किधों रावनै राम भौहै चढाई ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

अगे आय हाथीन पै हथ्थ वाहै। बरं दंत तानै उठानं अमाहै ॥
उपारंत दंतं बजा वाहु जोरं। गहै पूछ सुंडं वजावै अमोरं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कहूं जे भुसुंडन्नि पै तेग तावैं। कहूं कोपि करि तष्षि धरनी मिलावैं॥
कहूं भाव सहैं कहूं जाय मारैं। कहूं धीक बक्कैं कहूं कौ प्रचारैं॥
छं० ॥ ३८७ ॥

चहू आन बल सौं कियौ पील कानी। मुषं मंच बोलंत संकर भवानी॥
हकं हांक बक्कं दहै सैन सोई। बजावै बरं लोह निरमोह होई ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

करै षंड षडं धटै धाउ धारै। बिकट्टं बली बाहु पट्टं निहारै ॥
चलावंत तीरं गहीरं गुमानी। षनक्कंत धरनी भनक्कै सु बानी ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

उरं सेल लग्गो परं पार होई। गिरै नट्ट वासे कला चूक होई ॥
वहै कंध किरवान वंधं षलावै। परै मुंड धरती सुरुंडं नचावै ॥
छं० ॥ ३९० ॥

गुरज्जै वहै सीस रीसं रमानी। सिर होत चूतं बिषूतं जवानी ॥
वहै सुंदरंगं सार धारत्त छत्तौ। परै पील मनवार धरनी बिरत्तौ ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

करै बार हाकं कटारी करूरं। करै मार माती परै चक्क चूरं ॥
इसी भांति जुद्ध कियौ कन्ह भारी। मिथ्यो धयान मानं षुली रुद्र तारी ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

कन्ह का अपनी वीरता से सेना में हलचल मचा देना। युद्ध का वर्णन।

दूहा ॥ कन्ह चाटक चोगुनौ कहर। हटक परी दल मांहि।
भटक वीर भागे बली। कोउ पलट्टै नांहि ॥
छं० ॥ ३९३ ॥

रसावला ॥ कन्ह कोप्यौ तबै। कौन जुद्धं जबै ॥

धाय रूधो वली । सर्व फौजै हली ॥

छ० ॥ ३९४ ॥

चाय पाय गहै । ढारि धरनी महै ॥
कोय वज्र किय । पाय सैना लिय ॥

छ० ॥ ३९५ ॥

गाय रामं दुषं । धाय हट्टे मुष ॥
वीर नाद जचै । चाय कोय मर्कै ॥

छ० ॥ ३९६ ॥

छाय सुरगा रह्यौ । भाय हस नह्यौ ॥
धाय बोलै घटं । ठाय पत्र पट ॥

छ० ॥ ३९७ ॥

ढाय रावै नर । बाय वाहै वर ॥
छाय नापै दलं । ताय तेग कल ॥

छं० ॥ ३९८ ॥

धाय वीर वली । दाप दौय दुली ॥
धाय पारे धर । नाय वथ्थ वर ॥

छ० ॥ ३९९ ॥

पाप टूटै फह । फाय वेल फह ॥
घाय वज्रै वर । भाय दोरै वर ॥

छ० ४०० ॥

पाय नारी मल । ज्वाप ज्वाल जल ॥
सैन कपै सवै । कन्ह देषे जवै ॥

छ० ॥ ४०१ ॥

पाय लीने पग । हस लागे मग ॥
सैन कपै सवै । कान्ह देषे जवै ॥

छ० ॥ ४०२ ।

दूहा ॥ कान्ह पानि देष्यो जवै । भग्यो सेन चदेल ॥
हनि हाथी हल कान के । सुरिमोहरा रन ठेल ॥

छ० ॥ ४०३ ॥

अपनी सेना को कटते देख कर आल्हा का अपनी ओर के सरदारों को इकट्ठा करके ललकारना।

कवित्त ॥ देषि पराक्रम आल्ह । मल्ह लाषन सो बुल्लिव ॥
तो खानि वेग पठान । रूप येती पग घुल्लिव ॥
सोलंषी केहरी । वैस कल्यान वीर वर ॥
बोड्थ तोंवर वेहसि । सूर सेंगर गुमान धर ॥
धुर धवल सीस धारवि धरनि । मुत्ति आस संगर करिय ॥
सव सूर बीर एकत्त हुव । धारा तीरथ आदरिय॥
छं० ॥ ४०४ ॥

दूहा ॥ आल्हनि ऊदलि जायकै । संमाल्यो सव सैन ॥
सकल सूरमा टेरिकै । रन मन आन्यौ हैन ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

पद्धरी ॥ धावंत आल्ह सम्हारि सैन । सिरदार चारि बर कह्यौ तैन ॥
गोयंद्र राउ हरियंद्र सोय । येकल चलाय दल लष्प लोय ।
छं० ॥ ४०६ ॥

मोरीय रूप सैंगर अमान । जादवा दंद बल लह्यौ पान ॥
मंगल चुहान तोबर समथ्थ । लालक्ष केस रन समर पथ्थ ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

बड़गुज्जर रन महाबाहु । सुकर्म्म बैस बड़ समर चाहु ॥
नर हरिय गौड़ कायथ कल्यान । सैंगर बरेह जे जल्ह ज्वान ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

बघेल और पूरन अमीर । षग्गा सषग्ग परमा सनीर॥
लोधी सु धीर बर धरे धर्म्म । ईदल सुसोम वंसी सु कर्म्म ॥
छं ॥ ४०९ ॥

गोतम गुज्जार पल्हन पमार । गोकुल सु बघेला व्यरचि सार ॥
भगवान सूर चंदेल चित्त । डोंगरसि देव दीवान रत्त ॥
छं ॥ ४१० ॥

जगनक्क भट्ट जल्हन जवान । ईसुर सुवान यौ रोर पान ॥
कायथ्थ कैसना कम्म चंद । मकरंद और श्रीवास दंद ॥
छं० ॥ ४११ ॥

बरही सुदेव कृत दुरित जोर । गोवा कपाल जूझन अमोर ॥
बछ गोत जुद्ध जुत तेग बाह । अठ मौ पाहनि मत राय गाह ॥
छं० ॥ ४१२ ॥

भिग्यौ सु भूपनि रनय सूर । कछवाह राम लिये तूर ॥
गम्भीर वेग आजानबाह । सुर को बसत नित समर चाह ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

अनुरुद्ध सिंघ सैंगर भुवाल । बिरसिंघ कट्ट है आल्ह काल ॥
जटवार जाट कमनेत पूर । धवरा सु राय धुरवस सूर ॥
छं० ॥ ४१४ ॥

ऐते सु इकट्टे भये जोध । सामंत सूर पर करह क्रोध ॥
परिमाल सथ्थ समरथ्थ देषि । सामंत सूर सब नयन पेषि ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कैमास चंद पुंडीर जोय । निड्डुरह जैत पज्जून होय ॥
हाहुली राय हम्मीर वीर । सुलष पम्मार सज्ज्यौ गहीर ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

रावत्त राम तोंवर पहार । सजम्म राय रन विषम सार ॥
हौ अतिताय चहुआन वंक । नरनाह कन्ह अग्गे निसंक ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

चावंड राय उप्पर अमान । उप्पर करन सौना सुजान ॥
निड्डुरह राय चहुआन संग । लष्पन कमद्ध दल दयो पग ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

परिमाल संग लष्पन सु धाय । प्रिथिराज सैन निड्डुर सहाय ॥
भाई सु दोय वगमेल कीन । गह चरन हक्कि किरवान लीन ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

जयचन्द के भतीजे लाखनसी का घोर युद्ध करना । लाखन सी की बीरता का वर्णन ।

दूहा ॥ लाखनसी परिमाल जू। निड्डुर डर चहुआन ॥
दुप सामंत सु आहरे। कमधुज सैन सुजान ॥
छं० ॥ ४२० ॥

चौपाई ॥ लाषन जैचंद बंधव नंदन। निड्डुर राय भतीजा द्वंदन ॥
दोऊ बीर बाहुरे जंगह। दल चंदेल सम्हारी अंगह ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

मोतीदाम ॥ मंडि निड्डुर लाषन सीह नरं। चहुआन चंदेल सु निरषि भरं
कमधुज्ज सो दोउय वार अरे। बहु लाज जंजीरन सौं जकरै ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

हलकार कियं बल धारि बपं। निरषै चहुआन चंदेल अपं ॥
बर जंचिय मंचिय लाग उरं। वपु फुट्टय बीर बंबार परं ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

लगि तीर सनाह न पार रुषं। मछरी बर जार मै काढि मुषं ॥
लगि सैन दुहौं बप पेलि कियं। निकसै फन पंनग बार वियं ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

किरवान लगैं बलवान हथं। चब्बूज मनों ढरकंत जथं ॥
जमदाढ़ लगै करि गाढ़ सह्रू। दुसह्रौ कर काढ़ि अटारि वह्रू ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

इक सथ्थ लरें बल वाय वली। तहं श्रोनित की सलिता जु चली ॥
गहि दंत सुमंत उपारि लियं। कटि पीलनि डील प्रहार कियं ॥
छं० ॥ ४२६ ॥

उचकाय कै पूछ बली धुरयं। हनवंत सुद्रोनगिरी गहियं ॥
हय के गहि पाय पटक्क धरं। उड़ि हंस चले मिलिकैं अगरं ॥
छं० ॥ ४२७ ॥

गहकै कर दोय उपाटि लियं। अरि सेन समूह सबै दहियं ॥
उड़ रेनु अकास अपार छयं। नहि सूझत अच्छन भास अयं ॥
छं० ॥ ४२८ ॥

यह भांति लरैं कमधुज्ज बली। चहुआन चंदेल की फौज हली ॥

अप अप्प विगारि कै रोस रुध । विफरै वर वग्घ सु दोइ जुध ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

दूहा ॥ लाषन निड्डुर राय दुहु । कमधुज सुदोव जवान ॥
आहरिए समर सकज्ज । अमर सीस समान ॥
छं० ॥ ४३० ॥

कवित्त ॥ निड्डुर राय कमधज । बधु जयचंद सुतन कहु ॥
लाषन सी राठौर । अतुल पगान मान सहु ॥
चाहुआन चदेल । मिले दल मेल षेल सजि ॥
भाई भाई विरचि । वीर निस्सान पान गजि ॥
पिष्षत अनिय दोई धनिय । लषि लेय चढा परिये प्रगट ॥
परिमाल और प्रिथिराज ढिल । स्वामि काम सौपत धटि ॥
छं० ॥ ४३१ ॥

लाषन सी उप्परै । भरि तालनसी आयव ॥
मोरिय रूप जुधीर । इद आद्व चलायव ॥
मगलसी चहुआन । तँवर उध्धान नाह नर ॥
कुवर पाल सिकवार । दोत चालुक केसो भर ॥
वड़ गुज्जर सौनिग सरस । सैगर राय अमान सजि ॥
लाषन हमीर येते भिरन । आय पगु कुमक्क सजि ॥
छं० ॥ ४३२ ॥

निड्डुर राय सहाय । चले सामत मत्त धरि ॥
कान्ह जयत कैमास । लष नरसिंह बच करि ॥
पालन धौ पज्जोन । वीर तौवर पहार वर ॥
पिले पते सामत । हथ्थ साम हजार कर ॥
दुहु सैन एन दिष्षियव । नयन धाय पग्गो सुहथ ॥
चहुआन वीर चदेल ढिल । प्रथम लोहि लीनौ सुमथ ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

पद्धरी ॥ विरचियौ लोह लाषन सुधाय । तासीय कोपि निड्डुर सहाय ॥
वज्ज वजावहु गल्ल गरजि नाग । सज्जियौ सैन उत्तग वाग ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

हलकारि श्रिष्ट किलकारि दोय। हनुवंत सकति पढि उकति सोय ॥
लष्षन अरद्द बजरंग वीर। निड्डुर अराधि सकती गहीर ॥
छं ॥ ४३५ ॥

हंकारि सद्द बल करत हांक। तिहु लोक मद्धि चलि बढ़िय धांक ॥
बिध फुरैं बीर वानैंति वाहि। मंगल तुरंग सव दिये ढाहि ॥
छं० ॥ ४३६ ॥

पारंत दंत मारंत पील। धारंत तेग अति तेग डील ॥
गहि सुंड मुंड फेरंत पाइ। गहि लोमछ हाथिन्नि गाहि ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

हंमर उठाय पटकेत भूमि। अस्वार देह होय फांक झूमि।
वाहंत वान वलवान एक। टूटंत अंग फट्टंत फेक ॥
छं० ॥ ४३८ ॥

छूटैंत बंदूकैं सलक कद्द। धरनी पताल पर पूर सद्द ॥
करि सेल षेल बगमेल दोय। निकरंत पार वर नाग लोय ॥
छं० ॥ ४३९ ॥

दुहुं तेग बेग लगि कंध झुंड। कढेरत पिंड धर परत मुंड ॥
लागत कटारि तन हीक वार। ऊची अटारि जनु षुले द्वार ॥
छं० ॥ ४४० ॥

रज्जिक बसन्न पीटंत कोपि। फन करत नाग भीजंत रोपि ॥
वादंत मुष्टिका रूष्टि भाल। निक्करंत आंच द्वै श्रोन लाल ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

जादवां द्वंद मोरी सरूप। मंगल चहुआन मडि मंगल रूप ॥
वोइथ तौंवर भर हथ्थ वाहि। कूंवर सुधाय जादौं सहाय ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

सौंनिग्ग राव सेरं सु लाज। तालन पठान सजि समर काज ॥
हज्जार संग पचास भीर। लाषन सुबीर सजि बंग भीर ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

वाहंत तेग बिकरंत आप। इक सथ्थ होय दौरे उताप ॥

दूक्कलौ कियौ निड्डु रस चौज । पच्चास सहस जयचद फौज ॥
छ० ॥ ४४४ ॥

धावत तेग बाहत रूक । लपटत लाय उट्टत जूक ॥
दूक्कलो लग्यौ निद्दुर नरेस । दौरयौ सुकन्ह कैमास तेस ॥
छ० ॥ ४४५ ॥

पज्जून सलष मिलि जैत जोर । नरसिंघ सिंघ चलियौ अजोर ॥
कीने सु चले सामंत चोज । हंकियौ आय विचि पग फौज ॥
छ० ॥ ४४६ ॥

षुलियं सु अष्पि पट्टी सु कन्ह । उठत रोस भए लाल वन्ह ॥
सामंह पिल्यो तालन्ह वेग । आयौ सुकन्ह पर कड्ढि तेग ॥
छ० ॥ ४४७ ॥

कीनौ सह मंगल गरजि चाय । दीनी सुकन्ह को कंध आय ॥
घूमियौ कन्ह किरवान चोट । पीछै सु कन्ह हनि कुंत चोट ॥
छ० ॥ ४४८ ॥

फुट्यो पट्टानह भर समेति । भेदी सुधत्त तरवारि षेत ॥
फिरि दई आय कयमास तोर । सिर पर्यो टूटि उठियौ सु घोर ॥
छ० ॥ ४४९ ॥

हनियौ पठान सैनीय देषि । चलियौ सु साजि सैगर सु पेषि ॥
आयौ पजौन सैगर सु अग्ग । लागियौ कुंत छाती सुलग्ग ॥
छ० ॥ ४५० ॥

पज्जौन दई किरवान धाय । दीनौ समेत सगर पपाय ॥
दिष्षियं रूप मोरी पजौन । आइयौ सत्त सामंत तौन ॥
छ० ॥ ४५१ ॥

मोरियौ रूप मंगल चुहान । जादुवा हद चंदेल मान ॥
मालून सुकेसव समर सोय । अठभैया अत्ति उम्मडि दोय ॥
छ० ॥ ४५२ ॥

नारैन नर बद्नि चाढि वीर । पज्जौन सीस साजिय गंभीर ॥
मचकंत धरा चलकंत सेस । कसकंत पारकं चंदेल देस ॥
छ० ॥ ४५३ ॥

वाज्जंत वज्ज कर-सवर सात। मनु करत अंत परवत निपात॥
पज्जौन कोपि लिय तेग हथ्थ। मारियौ राय संगर समथ्थ ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

फूथ्थौ सुदेह कथ्थो तुरंग। धर भई लोल रत्ती सुरंग ॥
जादवा दंद चंदेल मानि । पकरयौ मथ्थ पज्जून पान ॥
छं० ॥ ४५५ ॥

हसर समेति धर परिय राय। फेरिय सुसीस कर मसकि ताय॥
भजि सुसथ्थ किय समर छाड़ि। उभ्भौ पजौन रन माहि टाड़ि।
छं० ॥ ४५६ ॥

जैयचन्द की सेना का भागना।

कवित्त॥ हनि ताल्हन पठान। कान्ह काढ़े सुप्रान रन॥
सैनह संगर रूप। मानि चंदेल परे तन ॥
माल्हन केसव दास। पासि परिगह सम सुम्भव ॥
कारबाहै कूरम्भ। जोर जम लोकह जुत्तव ॥
बारह हजार रजपूत कटि। हाथी पंच जु देस दल ॥
जयचंद सेनि मुरि करि चलिय। परिय फौज सामंत हल ॥
छं० ॥ ४५७ ॥

दूहा॥ हाथी पंच तुरंग सथ। अर रजपूत पचास ॥
भइ पजून सौं मोरछा। झूते परे संग पास ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

अपनी सेना को भागती देख लाखन सी का ललकारना। सेना का फिर लौटकर लड़ने के लिये डट जाना॥

भगिय फौज लष्षन लषिय। ताल्हन आए कामि ॥
हांक मारि जयचंद दल। बल करिकैं फिरि आनि ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

चौपाई॥ ताल्हन परे पठान सु जंगह। पंच परे सिरदार उमंगह ॥
बारह सहस जंग रन झूते। हाथी तीस मतंगह झूते ॥
छं० ॥ ४६० ॥

मुरछे राय पजून सु सोई। हाथी पंच महामद होई ॥

सगत परे पचास जवानह । ऊपर रन कीनौ चहुवानह ॥
छ० ॥ ४६१ ॥

भाजी फौज पगं की सोई । सो लाषन देषौ दग दोई ॥
बानी कही रत्त करि नैना । फिरि यौ आव पंग की सेना ॥
छ० ॥ ४६२ ॥

दूहा । बानी सुनि सैना फिरी । लाषन कही निराट ॥
घेरयौ निढ्ढुर आय के । फिरे सोमुहे थाट ॥ छ० ॥ ४६३ ॥

युद्ध का वर्णन । लाखन सी का मारा जाना । जयचन्द की सेना का भागना ॥

मोतीदाम ॥ सुनी दल लष्पन बानी सोय । किये अग पील चले रिस होय ॥
पिलै उँग पील चलै सरदार । परयौ सिर निढ्ढुर ऊपर भार ॥
छ० ॥ ४६४ ॥

हजार छतीस सजे रन सुद्ध । जुरे सब आय रूपे कमधज्ज ॥
कठेरिय बावुत्र जोर जवाने । विरंचियौ गौतम श्रीभगवान ॥
छ० ॥ ४६५ ॥

जुरे दल पत्तिय वैस मरद्द । जुरे अठ भाया हुते नरवद्द ॥
नरायनदास वियौ बंधु लार । मुकंद सौ कायथ क्षिक्षिय सार ॥
छ० ॥ ४६६ ॥

लये नरनाह सु कन्ह दुवाह । चलै कयमास विय संचाह ॥
पिलै भर चंद पुडीर सु सोइ । महाभर निढ्ढुर कौ रन जोइ ॥
छ० ॥ ४६७ ॥

उतै रुच लष्पन नासिय सुद्ध । इतै रुपि निढ्ढुरराय सो जुद्ध ॥
बहै किरवान जु बानिन हथ्थ । कियौ रन ऊपर जैं जैं पथ्थ ॥
छ० ॥ ४६८ ॥

भभक्किय सैन सु छुट्टित तोप । करक्किय जंचिय सूरन लोप ॥
भरक्कय बाननि पंजर छेदि । करक्कय सेल दुहो डर भेदि ॥
छ० ॥ ४६९ ॥

खगै वलि संगि सु भील गिरंत । सनम्मुष सूर उपारह दंत ॥
बहै अस्वार सुपारहि मार । करे किलकार सु जुग्गिन लार ॥
छ० ॥ ४७० ॥

वहै किरवान परै सिर सूर । करै वपु होस दुहो दल पूर ॥
मिल्यौ षग निढ्ढुर लष्पन आय । निरष्पहिं नूर वियौ रस पाय ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

गही किरवान सुलष्य नरेस । दई किरवान मुकद्दिय केस ॥
लगी किरवान पगी वल मार । चल्यौ भर सूर कम्यौ सत वार ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

गही कर निढ्ढर वीर गुरज्ज । दई वर लष्पन सीस सुरज्ज ॥
हजारक टूक भये सिर सोय । परयौ धर लष्पन लष्पन लोय ॥
छं० ॥ ४७३ ॥

भयौ धर मूर्छित निढ्ढुरराय । गिरे धर लष्पन अंत सुपाय ॥
गही किरवान सु कन्ह नै कोपि । चले कयमास रु चंद सुजोपि ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

उतै सनमुष्ष सु बाबुव साजि । भये भगवान हरील सु गाज ॥
जुरे दलपत्ति लिये किरवान । चले नरबद्द नरायन तान ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

मुकंदसि कायथ अग्ग सु होय । हुतौ कासीदल पंग कौ सोय ॥
मि यौ वर कन्ह पुडीर सु चंद । कठेरिया बाबूअ रोकियौ दंद ॥
छं० ॥ ४७६ ॥

इतै भगवानिय गोतम गाजि । नरब्बद और नरायन साजि ॥
लई कर संगि सु कन्ह नै कोपि । दई भगवान के सीस पै रोपि ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

भइ सिर पार परयो धर मध्य । इतै चलि आइयौ बाबुअ रद्धि ॥
नरायनदास नरब्बद कोपि । मिले तिहि आनि कौ कन्हर जोपि ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

मुदग्गर कन्ह पै तीन नवाहि । गही तन कन्ह सुधौपियौ पाहि ॥
गहै तब कन्ह नै तीन चरन्न । पटक्किय लै करि उत्त थरन्न ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

भये सिर चून हयंसिस तीन । किये नरजीव वलौ वपु हीन ॥
भजी जयचंद की सेन विराट । कियौ नृप लाषन निढ्ढर काट ॥
छं० ॥ ४८० ॥

दूहा ॥ लायन सी रन पौढियौ । नरवद और नरैन ॥
परि घाइल निट्ठुर कमध । दो ऋठ भैया, तेन ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

चौपाई ॥ परे कठरी बाव, जग । अरु गौतम अगिवान अभग ॥
नरवद अरु नारैन सुकट्टिव । पगु काम रन तान उपट्टिव ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

जयचन्द के सरदार कायस्थ मकरन्द का घोर युद्ध करना । युद्ध का वर्णन । मकरन्द का मारा जाना ।

कवित्त ॥ दौरि दलपति वीर । वैस दाठन दल भाई ।
सनमुष ह्वै श्रीवार । हतौ वकसी दल सोई ॥
लषि कायथ मकरंद । चद पुडीर अघोई ॥
कर लेपनि किरवान । दत सावतन वोई ॥
उच्चर्यौ इष्ट गिरजा सुमुष । करुष करुष क्रोध सै लिय ॥
जयचद लौन धरि सीस पर । प्रगट लोह सभरह किय ॥
॥ ४८३ ॥

भुजगी ॥ पिल्यौ वैस दलपत्ति सनमुष्ष सूरौ । गहौ तेग हथ्थ समथ्थ करूर
वियौ जपियौ जोध मकरद वीर । अघोर मडवे विचारे गहीर ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

हलाल कियौ नौन पग नितब्ब । भयौ पाज चहुवान दल रोकि सब्ब
गजै नालि गाला वदूकैं वरक्कै । किते कायर अग जघ धरक्कै ॥
छं० ॥ ४८५ ॥

वहै नाव-कठाव कतीर सोरै । लगै अग अग मनौ सर्प कोरै ॥
मिले हथ्थ-हथ्थ विहथ्थ सुवानी । किधौ घ्याल षेलैत होरी रवानी ॥
छं० ॥ ४८६ ॥

विकट्ट, वहै-पग्ग घट्ट सुलग्गी । सिर फारि अग हय टेव पग्गी ॥
झुलै झूलजूझै सुझूलै झट्टकै । चर चूरिया चाय आघाय चुक्कै ॥
छं० ॥ ४८७ ।

ठठकै नही सूर लषि लोह अच्छै । टटकैं पर टूटि मकरंद दिष्यौ ॥

इतै चंद पुंडीर मकरंद देष्यौ। अमोरं भुजाते वचनं सुभष्यौ ॥
छं० ॥ ४८८ ॥

गह्यौ चंद ने काइथं पग्ग केरौ। लष्यौ आज षंगा सवै सैन तेरौ ॥
इतै चंद मकरंद मुष मेल कीनौं। दुहौं हथ्थ किरवान वलवान लीनौ॥
छं० ॥ ४८९ ॥

दई चंद्र कौ सीस पै वीस वानी। किधौं वीज आकास की षीज पानी॥
लटक्कै सुचंद धरा मोर छायं। लष्यौ बीर कैमास वाजी सुतायं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

दई दौरि कैमास मकरंद सीसं। करी आप सीसं सुदेवी सगीसं ॥
लई फाक अंगं हथं फार षग्गी। षहा षग्ग चल्ली धरा आय लग्गी ॥
छं० ॥ ४९१ ॥

पर्यौ देषि मकंद दलपत्ति धायौ। मुषं मेल लीनौ करं सेल सायौ ॥
हन्यौ आय कयमास के अंग भारी। वरं भेदि अंग निहंगं करारी ॥
छं० ॥ ४९२ ॥

कट्यौ सेल कयमास हथ्थं गह्यौ। मुषं मेल कीनौ फिरं सेल सार्यौ
हन्यौ काइथं वैस कयमास भारी। कबी जीत चहुआन प्रम्मान सारी॥
छं० ॥ ४९३ ॥

मकरन्द का मारा जाना और कैमास का विजयी होना।

चौपाई ॥ हनि मकरंद काइथं जंगह। दलपति वैस दवनि किय अंगह ॥
जहा चंद घाइल मुझ्झानै। भई जीत कयमास सुभानै ॥
छं० ४९४ ॥

तीस सहस लाषन के संगं। सम्मर मांझ परे कटि अंगं ॥
हाथी परे तीस पर पांच। बोले चंद बदन वर सांच ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

निढ्ढुरराय का घायल होना, कन्नौज की सेना का काम आना। पृथ्वीराज की विजय का वर्णन।

घाइल निढ्ढुरराय अचेत। वासठि वेर कामद्धुज षेत ॥

कनवज कुमक कामि सब आइय । फते लई चहुआन अचाइय ।
छं० ॥ ४९६ ॥

आल्हा का कहना कि लाखन सी तो काम आए पर कुछ चिन्ता नहीं मैं तो अभी तयार हू ।

दूहा ॥ आए लाषन काम रन । उचरे आल्ह सुभाय ॥
हम आवेगे काम सब । राज चद नहि जाय ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

आल्हा का सब सरदारो को इकट्ठे करके उत्तेजित करना ।

चौपाई ॥ उचरै आल्ह सुनो सब सगी । पीथोरा की फौज उमगी ॥
मारे लाषन ताल्हन सूर । नायक निरवाहे सब पूर ॥
छं० ॥ ४९८ ॥
जगनक भाट बुलाये आगे । बाइक कहि कनवज्जहि जागै ॥
लाषन आल्हन वचन निवाहे । पौथल दल पग्गन सो ढाहै ॥
छं० ॥ ४९९ ॥

आल्हा का कुँवर ब्रह्मादित्य से कहना कि आप घर लौट जाइए मैं लड़ाई को देख लूगा ।

कवित्त ॥ उचरि आल्ह सु बचन । ब्रह्माजित करिये कानह ॥
आप युद्ध छडिये । जाहु जीवत घर मानह ॥
हम करिहैं सग्राम । ताम आवै घर काजह ॥
भूमि कलिजर जाहु । मिलौ परिमाल समाजह ।
किज्जियौ सेव तजि ओम को । दड दिव्य दै भष्पियह ॥
किज्जियौ सेव तन सैहुडा । नगर महोवा राषियहु ॥
छं० ॥ ५०० ॥

ब्रह्मादित्य का कहना कि मैं अभी पृथ्वीराज की सेना को काट गिराता हूँ मैं पीठ नहीं देने का ।

चौपाई ॥ उचरे वचन ब्रह्माजित लोइ । सुनिये आल्ह श्रवन दै सोई ॥

तुम ईषत षग्गनि तन षंडों । संभरिया को सैन विहंडो ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

लाषन तालहन काम सो आये । अरु मंनौ मकरंद कटाये ॥
अबै बनाफर ढील न कीजै । निरभै राज सुरग कौ कीजै ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

ब्रह्मादित्य की वीर रस सानी बातें सुनकर आल्हा का सब सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजना के वाक्य कहना ।

पद्धरी ॥ उच्चरै ब्रह्मजित सुनौ आल्ह । चल्लिये जंग छचीन चाल ॥
लीजिये वाग सब मोह छंडि । सूरमा लोक मेरो सु तंडि ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

सुनि बैन आल्ह ऊदिल बुलाय । दीनौ सुबोज भारथ्थ भाय ॥
केसवादीत चंदेल सूर । वोड्डथ्थ वीर परवार पूर ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

कोपियौ राय सलगैार लोह । ईसरह दास लोधी सुतोह ॥
मालहन्न बोलि भोपत्ति भूप । बोलियौ वैस नरपाल रूप ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

रूसतग्ग षान पट्टान पाय । मालहन्न बीर सत साल आय ॥
सकतेस सोम बंसी मरद्द । जगते जस जाय गोतग्ग सद्द ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

प्रोहित्त सु प्रमानंद नाम । मायर मरद्द काड्डथ्थ ताम ॥
वोलियो गंग बनिया परग्ग । जगनक्क भाट धारै सरग्ग ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

जलहन्न वोलि बिय बंध ताम । मिल्लिये आय परिमाल काम ॥
सेना सुसाठि हज्जार तोल । उच्चरै आल्ह जिन संग बोल ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

कनवज्ज नाथ दिय कुमक्क सुद्ध । आये सुकामि सावंत जुद्ध ॥
लाषन कमद्ध तालन पठान । पहिलै सुटुट्ट परियौ जठान ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

चंदेल नौन कीजै हलाल । कीजियै जुद्ध आवध विसाल ॥
लीजिये लोह इक सत्त होय । वाही तजि घर वारह्न सोय ।
छं० ॥ ५१० ॥

चौपाई ॥ सुनिय आल्ह को वानी भारिय । तुलसी दल मैं सेन सम्हारिय ॥
एकामत ह्वै जुरि जुद्ध जु कीजै । छत्रियधर्म्म काज जिय दीजै ॥
छं० ॥ ५११ ॥

आल्हा का उत्तेजन सुनकर सब का मरने कटने के लिये प्रस्तुत होजाना ।

दूहा ॥ आल्हन मत सुनियौ सवन । चित दिय सेलन पेल ॥
आजि वरौ सुर अच्छरी । नौन हलाल चंदेल ॥
छं० ॥ ५१२ ॥

आल्हा का शास्त्रो की आज्ञा सुनाना कि जो राजपूत लडाई से हटता है वह नर्क में पड़ता है और जो वीरता से मारा जाता वह स्वर्ग का राज्य भोगता है और जीतता है तो पृथ्वी भोगता है और जिसको भागना हो अभी से चला जाय ।

भुजंगी ॥ कही वत्त आल्ह सुनो व्रह्म जीत । धरो वत्तचीत लही मत्त मीत ॥
अतुल जुद्ध सामंत सज्जे सुभारी । करैं जुध परिमाल नंद विचारी॥
छं० ॥ ५१३ ॥

वय षोडस राजकुम्मार सोई । महा तेज चहुवान वलवान होई ॥
सज्जौ जुद्ध सामंत नृप संग जावौ । पछै राज परिमाल नीकै जमावौ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

परै भार रजपूत स्वामिद्ध निकारै । भिरै लोह अंग निहंग सम्हारैं ॥
धरै धम्म सीस सु छत्रीय सूरै । उवारंत वामी अपारै हजूरै ॥
छं० ॥ ५१५ ॥

भजै रज्जपुत धनी काम आवै । वसे रतिवन काम गहरे परावै ॥
अवै गाहु संग कुमार तु दोई । मरै देसकाज समाज सलोई ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

सुनी कुवर वानी ब्रह्मानंद सारी। तबै आल्हसों बैन बोल्यौ हकारी॥
धनी होय धरतीनि के भोग भोगं। मरैं नांहि जातैं हसैं सर्व लोगं॥
छं० ॥ ५१७ ॥

नही बीज रजपूत को ताहि मानै। लीयो नारि कित्ती सुबूरं बषानै॥
सुनी व्यास बानी बड़ी सुष्य गाई। सबै लोग मानी पुरानीनि गाई॥
छं० ॥ ५१८ ॥

चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग। आ तन मरे नही कोइ लोग॥
सो धरनी नै कित्ती लयौ। वेदव्यास निरनै यह कियौ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सो रजपूत न गति को पावै। जम की डंड सीस पर लावै॥
चौरासी जौननि मैं भटकै। क्रम पर देही दर दर भटकै॥
छं० ॥ ५२० ॥

दूहा ॥ राजन धर जातन मरै। करै सुरग को भोग॥
दुनियां मैं जस विस्तरै। हंसै न दुरजन लोग॥
छं० ॥ ५२१ ॥

जा धरती को षाइ कै। मरै न जाये कोइ॥
अंत काल नरकह परै। जग में अपजस होइ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ धरती जा तन राजा मरई। नाम सु जार जाति सब धरई॥
अंतकाल वह नरकह परै। ताकी साषि व्यास मुनि भरै॥
छं० ॥ ५२३ ॥

दूहा ॥ उदिक उतारत ना मरै। ब्राह्मन जोगी भाट॥
जीवत भुव भटकत फिरै। मरै नरक मैं वास॥
छं० ॥ ५२४ ॥

कवित्त ॥ कहत ब्रह्मदिति वानि। मानि आल्हन सब लिज्जहि॥
करैं पैज पन धारि। मारि सामंतनि लिज्जहि॥
वरौं सुरग अच्छरिय। हरौ चहुवान गरब सब॥
धरूं ईस गल मुंड। सूर मंडल भेदौं तब॥
परिमाल नंद इम उच्चरय। षंड षंड पिंडह करहुं॥

कढ्ढौ सुदत हस्तीनि के। मल्हन दे निरमल तरहु ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

ब्रह्मादित्य का सब सरदारो और सेना से कहना कि आल्हा ऊदल जो कहैं वही करना चाहिए। सब सरदारों का इकठ्ठ होना और लडाई का तयारी करना।

मोतीदाम ॥ कहै ब्रह्मदित्ति सुबैन हुलास। सुनौ सब सैन चंदेलन पास ॥
सुनौ उचवानिय ऊदिल आल्ह। सबै चलौ जोध छत्रीध्रम चाल ॥
छं० ॥ ५२६ ॥

बुलायव केसव दीन चंदेल। कर परिहार सो चौ अथ मेल ॥
लिय राय सबैहि लगोउ बुलाय। मिले वय डूंसर लोधिय आय ॥
छं० ॥ ५२७ ॥

दिये सब भूपति माल्हन पूर। मिलायव वैस नरब्बद नूर ॥
लियं चहुवानह रूप गहीर। दिये दस थाइय ए भरभीर ॥
छं० ॥ ५२८ ॥

सु रुस्तम षान पठान दलेल। भए सत सास सु मल्हन मेल ॥
सकत्ति सब सिय सोम विबुद्ध। जगत्तिय गौरय समर सुद्ध ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

सु प्रोहित बै परमाँनद पूर। दिये दिसि दाहिनी ए दल सूर ॥
लिय भर माधव काइय वाह। भये भर वानियं गग उमाह ॥
छं० ॥ ५३० ॥

जहा मिली जल्हन भाट बिकट्ट। मिले दल दिट्ठि अभंग सटट्ट ॥
कियौ सु चंदेल इते भर सोय। लिये चष कोइ न लाज सहोय ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

भए अग ऊदिल सावत ठेल। वर चक्रपानि बघेल समेल ॥
दल। गहलोत भुजाधर भार। मिल्यौ जगनक्क सुभाट जुझार ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

दल उर दाहिनवाइ उए दीन। इते सिरदार हरौल सु कीन ॥

बिचै ब्रह्मादित कूंवर सूर । दलं सिर मौर सु आल्हन पूर ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

षमान सुराय पमार सु प्रगा । चले सुध स्वामित चाल धरगा ॥
सबै दल साठि हजार सपूर । मिले रन संग अभंग सु सूर ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सब साठ हजार सेना का राजना ।

चौपाई ॥ सात सहस चंदेल सुकीनै । अरु दस सहस वाम दिसि दीनै ॥
ग्यारह सहस दाहिनै सोई । आठ हजार हरौल सुहोई ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

दूहा ॥ चतुर विंस अलिमोल में । ब्रह्मादित जह आल्ह ॥
साठि सहस सेंना सवै । हरकारी तत काल ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

आल्हा का मरने का सामान करके अर्थात तुलसी सालिग्राम सिला आदि सिर पर बाँध करके लड़ाई के लिये आगे बढ़ना । ऊदल का लड़ने के लिये आगे होना ।

पद्धरी ॥ हलकारी आल्ह सैना स पूर । सब किये जोध आगे जरूर ॥
सिर बाँधि गण्डिका सिला सोय । तुलसी सिर मंजरि मेलि लोय ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

मौजा सभरे मौहर निस पूर । किये मरन साज कूंवर करूर ॥
हलकारी सैन सब ढक्क कीन । अप अजुद्ध रन भए लीन ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

कंगल सुअंग सिर टोप लोय । प्राचीर छांह मिलि छांह दोय ॥
आगे सु चंद बांढ लइय वाग । करि तेज तुरिय करक चवषाग ।
छं० ॥ ५३९ ॥

दुवसैन मिलिव सागर समान । कूदियौ अग्र पय मंडि कान ॥
हज्जार वीस उद्दिल समाज । कूदे सु पंगु पर उमगि साज ॥
छं० ॥ ५४० ॥

सत सहस कूदि सामंत सैन । उतरे धरिवर बिलार नैन ॥

नरनाह कन्ह पुंडीर चंद । पज्जोन जैत भोहा सु दंद ॥

छं० ॥ ५४१ ॥

गोयंद राज गहलोत सूर । कनकेस सुभर मुख उमगि नूर ।
सजम्म राय हाहुलि हमीर । तोंवर पहार हाडा गम्हीर ॥

छं० ॥ ५४२ ॥

नरसिंघ दाहिमा मत्त कीन । इतनैनि सुभट हय छंडि दीन ॥
उहिस चक्र पान वघेल । गहलोत दला भोपत्ति मेल ॥

छं० ॥ ५४३ ॥

राथसल गौड नरवइ वैस । दाहिमा राय डाहरसमैस ॥
दस मत्त षान पट्टान संग । ववदास सूर रन करि उमंग ॥

छं० ॥ ५४४ ॥

सकतेस सौम वसी भुआर । जगतेस गौरवंसी समार ॥
प्रोहित परमानंद सच साल । जगनक्क भाट विद्या विसाल ॥

॥ छं० ॥ ५४५ ॥

आमान राय परिहार सोय । जालहन जोरवर वह लोय ॥
भुन्नग भदौरिया विरचि भार । इतनैं कूदि उहिस लार ॥

छं० ॥ ५४६ ॥

हज्जार वीस ठाकुर समाज । कूदिय सुजग्ग कइ पहरि साज ॥
उतरे जोध दोऊ दिसान । अप अप्प इष्ट वर करत आन ॥

छं० ॥ ५४७ ॥

उत अंग मंग सन्नाह संधि । रूपे पयाल पग समर वंधि ॥
छंडियै तुरिय मंडियै जुद्ध । विहंसे सु बुद्ध सावंत कुद्ध ॥

छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ उदिल कूदे छंडि हय । इत कूदे सामंत ॥
नौनव धार्यौ सीस पर । कियौ लरन कौ मंत ॥

छं० ॥ ५४९ ॥

ऊदल की लडाई आरम्भ होना । ऊदल की वीरता का वर्णन ।

त्रोटक ॥ सजिय हय उदिल कन्ह नर । गहिये किरवान सु ढाल कर ॥

उमगे चहुआन चंदेल दलं । अप अप्प ससैन कराय हलं ॥
छं० ॥ ५५० ॥

गजराज हरौलनि पंति लगी । वरभद्दव जानि घटा उमगी ॥
अति उज्जल दंत समंत सधे । बगुला घन में जनु पंति बंधे ॥
छं० ॥ ५५१ ॥

वरलाल विसाल धजा रमकी । तड़िता मनु बादल में दमकी ॥
हसती सत दोय हरोल दियं । तिन ऊपर कन्ह सो कोप कियं ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

गहि दंत उपारहि मत्त बलं । कढ़ई जानु भीलनि कंद फलं ॥
पटकै गहैयौं गर पानि करं । हनवंतव गावत पानि गिरं ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

विरभ्यो वर कन्ह अमान बली । डर मानि चंदेल की फौज हली
मिलियं उत ऊदल कोप कियं । उमगे वड रावत बीचि लियं ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

करैं वपु घाव सदाव सम्हारि । किधौं वन कटिये कंटक वारि ॥
वहै किरवान अमान सहथ्थ । परें धर ऊपर सीस समत्थ ॥
छं० ॥ ५५५ ॥

करष्षि कमान करं कर छुट्टि । षरक्कि स भूमि दुहौं घट फुट्टि ॥
गनं गन जुत्थ सु अच्छर घाय । वनै घट धाइन देह घमाइ ॥
छं० ॥ ५५६ ॥

नरं नर नूर सो लोहन पूर । चरच्चर चुट्टय सोसनि सूर ॥
छल बल पेलहि झेलहि सार । जुरंत जुवान झिलै घर भार ॥
छं ॥ ५५७ ॥

झलझझल तेग झलाहल झेल । ठटट्ट रथ्थ अपच्छर षेल ॥
ठटट्ट मिल्लिय पिल्लिय पाय । डरं उर कायर देषि डराय ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

ढरक्कय सुंड निरष्षय नैन । तरक्कय तीर वरक्कय वैन ॥
थिरं दुव सैन मुरक्कति नांहि । दरद्दुर दौरि परै दल मांहि ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

धरद्धर धारहि मार सुधीर । काक्कर वाहित सागिर तीर ॥
नचै रन सूर सचेत सपूर । धरद्धर धावत अग्गहि सूर ॥
छं० ॥ ५६० ॥

वट्टुर वेदल आवध टूटि । भरब्भर भाजत नाहिनै रूठि ॥
मरम्मर छेदहि मार मुछाल । जरज्जर नाचत घाय जटाल ॥
छं० ॥ ५६१ ॥

उर उर फट्टुति सागि सु लग्ग । सुरा सुर देषत षेलत षग्ग ॥
घरी करि पाति उपैदल दोय । हरी हरि वानि उचारत सोय ॥
छं० ॥ ५६२ ॥

पिले वलवत सु सजमराय । इतै गहलोत दयो उमगाय ॥
मिल्यौ मुष आइय मद्दन मेल । तजी किरवान गह्यौ कर सेल ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

लगायउ संजमराय क मार । सह्यौ तहा मार कियौ फिरि वार ॥
दई दलपत्ति के सीस मैं दौरि । लियौ सिर झेलि सदासिव गौरि ॥
छं० ॥ ५६४ ॥

लष्यौ तव भोपति कै नौय रीस । दई फिरि दौरि कै सजमसीस ।
अस्यौ तव वार समूरछ मान । चस्यौ नरसिंघ तहा यक तान ॥
छं० ॥ ५६५ ॥

दई नरसिंघ गुरज्ज की सीस । पर्यौ गहलोत लियौ मन रीस ॥
लषे चक्रपानि नरसिंघ सोय । भिरे भरथ्थ समथ्थइ लोय ॥
छं० ॥ ५६६ ॥

किये भुज पानि वधल्ल प्रमान । इतै वपु दाडिम इंद्र समान ॥
लथ वथ होइ जुरे मिलि जुद्ध । गिरे धर दोइय वीर विवुद्ध ॥
छं० ॥ ५६७ ॥

दुहौ जम दाढ दुहौ डर सोय । हन्यौ चक्रपानि सो पजर जोय ॥
छं० ॥ ५६८ ॥

चक्रपानि का मारा जाना। ब्रह्मादित्य का क्रोध करके अपनी सेना को ललकारना।

दो ॥ चक्रपानि रन जूझि तन । आहु फौज परिमाल ॥

तब ब्रह्मजिति कोपि कौं । कहै बचन मुष ज्वाल ॥
छं० ॥ ५६९ ॥

ब्रह्मादिति हलकारिकैं । बाहुरि दल मैं आय ॥
धार स्वामि धम आल सिर । रन बर अनी बढाय ॥
छं० ॥ ५७० ॥

हनि सांवतन लषन रन । तालन प्रबल पठान ॥
सहस पचास षिपाय कौं । कलि मैं कियौ कहान ॥
छं० ॥ ५७१ ॥

कवित्त ॥ मरन धार मंग लिये । बीर ब्रह्मजिति आयव ॥
भजे नृपति परिमाल । देषि धरम सुभजाइव ॥
कटौ कुमक पंग की । कमध लाषन जुरि जंगह ॥
तिल तिल तन टूटियव । सर कौनैं नहि अंगह ॥
तालन पठान बिन सीस हुप । अतुल पराक्रम कमधि किय ॥
भाजंत सैन जीवंत महि । अहमो दुष सोलंत हिय ॥
छं० ॥ ५७२ ॥

कुँवर ब्रह्मादित्य का लड़ाई का प्रबन्ध करना । अल्हा को सेनापति बनाना । ऊदल आदि सरदारों के साथ सेना बाँट कर देना ।

पद्धरी ॥ परिमाल नंद हल कौन आय । विहंसियौ कुंवर मंगल मनाय ॥
हलकारि सैन सब इक्क कीन । आल्हन सीस सब भार दीन ॥
छं० ॥ ५७३ ॥

सकतेस सौमवंसी सु सूर । बरगहर वार सतसल करूर ॥
वरहो सुदेव कान्न विरचि नूर । डोगर सौ दल दौवा गरूर ॥
छं० ॥ ५७४ ॥

राठौर राय सल कोपि अंग । तौवर अमान मन चढि उमंग ॥
सिकृवार सुरज्जन ध्रम सुसुद्ध । वलिवंश डोग केसव सुबुद्ध ॥
छं० ॥ ५७५ ॥

जादव सु झाल सवाध सोथ । सुर का वसंत वलवड लोथ ॥
जल्हन सुभाट अति तेज ताप । कायस्थ कुम चद अतुल वाप ॥
छं० ॥ ५७६ ॥

बनिया सुभार महि बुधि उमग । इतने दीने उहिल्ल सग ॥
हज्जार वीस असवार और । गज राज होय सत महनि जोर ॥
छं० ॥ ५७७ ॥

पचास तोप वड सहन अ च । गोलीन पाव मन पच पच ॥
हज्जार पाच दिय बान साथ । लधि विषम वाह सामथ्थ वाथ ॥
छं० ॥ ५७८ ॥

इधर कन्ह के साथ सब सरदारों का लड़ाई के लिये तयार होना ।

उत कन्ह चद पुडीर जैत । कन्नक वड गुज्जर सलप नैत ॥
भोहा चदेल परिहार पीप । अततार कोपि रन अरिन जीप ॥
छं० ॥ ५७९ ॥

सज्जमराय धरि दियउ युद्ध । तौवर पहार भुज धरि विरुद्ध ॥
अचलेस अ ग उमगे सुजग । नवलेस अवह रन मन उमग ॥
छं० ॥ ५८० ॥

पज्जौन मलयसी पिता पूत । कोपत जाति रघुनाय दूत ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

दूहा ॥ पच सहस प्रिथिराज के । हरवल कन्ह सुभार ॥
उतै बनाफर सेन सँग । उहिल वीस हजार ॥
छं० ॥ ५८२ ॥

दोऊ वीर रिसाय कैं । लए अच कर माहि ॥
बोग उठाई षग्ग कढि । चढे मोह तन नाहि ॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना और युद्ध का आरम्भ ।

हनूफाल ॥ दल मिले दोयउ सग । बज रग वीर उमंग ॥
उत कान्ह हौमर डारि । आए सुवीर हँकारि ॥
छं० ॥ ५८४ ॥

दल सहस उद्दिल जोइ। उत्तरे सुहंमर सोइ ॥
दस सहस हंमर फुट्टि। जिन तोप वाननि छुट्टि ॥
छं० ॥ ५८५ ॥

हय छंडि तीन हजार। चहुआन कन्हर मार ॥
असवार दोय सहस्स। रह पूट्टि रापि रहस्स ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

दिषि पिलै पैलै ताहि। मिलै सुकन्ह सुभाहि ॥
काढि दंत मत्तनि पानि। थल भौंल कंदलि तानि ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

गहि सुंडि फेरत गाहि। हनवंत गिरवर वाहि ॥
भुव पूछ पटकै वानि। बलिदेव दुनि जिह जानि ॥
छं० ॥ ५८८ ॥

हय पकरि वाहिन फेरि। असवार जुत्थन हेरि ॥
अगहत्त पौझनि कोट। मानियौ कन्हर जोट ॥
छं० ॥ ५८९ ॥

पेले सुदल मध रत्थ। जिमि लंक वानर जुत्थ ॥
मुरकी अनी चंदेल। दल दविव कन्हर मेल ॥
छं० ॥ ५९० ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध। चन्देल की सेना का उखड़ना। ऊदल का आगे बढ़ कर लड़ना।

कवित्त ॥ कन्ह कोप चहुवान। हनै हथ्थी मतवारे ॥
काढ़ि दंत जुरि वाह। डील डौंगर से डारे ॥
हैवर हत्थ समाहि। ढाहि दल दियौ सुसैनह ॥
भगी फौज चंदेल। देष सामंतनि नैनह ॥
मुरकत फौज ऊदिल्ल लषि। भयौ बनाफर कोढ़नी ॥
सैं लोट करिय दुरजन्न भूम। रन भेटत सम्हरधनी ॥
छं० ॥ ५९१ ॥

कन्ह चौहान और ऊदल के घोर युद्ध का वर्णन ॥

मोतीदाम ॥ मिली रन फौज बनाफर वीर । चल्यौ सनमुष्ष मरन्न सुधीर ।
करी परदच्छिन आल्हन काज । लिये सब रावत जग समाज ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

चल्यौ सौमवंस सकत्त सुधीर । फिर्यौ बृह्मदेव कारन गहीर ॥
मिल्यौ दल डौंगरसी दोउ वाह । पिल्यौ सुअमान हु तौवरताह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

मिल्यौ रयसल्ल रठौर मरद्द । विल्यौ सचसाल सुबाधि जरद्द ॥
पिल्यौ सिकवार सुरज्जन सीह । पिल्यौ दल डोंग सुकेसव वीह ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

पिल्यौ दुरजन्न सुजादव जोर । सुरष्षि सुवीर वसत अमोर ॥
पिल्यौ दल जल्हन भाट हुलास । पिल्यौ कामचद सुनायथ जास ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

पिल्यौ नरमल्ल सु वैस वरिष्ट । इतै पिलि उद्दिल सग गरिष्ट ॥
इतै हय छडिय कन्ह समतथ । उतै हय छडिय सामंत सत्थ ॥
छं० ॥ ५९६ ॥

भुजक्कल आवध सायध वाय । डगामग कायर धुक्कत पाय ॥
करष्षि कमान लई दुहु सैन । मरष्षिय कुंडल कौनिय सैन ॥
छं० ॥ ५९७ ॥

चलावत सैल दिढाव पगन्न । मनौं अहिवौ विय होत मगन्न ॥
चलावत हय चढि दति दुवाह । करै वपु प्रान सुभट्ट वराह ॥
छं० ॥ ५९८ ॥

वहै गजकर्न सु लग्गन हीक । मनो अहि मचिय जीह सुलीक ॥
वहै वहुते सर नावक नेह । वरष्षहि बूंद सु अंत पियेह ॥
छं० ॥ ५९९ ॥

दई कर डारि कमानस तेन । गहै कर सेल लषे दोउ सैन ॥
करै दोउ सैन अन्यो अन्य मार । दुहू घट होत है पजर पार ॥
छं० ॥ ६०० ॥

वहै रुधि-छछ दुहौं दल वोर । जगावत तोंवर जोवर जोर ॥

लगै उर आनि सकत्तिय सूर। मनों बिष आसिव लग्गि करूर ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

अन्या अन्य सेल फो थप्पिय मार। तवैं दुहों वीर गह्यो किरवार ॥
लगे वर कंध सुबंध धुलाय। मनौ जमराज जनेउ बनाय ॥
छं० ॥ ६०२ ॥

लगै सिर ऊपर कढ्ढि्है टोप। किधौ कियौ संग सरस्वति लोप ॥
वहै किरवान सों कंधन झांक। रुपे धर रुंड वहै सिर हांक ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

वहै सिर सूरज के रजि नेत। हँकारत राइ किधौं विय केत ॥
तजौ किरवान लई जम दड्ढ। लगावत हीय किय वल गड्ढ ॥
छं० ॥ ६०४ ॥

बषत्तर फारि करै कर जोर। मनौं घन मेंडि उठी रज कोर ॥
लगावत षंजर पंजर पार। किधौं कियौ कालिका दंत निवार ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

चलावत संकल फेरि जुवान। धुमावत अंग निरंग कमान ॥
चलायव गुर्ज सु पीलन सीस। मनौं सिर तोरि पुरंदर सीस ॥
छं० ॥ ६०६ ॥

लगाय भसुंडिनि सीस नितानि। मनौं दधि फोरि गवालिय स्याम ॥
चलावत केहरि के नष पेंट। वछस्थल फारिकै डारिए ठेंट ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

लगावत राज कुंवार निदान। किधौं कटौ पूंछ सुनागनि तानि ॥
यहीं बिधि उद्दिल कन्ह लरंत। महा सुध छत्रिय धर्म धरंत ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

उठक्किय सैन उतें चहुवान। मिले दुअ वीर प्रगट्टन आनि ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

दूहा ॥ दौव्यौ संजमराय रन। ऊदिल ऊपर धाय ॥
सकत सोमवंसी मरद। भिड्ड्यौ वीर रिसाय ॥
छं० ॥ ६१० ॥

कई सामंतों और चंदेल सेना के सरदारों का बरनी बरनी से युद्ध वर्णन

भुजंगी ॥ पिल्यौ सज्जमराय उद्दिस कीनौ। धरै षग्ग हथ्थ समथ्थ गुमानौ ॥
लथ्यौ सज्जमाराय सकतेस राजं। लियौ वीचही प्रान जुद्ध समाजं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

दुहौ वीर गाजे बधाए सुवाहं। दुहौ सूर मरनं सु मंड्यो उछाहं।
कटं काट षग्गं उमंगं चलावैं। कध्यौ धर सु सीसं विकट्टं मिलावैं ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

गटं गट्ट जुग्गिनी सु लोहू भरावैं। घटं को चिहू धाव घट्टं धरावैं ॥
नटं जेम नाचंत वारं सुधारैं। चटक्कौ तुरी छंडि पटकैं सुपारैं ॥
छं० ॥ ६१३ ॥

ढलं ढाल वूडंत सारं सु जोरं। जरै जम्मरं ज्वान आमान तोरं ॥
हहक्कै दलं दोय देषै हट्टक्कै। घटक्कं दिहौ छूटि कौनै लट्टक्कै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

ठट्टक्कै दोऊ सैन देषैं तमासौ। डडक्कंत वाजंत डौरू उमासौ ॥
ढढक्कं दरं ढाढरं कुट्टि भरियं। ततत्थेई नाचंत सावंत झरियं ॥
छं० ॥ ६१५ ॥

ररक्कंत जोगिनी भैरौ निपारी। उमाकंत नाचंत दै हथ्थ तारी।
ततत्थेई नाचंत ईसं उरंगै। थरक्कै दुहौ सेन देषै रमंगै।
छं० ॥ ६१६ ॥

दलं दोइ द्रढ़ै वलं वाह दोई। धपै वीर धोवंत आवंत तोई ॥
नरं नेह छुटे भरा नेह न्यारे। पुलक्कंत वाहू अपारे पचारे ॥
छं० ॥ ६१७ ॥

फिरै नाहि होऊ फतैं स्वामि अड्डे। धरी माथ हथ्थं परी पाप गड्डे ॥
हन्यो आय सज्जम सेलं समाही। तवै वीर सकतेस किरवान वाही ॥
छं० ॥ ६१८ ॥

लग्यौ सज्जमं सेल हीकं सुताय। रुप्यो जाय वरनो जियौ देह काय ॥
लगी तेंग सज्जम कै अंग भारी। गई छूटि सग्या पर्यौ भूम धारी ॥
छं० ॥ ६१९ ॥

प्रयौ अंत सेभं सकंतं लपायौ। तहां गहरहारं सता कोपि आयौ॥
उतै चंद पुंडीर नैनन लषायौ। तवैं कोपि करि वीर सत्ता सुधायौ॥
छं० ॥ ६२० ॥

लष्यौ चंद पुंडीर आयौ चलाई। गहर वीर चहुवान सैना हलाई॥
जप्यौ मंत्र हनवंत सत साख सोई। गयौ सिरह नद्दं वरं वीर लोई॥
छं० ॥ ६२१ ॥

उतै चंद पुंडीर देवी पुजाई। तज्यौ शकरं संग किलकारि आई।
लष्यौ सत्तसाखं विसालं वरिष्टं। चल्यौ पीप परिहार भीरं गरिष्टं॥
छं० ॥ ६२२ ॥

चल्यौ मंत्र करनं सहाई सहत्ता। जप्यौ मंत्र मुष भैरऊं जोध रत्ता॥
किलकारि भैरूं ललकारि आयौ। हन्यौ महिष येवं बली दीन पायौ॥
छं० ॥ ६२३ ॥

इतै देव करनं सता गहरवारं। उतें चंद पुंडीर पीपं पछारं॥
एते दीय परिमाल के सुभट ठाये। तिनं उप्परं चंद पुंडीर आये॥
छं० ॥ ६२४ ॥

वियौ पीप परिहार साहाय आये। लिये वीर दोईस किरवान चाये॥
करं सत्तसालं कमानं सलीनं। धरयौ वान लेमं प्रहारं सुकीनं॥
छं० ॥ ६२५ ॥

लग्यौ पीप परिहार कै हीक आयौ। भिंथ्यौ अंग रंगं धरंनी मिलायौ।
पर्यौ पीप परिहार धरनी अचेतं। उथ्यौ संजमंराय पायौ सुचेत॥
छं० ॥ ६२६ ॥

लष्यौ संजमा राय धौ करन धायौ। सिरं आये संजम के सीस नायौ।
लगी सीस तेगं सिरा फार होई। दुहों हथ्थ फंदं गही वीर सोई।
छं० ॥ ६२७ ॥

कुवानं सतं पौचि सीसं बिधायौ। दुहौं कार वेधी सचारं न धायौ॥

छं० ॥ ६२८ ॥

देवकर्ण की तलवार से संजमराय का शिर फटजाना और सत्रसाल के तीर से सर जुड जाने पर उसका दोनों को मार गिराना ।

दूहा ॥ देवकरन दिय दौरिकै । सजम सीस गहीर ॥
लटकी फाक निरा८ बिय । सह्यो सत्रसल तीर ॥
छं० ॥ ६२९ ॥

कवित्त ॥ देवकरन ने दौरि । सीस सजम कौ दीनिय ॥
फट्यो सीस बिचि सोइ । आय नासा बगि लीनिय ॥
सत्रसाल सागिनि । हन्यौ बिहु फाकन तीरह ॥
भयौ सीस साबित । नह्यो बिचि घाव गहीरह ॥
सज्जम सीस बिचि सो बिधिव । सत्रसाल मुजरा कियव ॥
दुहो हाथ घालि बर धारि कर । बरही कौ काधै दियव ॥
छं० ॥ ६३० ॥

पद्धरी ॥ सजम्म राय हनि सोमवस । कप्पियो कुंत छाती उतस ॥
सकतेस दई किरवान घाय । परियौ सुधरनि सजम राय ॥
छं० ॥ ६३१ ॥

धाये सुबद पुंडीर बीय । आये सु सज्जि चदेल दीय ॥
तह सत्रसाल आयौ सु सग । करि हस देव करि करि उमग ॥
छं० ॥ ६३२ ॥

कम्मान पकरि सत्रसाल सूर । दीनो सु पीप कौं हिय करूर ॥
लग्यौ तीर धर फुट्टि लोय । परियो सो पीप धर बिगरि होय ॥
छं० ॥ ६३३ ॥

ता समे उठे संजम नरेस । मिटि गई मूरछा सरव लेस ॥
दौरे सु देव कन्न किये रीस । दीनो सु जाय सजम सीस ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

ता समै सत्रसाल तीर वाहि । फटि गयौ तीर लगि नाक-चाहि ॥
परिहार तीर किये श्रवन ठाम । बिधि गयौ सीस लगि तीर ताम ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

सत्रसाल काज किन्नव सलाम । किरवान जाय दई कन्ह ताम ॥
लगी सु कंह नौगुन उतार । खुल गयौ कन्ह दिवकारन धार ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

कटि भो मरंन लगि रोस आय । पाषर समेत हेमर षुलाय ॥
उत चंद आय मुषमेल कीन । सत्रसाल सीस किरवान दीन ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परियो सु टुट्टि रन गहर वार । दौवां डोंगर सी गह्वर सार ॥
चल्लयौ वीर पुंडीर मुष्ष । दुहुं हथ्थ विरचि वाही सुरुष्ष ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

लागी सु झिलम मैं मध्य जाय । कढि ढाल टोप लगि कमरि आय ॥
परियौ सुचंद धर सलषि दिष्ष । चल्यौ पमार दौवा समुष्ष ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

वाही स हत्थ दौबा सु सूर । कटि टोप झिलम भृकुटी करूर ॥
तरवार वाहि पंमार चाय । कटि कट्टि जीन हय गय षपाय ॥
छं० ॥ ६४० ॥

घूम्यौ पंवार परि धरनि मध्य । दिष्षयौ जयत निड्डुर प्रसिद्ध ॥
चल्यो सु जैन निड्डुर नरेस । तौमर अमान चलि गयौ तेस ॥
छं० ॥ ६४१ ॥

कमधुज्ज राय सलखीय सहाय । चलिये सुवीर रन सज्जि आय ॥
कीन्हौ सु कन्ह ऊपर चलाय । आयौ सु बनाफर ऊद धाय ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध वर्णन (रोना का युद्ध)

दूहा ॥ उतै सज्जि कन्ह धायकै । इत ऊदल सजि आय ॥
अप अप नृप जै इच्छई । मंगल मरन उपाय ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

चौपाई ॥ परे सकतेस सोमवंसी रन । गहरवार च्यौ करन कटे तन ॥
डौंगरसी दौवा तन कट्टिय । सामंतनि सनमुष आवट्टिय ।
छं० ॥ ६४४ ॥

चंद पुंडीर परे मुरछायं । अहि परिहार पीप गिर ठायं ॥

सजम राय बुल्लि सिर कट्टिव । वीर वीर तन में रस फुल्लिव ॥
छ० ॥ ६४५ ॥

कन्ह के साथ के निड्डुर आदि सामतों से फिर ऊदल के साथ के कई सरदारों का परस्पर युद्ध वर्णन।

मोतीदाम ॥ लषि निडुर जयति कन्ह चलिय । कनक वड गुज्जर जै मिलिय ॥
लषि भौह पज्जौन चद वली । इतने मिलि सैन सुमुष्ष चली ॥
छ० ॥ ६४६ ॥

लषि ऊदिल जोध सन मुषय । सँग तौंवर मान वली लषय ॥
कमधुज्ज सु राय सला पिलिय । सिक्रवार सु रज्जन से मिलिय ॥
छ० ॥ ६४७ ॥

वलिवड सु केसव गौड पिले । जहा जादव हद उमगि चले ।
सुरको वर वीर वसत वनै । गय जल्हन भाट समार नमै ॥ ।
छ० ॥ ६४८ ॥

वकसी जहा कायथ क्रम चद । उमग्यौ वनिया भर माल हद ॥
पिलियौ तहा ऊदिल पायन सौं । भर झेलि वनाफर रायन सौ ॥
छ० ॥ ६४९ ॥

मुष अग्गि पचासक तोप करी । ठहराइय सोरनि ओर भरी ॥
हलकारिय गोल सलोल भरी । वड कोट मँजोर तहाँ जकरी ॥
छ० ॥ ६५० ॥

अरु ज्वान सु वान दई चिनगी । दल सावत ऊपर रोस लगी ॥
हय तोपन जाम गिलाय दई । परिये जनौ धोरनि हाव सही ॥
छ० ॥ ६५१ ॥

अरराट भयौ अति सोर रह्यौ । उलका सद अवर चाय रह्यौ ॥
धुरक्यौ धर सजम राय परे । रन पच हजार तहा जकरे ॥
छ० ॥ ६५२ ॥

हस्ती परि तीस सु समर मे । कितनै डुंडर कायर वै मन मै ॥
सव फेर सु ऊदिल वाग लई । सँग वीस हजार सौ भार तई ॥
छ० ॥ ६५३ ॥

बलिवंड करै बिय षंड रनं । षंड षंड सु पील प्रचंड करं ॥
बिचले दल पीथल तेग तयो । सब भार सु ऊदिल गोलि लियो ॥
छं० ॥ ६५४ ॥

चहुवान हरोल अनी मुरकी । लषि संजम राय गिरे धरकी ॥
तहां चंद पुंडीर पियास परे । मुरछाय सुलष्य धरन्नि गिरे ॥
छं० ॥ ६५५ ॥

तहां कन्ह कोप कर्‌यौ रन में । मुरकी सव सैन दुवागर में ॥
किरवान गही हय छांड़ि दियौ । सनमुष्य सु ऊदिल पौं पिलियौ ॥
छं० ॥ ६५६ ॥

तहां जैत पज्जोन मलै सी परं । रनसिंघ पंहार सजौ गहरं ॥
पर हाहुली राव हमीर चले । इतने भरि ऊदिल पैं जु पिलै ॥
छं० ॥ ६५७ ॥

उत बीर वसंत रु क्रम चंद । बनिया वड़ भार जु माल हंद ॥
देवरा रंन डोंगर सी उमहे । चहुवान सु जल्हन भाट कहे ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

परिमाल सुनौ न प्रगास वलं । चहुवान सवैं भर तानि दलं ॥
मग रोकिय कन्ह कौ आजु अगैं । बिचि लीजियैं आय कैं जुध्ध पगै ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

सनमुष्ष लहौ जु सबैं अवही । मृत लोक के भोग तजौ सवही ॥
छं० ॥ ६६० ॥

कवित्त ॥ दिगय फौज प्रिथीराज । तोप बाननि के मारिय ॥
गिर्‌यो सु संजम राय । चंद पुंडीर सुधारिय ॥
पर्‌यौ पीप परिहार । परे बड़ गुज्जर सोइय ॥
परिय सु तीस गयंद । सहस हेंवर गिर लोइय ॥
रजपूत सहस चौदह परे । फौज बिचिलि पाछें भइय ॥
चहुवान सहसत्ति हांक हुअ । कन्ह वीर दारुन दइय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

चौपाई ॥ मुरकी फौज देषि चहुवानं । पिलियौ हाथी अंमत तानं ॥
कन्ह जयत हाहुली हमीरह । नरस्यंघ रांम मलसी धीरह ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

हाकि सैन नृप आगे किन्नय। चावंड काजै आयस दिन्नय॥
तुम परिमाल पकारि कर लाज। मैं उदिल कौं जग पपाज॥
छ० ॥ ६६३ ॥

चोटक ॥ नृप हाथिय पीथल पेल वर। सब सैन सकेलि कै एक कर॥
कैमास रु कन्ह पजीन मिले। सग हाहुलि राय हमीर चले।
छ० ॥ ६६४ ॥

तहां पीचीय देव प्रसंग चली। बिक्रराज सु धावत धीर हली॥
तहां पेतर पूरन मल्ल चले। भरमालुन जद्द पमार मिले॥
छ० ॥ ६६५ ॥

नृप ऊदिल ऊपर कोप किये। इतने उमराव सु संग दिये॥
उत देषि बनाफर वे धुलिय। सग ढोंगर सी दौवां मिलिय॥
छ० ॥ ६६६ ॥

कूम चंद्व सतर अल्हनय। सिकवार सु रज्जन मल्हनय॥
तहां भोज बनाफर भार मल। ववता अज वावर कोपि दल॥
छ० ॥ ६६७ ॥

सोहकम्म मिले भरमार दये। इतने मिलि ऊदिल संग भये॥
उत कन्ह चलायव कोपि किय। इत ऊदिल वीर अपार धिय॥
छ० ॥ ६६८ ॥

विफरै चहुवान बनाफरय। धरि हथ्थन लोहपि हय वरय॥
चहुवान दवाय हरोल लिय। उत आल्हन पोवत जुद्ध जिय॥
छ० ॥ ६६९ ॥

पिलिय भई भीर पजीन चली। द्रिग देषि चंदेल की फौज हली।
पटकै गहि हैमर भूलाय। मसलत्ति पयादिन के थलय॥
छ० ॥ ६७० ॥

कहूं हाकय धाकय वीर मुप। कहूं सारत सायक ले सुरप॥
कहु सेल चलावत वाहु पर। करि टूटि सनाह सु फूटि मर॥
छ० ॥ ६७१ ॥

विफरै बल वीर पजौन इतै। सिकवार सु रज्जन आय उतै॥
सिकवार चलाइ सकत्ति कर। उर लागि पजौन कै फूटि पर॥
छ० ॥ ६७२ ॥

घुकि राय पज्जौन वै कोप किय । किरवान सु रज्जन कांध दिय ॥
परियं सिर टूटि धरन्नि गिरें । ततकाल वरंगिम आय वरें ॥
छं० ॥ ९७३ ॥

भुम पाय पज्जौन गिरै धरनी । फिरि आयव डौंगरसी भरनी ॥
दौवा तन सायक लाइ भर्यौ । तिन ऊपर आय सुआम अर्यौ ॥
छं० ॥ ९७४ ॥

गहिकै किरवान तहां बगयौ । तिन सायक डौंगर कौ लगयौ ॥
किरवान बढ़ी कर जाम लियं । विय हथ्थ गहाय कै सीस दियं ॥
छं० ॥ ९७५ ॥

घुकि तै दई डौंगरसी पग में । धर धूंमि कै जाम गिर्यौ मग में ॥
फिरि चेत कैं तेग दई सिर मैं । गिरि डौंगरसी दौवा धर मैं ॥
छं० ॥ ९७६ ॥

दौवा सिर तूटि कमंध नचयौ । उत वीर सु ईश्वर मास सच्यौ ॥
वकसी कुमचंद सु आय गयौ । षगधार घनी रन वीचि लियौ ॥
छं० ॥ ९७७ ॥

सकसैना श्रीवास दौउ उर मैं । फरफूटि सनाह कस्यौ चर मैं ॥
गह पाय सुधीर पटकि धुरं । नर चून भयौ सिर फूटि वरं ॥
छं० ॥ ९७८ ॥

रन धायकैं वैस सुभार मखं । पिलियौ जु जहां प्रिथीराज दलं ॥
नरसिंघ सु दाहा देषि चषं । वरवीर सुन्यौ धर मे सुरुषं ॥
छं० ॥ ९७९ ॥

नरसिंह गुरज्ज लई सरमैं । उत साहु सु सांगि लई कर मैं ॥
कर साह सु सांगि चलाइ उतैं । वरछा.वै छूटि कैं डारैं कितैं ॥
छं० ॥ ९८० ॥

नरस्यंघ सुधाय कियौ गुरजं । सिर टूटि धरा सुपरे सुरजं ॥
भए सिर के सब टूक हजार । रहे बिधि स्वामित वाजिय सार ॥
छं० ॥ ९८१ ॥

जल्हन कवि का मारा जाना और उसका ऊदल को पुकारना ।

दूहा ॥ जल्हन भाट निराश लषि । मरन सुनी सै आय ॥

सुनियौ सुत जसराज के। सुरग भोग मन ल्याय ॥
छं० ॥ ६८२ ॥

रसावला ॥ कन्ह जद लष्षयो। नैन दोउ दिष्षयौ॥
बोलि वानी वर। लीन हथ्थ सर ॥
छं० ॥ ६८३ ॥

कौन भारौ मन। स्वामि सभ्भै पनं ॥
जोध दोऊ चले। क्रोध बोल मिलें ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

दुष्ट बोले मुष। ध्यान अवा रुषं ॥
वान बाहै विय। दुष्ष सैना दिय ॥
छं० ॥ ६८५ ॥

बार लग्गै उर। पार पार्गै पर ॥
भुमि लुट्टै वहै। अरध षद वहै
छं० ॥ ६८६ ॥

काक सीस लहै। सार भूटै सहै ॥
सेलि लागै हियै। प्रान छक्कै कियै ॥
छं० ॥ ६८७ ॥

सेलि वाहै वर। ज्वान धरती पर ॥
रुक वाहै कह्न। ताकि मारै अह्न ॥
छं० ॥ ६८८ ॥

जम्म दाढ दिय। प्रान कड्ढी लिय ॥
षजर मारिय। पजर फारिय ॥
छं० ॥ ६८९ ॥

रजक नावते। सूर सर धावते ॥
फौज मारी सहू। सीर कोपे विहू॥
छं० ॥ ६९० ॥

मार मार किय। उद्दिसं विहसिय ॥
जल्हन सगय। भाट जम गय ॥
छं० ॥ ६९१ ॥

दूहा ॥ उतै कन्ह आयौ उरप । इतै सु ऊदल जोध ॥
चाहुवान चंदेल कौ । मंडि सावंत करि क्रोध ॥
छं० ॥ ६९२ ॥

ऊदल और कन्ह का वरनी से युद्ध और ऊदल का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ मिले ऊदिलं कन्ह दोऊ अभंगं । विरचे सु जोधा दोऊ स्वामि संगं ॥
जपै इष्ट मंत्र उमाकंत सोई । भवानी धरै ध्यान धावंत दोई ॥
छं० ॥ ६९३ ॥

उमाकंत मातं जपंतं सुधाये । विहौं वारवानंत सनमुष्ष धाये ॥
मिली दिष्टि सौं दिष्टि वानी उचारौं । अहा कन्ह केरौ चलै जोध भारी ॥
छं० ॥ ६९४ ॥

दलं पातिसाही सवैं तुम्म जीते । अवै ऊदसौं षयाल सब आव वीते ॥
धनै दिन्न पट्टी सु आंषें वधाई । अवैं उदलं सौं परयौ ष्याल आई ॥
छं० ॥ ६९५ ॥

उतैं कन्ह वोल्यौ महा रोस होई । सुनौ नंद जसराज के वात सोई ॥
इहां गौड नाही गढा ठाम जानौ । अवै कन्ह चहुवान सों जुद्ध आनौ ॥
छं० ॥ ६९६ ॥

विरंचे दुहौ जोध आवद्ध वरसें । घने वीर जोधानि के प्रान गरसे ॥
चलावंत तीरं सकत्ती करारी । लगैं वार छत्ती परैं फूटि न्यारी ॥
छं० ॥ ६९७ ॥

चलावंत वीरं दुहौ वीर वांके । परै फूटि धरनी दुहौ सेन धांके ॥
चलावंत सेलं दुहौं वीर जोरे । सनाहं वपू फूटि फूटंत घोरे ॥
छं० ॥ ६९८ ॥

वहै तेग वेगं ससूरं हकारे । मनू पंच चक्रं कुलालं उतारे ॥
चलावंत फरसा सिरं फाक होई । मनो विंटियौ वाट चवूज सोई ॥
छं० ॥ ६९९ ॥

वहै अंग सीसं सु अप्पार मारं । किधौं कन्ह फोरंत दधि ग्वाल सारं ॥
लगैं मुदगरं मार भारी सु सीसं । कटै कौ हजारं लट्टके सुदीसं ॥
छं० ॥ ७०० ॥

चलाव त गुरज हकार त हाक । परी दल दुहू माझ दुहूं जोधवाक ॥
लगै जम्म दाढ सनाह सुघुट्टै । वपू अ तलै कालजे पार फूटै ॥
छं० ॥ ७०१ ॥

लगावंत हांके हरी नष वारे । वरं कगल जग उर अग फारे ॥
इसी भाति कन्ह लरै उद्दि दोई । कटके अवट्टै दुहों कोप होई ॥
छं० ॥ ७०२ ॥

उतै कन्ह की भीर कयमास आयौ । विय ठाक घाटा सिर सूर ठायौ ॥
लष्यौ जल्हन भाट कैमास सोई । लियौ वीचहौ आय महावीर होई ॥
छं० ॥ ७०३ ॥

इतै टाक चाटा सुमुष मेल कीनौ । वली जल्हन तानि कै वीच लीनौ ॥
गही तेग दोई दुहौं वार कीनौ । तवै भट्ट विपरीति होइ षग्ग लीनौ ॥
छं० ॥ ७०४ ॥

लगी जल्हन हाथ की तेग चाई । फिर्यौ चाहुवान सुधरनी गिराई ॥
वर टाक चाटा सिर रूक वाही । लग्यौ वीर जल्हन पर्यौ भूमि माहीं ॥
छं० ॥ ७०५ ॥

उते आय कयमास सेल चलायौ । वली जल्हन षेत धरनी मिलायौ ।
पर यौ जल्हन देषि उदिल धायौ । वली कन्हकै कध मै षग्ग नायौ ॥
छं० ॥ ७०६ ॥

भूम्यौ सात वार सु कन्ह नरेस । गह्यौ ऊदिल धाय हथ्थ सुवेस ॥
भए लथ्थ वथ्थ सु ऊदिल कन्ह । इतै आइयौ दौरि परिहार नन्ह ॥
छं० ॥ ७०७ ॥

वली दूसरै वीर कयमास आयो । उर उदकै आय सेल लगायौ ॥
गही तेग कन्ह सिर वार कीनौ । पर्यौ ऊदिल टूटि धरनी नवीनौ ॥
छं० ॥ ७०८ ॥

रेप्यौ रुंड धरनी सिर हाक मार । भयौ मेर ठाढौ सु ऊदिल हकार ॥
इत ऊदिल रुंड धायौ सम्हारी । वली तेग कयमास कै कंध झारी ॥
छं० ॥ ७०९ ॥

पर्यौ मूरछा दाहिमा भूमि आयौ । गह्यौ रुंड कन्ह धरनी मिलायौ ॥
हन्यौ ऊदिल कन्ह कयमास दोई । भजी सरव चंदेल की फौज सोई ॥
छं० ॥ ७१० ॥

ऊदल का कबंध खड़ा होना, फिर उसका चौहान सेना के एक हजार सिपाहियों को मारना।

दूहा ॥ ऊदिल कौ नाच्यौ कमध। गिर्यौ सीस धर सूर ॥
हनि सैन। प्रिथीराज की। एक हजार सपूर ॥
छं० ॥ ७११ ॥

चौपाई ॥ पहिलैं ऊदिल कन्ह धूमायौ। पृथीराज सिर खग्ग लगायौ ॥
चितिय कन्ह परिहार नवीनौ। भए मूर्छा सामंत तीनौ ॥
छं० ॥ ७१२ ॥

दूहा ॥ तीनौ मिलिकै मारियौ। रन जसराज कुमार ॥
मारे भर प्रथीराज के। सिर विन एक हजार ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

ऊदल का मरना जानकर कुंवर ब्रह्माजीत का मोर्चे पर आना।

कवित्त ॥ सुनि ब्रह्मादिति वत्त। काम ऊदिल रन आइव ॥
गै हरवल सब तूटि। सार सामंतनि घाइव ॥
सचसाल सकतेस। पर्यौ थौ कारन अमानें ॥
सुरजन डोंगर परिव। परिव जल्हन नर पानैं ॥
धर परे पील सै दोय रन। दस हजार हैवर वहर ॥
मुष वोह वाह जल्हन कहैं। कन्ह काटक कीनौ कहर ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

चौपाई ॥ ऊदिल कटे वीर रन मांहि। छत्री धरम धरे उर मांहिं ॥
ब्रह्मादिति बोले इह बानी। सुरग भोग भोगव मन मानी ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

ब्रह्माजीत की सेना का व्यूह वर्णन।

रसावला ॥ कियौ कुवार हक्षयं। चंदेल चाल चक्षियं ॥
हरोल पील कीलयं। अरी विपुट्ठि दीनयं ॥
छं० ॥ ७१६ ॥

तमंकि बाग लीनयं। सु स्वामि धरम चीनहयं ॥
बनाय वेद फौजयं। बिचारि आल्ह चौजयं ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

मिले मरद्द मार कै। अनेक दाव धार के॥
बध्यौ गरद्द मोलय। बिचै स वार होलिय॥
छं० ॥ ७१८ ॥

चल्यौ सु आल्ह हायय। लिय सुभाट साथय॥
उतै चुहान चल्लिय। मरद्द मेलि मिल्लिय॥
छं० ॥ ७१९ ॥

सबध साजि चल्लय। कुवार वीर पिल्लिय॥
कैमास कन्ह जैतय। हमीर जुद्ध नेतयं॥
छं० ॥ ७२० ॥

गम्हीर कन्ह केसय। मल्लैसी वीर वैसय॥
हाहुलि राय मल्हन। गोयंद राज जल्हन॥
छं० ॥ ७२१ ॥

पहार राज तुवर। चले समाज कुंवर॥
उछाह आल्ह कीनय। बनाफर प्रवीनय॥
छं० ॥ ७२२ ॥

चल्यौ प्रमाल नंदय। मनू ससी सु चंदय॥
सरग्ग भोग आसय। पिलन्न धम्म नासय॥
छं० ॥ ७२३ ॥

चुल्यौ नयन वाचय। सुनौ चुहान साचय॥
जु ध्रम्म जुद्ध किज्जयं। वचन्न पास लिज्जय॥
छं० ॥ ७२४ ॥

बुलाय जोध जोधय। करै हथ्यार सोधय॥
अध्रम्म जुद्ध छंडिय। सुध्रम्म जुद्ध मंडिय॥
छं० ॥ ७२५ ॥

भाई का मरण जानकर आल्हा का पसर करना।

दूहा। उद्दिल कामि सु आइये। दइं पवर प्रतिहार॥
अब सुकाज परिमाल कौ। सब तेरे सिर भार॥
छं० ॥ ७२६ ॥

भुजंगी॥ पर्यौ उद्दिल षेत सौ आल्ह जान्यौ। कियौ क्रोध रन मरन सुठान्यौ॥

लियौ नीर हथ्थं बुल्यौ बीर बानी। करी पैज मन में करी अंत जानी॥
छं० ॥ ७२७ ॥

धरैं ईस मुंडं गलैं आजु मेरो। उधारौं अबैं नाम चंदेल तेरो ॥
इसे बोल आल्हन सबकौं सुनाये। धरे स्वामि धर में समर मध्य आये॥
छं० ॥ ७२८ ॥

चलाये दुहौ वीर बाँधै गरिष्टं। चलाए चमू के बली बाँधि थट्टं ॥
करैं षंड षंडं भसुंडैं निनारैं। पिले वीर जोधा करी कुंभ कारैं ॥
छं० ॥ ७२९ ॥

नगाकैं भसुंडैंनि टूटैं वरच्छी। लगैं उंकवारं परैं वरत रच्छी ॥
सरद्दं घटा जेमि गाजंत गाजं। बली बाहु तोरं सुवौ रंसमाजं ॥
छं० ॥ ७३० ॥

घटा सेंन बंधी दुहौं वीर धाये। मनों पुब्ब पच्छाह घन उमंडि आये॥
हमंकै लगैं सींगि लग्गैव मोरा। बरं फूटि सन्नाह फूटंत धोरा ॥
छं० ॥ ७३१ ॥

मिले सूर सूरं सु पूरैं अषारैं। गहैं सूंडि मत्ती सुदंती षिकारैं ॥
उतैं कन्ह चहुवान कैं मास धायौ। पचारैं अरंत अपारैं मिलायौ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

कहूं की भुजा तोरि जोरें उपाटैं। किते एक जोधानि के सीस काटे ॥
किते डोल गहि पील नाषंत धरनी। तरफ्फैं करैं नीर ज्यों मच्छ करनी॥
छं० ॥ ७३३ ॥

कहूं हमर तानि गहि तानि चाहैं। कहूं पाप प्यादे गहैं धरनि माहैं॥
कहूं सांगि बाहैं कहूं कूदि दारैं। कहूं वान छाडैं सुथाटं सुमारैं ॥
छं० ॥ ७३४ ॥

कहूं सीस गुरजं कियौ पानि वाहैं। सिरं चून करते विषून दुगाहैं ॥
कहूं काट तैं सीस रीसं अभोरं। कहूं वर बली बीर बाहंत जोरं ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

कहूं संकरं सार वाहे अमानो। मनों कौन मतवार सब्बै समानौ
कहूं कंध पै बंध नावंत फारसी। कहूं जग्गराजं सबै सैन गरसी ॥
छं० ॥ ७३६ ॥

कहू अंकुस मारि कै पेंचि लेते। कहू अरगला तोरि सिर माहि देते॥
कहू वीर बाहै भसुंडी निकारी। कहू कपिनी छूल इक अवारी॥
छं० ॥ ७३७ ॥

कहू सांगि उमंगी बाहै अमोर। कहू मांगि सै चील गावंत जोर॥
किधौ वीर किरवान कर भोनि बाहै। परे मुंड धरनी सुरुज नचाहै॥
छं० ॥ ७३८ ॥

कटारी किय षग उर जात नामी। षुले द्वार मानौ अटारी सुवानी॥
कहू पंजर षंजर मार धारै। कहू राजकं वारि छीक सुधारैं॥
छं० ॥ ७३९ ॥

इसौं भांति कैमास कन्ह चलायौ। घनै सैन चंदेल धरनी मिलायौ॥
भगी सैन देषी नृप आल्ह सोई। भए आप आगै रहे पीठि लोई॥
छं० ॥ ७४० ॥

दूहा ॥ भगी सैन आल्हन लषी। सामंत तेज अथाह॥
राखि सरन सैना सबै। भयो अग्र नरनाह॥
छं० ॥ ७४१ ॥

आल्हा का कन्ह के मुकाबले में आकर उससे उत्कर्ष वचन कहना।

चौपाई ॥ आल्हन ए सेना अप सूरे। वचन कान्ह सौं बोलि करूरे॥
सुनि चहुवान अमुत जंग कीजै। सब सेन कौ दुष न दीजै॥
छं० ॥ ७४२ ॥

आल्हा का निद्रास्त्र प्रयोग करके सब चाहुआन सेना को मूर्छित कर देना।

आल्हन सक्ति कौ सच उपायौ। सो अरजन कौ ईस बतायौ॥
निद्रा अस्त्र प्रयोग सु कीनौ। औ धत सावत सूर नवीनौ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

पद्धरी ॥ उच्चरै आल्ह बानी विराट। सुनियौ सुकान्ह कयमास थाट॥
सब सैन काज दुष देव काय। कीजिये जुद्ध मो संग चाय॥
छं० ॥ ७४४ ॥

जंपियौ सुमंत तारा सुभाय। कीनौ सु ध्यान उर मध्य लाय॥
हूंकार कियौ देवी बखिष्ट। किलकार कीन्ह हलकार द्रष्ट॥
छं० ॥ ७४५ ॥

निद्रा प्रयोग कीनौ सुधीर। धारंत सरब सामंत धीर॥
कैमास कन्ह पुंडीर चंद। पज्जोन जैत सामंत दंद॥
छं० ॥ ७४६ ॥

तौंवर पहार अरु जैत सोइ। भौंहा चंदेल नरस्यंध लोइ॥
परिहार पीप पंवार नन्द। धावर सुधीर जयमाल पन्द॥
छं० ॥ ७४७ ॥

षडखंड निवान सामंत सार। षीची सुगोड षेता षँगार॥
सामंत इत्त औधंत ताह। बजरंग वीर तजि जंग राह॥
छं० ॥ ७४८ ॥

औधंत औध चष नींद लाइ। छंडिव सु दंद सामंत भाइ॥
दौरे सु जोध चंदेल सैन। बलवंतबीर निरमोह तैन॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कित्तेक सीस टूटंत सार। कित्तेक अंग लै होत फार॥
केतेक चरन टूटंत जंध। केतेक हथ्थ तरफरत रंध॥
छं० ॥ ७५० ॥

केतेक सूर रन कढि हुलास। केतेक गये चहुआन पास॥
नरनाह कन्ह कैमास सोय। छंड्यो सुजंग उनमत्त होय॥
छं० ॥ ७५१ ॥

मारंत आल्ह सजि सैन सूर। करियै नरेस ऊपर करूर॥
अचिरज्ज पाप प्रिथीराज साव। बरदाय चंद बोल्यौ सिताव॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कीन्हौ सुमत्त आल्हन अपार। सब छंडि जुद्ध सोवत सुढार॥
उच्चरै चंद सुनियो नरेस। कीनौ प्रयोग आल्हन सुवेस॥
छं० ॥ ७५३ ॥

तारा सुअस्र कीनौ उपाय। दीनौ सुमंत्र संकर सहाय॥
पारथ्थ कीन कौरव समथ्थ। सो कियौ अब्ब तुम पर प्रसिद्ध॥
छं० ॥ ७५४ ॥

अवतार सल्ल को भयो आय। दीनौ सुमच गोरष्प राय॥
छ० ॥ ७५५॥

कवि चन्द का आल्हा की कथा वर्णन करना, उसका कहना कि आल्हा सल्ल का अवतार है, वह गोरष से मिला था और उनकी सेवा करके उसने वरदान पाया था।

कवित्त ॥ कहै चद सुनि राज। आल्ह अवतार मल्ल भय॥
गय सिकार इक वार। राति उद्यान भूलि रय॥
गिरिवर ऊपर सिखर। तहा गोरख रिषि वैठिव॥
भूलि गयौ पा धरौ। फिरत वन सिद्ध सुदिठ्ठव॥
लगिव पाय जसराज नंद। हथ्य जोरि विनती कियव॥
मोहि संग लेहु उपदेस करि। तजौ भवन यह उर धरिव॥
छ० ॥ ७५६॥

आल्ह सीस हथ मेलि। कहिय गोरष सुप वानिय॥
रहौ वरस लगि द्वार। देहु दरसन यह मानिय॥
करै वनाफर सेव। रैन दिन एक चित्त करि॥
भरत मोद मन मोह। कोह नहि होइ लेस भरि॥
एकलौ होय करि वंदगीय। अंतर गत सवही लह्यव॥
वाइस पक्ष दिष्षौनि रिय। इक्क दिवस राजी भयव॥
छ० ॥ ७५७॥

चौपाई ॥ तव गोरिष सुप वोलिय वानिय। आल्हा मागि कछू मन मानिय॥
वरस एक लग साधव मो कहु। जो मागौ सो समपौ ता कहु॥
छ० ॥ ७५८॥

गोरख का आल्हा प्रति वरदान।

दूहा ॥ असन सस्त्र सिपए सवै। कीनी अमर सुदेह॥
उदिल लग अह मे रहै। पाळे जोग सनेह॥
छ० ॥ ७५९॥

चंद का पृथ्वीराज से कहना कि चावंडराय को परमाल को पकड़ने के लिये कालिंजर को भेजिये और अतताई को आल्ह की बरनी कीजिये।

चावंड को कीजे विदा। गहि ल्यावै परिमाल ॥
आताताई अग्र करि। कीजै जुद्ध विसाल ॥

छं० ॥ ७६० ॥

राजा का चंद की कही करना।

चावंड कूं जु विदा किये। कैद करन चंदेल ॥
आताताई अग्र करि। कियौ जुद्ध कौ षेल ॥

छं० ॥ ७६१ ॥

अतताई और आल्हा का युद्ध वर्णन।

त्रिभंगी ॥ करि कोप तबै पृथिराज मनं। अतताइंय अग्र किये सजनं ॥
मुष मंत्र उचारिय आप नृपं। अरि को उपजावन देह दिपं ॥

छं० ॥ ७६२ ॥

गिरजा हरि संकर ध्यान कियं। अतताई नरेसर अग्र दियं ॥
महा कालिय ध्यान धर्यौ जबही। अतताईय सिंधि करी तबही ॥

छं० ॥ ७६३ ॥

बरबीर अराधन चंद कियं। बर बम्हन बेहल कारि दियं ॥
विकरे सब वीर चले रन में। मुष मंत्र उचारत ही पल में ॥

छं० ॥ ७६४ ॥

किलकारिय कालिका आवत की। सब नींद गई उडि सावंत की ॥
कयमास रु कन्ह गजे जबही। सब सांवत जोर बढ्यौ तबही ॥

छं० ॥ ७६५ ॥

त्रिय षंड बिहंड गयंद करै। अल्हनानन घावन सौं जकरै ॥
नंद वानिय केसव आय गये। रन मध्य कयमास उठाय लये ॥

छं० ॥ ७६६ ॥

जितने अतिताईय मेल कियं। बर के सब कें सु चिह्नल दियं ॥

लटक्यौ तन केसव भूमि पर्यौ । वलिराज चँदेल सौ आनि अर्यो ॥
छं० ॥ ७६७ ॥

कैमास और जगनक का युद्ध और जगनक का मारा जाना ।

भर भाजत पील के दूत कढे । गहलौत सुगोयद राज चढे ॥
गजराज पर्यौ धरनी थल मे । जगनक रुपै लायव बल में ॥
छं० ॥ ७६८ ॥

अन्यौ नरनाह धरन्नि पर्यौ । तिह ऊपर दाहिम आनि अर्यौ ॥
कैमास लगाइय तेग तन । अमयौ कविराज समान रन ॥
छं० ॥ ७६९ ॥

कविराज सु लागि लई कर मे । कयमास सुडार दयौ धर मे ॥
परियौ धर दाहिम जैत सुनौ । सनमुष्प चलाइ कै तेग हनौ ॥
छं० ॥ ७७० ॥

परियौ कविराज धरनि थल । जिन रुड उठ्यौ दोय देष दल ॥
धरनी धर दोरत सीस विना । किरवान वहै रिस धारि मना ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

बहु साँवत मुरछ पीड मही । रनकेर विजै कविराज लई ॥
विन सोस जगन क पील हन्यौ । भट सूर महा चहुवान गिन्यौ ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ जगनक पर्यौ सुसीस धर । उठ्यौ रुड कर रोस ॥
पील हन्यौ देष्यौ नृपति । कर किरवानह जोस ॥
छं० ॥ ७७३ ॥

जगनक का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ रुपि जगनक रन माहि । हथ्थ वाहै वर हथ्थिय ॥
कियौ कन्ह मुरछाह । वियौ कयमास समथ्थिय ॥
हनियौ सैन हजार । रुड नाच्यौ विन सीसह ॥
मानि जोर पृथिराज । पील-मार्यौ अरि रीसह ॥
कीनौ कहाव रन साझ कढि । लोह लहरि खँड मार झरि ॥

जंपी सुचंद बानी बरनि । भाट ठाट कीनौ कहर ॥
छं० ॥ ७७४ ॥

अत्ताताई और आल्हा का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ आतातांई आल्ह पर । हंकि चल्यौ बलवान ॥
बतैं बनाफर आय कें । झिल्ल्यौ बीच झिलान ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

रसावला ॥ वीर जागे बलं । पील पागे हलं ॥
कौन ताछे कलं । होय काछे हलं ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

कौन जोरे कलं । सीस छेदे छलं ॥
व्याल रच्चं बलं । चीर नंचे नलं ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

डील बिरचे बलं । हंक सारे हलं ॥
ताकि सीसं करं । बिप्फुरो संभरं ॥
छं० ॥ ७७८ ॥

धाक हीये धरं । नेह न्यारे धरं ॥
घाव करते घनं । जाय जुरते जनं ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

दाय देते दयं । तलप करते वयं ॥
धाव करते घटं । उल्लषीते लटं ॥
छं० ॥ ७८० ॥

चोट करते चटं । षग्ग षाटे षगं ॥
मार मारं रटं । सार सुद्धं सटं ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

सार झारं रटं । काट करते कटं ॥
झारि श्रोनं मथं । भान षंच्यौ रथं ॥
छं० ॥ ७८२ ॥

चाव बड्ढे हथं । लोह लथ्थं बथं ॥
जंगरा रंगरं । भाम झंडे भरं ॥ छं० ॥ ७८३ ॥

जग भारी मच्यौ । वीर नाद नच्यौ ॥
भोमि लोह मच्यौ । ईस नदी सच्यौ ॥

छं० ॥ ७८४ ॥

फाग पग्ग पिल्यौ । भूमि अग मिल्यौ ॥
मत्तवार जिह्न । धाय धुमे दुहू ॥

छं० ॥ ७८५ ॥

वीर वाहे अरै । धुक्कि धरनी गिरै ॥
भीम की चकही । पाव साचो वही ॥

छं० ॥ ७८६ ॥

देव देते दुह्न । पाई माचे तिह्न ॥
आल्ह सग्या गई । मार भारी भई ॥

छं० ॥ ७८७ ॥

आल्हा का मूर्छित होजाना ।

दूहा ॥ भए मूरछा आल्ह रन । आतातांई इद ॥
ता समये प्रिथीराज पुनि । वानी बुल्यौ चद ॥

छं० ॥ ७८८ ॥

कविचंद का कहना कि आल्हा की मूरछा छूटनेके पहले ब्रह्मा-जीत को मारलो ।

चौपाई ॥ आल्हा गिरे मुरछा पाई । दोउ वीर गिरे धर आई ॥
ब्रह्मादिति को वेगे मारौ । नातर आल्ह उठौ रन हारौ ॥

छं० ॥ ७८९ ॥

दूहा ॥ ब्रह्माजित सौं जग करि । सभरि राव सम्हारि ॥
जब जगिहै आल्हन सुभट । तब हारोगे रारि ॥

छं० ॥ ७९० ॥

पृथ्वीराज का हाथी बढाकर कुंवर ब्रह्माजीत पर बाण चलाना ।

कवित्त ॥ हकि पील प्रथिराज । चल्यौ चदेल सनम्मुष ॥
दुष्ट मन उच्चारि । वीरवर धारि जत्तरुष ॥

नरपति आप हँकारि । वान संधान पान किय ॥
षेंचि राज कोदंड । कान लगि वान पिडं दिय ॥
भेदंत हीय छेदंत तन । फुटि सनाह हय धरनि लिय ॥
सायक्क वाहि संभरि धनिय । पग्ग पोषि ढीलनि पिलिय ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

दूहा ॥ तीर लग्यौ चंदेल उर । फूटि सनाह प्रवीन ॥
हय पाषर वेधे दुहौं । गगन मस्त वे कौन ॥
छं० ॥ ७९२ ॥

तीर लगतेही ब्रह्माजीत का पृथ्वीराज पर सांग चलाना ।

कवित्त ॥ लग्यौ तीर चंदेल । धर्‌यौ प्रिथिराज सनम्मुष ॥
कहि वायक हंकारि । वीर सहाय सहाव दुष ॥
आव आव प्रिथिराज । चाव षग्गनि सौं षेलव ॥
करौ जुद्ध चिसुद्ध । जुद्ध सामंतनि ठेलव ॥
किरवान कुँवर धरि कर पकर । प्रिथियराज पर चल्लियव ॥
हंकंत वीर षमसाय यह । सहरि लहरि भर मिल्लियव ॥
छं० ॥ ७९३ ॥

पृथ्वीराज और ब्रह्माजीत का युद्ध ब्रह्माजीत का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ चलायौ चंदेलं मुषं चाहुवानं । पिथा वान अगं उमंगं उठानं ॥
लई सांगि गहियं हनी राजहीकं। भाई पार हीकं सुअंगं सुपीकं ॥
छं० ॥ ७९४ ॥

निदे कंगलं देह षूनी सलाकै । मनौ नट्ट वानट्ट षेले कलाकै ॥
धुमायौ बियं सांगि लगि चाहवानं । करी मूठराजं जर्‌यौ पूरवानं ॥
छं० ॥ ७९५ ॥

लग्यौ वान धायौ ब्रह्मादिति सूरौ। हन्यौ राज किरवान मथ्थं करूरौ॥
लष्‌यौ चंद वरदाय नैनं सकृतैं । लग्यौ हीक चंदेल की पार हृतैं ॥
छं० ॥ ७९६ ॥

कियौ मंत्र सज्जीवनी भट्ट राजं । तवै वीर चहुवान चल्यौ समाजं ॥
लियौ अरधचंद्रं चिती वान हथ्थं ।हन्यौ तीन चहुवान कै आय मथ्थं॥

छं० ॥ ७९७ ॥

पर्यौ सीस धरनी कुमार नंवीनौ। लियौ ईस धाय वर मेल कीनौ॥
भगी फौज पोली चहुवान जीतौ। इतौ मोरछा जग आल्हन चीतौ॥

छं० ॥ ७९८ ॥

आल्हा का अत्यत कुपित होकर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और मंत्र अस्त्र प्रयोग करना पर कवि चंद का उन्हें काट देना ।

भयो चेत आल्हा इते अत्त ताई। लियौ षग्ग हथ्थ मिले लोह आई॥
हन्यौ अन्य वारे करे दोय अग। उमट्टे अहुट्टे नद्दो जोध जग॥

छं० ॥ ७९९ ॥

करी पोल आल्ह चल्यौ राजमुष्प। धरै स्वामि धर्म उर सूर सुष्प॥
चल्यौ सूर वानी प्रिथीराज रूप। हरीसिंघ कनकेस पाल्हन भूप॥

छं० ॥ ८०० ॥

बलीराम परिहार अचलेस भट्टी। निड्डराय भौंहा हमीर सुरट्टी॥
गम्भीर प्रसग सुजादौ जवान। तहा बग्गरी देव षेला सयान॥

छं० ॥ ८०१ ॥

तहा जन धावन्न डरौरे जवान। तहा हाहुलीराव मड्यौ उठान॥
तहा चालुके चेति सारग धायौ। इते सेलि सामंत आल्हन चलायौ॥

छं० ॥ ८०२ ॥

परे मूरछा जोग कयमास चंद। बलीराय पज्जौन वाह सु दंद॥
जद्दा निड्डर राय तोवर पहार। परयौ पील पीपा वर सिंघ भार॥

छं० ॥ ८०३ ॥

इते सूर सूते अचेत उठान। उतै सज्जम राय गोला कुटान॥
बिय आय सामत आल्हन रुक्क। पचारैं बिय न सवै उच्च कुक्क॥

छं० ॥ ८०४ ॥

लयै सावंत आल्ह वान वरसे। महावीर जोधान के प्रान ग्रसे॥
कियौ गोरिय ध्यान विघन पहारी। प्रयोग गिरे सरव सावत भारी॥

छं० ॥ ८०५ ॥

गुरूराज बरदाय आल्हन रायौ । लगाए सरं और हस्ती फिरायौ ॥
बली राज विद्या अनेकं उपाई । गुरू चंद आगै न जान्न पाई ॥
छं० ॥ ८०६ ॥
भई इक्क बानी सुआनंद आई । अहो आल्ह गुरु भट्ट जीते न जाई ॥
छं० ॥ ८०७ ॥
चौपाई ॥ आल्ह मंत्र करिवान मँजूते । लगि लगि उर सामंत सब सूते ॥
भए मूरछा सब बरदाई । गोरिष की विद्या फैलाई ॥
छं० ॥ ८०८ ॥
चंद राम गुर आयस पूते । रुके आल्ह सम्हर मंह तेते ॥
दाव अनेक करि हरि थक्के । अंतरीछ गोरिष है वक्के ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

गोरखनाथ का संमुख आकर आल्हा को अपने साथ लिवा ले जाना ।

बोले गोरिष सुन रे भाई । बाम्हन भाट न जीते जाई ॥
संमर छोडि जोग पथ लीजै । काया काजै अमर सुकीजै ॥
छं० ॥ ८१० ॥
फिरे आल्ह समर तजि सूर । गोरिष नैं मत दीनै पूर ॥
देह अमर करि बन को धाये । छाड्यो भोग जोग मन लाये ॥
छं० ॥ ८११ ॥
दूहा ॥ आल्ह फिरे तजि समर को । छाडि भोग को वास ॥
गोरिष संग चलिकै गये । धीर निरंजन आस ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

पृथ्वीराज के मूर्छित होने पर गिद्धिनी का उसकी आँख निकालने लगना और संजम राय का उसे अपना मांस देकर राजा को बचाना ।

कवित्त ॥ लोह लागि चहुवान । परे मूरछा है धरतिय ॥
उड. गीधनि बैठि कै । चुंच बाहैति विरत्तिय ॥

देष्यौ स जम राय । नृपति दृग दाढति पछिन ॥
अपनै तन कौ मास । काटि भषु दियौ ततछिन ॥
अपनै सु नयन देषयौ नृपति । अत समै धृम मल्लियव ॥
आये विवान वैकुठ के । देह सहत धरि चल्लियव ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

सजमराय का प्राणान्त ।

दूहा ॥ गीधनि कौ पलभषु दियौ । नृप कौ नैन बचाय ॥
देह हँसत वैकुठ कौ । पहुच्यौ स जम राय ॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चावंडराय का परिमाल को कालिंजर से पकड कर ले आना ॥

कवित्त ॥ चावँड राय चलाय । जाय कालीजर वैठिव ॥
दरवाजे करि व धनारि । पौरनि मध व धिव ॥
पौछ लागि दाहिमा । जाय चँदेल हकारिव ॥
आगे आये सूर । मारि कीने वट धारिव ॥
पकरियौ हथ्थ ढिल्ली धूवनि । हय पैं डारि सु चल्लियौ ॥
तीसरै दिवस मध्यान दिन । चाहुवान सो मिल्लयौ ॥
छं० ॥ ८१५ ॥

चामंड का कालिंजर के किले को लूटकर वहा चौहान के नाम का निशान रोप देना ।

पद्धरी ॥ चावँड जीति परिमाल ल्याय । परिहार सथ्थ सवही पिपाय ॥
भोपत्ति पकरि पग पटकि भूमि । लीनौ सुनेज झडा सुझूमि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥
लीनौ सुहथ्थ चदेल धाय । तीसरै दिवस रन मध्य आय ॥
दाहिमा लागि चहुवान पाय । दीनौ सु पकरि चदेल आय ॥
छं० ॥ ८१७ ॥
हाथी सुतीस गाजत मद्द । घोरे हजार इकतीस सद्द ॥
पाच सौ ऊट रोकत दाम । पच्चास लाप लाये सुताम ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

मानिक्क हेम पन्ना प्रवाल। हीरा अनेक अम्मोल लाज ॥
सत कोटि द्रव्य कीनौं सुमार। दाहिमा राय सब जीति सार ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

चहुवान काज कीनौ सलाम। समप्पियौ आय चंदेल ठाम ॥
गुरराज डंड चामुंड राय। उच्चाय नृपति पाटे बंधाय ॥
छं० ॥ ८२० ॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाकर घायल सामंतों को उठवाना।

चहुवान हुकम कीनौ सुफेरि। ढुंढौ सम्मर सामंत हेरि ॥
कयमास कन्ह पज्जौन जैत। नरसिंघ वीर जामिनि समेत ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

तौंवर पहार पुंडीर चंद। धावर सुधीर वहु परे दंद ॥
षेत। षंगार हाड़ा हमीर। हाहुली राय धरि परिग वीर ॥
छं० ॥ ८२२ ॥

सब सुमट सूर रन पर अचेत। भयौ विषम जुद्ध रचि श्रोन षेत ॥
वरदाय चंद गुरु राम देव। पढि मंच सजीवन सरब भेव ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

जग्गे सु सरब सामंत सूर। दल मलि असंषि झलहलत नूर ॥
करि कूंच नृपति दिल्ली दिसान। पज्जौन बोलि हज्जूर आनि ॥
छं० ॥ ८२४ ॥

तुम रहौ महोबे सुभट थान। धर सौंपि भार हय गय प्रमान ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को महोबे का थानापति नियत करके दिल्ली को आना।

दूहा ॥ दियौ भार पज्जौन भुज। राषि महोवै थान ॥
डंड छंडि परिमाल कौ। कीयौ नृपति पयान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥

चाहुवान दिल्ली नगर। कीनौ नृपति प्रवेस ॥

घर घर मंगल होत हुव । आयो जीति नरेस ॥
छं० ॥ ८२७ ॥

पृथ्वीराज का संजम राय के पुत्र को आधी गद्दी का आसन और आधे राज का पट्टा देना ॥

संजम राय कुमार कौ । बाँधि पट्ट नरेस ।
हय गय मनि मानिक बकसि । अध आसन अध देस ।
छं० ॥ ८२८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथिराज रासके महोबा का
समयो संपूर्णम् ।



